स्मारिका

सद्गुरु अभिलाष साहेब

जन्म : 17 अगस्त, 1933 वैराग्य : 12 नवम्बर, 1953 विदेह मुक्त : 26 सितम्बर, 2012

प्रकाशक
कबीर पारख संस्थान
संत कबीर मार्ग, प्रीतम नगर, इलाहाबाद-211011
Visit us : www.kabirparakh.com
E-mail : kabirparakh@yahoo.com

सम्पादक
धर्मेन्द्र दास

प्रकाशन तिथि, सितम्बर 2013

© कबीर पारख संस्थान

सहयोग राशि : ₹ 75

मुद्रक
इण्डियन प्रेस प्रा० लि०
पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद

संयम और सत्य के उपासक

भारत ही नहीं विश्व की संत परंपरा में कबीर एक महत्तम नाम है। जैसे कबीर का अर्थ बड़ा और महान होता है वैसे कबीर साहेब का व्यक्तित्व और कर्तृत्व महान रहा है। वे विलक्षण प्रतिभा वाले पुरुष रहे हैं। उनकी मर्मभेदी एवं पारदर्शी दृष्टि क्षणभर में भांप लेती थी कि कहां क्या त्रुटि-कमी है और वे अत्यंत मुखर एवं निडर होकर उसे सबके सामने प्रकट कर देते थे। सच को सच एवं झूठ को झूठ कहने में वे न तो कभी डरे और न किसी का मुलाहिजा किये। धर्म के क्षेत्र में सद्गुरु कबीर सब जगह तर्कपूर्ण प्रकृति की कारण-कार्य-व्यवस्था संबलित वैज्ञानिक दृष्टि वाले संत हुए हैं। उनकी वाणियों में अंधविश्वास, चमत्कार, पाखंड, मिथ्या महिमा की कोई गुंजाइश नहीं है। इसीलिए दिन जितने बीतते जा रहे हैं कबीर सबके आकर्षण का केंद्र बनते जा रहे हैं। जातिगत, वर्ण-वर्गगत एवं संप्रदायगत भेदभाव तथा उससे उत्पन्न समस्याओं एवं हिंसा-हत्याओं का समाधान लोगों को कबीर की वाणी में दिखाई पड़ रहा है।

सद्गुरु कबीर की तर्कपूर्ण कारण-कार्य व्यवस्था संबलित विचारधारा को आगे बढ़ाने में उनके बाद कबीरपंथ में श्री श्रुतिगोपाल साहेब (कबीर चौरा, काशी), श्री भगवान साहेब (धनौती, बिहार), श्री जगन्नाथ (जागू) साहेब (विद्दूपुर, बिहार), श्री पूरण साहेब (बुरहानपुर, म. प्र.), श्री काशी साहेब (बुरहानपुर, म. प्र.), श्री निर्मल साहेब (अजगैबा, खलीलाबाद, उ. प्र.), श्री विशाल साहेब (बाराबंकी, उ. प्र.) आदि गुरुजनों का महत्तम योगदान रहा है। सद्गुरु कबीर द्वारा प्रवाहित पारख सिद्धांत की निर्मल गंगा को अक्षुण्ण बनाये रखने का श्रेय आप गुरुजनों तथा अन्य नाम-अनाम अनेक संत-भक्तों को ही है। वर्तमान युग 20वीं सदी में पारख सिद्धांत की इस निर्मल गंगा को अधिक प्रशस्त, बहुमुखी और लोककल्याणकारी बनाने में परम पूज्य गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी का जो भगीरथ प्रयास रहा है वह अद्वितीय है।

पूज्य गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब का जन्म सनातनी वैदिक परिवार में हुआ था। 18 वर्ष की उम्र में कबीरपंथ से आपका परिचय हुआ और तीन वर्ष तक कबीर वाणी का अध्ययन-मनन करने के बाद गृहस्थ आश्रम से पूर्ण विरक्ति लेकर कबीरपंथ में ही दीक्षित हो गये। साधु-मार्ग में आने के बाद सेवा-स्वाध्याय-साधना की त्रिवेणी में निमज्जन कर आपने अपने जीवन को पूर्ण निष्कलुष, निर्मल, निर्विकार बनाकर जीवन की परमोपलब्धि आत्मशांति, आत्मतृप्ति, आत्मस्थिति को प्राप्त किया ही, आप अनेकों जिज्ञासुओं, मुमुक्षुओं, साधकों के मार्गदर्शक, आदर्श एवं बोधदाता सद्गुरु बन गये।

अपने त्याग, वैराग्य, साधना, शालीनता, मधुर व्यवहार, मीठी-संयत वाणी, मेल-मिलाप, समन्वय, स्नेहिल उदार हृदय, कथनी-करनी-रहनी की एकता, अनुद्वेग प्रतिक्रियाविहीन

जीवन, सारग्राही दृष्टि एवं साहित्य सेवा आदि अनेकानेक गुणों–सद्गुणों द्वारा आपने एक ऐसी अद्भुत मिसाल प्रस्तुत की, जिसका जोड़ा मिलना मुश्किल है।

जिस उद्देश्य को लेकर आप साधु–मार्ग में आये उसमें तो आपने पूर्ण सफलता पायी ही, आप अकसर कहा करते थे कि शरीर पाकर जो करना चाहिए, वह मैंने कर लिया है, मुझे पूर्ण आत्मिक शांति की प्राप्ति हो चुकी है और अब मुझे न कुछ करना शेष रह गया है और न कुछ पाना, फिर भी आपने अपनी लेखनी द्वारा समाज की जो सेवा की और पारख सिद्धांत को जो साहित्यिक समृद्धि प्रदान की उसके लिए आप सदैव स्मरणीय रहेंगे।

आपने सद्गुरु कबीर की वाणियों की तो सरल, सुंदर, सटीक और लोकग्राही व्याख्या की ही, अनेक वैदिक साहित्यों तथा अन्य संतों की वाणियों का मंथन कर ऐसा मक्खन निकाला जो सत्यान्वेषी जिज्ञासुओं एवं साधकों के लिए अत्यन्त सुस्वादु और कल्याणकारी सिद्ध हुआ। कपिल, कणाद, पतंजलि, बुद्ध, महावीर, लाओत्ज़े, शंकराचार्य, वेद–उपनिषद् के चिंतक ऋषियों की वाणियों से पारख पूर्ण वाणियों को उद्धृत कर तथा व्याख्या कर बताया कि सत्य के शोधक एवं ग्राहक सब समय रहे हैं। हर मत–पंथ, ग्रंथ में सार–सत्य वाणी है। आवश्यकता है उन्हें शोधकर ग्रहण करने की। सद्गुरु कबीर की वाणी 'निर्पक्ष होय के हरि भजे, सोई संत सुजान' को पूज्य गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी ने अपने जीवन में चरितार्थ कर दिखाया। जीवन के अंतिम दिनों में आप निर्गुणी संत–परंपरा पर काम कर रहे थे। लगभग 20 से ऊपर संतों जैसे–मलूक, पलटू, रैदास, जगजीवन, गुलाल, बुल्ला आदि की वाणियों पर भाष्य कर चुके थे।

यदि पूज्य गुरुदेव जी का शरीर कुछ वर्ष और रहता तो निश्चित ही समाज का बड़ा लाभ होता, ऐसा आपसे जुड़े हर संत–भक्त–प्रेमी का कहना एवं अनुभव है। आपका अचानक देहावसान हो जाना समाज के लिए अपूरणीय क्षति है, परंतु काल की गति सर्वथा अज्ञात है और काल की बलवत्ता के सामने सब सर्वथा लाचार हैं। अब गुरुदेव जी का शरीर रहता तो समाज को ऐसा–ऐसा लाभ होता, उनके न रहने से हम उस लाभ से वंचित रह गये, ऐसा पश्चात्ताप करना बेकार है। गुरुदेव जी जितना दे गये हैं हम उसी को सम्हालकर रखें और जैसा जीवन उन्होंने जीया वैसा जीवन जीयें, यही हमारा कर्तव्य है और इसी में सारा लाभ समाहित है।

गुरुदेव जी के व्यक्तित्व, कर्तृत्व, जीवन–दर्शन, समाज को उनकी देन—नाना पहलुओं पर अनेक संतों, साध्वियों, भक्तों, विद्वानों ने अपने–अपने ढंग से बहुत सुंदर विचार व्यक्त किये हैं। उन्हें पढ़कर प्रेरणा लें और पूर्ण मानसिक शांति, प्रसन्नता, आत्मिक संतोष का अनुभव करें, यही गुरुदेव जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

स्मारिका के लिए जिन संतों, साध्वियों, भक्तों एवं विद्वानों ने परिश्रमपूर्वक लेख तैयार कर हमें स्मारिका प्रकाशन में अपना अमूल्य सहयोग दिया है हम उनके प्रति अत्यंत आभारी एवं कृतज्ञ हैं।

कबीर आश्रम, कबीर नगर, इलाहाबाद —**धर्मेन्द्र दास**

15 अगस्त, 2013

पूज्य गुरुदेव जी की डायरी के कुछ अंश

पूरी जड़ासक्ति मिटकर निजस्वरूप में विश्राम मिल जाये, उसके बाद शरीर रहने की कोई आवश्यकता नहीं है। जब तक प्रारब्ध है, तब तक वह चलकर गिर जायेगा। मैं अपने अनुगामियों को अपने मृत शरीर के लिए यही राय देता हूं कि मेरा शरीर यदि कुछ लोगों के सामने छूटे और यदि वहां कहीं नदी है तो वे उसे उसमें फेंक दें। यदि निकट नदी नहीं है तो जिस क्षेत्र में शरीर छूटा है वहीं कहीं खुली जमीन में गाड़ दें और उसके ऊपर कोई चिह्न न बनायें, जिससे समाधिस्थल सदैव के लिए खो जाये। मृत शरीर का चिह्न बनाकर उसे पूजने की भावना बहुत गलत है।

14 जून 1998 *हंसा सुधि करु अपनो देश, पृ. 62*

✡ ✡ ✡

किसी व्यवहार में साथियों की राय गलत या सही हो सकती है। किसी साथी को अपनी गलत राय में भी अहंकार होने से वह उसी का पक्ष पकड़ सकता है। तुम्हारा काम है साथियों की सही राय को मान लो। वह जो अपनी गलत राय में पक्ष करता है, उसे सही बात समझाने की चेष्टा करना चाहिए। किसी की गलत राय मानकर काम नहीं बिगाड़ना चाहिए। पारिवारिक तथा सामाजिक सेवाओं से मुख नहीं मोड़ा जा सकता। इसमें साथियों के भिन्न विचार उलझन लाते हैं। उन्हें धैर्य, विनम्रता और मीठे वचनों से सुलझाकर व्यवहार सुधार लेना चाहिए।

18 जून 1998 *—हंसा सुधि करु अपनो देश, पृ. 63*

यह जो ब्रह्मचारी-साधुओं का समाज है, सदैव निगरानी रखने योग्य है। कोई जीवन्मुक्त होकर तो आया नहीं है। सब जीवों के मन में पंच विषयों के अध्यास हैं। संगदोष में छोटी या बड़ी बहकाव होती है। अच्छे कहलाने वाले लोग भी संगदोष में भूलें करते हैं। सबकी समझ बराबर नहीं रहती। अनुशासन के बिना समाज नहीं चल सकता। समाज पर अनुशासन न कर सके तो समाज भंग कर दे या स्वयं समाज छोड़ दे। यदि समाज को आधार दे तो उस पर कड़ा अनुशासन आवश्यक है।

13 मई 1996 *बसे आनंद अटारी, पृ. 49*

✡ ✡ ✡

अनुशासन का अर्थ अपशब्द का प्रयोग, क्रोध, उद्वेग, झिड़कना, उत्तेजना आदि नहीं है। किन्तु स्वयं सब तरफ से अनुशासित रहना और समाज के लोगों पर नजर रखना है। समाज के लोग कहीं बहकने न पावें। समाज को सही राय दें तो समझदार लोग अवश्य मानेंगे। जो नहीं मानना चाहेगा वह समाज को छोड़ देगा। अवज्ञापूर्वक समाज में रहने का हठ सहन नहीं होना चाहिए। भूल से अवज्ञा हो गयी हो और उसे छोड़ दिया गया हो तो सुधार होना निश्चित है।

14 मई 1996 *बसे आनंद अटारी, पृ. 49-50*

पूज्यवर गुरुदेव जी द्वारा लिखित पत्रों के नमूने

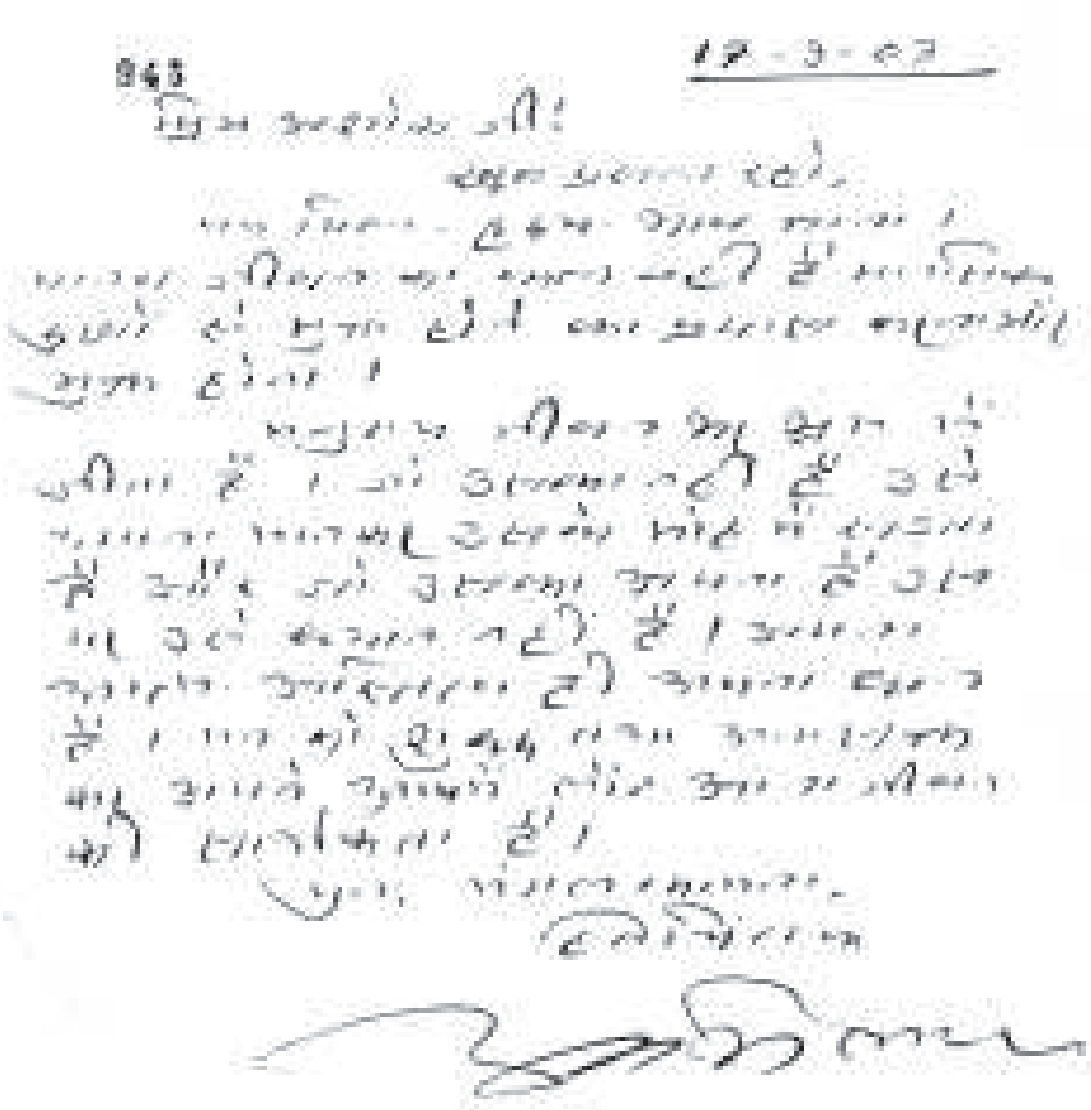

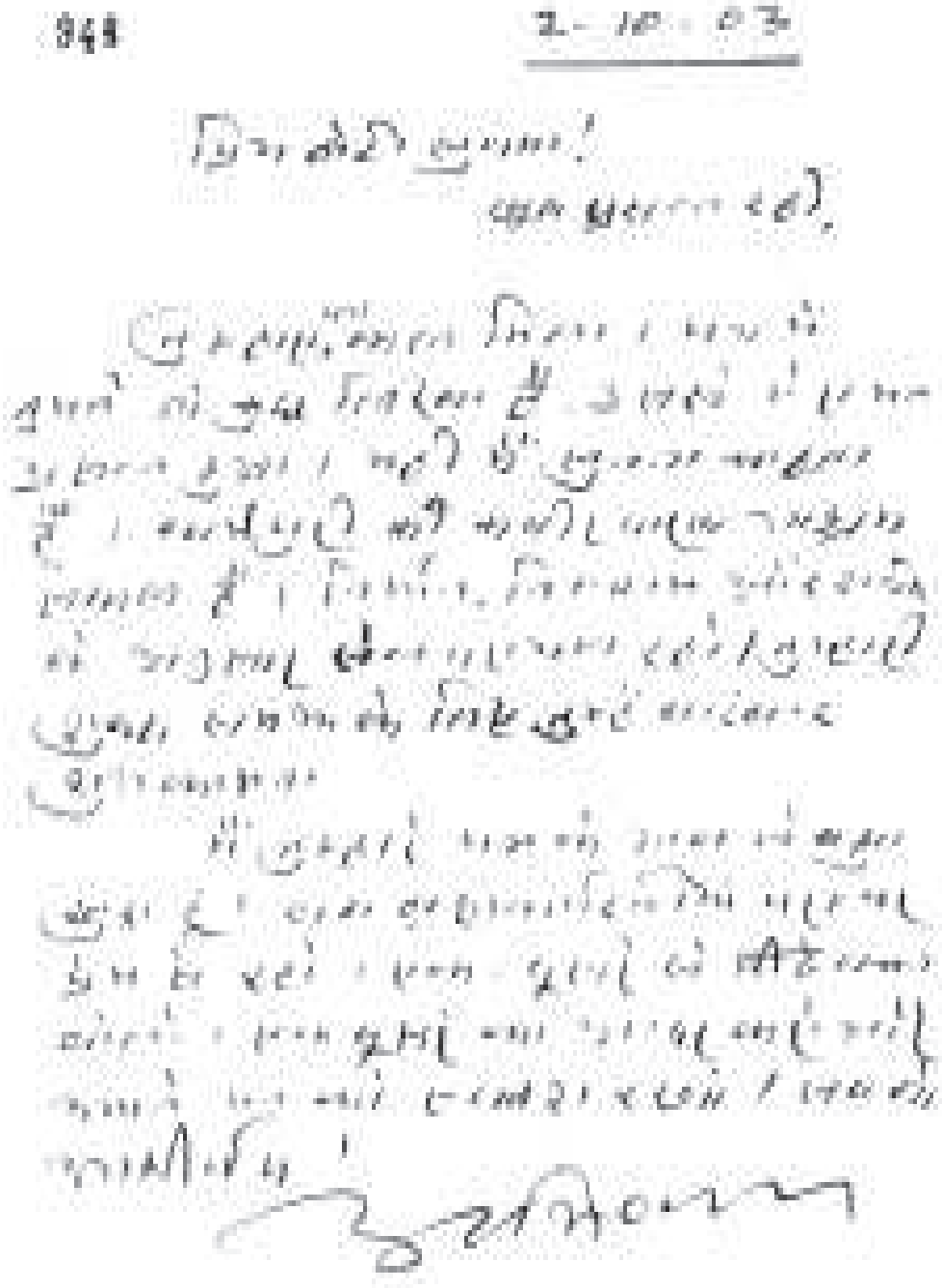

क्रम

- संत श्री अभिलाष साहेब एवं कबीरपंथ—*प. पू. आचार्य श्री धर्मस्वरूप साहेब जी* 15
- श्री संतराम मंदिर, नडियाद, गुजरात के महंत *श्रद्धेय श्री रामदास जी महाराज का सन्देश* 16
- लोक सेवा आयोग, उ. प्र. के पूर्व अध्यक्ष *श्री मलकीयत सिंह का संदेश* 17
- कर सका कोई नहीं ऐसा किये हो—*श्रद्धेय संत श्री ज्ञान साहेब जी* 18
- क्षितिज का जाज्वल्यमान मार्तण्ड—*श्रद्धेय संत श्री सजीवन साहेब जी* 20
- सद्गुरु अभिलाष साहेब : कथनी-करनी में अभेद—*धनेन्द्र साहू* 22
- लफ़्ज़ों से परे संत अभिलाष—*राकेश 'निराला'* 24
- हे गुरुदेव : आप समानहिं आप—*गुरुभूषण दास* 26
- मेरा मानना है—*गुरुक्षेम दास* 33
- परम पावन संत सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी को हार्दिक श्रद्धा-सुमन अर्पित—*धर्मदास* 37
- विवेक से सब कुछ होत है—*डॉ. श्रीपति कुमार यादव* 41
- प्रेम का चांटा—*मुकेशानन्द* 47
- सहजता का वैभव : गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब—*सूर्यनारायण* 48
- संत श्री अभिलाष साहेब : कबीर विचारों का महासागर—*आत्माराम साहू* 49
- मेरे गुरुदेव—*श्री अशोक साहेब* 51
- गुरुदेव का प्यार—*प्रमोद दास* 54
- मिट गया संसार है—*उचित दास* 55
- गुरुदेव जी का विराट रूप—*देवेन्द्र दास* 57
- ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया—*गुरुवेन्द्र दास* 60
- सद्गुरुदेव के प्रति मेरा संस्मरण—*साध्वी सुशीला* 66
- एक बार जो दर्शन पाता है—*साध्वी विजया* 68
- गुरुदेव की यादों में हृदय की वाणी—*अर्चना त्रिपाठी* 70
- तेरे द्वार खड़ा भगवान—*साध्वी जया* 72
- धरा का धरोहर : सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी—*गौरव दास* 74

- तेरा तुझको सौंपता—*वीरेन्द्र दास* 76
- तेरा दीद ही मेरा अरमान है—*सौम्येन्द्र दास* 78
- श्रद्धेय संत श्री अभिलाष साहेब : संस्मरण—*श्री पारसनाथ 'जिज्ञासु'* 81
- सन्त प्रवर अभिलाष साहेब की अद्‌भुत परख—*श्रीयुत श्रीपति* 84
- धरा क्या रहेगी, जब धरा में न होगे तुम—*श्री प्रकाश द्विवेदी* 86
- आदर्श जीवन के मसीहा—*राम दास* 89
- मेरे गुरुदेव—*विवेक दास* 93
- पारख बोध विधाता—*साध्वी राजेश्वरी* 95
- मोक्ष का आशीर्वाद—*पारुल* 96
- गुरुदेव जी के श्री चरणों में श्रद्धा का एक पुष्प—*साध्वी श्रद्धा* 97
- पूज्यपाद गुरुदेव की स्मृति में—*साध्वी समीक्षा* 99
- जिंदगी की दौड़ तुमने मेट डाली—*साध्वी समता* 103
- सद्‌गुरु की प्रेरणा—*सुश्री शोभा के. सी.* 105
- मेरा संबल टूट गया—*श्री भावसिंह हिरवानी* 106
- अभिलाष दास : अहंकार-विसर्जन का कलाकार—*रविनन्दन सिंह* 111
- सद्‌गुरुदेव के प्रथम दर्शन—*विमलनाभ श्रीवास्तव* 114
- करम ऐसा किया तूने—*महेश दास* 116
- हम हंसे जग रोये—*शिवप्रसाद मिश्र* 119
- गुरुदेव जी–नर से नारायण—*ब्रह्मचारी भूपेन्द्र* 122
- प्रतिभा के धनी—*श्री विचार साहेब* 126
- वीतराग ज्ञानमूर्ति युगपुरुष को विनम्र श्रद्धांजलि—*शीलेन्द्र दास* 128
- अलबेला मसीहा—*रामेश्वर दयाल* 131
- अभिलाष साहेब : एक सत्यान्वेषी सन्त—*डॉ. आत्माराम त्रिपाठी* 133
- मेरे प्यारे गुरुदेव जी—*जगन्नाथ दास* 134
- कुशल चिकित्सक—*आदर्श साहेब* 136
- जब गुरुदेव के प्रथम दर्शन पाये—*रणजीत कबीरपंथी* 139
- गुरुदेव से परिचय एवं गुरुदेव की ममता—*रामशिरोमणि मिश्र* 140
- तैं सुत मान हमारी सेवा—*गुरुरमन दास* 142
- और हम गुरुदेव से जुड़ गये!—*युवराज, पुष्पा, आदित्य, आयुषि* 143
- मेरे मन मंदिर के परम आराध्य गुरुदेव जी—*साध्वी सुमेधा* 145

- कीचड़ में कमल—*साध्वी विशाखा* 146
- तुम्हें ढूंढ़ रहा है प्यार—*साध्वी श्वेता* 147
- तेरे चरणों में स्वामी मेरा कोटि प्रणाम—*साध्वी स्मिता* 149
- पूज्यवर गुरुदेव जी को श्रद्धांजलि—*साध्वी सुप्रज्ञा* 151
- भटकते का सहारा—*रामशरन मौर्य* 152
- सद्गुरु अभिलाष साहेब जी : कुछ संस्मरण—*डॉ. उदयराम साहू* 154
- कच्चे वैराग्य से वापसी—*मस्तराम शिवहरे* 155
- जीवन बगिया महक उठी—*वेद प्रकाश* 156
- पूर्ण हुई मन की अभिलाषा—*विकास साहेब* 157
- साधु तहाँ तक भय करे—*अमलेन्द्र दास* 158
- जस कथनी तस रहनी—*राजेन्द्र दास* 159
- सद्गुरु अभिलाष साहेब को श्रद्धा-सुमन समर्पित—*संत डॉ. जितेन्द्र साहेब* 161
- सद्गुरु की याद में—*हीरेन्द्र दास* 163
- परम सद्गुरु की एक झलक—*रमेश दास* 164
- सद्गुरु की कृपा—*श्री भगवान साह* 167
- कथनी-करनी में अभेद—*अरुण कुमार वैश्य* 168
- श्रद्धा-सुमन की एक पाती गुरुवर के नाम—*डॉ. राजेन्द्र गदिया* 169
- सद्गुरु अभिलाष साहेब जी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व—*राजकुमार पटेल* 170
- सदाबहार ताजगी!—*यतीन्द्र दास* 174
- संतत्व में परिनिष्ठित कर्मठता के स्वरूप थे—*शुभ दास* 175
- चुम्बकीय शक्ति के धनी—*श्रीमती विजयलक्ष्मी मेहरोत्रा* 177
- परम पूज्य श्री सद्गुरुदेव जी की स्मृति—*ब्रह्मचारिणी लता* 179
- गुरुदेव को श्रद्धांजलि—*साध्वी समष्टि* 180
- प्रेम के धनी—*ब्रह्मचारिणी आशा* 181
- जीवन के कल्पतरु—*साध्वी शिखा* 182
- जैसा करते वैसा कहते—*ब्रह्मचारी अनिल* 183
- तेरी यादों में सुमन-श्रद्धा समर्पित—*ब्रह्मचारी चेतन* 185
- तेरे एहसान का बदला चुकाया जा नहीं सकता—*ब्रह्मचारी धनंजय* 187
- श्रद्धेय सद्गुरु-चरणों में समर्पित स्मृति सुमन मंजूषा—*आर. जे. मौर्य* 189
- मानवता का सूरज डूब गया – मेरे संस्मरण—*बरसाइत दास महन्त* 190

- मुझे मिला अविस्मरणीय 'क्षमादान'—*श्री श्याम सुन्दर सर्राफ* 193
- श्रद्धांजलि—*अशोक कुमार शुक्ल* 194
- परम पूज्य गुरुदेव जी की स्मृति में—*ब्रह्मचारी रामेश्वर* 195
- श्रद्धांजलि—*सत्यानन्द त्यागी* 196
- हीरे के पहल छप्पन, आपके अनंत—*ब्रह्मचारी शैलेन्द्र* 197
- गुरुदेव का प्रेम—*ब्रह्मचारी युधिष्ठिर* 198
- सदा करूं गुणगान—*शंकर दास* 199
- भाव भरे मानस के मोती—*अवधेश भूषण* 201
- जागत कीजे भोर—*रूपदास साहू* 204
- गुरु की दया, साधु की संगत—*देवसिंग साहू* 205
- परम पूज्य गुरुदेव जी की स्मृति में—*साध्वी वंदना* 207
- घनघोर आंधियों में जलना सिखा दिया—*पूनम* 208
- ऐसा गुरु कुछ कीजिये—*ब्रह्मचारी प्रह्लाद* 209
- मेरा संस्मरण—*विवेक दास* 211
- गुरुदेव का प्यार—*रंजीत* 212
- चाह गयी चिंता मिटी—*ब्रह्मचारी रवीन्द्र* 213
- एक अविस्मरणीय परिचय—*डॉ. सन्तोष कुमार मिश्र* 214
- निर्मोही निस्पृह—*सुभाष भाई मूलजी भाई पटेल* 215
- अध्यात्म जगत के सफल विज्ञानी—*ब्रह्मचारी भोला* 216
- ज्ञान का अमृत—*ब्रह्मचारी गणेश* 218
- चलता-फिरता विश्वविद्यालय—*साध्वी सुप्रिया* 220
- विलक्षण व्यक्तित्व के धनी—*धनदेवी भंडारी* 221
- तारों में एक तारा तू—*साध्वी विभूति* 222
- आप गुण भारा—*साध्वी स्मृति* 223
- अपने गुरुदेव को समर्पित—*श्रीमती मंजरी मेहरोत्रा* 224
- वो अंतिम दर्शन—*शारदा, बहन उमा के साथ* 226
- हृदयोद्‌गार—*विश्वनाथ कौशल* 228
- श्रद्धांजलि—*रामचन्द्र शर्मा* 229
- पूज्यपाद सद्‌गुरु श्री अभिलाष साहेब जी को विनम्र श्रद्धांजलि—*ज्ञानदास* 230
- पवित्र स्मृतियां—*चन्दूलाल कबीरपंथी* 231

- पारख ज्ञान प्रदाता गुरुदेव जी—*गोविन्द दास* 233
- गुरुदेव जी की यादें—*ब्रह्मचारी रोशन* 234
- गुरुदेव–साधकों के भगवान—*ब्रह्मचारी गीतेश* 237
- हमारे गुरुदेव जी—*जितेन्द्र दास* 240
- पूज्य गुरुदेव जी का जीवन एक खुली किताब—*गुरुजतन साहेब* 241
- गुरुदेव जी के ऋणी—*हरदेव राम* 242
- कुछ यादगार क्षण—*डॉ. दयालाल साहू* 243
- विलक्षण हृदय एवं प्रतिभा के धनी—*रविन्द्रनाथ यादव, एडवोकेट* 244
- याद में तेरी—*देवेन्द्र कुमार* 245
- सद्गुरुदेव की कृपा—*जी. सी. वर्मा* 246
- तेरे जैसा मीत नहीं—*ब्रह्मचारी करमचन्द* 247
- संत अभिलाष दास : यथा नाम तथा गुण—*आनन्द नारायण शुक्ल* 249
- पवित्रता का सुन्दर दर्पण—*ब्रह्मचारी अरविन्द* 250
- अब तो तुम मेरे हो गये!—*ब्रह्मचारी देव* 251
- प्रेम के सागर गुरुदेव जी—*ऋषीकेश गौतम* 253
- गुरुदेव जी से परिचय एवं उनकी कृपा—*गुरुशरण* 256
- मुमुक्षुओं के प्रकाशस्तंभ—*विनोद चक्रपाणि* 257
- श्रद्धांजलि—*टेकचंद गौतम* 258
- श्रद्धांजलि—*सी. पी. कबीर क्लब के सदस्य* 258
- सद्गुरु का संदेश—*ज्ञान ज्योतिदास* 259
- भ्रम का बंधन तोड़ दिया—*तुलसी साहू* 260
- मंगलमूर्ति गुरुदेव जी विदेही हो गये—*संत श्री टकसार साहेब* 261
- अपनी खुशबू बिखेर चले—*सुरेन्द्र कुमार टांक* 262
- A Tribute—Ras Behari 263
- A Great Loss To Mankind—Manoj Kumar Pochat 263
- श्रद्धांजलि 265—279
- गुरुदेव आपके चरणों में—*अर्जुन सिंह 'पटवारी'* 283
- पारख बोध प्रदाता—*गुरुबोध दास* 284
- शान्त स्वरूपी संत थे—*मननशील दास* 285
- निज पद कियो निवास—*नाथराम* 286

- सुमनांजलि—*सोहमदास* 287
- गुरुदेव को श्रद्धांजलि—*राम सेवक राय* 287
- बुझा दिया है प्यास—*दिनेन्द्र दास* 288
- आपके जाने के बाद—*कला कुमारी काबरा* 288
- जीना तुमने सिखलाया—*जितेन्द्र दास* 289
- शोक संवेदना—*डॉ. अमृत सिंह* 289
- पूज्य गुरुदेव जी के प्रति—*संत पंचम दास* 290
- श्रद्धा-सुमन—*संत श्री जितेन्द्र साहेब* 291
- सद्गुरु की महानता—*हीरेन्द्र दास* 291
- निर्लिप्त निराले गुरुदेव मेरे!—*यशेन्द्र दास* 292
- मिले मुक्ति मानवता को—*विकास साहेब* 293
- श्रद्धा सुमन समर्पित करूं—*श्रीमती तुलसी साहू* 294
- जाओ न गुरुदेव—*रुक्मिणी देवी* 294
- पाया न आप जैसा—*रामशरन मौर्य* 295
- विनय श्रद्धांजलि—*मोहन चतुर्वेदी* 295
- सद्गुरु के चरणों में—*लखन प्रतापगढ़ी शिक्षक* 296
- श्रद्धा-सुमन समर्पण—*डॉ. नीलमणि* 296
- गइल कहवां लुकाई–*हे सुगना—रामधारी सिंह पटेल* 297
- सद्गुरु ने जो राह दिखाई—*डॉ. त्रिलोकी सिंह* 298
- सद्गुरु श्री अभिलाष—*ब्रह्मचारी रामलाल* 299

संत श्री अभिलाष साहेब एवं कबीरपंथ

प. पू. आचार्य श्री धर्मस्वरूप साहेब जी

मत-पंथ एवं शास्त्रीय परम्पराओं की परवाह किये बिना सन्त महापुरुषों के जीवन वृत्त लेखक सन्त कवि नाभा की प्रशस्ति (आरूढ़ दशा होय जगत पर मुख देखी नाहिन भनी) के अनुसार किसी के पक्ष-विपक्ष नहीं अपितु जड़-चेतनात्मक दृश्य जगत एवं उसकी सामाजिक-धार्मिक समस्याओं को अपनी आंखों से देखने तथा अपनी निर्भ्रान्त निष्पक्ष चेतना से समझने और समाधान करनेवाले सन्तमत के आदि प्रवर्तक सद्गुरु कबीर के ऐसे बहवर्थक शब्द हैं जिस लौह चने को चबाना सामान्य क्या भाषाविद् विद्वानों के लिए भी कठिन है। कबीरपंथ तथा गैर पंथ जगत के विद्वानों ने टीकाएं लिखी हैं, जो मधवा की टीका विडौआ सिद्ध हुई हैं। बहुत-से शब्दार्थ तो अद्यावधि कबीर साहेब की प्रतीक्षा में हैं कि आप स्वयं आकर अभिप्राय को स्पष्ट करें, अन्यथा हम टीकाकारों की खींचा-तानी में पड़े हुए हैं। इसी क्रम में सद्गुरु कबीर, उनके सिद्धान्त, तत्त्व समीक्षा एवं साध्य-साधना के क्रियात्मक रूप सन्त श्री अभिलाष साहेब जी कबीरपंथ के लिए वरदान रूप में आये, जिन्होंने गम्भीरतम चिन्तन-मनन से मूल कबीर वाङ्मय पर पारख प्रबोधिनी टीका लिखी जो बहुत ही व्यावहारिक-सरल एवं सर्वगम्य सिद्ध हुई, जिससे कबीरपंथ ही नहीं अपितु गैर कबीरपंथ जगत के जिज्ञासु विद्वज्जन भी कबीरपंथ की तरफ आकृष्ट हुए। समाज में कबीरपंथ की लोकप्रियता बढ़ी, बहुत-से कल्याणार्थी साधक जन अपनी-अपनी मान्यताएं छोड़कर पारख सिद्धांत के प्रति समर्पित हो गये। सन्तप्रवर श्री अभिलाष साहेब जी ने बीजक पर पारख प्रबोधिनी व्याख्या, समालोचनात्मक ग्रन्थ रत्न कबीर-दर्शन, साधकों के लिए प्रबल प्रेरणा स्रोत मूल 'वैराग्य संजीवनी' आदि शताधिक मूल एवं भाष्य ग्रन्थों की रचना करके कबीरपंथ को गौरवान्वित किया। आज वे पूर्ण पुरुष सदेह तो हमारे सामने नहीं हैं, किन्तु उनके वैराग्यपूर्ण आदर्श, जीवनाचरण, प्रवचन, लेखनादि अनन्त काल तक कल्याणार्थी जिज्ञासु जनों के मार्गदर्शन करते रहेंगे।

जीवन ज्योति केन्द्र

संत कबीरनगर पूर्णिया कोर्ट, पूर्णिया, बिहार

श्री संतराम मंदिर, नडियाद, गुजरात के महंत श्रद्धेय श्री रामदास जी महाराज का सन्देश

अवधूत योगीराज श्री सतंराम मंदिर नडियाद में परम चिंतक, दार्शनिक, सर्जक, वक्ता, विद्याव्यासंगी परम पूज्य ब्रह्मलीन श्री अभिलाष साहेब 20 वर्षों से अविरत प्रतिवर्ष प्रवचन निमित्त पधारते थे।

वे वास्तव में सच्चे कबीर संप्रदाय के थे। श्री कबीर साहेब की बौद्धिक भावना को उन्होंने आत्मसात किया था। प्रवचनों के दौरान उनका नित्य सर्जन चलता था। 100 से अधिक ग्रंथों का उन्होंने सर्जन किया। सादगी, सदाचार, युक्ताहार-विहार उनकी दैनिक दिनचर्या थी।

उपदेशक के रूप में आश्रम निर्माण कर, अनेक कुंभों में शिविर-छावनी लगाकर उन्होंने ज्ञान-प्रसार किया।

यहां पधारते थे तब व्यक्तिगत सत्संग में भी उनके शास्त्रज्ञान, अनुभव का दर्शन होता था। वे समन्वयवादी, मिलनसार, नियम से जीवन जी कर हम सबको छोड़कर ब्रह्मलीन हो गये।

श्री संतराम मंदिर का संतवृंद, सत्संग मंडल उनको श्रद्धांजलि प्रदान करते हैं।

जय महाराज!

रामदास

श्री संतराम मंदिर, नडियाद

लोक सेवा आयोग, उ. प्र. के पूर्व अध्यक्ष श्री मलकीयत सिंह का संदेश

आदरणीय धर्मेन्द्र साहेब जी,

प्रणाम!

महान शख्सियत परम पूज्य संत श्री अभिलाष साहेब जी की स्मृति में स्मारिका प्रकाशित हो रही है, जानकर प्रसन्नता हुई।

गुरुदेव जी के दर्शन मुझे पहली बार 2003 में हुए थे, तब से अब तक उनका आशीर्वाद, प्यार-स्नेह मेरे और मेरे परिवार के सभी सदस्यों पर बना रहा और आगे भी बना रहेगा।

बचपन से गुरुग्रंथ साहेब से लगाव और उनमें संग्रहीत संत कबीर की वाणी के प्रति प्रेम एवं जिज्ञासा ने मुझे गुरुदेव जी से मिलाया। जब उनके करीब बैठकर संगत किया तो मेरे मन के सारे भ्रम कट गये। मैं पूरी तरह संतुष्ट हो गया।

गुरुदेव के पास प्रेम के अलावा कुछ नहीं था। उनका पूरा जीवन संत कबीर की बानी 'ढाई आखर प्रेम' की परिभाषा था। आप जीवनभर कबीर वाणी को जीते रहे और आगे बढ़ाते रहे। सबको जोड़कर साथ चलने की विशेष कला थी आप में।

गुरुदेव जी उच्च कोटि के विद्वान, ध्यानी, ज्ञानी और शब्द के मर्म को समझाने वाले बड़े गम्भीर स्वभाव के संत थे। मैं जब से उनके सम्पर्क में आया ज्ञान-ध्यान-समाधान के साथ हर समय तरोताजा रहना सीखा।

अन्त में परम पावन गुरुदेव के चरणों में नमन करते हुए स्मारिका के सफल प्रकाशन की शुभकामना करता हूं।

मलकीयत सिंह

कर सका कोई नहीं ऐसा किये हो

श्रद्धेय संत श्री ज्ञान साहेब जी

सोमवत्प्रियदर्शनः, विरति-विवेक सम्पन्न, पारखनिष्ठ, श्रद्धेय श्री अभिलाष साहेब जी का जन्म शुक्ल परिवार में भादो कृष्ण पक्ष द्वादशी 17.8.1933 ई. को ग्राम खानतारा, जिला—बस्ती, सिद्धार्थनगर (उत्तर प्रदेश) में हुआ था।

आपका पूर्व नाम रामसुमिरन था। पिताश्री का नाम दुर्गाप्रसाद और माताश्री का नाम श्रीमती जगरानी देवी था। आपकी स्कूली शिक्षा कुछ माह तक ही थी। आप में बचपन से ही भक्तिभावना के प्रबल संस्कार थे। महाराज श्री राम, महाराज श्री कृष्ण और शंकर जी के प्रति अनन्य श्रद्धा थी। गायत्री मंत्र का जाप और त्रिकाल संध्या करते थे।

भाइयों में बड़े होने के नाते जल्दी ही गृहस्थी व्यवहार का दायित्व आपके ऊपर आ गया था। उसे बड़े ही कुशलतापूर्वक निर्वाह किये। कुछ समय के पश्चात पिता श्री के द्वारा आराध्यदेव सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब जी का परिचय हुआ। सद्ग्रन्थ बीजक मिला। थोड़े ही समय में निष्ठापूर्वक बीजक पढ़ने से अंधविश्वास एवं अवैज्ञानिक मान्यताओं की परख शक्ति प्राप्त हो गयी। जिसका परिणाम यह हुआ कि जीवन जीने की दशा में आमूल परिवर्तन हो गया।

आप कार्तिक शुक्ल षष्ठी 12.11.1953 को गृह त्याग कर श्री कबीर मंदिर बड़हरा आ गये। वहां पर स्वरूपनिष्ठ सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब जी के द्वारा साधुवेष मिला। साधुवेष के बाद श्री कबीर मंदिर बुरहानपुर चले गये। वहां कुछ काल रह कर फिर बड़हरा वापस आ गये।

साधुवेष में आने के कुछ वर्षों बाद आपकी प्रथम रचना वैराग्य संजीवनी है। जो पद्य में है। भाषा सरल, स्पष्ट और प्रवाहमय है। उसमें जीवन के अथ से इति तक अर्थात शुरू से मोक्ष तक का स्पष्ट वर्णन है। जिज्ञासु जगत के अनेक प्रश्नों का संतोषजनक बौद्धिक समाधान है।

'जानब जनावब से रहित ऐसा सुदिन कब आयेगा।'

—वैराग्य संजीवनी

आपकी सेवा, स्वाध्याय और साधना में अनन्य निष्ठा थी। श्रमनिष्ठा भी बहुत ही प्रशंसनीय थी। उनकी बीजक टीका जब पहली बार काशी में छप रही थी उस समय मैं परमार्थ निकेतन ऋषिकेश से कुछ समय के लिए वहां गया था। श्री साहेब जी भोजनोपरान्त बायीं करवट लेटे-लेटे प्रूफ पढ़ते थे। कुछ देर बाद फिर दायीं करवट लेटकर प्रूफ पढ़ते थे। फिर उठ कर काम में लग जाते थे। इतनी देर ही दोपहर में विश्राम करते थे। भोजन सादा और स्वल्प मात्रा में लेते थे। श्री साहेब जी के श्रम को देखकर मैंने विशेष आग्रह और बार-बार निवेदन किया कि आप दूध अवश्य लें, जिससे मस्तिष्क में गर्मी न हो। स्वस्थ रहने पर अधिक काम होगा। मेरे निवेदन को श्री साहेब जी साथियों की ओर देखकर संकोच से स्वीकार किये।

वैराग्य संजीवनी के बाद फिर तो क्रमशः एक सौ तीस ग्रन्थों की रचना हुई। जिसमें बीजक व्याख्या (दो भागों में), कबीर दर्शन, संत कबीर और उनके उपदेश, संसार के महापुरुष, रामायण रहस्य, गीतासार, उपनिषद् सौरभ, वेद क्या कहते हैं?, बुद्ध क्या कहते हैं?, लाओत्जे

क्या कहते हैं?, शंकराचार्य क्या कहते हैं?, जगन्मीमांसा, ब्रह्मचर्य जीवन, स्त्री बाल-शिक्षा, कल्याण पथ, महाभारत मीमांसा आदि प्रमुख हैं।

आपकी रचनाओं का जिज्ञासु जगत में बहुत बड़ा सम्मान है। सम्प्रदायवाद एवं जातिवाद के संकुचित विचारों से सर्वथा मुक्त हैं। उनमें विश्वबन्धुत्व की भावना, निर्विकार, निर्मल, आत्मनिष्ठ जीवन जीने पर बल एवं पूर्णरूपेण बौद्धिक संतोष है। आपके द्वारा साहित्य के माध्यम से जो सेवा हुई है वह कबीरपंथ में शीर्ष स्थान रखती है "कर सका कोई नहीं ऐसा किये हो।"

जहां एक ओर आपके द्वारा विपुल ग्रन्थों की रचना हुई वहीं दूसरी ओर अनेक प्रान्तों में अनेक आश्रमों का निर्माण हुआ जिससे अनेक साधकों को साधनानिष्ठ जीवन जीने का आधार मिला। साधुवेषधारियों में एक-से-एक दिव्य गुणों से विभूषित संत हैं। आपके द्वारा एक और सर्वाधिक आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण क्रान्ति हुई। साधनानिष्ठ जीवन जीने वाली नारियों के लिए कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रमों का निर्माण हुआ।

सर्वप्रथम छत्तीसगढ़ में पोटियाडीह में 'कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम' बना जो धमतरी जिला में है, फिर मूरा में कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम बना। धरमपुरी जिला बड़ौदा, गुजरात में है। वहां पर विशाल कबीर पारख आश्रम बना। यहां अनेक साध्वियां रहकर साधनानिष्ठ जीवन जीती हैं। इतना ही नहीं उनका दिव्य जीवन नारी जगत के लिए एक अनुपम आदर्श जीवन है और उनमें साहस का प्राण फूंककर ऐसा महान जीवन जीने की प्रेरणा देता है। आश्रम की व्यवस्था से वे स्वयं अच्छी तरह से संचालित हैं।

महापुरुष अपनी कृतियों-कृत्यों से अमर हो जाते हैं। आपका दिव्य जीवन ही आपकी शिक्षा है। जिसे देखकर बहुत कुछ पढ़ा या समझा जा सकता है। आपकी कथनी, करनी और रहनी तीनों एक सूत्र में बंधे थे। "मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्" का जीता-जागता उदाहरण था। आपके जीवन में श्रद्धा और बुद्धि, ज्ञान और आचरण का सुन्दर समन्वय दिखता था।

आपका व्यक्तित्व बहुत विशाल था। अन्तःकरण करुणा, प्रेम, स्नेह और श्रद्धा से लबालब भरा था। सबको प्यार मिलता था। सभी ऐसा सोचते थे गुरुदेव जी हमें बहुत प्यार देते हैं। महापुरुषों के जीवन से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हम भी अखण्ड पुरुषार्थ करके ऐसा महान जीवन जी सकते हैं।

संत सम्राट सद्गुरु कबीर साहेब ने कितना सत्य और तथ्यपूर्ण कहा है—*आया है सो जायेगा, राजा रंक फकीर। एक सिंहासन चढ़ि चला, एक बंधा जंजीर*।

प्रकृति के इस शाश्वत नियम में आज तक कोई अपवाद नहीं हुआ है। संसार की स्थिति के संबंध में शत प्रतिशत सत्य है कि—

उठ जायेंगे खिलाड़ी एक एक करके।
चौसर बिछी रहेगी बाजी बनी रहेगी।

26 सितम्बर, 2012 दिन बुधवार को प्रातः तीन बजे के बाद प्रारब्धांत हो गया। सच कहा गया है— "मोक्ष काम सब पूरा जिनका आना-जाना बंद पड़ा।"

26 सितम्बर को सुबह पांच बजे श्री आदर्श साहेब जी के द्वारा काठमाण्डू (नेपाल) में यह दुखद समाचार मिला। उसी दिन प्रातः 10 बजे 15 मूर्ति नेपाल से चलकर 27 सितम्बर को 9 बजे इलाहाबाद संस्थान पहुंचे। वहां हजारों की संख्या में लोग उपस्थित थे। 28 सितम्बर, 2012 को समाधि हुई। तत्पश्चात श्रद्धांजलि का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आपके प्रारब्धांत से कबीरपंथ ही नहीं संत-जगत की एक अपूरणीय क्षति हुई है। आप जीते जी शरीरासक्ति से ऊपर उठकर आत्मस्थ थे। ऐसे महामहिम वीतराग, पारखनिष्ठ सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी के प्रति हृदय से शत-शत नमन करते हुए सादर श्रद्धांजलि समर्पित है।

श्री कबीर आश्रम, करखड़ी, वडोदरा, गुजरात

क्षितिज का जाज्वल्यमान मार्तण्ड सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब

श्रद्धेय संत श्री सजीवन साहेब जी

सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी पारख सिद्धान्त के महान क्रान्तिकारी जाज्वल्यमान प्रकाशस्तम्भ थे। जो स्वयं अंगार की तरह जलते हुए समाज को प्रकाशित किये। अध्यात्म ज्ञान में पारख सिद्धान्त को व्यक्त करने में आपकी शैली विलक्षण व अनोखी है। आपने अपनी प्रखर प्रतिभा द्वारा समाज को जो अनुपम कृतियां दी हैं वे बड़ी ही विलक्षण, सारगर्भित एवं हृदयस्पर्शी हैं। उनका उद्गम ऐसे स्थल से हुआ, जो कथनी, करनी, रहनी की एकरूपता से ओत-प्रोत है। आध्यात्मिक क्षेत्र में पारख सिद्धान्त के साहित्यों द्वारा बहुत बड़ी क्रान्ति हुई। सद्गुरु कबीर के बाद पारख सिद्धान्त को सन्तों ने सुरक्षित रखा। जैसे गया के श्री रामरहस साहेब जी ने पंचग्रन्थी, श्री गुरुदयाल साहेब जी फतुहा ने कबीर परिचय, श्री पूरण साहेब जी बुरहानपुर ने बीजक की टीका त्रिज्या, सद्गुरु श्री विशाल साहेब जी बाराबंकी वाले ने विशाल वचनामृत एवं अन्यान्य बहुत-से सन्तों ने निष्पक्ष निर्णय के साहित्यों की रचना कर अपने आचरण, प्रवचन व लेखन द्वारा समाज का बड़ा उपकार किया। इसके बाद सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब ने करीब एक सौ तीस ग्रंथों की रचना कर विशेष प्रचार-प्रसार किया। आपकी सारी पुस्तकें निष्पक्ष ज्ञान से ओत-प्रोत हैं। कहीं भी भ्रम की गुंजाइश नहीं है। आपके कार्यकाल में पारख ज्ञान का पानी के ऊपर तेल की नाईं काफी फैलाव हुआ। कबीरपंथ तथा अन्य मतों में भी जो लोग पारख सिद्धांत को नहीं समझते थे वे लोग भी सद्गुरु कबीर के सिद्धांत को समझने लगे।

बहुत-से लोग अपने संप्रदाय, मत के विरुद्ध सत्य निर्णय की बात सुनकर तिलमिला जाते थे और कबीरपंथियों से घृणा कर लेते थे, नास्तिक भी कहने लगते थे क्योंकि लोगों के तथाकथित ईश्वर, ब्रह्म, खुदा, गॉड, देवी-देवता, मिट्टी, पानी, पत्थर, भूत, प्रेत, कल्पित परोक्ष मानन्दी को वे नहीं मानते हैं। इसलिए कबीरपंथियों से दूर रहते थे। परन्तु आपकी जड़-चेतन तथा परोक्ष मानन्दी के विषय में निर्णय करने की इतनी अद्भुत शैली थी कि लोग उसे सुनकर स्वीकार कर लेते थे। विधि-निषेध की विधा सही होने से लोग दुख नहीं मानते थे। इतनी सरलता व हमदर्दी के साथ अन्य लोगों के साथ पेश आते थे कि बहुत-से लोग आपकी वाणी सुनकर व पुस्तकों को पढ़कर आपको गुरु स्वीकार कर लेते थे।

मेरे जीवन में साहेब जी का अत्यधिक प्रभाव पड़ा। मैं राम, शिव और हनुमान जी का भक्त था। गले में 108 दाने की माला पहनकर स्कूल में पढ़ने जाया करता था। नित्य पूजा-पाठ करता था। सन् 1959 में श्री सुन्दर साहेब जी बकौली वाले मिले जिनसे कबीरपंथ में पारख सिद्धांत की ओर मेरा झुकाव हुआ। उन्होंने वैराग्य संजीवनी का पद 'साधू हुआ इस हेतु से' गाकर सुनाया। उसका ऐसा प्रभाव पड़ा कि मुझे वैराग्य जीवन की प्रेरणा मिल गयी। फिर वैराग्य संजीवनी पढ़ने के लिए मिल गयी। तभी से अटूट श्रद्धा साहेब जी के प्रति हो गयी थी। परन्तु दर्शन का सुअवसर नहीं मिल सका था।

सन् 1960 का समय रहा होगा। जब सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब जी बड़हरा की जमात, धानेपुर कबीर आश्रम पर गयी। उस समय श्री अभिलाष साहेब जी

का भी पदार्पण हुआ था। मेरे पूछने पर पता चला। तब मेरी विशेष श्रद्धा उमड़ पड़ी। उसी समय गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी से आदेश लेकर साथ हो लिये। फिर मुझे कुछ दिनों में विवश होकर घर वापस जाना हुआ। जब 1963 ई. में एकदम घर छोड़कर आया तब से विशेष गुरु जी के साथ व साहेब जी के सान्निध्य में रहने का अवसर मिला।

साहेब जी के लेखन, प्रवचन, आचरण तथा प्रवचन की शैली का विशेष प्रभाव मेरे जीवन पड़ा। उन्हीं का कृपाप्रसाद है जो मैं यहां तक पहुंच पाया। मेरा अलग कार्यक्रम होने से ज्यादा नहीं मिल पाता था। परन्तु साल में दो-चार बार अवश्य ही दर्शनार्थ पहुंच जाता था। इस दास पर आपका अमिट उपकार है। जिसे मैं जीवनपर्यन्त भूल नहीं सकता।

आप सर्वगुण सम्पन्न, परम वैराग्यवान, सात्विक वेष-भूषा, यम-नियम के विधिवत पालक, पूर्ण समाधिनिष्ठ, कर्तव्यपरायण, समय का पालन करने वाले, जिज्ञासुओं के प्राण, महान व्यक्तित्व के धनी थे। रहन-सहन, खान-पान बिलकुल सादा था। अद्भुत नयन, स्थिर स्वभाव, प्रवचन काल में भी स्थिरता का भाव रहता था। कहीं भी हाथ-पैर में भाव-भंगिमा से चंचलता प्रकट नहीं होती थी। ऐसी सौम्य मूर्ति थी, जो कि लोगों को देखते ही मुग्ध कर लेती थी। विविध विषयों पर विस्तृत विवेचक, समन्वयवादी थे। किसी की मान्यता पर कभी ठेस नहीं पहुंचाया। किसी से विशेष भूल हो जाने पर एकान्त में बैठाकर समझाना, जिससे उसके ऊपर प्रभाव पड़ जाता था और वह सुधार का संकल्प ले लेता था।

साधना में कठोर, हृदय से मृदु, वाणी में कोमलता, जिज्ञासुओं को हृदय से लगा लेना, यह आपका स्वभाव था।

आपके द्वारा कबीर पारख संस्थान की स्थापना हुई जिससे देश-विदेश के विभिन्न क्षेत्रों से सन्त-भक्त आकर आपके दर्शन-पर्शन-सत्संग से लाभ लेते हैं। यहां पर समय-समय पर प्रोग्राम होते रहते हैं। विवेकी साधु-सन्त की निर्माण स्थली है। यहां अच्छे साधु तैयार होते हैं जो सत्य सिद्धान्त का प्रचार-प्रसार करते रहते हैं।

लोगों में भ्रांति थी कि कबीरपंथी ध्यान नहीं करते हैं। परन्तु आप शुरू से तो ध्यानाभ्यास करते ही रहे और सामूहिक ध्यान की प्रक्रिया चलायी, जो कि इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश), नवापारा (राजिम, छत्तीसगढ़), सूरत (गुजरात) और भी जगह-जगह पर ध्यान शिविर लगाये जाते हैं। यह सब साहेब जी की कृपा है।

कल्याणार्थी महिला जिज्ञासुओं के लिए आपकी बहुत बड़ी देन है, जो सैकड़ों साध्वी ब्रह्मचारिणियां आपके निर्देशन में साधना करती हैं। जगह-जगह उनका आश्रम भी बन गया है। जहां पर नियमित रूप से साधना करती हैं।

इलाहाबाद, पारख सिद्धान्त के साहित्यों का बहुत बड़ा केन्द्र है जहां प्रकाशन, वितरण व प्रचार हो रहा है। निःशुल्क चिकित्सालय भी चलता है। सैकड़ों साधु साधना कर कल्याण कर रहे हैं। यह सब आपकी महती कृपा का प्रतिफल है। हीरे के अनेक पहल की नाईं आपकी छवि रही, जो हर तरफ से चमकीला, सुन्दर, सुरम्य, प्रेरणाप्रद रहा। जितना कहा-सुना-लिखा जाये उतना कम ही रहेगा। आपके गुणों को लिखने के लिए कलम व बखान के लिए वाणी सक्षम नहीं। केवल आपके सर्वगुणों की सम्पन्नता को हृदय से स्वीकार करता हूं। ऐसे पुरुषों का मिलना बड़ा मुश्किल है।

हम आपके चरणों में शत-शत नमन करके श्रद्धांजलि ही समर्पित करते हैं। हृदय से जीवनपर्यन्त उपकार को भूल नहीं सकते हैं, न भुलाया जा सकता है। सारे अध्यात्म प्रेमी सत्य जिज्ञासु कल्याणार्थी आपसे उपकृत-ऋणी रहेंगे। इस ऋण को यदि अपने जीवन में उतार लिया जाये, आपके निर्देशानुसार चलें तभी चुकाया जा सकता है। आपका जीवन ही समाज के लिए रहा। आप अपना काम करते हुए निरन्तर जनकल्याण में तन-मन से लगे रहे और उत्तम आदर्श समाज में छोड़ गये।

कबीर आश्रम, मिरचाई वाड़ी
आफिसर्स कालोनी, कटिहार, बिहार

सद्गुरु अभिलाष साहेब : कथनी-करनी में अभेद

धनेन्द्र साहू

ऐसे महामनीषी जिनके सान्निध्य में तथा जिनके प्रेरणादायी विचारों से मानव जीवन के उद्देश्यों एवं जीवन में करने योग्य कर्मों एवं आचरण-व्यवहार के विषयों को जाना-समझा है, उनके संबंध में कुछ भी लिख पाना बहुत ही मुश्किल काम है।

मैं अपने आप को बहुत ही सौभाग्यशाली समझता हूं कि परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी जैसे महान संत पुरुष का दीर्घ समय तक मुझे स्नेह एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। विभिन्न अवसरों पर अनेकों बार वे मुझे अलग से बैठाकर धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक विषयों पर चर्चा करते तथा मार्गदर्शन देते। उनका आभामंडल इतना ऊर्जावान था कि उनके सान्निध्य में बैठकर चर्चा करने पर मैंने हमेशा यह पाया कि वातावरण में पूरी तरह शांति, शीतलता एवं पवित्रता व्याप्त हो जाती थी। उनसे प्राप्त स्नेह एवं मार्गदर्शन आजीवन अविस्मरणीय रहेगा। परम पूज्य गुरुदेव जी के सत्संग से चारों तरफ का वातावरण अपने आप आध्यात्मिक हो जाता था। सभी श्रद्धालु श्रोतागण सद्गुरुदेव के प्रवचनों को बहुत ही ध्यान से सुनते तथा आत्मलीन हो जाते थे। सद्गुरुदेव जी अपने प्रवचनों में कभी किसी दूसरे धर्मों, पंथों, मजहबों, धर्मगुरुओं या धर्मप्रमुखों के विषय में कोई गलत टिप्पणी या नकारात्मक बातें नहीं करते थे। रूढ़िवाद, अंधविश्वास, चमत्कार, टोने-टोटके आदि विषयों पर सद्गुरु श्री कबीर साहेब जी की तरह लोगों को बहुत सरल एवं सुबोध तरीके से भ्रम मिटाकर सही बातों का ज्ञान कराते। व्यक्ति, परिवार एवं समाज के लिए एक दूसरे के प्रति कर्तव्य एवं व्यवहार के विषय में भी सद्गुरुदेव साहेब जी द्वारा बहुत ही अच्छा मार्गदर्शन दिया जाता रहा। सद्गुरु श्री कबीर साहेब जी के बीजक एवं विभिन्न ग्रंथों को सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी ने बहुत सरल एवं सुबोध भाषा में टीका करके करोड़ों लोगों तक श्री कबीर साहेब की वाणी को पहुंचाया जो कि इनके पूर्व अब तक किसी भी संत के द्वारा संभव नहीं हो पाया था। सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी ने पूरे देश में भ्रमण कर अपने प्रवचन एवं साहित्य के माध्यम से कबीर साहेब की वाणी को जन-जन तक पहुंचाया एवं करोड़ों जनता को अपना ज्ञान लाभ करवा कर उनके जीवन को ज्ञान से आलोकित किया एवं पथ प्रदर्शन किया।

हम छत्तीसगढ़ वासी अत्यंत सौभाग्यशाली हैं कि उनका काफी अधिक समय प्रदेशवासी कबीरपंथियों एवं अन्य जिज्ञासु लोगों को मिला तथा उनके सान्निध्य में सभी ने अपना जीवन धन्य किया। पूरे छ. ग. प्रदेश में विशेषकर मैदानी ग्रामीण क्षेत्र में श्री अभिलाष साहेब जी को मानने वाले एवं प्रशंसकों की संख्या बहुत अधिक है।

सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी एक उत्कृष्ट धर्म-दार्शनिक, विरक्त, आत्मानुभूति से सम्पन्न उच्च कोटि के मनीषी थे। तर्कबुद्धि, नैतिक सदाचार तथा आत्मानुभव की अद्भुत त्रिवेणी का उनमें संगम था। उनकी कृतियां मात्र पारख सिद्धांत एवं कबीरपंथ के लिए ही नहीं बल्कि समस्त मानव जिज्ञासुओं के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। उनके द्वारा रचित ग्रंथ युगों-युगों तक आने वाले

मानव समाज को पारखी बनाकर उनके जीवन से अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करते हुए ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करते रहेंगे।

सद्गुरुदेव श्री कबीर साहेब का साक्षात् सान्निध्य वर्तमान के लोगों के लिए तो असंभव ही था परन्तु सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी के पास सत्संग में बैठने, उनकी वाणी सुनने से भक्तजनों को कबीर साहेब की कमी नहीं होती थी, और उनमें ही सभी को कबीर साहेब की छवि दिखाई देती थी।

अपने जीवनकाल में अनेक महापुरुषों से मिलने का अवसर मिला, परन्तु सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी से प्रथम मुलाकात ने ही मुझे अत्यन्त प्रभावित कर दिया था। सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी में कथनी और रहनी में कोई भेद नहीं होता था। एक संत महापुरुष में जितने भी सद्गुण होने चाहिए उनके वे साक्षात् प्रतिमूर्ति थे। अन्यों से उनको मैंने अत्यन्त विलक्षण और अति विशिष्ट महात्मा के रूप में पाया। उनका अत्यन्त सादगीपूर्ण रहन-सहन, महान विद्वान होते हुए भी पूर्णतः अभिमान रहित व्यवहार, इतनी बड़ी संख्या में उनके भक्त एवं अनुयायी होने के बाद भी वे पूर्णतः विरक्त रहे। सभी के प्रति उनके हृदय में करुणा, प्रेम एवं स्नेह की पराकाष्ठा दिखाई देती थी। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन मानव समाज के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया।

सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी के लाखों भक्तों एवं अनुयायियों को यह किंचित मात्र भी कल्पना नहीं थी कि इतनी जल्दी वे अपने स्वरूप में लीन हो जायेंगे। परन्तु नियति को यही मंजूर था। उनके नहीं रहने से भक्तों एवं अनुयायियों के हृदय एवं जीवन में एक जबरदस्त रिक्तता आ गयी है। यह प्रश्न भविष्य के गर्भ में है कि पारख सिद्धांत के इस उत्कृष्ट मनीषी संत एवं सच्चे सद्गुरु की रिक्तता की प्रतिपूर्ति कब और किस तरह हो सकेगी।

ऐसे धर्म दार्शनिक, सच्चे सद्गुरु एवं महान मनीषी को शत-शत सादर नमन। साहेब बन्दगी!

पूर्व मंत्री म. प्र. एवं छ. ग. शासन

जीवन में सार क्या है? आत्म-संतोष। यह बहुत सरल है। समझना है और सावधानीपूर्वक ठहरना है। लोभ-मोह को छोड़ना ही इसकी परम साधना है। अनंत सुख, निर्भय सुख, परमानंद पद, अक्षय पद आदि शब्दों में जिसकी व्याख्या की जाती है वह क्या है? आत्म-संतोष। आत्म-संतोष में ही पूरा जीवन शीतल होता है। इसके लिए प्रेरक तथा यथार्थ उपदेष्टा सद्गुरु तथा संत की आवश्यकता है। जो स्वयं आत्म-संतुष्ट है उसी की अमोघ प्रेरणा पाकर साधक इस दिशा में बढ़ सकता है। बाहर सब कुछ क्षणिक है। आत्म-संतोष स्थिर है।

(पूज्य गुरुदेव जी : ऊंची घाटी राम की)

लफ्ज़ों से परे संत अभिलाष

राकेश 'निराला'

एक सरापा विलक्षण संत के बारे में लिखने बैठा हूं तो मैं सोच रहा हूं यादों का कौन सा सिरा कहां से उठाऊं? कहां जोड़ूं? किन लफ़्ज़ों से गिरह लगाऊं... एहसासों के धागों से लिपटा हर्फ़-हर्फ़ चुनता-बुनता मैं क़लम का कच्चा नादान जुलाहा, या तो समझ नहीं पा रहा...या बयां को लफ्ज नहीं, या यूं कहिये एहसास इतने आगे हैं कि लफ्ज कम पड़ जा रहे हैं ...

मेरी यादों में बरसों पहले का सिमटा वो लम्हा— "जब मुझे मेरे बाबूजी अयोध्या में गुरु श्री रामसूरत साहेब जी के पास ले गये थे और उनसे दीक्षा दिलवाई थी ...उस वक़्त मुझे दीक्षा के बारे में कुछ भी पता न था। मुझे वहीं सुनने में आया—कोई संत अभिलाष इनके शिष्य हैं जो इस वक़्त के उनके बहुत शिष्यों में सबसे आगे हैं... क़ाबिलियत में, वक़्त की तरह चलते हैं।

बाद के दिनों में मुझे अभिलाष साहब से रूबरू होने का मौक़ा मिला और सुनी-सुनायी बातों के तस्वीर की हक़ीक़त तलाशने में जुट गया ...मुझमें समझ ही कितनी थी ? मैं किसी आधे-अधूरे पेंटिंग की तरह ही था, उम्र की नादानी भरी पड़ी थी।

आपको पढ़कर जाने कैसा लगे? मगर हकीक़त यह है कि बाबूजी और हमारे टीचर की आंखों में धूल झोंक कर अकसर अपने दोस्तों के साथ सिनेमा देखने भाग जाता था और सिनेमाई भाषा में लिखूं तो "मैं उस वक़्त सदी के महानायक अमिताभ बच्चन जी से काफ़ी मुत्तासिर था..."

अब इसे मेरी बचकाना हरकत कह लीजिये या कुछ और ...कि अभिलाष साहब में न जाने क्यूं मैं अमिताभ बच्चन जी का अक्स देखा करता था। चेहरा तो वैसा नहीं था, बस उनसे मिलती-जुलती आवाज़, अंदाज़ और बोलने की शैली ...

वक़्त गुज़रने के साथ-साथ मुझमें थोड़ी-बहुत गहराई आई, और मैं अभिलाष साहब के थोड़ा और ज़्यादा क़रीब हुआ और बचपना साहब रफ्ता-रफ्ता दूर छूटते गये।

विद्वता की गहराई से, आम टूटी-फूटी ज़िन्दगी को, वेद-शास्त्रों के अंधेरे-उजालों के बीच का फर्क़ महसूस करानेवाले सहजभाषी संत अभिलाष मेरे अन्दर उतरते चले गये ..

अब मैं घर आकर उनकी किताबें और रिकॉर्डेड प्रवचन को आत्मसात करने लगा ...मेरे बाबूजी दिन-रात उनको ही सुनते-गुनते थे ...तो ज़ाहिर तौर पर, इस माहौल का असर मुझ पर भी होना था और उम्र बढ़ने के साथ-साथ मुझे उनको समझने में और भी आसानी होने लगी।

मैं लेखक बनने का ख्वाब देखनेवाला किशोर, लगभग दुनिया के जुदा-जुदा ज़्यादातर दार्शनिकों को खंगालने लग गया था चाहे वह किसी भी भाषा की क़िताब का हिन्दी अनुवाद क्यूं ना हो ?

तहेदिल से कहता हूं दौर से काफी आगे चल रहे अभिलाष साहब को मैंने, फिर किसी और दार्शनिक से जोड़कर नहीं देखा, क्यूंकि मुकम्मल पारख सिद्धांत का ख्याल रखनेवाले साहेब कबीर के बाद वे पहले दार्शनिक थे।

उनके ही पारख सिद्धांत ने मुझे सम्बुद्ध, जाग्रत, और होश में रहने की कला से वाक़िफ़ कराया।

'खुद की नज़र खुद का नज़रिया'—मैं हर ज़गह इस्तेमाल करने लगा ...मैं कहीं भी जाता बिना चश्मे के नहीं जाता था। मैं हमेशा "पारख का चश्मा" लगाये घूमता था, आज भी घूमता हूं और अभिलाष साहब से मुफ्त में मिले इस चश्मे की सलाह औरों को भी देता हूं, देता रहूंगा। वैसे मुझे इस चश्मे की आदत पड़ गयी है। बिना इसके, ज़रा कम दीखता है।

दिलचस्प यह है कि बौद्धिक सॉफ्टवेयर के इस चश्मे में टूटने-फूटने का डर ज़रा भी नहीं है ...

यह चश्मा मेरे सिनेमा जगत के लिए अब तक काफ़ी कामयाब साबित हुआ है क्योंकि आप लोगों को शायद मालूम होगा—यहां अन्धविश्वास का अंधेरा सदियों से कितना क़ायम है!

किसकी मज़ाल है कि शुक्रवार को छोड़कर किसी और दिन कोई फिल्म रीलीज़ कर दे?... सोचिये, यहां पारख कंपनी के इस चश्मे की कितनी ज़रूरत होगी? हम जैसे लोगों के लिए अभिलाष साहब की यह देन बहुत मायने रखती है...

मुझे आज उनके हमेशा-हमेशा के लिए विदा हो जाने पर काफ़ी कमी ख़ल रही है "रौशनी दूर से ही सही, आ तो रही थी"

उस अपार रौशनी से सचमुच आज हम सब महरूम हो गये हैं...

किताबें, किताबें होती हैं.. गुरु, गुरु ..

मैं और भी ज्यादा बदनसीब इस मामले में रहा कि जहां समन्दर का समन्दर भरा पड़ा था वहां से दुनियवी ग़फलत में पड़कर मैं चंद क़तरा भी नहीं चुन पाया, अफ़सोस .....

लेकिन खुशनुमा ख़्याल यह कि जाग्रत मृत्यु की यह मिसाल अच्छी लगी।

कुछ दार्शनिक कहते हैं—जो जाग्रत मृत्यु को प्राप्त होते हैं उन्हें मृत्यु और जन्म-मरण से परे समझा जाता है...

फिल्म नगरी, मुंबई

सत्य में वो समा गया!

राकेश 'निराला'

इक नूर सा वो बहा गया, इक रंग सा बिखरा गया।
वह इश्क से लबरेज था, रूहों को वह छलका गया॥
वह जिंदगी को जीतकर, जीवन को जीना सिखा गया।
वह दे गया खुद को हमें, वह खुद को हममें बसा गया॥
जब आया था, कैसी फ़िज़ां थी? देखो अब कैसी फ़िज़ां?
करो याद तब कैसी हवा थी? आज है कैसी हवा?
जाने कहां से वो आया था?, जाने कहां वो चला गया?
जलती रहेगी सदा-सदा, लौ हममें ऐसी जला गया॥
कहने को बस वो चला गया, सुनने को बस वो नहीं रहा।
न वो आया था, न वो जायेगा, इस सत्य में वो समा गया॥
जैसा भी था, वो जहां का था, चर्चा नहीं कि कहां गया?
अब दिल से है इतनी दुआ, थम जाये बस, वो जहां गया॥

हे गुरुदेव : आप समानहिं आप

गुरुभूषण दास

हम सभी जानते हैं कि गुरुदेव जी का शरीर अजर-अमर बनकर नहीं आया था। उसे भी एक दिन छूटना ही था। उनके शारीरिक स्वास्थ्य और दैनिक गतिविधियों को देखते हुए हम सभी यही आशा लगाये थे कि अभी हमें गुरुदेव जी का 10-15 वर्षों तक और भी सान्निध्य लाभ मिलता रहेगा। परंतु ऐसा नहीं हुआ और इसीलिए उनके देहावसान का समाचार सुनकर हम सब हक्का-बक्का रह गये, हड़बड़ा गये। दुख इस बात का तो है कि गुरुदेव जी चले गये, किन्तु अधिक दुख इस बात का है कि वे जल्दी चले गये। सच है, "काल अचानक सबको मारे, बाल वृद्ध न तरुण विचारे।"

गुरुदेव जी से बहुतों का सम्बन्ध था। किसी का नजदीकी सम्बन्ध था, तो किसी का दूर का सम्बन्ध था। सभी अपनी-अपनी भावनाओं के स्तर पर वियोग का अनुभव कर रहे हैं। कोई कम रोया, कोई ज्यादा रोया, लेकिन रोया सबने। कोई आंसू बहाकर रोया तो कई मौन रहकर भीतर-भीतर रोये। यद्यपि हमें कबीर साहेब की वाणी याद है— *"संत मरे क्या रोइये, जो अपनो घर जाय। रोइये साकट बापुरा, जो हाटो हाट बिकाय।"* तथापि भावनाओं की बहिया में सत्यज्ञान भी टुकड़े-टुकड़े होकर बहने लगा है जैसे पानी की तेज धारा में कठोर चट्टान भी बालू बनकर नदी में बहने लगती है। लेकिन भावनाओं का वेग कितना ही अधिक हो, क्षणिक और अस्थिर है। सत्य ज्ञान ही स्थिर और शाश्वत है। हमें अपनी भावनाओं पर काबू पाना होगा और सत्य के कंक्रीट धरातल पर ठहरना होगा। कुदरत का जो शाश्वत विधान है उसे स्वीकारना होगा। तभी हम सब अपने कर्मपथ और कल्याण पथ में अग्रसर हो सकते हैं। यही सद्गुरु का संदेश भी है। जीवन भर गुरुदेव जी ने यही किया और यही बताया है।

गुरुदेव जी के वियोग जनित दुख का अनुभव करते हुए भी प्रसन्नता इस बात की है कि वे हम सबको धनी बनाकर गये। हमें व्यावहारिक और पारमार्थिक रूप से सम्राट बना दिये हैं, अकूत खजाना सौंप दिये हैं। संस्थागत जो भौतिक धन है वह तो कभी समाप्त भी हो सकता है, लेकिन उनके ज्ञान का खजाना तो अमिट है। आवश्यकता है हम उसका उपयोग करना जानें और उपयोग करें।

गुरुदेव जी के जीवन वृत्त को शब्दों के ढांचा में ढालकर समझना आकाश को मुट्ठी में पकड़ने का प्रयास करने जैसा है। उनके दैनिक क्रियाकलापों एवं शारीरिक गतिविधियों को कोई कुशल शब्द शिल्पी ही सुन्दर ढंग से रेखांकित कर सकता है। लेकिन उनकी क्लेशरहित मनोदशा का सटीक चित्रण कहां संभव है। किसी का आंतरिक जीवन ही उसका असली जीवन होता है। गुरुदेव जी अंदर से कितने गंभीर, प्रशांत और महान थे, यह कोई शब्दों से कैसे बयान कर सकता है। उसे तो लम्बे समय तक साथ रहकर महसूस किया जा सकता था। हां, तथ्य महसूस करने के लिए भी मानसिक पवित्रता अपेक्षित होती है। गुरुदेव जी ने अपना जीवन जिस प्रकार बिताया उससे मुझे लगा कि मैंने एक उपदेश को जीते देखा था, बजाय सुनने के। उनका जीवन ही

उपदेश था। किसी ने बहुत सुन्दर कहा है—

करम ऐसा किया तूने, भुलाया जा नहीं सकता।
तेरे एहसान का बदला, चुकाया जा नहीं सकता॥

सद्‌गुरु कबीर की विशेषताओं को बताते हुए विद्वान चिंतक डॉ. सम्पूर्णानन्द ने लिखा है, "हीरे के अनेक पहल और सभी पहल अपने में ज्योतित और चमकदार होते हैं उसी प्रकार कबीर के अनेक पहल हैं और सभी ज्योतित और चमकदार हैं।" यह सटीक उपमा गुरुदेव जी के सम्बन्ध में भी ज्यों की त्यों लागू होती है। वे बहुआयामी व्यक्तित्व वाले महापुरुष थे। उनके समग्र व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर विचारना और लिखना मेरे वश की बात नहीं। भविष्य में विचारक लोग विचार करेंगे और लिखते रहेंगे। मैं तो यहां उनके अत्यंत व्यावहारिक एवं जीवनोपयोगी बिन्दुओं पर कुछ संकेत करने का लघु प्रयास कर रहा हूं।

प्रतिक्रियाविहीन जीवन—सामान्य मनुष्य ही नहीं सामान्य साधक की बहुत बड़ी कमजोरी है—'प्रतिक्रिया वाला मन।' किसी से हमारे मन के अनुसार व्यवहार करते न बना या परिस्थिति हमारे अनुकूल न हुई तो हमारा मन नकारात्मक प्रतिक्रिया में उलझ जाता है। प्रतिक्रियायुक्त मन साधना में प्रगति नहीं कर सकता। गुरुदेव जी के न प्रशंसकों की कमी रही न निन्दकों की। वे जैसे थे वैसे थे। कहा जा सकता है वे दर्पण की तरह थे, उनके सामने जाकर लोग अपना ही रूप देखते और बयां करते। अच्छे लोग अच्छाई देखते और बुरे लोग बुराई। गुरुदेव जी को न प्रशंसा की चिन्ता होती थी न ही निन्दा की परवाह। वे कहा करते थे, प्रशंसा हमें असावधान कर सकती है, लेकिन निन्दा तो सावधान ही करती है। उन्हीं का वचन है—

अपनी निन्दा कभी श्रवण कर, क्षोभ न मन में लाना।
सावधान करता नित निन्दक, मन को बोध कराना॥

गुरुदेव जी अपनी निन्दा और प्रशंसा की परवाह करते तो स्वयं के लिए और समाज के लिए इतना बड़ा काम नहीं कर सकते थे। अब और आगे भी उनकी निन्दा-प्रशंसा होती रहेगी। इस बात को लेकर हमें विचलित नहीं होना है, यही तो महापुरुषों की पहचान है। जो पेड़ जितना बड़ा होता है, उसे हवा के झोकों का उतना ही अधिक सामना करना पड़ता है। लेखिका कृष्णा सोबती तो कहती हैं—"लेखक की एक जिन्दगी उसकी मौत के बाद शुरू होती है। निन्दा-प्रशंसा तो जुड़वा बहनें हैं और सदैव साथ-साथ रहती हैं। एहतराम भाई की तरह मैं भी मानती हूं, समर्थ रचनाकार को उसके प्रशंसकों की संख्या से नहीं, उसके ईर्ष्यालुओं की संख्या में पहचाना जाना चाहिए।" सच है जिस पेड़ पर सबसे ज्यादा फल लगते हैं, उसी पर सबसे ज्यादा पत्थर मारे जाते हैं। कई बार तो ईर्ष्या छिपी हुई प्रशंसा भी होती है। ईर्ष्यालु भी गुरुदेव जी को दिल से स्वीकारता था और उन्हीं की तरह कामयाब भी होना चाहता था। दूसरे शब्दों में, वह तो स्वयं को उनकी जगह देखना चाहता था। लेकिन ऐसा न हो सकने के कारण वह प्रशंसा की जगह निन्दा और आलोचना करने लगता था। पूज्य गुरुदेव जी के विरोध में सामान्य अज्ञानी लोग नहीं बल्कि ज्ञानी, विद्वान, लेखक और बड़े-बड़े मठाधीश साधु-संत भी लेख एवं पुस्तक लिखते रहे। अपने प्रवचनों में खुले आम आलोचना करते थे। प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से पुरजोर विरोध करते रहे। लेकिन गुरुदेव जी अपने विरोधियों के प्रति न एक शब्द बोले न एक पंक्ति कहीं लिखे। वे कहा करते थे, हमें अपनी शक्ति को आलोचना और प्रतिक्रिया में नहीं खर्च करना चाहिए। शक्ति का सही उपयोग है, सकारात्मक एवं रचनात्मक दिशा में गतिमान होना। मैं जो सत्य समझता हूं उसे ही कहता हूं, लिखता हूं और जीता भी हूं। इससे मैं पूर्ण संतुष्ट हूं। मुझे सफाई देने की आवश्यकता ही नहीं है। सत्य के जिज्ञासु स्वयं सांच-झूठ का निर्णय कर लेंगे। गुरुदेव जी आत्मस्थ पुरुष थे। वे निरंतर कबीर विचारों में रमते रहे। सद्‌गुरु कबीर ने कहा है—

हस्ती चढ़िये ज्ञान की, सहज दुलीचा डार।
श्वान रूप संसार है, भूकन दे झखमार॰

महान वह है जिसके विचार महान हों, निर्मल हों और जिसका मन शुभ भावनाओं से भरा हो। गुरुदेव जी का मन शुभ भावनाओं से ओतप्रोत था। विरोधियों के प्रति भी उनके मन में, वाणी और कर्मों में कभी कटुता थी ही नहीं। वस्तुतः वे किसी को अपना विरोधी मानते भी नहीं थे। आजीवन उन्होंने मैत्री भाव को ही साधा। "सब जीवन से निर्वैर रहे, साधु मता है सार।" इस गुरु मंत्र को उन्होंने आत्मसात कर लिया था। गुरुदेव जी पूर्ण प्रतिक्रियाविहीन जीवन जीकर मानो यह मूक संदेश देते रहे, हे साधको! प्रतिक्रियाविहीन मन वाला बनो और साधना की ऊंचाई पर उठो।

संयम के उपासक—गुरुदेव जी संयम के देवता थे और संयम ही उनका उपास्य था। यह अद्‌भुत बानक था। वे जीवन भर संयम की आराधना और उपासना करते रहे। उन्हें कोई शारीरिक बीमारी नहीं थी कि कोई खाद्यपदार्थ वर्जनीय हो फिर भी उनकी इच्छा के विरुद्ध कोई उन्हें मिठाई का छोटा-सा टुकड़ा भी नहीं खिला सकता था। चाहे जितना प्रेमी भक्त, साधक या साधिका हो, उन्हें एक ग्रास भी अधिक भोजन करने के लिए विवश नहीं कर सकता था। वे वाक्यसंयमी महापुरुष थे। आवश्यकता पड़ने पर वे छोटी-बड़ी सभा में घंटों धाराप्रवाह बोलते रहते, लेकिन अनावश्यक एक शब्द भी नहीं बोलते थे। शांत और मौन रहना भी अच्छी तरह जानते थे। इतना ही नहीं उनके शरीर का कोई भी अंग बिलावजह नहीं हिलता था। उनका उठना-बैठना, बोलना-चालना, खाना-पीना, सोना-जागना, आना-जाना, देखना-सुनना आदि जीवन की सारी क्रियाएं अत्यंत नपी-तुली होती थीं। संयम की लक्ष्मणरेखा को उन्होंने कभी नहीं लांघा। गुरुदेव जी मानो हम सबके बीच आकर कह रहे हों, मेरे प्यारे बच्चो! संयम पथ में चलकर मन की स्ववशता प्राप्त करो।

उपर्युक्त बातें सोलहों आने सत्य होते हुए भी गुरुदेव जी एक महत्त्वपूर्ण बात कहा करते थे, संयम का भी अहंकार नहीं करना चाहिए। शरीर कणों का जोड़ है, अचानक अस्वस्थ हो सकता है और अंत में जर्जर होकर इसे छूटना तो है ही। वस्तुतः किसी भी साधना का अहंकार नहीं करना चाहिए। साधना में तो विसर्जन है, उसमें अहं-मम् की गुंजाइश कहां!

समय के पाबंद—किसी ने कहा है, "बर्बाद समय का अर्थ होता है बर्बाद जीवन।" गुरुदेव जी ने सार्थक जीवन जीया है। इसका सीधा अर्थ है, उन्होंने जीवन के हर पल का सदुपयोग किया है—अपने जीवन को संवारने और समाज सेवा में। वे समयाभाव का रोना कभी नहीं रोते थे। उनका समय प्रबंधन इतना बढ़िया था कि वे जो करना चाहते थे वह सब कुछ कर लेते थे। छोटी-बड़ी पुस्तकों को लिखने के लिए वे जिस समय सीमा का अनुमान लगाते थे, हर बार उससे कम समय में ही उन पुस्तकों को लिख लेते रहे। सोना और जागना, भोजन करना और पानी पीना, सुबह-शाम टहलना और आसन-प्राणायाम करना आदि जीवन की छोटी-बड़ी सारी गतिविधियां निर्धारित समय पर किया करते थे। बहुत-से वक्ताओं में जब गहराई की कमी होती है, तो वे लम्बाई बढ़ा देते हैं। इस मामले में गुरुदेव जी निराले थे। छोटी सभा हो या बड़ी सभा, बोलते समय उन्होंने कभी भी समय-मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया। लोगों को सत्संग कार्यक्रम के लिए समय दे देते थे, तो उसे अवश्य निभाते थे; चाहे जितनी शारीरिक तकलीफ रही हो या फिर विकट परिस्थिति रही हो। वे वायदे के भी पक्के थे। गहन गंभीर विषयों पर चिंतन करते और लिखते हुए भी साधकों एवं भक्त-सज्जनों से मिलने के लिए पर्याप्त समय निकाल लेते थे। कहा जाता है, समय को कोई पकड़ नहीं सकता, लेकिन गुरुदेव जी के लिए कहा जा सकता है, समय उनकी मुट्ठी में था। वे अत्यंत व्यस्त महापुरुष थे फिर भी उनके पास पर्याप्त खाली समय था। गुरुदेव जी के इस महान गुण को यदि

हम सभी धारण कर सकें तो अपना जीवन बर्बाद होने से बचा सकते हैं।

स्वाध्याय प्रेमी—हम-आप अच्छी तरह जानते हैं कि गुरुदेव जी की विद्यालयीन शिक्षा न के बराबर थी। बचपन से ही पढ़ने में उनकी इतनी रुचि थी कि रास्ता चलते यदि घूर पर भी पड़ा हुआ कागज दिख जाता तो उसे उठाकर, साफ कर पढ़ लेते थे। आगे चलकर उनके स्वाध्याय प्रेम का ही परिणाम है, विभिन्न विषयों में शताधिक कृतियां। वे कहा करते थे मैंने अपने जीवन में जो कुछ पाया और समाज के लिए जो कुछ मेरे से बन पड़ा है, वह स्वाध्याय का ही फल है। अनपढ़ होकर गुरुदेव जी व्यावहारिक, आध्यात्मिक एवं दार्शनिक चिंतन पूर्ण बड़ी-बड़ी पुस्तकें लिखकर मानो हम पढ़े-लिखे लोगों को चिढ़ा रहे हों और मीठी फटकार लगा रहे हों, क्या पढ़-लिखकर गोबर गणेश बने हो! अधिक से अधिक स्वाध्याय करो और रचनात्मक दिशा में गतिमान हो। हममें से बहुत लोग हैं जो गुरुदेव जी लिख गये हैं उसे भी पढ़ नहीं पाये हैं। सुन्दर एवं पवित्र व्यवहार के सूत्र तथा साधना की संपूर्ण सामग्री गुरुदेव जी की पुस्तकों में भरी हुई है। आज आवश्यकता है कि हम सब भी स्वाध्याय प्रेमी बनें और गुरुदेव जी के पदचिन्हों पर चलने का संकल्प लें।

नियम के पक्के—आलस्य गुरुदेव जी का कभी स्पर्श नहीं कर पाया। वे टालमटोली के घोर विरोधी थे। 'काल करै सो आज कर, आज करै सो अब' सिद्धान्त को सदैव सामने रखते रहे। खाने-पीने, सोने-जागने, पढ़ने-लिखने, टहलने-घूमने, आसन-प्राणायाम, ध्यान-चिंतन आदि के विषय में आपने अपने लिए जो भी नियम बनाया उसका बड़ी सचौटी से पालन करते रहे। बाहर भ्रमण करते समय कभी कुछ नियम पालन में व्यतिक्रम हो गया हो, लेकिन आलस्य और प्रमाद के वशीभूत होकर आपने कभी नियमों का उल्लंघन नहीं किया। साफ-सफाई एवं टकसार नियम भी आपके अद्वितीय रहे। सफाई-स्वच्छता के नियमों को जाने बिना तथाकथित उच्चकुलोत्पन्न ब्राह्मण का बनाया भोजन भी आप नहीं ग्रहण करते थे जबकि सफाई-स्वच्छता में प्रशिक्षित किसी का बनाया भोजन भी प्रेम से कर लेते थे। क्योंकि आपकी दृष्टि में मनुष्य मात्र समान है। यही सद्गुरु कबीर का सिद्धान्त है और प्रकृति का विधान है। बिना हाथ धोये आपकी उपयोगी चीजों को हम लोग भी नहीं छू सकते थे। स्वास्थ्य जितना खराब हो, आप शौच के बाद न नहाएं ऐसा तो कभी नहीं होता था। आपने जीवन के अंत तक अपने नियम को निभाया है।

गुरुदेव जी के सान्निध्य में साधना कर रहे साधु-संतों एवं साधकों का बहुत बड़ा समाज है। ऐसे ही साधिकाएं एवं साध्वियों का भी बहुत बड़ा समाज है जो गुरुदेव जी को अपना अनुशास्ता मानकर साधनारत हैं। उनके अपने अलग-अलग कई स्वतंत्र आश्रम हैं और उनकी अपनी-अपनी स्वतंत्र व्यवस्था है। जब साधिकाओं के लिए आश्रम निर्माण हुआ तभी गुरुदेव जी यह नियम बना दिये कि इस आश्रम में 5 साल का बच्चा या 90 साल के वृद्ध का भी निवास नहीं होगा। मैं भी इसमें निवास नहीं करूंगा। यहां कार्यक्रमों में जब मेरा आना होगा तो अलग भक्तों के घर रहूंगा। अभी कुछ वर्ष पहले साधिकाओं को नियम दिया कि किसी पुरुष-साधु का न पैर धोना है न पैर छूना है। मैं भी तुम लोगों से अपना पैर नहीं धुलवाऊंगा और मेरा पैर भी अब तुम लोग मत छूना। दूर से बन्दगी कर लेना। अपने बनाये इन नियमों को भी गुरुदेव जी ने जीवन भर निभाया। अब परम आवश्यक है, वर्तमान के साधु-संत, साध्वी-साधिकाएं इन नियमों का सचौटी से पालन करें। नियमों का उल्लंघन करके गुरुद्रोही होने का साहस न करें। इसी में हम सबका हित है।

चाहे कुदरत का नियम हो, सामाजिक नियम हो या शारीरिक एवं मानसिक नियम हो, नियमों के प्रति आपका प्रेम इतना था कि 'नियम ही ईश्वर है' इस शाश्वत सूत्र की ईजाद ही कर डाले। आपके विचार से नियम पालन

ही ईश्वर-पूजा है। वस्तुतः नियम तोड़ना हमारे लिए संभव नहीं है, नियमों से टकराकर सिर्फ खुद को तोड़ सकते हैं। अतः हम सब भी गुरुदेव जी के पथ में चलना चाहते हैं, तो जीवन को स्वस्थ, सुखद एवं शांतिमय बनाने के लिए जीवन के हितकारी नियमों का ईमानदारी से पालन करें।

कोमल और कठोर—गुरुदेव जी कोमलता और कठोरता के अद्‌भुत संगम थे। वे सरल, विनम्र एवं अत्यंत कोमल थे। विभिन्न सम्प्रदाय के धर्मगुरुओं के सम्पर्क में रहने वाले कई साधु-सन्त एवं भक्त-सज्जन गुरुदेव जी से मिलने के बाद बहुत गद्‌गद होकर कहते थे, "महात्मा जी बहुत सरल हैं, मैं बहुत प्रभावित हूं, मुझे बहुत अच्छा लगा।" कई तो यहां तक कहते, "इतना सरल और विनम्र संत तो मैंने कहीं देखा ही नहीं।" यह तो हमें नहीं मान लेना चाहिए कि गुरुदेव जी के अलावा कोई दूसरा सरल और विनम्र नहीं है, लेकिन लोगों के अनुभव और स्वाभाविक कथन को भी स्वीकारना पड़ेगा। गुरुदेव जी इतने लचीले थे कि बालक, जवान, वृद्ध, गृहस्थ-विरक्त, नर-नारी, संत-साध्वियां, विद्वान-गंवार, पढ़-अपढ़, चिंतक, विचारक, लेखक, वक्ता, कवि, मजदूर, किसान, व्यापारी, धनी-गरीब, देहाती-शहरी, चपरासी, कर्मचारी-अफसर, राजनेता-धर्मनेता, हिन्दू-गैर हिन्दू, भौतिकवादी-आत्मवादी, ईश्वरवादी-अनीश्वरवादी, बकवासी, संयमी आदि उत्तम, मध्यम, कनिष्ठ सभी वर्ग के लोगों से घुलमिल जाते। उन लोगों से खूब वार्ता कर लेते और सबसे बड़ी बात सभी आगन्तुक प्रसन्न और संतुष्ट होकर विदा लेते थे।

उनके विचारों में आक्रामकता नहीं है, वे किसी पर प्रहार नहीं करते, अपनी बातें सरलता से मीठे शब्दों में अभिव्यक्त करते थे। भिन्न विचारों का खण्डन भी इतनी नरमी से करते कि किसी को मानसिक पीड़ा नहीं होती थी। 'घाव काहि पर घालो जित देखो तित प्राण हमारो' सद्‌गुरु कबीर का यह सूत्र वाक्य गुरुदेव जी के दिल में घर कर गया था। इसीलिए वे कबीरपंथी एवं गैर कबीरपंथी सबके प्रिय हो गये।

गुरुदेव जी इतने सरल थे कि हममें से कोई अच्छा लेख लिखता, सुन्दर प्रवचन करता, बढ़िया भजन गाता तो बहुत खुश होते थे और प्रशंसा अवश्य करते थे। न केवल लेख-प्रवचन की प्रशंसा करते बल्कि कोई भी अच्छा काम करता उसे लोगों के बीच बताते और प्रशंसा करते। सभी वर्ग के साधकों को प्रगति पथ तथा साधना पथ में आगे बढ़ने के लिए बराबर प्रोत्साहित और ऊर्जान्वित करते क्योंकि प्रोत्साहन सफलता की आत्मा होती है। इस प्रकार गुरुदेव जी अपनी मानसिक उष्मा देकर साधकों को सक्रिय बनाये रखते थे।

गुरुदेव जी हम सबको बहुत-बहुत प्यार करते थे। न जाने कितनी बार उन्होंने मुझे अपने सीने से लगाया है। मैं उनके हृदय से लगकर मुस्कराया हूं और रोया भी हूं। मैं अपने मन की आंखों से वह दृश्य आज भी देख रहा हूं जब मेरे आंसू उनके कपड़े पर टपकते रहे और गुरुदेव जी मुझे जोरों से पकड़कर अपने हृदय से लगाये रहे। मेरे जीवन का वह अविस्मरणीय क्षण अब कभी लौटकर नहीं आयेगा। उनके प्रेम की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि हम सभी यही महसूस करते हैं कि गुरुदेव जी सबसे अधिक प्यार मुझसे करते हैं।

गुरुदेव जी की आंतरिक सरलता और कोमलता उनके चेहरे पर स्पष्ट झलकती थी। उनका प्रसन्न और मुस्कुराता हुआ चेहरा मन को खूब भाता था। बार-बार देखने की इच्छा होती थी। सचमुच, गुरुदेव अंदर-बाहर से बहुत सुन्दर थे। हे गुरुदेव! आप समानहिं आप।

गुरुदेव जी जितना सौम्य और कोमल थे उतने ही कठोर थे। समाज को व्यवस्थित, संयत और सुगठित बनाये रखने के लिए कोमलता के साथ कठोरता भी आवश्यक है। जिन्होंने गुरुदेव जी का थोड़ा बहुत सान्निध्य लाभ प्राप्त किया है, वे सभी जानते हैं, गुरुदेव जी कब और क्यों कठोर होते थे। वे हम सबकी गलतियों पर

डांटते और झिड़कते थे। किसी साधक या साधिका से किसी प्रकार प्रमाद, भूल या गलती हो जाने के बाद जब गुरुदेव जी के पास जाना होता था तब गुरुदेव जी उसे बाघ-सिंह के रूप में दिखाई देते थे। वह सामने होने में थर-थर कांपता था, लेकिन फिर भी उसे भीतर से अटल विश्वास होता था कि केवल गुरुदेव जी ही मुझे इस संकट से उबारेंगे। वे कुम्हार की तरह मुझे ठोंक-पीटकर सुन्दर और मजबूत बनायेंगे। सचमुच उनकी कठोरता में भी अपार करुणा, स्नेह और प्यार का सुखद मखमली समिश्रण होता था।

एक छोटा-सा संस्मरण याद आया। ठीक साल भर पहले की बात है। गुरुदेव जी के सान्निध्य में आश्रम के खास सदस्यों की व्यवस्था सम्बन्धी मीटिंग होने वाली थी। इसी बात को लेकर मैं सुबह-सुबह गुरुदेव जी से मिलने गया। उन्होंने छूटते ही कहा, 'तुम जो प्रवचन करते हो वह केवल दूसरों के लिए होता है या तुम अपने लिए भी करते हो!' अपने लिए सर्वथा अप्रत्याशित बात सुनकर मैं किंकर्तव्यविमूढ़ बना गुरुदेव जी के चेहरे को निहारता रहा। उत्तर देना मेरे लिए कितना कठिन था! शायद आप सब भी मेरी इस कठिनाई को महसूस करते होंगे। ऐसा मुझे किसी ने नहीं कहा था। गुरुदेव जी के अलावा किसी दूसरे का कहना मैं शायद सह न पाता और अपने मुंह से अनसुहाता शब्द निकालकर अपनी असहनशीलता का परिचय दे डालता। मेरे ऊपर उनका पूरा अधिकार था, डांटने-फटकारने और चपत लगाने का भी। यह अवसर तो सौभाग्य से प्राप्त होता था। एतदर्थ मैं तो अपने को सौभाग्यशाली मानता हूं क्योंकि मेरे प्रवचन की शैली और प्रतिपाद्य विषय के सम्बन्ध में तो अनेकों बार मुझे डांटते और समझाते रहे। लेकिन आज तो सारा समीकरण ही उलट गया। स्वामी विवेकानन्द ने कहा है, "वे कितने अभागे हैं जिन्हें कोई रोकने, टोकने और डांटने वाला नहीं है।" हे गुरुदेव! हम सब कितने अभागे हो गये, शायद आप नहीं जानते। उफ! मैं ज्यादा क्या कहूं, अभी भी उनकी कृपादृष्टि की याद करता हूं, तो मेरी आंखें नम हो जाती हैं।

असत्य एवं मानवता विरोधी, भ्रामक एवं साधना विरोधी विचारों से उन्होंने कभी समझौता नहीं किया। वे ठकुरसुहाती बात नहीं करते थे, साफ और स्पष्ट निर्णय करते थे। इस मामले में गुरुदेव जी अत्यन्त कठोर थे।

गुरुदेव के सूत्र—यहां सूत्र का अर्थ है, वह छोटा-सा वाक्य जिसमें गहन-गंभीर अर्थ समाया हो। आकार में लघु और भावार्थ में दीर्घ। व्यवहार एवं साधना सम्बन्धी गुरुदेव जी के अनेक सूत्र हैं। सभी को उद्धृत करके उनकी विस्तृत व्याख्या करना संभव नहीं। वस्तुतः उन सूत्रों की व्याख्या तो उनके प्रवचनों एवं ग्रंथों में समायी है; जिनसे हम सभी कुछ न कुछ परिचित हैं। उनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण सूत्रों की केवल सूची पेश कर रहा हूं—

तन-मन स्वस्थ रखने के लिए क्या करें?
कम खाओ, गम खाओ।

स्वर्ग और मोक्ष कहां है ?
प्रेम में स्वर्ग है, अनासक्ति में मोक्ष है।

सौभाग्यशाली कौन है?
पेट खाली, मन खाली वह बड़ा सौभाग्यशाली।

सत्संग क्या है?
आत्मा में लौट आना सत्संग है।

सुखी जीवन का रहस्य क्या है?
अपने जहर को मारना और दूसरे के जहर को सहना।

असली धन क्या है?
व्यवहार में जन धन है, परमार्थ में मन धन है।

साधना क्या है?
सावधानी ही साधना है।

साधना मार्ग में चलते हुए पूर्णता कैसे प्राप्त करें?
रुके न, लौटे न।

धर्म का व्यावहारिक रूप क्या है?
संयम एवं शील।

ईश्वर क्या है ?
नियम ही ईश्वर है।

संत कौन है?
जो दुखी नहीं होता।

ध्यान क्या है?
पूर्णतया कुछ न करने की स्थिति।

जीवन की सफलता किसमें है ?
देह क्षेत्र में कर्म प्रवणता मन प्रदेश में अचल समाधि।
जीवन का साफल्य इसी में जब मानस होवे निर्व्याधि।

पारस्परिक मधुर व्यवहार के लिए निम्न सात सूत्रों का प्रयोग करना चाहिए—

1. अपने कर्तव्यों का पालन तथा दूसरों के अधिकारों की रक्षा।

2. स्वयं सहना परंतु दूसरों को सहाने की चेष्टा न करना।

3. दूसरों की उचित बातें मान लेना परंतु अपनी बातें दूसरों को बलात मनवाने का प्रयास न करना।

4. अपनी इच्छाओं पर संयम करना और यथासंभव दूसरे की उचित इच्छाओं को पूर्ण होने देना।

5. प्यार के एवं मीठे वचन बोलना।

6. सबसे कोमल व्यवहार करना।

7. मन में सबके प्रति स्नेह का भाव रखना।

वाणी-संयम के सूत्र—कब, किससे, क्या, कितना और कैसे बोलना चाहिए—इन पांचों सूत्रों को जिसने अपने जीवन में हल कर लिया, उसने अपनी वाणी पर विजय पा ली।

गुरुदेव जी की विशेषताएं एवं सूत्रों की इस सूची को बढ़ाऊं तो यह हनुमान की पूंछ की तरह बढ़ती ही जायेगी। लेकिन सूची बढ़ाकर कागज को रंगते रहना महत्त्वपूर्ण नहीं है, महत्त्वपूर्ण है गुरुदेव जी की छोटी-बड़ी बातें जो हमारे जीवन के लिए बेहद उपयोगी हैं, उनका अपने जीवन में प्रयोग करना। गुरुदेव जी के साथ रहने का फल उनकी अनुपस्थिति में उनकी महिमा गान करना नहीं है। उनके गुण हमारे जीवन में उतरने चाहिए। इसके लिए हम सब संकल्प लें। संकल्प कैसे लें, थोड़ा-सा निवेदन है—

इस संदर्भ को पूरा पढ़ लेने के बाद आप शांत और स्थिर आसन से बैठ जायें। आंखें धीरे से बंद कर लें। चेहरे पर प्रसन्नता हो। पूरा शरीर ढीला हो। शरीर के किसी भी अंग में तनाव न हो। कुछ लम्बी गहरी सांस लें। नई-पुरानी, अच्छी-बुरी सारी बातों को भूल जायें। अपने गुनाहों से तौबा कर लें। ऐसा यदि दिल से और ईमानदारी से करेंगे तो इतने से ही आप अच्छा महसूस करने लगेंगे। फिर गुरुदेव जी का स्मरण करते हुए (मानो वे आपके संकल्प के साक्षी हों) अपने आप से कहें—

1. मैं अपने जीवन को स्वस्थ, सुन्दर और पवित्र बनाने का संकल्प लेता हूं और मैं ऐसा करके रहूंगा।

2. मेरे साथ जिसने अन्यायपूर्ण व्यवहार किया है उसे मैं बिना शर्त क्षमा करता हूं।

उपर्युक्त संकल्प को तीन बार दोहरायें और कुछ समय तक सबके प्रति मैत्री भाव करते रहें। जब पूर्णता महसूस हो, तब अपनी आंखें धीरे से खोल सकते हैं। ऐसा आप प्रतिदिन रात्रि में सोने से पहले और सुबह नींद खुलते ही करें।

मैं आपको जो सिखा रहा हूं, वैसा ही मैं स्वयं जिस दिन कर लूं, वैसा जीने लग जाऊं, उसी दिन मैं मानूंगा, मुझे गुरुदेव जी के साथ रहने का फल मिला और यही मेरी गुरुदेव जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। साहेब बन्दगी!

कबीर पारख संस्थान
प्रीतमनगर, इलाहाबाद

मेरा मानना है

गुरुक्षेम दास

मेरा मानना है कि सद्गुरु कबीर (1399-1519 ईस्वी) के बाद उनके मानवतावादी विचार, आडम्बररहित दिव्य चरित्र, उदार व्यवहार, निष्फिक्र जीवन, प्रगल्भ बुद्धि, कथनी-करनी की एकता के स्पष्ट प्रवक्ता के रूप में कोई संत हुआ है तो वे हैं पूज्यवर गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी। वे 21 वर्ष की उम्र में सांसारिक बन्धनों को तिनके की भांति त्यागकर विरक्त जीवन व्यतीत करते हुए 79 वर्ष 1 माह 9 दिन इस असार संसार में रहकर अपने पंचभौतिक शरीर को त्याग कर अपने स्वरूप में लीन हो गये।

लोक कहावत है कि सोने में सुगंधी आ जाये तो क्या पूछना! सोने में सुगन्धी तो आज तक कोई ला नहीं सका परन्तु गुरुदेव जी ने अपने जीवन में सुगंधी लाकर दिखा दिया। संसार का तो नियम है परिवर्तनशीलता। यहां कोई नित्य रहने नहीं आता है। कहा है—

इन्सान की खुशबू रहती है इन्सान बदलते रहते हैं।
दरबार लगा रह जाता है, सुल्तान बदलते रहते हैं।

त्याग, तप, सहनशीलता, दूरदर्शिता, आचरण की गम्भीरता के साथ विद्वता के कारण आपकी सुगन्धी पूरे विश्व में फैल गयी। आपका त्याग कोई बाहरी दिखावा नहीं था। मैंने तो आपको अत्यन्त निकट से देखा है। आपके चरणों में मैंने 1 अप्रैल, 1977 को रायपुर जिले के ग्राम हसदा नं. 2 में अपने आपको समर्पित किया। उस समय मेरी उम्र लगभग 14 वर्ष थी। साथ में मेरे चचेरे भाई (वर्तमान में महन्त शुकदेव दास शास्त्री के नाम से जाने जाते हैं) ने भी गुरुदेव जी की शरण में रहने के लिए निवेदन किया। उस समय गुरुदेव जी यह कहकर अपनी शरण में लेने से अस्वीकार कर दिये कि अभी तुम लोग छोटे हो! अभी और पढ़ाई करो। बड़े होने पर अपने साथ ले चलेंगे। किन्तु हम दोनों उनकी आज्ञा के विरुद्ध संतों के लिए जो गाड़ी आयी थी उस पर जबरदस्ती बैठ गये। किन्तु गुरुदेव जी हम दोनों को उस गाड़ी से उतरवा ही दिये। साथ में ले जाने से साफ इनकार कर दिये। परन्तु हम दोनों घर वापस न जाकर संत श्री साधुशरण साहेब जी के साथ हो लिए, और उन्हीं के साथ इलाहाबाद होते हुए अयोध्या पहुंचे। जहां सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब जी के दर्शन हुए। उन्होंने पांच दिन बाद हम लोगों को कबीर मंदिर बड़हरा भेज दिया, जहां श्रद्धेय संत श्री निहाल साहेब जी विराजमान थे। कुछ दिनों के बाद पुनः श्री कबीर धर्म मन्दिर, जियनपुर, अयोध्या वापस आ गये और वहां पर स्थाई रूप से रहने लगे। इस बीच गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी के दर्शन वर्ष में दो बार अवश्य करता था तथा अयोध्या में रहकर संस्कृत पढ़ते हुए भी आपके साहित्य में गोता लगाता रहता। सन 1986 में सितम्बर के प्रथम सप्ताह में अयोध्या छोड़कर कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद आ गया। किन्तु गुरुदेव जी से कुछ भी नहीं कह सका और इलाहाबाद के वार्षिक अधिवेशन के पश्चात श्रद्धेय संत श्री शरणपाल साहेब जी एवं श्रद्धेय संत श्री विवेक साहेब जी के साथ कबीर आश्रम भड़रा पहुंचा। वहां पर परम श्रद्धेय आचार्य श्री

रामस्वरूप साहेब जी के प्रथम दर्शन किया। और साथ-साथ बुरहानपुर चला गया। बुरहानपुर के वार्षिक कार्यक्रम में कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद के अध्यक्ष संत श्री गुरुबोध साहेब जी अन्य संतों के साथ वहां पधारे। उन्होंने मुझसे एक दिन कहा—गुरुक्षेम दास! गुरुदेव जी ने तुम्हें मेरे साथ छत्तीसगढ़ जाने को कहा है। तत्काल कुछ उत्तर तो नहीं दे सका। कुछ देर पश्चात कहा—साहेब जी! गुरुदेव जी की आज्ञा तथा आपका सान्निध्य मुझे स्वीकार है।

करीब एक माह बाद छत्तीसगढ़ में गुरुदेव जी के दर्शन हुए। तब बिना कुछ निवेदन किये ही गुरुदेव मुझे अपनी शरण में रख लिये तथा एक सप्ताह के पश्चात अपनी सेवा में रख लिये। फिर साथ-साथ इलाहाबाद आया। इलाहाबाद से साथ में कलकत्ता गया। तभी से मैं गुरुदेव जी को पूर्णरूप से समर्पित हो गया। मैंने कभी भी निवेदन नहीं किया कि गुरुदेव जी मैं आपकी सेवा में रहूंगा। मेरे अंतस पट के विचार गुरुदेव जी पढ़ लेते और जब मन होता मुझे अपनी सेवा में रख लेते और जब मन होता आश्रम में छोड़ देते। यह गुरुदेव जी की मेरे ऊपर अहेतुकी कृपा थी।

भारतवर्ष में ऋषि, मुनि, ज्ञानी, गुणी, विद्वान, सदाचारी, वैरागी और तपस्वी तो बहुत हुए हैं परन्तु गुरुदेव जी जैसे त्यागी बहुत कम मिलते हैं। गुरुदेव जी के पास बहुत कुछ था और कुछ भी नहीं था। गुरुदेव जी के नाम पर कोई बैंक खाता नहीं था। उनकी झोली में रुपये नहीं तथा उनके नाम से कोई जमीन नहीं। जिनके साथ इतना बड़ा समाज हो और समाज के मुखिया के पास फूटी कौड़ी भी नहीं! प्रायः आप देखते हैं या सुनते हैं जब कोई महापुरुष या बड़े कहलाने वाले इस संसार से विदा होते हैं तब उनकी आलमारी, उनके कमरे, उनके बैंक खाते या सामान पहले सील करते हैं जिससे कोई गलत व्यक्ति के हाथ न लग जाये और अधिक सम्पत्ति होने पर पीछे वाले लोग लड़ाई करते हैं। गुरुदेव सद्गुरु कबीर की साखी को चरितार्थ करके दिखा दिये *'कमल पत्र हैं संत जन, रहे जगत के माहिं।'* उनके न रहने पर एक आदमी भी नहीं कहा, देखो, श्री अभिलाष साहेब जी के पास कितने रुपये हैं। उनके सान्निध्य में रहने वाला हर आदमी जानता है कि वे कहलाने मात्र के फकीर नहीं थे, वास्तव में फकीर थे, त्यागी थे, तपस्वी थे। 'ज्यों आवै त्यों फेरी हो।'

लघुता, विनम्रता, शालीनता एवं सेवा जीवन की सुगंधी है। ये सद्गुण गुरुदेव जी में स्वाभाविक थे। और सेवा की भावना अंत तक बनी रही। कई बार मैं देखता था आश्रम में या कहीं कोई शारीरिक रूप से अस्वस्थ होता तो उससे मिलने अवश्य जाते। उस बीच यदि मरीज को किसी प्रकार की कोई सेवा की आवश्यकता होती तो वे अपने हाथों स्वयं कर देते। गुरुदेव एकान्त अलग बैठकर भोजन करते। सार्वजनिक पंगत से 10-15 मिनट पहले भोजन कर लेते और जब सब संत भोजन करने जाते उस बीच आप आश्रम में कोई बीमार हो उनके पास जाते और जो आवश्यकता होती उसे पूरा कर देते तथा उनके पास सफाई आदि भी करते। यहां तक देखा गया कि उनकी जूठी थाली भी साफ करके रख देते। उस बीच आपके दर्शनार्थ कोई आता उसके लिए स्वयं चटाई बिछाते तथा उन्हें भोजन-पानी पूछते। अपने आप को हमेशा छोटा मानते और विनम्र रहते। कई बार मैं देखता था आप शौचालय की सफाई स्वयं करते थे। आपका मानना था कि कर्म ही पूजा है।

आप दिखावा से हमेशा दूर रहते थे। आपका खान-पान, रहन-सहन पूर्ण रूप से सात्विक और सादा होता था। आप प्रसिद्ध हो जाने के बाद भी किसी दूसरी जगह जाते तो पीछे और नीचे बैठने का प्रयास करते थे। आप अपने नाम के साथ कभी कोई विशेषण नहीं लिखे। आप अपने कमरे के सामने अपने नाम का प्लेट कभी नहीं लगाने दिये। मुझे याद है कबीर पारख संस्थान में जब एक भक्त ने मार्सल गाड़ी खरीद कर समर्पित किया तो संतों ने कहा—गाड़ी के आगे गुरुदेव जी का

नाम होना चाहिए। जब यह बात आपको पता चली तो आप रोक दिये। एक बार मैं बिना आपकी आज्ञा के और बिना किसी से पूछे कबीरनगर स्थित बीजक मंदिर में आपकी एक बड़ी तस्वीर लगवा दिया। उन दिनों आप बाहर थे। जब आश्रम में आये तो प्रथम दिन की सभा में विराजमान हुए किंतु दूसरे दिन समय हो चुका है और आप दर्शन नहीं दे रहे हैं। इतने में श्री राम साहेब द्वारा पता चला कि गुरुदेव जी का कहना है कि बीजक मन्दिर में मेरा चित्र लगाया गया है उसे उतारो उसके बाद मैं जाऊंगा। मैं गुरुदेव जी के पास गया और क्षमा मांगा और कहा कि आपकी अनुमति के बिना मैंने चित्र लगवा दिया था, किन्तु आपकी आज्ञा शिरोधार्य है, उसको उतार दिया जायेगा। इस समय सत्संग-ध्यान में आप चलें। ध्यान-सत्संग के बाद उस चित्र को वहां से उतार दिया गया।

गुरुदेव जी दिखावा से काफी दूर थे। यही कारण है कि गुरुदेव जी के छोटे-बड़े कुल 125 ग्रंथ हैं परन्तु किसी में आपका कोई फोटो नहीं है।

आप किसी की श्रद्धा का निर्वहन कैसे करना चाहिए, बहुत ही अच्छी तरह से जानते थे। आप एक समाज के मुखिया थे। लाखों-लाखों लोग आपको श्रद्धा की निगाह से देखते थे। आप जहां जाते लोग अपनी शक्ति और योग्यता के अनुसार आपको अच्छा-से-अच्छा भोजन खिलाने का प्रयास करते, लेकिन आप इतने संयमी थे कि जिन चीजों को नहीं खाना चाहते उन्हें कोई आपको नहीं खिला सकता था। आप पहले ही सावधान रहते थे। जैसे आपके पास भोजन की थाली आती उसमें बहुत कटोरियां होतीं तो आप जिसे नहीं खाना चाहते उसमें से एक चना के बराबर खा लेते। इस प्रकार भक्त द्वारा दी गयी सभी चीज स्वीकार कर लेते और अपना संयम भी बनाये रखते थे।

एक दिन मैंने पूछ ही लिया—गुरुदेव, आपको जब हलुवा नहीं खाना था तो नहीं खाते, एक चना के बराबर हलुवा खाने का क्या मतलब है? तब गुरुदेव ने कहा—देखो, कदाचित घर मालिक पूछे कि गुरुदेव! हलुवा कैसे बना था या अमुक चीज कैसे बनी थी और मैं कहूं कि मैंने तो खाया ही नहीं तो उस भक्त को कितना दुख होगा। इसलिए मैं पहले ही सावधानी बरतता हूं। जिससे कह सकूं अच्छा बना है और अपना संयम-नियम भी पूरा हो जाता है।

24 घण्टा का समय हर आदमी को प्राप्त है। सबको प्रकृति की ओर से समय बराबर मिला है। उस समय का उपयोग कैसे करें, कहां पर करें, हमारी जिम्मेदारी है। समय अंजुलि के पानी के समान, एक-एक सेकेण्ड करके समाप्त होता जाता है। अगर हमने समय का सदुपयोग किया तो परिणाम अच्छा आयेगा और दुरुपयोग किया तो परिणाम गलत आयेगा।

समय का दोहन करना गुरुदेव जी ठीक से जानते थे। वे कब बोलना चाहिए, कब मौन रहना चाहिए, कब खाना चाहिए, कब नहीं खाना चाहिए, कब सोना चाहिए, कब जागना चाहिए, कब घूमना चाहिए, कब आसन-व्यायाम करना चाहिए सब कुछ अपने समय से कर लेते थे।

आप साल में लगभग 9 माह आश्रम से बाहर विभिन्न प्रदेशों में भ्रमण करते हुए लोगों को सन्मार्ग में चलने का उपेदश करते तथा सद्गुरु कबीर के मानवतावादी विचारों का प्रचार-प्रसार करते। यह काम ठण्डी-गरमी सभी मौसम में करते थे। सन् 1980 की घटना है। उन दिनों मैं कबीर धर्म मन्दिर, जियनपुर, अयोध्या में रहता था। गुरुदेव जी 12 संतों के सहित कबीर धर्म मन्दिर पधारे। जनवरी की ठण्डी थी। एक दिन निवास करने के पश्चात आगे कार्यक्रम फैजाबाद जिला के पारा गांव में होना तय था। ठंडी इतनी कि पक्षी भी आकाश में नहीं उड़ रहे थे। कई दिनों से शीतलहर चल रही थी। सूर्यदेव के दर्शन नहीं होते थे। ऐसे समय में गुरुदेव जी उक्त गांव में जाने के लिए तैयार हुए तभी एक वरिष्ठ संत ने कहा कि आप यहीं विश्राम करें, मैं सूचना भेजकर उस कार्यक्रम को रद्द

करवा देता हूं क्योंकि ऐसे मौसम में कोई सुनने भी नहीं आयेगा और संतों को भी परेशानी होगी। परंतु आप कहां मानने वाले थे। आप अपना कमण्डल उठाये और अकेले ही चल दिये फिर पीछे से आपके साथ रह रहे संतों को तो जाना ही था। आप कहते थे कि कभी ऐसा अवसर नहीं आया कि मैं किसी को आने का वचन दिया और नहीं गया।

जो धन हमने खो दिया वह तो फिर से हमें मेहनत से प्राप्त हो जायेगा। ज्ञान की बातें यदि हम भूल गये हैं तो अध्ययन से या सुनकर उसे पुनः प्राप्त कर लेते हैं, स्वास्थ्य को खो दिये हैं तो डाक्टर-वैद्य की सलाह लेकर तथा संयम से स्वास्थ्य पुनः प्राप्त कर लेते हैं, लेकिन खोया हुआ समय हमेशा-हमेशा के लिए चला जाता है। और हमारे साथ यही होता है। हमें महापुरुष का साथ या सान्निध्य मिलता है उस समय को हम आलस्य-प्रमाद में खो देते हैं और महापुरुष के चले जाने के बाद केवल पश्चाताप हाथ आता है। किसी ने कहा है—

सूर्य उदय हो अैर उल्लू को दिखाई न दे तो इसमें सूर्य का क्या दोष है?

वसंत ऋतु में भी यदि करील की डाल में पत्ते और फूल न आयें तो वसंत का क्या दोष?

वर्षा ऋतु में पपीहे की प्यास न बुझे तो वर्षा ऋतु का क्या दोष?

जितने दिन बीतते जा रहे हैं सद्गुरु कबीर देव की वाणी उतनी ही प्रासंगिक होती जा रही है। मेरा यह मानना है कि गुरुदेव जी ने जो अपने आचरण-व्यवहार से, निर्भ्रांत ज्ञान एवं साहित्य के माध्यम से जो सुगंधी फैलायी है, दिन-प्रतिदिन उसकी प्रासंगिकता और मांग बढ़ती जायेगी। प्रत्यक्ष उदाहरण से आप देख सकते हैं। सद्गुरु कबीर की वाणी बीजक पर आपने जो बृहत् व्याख्या 2000 पेज में लिखी है, आपके जीवन काल में ही उसके 18 संस्करण निकल गये। कबीर दर्शन, आपका मौलिक ग्रंथ 784 पेज का, 8 संस्करण हो चुके हैं। किसी-किसी ग्रंथ के 19 संस्करण भी हो चुके हैं। आपके द्वारा छोटे-बड़े कुल 125 ग्रंथ हैं। यह तो रही साहित्य की बात। आपके प्रवचन खुले मंच पर, राम मंदिर में, कृष्ण मंदिर में, गीता मंदिर में, गिरजा और गुरुद्वारा में होते रहे। आपको सुनने के लिए सभी सम्प्रदाय के लोग आते रहे। आप बड़ी से बड़ी बात को दो टूक कह देते थे किन्तु आपका कहने का ढंग इतना सुन्दर, कोमल, धारदार एवं सप्रमाण होता कि श्रोताओं को मानने के लिए विवश होना पड़ता था।

आप जैसे सत्यासत्य विवेकी, निष्पक्ष पारख दृष्टि, साथ-साथ कथनी-करनी की एकता, निर्भ्रांत बोधदाता महापुरुष इस धराधाम में कभी-कभी और कोई-कोई हुआ करते हैं। महापुरुषों को नश्वर संसार से जाना तो सहज लगता है किन्तु बचे हुए लोगों को अगले महापुरुष के आने तक सारा संसार अंधकार जैसे लगने लगता है। आपके न रहने पारख सिद्धांत और कबीरपंथ की ही नहीं, समस्त धर्मावलम्बियों व विद्वानों की ही नहीं गांव में रहने वाले अनपढ़ और किसानों तक की अपूरणीय क्षति हुई है।

ज्ञानी, गुणी, सुर, कवि, त्याग-वैराग्य सम्पन्न सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी के चरणों में शत-शत नमन करते हुए हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करता हूं।

कबीर पारख संस्थान
प्रीतमनगर, इलाहाबाद

परम पावन संत सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी को हार्दिक श्रद्धा-सुमन अर्पित

धर्मदास

आज मनुष्य ने जहां एक ओर समुद्र की गहराई और आकाश की ऊंचाई को नाप लिया है, पृथ्वी से दूर अनंत अंतरिक्ष में भारतीय मूल की सुनीता विलियम्स चहलकदमी कर रही है; कम्प्यूटर, लैपटाप, इण्टरनेट, सेटेलाइट, प्रक्षेपास्त्र के आधुनिक आविष्कारों के अतिरिक्त गॉड पार्टिकल-हिग्स बोसोन (ईश्वरीय कण) की खोज से पूरी दुनिया रोमांचित है तो वहीं दूसरी ओर बुद्धिमत्ता का निवास मनोलोक का एक कोना अब भी घोर अंधकार में डूबा है जिसका फायदा उठाकर नामधारी वंचक धर्मगुरु धर्मपरायण जनमानस का आर्थिक दोहन तथा बौद्धिक शोषण कर रहे हैं। वैज्ञानिक उपलब्धियों ने विलासिता की वस्तुओं को सुलभ कराया है तो भी संग्राहक प्रवृत्ति के कारण बिना कमाये हम कम समय में अंबानी और बिरला को खरीदने का सपना संजो लेते हैं, और इसी कमजोरी के फलस्वरूप परपंची गुरु को अवसर मिल जाता है, बेटा, नौकरी, धन-दौलत, पद-प्रतिष्ठा, यौवन, सौंदर्य आदि के बड़े-बड़े सपने दिखाकर हमें ठगने का। यह प्रवृत्ति कबीर साहेब काल में भी थी जिससे उन्होंने सबको सावधान किया—"ये कलि गुरु बड़े परपंची, डारि ठगौरी सब जग मारा।" देश की जितनी आबादी कबीर साहेब के जमाने में रही होगी उतनी संख्या आज परपंचियों की देश भर में विद्यमान है। ऐसे में एक शुद्ध हृदय, जो भावनात्मक विकारों और तुच्छ वासनाओं से मुक्त और परिष्कृत है, हमारे मन के बंधनों और अज्ञानता से छुटकारा दिला देता है, सभी प्रकार की भ्रांतियां, कर्म और उनके चिह्न बुढ़ापा, बीमारी, मृत्यु और पुनर्जन्म के रहस्यों को सुगमता से हृदयंगम कराने के लिए सक्षम है, वह सच्चा गुरु है।

संत शिरोमणि कबीर साहेब ने 600 वर्ष पूर्व जो सिखाया था उसके टुकड़े-टुकड़े पकड़कर अनेक सम्प्रदाय आज खड़े हैं, उनके विविध मत हैं और गुरुओं की लम्बी शृंखला है। कबीर साहेब के जीवन की घटनाओं तथा सिद्धान्तों के विषय में न विद्वान एकमत हैं और न कबीरपंथी। कुछ विद्वान उन्हें हठयोगी सिद्ध करने में कटिबद्ध हैं तो कुछ उन्हें चमत्कारी गुरु मानते हैं। उनके जन्म के विषय में भी विभिन्न मत हैं, कुछ लोग उनको अच्युत (अविनाशी) अशरीरी-अवतारी पुरुष घोषित करते हैं तो कुछ उन्हें अवैध संतान मानते हैं। कुछ का मत है कि वे हिन्दू थे और कुछ लोग उन्हें मुसलमान कहते हैं। इन मान्यताओं के समर्थन में सब अपने-अपने प्रमाण का उपयोग भी करते हैं। फिर भी इसमें बिलकुल संदेह नहीं किया जा सकता कि कबीर साहेब का व्यक्तित्व समसामयिक तथा अपने पूर्ववर्ती महापुरुषों के मध्य अत्यंत महत्त्वपूर्ण और विशाल रहा है। वे निष्पक्ष-निर्भय पारख-दृष्टि के पुरस्कर्ता एवं प्रतिष्ठापक थे जिसका दिग्दर्शन हमें उनके महान ग्रंथ बीजक की इन पंक्तियों से होता है—

भूल मिटै गुरु मिलैं पारखी, पारख देहिं लखाई।
कहहिं कबीर भूल की औषध, पारख सबकी भाई॥

पारख का अर्थ वस्तु-विवेक है। सद्गुरु कबीर ने कहा था कि भूल मिट सकती है यदि पारखी गुरु से भेंट होगी जो पारख लखा देंगे। संसार का अध्ययन करना संसार को जानने के लिए आवश्यक है तो आत्मा का अध्ययन आत्मा को समझने के लिए जरूरी है। बशर्ते शास्त्र, गुरु, परम्परादि सब प्रकार के पक्षपातों का त्याग हो सके। पक्षपात एवं पूर्वाग्रह विहीन दृष्टि ही पारख ग्रहण कर सकती है। पारख दृष्टि के निष्पक्ष एवं निर्भय अध्येता एवं व्याख्याकार संत श्री अभिलाष साहेब का नाम शीर्ष चोटी पर है।

परंपरा में पारखी संत एवं गुरु सदैव से होते रहे हैं किन्तु अविकसित यातायात एवं संचार के साधनों के फलस्वरूप पारख दृष्टि का प्रचार-प्रसार क्षेत्रीय स्तर तक ही सीमित रहा। अशिक्षा एवं प्रकाशन की कमी के कारण उन संतों की रचनाएं भी प्रभावहीन ही रहीं। इन परिस्थितियों में कबीर विचारधारा के नाम पर पौराणिक मान्यताओं का प्रचार बढ़ गया था और संतों की पारख दृष्टि विद्वानों की नजरों से दूर हट रही थी। यद्यपि 600 वर्षों में पारख सिद्धान्त पर उत्तम ग्रंथ समय-समय पर बनते रहे थे जिनमें बीजक के अतिरिक्त श्री गुरुदयाल साहेब (1680-1760 ई.) का 'कबीर-परिचय', श्री रामरहस साहेब (1725-1809 ई.) की पंचग्रंथी, श्री पूरण साहेब (1806-1838 ई.) की 'त्रिज्या एवं निर्णयसार', श्री काशी साहेब (1858-1924 ई.) का 'निर्पक्ष सत्यज्ञान दर्शन', श्री निर्मल साहेब (1884-1920 ई.) का 'निर्मल सत्यज्ञान प्रभाकर' और श्री विशाल साहेब (1885-1977 ई.) के 'भवयान, मुक्तिद्वार एवं सत्यनिष्ठा' आदि के नाम लिये जा सकते हैं। सद्गुरु कबीर के बीजक ग्रंथ के अतिरिक्त पारख सिद्धान्त के उल्लिखित ग्रंथों को अधिक सुगम और प्रभावी बनाने, आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विषय का विश्लेषण और व्याख्या करने के अतिरिक्त उन पर सरल टीका एवं भाष्य का प्रकाशन करने में कठोर परिश्रम एवं योगदान के लिए श्री अभिलाष साहेब का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। ऐसे विलक्षण प्रतिभा के धनी, कर्मठ व निष्काम संत को शत-शत नमन।

कबीर साहेब की वाणियों में 'बूझे बिरला कोय, जो अबकी बूझे, बूझौ पंडित ज्ञानी, कबिरा का पद जन बिरला बूझै', आदि का प्रयोग अनेक स्थलों पर पाया जाता है और सचमुच उन पदों एवं भजनों का भाव समझना अत्यंत कठिन है। संतप्रवर श्री अभिलाष साहेब जी जिस सरल एवं बोधगम्य भाषा में कबीर वाणियों की व्याख्या तथा निर्भय-निष्पक्ष ज्ञान के आलोक में प्रचार और प्रवचन करते रहे हैं, वह शैली अद्वितीय एवं दुर्लभ है। परख की कसौटी पर बीजक-ज्ञान प्रदाता परम पावन संत के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन। उनके लेखन और प्रवचनों में पोथी, परम्परा, गुरु, जनसमाज, प्राचीनता आदि के पक्षपात रहित निष्पक्ष स्वतंत्र चिन्तनपूर्ण सत्य वचन बोलने और सच्चे ज्ञान का प्रकाश करने का निरूपण होता है। बोल-वचन में किसी के प्रति कटुता या कठोर वचन का कतिपय प्रयोग नहीं पाया जाता है जो कबीर साहेब द्वारा साधुता के लिए निर्धारित कसौटी पर उन्हें खरा साबित करता है—

साधु भया तो क्या भया, बोलै नाहिं बिचार।
हतै पराई आतमा, जीभ बाँधि तरवार॥

कबीर साहेब यथार्थवादी हैं जिनका अनुसरण पूज्य संत अभिलाष साहेब ने पूर्णतया किया। उन्होंने किसी को झूठा आश्वासन नहीं दिया। उन्होंने किसी को पुत्र पाने, मुकदमा जीतने, धन या पद पाने अथवा निरोग होने का आशीर्वाद कभी नहीं दिया। आध्यात्मिक जगत में बहुत बड़ा भ्रम है कि गुरु शिष्य को अपनी सारी शक्तियों से सम्पन्न कर देता है। कबीरपंथ में भी कहा जाता है कि गुरु कृपा से ही जीव साधु समान होता है और अनल पक्षी के समान अमरलोक को जाता है। जो मन, वचन और कर्म से गुरु का ध्यान करे, जीवन भर उनकी आज्ञा में चले, सद्गुरु उसे मुक्ति का दान देते हैं। परन्तु सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब इस बात को काटते हैं कि श्री रामकृष्ण परमहंस विवेकानन्द पर

शक्तिपात कर उनको महान बना दिये थे। उनके अनेक शिष्य थे, उन सब पर शक्तिपात करके सबको विवेकानन्द की तरह महान क्यों नहीं बना दिये? शक्तिपात जैसी कोई बात नहीं है (बीजक व्याख्या, भाग-1, पृ. 854-55)। संतप्रवर, सत्य के उपासक, नीर-क्षीर विवेकी एवं बुद्धिवाद की परिभाषा में तर्कसिद्ध बात रखने में अति प्रवीण महापुरुष श्री अभिलाष साहेब की कमी सदा सत्य की खोज करने वाले अध्येताओं एवं मुमुक्षुओं के बीच रहेगी।

सत्यग्राही एवं पारखी संत श्री अभिलाष साहेब विद्वानों के मध्य सदैव अपनी पारखनिष्ठ रचनाओं के लिए सम्मान पाते रहेंगे, विभिन्न धर्मोपदेशकों के बीच विश्व धर्म-दर्शन के पुरस्कर्ता के रूप में आदर पायेंगे। उनकी यह स्थापना निष्पक्ष विचारकों के लिए उद्धरण का स्थान पायेगी और सदा उदाहरण के रूप में रखी जायेगी कि "धरतीतल के सारे ग्रंथों को आदर देना चाहिए और यथाशक्ति उन्हें पढ़ना चाहिए, किन्तु पारखी होकर। कोई भी ग्रन्थ कितना ही मान्य, पुराना तथा प्रतिष्ठित हो, वह स्वतः प्रमाण नहीं हो सकता। हजारों वेद वचन घड़े को कपड़ा नहीं बना सकते। जो युक्तियुक्त विश्वनियमों तथा कारण-कार्य व्यवस्था के अनुकूल है, वही बात मानने योग्य होगी। उसी से कल्याण होगा। संत, ऋषि, अवतार, पीर, पैगम्बर की दुहाई देकर कोई बात प्रमाण नहीं हो सकती।"

कबीर साहेब का वचन है—

साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
*सार सार को गहि रहे, थोथा देय उड़ाय*û

उपर्युक्त वाणी को गुरुमुख से बार-बार सुनता रहा हूं। साधु का वेष धारण करने मात्र से कोई साधु नहीं बन जाता। मन, वचन और कर्म से जो जीवनपर्यन्त साधुता की कसौटी पर स्वयं को कसता रहे और उसी अवस्था में संसार से विदा हो जाये, तब वह सच्चा साधु है। साधुता की कसौटी पर परम पावन श्री अभिलाष साहेब सदैव खरा थे। विगत पच्चीस वर्षों से हमने उन्हें जिस दशा में देखा, सुना और पढ़ा है उसी दशा में महानिर्वाण को प्राप्त हुए। सभी ग्रंथों, सभी धर्मों तथा सभी महापुरुषों को समान रूप से आदर देकर अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने वेद, रामायण, महाभारत, गीता, उपनिषद्, योगदर्शन, अष्टावक्रगीता, धम्मपदं (बुद्ध क्या कहते हैं?), विवेक चूड़ामणि (शंकराचार्य क्या कहते हैं?), तुलसीदास कृत पांच ग्रंथों पर आधारित तुलसी पंचामृत के अतिरिक्त मेरी और रूैन सांग की डायरी, कबीर पर शुक्ल (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल) की और मेरी दृष्टि, तथा ताओ ते चिंग (लाओत्से क्या कहते हैं?) आदि कालजयी रचनाओं में अपने पारख विवेक द्वारा विश्लेषण करते हुए 'सार सार को गहि रहे, थोथा देय उड़ाय' के सिद्धान्त का पूर्णतः निर्वाह किया है। 'राम-रहीम, ईसा-मूसा सब पूज्य हैं' के आदर्शों का पालन करते हुए हजरत मुहम्मद, महात्मा ईसा, महावीर, बुद्ध, जरथुस्त्र, कनफ्यूशियस, लाओत्ज़े, गुरुनानक जैसे धर्म संस्थापकों एवं दार्शनिकों के प्रेरणादायक प्रसंगों की प्रशंसा के साथ-साथ दयानंद, विवेकानन्द, अम्बेडकर एवं गांधी जैसे सुधारकों के प्रति समर्पित रचना आप के निरपेक्ष दृष्टिकोण का परिचायक है। 'न भूतो न भविष्यति' कहावत को चरितार्थ करने वाले संत, गुरु, लेखक एवं मनीषी के रिक्त स्थान को भरना आसान नहीं होगा। अतः जब भी बात छिड़ेगी संतों और गुरुओं की तब-तब विदेह पावनपुरुष अभिलाष साहेब की याद उनके भक्तों और प्रशंसकों को खूब सतायेगी।

हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल सरीखे दिग्गज विद्वान ने कबीर, दादू जैसे निर्गुणवादी संतों के लिए अपनी पुस्तक 'गोस्वामी तुलसीदास' में अभद्र शब्द कहे हैं तो 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लोकधर्म विरोधी तथा समाज को विशृंखल एवं उसकी मर्यादा का नष्ट करने वाला करार दिया, उन्हें अनधिकारी और अशिक्षित कहकर अपमानित किया तथा अशिष्ट भाषा में कहा कि "ज्ञानी बने हुए मूर्ख जनता को लौकिक कर्तव्यों से विचलित करना चाहते हैं और मूर्खता मिश्रित

अहंकार की वृद्धि कर रहे हैं।" पूज्य गुरुदेव ने 'कबीर पर शुक्ल की और मेरी दृष्टि' शीर्षक से एक निबन्ध लिखकर करारा जवाब दिया। यदि शुक्ल जी जीवित होते तो उस निबन्ध को पढ़ने के बाद गोस्वामी जी की निम्न चौपाई उन्हें चैन से कभी सोने न देती।

"बादहिं शूद्र द्विजन सन हम तुमतें कछु घाटि।
जानहिं ब्रह्म सो विप्रवर आंखि देखावहिं डाटिऊ"

उपर्युक्त निबन्ध पढ़ने के पश्चात श्री शुकदेव सिंह, जो हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रवक्ता थे, ने लिखा—

"किस तरह साम्प्रदायिकता से प्रेरित होकर पं. रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास और समीक्षा लेखों में सम्पूर्ण सन्त साहित्य की अवमानना की है, उसे संत अभिलाष दास जी ने शुक्ल जी के तमाम उद्धरणों को प्रस्तुत कर विश्लेषित किया है। केवल उद्धरण संग्रह मात्र से ही लेखक की अध्ययनक्षमता का पता चल जाता है। निरुद्वेग आलोचना और संत साहित्य के पुनर्मूल्यांकन की दृष्टि से यह पुस्तक सदैव महत्त्वपूर्ण बनी रहेगी।"

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रतलाम के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. रामकुमार मेहरा ने अपने उद्‌गार में लिखा—

"मुझे एम.ए. के विद्यार्थियों को प्राचीन काव्य और मध्यकालीन काव्य पढ़ाने का विगत चौदह वर्षों से अवसर मिलता रहा है। उक्त सामग्री से नये दिशा निर्देश मिले हैं, जिनसे मैं और मेरा विद्यार्थी समुदाय भी कृतकृत्य हुआ है।...खेद की बात तो है कि हिन्दी साहित्य के मूर्द्धन्य विद्वान शुक्ल जी से उक्त भूल कैसे हुई।... मुझे इस पुस्तक से कबीर के अध्येताओं के कई क्षेत्रों को समझने और समझाने के स्वर्णिम आयाम प्राप्त हुए हैं।"

रीवा के एक वृद्ध साहित्यकार श्री राम मनोहर वर्मा ने साधुवाद प्रेषित करते हुए लिखा—

"आपने जिस धैर्य और सौजन्यता से श्री शुक्ल जी की आलोचनाओं का दिग्दर्शन कराया है वह वास्तव में स्तुत्य है।

श्री शुक्ल जी की मानसिक ग्रन्थि और आपके सत्यासत्य निर्णय की कला का इससे अधिक विश्लेषण और क्या हो सकता है। मैं बुद्धिजीवी हूं, विद्रोही विचार का हूं। आपने कबीर साहेब के विचारों एवं इस देश की पिछड़ी, दलित, शोषित 75 प्रतिशत जनता के हितों की पूरी-पूरी वकालत की है, इसके लिए मेरी ओर से साधुवाद।

आपके विचार पूर्णतः परिपक्व हैं। आपके गहन अध्ययन और विचारों की प्रस्तुति की शैली निःसन्देह प्रशंसनीय है।"

साहित्यकारों एवं बुद्धिजीवियों के उपर्युक्त विचार इस बात के प्रमाण हैं कि स्वरूपलीन परम पावन सद्‌गुरु श्री अभिलाष साहेब कबीर विचारधारा के प्रकाण्ड विद्वान के अतिरिक्त आध्यात्मिक क्षेत्र में एक महान मानवतावादी महापुरुष हुए जिनकी प्रेरणा युगों-युगों तक संसार में कल्याण करती रहेगी।

अगर सद्‌गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी के धर्म-दार्शनिक रूप की चर्चा न हो तो हमारी श्रद्धांजलि अधूरी रहेगी।

धर्मदर्शन एक व्यापक शास्त्र है जिसमें धर्म के स्वरूप और उनके गुण-दोष का विवेचन किया जाता है। भारत से लेकर पाश्चात्य दार्शनिकों ने धर्मदर्शन, ईश्वर दर्शन तथा जगत उत्पत्ति विषयक अपने-अपने मत प्रकाशित किये हैं। भारत में हिन्दू विचारधारा की प्रणालियों का प्रादुर्भाव ईसा मसीह से 600 वर्ष पूर्व से लेकर 200 अथवा 100 वर्ष पूर्व तक हुआ माना जाता है। कबीर साहेब आज से 600 वर्ष पूर्व हुए थे, शायद यही वजह है कि कबीर विचारधारा को स्वतंत्र धर्मदर्शन नहीं मानकर हिन्दू विचारधारा का एक मार्ग मानकर 'कबीर मार्ग' अथवा 'कबीर पंथ' कहा जाता रहा है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है कि "निर्गुण पंथ के संतों के सम्बन्ध में यह अच्छी तरह समझ रखना चाहिए

कि उनमें कोई दार्शनिक व्यवस्था दिखाने का प्रयत्न व्यर्थ है। उन पर द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत आदि का आरोप करके वर्गीकरण करना दार्शनिक पद्धति की अनभिज्ञता प्रकट करेगा। उनमें जो थोड़ा-बहुत भेद दिखाई पड़ेगा वह उन अवयवों की न्यूनता या अधिकता के कारण जिनका मेल करके निर्गुण पंथ चला है।"

संतप्रवर श्री अभिलाष साहेब ने 'जगन्मीमांसा' नामक ग्रन्थ में जगत-उत्पत्ति विषयक विविध मतों के आलोचनात्मक विचार के साथ पारख न्याय का वर्णन किया जिसका प्रकाशन 1967 ई. में हुआ। पुनः सन् 1982 ई. में पहली बार 784 पृष्ठों का बृहद्काय ग्रन्थ 'कबीर दर्शन' प्रस्तुत कर शुक्ल जैसे आलोचकों को उत्तर दिया। इसमें पारख सिद्धान्त का ऐतिहासिक और दार्शनिक विवेचन किया गया है। पारख सिद्धान्त पर आधारित पूर्व के संतों द्वारा रचित ग्रन्थों पर विश्लेषणात्मक विवेचना के अतिरिक्त कबीर विचारधारा पारख सिद्धान्त का अन्य भारतीय दर्शनों के साथ तुलनात्मक अध्ययन एवं आधुनिक संत गांधी, टैगोर, रामतीर्थ पर कबीर के प्रभाव का वर्णन है। अनेक विद्वानों ने इस ग्रंथ का मूल्यांकन किया है जो परम पावन गुरुदेव की कृति-स्तम्भ के मानदण्ड का द्योतक है।

प्राच्य और पाश्चात्य दर्शन ग्रन्थों के यशस्वी लेखक तथा प्रयाग विश्वविद्यालय दर्शन विभाग के अध्यक्ष श्री संगम लाल पाण्डेय का अभिमत—"निःसन्देह सन्त अभिलाष दास जी एक सच्चे धर्म दार्शनिक हैं। वे विरक्त हैं, आत्मानुभूति से सम्पन्न हैं तथा उच्च कोटि के मनीषी हैं। तर्कबुद्धि, नैतिक सदाचार तथा आत्मानुभव की अद्भुत त्रिवेणी का उनमें संगम है। उनकी कृतियां न केवल पारख सिद्धान्त और कबीरपंथ के लिए महत्त्वपूर्ण हैं अपितु सामान्य जिज्ञासु के लिए आत्मसाक्षात्कारक होगा, ऐसी मुझे आशा है। कुछ भी हो, हिन्दी भाषा के माध्यम से धर्म और दर्शन पर चिन्तन करनेवालों में स्वामी अभिलाष दास जी अग्रिम पंक्ति में हैं।"

हिन्दी साहित्य के विद्वान डॉ. रामकुमार वर्मा की सम्मति है कि "महात्मा अभिलाष दास द्वारा लिखित 'कबीरदर्शन' ग्रन्थ अपने विषय का अनूठा ग्रन्थ है, यह ग्रन्थ अपने विषय का एक विश्वसनीय और प्रामाणिक आलेख बन गया है।" साहित्य, दर्शन एवं संगीत के चिन्तक डॉ. जयदेव सिंह ने लिखा—"सद्गुरु कबीर एक महान रत्नाकर हैं। जिन लोगों ने इस रत्नाकर में डुबकी लगायी है उनके हाथ अनेक रत्न आये हैं। इस ग्रन्थ में लेखक ने भी कई रत्न प्रस्तुत किये हैं। 'पारख सिद्धान्त' और 'भारतीय दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन' इन्हीं रत्नों में है।" डॉ. वासुदेव सिंह ने अपनी सम्मति देते हुए कहा कि "श्री अभिलाष दास जी ने न केवल कबीर और उनके पन्थ के साहित्य को निकट से देखा-समझा है, अपितु स्वयं उसी पंथ के अनुयायी साधक भी हैं। उन्होंने प्रस्तुत ग्रन्थ में जो कुछ कहा है वह अनुभव पर आधारित है। इसलिए इसकी प्रामाणिकता असंदिग्ध है।" हिन्दी भाषा के विद्वान श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी ने लिखा—"व्याख्याता अभिलाष दास जी ने बड़े मनोयोग से कबीर दर्शन की झलक प्रस्तुत की है। आपकी विद्वता सहज ही संत जीवन का सहचर बन गयी दिखती है।...इसमें उपलब्ध सामग्री तथा सूचना संत साहित्य के प्रेमियों के लिए पाथेय का काम करेगी, इसमें संदेह नहीं।"

25 सितम्बर, 2012 की सांध्य बेला तक कबीर आश्रम, इलाहाबाद के वासी पूज्यपाद सद्गुरुदेव की उपस्थिति से पुलकित थे। शयनपूर्व बन्दगी के बाद सब अन्य दिनों की तरह रात्रि-विश्राम कर रहे थे। किन्तु रात बीतने के पूर्व ही आश्रम असहज हो उठा। ब्रह्म मुहूर्त की बेला आवाज गूंजी—मेरो सैंया निकल गयो मैं न लड़ी।' अचानक आश्रम की हलचल तेज हो गयी, लोग इधर-उधर अपने प्रीतम को ढूंढ़ने लग गये थे। एक दूसरे से पूछ रहे थे, कहां हैं, कहां गये, क्यों गये, किसने जाते देखा, आदि-आदि प्रश्न अनेक परन्तु कोई उत्तर संतुष्ट नहीं कर पा रहा था। सफाई में कोई कहता—'ना मैं बोली ना मैं चाली, ओढ़ी चुनरिया पड़ी रही', तो कोई कहता—'शीश महल के दस दरवाजे, कौन सी खिड़की खुली रही।' सूना-सूना-सा महल

था। उत्तर कौन देता! साहेब बिना चेताये लम्बी यात्रा पर निकल चुके थे। सब के सब विस्मित थे। सब के चेहरे ठगे-ठगे-से थे। आश्रम की खुशियां गायब हो चुकी थीं। सबके अंत:करण में एक ही शब्द ध्वनित हो रहा था—

गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केस।
चल खुसरो घर आपने, रैन भई चहुं देस॥

अंतरिक्ष में सूरज निकल रहा था किन्तु लाखों-करोड़ों के दिलों को अपनी आभा से आलोकित करने वाला सविता अस्ताचल की महायात्रा पर जा चुका था। पंचभौतिक कलेवर दृश्यमान था जिससे साहेब की अनुपस्थिति की अनुभूति मिल रही थी। वह प्रकाश-पुंज जिससे हम सबकी हृदय-स्थली जगमगाती थी, अब गुल था। रोयें कि हंसें, समझ से परे था। आखिर हम संसारी ठहरे, प्रियतम को खोकर हंसने के अभ्यस्त नहीं हैं, यद्यपि गुरुदेव एक मंत्र बार-बार रटाते रहे थे : "अहम् शुद्ध चैतन्य ज्ञानस्वरूपम्, अजरऽहम् अमरऽहम् अखंडम् अनूपम् ।"

जिस दिव्य पुरुष को हमने खोया उसकी जीवन यात्रा भाद्र कृष्ण पक्ष द्वादशी वि. सं. 1990 दिन गुरुवार (17 अगस्त, 1933 ई.) को श्री दुर्गाप्रसाद शुक्ल के औरस पुत्र रामसुमिरन की पहचान से माता श्रीमती जगरानी देवी के कोख से ग्राम खानतारा (सिद्धार्थनगर, उ. प्र.) से प्रारम्भ होकर द्वितीय भाद्रपद शुक्लपक्ष एकादशी 2069 दिन बुधवार को कबीर आश्रम, कबीरनगर, इलाहाबाद में सद्गुरु अभिलाष साहेब के पद पर 26 सितम्बर, 2012 को पूरी हुई। राम सुमिरन से श्री अभिलाष दास साहेब की यात्रा अनेकों उपलब्धियों से परिपूर्ण रही जो उनके भक्तों के लिए मील का पत्थर है। उनका सादा, सदाचारमय विमल जीवन मुमुक्षुओं के लिए आदर्श रहेगा। यद्यपि उनका अजर-अमर स्वरूप हमारी भौतिक पहुंच की सीमा के बाहर है परन्तु उनके दिव्य विचार उनकी रचनाओं में संग्रहीत हैं जिनसे हमें मार्गदर्शन और प्रेरणा मिलती रहेगी। आधुनिक तकनीक के द्वारा उनके भौतिक स्वरूप तथा अमृतमय वाणी को हमने संजो लिया है जिससे हमारी आंखें तृप्त हो सकेंगी और अंत:करण भी निर्मल हो सकेगा। उस युगपुरुष महात्मा जिसने हमारे जैसे क्षुद्र प्राणी को आशीर्वाद दिया, जिनके चरणों को स्पर्श कर तथा शीश भेंट कर स्वर्गानुभूति प्राप्त हुई उन्हें हमारी श्रद्धासुमन और कोटि कोटि नमन एवं बन्दन। आपकी यह हिदायत स्मरण में रखने की चेष्टा करूंगा कि—

शुद्ध पारखज्ञान है, निजरूप में ही लौट आना।
छोड़ सारा दृश्य, अपने आप मस्ती में समाना॥

कोशिश करूंगा कि आपके भौतिक दृश्य को छोड़ सकूं किन्तु प्रण भी नहीं लेता क्योंकि अपने महाप्रयाण के पूर्व आपने सहारा का विकल्प नहीं बताया। आपकी छवि सुरति में बसाकर सदैव आनन्दित होंगे। अलविदा! अलविदा!! अलविदा!!!

संस्मरण

1. लगभग सन 1990 ई. के पहले की बात है। श्री काली प्रसाद शर्मा जी (अब संत हैं, तब सेवारत थे) के साथ जियनपुर (अयोध्या) स्थित सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब के द्वारा स्थापित आश्रम में संत श्री अभिलाष साहेब का दर्शन प्राप्त हुआ। सर्दी का मौसम था। सूर्यास्त के बाद हम लोग पहुंचे। गुरुदेव के निवास के बाहर दरी बिछाकर हमारे बैठने की व्यवस्था की गयी। पांच मिनट पश्चात कक्ष से गुरुदेव बाहर निकले और कुर्सी पर बैठते ही एक ब्रह्मचारी से अत्यंत धीरे से बोले — "कुछ जलपान की व्यवस्था करो।"

औपचारिक परिचय के बाद गुरु जी ने मुझसे पूछा— 'कोई जिज्ञासा है?' मैं इसके लिए तैयार नहीं था, मैंने कहा—'कुछ ज्ञान नहीं है। क्या कहूं?' स्वयं ही सद्व्यवहार की बातें करने लगे। इसी बीच एक युवक सपरिवार वहां पहुंचा और बन्दगी करके हम लोगों के साथ सभी बैठ गये। गुरुदेव जी ने अनेक पारिवारिक सदस्यों (नाम ले-लेकर) का हालचाल पूछा। फिर पूछा—'तुम अभी क्या कर रहे हो?'

युवक—'अभी बेकार हूं। नौकरी अब सिर्फ छोटी जातियों को मिलती है। बड़ी जातियों के लिए सीटें बहुत कम हो जाती हैं।'

गुरु जी—'निराश होने की बात नहीं है। हमारे पुरखों ने हजारों वर्षों से उनके हकों को मार रखा है। उनका शोषण किया है। उन्हें नीचे दबाकर रखा है। अब व्यवस्था बदली है। उन्हें ऊपर लाने की कोशिश हो रही है। उन्हें उनका हक मिलेगा तो तुम्हारे लिए जगहें कुछ तो कम होंगी ही।'

युवक—'इसमें मेरा क्या दोष? हमने उन्हें नहीं सताया। हम पढ़-लिख कर जिस पद के लिए तैयार होते हैं वह हमें तो मिलता नहीं। उन्हें मिल जाता है यद्यपि योग्यता में हमसे वे कम होते हैं।'

गुरु जी—'आज उनके लिए नौकरियों में आरक्षण है जबकि इसके पहले सदियों से ऊंची जातियों के लिए सब कुछ आरक्षित था। उनके लिए नदी के घाट या कुंआ पर पानी भरने के लिए जगह भी नहीं थी। सड़क पर चलने की उन्हें छूट नहीं थी। सबके बराबर जाकर बाजार में उनका खड़ा होना लोगों को सहन नहीं होता था और ये सब अन्याय तुम्हारे बाप-दादा कर रहे थे। उनके पाप का भी प्रायश्चित थोड़ा तुम्हें करना पड़ रहा है। बाप का कर्ज बेटा को चुकाना पड़ता है यही दस्तूर है। इसलिए बदली व्यवस्था को खुशी-खुशी स्वीकार करो। इसमें सबका हित है।

लगा युवक कायल हो चुका था।

2. एक बार की बात है। ग्रीष्म का मौसम था। मलीहाबाद क्षेत्र (जो लखनऊ के दशहरी आम के लिए प्रसिद्ध है) में पारा के कबीर आश्रम में गुरुदेव का कार्यक्रम था। मुझे खबर मिली कि इलाहाबाद से सुबह चलने वाली ट्रेन से गुरुदेव चारबाग पहुंचेंगे। मैं वहां पहुंच गया। उस रोज तेज धूप थी। दूर के प्लेटफार्म से चलते हुए निकासी कक्ष में पहुंचकर खड़े हो गये। मैं और वर्माजी गुरुदेव के पास खड़े होकर बातें करते रहे। प्रसन्नचित्त होकर घर-परिवार का कुशलक्षेम पूछते रहे। साधु एवं ब्रह्मचारी लोग संत-समाज के सामानों के अतिरिक्त पुस्तकों के बंडलों को ढो-ढोकर ला रहे थे। तभी पारा के भक्त ने आकर गाड़ी लेकर आने की सूचना दी। दो मारुती वैन स्टेशन के बाहर धूप में खड़ी थीं जिसमें एक की अगली सीट पर गुरुदेव जी ने अपना आसन लगा लिया। बगल में हम लोग खड़े थे तब महसूस हुआ कि धूप का तेज असह्य हो रहा था। तभी ध्यान गया कि गुरुदेव जी का सिर घुटाया हुआ था इसलिए कपड़े की पतली परत धूप के लिए नाकाफी थी। उस पर से वैन की छत तपकर अधिक पीड़ादायक थी। परन्तु गुरुदेव मुस्कुरा-मुस्कुरा कर बातें करते रहे जैसे किसी छायादार बरगद के नीचे आसन लगा हुआ था। मैं अम्बेस्डर कार लेकर गया था। मैंने निवेदन किया कि अम्बेस्डर से मैं पारा तक छोड़ना चाहता हूं।

गुरुदेव का उत्तर था कि तुम कार्यालय छोड़कर मुझसे मिलने आये हो। जाओ अपना कार्य करो। शाम को सत्संग के लिए आना। अभी जो गाड़ी मुझे लेने आयी है उसमें कोई तकलीफ नहीं है। जबकि ग्रीष्म की दुपहरिया में बीस मिनट तक वैन में बैठकर सामान चढ़ाये जाने तक इंतजार करना कितना कष्टकारक हो सकता है इसका अनुभव सब लोगों को होगा। साधु स्वभाव का उत्तम उदाहरण था कि चिलचिलाती धूप में भी गुरुदेव ऐसे प्रसन्नचित्त होकर बातें कर रहे थे जैसे धूप नहीं आसमान में बादल हों। दूसरी बड़ी बात थी कि ड्यूटी छोड़कर उनके साथ चलना उन्हें अच्छा नहीं लगा। खैर, कुछ लोगों के साथ हम सत्संग में पहुंचे। प्रायः गुरुदेव जी पलथी मारकर बैठते हैं। लेकिन उस रोज उनके लिए एक कुर्सी रखी गयी थी इसका रहस्य खुला तब मालूम हुआ कि उन दिनों साइटिका से पीड़ित थे। साइटिका में कितनी पीड़ा होती है वही जान सकता है जिसने कभी अनुभव किया हो। कठिन शारीरिक पीड़ा सहकर मुस्कराते रहने की कला का उन्हें अच्छा अभ्यास था। इसीलिए तो हमें कहा करते थे, सुख और दुख जीवन का अनिवार्य अंग है, शरीर धारण करने का कष्ट साधु-असाधु सबको होता है। अतः सुख-दुख दोनों को सहज भाव से स्वीकार करो।

1/149 शोभा कुंज, कुर्सी रोड, विकासनगर, लखनऊ

विवेक से सब कुछ होत है

डॉ. श्रीपति कुमार यादव

प्रगतिशील विचारधारा से अनुप्राणित आप व्याख्याकार के रूप में विख्यात, टीका एवं भाष्यकार के क्षेत्र में निष्णात तथा साधुता, सज्जनता, सरलता हेतु सदैव याद किये जायेंगे। सदियों से चली आती हुई मान्यताएं, परम्परा, रूढ़िवादिता एवं दकियानूसी विचारों को जड़ से उखाड़ फेंकने हेतु आपने जीवनपर्यन्त कार्य किया। लकीर का फकीर होना स्वामी जी का स्वभाव नहीं था। प्राचीन धार्मिक ग्रंथों का वक्तव्य वर्तमान में देश, काल एवं परिस्थिति के अनुकूल नहीं है, तो उसे अस्वीकार करना ही श्रेयस्कर है। अद्वैतवाद, द्वैतवाद, विशिष्टाद्वैत एवं विविध प्राचीन ग्रंथों में कुछ सिद्धांतों के दोषों का पारख सिद्धांत द्वारा परिमार्जन करना एक क्रांतिकारी कदम था। आपने कार्ल मार्क्स, ज्योतिबा फुले, पेरियार और अम्बेडकर इत्यादि समाज सुधारकों पर लिखकर आज के संतों को आईना दिखाया है। प्राचीन परम्पराओं के भुलावा में न आकर समय और समाज के साथ नये मार्ग का अन्वेषण करना आवश्यक है। संत से गृहस्थ तक के समस्त अध्याय को आपने नये सिरे से व्याख्यायित करने का सफल प्रयास किया है। ईश्वर को किसी मन्दिर एवं मसजिद में नहीं, अपने आप में खोजने की आवश्यकता है। आपने गूढ़ एवं जटिल पद्यों को सरल एवं ग्राह्य बनाया। आपके द्वारा व्याख्यायित अनेक ग्रंथ संत समाज की ही नहीं अपितु हिन्दी साहित्य की भी अनुपम निधि है। वैज्ञानिक दृष्टि से परिपूर्ण परिपक्व सिद्धांत का नाम है 'पारख सिद्धांत'। आप जैसे पारखी संत को समझने के लिए संत बनना पड़ेगा।

स्वामी अभिलाष साहब कबीरपंथ के एक ओजस्वी पारखी संत थे। जिनका जन्म 1933 ई. में पण्डित दुर्गा प्रसाद शुक्ल के घर हुआ था। इनके पिता बस्ती जिलान्तर्गत डुमरियागंज तहसील के खानतारा नामक गांव के निवासी थे। आप गार्हस्थ्य जीवन में श्री रामसुमिरन शुक्ल के नाम से जाने जाते थे। पिता पण्डित दुर्गा प्रसाद शुक्ल खेती का काम करने के साथ-साथ राष्ट्रीय आन्दोलनों में भी सक्रिय रूप से भाग लेते थे। फलतः 1942 ई. के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने के फलस्वरूप उन्हें जेल जाना पड़ा था। स्वामी अभिलाष साहब दस वर्ष की अल्पायु से ही कांग्रेस कार्यालय में कार्य करने लगे। स्कूली शिक्षा नगण्य थी। बारह वर्ष की अवस्था में ही इनका विवाह हो गया था और फिर एक पुत्र रत्न की प्राप्ति भी हुई। गृह का परित्याग कर साधु वेष धारण करने के छः माह पश्चात इस पुत्र का देहावसान हो गया।

शैशवावस्था से ही स्वामी जी में धार्मिक संस्कार जागृत होने लगे थे। आप अपने पिता के प्रति अतिशय श्रद्धावान थे और उनके प्रत्येक कार्य को स्वयं करते रहने की चेष्टा करते रहे। छोटी आयु से ही राम, कृष्ण, शिव और विष्णु की उपासना करना, गायत्री एवं 'राम-नाम' का जप करना और एकान्त में जाकर भगवान को न प्राप्त करने की दशा में प्रतिदिन आंसू बहाना दैनिक

कार्य बन गया था। समय और प्रेरणा की प्रतीक्षा थी। अठारह वर्ष की अवस्था में आपको निर्मल साहेब कृत 'निर्मल सत्यज्ञान प्रभाकर' पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। उस ग्रंथ में लिखित विचारधारा से स्वामी जी आन्दोलित हो गये। एक माह बाद पिकौरा गांव में एक भण्डारा हुआ था, उसमें भाग लेने के लिए श्री रामसूरत साहब भी शिष्य मंडली के साथ पधारे थे। अपने पिता की आज्ञा से स्वामी जी भी स्वामी रामसूरत साहब का सत्संग लाभ करने के लिए पिकौरा गये। उनके प्रवचन में मंत्र शक्ति थी। प्रवचन से स्वामी जी अतिशय प्रभावित हुए और उनके सभी विचारों को आत्मसात करते रहे। फिर क्या था, एक दिन स्वामी जी श्री रामसूरत साहब के बड़हरा स्थित आश्रम में भी पहुंच गये और निरन्तर उनके आध्यात्मिक विचारों से अनुप्राणित होते रहे। श्री पूरण साहब की बीजक की टीका देखने का सौभाग्य आपको उसी आश्रम में प्राप्त हुआ, जिसने स्वामी जी में आध्यात्मिक विस्फोटक स्थिति उत्पन्न कर दी। आप में वैराग्य की भावना बलवती हो गयी। तदन्तर इक्कीस वर्ष की अवस्था में ही आपने गृह का परित्याग कर दिया और बहुत दिनों तक बड़हरा आश्रम में रहते हुए गुरु, संत एवं साहित्य की सेवा करते रहे। उस अवधि में आपकी एकांत साधना भी चलती रही। तत्पश्चात आपने इलाहाबाद के 'प्रीतम नगर' एवं 'कबीर नगर' में क्रमशः 'कबीर पारख संस्थान' और 'कबीर पारख आश्रम' की स्थापना की। कबीर पारख आश्रम में लगभग एक सौ संत रहते हैं, जिनकी रहनी आज के संतों के लिए अनुकरणीय एवं आदर्श है। आश्रम में समस्त क्रिया-कलाप एक नियम के तहत होता है। संतों का स्वभाव भ्रमणशील होता है। स्वामी जी वर्ष का तीन-चौथाई समय भ्रमण में लगाते थे। भ्रमण-काल में आप समाज-सुधार हेतु प्रवचन दिया करते थे। आपके प्रवचन एवं उपदेशों के फलस्वरूप लोगों में सोचने-समझने की शक्ति पैदा हुई। आप 26 सितम्बर 2012 ई. को प्रयाग स्थित कबीर नगर आश्रम में अपने पार्थिव शरीर का परित्याग किये। चोला परित्याग के पूर्व आप संतबानी पर काम कर रहे थे, जो अधूरा है। आशा है, आपके शिष्यों द्वारा संतबानी क्रम को पूरा किया जायेगा, जो आपके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

स्वामी जी साहित्य के अनन्य साधक थे। उनकी यह साधना आजीवन लोककल्याण की भावना से होती रही। उन्होंने बीजक पारख प्रबोधिनी टीका, पंचग्रंथी सटीक, बीजक व्याख्या (दो खंडों में), कबीर की उलटवांसियां, कबीर अमृतवाणी सटीक, कबीर व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व, पारख सिद्धांत, कबीर दर्शन, रामायण रहस्य, उपनिषद् सौरभ, योग दर्शन, गीतासार, ब्रह्मचर्य जीवन, वेद क्या कहते है?, ढाई आखर, संसार के महापुरुष, फुले और पेरियार, स्त्री बाल शिक्षा, स्वर्ग और मोक्ष, ऐसी करनी कर चलो, हृदय के गीत, वैराग्य संजीवनी, कबीरपंथी जीवनचर्या, पारख समाधि क्या है?, लाओत्ज़े क्या कहते हैं? इत्यादि सैकड़ों जनोपयोगी साहित्य का सृजन किया है। जिनका प्रकाशन कबीर पारख संस्थान प्रीतमनगर, इलाहाबाद से हुआ है। आपने 'पारख प्रकाश' हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका का भी प्रकाशन सन 1971 से शुरू किया था, जो अनवरत रूप से ज्ञान, भक्ति, वैराग्य की छटा बिखेरती हुई, वर्तमान गुरुवर श्री धर्मेन्द्र साहब की देख-रेख में प्रकाशित हो रही है। उक्त पत्रिका को देखने से ऐसा लगता है कि स्वामी जी मोहग्रस्त, पथभ्रष्ट और अज्ञानी मानव समाज को ऊपर उठाने का महाव्रत लेकर चल रहे थे।

ब्रह्म के संबंध में स्वामी जी की धारणा दशरथ पुत्र राम या किसी कल्पित लोकवासी राम की नहीं है, अपितु आत्माराम, जो स्वचेतन सत्ता के रूप में प्रत्येक घट में विराजमान है। उपनिषदों का सहारा लेते हुए कहा है—मैं ब्रह्म हूं, तुम ब्रह्म हो, ये आत्माएं भी ब्रह्म हैं तथा मैं, तुम और इन सब आत्माओं में जो सार ज्ञान है, वह ज्ञान ही ब्रह्म का लक्षण है। स्वामी जी के अनुसार चेतन ही आत्म स्वरूप है। जड़ को छोड़कर

चेतन के प्रति आकृष्ट होना सच्चा मानव धर्म है। आपने असंख्य चेतन जीवों को स्वतंत्र एवं अलग-अलग माना है। अखंड, अनादि एवं अविनाशी जीव का न किसी का अंश होना संभव है और न किसी में मिलकर उसके अस्तित्व का नष्ट होना संभव है।

माया को स्पष्ट करते हुए स्वामी जी ने कहा है कि यह किसी की शक्ति या छाया नहीं है। मन में जो काम, क्रोध, राग, द्वेष, वासना और तृष्णा भरे हैं, यही माया है। मन का मोह मिट जाने पर माया शेष नहीं रहती। दूसरे शब्दों में मन की मलिनता ही माया है और उसकी शुद्धि ही मायातीत होना है। जितने साधक गिरते है, स्त्रियों की संगत से ही। इसलिए कबीर ने स्त्रियों को माया कहा है। यही कथन साधिका-साध्वियों को पुरुषों पर लगा लेना चाहिए। स्वामी जी ने स्पष्ट शब्दों में बताया है कि ब्रह्म में जगत का भ्रम असंभव है। अद्वैतवादियों के घटमृतिका न्याय, स्वर्ण-भूषण न्याय तथा जल-तरंग न्याय का खंडन करते हुए आपने कहा है—एक, परिनिष्ठित, अखंड, व्याप्त, अक्रिय, निरवयव चेतन सत्ता में क्रियाशील जड़-जगत कैसे बन सकता है। द्रव्यात्मक ठोस जगत मिथ्या भी नहीं है। जगत को द्रव्यतः स्वप्न कहना भूल है।

स्वामी जी के अनुसार अपने आप की विस्मृति ही अज्ञान है। अपने आप को समझकर, बाहर से अपने आप की ओर लौट आना ही ज्ञान दशा है। 'पारख सिद्धांत' ज्ञान एवं विवेक से परिपूर्ण एक क्रांतिकारी सिद्धांत है, जो समाज की सोच एवं समझ को पुनः सोचने-समझने के लिए विवश करता है। आध्यात्मिक गुणों के प्रति श्रद्धा समर्पण ही भक्ति है। भक्ति मन की अटूट आस्था को कहते हैं। पूज्य के प्रति अनुराग होना भक्ति है। मनुष्य में जो पूजने की भावना है वह गलत नहीं है। वह भूल-वश गलत जगह पूजने लगता है। यह उसकी गलती है। स्वामी जी ने मूर्ति के सामने साधना करने के महत्त्व को अस्वीकार नहीं किया क्योंकि ऐसा करने से विषय-वासनाओं से मन हटता है। अतः इसकी भी उपयोगिता है, किंतु मूर्ति-पूजा जब रूढ़ि बन जाती है तब समाज के लिए अहितकर बन जाती है। कबीर साहब ने मूर्ति-पूजा का विरोध किया है क्योंकि जब जड़त्व की अतिशय वृद्धि हो जाती है तब उसके विरोध में जोर देकर कहने की आवश्यकता होती है। कबीर साहब के समय जड़ता और रूढ़िवादिता इतना विकराल रूप धारण कर चुकी थी कि उसमें पड़कर मानवता का सर्वनाश हो जाता। अतः कबीर साहब को बार-बार और जोर देकर मूर्ति-पूजा का खण्डन करना पड़ा था किन्तु आज समाज के स्वरूप में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है। वैज्ञानिक युग में बुद्धि तत्त्व का वेग प्रबल हो उठा है। जनता के हृदय में जड़ता, आडम्बर और मिथ्याचारों के प्रति विद्रोह की भावना जागृत हो उठी है। अतः अब उतनी जड़ता नहीं रह गयी है।

स्वामी जी के अनुसार मस्तिष्क ज्ञान प्रधान है, हृदय भक्ति प्रधान है और इन्द्रियां कर्म प्रधान हैं। मस्तिष्क, हृदय और इन्द्रियों का संतुलित विकास ही जीवन को गति प्रदान करता है। तीनों के सम्यक विकास के अभाव में सर्वांगीण विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। तत्त्व बोध ही ज्ञान है। उपासना का कोई न कोई आलम्बन अवश्य होता है। यह आलम्बन प्रारम्भिक स्थिति में स्थूल एवं बाह्य होता है। पुनः क्रमशः सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होता जाता है। कर्म का तात्पर्य याज्ञिक अनुष्ठान नहीं है, बल्कि मनुष्य द्वारा सम्पादित शुभ कर्म हैं।

स्वामी जी वर्णव्यवस्था के विरोधी थे। उनके अनुसार वर्ण व्यवस्था भारतीय समाज में बहुत पहले से चली आती हुई व्यवस्था नहीं है। स्मृति ग्रंथों में शूद्रों के साथ अन्याय विशेष रूप से किया गया है। तात्त्विक दृष्टि से मनुष्य में भेद करना जड़ता है। पृथ्वी की पूरी मानव जाति का मूल एक ही है। मनुष्य की जाति एक है। गुण-कर्मों के आधार पर उनका चार वर्ण में विभाजन हुआ है। शुद्ध मानवता के विकास हेतु मिथ्या वर्णाभिमान

एवं जातिवाद का त्याग आवश्यक है। समाज के संतुलित विकास के लिए शूद्रों को भी समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान मिलना चाहिए क्योंकि शूद्र और ब्राह्मण में कोई भेद नहीं है।

स्वामी जी को पुनर्जन्म के सिद्धांत में पूर्ण विश्वास है। अश्रद्धा, अतिश्रद्धा और अंधविश्वास से ही हिंसा उत्पन्न होती है। सत् श्रद्धा आवश्यक है। शुद्ध ज्ञान दृष्टि विश्व शान्ति के लिए आवश्यक है।

स्वामी जी यह स्वीकार करते हैं कि एकान्त हुए बिना मन स्थिर नहीं हो सकता। विरक्ति के लिए एकान्तिक साधना अनिवार्य है। सामाजिक विकास के लिए एकान्तिक साधना के अनन्तर समाज में आना अधिक हितकर है। गृह-परिवार का त्याग किये बिना साधना में वेग नहीं आता। अतः गृह-परिवार का त्याग केवल तन से ही नहीं मन से भी करना होगा। अन्यथा काम-क्रोधादि उर्मियों का अस्तित्व समाप्त नहीं हो सकता। स्वामी जी का समस्त साहित्य विश्वबंधुत्व की भावना से आप्लावित है।

सतीश चन्द्र कालेज, बलिया, उ. प्र.

प्रेम का चांटा

मुकेशानन्द

जब हम अपने हृदय से पूछते हैं तो केवल यही आवाज आती है कि पूज्य गुरुदेव जी के बारे में कुछ लिखना बहुत मुश्किल है, फिर भी हम हृदय के भावों को प्रकट कर रहे हैं। गुरुदेव जी का जीवन ही एक गहरा सत्संग था। गुरुदेव जी के दिल को मैंने पूर्ण रूप से खूब गहराईपूर्वक अनुभव किया है कि उनके पास बैठने मात्र से मन पूर्णरूपेण शांत हो जाता है। यही उनकी सब तरह से पूर्णता है। मैंने खूब नजदीक से गुरुदेव को देखा है। गुरुदेव जी के विचारों से प्रभावित हुआ हूं। पर उससे ज्यादा उनका जीवन ही मेरे लिए कल्याणकारी रहा। आज मेरे जीवन में शीलता, सहजता और जो निष्ठा है उन सब में केवल गुरु जी की रहनी का प्रभाव है। मैं गुरु जी को इतनी हद तक प्रेम करता हूं शायद यह मेरा अनुभव ही समझाने के लिए पर्याप्त है। गुरु जी जब नड़ियाद आते थे तब मुझसे कहते थे—"मैं यहां तुम्हें मिलने आता हूं और मैं हरदम तुम्हारे दिल में रहता हूं।" आप आज भी मेरे दिल में विराजमान हैं। जब भी गुरु जी को मिलता था, वे मुझे अपनी बाहों में ले लेते थे और कुछ समय तक मैं उनकी बाहों में ही रहता था। उसी प्रेम ने मेरे पूर्ण जीवन को बदला। उस समय मैं गुरु जी से कहता था कि मेरा मन कभी-कभी कमजोर पड़ जाता है क्या करूं? तो मेरे गाल पर गुरु जी प्रेमपूर्वक चांटा मारते और कहते—मेरे लाल, कभी कमजोर नहीं पड़ना। उसके बाद जब भी थोड़ी कमजोरी आती है गुरु जी का प्रेम से मारा हुआ चांटा हमेशा याद रहता है। और आज यही चांटे ने बहुत कुछ सिखाया है। गुरु जी की रहनी का प्रभाव इतना गहरा है शब्दों में बताना मुश्किल है। मैं अपने हृदय के प्रेम एवं आंसू ही गुरु जी के चरणों में समर्पित करता हूं। यह मेरे बहुत गहरे दिल का हिस्सा है। आज उनकी इतनी कमी महसूस हो रही है कि मेरे जीवन की छाया चली गयी।

संतराम मंदिर, नड़ियाद, गुजरात

सहजता का वैभव : गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब

सूर्यनारायण

हिंदी साहित्य का ऐसा कौन विद्यार्थी होगा जिसे भक्ति काल के प्रखर कवि कबीर का साहित्य आकर्षित न करेगा। सामाजिक परिवर्तन की विचारधारा से जुड़े होने के कारण कबीर और भी आकर्षित करते हैं। उनकी व्याख्या कई दृष्टियों से हुई है। कबीर साहित्य के आकर्षण, रुचि और उनकी प्रखरता से प्रभावित होकर कबीरपंथ/कबीरपंथी संतों के मठ में भी एक बार जाने की इच्छा जगी। कठिनाई यह कि किस मठ/पंथ को कबीर साहित्य का मर्म समझने वाला, उनके रास्ते का सही उत्तराधिकारी माना जाये। इस उलझन को मित्र, डॉ. रामचन्द्र ने हल किया। अपने साथ एक बार प्रीतमनगर (इलाहाबाद) स्थित कबीर पारख संस्थान ले गये। वहां जे. एन. यू. से पढ़े और घर-बार छोड़कर ब्रह्मचारी बने आदरणीय देवेन्द्र जी से मिलना हुआ। पहली मुलाकात असहमतियों भरी रही। कबीर जयंती पर हर वर्ष होने वाले कार्यक्रम में एक बार मुझे भी बोलने के लिए बुलाया गया। वहां भी मैंने अपना 'क्रान्तिकारी' चिंतन रखा। उसमें गुरुदेव (संत श्री अभिलाष साहेब) मौजूद थे। मेरा वक्तव्य प्रश्नों से भरा हुआ था, उत्तेजनापूर्ण भी। गुरुदेव ने बिना किसी प्रतिक्रिया, नकार, आवेश के, अत्यंत शांत भाव से मेरे सवालों का उत्तर दिया। अपने संस्थान की कुछ पुस्तकों को पढ़ने का आग्रह किया। मैंने उनके उत्तर को भी सुना उनकी कुछ पुस्तकें (जो साथ लाया था) पढ़ा। लगा कि उनकी व्याख्या से असहमत होना कठिन है। मेरा प्रश्न था कि कबीर की असली चेतना तो सामाजिक रूढ़ियों पर प्रहार करने वाली है, फिर उन्हें आध्यात्मिक संत के रूप में आप क्यों प्रमुखता देते हैं। उनका उत्तर था—आप बीजक पढ़ें। हम साधु लोग इसे ही प्रामाणिक मानते हैं। आप देखें कि उसका कितना हिस्सा आध्यात्मिक है, कितना सामाजिक परिवर्तन का संदेश देने वाला। फिर दोनों में विरोध कहां है? सच्चा अध्यात्म तो हर प्रकार की रूढ़ि और संकीर्णता का विरोधी होता ही है। इस सुनने में सरल, किंतु सारगर्भित उत्तर व छोटी-सी पुस्तिका 'कबीर पर शुक्ल की और मेरी दृष्टि' ने मुझे गुरुदेव, उनके लेखन और उनके आश्रम में गहरी रुचि जगा दिया।

गुरुदेव को कई बार सुनने का अवसर मिला, उनके कई व्याख्यान सी. डी. से सुना। कई किताबें ले आकर पढ़ा। जल्दी ही निकट हो गया। उनके आने की सूचना, उनका बुलावा देवेन्द्र जी से मिलता। अद्‌भुत व्यक्तित्व के धनी—सहज, सरल, सदा प्रसन्नचित्त। कबीर से जुड़े कठिन से कठिन प्रश्न का अत्यंत सरल और सहमत करने वाला उत्तर देते। सारगर्भित, विचार संपन्न व्याख्यान—ऐसा कि सारी शंका निर्मूल हो जाय। एक महत्त्वपूर्ण बात यह कि शब्दाडम्बर कभी नहीं बांधते थे। जीवन ही आडम्बरहीन था—सिर्फ आडम्बरहीन ही नहीं, आडम्बर विरोधी। इसीलिए किसी भी तरह के झूठ, पाखण्ड, आडम्बर, चमत्कार (जो झूठ का ही एक रूप है) का विरोध करते थे—चाहे वह कबीर से ही क्यों न जुड़ा हो। दूसरी विशेषता थी लोकतान्त्रिक चेतना, अपने मंच पर सभी तरह के विद्वानों को बुलाते थे, सुनते थे और अपनी बात कहते थे। किसी के प्रति पहले से कोई आग्रह नहीं। हर पढ़े-लिखे, सोचने-समझने वाले का सम्मान करते थे। एक बार मैंने आर्य

समाज पर लिखी प्रो. वीरभारत तलवार की किताब उन्हें पढ़ने को दिया। पढ़कर उन्होंने तलवार जी का फोन नं. लेकर उन्हें फोन किया। किताब का विश्लेषण किया। तलवार जी ने बाद में बताया कि जो बात उन्होंने की, उससे लगता है कि बहुत ध्यान से किताब पढ़े थे। असहमतियों को भी आदर देना–आज के हिंसक समय में–दुर्लभ होता जा रहा है। लेकिन उनके चिंतन में असहमतियों के लिए भी उचित सम्मान था। जो नहीं जानते थे, सीधे कह देते कि भाई, इस बारे में मेरा अध्ययन नहीं है। क्योंकि झूठ बोलने से नहीं, सच बोलने से सम्मान बढ़ता है।

उनके स्नेह, सम्मान, प्यार की घनेरों स्मृतियां हैं। 'महाभारत मीमांसा' की प्रेरणा के रूप में मुझे याद कर जितना प्यार और सम्मान दिया (जबकि ऐसा वास्तव में है नहीं, इसके लेखन में मेरी कोई भूमिका नहीं है) वह उनके बड़प्पन का ही परिचय देता है। वे चिंतक, विचारक, आपादमस्तक संत थे—हर प्रकार की क्षुद्रता से मुक्त। मुझे सुख और गर्व है कि उनका स्नेह भाजन बन सका।

उनके शरीर के शांत हो जाने की हृदय विदारक सूचना आदरणीय देवेन्द्र जी ने दी। विश्वास नहीं हुआ। पर सच को तो स्वीकार करना ही पड़ेगा। परखने की दृष्टि को निर्भीक और दोषमुक्त बनाने की पारख संस्थान की कोशिश और उसमें गुरुदेव की अविस्मरणीय भूमिका—हमारी प्रेरणा है। यही हमारे लिए उनकी विरासत है। हमें गर्व करना चाहिए कि हम इस विरासत के उत्तराधिकारी हैं। इस विरासत को बचाने और बढ़ाने की हर छोटी–बड़ी कोशिश गुरुदेव को श्रद्धांजलि होगी।

वरिष्ठ प्रवक्ता, हिन्दी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

संत श्री अभिलाष साहेब : कबीर विचारों का महासागर

आत्माराम साहू

जीवन में जब जागृत होता,
कोटि जन्म का पुण्य–प्रकाश।
होता तब अवतरण धरा पर,
संत प्रवर सद्गुरु अभिलाषû

सद्गुरु कबीर साहेब के मानवतावादी विचारों के निष्पक्ष उद्घोषक परम पूज्य संत श्री अभिलाष साहेब आज यद्यपि शरीर से हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु विशाल जनमानस उनके अमृतमय उपदेशों के उज्ज्वल प्रकाश में अपना जीवनपथ प्रशस्त कर रहे हैं। उनके आत्मीय स्पर्श की पावन स्मृति में चित्त सदैव उन्हें अपने आस–पास ही उंगली पकड़कर राह दिखाते हुए महसूस करता है।

उनके प्रौढ़ विचार जहां व्यावहारिक पृष्ठभूमि पर सामान्य गृहस्थों को नैतिक मूल्यों से विभूषित, जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा भरते हैं, वही गहन आत्मिक अनुभूति से स्पन्दित अमृत उपदेश सामान्य व्यक्ति को भी प्रचलित विविध मत–मजहब, जाति–वर्ग–सम्प्रदायगत विषमताओं की तंग दीवारों से ऊपर उठा कर, मानव मात्र के प्रति विशुद्ध प्रेम, सद्भावना तथा जीवमात्र के प्रति दया–करुणा का सुसंस्कार सम्पन्न महामानव बना देने का संबल प्रदान करता है।

भौतिकता की अंधी दौड़ से थके–हारे प्रगतिवादी मनुष्य भी आपके बोध विचारों की शीतल छाया में असीम सुख–शान्ति का अनुभव करता है। आपकी गम्भीर वाणी में आत्मानुभव जाग्रत करने की वह क्षमता है जो सरल हृदय के सामान्य व्यक्ति से लेकर संतों–महन्तों, विचारकों, विभिन्न सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक नेताओं को भी अनेक उलझनों से मुक्त संयम–सदाचार के पथ पर चलने की प्रेरणा देती है। स्वरूपस्थ वृत्ति की गहराई से गूंजित वाणी का ही चमत्कार है कि

आपसे भिन्न मत रखने वाला व्यक्ति भी आपके सद्विचारों के स्पर्श से सहज ही आपका प्रेमी बने बिना नहीं रह सकता। ऐसा अनुपम पुरुषार्थ अन्यत्र दुर्लभ है।

सहज स्नेह, निष्पक्ष बोध एवं बेलाग वाणी की समग्रता ने आपको सम्पूर्ण व्यक्तित्व निर्माण की एक भ्रमणशील कार्यशाला के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया है। आप सद्भावना सम्पन्न मनुष्य गढ़ने की कला में निष्णात हैं। यह महान दायित्व, आप आजीवन भ्रमणशील रहकर बखूबी निर्वाह करते रहे।

देश के विभिन्न स्थानों में समय-समय पर आयोजित विशेष ध्यान-शिविरों के माध्यम से मन पर नियंत्रण एवं स्वानुभूति का प्रायोगिक अभ्यास, साधकों को आत्म निरीक्षण, आत्म परिष्कार द्वारा व्यावहारिक-आध्यात्मिक उत्कृष्टता के शिखर तक पहुंचाने में सफल रहे। आपके द्वारा संचालित ध्यान शिविर परम्परा का बहुसंख्यक साधक समाज सदैव ऋणी रहेगा। आगामी संत परम्परा इस विधा को आगे भी अनवरत जारी रखेगी, ऐसी शुभाकांक्षा है।

देश भर में आयोजित व्यापक सत्संग समारोहों में निरन्तर भ्रमण करते हुए भी, सतत साहित्य-सृजन करते हुए आपने अनमोल ग्रंथ रत्नों की विशाल संख्या विरासत के रूप में आने वाली पीढ़ी को सुपुर्द कर, इसी जीवन में अनेक जन्मों का पुरुषार्थ कर दिया।

सद्गुरु कबीर देव का मूल ग्रंथ बीजक की सामयिक व्याख्या के अतिरिक्त पंचग्रंथी टीका, कबीर दर्शन, रामायण रहस्य, गीतासार, तथागत बुद्ध क्या कहते हैं?, लाओत्जे क्या कहते हैं? मानसमणि, महाभारत मीमांसा, उपनिषद् सौरभ, बीजक शिक्षा, जैसी महान कृतियों में जहां प्राचीन आर्ष ग्रन्थों में समाहित सद्विचारों की सटीक व्याख्या तथा उनका कबीर विचारों के साथ सामंजस्य हुआ है, वहीं निष्पक्ष समीक्षा भी उदार वृत्ति से की गयी है, जो सामान्य पाठकों व विद्वान विचारकों में मनन-चिन्तन के लिए समुचित मार्गदर्शन करती है। विभिन्न देश-काल में प्रादुर्भूत संत-महापुरुषों के विचारों के मंथन से निकले शाश्वत सार सत्य को जनमानस में उद्घाटित करने का आपका पुरुषार्थ अत्यन्त स्तुत्य है।

सद्गुरु कबीर अमृत धारा से अनुप्राणित आपके श्रीमुख से निःसृत अविरल अमृत प्रवचन प्रवाह भले ही आज अवरुद्ध हो गया है, किन्तु उन प्रवचनों का विशाल सी. डी. संग्रह आने वाली पीढ़ी को सदियों तक राह दिखाता रहेगा। स्वच्छ दर्पण की तरह आपके निर्मल व्यक्तित्व में जिज्ञासु जन सदैव अपनी अन्तरात्मा का साक्षात्कार करते रहेंगे।

जलता हुआ दीपक अपने समान अन्य अनेक दीपकों को मात्र स्पर्श कर ज्योतित कर सकता है, तद्वत पूज्य गुरुदेव जी आजीवन आत्म स्वरूप में सदैव स्थित रहकर, निर्भ्रांत पारख बोध के उज्ज्वल प्रकाश तथा अपने साधनामय जीवन दर्शन के द्वारा अपने ही सदृश वीतराग संत समाज का निर्माण आजीवन करते रहे। आपके द्वारा संस्थापित संत मत परम्परा को युगों तक जीवन्त बनाये रखने के लिए ये ही संत महापुरुष सदैव समर्थ रहेंगे। आपकी अमरवाणी से विशाल मानव समाज लाभान्वित होता रहेगा, ऐसा अटूट विश्वास है।

मानव को मानवता का सच्चा रास्ता दिखाने वाला महामानव संत के रूप में धरती माता के पुण्य प्रताप से कभी-कभी ही अवतरित होता है। पूज्य गुरुदेव जी ऐसे ही महामानव के रूप में अवतरित हुए, जिन्होंने अनेक जन्मों का पुरुषार्थ इसी जीवन में सम्पन्न कर चिर विश्रांति को प्राप्त कर लिया।

किसी से कुछ लिये बगैर आजीवन आत्मज्ञान के हीरे-मोती सर्वत्र बिखेरते रहे। परम उदार सद्गुरु संत श्री अभिलाष साहेब जी, सच्चे अर्थों में सद्गुरु कबीर देव के मानवतावादी विचारों के महासागर थे। जिसकी एक ही बुन्द समस्त ऐन्द्रिक, मानसिक विकारों के परिष्कार-परिमार्जन के लिए पर्याप्त है। आपके द्वारा बताये रास्ते पर मन, वाणी, कर्म से चलने का संकल्प लेकर जीवन पथ पर चलते रहें, यही आपके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

कबीर निर्मल ज्ञान मंदिर
नेहरूनगर, भिलाई, छत्तीसगढ़

मेरे गुरुदेव

श्री अशोक साहेब

वसुन्धरा की गोद में जन्म लेने वाला कोई भी मानव अपने जीवनकाल या मरणोपरान्त अपने कृत्यों और कृतियों के द्वारा देश-दुनिया में जाना-माना जाता है। ऐतिहासिक या प्रागैतिहासिक काल से अथवा कथा, कहानियों, गाथाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पुराकाल से अनेक मनुष्य अपने कृत्य और कृति से मानव समाज को सत्पथ पर अग्रसर करने के प्रेरणास्रोत बने हैं।

यहां प्रसंग है मेरे मानस मंदिर में नित्य विराजमान परम आराध्य सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी का जो 26 सितम्बर 2012 को नश्वर काया से छूटकर सदा के लिए विदेहमुक्त हो गये।

सद्गुरु का जीवन कृत्य और उनकी कृति ऐसी प्रेरणादायी है कि उनके जीवनकाल में तो अनेक नर-नारियों को सत्पथ पर अग्रसर किया ही है, आने वाला युग और अधिक उनके ज्ञान-प्रकाश में आकर अज्ञान से निवृत्त होकर ज्ञानालोकित होता रहेगा।

जब मैं विद्यार्थी-जीवन में महात्मा बुद्ध, स्वामी महावीर, स्वामी विवेकानन्द एवं सद्गुरु कबीर का जीवन वृत्त पढ़ता, उनके चित्रों को देखता तब मन में उनके प्रति अत्यधिक आकर्षण और श्रद्धाभाव जागृत होता था। कबीरपंथी संतों का दर्शन तो बाल्यकाल से ही होता रहता था क्योंकि मेरे माता-पिता कबीरपंथ के महान त्यागी वैराग्यवान संत श्री निष्पक्ष साहेब के अनन्य भक्त थे। जब मैंने 17 वर्ष की आयु में सन् 1970 में सद्गुरुदेव के प्रथम दर्शन उत्तर प्रदेश, फतेहपुर जिले के ग्राम हरदों के सन्त सम्मेलन में किया तब मैंने उनके एक ही व्यक्तित्व में बुद्ध, महावीर, विवेकानन्द और कबीर को एक साथ समाहित पाया और अविलम्ब सन् 1971 में आपके चरण-शरण होकर आपकी छत्रछाया में रहने लगा। आपने मेरे शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक जीवन का इस ढंग से पालन-पोषण किया जैसे एक मां नवजात शिशु का करती है। कुछ स्मृतियां जो मानस पटल पर आज भी कौंध जाती हैं, वे भुलाई नहीं जा सकतीं—

गुरुदेव की शरण में आये मुझे दो ही वर्ष हुए थे। 1972 में उन दिनों मैं छत्तीसगढ़ में गुरुदेव जी की सेवा में था। सेवाकाल में मुझे बुखार आ गया। रात्रि दस बजे तक तीव्र ज्वर के साथ सिर दर्द अधिक होने लगा। गुरुदेव ने देखा और उन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा आरम्भ की। सिर पर गीली पट्टी रखते, थोड़ी देर में बदल देते, ज्वर का वेग कम हो गया। उन्होंने सिर पर हाथ रखकर धीरे-धीरे दबाना शुरू किया तो मैंने बलपूर्वक आपका हाथ हटाने का प्रयास करते हुए कहा—गुरुदेव जी! आप ऐसा क्यों कर रहे हैं? दर्द अपने आप ही ठीक हो जायेगा। उन्होंने मुस्कुराते हुए अत्यन्त वात्सल्य भाव से कहा—"यहां इस समय मेरे सिवा तुम्हारी देखभाल करने वाला कौन है? यह मेरी जिम्मेदारी है।" इसीलिए गुरु के लिए कही गयी यह पंक्तियां चरितार्थ होती हैं—'माता पिता बन्धू सखा सिरमौर जो कुछ आप हो।' 'धधकते हुए इस मनोमय जहां में गुरु ही हमारा सहारा रहा है।'

मुझे उनके ऐसा कहने पर ऐसा लग रहा था कि गुरुदेव इस धरती तल पर मेरा ही नहीं वरन् सम्पूर्ण मानव जाति के तपन और दर्द के निवारण के लिए ही देह-धारण किये हैं।

एक बार मैं गुरुदेव जी की सेवा में गुजरात के बड़ौदा जिले के ग्राम नाना अमादरा में था। उन दिनों गुरुदेव प्रातः स्नान, ध्यान-समाधि के बाद स्वामी चिद्भावानन्द की अंग्रेजी में गीता की टीका पढ़ते और मुझे पास में बैठाकर कहते कि मैं पढ़ता हूं यदि उच्चारण में कहीं त्रुटि हो तो सही उच्चारण करना बताना। गुरुदेव जी अध्ययनशील इतने थे कि उन्हें इंग्लिश पढ़ना थोड़े ही समय में काफी अभ्यासपूर्ण हो गया था। वे पढ़ रहे थे कि एक ऐसा शब्द आया जिसका उच्चारण स्पष्ट नहीं कर पा रहे थे। मैं स्पष्ट उच्चारण करता, गुरुदेव जी एक बार तो स्पष्ट कहते फिर भूल जाते। ऐसे मैं तीन-चार बार दुहराया किन्तु बार-बार भूल जाते। मैंने एक बार उसी शब्द को थोड़ा उच्च स्वर से कहा कि ऐसे पढ़ा जाता है। बस! गुरुदेव जी ने मुस्कुराते हुए मेरे गाल पर एक हल्का-सा तमाचा लगाया और कहा—"ठीक से बताता नहीं है। ऐसा मत समझना मैं पढ़ा रहा हूं, बल्कि समझना मैं सेवा कर रहा हूं।" यह तमाचा अहंकार के विसर्जन के लिए एक प्रभावी उपदेश था।

एक बार मैं गुरुदेव जी की सेवा में राजस्थान के कोटा जिले में एक गांव में था। प्रातः चार बजे का समय था। उस समय शौच-स्नान के लिए ग्राम से दूर जाना था। गुरुदेव ने मुझे जगाया। मैं गहरी नींद में था, नींद नहीं टूटी। चित्त सोया था। गुरुदेव ने धीरे से अपना एक पैर मेरे सीने पर रखकर झकझोरा और कहा—'उठ कब तक सोता रहेगा, बाहर चलना है।' मेरी नींद टूटी, आंख खुली तो उठने का प्रयास किया किन्तु गुरुदेव ने मुस्कुराते हुए ऐसा पैर से दबा रखा था कि मैं उठ नहीं पा रहा था। मैंने पैर पकड़कर कहा—'गुरुदेव जी! दूसरा पैर भी रख दें।' उन्होंने कहा—'तुझे डर नहीं लगता।' मैंने कहा—'निर्भय भये तहां गुरु की नगरिया सुख सोवै दास कबीरा हो।' गुरुदेव ने पैर हटाया। मैं उठा और गुरुदेव जी के साथ चल पड़ा। मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि वास्तव में गुरुदेव मेरे हृदय-सम्राट हैं। गुरुदेव के चरण स्पर्श करने का इस प्रकार का प्रत्यक्ष रोमांचक और मन को पुलकित करने वाला यह पहला और अंतिम अनुभव था। यह उन पंक्तियों को चरितार्थ करता है जो स्वागत गान में गायी जाती हैं—'हृदय बिछा है चरण जमावें, रहि रहि करत पुकार, आपका स्वागत है कई बार।'

साधनाकाल में जब-जब गुरुदेव के पास रहता या जाता तो आप सजग करते हुए यही कहते—अपने को कमजोर मत समझना, मनोबल और आत्मबल को ऊंचा रखना, कभी निराश मत होना। ज्ञान-वैराग्य का जीवन्त उपदेश वे इस प्रकार कूट-कूट कर भरते कि उसका प्रयोग करके, आचरण में धारण करके मैं समझता हूं कि संसार का कोई भी वैभव, पद, अधिकार, आकर्षण हमें लुब्ध और क्षुब्ध नहीं कर सकता, सन्मार्ग पर चलते हुए विचलित नहीं कर सकता।

आज उनका पार्थिव शरीर हमारे समक्ष नहीं है। प्रकृति का नियम अटल है जो जन्मता है वह मरता है। काल समस्त प्राणियों के शरीर को खा जाता है। आत्मनिष्ठ, शाश्वत, निज स्वरूप में प्रतिष्ठित सद्गुरुदेव इस शरीर को सदा मृत्यु के मुख में पड़ा देखते थे। उनकी वाणी में यही पुकार है कि मृत्यु से डरो नहीं वरन प्रेम करो। वही सत्य है—

'रे मौत प्यारी मौत मेरे सामने आया करे।
तू आय जाती सामने तब कामना माया जरेû
शय्या हमारी तू बिछा अन्तिम यही सोना पड़े,
फिर से विषय के भंवर में पड़ के नहीं रोना पड़े।'

'हृदय से जगत को नहीं चाहता हूं।
हमारी जगत से ये अन्तिम विदाई।'

काल सबको खाता है किन्तु संसार में कुछ ऐसे नर-नारी होते हैं जो काल को ही खा जाते हैं, उन्हें हम कालजयी कहते हैं। उनके कृत्य और कृति युगानुयुग तक जीवित रहते हैं। गुरुदेव का त्याग, वैराग्य, अहिंसा, दया, क्षमा, करुणा, विवेक और आत्म-ज्ञान से भरा जीवन आदर्श तो सदा अमर रहेगा ही। ये आदर्श तो मानव मात्र के प्रेरणास्रोत हैं ही, उनकी कृतियां भी (गद्य या पद्य के रूप में) मानव मात्र के प्रेरणास्रोत हैं।

उनके रचित ग्रंथों का पठन-पाठन हर वर्ग के मानव के लिए ही नहीं संपूर्ण प्राणिजगत के लिए मंगलकर है और आगे भी रहेगा।

साहित्य के अतिरिक्त उनकी कृतियों में महत्त्वपूर्ण है—कबीर पारख संस्थान की स्थापना। यह सन् 1977 में गुरुदेव जी द्वारा स्थापित किया गया। जिसका वृहद रूप इलाहाबाद के प्रीतम नगर और कबीर नगर में प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है, जहां से गुरुदेव जी का सम्पूर्ण साहित्य प्रकाशित होकर देश-विदेश में प्रचारित और प्रसारित होता है।

गुरुदेव की अन्यतम कृतियों में सद्ग्रन्थों के अतिरिक्त जो हम देखते हैं, वह है ब्रह्मचर्य, त्याग-तप, ज्ञान-वैराग्य और सदाचार से भरा-पूरा व्यवस्थित, संगठित, एकता-प्रेम से ओत-प्रोत संत-समाज। उन्होंने अपने शिष्यों अर्थात साधु-ब्रह्मचारियों को साधना की कसौटी पर कस कर ऐसा तपाया और निखारा है कि उनके जीवनकाल में ही साधु-समाज अपने नियम, संयम, साधना में खरा साबित हुआ है और आगे भी ऐसा ही प्रेम-संगठन-वैराग्य भाव बना रहे इसकी सुरक्षा के लिए इस साधु समाज में उभरकर गुरुदेव जी की रहनी-गहनी के अनुरूप ही एक महान शक्ति जो हमारे समक्ष प्रत्यक्ष हुई है वह है मेरे प्रिय गुरुभ्राता संत धर्मेन्द्र साहेब जी। मैं आपके सम्बन्ध में थोड़ी चर्चा अवश्य करना चाहूंगा। आप जब गृह त्याग कर 1974 में गुरुदेव की शरण में आये तभी से 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' के अनुसार कुशाग्र बुद्धि, आकर्षक व्यक्तित्व वाले सेवा कार्य में अत्यन्त कुशल तथा अल्पभाषी थे। वाराणसी में सन् 1975 में पुस्तक प्रकाशन काल में हम और आप एक साथ कार्य करते थे। आप इतनी सूक्ष्मता और एकाग्रता से प्रूफ रीडिंग करते जिससे पता चलता था साहित्य-अध्ययन एवं भाषा ज्ञान भी आपका गहन-गंभीर है।

कबीर संस्थान के निर्माण काल में हम एक साथ प्रीतम नगर में रहे। निर्माण काल में आपका अनुपम योगदान रहा। आपने कुछ काल तक शार्टहैंड सीखा जिसमें सफलतापूर्वक दक्षता प्राप्त की। आप सर्वप्रथम संस्थान के उपमंत्री, फिर मंत्री और अन्त में अध्यक्ष पद पर नियुक्त हुए।

इस प्रकार संस्थान के निर्माणकाल से अब तक जितनी दक्षता और अनुभव आपने प्राप्त किया उतना अन्य किसी में देखने में नहीं आया। यही कारण है कि गुरुपद के योग्य वे निर्विवाद सिद्ध हुए। गुरुदेव द्वारा आरोपित साधु समाज रूपी वाटिका के वे उत्कृष्ट फल हैं। मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि गुरुदेव द्वारा छोड़ी गयी विरासत को वे नष्ट नहीं होने देंगे बल्कि अपनी सूझ-बूझ से उसे नवयुग के अनुसार अपने ढंग से ढाल कर ज्ञान का आलोक प्रसारित करेंगे। किसी ने कहा है—

इंसान की खुशबू रहती है इंसान बदलते रहते हैं।
दरबार लगा रह जाता है सुल्तान बदलते रहते हैंû

गुरुदेव की कृतियों में नारी कल्याण भी अन्यतम है। जहां युगों से नारी को पुरुष समाज ने केवल घर की चहारदीवारी में कैद कर रखा था। उसे धार्मिक कृत्यों में रोक लगती थी, उसे वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था, वह मोक्ष की अनधिकारिणी घोषित की गयी, उसे नरक का द्वार कहा गया, हेय दृष्टि से देखा जा रहा था; वहां उन्होंने नारी कल्याण के लिए ग्रन्थों में तो शिक्षात्मक उपदेश प्रस्तुत ही किया, प्रत्यक्ष रूप में उन्होंने गृहत्यागी, ब्रह्मचारिणी साध्वी नारियों को संरक्षण देकर उनको स्वतंत्र साध्वी आश्रमों में रहने की सम्मति भी दी। गुजरात और छत्तीसगढ़ के तीन-चार आश्रमों में रहने वाली त्याग-तप-साधना की ये साक्षात जीवन्त मूर्तियां नारी के आदर्श रूप को प्रदर्शित करती हैं जिनके आचरण और उपदेश से न केवल नारी समाज का कल्याण होगा वरन् पूरे मानव समाज को सत्पथ पर चलने की प्रेरणा प्राप्त होती रहेगी। मुझे विश्वास है कि साध्वी नारियां भी अपने आराध्य देव श्री अभिलाष साहेब द्वारा प्रदीप्त ज्ञान ज्योति को कभी बुझने नहीं देंगी।

यह सत्य है कि आज यदि गुरुदेव जी सशरीर हमारे मध्य होते तो हम सभी उनकी सेवा करते, पूजा

करते, आरती उतारते। उनका प्रत्यक्ष रूप में अभाव हम सभी साधक-साधिकाओं, भक्त समाज और पूरे कबीरपंथ में ही नहीं जहां तक लोग आपको जानते-मानते, समझते थे, उन सबको गहरी वेदना से भर देता है, लेकिन इस व्यथा-वेदना के अवसर पर भी हम उनके शाश्वत जीवन की आरती उतार सकते हैं। इस कठिन और विषम परिस्थिति में भी उनका वियोग हमें नया जीवन जीने की प्रेरणा देता है। कहा गया है—

जो व्यथाएं प्रेरणा दें उन व्यथाओं को दुलारो।
जूझकर कठिनाइयों से रंग जीवन का निखारो॰
दीप बुझ-बुझ कर जला है, वृक्ष कट-कट कर जिया है।
मृत्यु से जीवन मिले तो आरती उसकी उतारो॰

मैं सद्गुरु की पावन स्मृति में अपने श्रद्धा-सुमन समर्पित करते हुए अपनी लेखनी को विराम देता हूं।

कबीर पारख संस्थान, प्रीतमनगर, इलाहाबाद

गुरुदेव का प्यार

प्रमोद दास

परम पूज्य गुरुदेव जी की शरण में आने का सौभाग्य हुआ, साथ ही उनके निकट रहने का समय-समय से लाभ मिलता था इसलिए इस जन्म को मैं अपना धन्य जीवन मानता हूं। गुरुदेव जी की कथनी, करनी, रहनी एक थी। वे सहज, सरल और ऐच्छिक गरीबी स्वीकारते थे।

हम साधकों के लिए उनका जीवन ही उपदेश है। उनके प्रेम, करुणा, उदारता और सहनशीलता को कौन नहीं जानता। आज तक तो महापुरुषों के बारे में केवल पढ़ता रहा, लेकिन परम पूज्य गुरुदेवजी को पाकर मानो सारे महापुरुषों को पा गया और जान गया कि महापुरुष ऐसे ही होते हैं। मैं तो छोटा-सा साधक हूं, कद में भी, बुद्धि में भी, लेकिन गुरुदेव जी के ज्ञान और प्रेम ने बड़ा हृदय का बनाया क्योंकि उनका हृदय विशाल था। उनके सभी शिष्य कहा करते हैं कि गुरुदेव जी मुझे सबसे ज्यादा प्रेम करते हैं। वस्तुतः उनके हृदय-उपवन में प्रेम के ही फूल खिले थे। उनका हृदय देखिए अपने शिष्य को कैसे समर्पित है।

एक बार गुरुदेव जी के साथ कहीं जाना हुआ। प्रायः गुरुदेव जी सफर में अपने साथ किसी एक साधक को बैठा ही लेते थे। उस दिन संयोग से मुझे बैठना पड़ा। कुछ संत बचे रह गये थे। उनके लिए टेम्पो मंगाया गया। मैंने देखा उसमें कुछ बड़े संत भी बैठ रहे हैं। मैंने सोचा मैं ही वहां चला जाता हूं इसलिए उठने लगा। गुरुदेव ने हाथ पकड़कर कहा—आज अपने लाल को छोड़ूंगा नहीं, अपने साथ ही लेकर जाऊंगा। आज याद करता हूं तो वह पंक्ति याद आती है—'गये तो न देखा जरा मुड़ के'। फिर भी उनका दिया हुआ बोध साथ है। गुरुदेव जी का हृदय एक मंदिर की भांति है, जिसमें छोटे-बड़े और सभी वर्ग के लोग समाहित हो जाते हैं।

गुरुदेव आज शारीरिक रूप में जरूर नहीं हैं, लेकिन उनका ज्ञान, उपदेश एवं सद्ग्रंथ हमारे पास है। शरीर छूटने से एक दिन पहले गुरुदेव का भोजन लेकर गया था। दूर से ही बंदगी कर लौट रहा था तभी गुरुदेव ने पूछा—इस समय क्या पढ़ते हो? मैंने कहा—महाभारत पढ़ रहा हूं, गुरुदेव। गुरुदेव ने कहा—हां, पढ़ने में तुम्हारी रुचि अच्छी है और यह साधकों के लिए अच्छा है। आज मैं उनकी लेखनी को पढ़कर गद्गद रहता हूं और सद्ग्रंथों के रूप में गुरुदेव को पाया हूं। उनके दिये हुए बोध में चल सकूं तो यही मेरी असली श्रद्धांजलि होगी।

कबीर पारख संस्थान, प्रीतमनगर, इलाहाबाद

...मिट गया संसार है

उचित दास

अभिलाष देव निखिल जगत में थोड़े से सद्गुरुओं में से एक हैं। आप अध्यात्म के अद्वितीय अध्यापक और महामहिम व्यक्तित्व लेकर अवतरित हुए थे। गुरुदेव सौम्य संत एवं प्रफुल्ल दार्शनिक थे। आपकी भाषा साधुशाही, सरल, सरस और बोधगम्य है। मेरे गुरुदेव को मैं भव-सुख से विरत, स्वसुख निरत, वीतद्वेष, वीतराग महाप्रभु के रूप में लखा हूं।

विश्व संत साहित्य के इतिहास में, धर्म क्षेत्र हो या दर्शन अथवा अध्यात्म कहो, ऐसी घटना कम ही घटी है जो संत अभिलाष साहेब जैसा व्यक्तित्व-कृतित्व ले उत्कीर्ण हुई हो। संत श्री में साधक निर्माण व स्वनिर्वाण इन साधनद्वय का सामंजस्य आश्चर्यवद् पश्यति है। स्वयं को सुरक्षित रखते हुए किस विधा से मानव कल्याण 'सहज-साधना' में समावेशित किया जा सकता है, स्वात्मानुगमन की अंतर्यात्रा की जा सकती है आप श्री बखूबी जानते थे। वे वैरागी सूरमा, कर्म व ज्ञानपथ के सुपरिचित साधक थे। मैं नहीं मानता कि सद्गुरु स्वरूपलीन हुए, वे तो स्वरूपलीन ही थे।

वैदिक युगोपरांत, प्रागैतिहासिक काल को छोड़ अध्यात्म के उषाकाल औपनिषदिक युग के पश्चात एक शुभ संदेश आया, बुद्धावतरण। प्रथम मनोवैज्ञानिक माने-कहे जाने वाली जानी-मानी सौम्यमना हस्ति ने सम्पूर्ण विश्व-अध्यात्म को अपनी साधना-सरिता से संचरित किया। उन्होंने मानसिक जगत में मन पर जो प्रथम-प्रथम काम किया, वह आश्चर्यवद् शृणोति है, जो हम धम्मपदं की सुरभि को सुरक्षित कर मनन कर हृदयस्थ कालुष्य को धोकर शीतभूत होकर जान सकते हैं।

उपरोक्त ऐतिहासिक चर्चा इसलिए छेड़ी कि आपका ध्यानाकर्षित हो वर्तमान के इस बुद्ध पर, और ध्यानाकर्षण हो अभिलाष आलेखों पर। मैं गुरुदेव को वर्तमान बुद्ध की संज्ञा देने का साहस इसलिए कर रहा हूं कि मेरे स्वाधीनचेता सद्गुरु में कुछेक या अधिकतम ऐसी ही शक्तियों का समन्वय था जो तात्कालिक सिद्धार्थ व वर्तमानिक रामसुमिरन में था। यथा दोनों का गृहत्याग-देहत्याग (सुत कलत्रविच्छेद व 80वें वर्ष में पार्थिव देहत्याग) या फिर हो संघ संचालन एवं आत्मानुशासन, दोनों में समान दिखाई देते हैं। मैं इसलिए भी यह बात उठाया कि हमारा पाषाण हृदय समझ नहीं पाता है कि वर्तमान में भी कोई बुद्ध है।

गुरुदेव की देन

पारख जगत एवं कबीरपंथ ही नहीं संत जी ने जो नसीहतें विश्व के धर्मप्रेमी व अध्यात्मपिपासु जनों को प्रदान की हैं, उससे संसार कभी उऋण नहीं हो सकता। महात्माओं का स्वाभाविक एक लक्षण यह भी है कि वे सदैव प्रिय व मृदुवाणी में संभाषण करते हैं। दूसरों को अधिकाधिक सम्माननीय शिष्ट शब्दों में सम्बोधन करते हैं। साधुजन सामान्य को भी स्नेहिल व कृपादृष्टि से निहारते हैं। प्यार व सम्मान से स्वयं लघु बन दूसरों को बड़प्पन देते हैं—यह उनके विनय की पराकाष्ठा है। साधुजन इसका निर्वाह करते हैं। गुरुदेव में ये सब शिष्टाचार उनके 'ज्ञानवंत कर सहज सुभाऊ' में था।

परमतावलम्बियों से मधुर मिलन व सौहार्दपूर्ण संवाद आपका स्वभावगत था। विरोधी व आलोचक के हृदय में भी आप चुपके से घर कर जाते थे। आपका शील,

सौम्य सूरत, मृदु पीयूष वाणी रूखे व्यक्ति को भी 'ढाई आखर' से आप्लावित कर अप्रभावित नहीं छोड़ती। विद्वान प्रचारक संतों को ईर्ष्या (चित्त मल) का विषय न बना, उनसे मित्रता बरकरार रखी अपनी निस्पृह व गुणातीत रहनी से। इन सबका निदान यह हुआ कि वे जीवनभर स्व को सुलभ बनाये रखने में संलग्न रहे।

कबीरपंथ में ही नहीं, सम्पूर्ण साहित्य जगत में उन्होंने कबीर को अद्वितीय, अनोखे व विशुद्ध ढंग से प्रस्तुति दी। कबीर के सुप्तस्थलों को उन्होंने निर्भय होकर क्रान्ति दी एवं विवश किया कबीर प्रेमियों को फिर से एक मर्तबा कबीर के पहलुओं पर अन्वीक्षण एवं सिंहावलोकन करने पर।

पारख सिद्धांत के गरिष्ठ संविधान को युगद्रष्टा अभिलाष साहेब ने व्यापक व व्यावहारिक बनाकर वर्तमानोपयोगी कर सार्वजनीन (लचीला-पुनर्गठित) किया। शुष्क खण्डनात्मक (उखाड़-पछाड़) प्रवृत्ति से बचाकर सरस सकारात्मक शैली का आगाज आपश्री ने किया। दिल को द्रवित करने वाली भावना की उच्चतम ऊंचाई और विचारों को झकझोरने वाली अकूत गहराई पारख प्रभु में बखूबी समाई थी। आप श्री की वाणी वाङ्मय चतुर्थ दोष (भ्रम, प्रमाद, लिप्सा, करणापाटव) से रहित है। रहित रहती है, पेशेवर वक्ताओं के मंच को हिलानेवाली अभद्र चेष्टाओं से आपकी वक्तव्य शैली। भारत में पारख क्षेत्र में महापुरुषों के मध्य आपश्री का स्थान उच्चतम है। पंथाई गलियों से निकाल आपने कबीर साहेब के पारख सिद्धांत को हिन्दी साहित्य के आलोचक विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत किया।

अध्यात्म के उत्तुंग शिखर पर पहुंचे इस महापुरुष ने 'ये कबीर तैं उतरि रहु...' के आधार पर साधक पादप का प्रत्यारोपण कबीर संस्थान के माध्यम से किया। सद्गुरु के तत्त्वबोधक पीयूष को पान कर जिज्ञासु-मुमुक्षुओं के कम्पित कदम स्थिर हो जाते हैं। आप श्री की अनुभवश्रुत वाणी से साधक के हृदय को बड़ा सुकून मिलता है। साधना पथ के पथिकों के उठे हुए पैरों को आपकी निर्णय वाणी धरावत अवलम्ब देती हुई सुदिशा प्राप्त करती है। गुरुदेव 'ऊंची घाटी राम की' के बाशिन्दे होते हुए भी अत्यन्त व्यावहारिक भी थे। एक बार ध्यान शिविर में मुझे उदास देखकर कहा कि अगर तुम्हें ध्यानकक्ष में जगह न मिले तो मेरी गोद में बैठ जाना। यह उनके विशाल हृदय का ज्वलंत प्रमाण है।

विदेह-भावभावित गुरुदेव को एक बार मच्छरों के काटने से जगह-जगह कपड़ों पर खून का दाग लग गया था। जब सोते समय महाभारत लेखन कार्य बन्द किये तब देखे-दिखाये, तब पता चला, नहीं तो तल्लीन थे स्वकार्य में। इससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि उनका चित्त देहातीत रहता था व रहता था ध्यान-समाधि में प्रपंच व संकल्प शून्य। महातार्किक कबीर देव भी जब गुरु पर बोलते हैं तो पौराणिक भाषा बोलने पर भावुक हो जाते हैं।

गुरुद्रोही मन्मुखी, नारी पुरुष विचार।
ते नर चौरासी भरमिहैं, ज्यों लौं चन्द्र दिवाकार॥

(बीजक)

अव्यय पद प्राप्त मेरे गुरुदेव में ये सभी उपलक्षण मौजूद थे क्योंकि वे निर्मान, निर्मोह, असंग, अध्यात्म नित्या, निष्काम, निर्द्वन्द्व, पूर्ण विवेकी थे। यथा—

निर्मानमोहा जितसंगदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः।
द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञैर्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत्॥

(गीता 15-5)

आत्मकेन्द्रित शक्ति जब प्रस्फुटित होती है, तो वह प्रेम, समता, शान्ति, सौम्यता व सौहार्दता में गठित होती है। वही शक्ति संसाराकर्षित होती है तो आसक्ति, ममता, विषमतादि में बिखरती है। गुरुदेव ऐसे साधक थे जो आपा को मिटा चुके थे। तभी तो उन्होंने 'आदेश प्रभा' में उद्धृत किया था—

"आपा मिटाया आपका, फिर मिट गया संसार है।"

गुरुदेव कहते थे काम (विकार मात्र) संकल्पमात्र है, संकल्प मिटा दो—काम काफूर। वे कहते थे "उदास रहने से हर संकल्प शान्त हो जाता है।" हर दुर्गुण, आदत संकल्पों के पीछे है। मेरे हृदय मन्दिर के आराध्य देव पूर्ण निष्काम, निष्पन्द, निःसंकल्प स्थिति में पहुंचे पुरुष थे, जिसके आगे अध्यात्म अपनी राह रोक देता है।

कबीर आश्रम, निवाई, टोंक, राजस्थान

गुरुदेव जी का विराट रूप

देवेन्द्र दास

गुरुदेव जी युग प्रवर्तक थे। सद्गुरु कबीर साहेब के पारख सिद्धांत के विस्तृत प्रचार-प्रसार करने में आपका नाम अविस्मरणीय रहेगा। जाति-पांति एवं छुआछूत का विसर्जन, नर-नारी की समानता, सब धर्मों का आदर भाव, कथनी-करनी की एकता, कोमल व्यवहार, संयम का धर्म आदि अनेक पहलू हैं जिन्हें गुरुदेव जी ने स्वयं अपने जीवन में उतारा और अपने समाज में उसे प्रयोग में लाया।

पारख सिद्धान्त को मानने वाले संतों द्वारा पहले केवल कहा जाता था कि मनुष्य-मनुष्य समान है किंतु संत-भक्तों में भी जाति पूछ कर ही व्यवहार लिया जाता था। गुरुदेव जी ने इसको व्यवहार रूप में लागू किया और फिर पूरे पारख सिद्धान्त के आश्रमों में इसका प्रयोग शुरू हो गया। अब किसी भी पारख आश्रम में जाति नहीं पूछी जाती और न ही किसी प्रकार का भेद माना जाता है। गुरुदेव जी के विरक्त शिष्य मुसलमान, ईसाई परिवार के भी थे।

गुरुदेव जी शुक्ल परिवार के हैं, यह बात उनके अनेक शिष्य भी नहीं जानते थे, और न गुरुदेव जनाना चाहते थे। वे तो मानव-मानव को एक मानते थे। कभी किसी संत-भक्त को नहीं पूछे कि किस दूध के हो, सबको समान आदर, सम्मान, सबको भोजन के समय थाली-कटोरी, गिलास देते-दिलवाते थे।

गुरुदेव जी के अंत्येष्टि संस्कार के कुछ दिन बाद इलाहाबाद के ही उनके एक योगी शिष्य 'श्री अनूप शुक्ल जी' आश्रम आये, समाधि स्थल पर अपने श्रद्धा-सुमन समर्पित किये। उसके बाद हम लोगों के साथ गुरुदेव जी के सम्बन्ध में चर्चा हो रही थी। मैंने उनको अंतिम यात्रा वाली डी.वी.डी. दिया, उसके पीछे कव्हर पर गुरुदेव जी का बायोडाटा छपा था। उन्होंने जैसे ही पढ़ा पूर्व नाम—श्री राम सुमिरन शुक्ल, बहुत जोर से हंसे और मेरे पैर पकड़कर प्रणाम करते हुए कहा, "साहब जी, मैं आज तक नहीं जान पाया था कि गुरुदेव जी मेरे ही (शुक्ल) परिवार के हैं।"

गुरुदेव जी के अनेक पहल हैं। जो जिस रूप में उन्हें देखता है वे उसी रूप में खरे सिद्ध होते हैं। मैं तो गुरुदेव जी का एक नन्हा-सा भावुक बच्चा हूं, और नन्हें बच्चे को मां के अलावा और क्या चाहिए? मां क्या होती है और क्या नहीं होती उसे मैं शब्दों में कैसे बांधूं—

शब्दों की अपनी सीमा है, कैसे व्यक्त करूं।
मां तुमको पूरा-पूरा, कैसे अभिव्यक्त करूं॥
यादों के जंगल में, खुद को कैसे सख्त करूं।
मां तुमको पूरा-पूरा, कैसे अभिव्यक्त करूं॥
हंसी-खुशी सुख-दुख के आंसू कैसे जब्त करूं।
शब्दों की अपनी सीमा है, कैसे व्यक्त करूं।
मां तुमको पूरा-पूरा, कैसे अभिव्यक्त करूं॥[1]

जब मैं 8-10 वर्ष का (1977-78) रहा होऊंगा, कलकत्ता में भक्तराज श्री प्रेम प्रकाश जी के यहां गुरुदेव

---

1. चांद सुलगता है-'शैलेश गौतम'।

जी संतों के साथ समय-समय से निवास करते थे। मैं भी अपने माता-पिता के साथ गुरुदेव जी के पास जाता था। वहीं पर मैंने पहली बार गुरुदेव जी से एक गीत सुना वह मुझे आज भी याद है "माया महा ठगिनी हम जानी।"

हम तीन भाई हैं, मैं बीच वाला हूं। गुरुदेव जी हम तीनों से कहते कि तुम तीन हो। हमारे साथ कोई चलेगा? हम तीनों हाथ उठाते थे। गुरुदेव जी उसी समय परख लिये थे कि कौन हमारे साथ चल सकता है? गुरुदेव जी ने सन 1985 में हमारी माता जी को पत्रोत्तर लिखा था उसमें इस बात का जिक्र है। गुरुदेव जी कुर्सी पर बैठकर बोलते थे। हम लोग बाल स्वभाववश कुछ शैतानी करते थे, तो गुरुदेव जी मुझे अपने पास बुलाकर नीचे बैठा लिये और कहे कि जब तक मैं बोलता रहूं मेरे पैर दबाओ और मैं नन्हें हाथों से सेवा में लग गया और तभी से मैं गुरुदेव जी का हो गया।

गुरुदेव जी ने मुझे भक्ति सिखाई, सेवा सिखाया, झाड़ू लगाना सिखाया, बाल बनाना सिखाया, कपड़ा पहनना, हाथ मांजना, बर्तन मांजना, प्रवचन करना और वैराग्य भाव सिखाया। जैसे मां अपने बच्चे को अंगुली पकड़कर चलना सिखाती है, वैसे ही गुरुदेव जी ने मुझे सिखाया क्योंकि वे मेरी मां थे। अस्वस्थ होने पर अपनी गोदी में बैठाकर दवाई सेवन कराया।

सन 1992-93 की घटना याद आती है तो मन और ज्यादा भावुक हो जाता है, जब मुझे सिरदर्द होने लगा था। कई महीने तक होता रहा। काफी इलाज भी चला लेकिन ठीक नहीं हो रहा था। गुरुदेव जी पुराने घरेलू वैद्य भी थे। उन्होंने मेरे लिए गाय का घी मंगवाया जिसे नाक में डालने की बात थी। उस समय प्रीतमनगर के कबीर मंदिर में सबका निवास होता था। मुझे अपने कमरे में बुलवाये और बताये कि दवाई रूप में नाक में घी डालना है, स्वयं उठकर आये और अपने बिस्तर पर अपनी एक साफी बिछाकर मुझे लिटा दिये और कुशल वैद्य की तरह नाक में घी डाले, और अपनी एक बेशकीमती शाल उतारकर मुझे ओढ़ा दिये। उस चादर को पाने के लिए कई संतों ने प्रयास किया कि मुझे दे दो, लेकिन वह तो गुरुप्रसाद था, मैं कैसे दे सकता था। कोई गुरु अपने शिष्य की इस कदर सेवा कर सकता है, यह आज भी सोचकर, मन भावविभोर हो जाता है और अपने लिए यह मानता हूं कि इतनी तो मैं अपने गुरुदेव की सेवा न कर सका। और भला कोई शिष्य अपने गुरु की क्या सेवा कर सकता है? गुरु ने तो वह राज्य दे दिया है जो कभी नष्ट होने वाला नहीं है। सद्गुरु कबीर के शब्दों में—"तैं सुत मान हमारी सेवा, तो कहँ राज देउँ हो देवा।"

गुरुदेव जी के व्यक्तित्व में चुम्बकीय आकर्षण था। एक बार जो उनके सान्निध्य में आता बस उन्हीं का हो जाता था। विद्वानों के साथ विद्वता की चर्चा करते थे, गृहस्थ नर-नारी से विनोद में ही पूछ लिया करते थे कि दोनों में लड़ाई-झगड़ा तो नहीं होता है? फिर सलाह भी देते थे कि थोड़ा-बहुत नोक-झोंक होना प्रेम-व्यवहार को और दृढ़ बनाता है। संतों से ज्ञान चर्चा करते, नवोदित साधकों से वैराग्य की चर्चा करते और बच्चों से बिलकुल ऐसे घुल-मिल जाते मानो स्वयं बच्चे हों, उनसे मित्रवत चर्चा करते थे।

गुरुदेव जी अध्यात्म के शिखर पर थे और साथ-साथ व्यवहार कुशल थे। अपने शिष्यों से वे समय-समय पर मधुर विनोद भी किया करते थे जैसे दादा-पोते का खेल हो। एक बार मैं भण्डार घर में कुछ काम कर रहा था, पीछे से गुरुदेव जी चुपचाप आकर मेरी आंखों को मूंद लिये, मैं हाथ से छूकर पहचानने लगा कि कौन हैं? नहीं पहचान पा रहा था जब मैंने पैर पकड़ा और खड़ाऊं पर हाथ गया तब गुरुदेव जी आंखों को खोल दिये और जोर से खिलखिलाकर हंसने लगे। सभी संत इस विनोद से प्रसन्न हो रहे थे और सोच रहे थे कि काश! ऐसा अवसर कभी हमें भी मिलता। गुरुदेव जी कभी-कभी गुदगुदा भी लेते थे। हमारे वरिष्ठ संत श्री गुरुक्षेम साहेब जी को गुदगुदी बहुत आती है। विनोद

के लिए गुरुदेव जी उनकी ओर केवल उंगली भी ले जाते थे और श्री गुरुक्षेम साहेब जी उछल पड़ते थे और गुरुदेव जी खूब हंसते थे। गुरुदेव जी विनोदी स्वर में मुझसे लगभग हर ध्यान शिविर और वार्षिक अधिवेशन के समय जब मैं बंदगी करने पहुंचता तो हंसते हुए कहते—"ताला-जंगला-लालटेन ठीक है हजूर?" और ठहाके से हंस पड़ते थे।

गुरुदेव जी जन को धन मानते थे। सन् 1988-89 में मैं और श्री गुरुक्षेम साहेब जी गुरुदेव जी की सेवा में थे। गुरुदेव जी के पास एक अच्छी कंपनी की लाल रंग वाली टेबल घड़ी थी, बहुत सेवा दे चुकी थी और गुरुदेव जी को प्रिय थी। एक बार असावधानी से श्री गुरुक्षेम साहेब जी द्वारा सफाई करते समय घड़ी गिर पड़ी और लगभग टूट जैसे गयी। श्री गुरुक्षेम साहेब जी एकदम रुआंसा हो गये। गुरुदेव जी उन्हें तुरन्त सीने से लगाकर कहने लगे, "बेटा! घड़ी बड़ी नहीं है, तुम बड़े हो। इसमें रोने की क्या बात है? नाशवान चीज है टूट गयी, कोई बात नहीं, दूसरी आ जायेगी। तुम दुखी न होओ, मेरे लाल!"

गुरुदेव जी क्वालिटी पर विश्वास करते थे क्वांटिटी पर नहीं। गुरुदेव जी के लाखों गृहस्थ शिष्य हैं और उनके विरक्त साधुवेष दीक्षित 56 शिष्य हैं और लगभग इतने ही ब्रह्मचारी शिष्य हैं। जिनमें से एक-दो वापस लौट गये तथा 8 का शरीरांत हो गया। बाकी सभी गुरुदेव जी के आश्रम में समर्पित सेवारत हैं। विरक्त शिष्यों को गुरुदेव जी बहुत कसनी के बाद साधुवेष प्रदान करते थे। 10-15 वर्षों तक ब्रह्मचर्य व्रत पालन करने के बाद ही साधुवेष देते थे। गृहस्थ शिष्यों को भी बहुत कसौटी के बाद ही दीक्षा देते थे। गुरुदेव जी भीड़ बटोरना नहीं चाहते थे। हां, जो सच्चे कल्याणार्थी, जिज्ञासु होते थे उन्हें ही अपने पास रखते थे और समय-समय पर मन की परीक्षा लेते रहते थे कि कोई साधक कमजोर तो नहीं हो रहा है, और पूरी सावधानी से उसके तन-मन की रक्षा करने वाले महान सद्गुरु थे।

सद्गुरु कबीर साहेब जन-जन तक अलख जगाने के लिए देश-विदेश घूमते रहे। गुरुदेव जी उसी ज्ञान की अजस्र धारा को आगे बढ़ाते हुए, सद्गुरु कबीर की वाणी को जन-जन तक पहुंचाने के लिए आजीवन भ्रमणशील रहे। प्रत्येक वर्ष चौमासा छोड़कर लगभग 8-9 महीने सत्संग-कार्यक्रम करते रहे। यात्राओं के खट्टे-मीठे अनुभवों का गुरुदेव जी ने अपनी डायरियों में उल्लेख किया है। एक-दो बार ट्रेन, जीप दुर्घटना भी हुई लेकिन गुरुदेव जी संत समाज सहित सकुशल रहे और निर्भयतापूर्वक आगे की यात्राएं करते रहे। वे हम सबको भी फोन द्वारा साहस देते रहे कि हम सब सुरक्षित हैं, चिंता की कोई बात नहीं है।

गुरुदेव जी से हम लोग किसी बात के लिए जिद्द करते थे, कभी झगड़ भी लेते थे, कभी गुस्सा भी करते थे और कभी रो भी लेते थे, इन सभी प्रसंगों में गुरुदेव जी हम सबको बराबर स्नेह, प्यार और सीख देते थे। खासकर मुझे ही ज्यादा स्नेह-प्यार देते थे ऐसा मुझे लगता था, लेकिन गुरुदेव जी तो असीम थे, वे सबको एक समान प्यार-स्नेह देने वाले थे, फिर भी मुझे ही ज्यादा प्यार देते थे। किसी-किसी बच्चे पर मां की विशेष अनुकम्पा होती है। जब मैं भावुक होकर रोने लगता तो गुरुदेव जी मुझे अपने बाथरूम में ले जाते और अपने रूमाल से मेरे आंसू पोंछते और स्नेह की झड़ी लगाते थे और सहज करने के लिए फल-मिठाई आदि अपने हाथों से खिलाते थे। अब ये शरारतें करने और रोने के लिए किसके पास जायें? अब शेष हैं केवल उनकी स्मृतियां, उनका ज्ञान और उनका मातृहृदय वाला दृश्य। ऐसे सद्गुरु-मां को नन्हें-अनगढ़ हाथों से श्रद्धांजलि अर्पित—

तेरी यादों में सुमन श्रद्धा समर्पित।

कबीर पारख संस्थान
प्रीतमनगर, इलाहाबाद

ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया

गुरुवेन्द्र दास

कहं से लेखन शुरू करूं, कहं पर करूं विराम।
बल बुद्धि विद्या दीजिए, हे गुरुवर तुम्हें प्रणाम॥
क्या लिखूं कैसे लिखूं, कहां तक करूं बखान।
अगम अगाध थाह नहिं पाऊं, हे मेरे कृपानिधान॥

भारतीय अध्यात्म नभ में एक से बढ़कर एक राम, कृष्ण, बुद्ध, नानक, विवेकानंद, दयानंद, महावीर, कबीर जैसे रवि उदय हुए हैं। जिनकी बदौलत इस देश को विश्वगुरु का दर्जा प्राप्त हुआ तथा जिनकी रोशनी से आज सारा संसार जगमगा रहा है। उन्हीं रवियों में एक रवि 17 अगस्त 1933 को गुरुवार के दिन माता जगरानी देवी एवं पिता श्री दुर्गाप्रसाद शुक्ल के औरस से उ. प्र. के बस्ती जिला के खानतारा गांव में बालक रामसुमिरन के रूप में उदय हुआ। उस रवि की छवि सामाजिक एवं धार्मिक तमाम जकड़बंदी के बावजूद निरंतर निखरती चली गई। बचपन से ही बालक रामसुमिरन कुशाग्रबुद्धि के धनी थे। पिता श्री दुर्गाप्रसाद जी के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी होने के कारण घर की सारी जिम्मेदारी बालक के सिर पर आने के कारण स्कूली शिक्षा से वे वंचित रह गये। इनकी स्कूली पढ़ाई मात्र 3 माह पहली और 3 माह दूसरी कक्षा की थी। माता जगरानी देवी धार्मिक प्रवृत्ति की थी, अतः बालक पर उनका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। बचपन से राम, कृष्ण, शिव, विष्णु आदि देवताओं की पूजा करना, उपवास रहना, 108 दाना की सुमरनी (माला) लेकर जप करना, संध्योपासना करना, रामायण-गीतादि ग्रंथों का पाठ एवं कथा करना इनका नित्य का कर्म जैसा हो गया था। 1953 में जब यह युवक बड़हरा आश्रम के सत्संग में गया तो सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब ने युवक की प्रतिभा को देखकर जल्द ही इन्हें साधुवेष से प्रवर्जित कर नाम रामसुमिरन से बदल कर अभिलाष दास रख दिया, जिन्हें हम सब आज सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब के नाम से जानते हैं।

गुरुदेव की महिमा एवं प्रसिद्धि मैं 6-7 वर्ष की उम्र से ही सुना करता था। मिलने की तीव्र इच्छा होने के बावजूद संकोची स्वभाववश मैं मिल नहीं सका। मुझे याद है 12-13 वर्ष की उम्र से मैं गरमी की छुट्टी में छत्तीसगढ़ भ्रमण के दौरान गुरुदेव जी के साथ भ्रमण में चला जाता था। सन् 1985 में भी मैं गुरुदेव जी के साथ करीब एक माह रहा। तब अब जैसे सघन प्रोग्राम की रूपरेखा नहीं थी। एक-एक गांव में गुरुदेव जी संत-मंडली सहित सप्ताह या 15 दिन तक भी रह जाते थे। एक दिन जन्म-स्थान में गुरुदेव जी साध्वी शीलवती साहेब के यहां पधारे। मैं स्नानादि कर दर्शनार्थ गया। बंदगी करने के पश्चात गुरुदेव जी ने मुझ पर दृष्टिपात की। दृष्टिपात क्या हुआ मानो मेरा भाग्योदय हो गया। ऐसा लगने लगा मानो मैं संसार की लपट में झुलसा जा रहा था और इतने में मुझे शीतलधारा का स्रोत मिल गया और मैं उस शीतल स्रोत से ओतप्रोत हो रहा हूं। कुछ क्षण पश्चात गुरुदेव ने बड़े प्यार से मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—बेटा! तुम कमल होकर कीचड़ में कब तक पड़े रहोगे। देखो, कमल कीचड़ में पैदा जरूर होता है किंतु वह कीचड़ में रहता नहीं है। कीचड़ से ऊपर जल की सतह पर ही नहीं उससे भी ऊपर आ

जाता है। गुरुदेव के इन करुणा भरे शब्दों को सुनकर मेरे अंदर विचारों की मथानी चलने लगी। गुरुदेव से मैंने विनम्रतापूर्वक पूछा—गुरुदेव, मैं क्या करूं? गुरुदेव ने कहा—बेटा, मेरी गोद में आ जाओ। मैंने प्रसन्न एवं आह्लादित मन से कहा—गुरुदेव! क्या सचमुच आप मुझे अपनी गोद में रखेंगे। मेरे इन शब्दों को सुनकर गुरुदेव मुझे अपने सीने से लगाकर कहे कि मेरे लाल! क्या तुझे मुझ पर संदेह है। गुरुदेव के इन शब्दों को सुनकर नहीं गुरुदेव! कहते हुए मेरी आंखों में आंसू आ गये।

दूसरे दिन गुरुदेव मेरे जन्म-स्थान से दूसरी जगह के लिए प्रस्थान किये। गुरुदेव के प्रस्थान के समय मेरा हाल बेहाल हो गया। पहले भी संत समाज सहित गुरुदेव आते-जाते थे किंतु ऐसा कुछ नहीं लगता था कि कुछ खो गया है किंतु अबकी बार ऐसा लगने लगा जैसे सब कुछ खो रहा है। गुरुदेव जी के जाने के बाद स्कूली पढ़ाई-लिखाई से मन हट-सा गया। समय बीतता चला गया। अंततोगत्वा वह दिन आ ही गया, मैंने निर्णय लिया यदि कल्याण-साधना का काम करना है तो जल्दी करना चाहिए और स्कूली पढ़ाई छोड़ना चाहिए। गुरुदेव जी के पास आने के लिए मन एकदम व्याकुल रहने लगा। 18 जून 1986 को मैं गुरुदेव जी की शरण में आ गया। गुरुदेव जी के पास पहुंचते ही इतना प्यार, इतना स्नेह, इतनी करुणा मुझे मिली; शायद ही कोई मां-बाप अपनी संतान पर इतनी करुणा करते हों।

दुनिया के सारे गुरु, आचार्य-प्राचार्य बिना शुल्क के शिष्य को कुछ भी पढ़ाते, सिखाते व बताते नहीं। लेकिन ये गुरु-आचार्य ऐसे थे जिनके पास बाहरी शुल्क तो कुछ भी नहीं लगता था किंतु एक ऐसा शुल्क अदा करना पड़ता था जिसका नाम है 'समर्पण'। ये समर्पण मात्र समर्पण ही नहीं बल्कि ऐसा दर्पण है जिससे आप खुद का (आत्मस्वरूप) दर्शन कर सकते हैं। आज गुरुदेव के स्वरूपस्थोपरांत गुरुपद पर समाज ने जिस महामना को आसीन किया है यह वही समर्पण रूपी शुल्क वृक्ष का फल है। जिन्हें देखने के लिए, जिनके दर्शन व आशीर्वचन सुनने के लिए समाज लालायित है। निश्चित है यह फल आज नहीं तो कल गुरुदेव जी की तरह समाज के लिए सत्यं शिवं सुन्दरं सिद्ध होंगे।

गुरुदेव जी के लिए सिखाना शब्द का प्रयोग उनके साथ अन्याय करना होगा, क्योंकि वे कभी सिखाते नहीं थे बल्कि करके दिखाते थे। सिखाने की अपेक्षा दिखाना ज्यादा प्रमाणिक माना जाता है। सिखाने में अधूरापन होता है क्योंकि बाहर कुछ और भीतर कुछ। विद्यालयों में शिक्षक विद्यार्थियों को सिखाते हैं। अधिकांश शिक्षक बच्चों को सदाचार एवं नैतिकता का पाठ पढ़ाते हैं किंतु स्वयं उनके जीवन में नैतिकता नहीं होती। लेकिन गुरुदेव जी जो कहते थे उनका प्रयोग पहले अपने जीवन में करते थे। उनका चलना-फिरना, खाना-पीना, बोलना-चालना, पहनना-ओढ़ना या यों कहें उनके जीवन की यावत क्रियाएं एक प्रयोगशाला थी।

दुनिया में लोगों को बहुत कुछ मिलता है। सब कुछ तो किसी को नहीं मिल पाता है। लेकिन मेरे गुरुदेव को सब कुछ प्राप्त था। सब कुछ है—आत्मशांति, आत्मस्थिति। इन दोनों स्थितियों में गुरुदेव जी सदैव स्थित थे। जिसे आत्मशांति न मिली और जो आत्मस्वरूप में स्थित न हुआ उसे बाहर का सब कुछ मिल जाने के बाद भी उसके पास कुछ नहीं है। लेकिन जिसे आत्मशांति मिल गयी और जो आत्मस्वरूप में स्थित हो गया उसे दुनिया के माने गये उत्तम-से-उत्तम भोग तथा मान-बड़ाई, पूजा-प्रतिष्ठा, धन-दौलत न भी मिले तो क्या फर्क पड़ता है। वे तो शाहंशाहों के शाहंशाह होते हैं। ऐसा बादशाह कि उनके जीवन में कोई आह ही नहीं होती है। बिना ताज के सब पर उनका राज होता है। गुरुदेव सचमुच बिना ताज के बादशाह थे और ऐसे बादशाह जिनके सामने सबकी आह का स्वाहा हो जाता था। गुरुदेव जी के पास जो रोते हुए, दुखी-उदास आते थे वे जब लौट कर जाते थे तो उनके चेहरे पर हंसी एवं प्रसन्नता का भाव झलकता था। उनकी बादशाहत को

थोड़े में कहें तो होगा—

'यूं तो कहने को तेरे सिर पे कोई ताज नहीं था।
मगर ये तो बता किसके दिल पर तेरा राज नहीं था।'

गुरुदेव की विदाई का समाचार सुनकर अंत्येष्ठि व श्रद्धांजलि में भाग लेने आये अनुगामी ही नहीं गैरों की आंखें भी गीली थीं। कहने को तो सब कुछ पूर्ववत हो रहा था किंतु सबका दिल रो भी रहा था। हजारों की भीड़ में सभी आगे के रास्ता के लिए अपने अनुशास्ता को ढूंढ़ रहे थे। सभी की पलक अपने आराध्यदेव की, अपने दिलवर की एक झलक देखने के लिए व्याकुल थी। इतना ही नहीं देश के विभिन्न क्षेत्रों के श्रद्धालु, अनुयायी व गैर लोग भी गुरुदेव जी की याद में गांव-गांव में सभा आयोजित कर श्रद्धांजलि अर्पित किये तथा भोजन-भण्डारा कर गरीबों को रुपये-पैसे व वस्त्र दान किये। ऐसी मिसाल शायद ही किसी के जीवन में देखने को मिलती है। इसे मैं निम्न पंक्तियों में कहूं तो अत्युक्ति नहीं होगी—

लाखों संत अरु मुनि हुए, न जाने कैसे कैसे।
अभी हैं और आगे भी होंगे, पर न होंगे मेरे गुरुदेव जैसेû

लोग यह भी कहते हैं कि अब गुरुदेव जी नहीं रहे, चले गये। लेकिन सच तो यह है कि हमारे गुरुदेव जी कहीं गये नहीं है, वे हैं और सदा रहेंगे। क्योंकि गुरु कभी मरते नहीं, भूत नहीं होते क्योंकि वे अद्‌भुत होते हैं। इसीलिए वे भूतपूर्व नहीं अभूतपूर्व होते हैं। आपने किसी निर्वाण प्राप्त गुरु या भगवान के बारे में भूतपूर्व शब्द का प्रयोग करते सुना है? जैसे भूतपूर्व राम, कृष्ण, दयानंद, विवेकानंद, नानक, बुद्ध, महावीर या कबीर आदि, क्योंकि ये कभी न भूतपूर्व हुए हैं न आगे होंगे। इसीप्रकार हमारे गुरुदेव भी भूतपूर्व नहीं अभूतपूर्व हैं।

गुरुदेव अपने प्रवचनों में प्रायः दो गुरु की चर्चा किया करते थे। एक गुरु भीतर (विवेक) और दूसरा बाहर उसको बताने वाला। बाहर का गुरु तो हमें संकेत कर सकता है, हमें चला नहीं सकता। गुरुदेव हम सबको भीतर के गुरु को जगाकर आत्मस्वरूप में स्थित होने की सीख दे गये हैं। उनकी अमरवाणी सदा-सदा मानव-समाज के लिए कल्याणदायिणी सिद्ध होगी। चलते-चलते गुरुदेव हम सब को अपना दायित्व सौंपकर मानो पूछ रहे हों कि इस दायित्व को निभायेगा कौन। इसे एक कवि के शब्दों में कहूं तो—

सूर्य ने जाते जाते ये पूछा,
कि मेरा काम करेगा कौन।
सुनकर मानो सारा संसार,
हो गया निरुत्तर मौन।
एक दीपक ने विनम्रतापूर्वक,
हाथ जोड़कर कहा नाथ।
जब तक जीवन रहेगा,
मैं दूंगा आपका साथû

गुरुदेव में प्रतिभा तो बचपन से थी ही लेकिन उन्हें सद्‌गुरु के मिलते ही प्रतिभा आग में घी का काम कर गयी। जिस समय सद्‌गुरु श्री अभिलाष साहेब का साधुसमाज में प्रवेश हुआ उस समय साधुसमाज में जातिगत छुआछूत का भेदभाव काफी रहा है। गुरुदेव जी ने इसका डटकर विरोध किया और समाज में सभी वर्ग के लोगों का प्रवेश सुलभ कर दिया। उनके इन प्रयासों का रूढ़िगत विचारधारा के संत-भक्तों द्वारा विरोध भी हुआ किंतु उन विरोधियों का गुरुदेव जी ने विरोध न कर उनसे प्यार किया। फलतः धीरे-धीरे विरोधी भी गुरुदेव जी के प्रशंसक बन गये। गुरुदेव जी की दृष्टि में मानव मूलतः मानव हैं।

गुरुदेव ने कबीर साहेब की वाणी को जीवन में आत्मसात किया था। वे आचार-विचार को लेकर छुआछूत मानते थे। जैसे कोई नाली साफ कर रहा हो, शौचालय गया हो जब तक वे स्नान न किये हों तब तक वे अछूत हैं किन्तु जब वे स्नान कर लिये तो पवित्र हो गये। गुरुदेव जी का भोजन शुद्ध आचार-विचार युक्त किसी भी तथाकथित जाति का व्यक्ति बना सकता था। गुरुदेव जी के साथ बहुत दिनों तक

मुसलमान एवं ईसाई समाज के साधक भी रहे हैं और वे गुरुदेव जी का भोजन बनाये हैं।

वे किसी भी काम को छोटा नहीं मानते थे। गुरुदेव जी जिस प्रसन्नता एवं उत्साह से लिखने-पढ़ने का काम करते थे उसी उत्साह एवं प्रसन्नता से वे आफिस का काम, भोजन बनाने का काम, नाली-शौचालय साफ करने का काम करते थे। गुरुदेव जी हर स्थिति व परिस्थिति में प्रसन्न रहते थे। चाहे उन्हें कोई गाली दे या कोई उनकी प्रशंसा करे व कोई पूजा-आरती करे हर स्थिति में वे प्रसन्न रहते थे और दूसरों को भी प्रसन्न रहने की सीख देते थे। वे सब समय अपना काम पूरा समझते थे।

गुरुदेव जी अपने जीवन में सदा जागरूक रहा करते थे। जैसे कि कबीर देव के लिए फिराक गोरखपुरी जी ने कहा है—'कबीर के एड़ी से चोटी तक आंखें-ही-आंखें थीं जो कभी झपकती नहीं थीं।' यह कथन सचमुच गुरुदेव जी के जीवन में घटित होता है। अपनी शरण में रहने वाले सभी साधकों पर वे इस प्रकार नजर (ख्याल) रखते थे जिस प्रकार चारागाह में चरती हुई गाय अपने नवजात शिशु पर रखती है। गुरुदेव के व्यक्तित्व के सारे पहल को लिया जाये तो हीरे के छप्पन पहल भी कम पड़ जायेंगे। गुरुदेव मां, डाक्टर, कुम्हार, कृषक तथा कुशल प्रबंधक की तरह थे। जिस पक्ष को लो उसी में वे दक्ष थे।

गुरुदेव जी ने साधकों के लिए विपुल सामग्री तो दी ही, शास्त्रों एवं दर्शनों पर भी लिखा। वह भी निष्पक्षतापूर्वक। इसीलिए सभी वर्ग के लोग उनकी साधना एवं विद्वता के कायल थे। उनकी साधना, त्याग, तप एवं विद्वता को देखकर एक बार किसी ने उन्हें आमंत्रित करते हुए लिखा कि आप हमारे यहां पधारें, हम आपको वैराग्यवान की उपाधि से विभूषित करेंगे। गुरुदेव जी ने विनम्रतापूर्वक प्रत्युत्तर लिखा कि भैया! जिस दिन मैं आपके यहां वैराग्यवान की उपाधि लेने आऊंगा उसी दिन मेरा वैराग्य स्वाहा हो जायेगा। गुरुदेव जी के अंदर किसी प्रकार के पद-प्रतिष्ठा व मान-सम्मान की कोई लिप्सा नहीं थी। वे तो गुरुवाई को भी भाररूप समझते थे।

साधक-समाज व यूं कहें पूरे मानव-समाज के कल्याण के लिए गुरुदेव जी जीवनभर अपने प्रवचनों व साहित्यों के माध्यम से विपुल खजाना दिये। गुरुदेव जी के जीवन में आडम्बर व दिखावा नाम की कोई चीज ही नहीं थी। उनका खान-पान, रहन-सहन सब कुछ सहज व सरल था। गुरुदेव जी जिस प्रकार विरक्त साधुओं को प्यार, स्नेहपूर्वक आशीर्वाद देते थे उसी प्रकार कल्याणेच्छुक साधिकाओं पर भी प्यार, स्नेह एवं करुणा की वर्षा करते थे।

गुरुदेव जी का नारी समाज के लिए अतुलनीय योगदान रहा है। साधिकाएं पहले अपने माता-पिता के संरक्षण में रहती थीं, जहां उन्हें काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता था। गुरुदेव जी के संरक्षण में आज साधिकाओं के लिए 4-5 आश्रम संचालित हैं। जहां साधिकाएं उन्मुक्त एवं निर्विघ्न रहकर अपनी कल्याण-साधना का काम कर रही हैं तथा समाज को भी इसका संदेश दे रही हैं। पुरुष आश्रमों के लिए गुरुदेव जी का जो कड़ा नियम था कि 5 वर्ष की लड़की से लेकर 90 वर्ष की बुढ़िया का आश्रम में अकेले रात्रि निवास नहीं होना चाहिए उसी प्रकार साधिकाओं के आश्रम के लिए भी नियम है कि 5 वर्ष के बच्चा से लेकर 90 वर्ष का बूढ़ा भी आश्रम में रात्रि निवास नहीं कर सकता।

किसी भी व्यक्ति के तीन व्यक्तित्व हुआ करते हैं—1. शारीरिक, 2. व्यावहारिक, 3. कृति (साहित्य) संबंधी। गुरुदेव के ये तीनों व्यक्तित्व बड़े सुन्दर एवं आकर्षक थे। शारीरिक व्यक्तित्व तो सुन्दर था ही। जीवनभर वे स्वस्थ, मस्त व प्रसन्न रहे। जीवन के उत्तरार्ध में भी वे 4-5 किलोमीटर पैदल बिना विश्राम किये चल लेते थे। व्यावहारिक व्यक्तित्व भी बेमिसाल था। उनके सुन्दर व्यवहार का ही परिणाम

था जो कि उनकी शरण में सैंकड़ों साधक एक साथ बड़े प्यार से रहकर अपनी कल्याण-साधना का काम करते रहे हैं।

गुरुदेव जी के अन्दर सेवा लेने की भावना तो थी ही नहीं बल्कि जहां तक हो सकता था सेवा करने की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। कई बार तो गुरुदेव जी जब बाहर प्रवास में होते थे और जब सुबह घूमने निकलते और सड़क के किनारे देखते कि खूब गंदगी है, तो पास के घर से फावड़ा मंगाकर सफाई कर देते। कभी मैं गुरुदेव जी से निवेदन करता कि गुरुदेव मुझे भी अपनी सेवा में रहने का अवसर दिया जाये। इस पर गुरुदेव जी कहा करते कि बेटा! जो मेरी शारीरिक सेवा करता है, मेरे कपड़ा धोता है केवल वह ही मेरी सेवा करता हो ऐसी बात नहीं हैं बल्कि जो इस व्यवस्था की सेवा करता है वही मेरी असली सेवा करता है। इसलिए तुम सब जहां जिस सेवा में लगे हो वह सब मेरी ही सेवा है। कृतित्व तो उनका अनूठा है ही। गूढ़-से-गूढ़ विषयों को इतना सरल कर देते थे कि आम आदमी भी आसानी से समझ लेता था। बीजक जैसा गहन-गंभीर, पहेलियों से भरा हुआ ग्रंथ जिसे समझने में बड़े-बड़े विद्वान भी अपने को असमर्थ महसूस करते थे गुरुदेव जी ने उसे इतना सरल और बोधगम्य बना दिया कि पढ़ना शुरू करो तो बंद करने का मन ही नहीं होता।

कबीर साहित्य पर गुरुदेव की गहरी पैठ तो थी ही, वैदिक साहित्यों पर भी उनकी जबर्दस्त पकड़ थी। उसी का परिणाम था रामायण, गीता, महाभारत, उपनिषद् एवं वेद जैसे ग्रंथों पर गुरुदेव जी की लेखनी की जादुई छड़ी जब पड़ी तो उसे लेने के लिए आम जनता ही नहीं विद्वतगण की भीड़ भी उमड़ पड़ी। 2004 में अक्टूबर के प्रथम सप्ताह में लखनऊ में पुस्तक मेला लगा हुआ था, जिसमें हमारे प्रकाशन की पुस्तकों का स्टाल लगा हुआ था। पुस्तकों को देखकर ग्राहकों को बड़ा आश्चर्य होता था और लोग पूछते थे कि इन पुस्तकों के लेखक अभी जीवित हैं। जब उन्हें पता चलता कि इन पुस्तकों के लेखक अभी हैं और इतना ही नहीं उनकी स्कूली पढ़ाई भी कुछ नहीं है तो लोगों को घोर आश्चर्य होता था। लोगों को विश्वास ही नहीं होता था। कहते थे कि इनके नाम पर किसी ने लिख दिया होगा। लेकिन ऐसी बात नहीं है उस समय करीब 100 पुस्तकें थी, आज 130 के लगभग हैं और उनकी सारी पुस्तकें उन्हीं की लिखी हुई हैं। दुर्भाग्य से गुरुदेव जी की काया आज हमारे बीच नहीं है किंतु उनकी छाया कृतियों के रूप में, उपदेशों (सीडी, डीवीडी) के रूप में, संतों के रूप में हमारे बीच है और जब तक हमारे ऊपर यह छाया रहेगी, हम उनके बताये नियमों के अनुसार चलेंगे तब तक कोई हमारा बिगाड़ नहीं कर सकता।

सद्गुरु कबीर के मानवतापरक निष्पक्ष एवं कल्याणकारी विचारों को जन-जन तक पहुंचाने का श्रेय यदि किसी को जाता है तो गुरुदेव को ही। क्योंकि उनके पहले कबीरपंथ में सद्गुरु कबीर की वाणियों को पंथाचार्य व संत समाज में खुले रूप में नहीं कहते थे। कहते भी थे तो बंद कमरे में, दो-चार लोगों के बीच में। गुरुदेव जी ने इस प्रथा को समाप्त कर सद्गुरु कबीर की वाणी को कमरे से निकाल कर खुले मैदान में लाया जिससे उसके प्रकाश में आज सारा समाज आलोकित हो रहा है और आगे भी होता रहेगा। गुरुदेव जी की कहने की शैली भी बड़ी अनोखी थी। समाज में पहले खण्डन-मण्डन की शैली व्याप्त थी, परंतु गुरुदेव जी ने सकारात्मक शैली में अपनी बात रखी। गुरुदेव की इस नई शैली एवं विधा से आज साधकों को अपनी बात कहने में बड़ी सुविधा है। मैं अपना बड़ा सौभाग्य समझता हूं कि मुझे ऐसे गुरुदेव का सान्निध्य एवं आशीर्वाद मिला जिससे मुझे आत्मअस्तित्व को समझकर उसमें स्थित होने की सही समझ मिली। किसी ने बड़ा अच्छा कहा है—

जो बात दवा से नहीं होती,
वो बात दुआ से होती है।
ऐसे सद्गुरु जिसे मिल जाय,
तो बात खुदा से होती है।

संसार में जो आया है उसे एक दिन जाना ही पड़ता है। प्रकृति के इस विधान को दुनिया का कोई भी संविधान नहीं बदल सकता। फिर गुरुदेव इससे परे कैसे हो सकते थे। किसी ने कितना अच्छा कहा है—

'सब किसी को फिक्र जाने की पड़ी है,
किसी को यहां रूकते न देखा।
जिंदगी का ही झुका है जब झुका है,
मौत का झण्डा कभी झुकते न देखा।

लुकमान जैसा हकीम कह गया— *'मरते मरते कह गया, लुकमान सा दाना हकीम। दर हकीकत मौत की, यारो दवा कुछ भी नहीं।* ऐसी स्थिति में मुझे गुरुदेव जी के लिए कबीर देव की वाणी याद आती है— *'जेहि मरने से जग डरे, मेरो मन आनंद। कब मरिहौं कब पाइहौं, पूरण परमानंद।'* 24 वर्ष की उम्र में गुरुदेव ने अपनी पहली रचना 'वैराग्य संजीवनी' में मौत का आह्वान करते हुए स्वयं कहा है—'रे मौत प्यारी मौत मेरे सामने आया करे'। जाते-जाते गुरुदेव सद्गुरु कबीर की इस अमरवाणी को चरितार्थ कर गये—'ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया।' जीवन में कहीं कोई दाग नहीं। जीवन को ऐसा जीये जैसे कोई चादर ओढ़े हो और जाते समय उतारकर धर दे। गुरुदेव ऐसे ही अपने पंचभौतिक देह को उतारकर धर दिये।

गुरुदेव जी का निर्वाण हम सबको जीवन-निर्माण की सीख देता है। दुनिया में लोग निर्माण की हर कला में निपुण हैं लेकिन जीवन-निर्माण की कला न जानने के कारण उनकी हर कला केवल बला साबित होती है। जाहिर है कि गुरुदेव जी इस कला में कितने माहिर रहे हैं। वे अपना जीवन-निर्माण कर निर्वाण को प्राप्त हो गये। मानो वे हम सबको बता गये कि यदि तुम सब मुझे चाहते हो व मेरे समान आनंदित व आत्यंतिक सुखी होना चाहते हो तो सारी आशाओं एवं कामनाओं का त्याग करो। जैसा कि गुरुदेव कबीर ने कहा है— *'जो तू चाहै मूझको, छाँड़ सकल की आस। मुझ ही ऐसा होय रहो, सब सुख तेरे पास।'* हम सब भी गुरुदेव के बताये पथ पर चलकर जीवन-निर्माण की दिशा में आगे बढ़ें। सदा आनंदित, मुक्त, कालजयी पुरुष गुरुदेव के प्रति यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

हे मेरे व्यक्तित्व के पोषक आराध्यदेव! आपकी शरण में मुझे जो आत्मिक शांति मिली उसका वर्णन मैं शब्दों में नहीं कर सकता। गुरुदेव आप तो अपना काम पूर्ण कर चुके, क्या हम सब अनाथों के उद्धार के लिए पुनः नहीं आयेंगे—

हे रवि सम तेज चंद्र सम शीतल, जग में लिखा गये तैं नाम।
गुरुवेन्द्र दास के तू ही रक्षक, तुमको कोटि कोटि परनाम।
गुरुदेव तुम्हारे चरणों में, ये पुष्प समर्पित करता हूं।
इस दास की आस पुरा देना, ये जीवन अर्पित करता हूं।

कबीर पारख संस्थान, प्रीतमनगर, इलाहाबाद

कम खाना अमृत है, कम बोलना अमृत है, कम सोचना अमृत है, संसार की तृष्णा का त्याग करना अमृत है, किसी से न उलझना अमृत है, अपने आप के सुधार में लगे रहना अमृत है, निश्शोक होकर जीवन यापन करना अमृत है, इस भवचक्र संसार से छूट जाना अमृत है।

(पूज्य गुरुदेव जी : भूला लोग कहैं घर मेरा)

सद्गुरुदेव के प्रति मेरा संस्मरण

साध्वी सुशीला

ग्राम दर्रा, जो राजिम के पास स्थित है वहां संत श्री शरणपाल जी का आश्रम था, वहां सद्गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी की जमात आती थी। वहां सब संत-भक्त दर्शन करने आते थे। मैं भी दीपावली की छुट्टी में सन् 1965 में श्री गुरुदेव के दर्शन करने गई। गुरुदेव का प्रवचन सुनकर मेरे मन में वैराग्य का भाव जगा। अपनी बड़ी मां फूलबाई से मैंने कहा कि चलो, गुरुदेव के पास जायेंगे। गुरुदेव जी के पास जाकर अपने भाव को मैंने व्यक्त किया। गुरुदेव जी साधनापरक बातें कहकर समझाये। फिर मुझसे पूछे, अभी पढ़ रही हो। मैंने कहा—हां! गुरुदेव जी ने पूछा—क्या पढ़ती हो? मैंने कहा—नाइंथ! फिर गुरुदेव जी ने कहा—बहुत पढ़ ली। किताब तो पढ़ सकती हो क्योंकि ग्रन्थ हिन्दी में ही लिखा होता है, खूब ग्रन्थ पढ़ना।

उस समय श्री प्रेम प्रकाश जी के माता-पिता भी आये थे। वे मेरी पीठ को थपथपाये और कहे—वैराग्य साधना में लगे रहना। यही मेरे जीवन में गुरुदेव जी से प्रथम मिलना हुआ और उनके प्रकाश से मेरा हृदय जगमगा गया। मैं सोचती हूं कि गुरुदेव जी न मिले होते तो मैं कहां भटकती होती। ऐसे महापुरुष के लिए कहा जाता है *"एक बार जो दर्शन पाता है बस, आपका ही हो जाता है। क्या गुप्त तुम्हारी प्रीति है, है धन्य तुम्हारे चरणों में।"*

गुरुदेव जी साधिकाओं को यही कहते थे कि अपने माता-पिता के यहां रहकर साधना करो क्योंकि साधिकाओं के लिए कोई आश्रम नहीं था। बहुत दिनों के बाद हम सब बहिनें गुरुदेव जी से प्रार्थना किये कि हम लोगों के लिए भी आश्रम होना चाहिए जिससे सब लड़कियों के लिए आधार मिल जायेगा। गुरुदेव जी ने कहा—तुम लोग आश्रम बना सकती हो, मेरा आशीर्वाद है। भोजन, आवास और कपड़ा सब मिल जायेगा।

हम सब बहिनें विचार कीं कि आश्रम कहां बनायेंगे। फिर रोड पर बनाना जहां आने-जाने में सुविधा हो। पोटियाडीह में श्यामलाल के पास चर्चा किये तो उन्होंने कहा—हमारे बगीचा में बना लो। फिर उस जमीन को तीनों भाइयों ने दान में दे दिया। जिसमें आश्रम निर्माण हुआ सन् 1993 में। फिर तो गुरुदेव जी हर वर्ष पोटियाडीह में कार्यक्रम देते रहे। साहेब जी हर वक्त यही कहते थे कि सिपाही बन कर रहना। साधिकाओं को निभाना बहुत बड़ी जिम्मेदारी है।

मेरे मन में एक बार विचार आया कि मैं लड़का होता तो गुरुदेव जी के साथ में रहकर सेवा करता। मैंने गुरुदेव जी से कहा—लड़की का शरीर परतंत्र और परवश है। गुरुदेव जी ने कहा—बेटी, लड़की का शरीर हो या लड़के का, सबका शरीर दुखों से भरा है। वर्तमान में जो शरीर मिला है उससे अपना कल्याण का काम कर लेना ही शरीर की सार्थकता है। आपने कहा—*"हंस न नारि पुरुष है, यह सब काल को फंद। गांस फांस सब मेटि के, साहेब शरण आनंद।"* फिर ज्ञान, विचार और साधना की बातें बताये।

ध्यान के परम आराध्य श्री गुरुदेव जी ने मुझसे पूछा—ध्यान में तुम्हारा मन शांत होता है? मैंने कहा—गुरुदेव जी, शांत होता है। हां, कार्यक्रम के समय बहुत इधर-उधर की बातें भी सोचता है। गुरुदेव जी ने कहा—कार्यक्रम में अक्सर हो जाता है, फिर सोच-समझकर मन के संकल्प को छोड़ दिया करो।

वार्षिक अधिवेशन इलाहाबाद में एक बार मैंने पूछा था कि संसार में अनेक बड़े-बड़े महात्मा लोग केवल ईश्वर, ब्रह्म, परमात्मा में ही उलझ जाते हैं, अपने आप का बोध नहीं हो पाता। गुरुदेव जी ने कहा— *जल परमाने माछुली, कुल परमाने शुद्धी। जाको जैसा गुरु मिले, ताको तैसी बुद्धीû* गुरुदेव जी सदैव ही आत्मभाव की ओर प्रेरित करते रहते थे। विजातीय घटों से सदैव सावधान करते रहते थे।

जयपुर से दिल्ली की यात्रा थी। बीच में ट्रेन के 3-4 डिब्बे पटरी से उतर गये थे। परन्तु जिसमें गुरुदेव और संत बैठे थे वह डिब्बा सुरक्षित था। हम लोगों को पता चलने पर मोबाइल द्वारा गुरुदेव से बात किये कि आप तो सुरक्षित हैं। गुरु जी कहने लगे—यह मिट्टी का लौंदा कहीं गिर जाये, इसके लिए शोक मत करना।

मैंने कहा—गुरुदेव जी! आपका शरीर है तभी तक तो ज्ञान-विचार मिल रहा है और शरीर नहीं रहेगा तो कहां से ज्ञान मिलेगा। गुरुदेव ने कहा—हां बेटी, तुम ठीक कहती हो। एक बार मैंने यही प्रश्न श्री विशाल साहेब जी से किया था। साहेब जी ने यही उत्तर दिया था। गुरु के शरीर से हम ज्ञान प्राप्त करते हैं, परन्तु शरीर नहीं रहने पर जो विवेक हमको प्राप्त हुआ है उसको पास रखना है, क्योंकि गुरु मरता नहीं है। शरीर तो एक दिन छूट जाने वाला है। इस प्रकार जानकर अनासक्त रहो।

गुरुदेव का हर पल सावधानी से भरा रहता था। पोटियाडीह के कार्यक्रम में आये तो गुरु जी बताने लगे कि मैंने सोच-समझ कर यह निर्णय लिया है कि कोई साधिका तथा नारी मेरे पैर न छुए। क्योंकि साधिकाओं और संतों की संख्या बढ़ रही है, इसलिए सावधानी रखने की जरूरत है। गुरुदेव जी की हर एक सावधानी हम लोगों के लिए सुरक्षा कवच है। मैं सोचती हूं कि गुरुदेव जी कितने महान थे जो हमें सदैव सुरक्षित रखना चाहते थे। गुरुदेव जी रहनी के पक्के थे। जैसे कहते थे वैसे ही करते थे। सद्गुरु कबीर की साखी का स्मरण आता है—

जस कथनी तस करनी, जस चुम्बक तस ज्ञान।
कहहिं कबीर चुम्बक बिना, क्यों जीते संग्रामû

कथनी, करनी और रहनी जिस महापुरुष की एक होती हैं—उसके ज्ञान से ही लोग प्रभावित होते हैं। वैसे ही गुरुदेव जी थे। उनके ज्ञान से अन्य सम्प्रदाय के लोग भी प्रभावित थे, वे कबीरपंथ के सिरमुकुट थे ही। गुरुदेव जी शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम और मन को स्वस्थ रखने के लिए ध्यान, इन दो बातों पर अधिक कहते थे।

इलाहाबाद के वार्षिक अधिवेशन में आयी थी गुरुदेव जी के पास बन्दगी करने गयी, तो गुरुदेव जी बोले—साइटिका, कमर दर्द के लिए व्यायाम करना जरूरी है। आज तो मैं जलपान कर लिया हूं। कल जल्दी आना मैं व्यायाम कर के दिखाऊंगा। दूसरे दिन गुरुदेव जी के कमरे में हम सब साधिकाएं गयीं। गुरुदेव जी एक चादर ओढ़कर अपने आसन पर व्यायाम करके दिखाए। उस समय मुझे महात्मा बुद्ध का स्मरण आ रहा था। गुरुदेव जी मुझे महात्मा बुद्ध जैसे दिखाई देने लगे।

गुरुदेव जी दया के सागर, पर-उपकारी और सबके हितचिन्तक थे। नवापारा में 23 जुलाई से 29 जुलाई 2012 तक ध्यान शिविर था। 30 जुलाई को गुरुदेव जी के पास क्षमा और मैं बैठने के लिए गयीं। एक घंटे तक बैठे रहे। अनेक प्रसंगों को लेकर बोलते रहे और अंत में गुरुदेव जी ने कहा—मैं गठरी-मोटरी बांधकर तैयार हूं। तुम लोग भी एकदम अनासक्त रहो। यह शरीर कभी भी छूट सकता है। इसलिए सदैव सावधान रहो। इस प्रकार गुरुदेव जी का अंतिम अशीर्वाद था। मैं क्या जानती थी कि यही अंतिम दर्शन होगा। फिर 26 सितम्बर को सुबह 5 बजे फोन आया कि साहेब जी इस असार संसार को छोड़कर अपने स्वरूप में लीन हो गये।

गुरुदेव जी के अनंत उपकार हैं। उनका हम वर्णन नहीं कर सकतीं। *"सतगुरु की कृपा अनंत, अनंत किया उपकार। लोचन अनंत उघारिया, अनंत दिखावन हारû"*

गुरुदेव जी का उपकार जब याद करती हूं, तो मैं अपने आप में खो जाती हूं।

कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम
पोटियाडीह, धमतरी, छ. ग.

एक बार जो दर्शन पाता है

साध्वी विजया

परम पूज्य गुरुदेव जी का परिचय मुझे उनके रचित सद्ग्रंथों के माध्यम से लगभग 1986 में हुआ था। सूरत निवासी पू. श्री पारखी साहेब जी के द्वारा मैं कौन हूं?, जीवन क्या है?, स्त्री बाल शिक्षा इत्यादि कुछ पुस्तकें प्राप्त हुई थीं। करीब एक साल के बाद पू. पारखी साहेब जी के साथ ही इलाहाबाद जाने का प्रथम बार मौका पड़ा था। उसी समय पहली बार गुरुदेव जी का दर्शन हुआ और सत्संग का लाभ भी मिला। तथा संत-समाज से परिचय हुआ। अधिवेशन के बाद कुछ दिन रुकना हुआ। उस बीच मैंने गुरुदेव जी से दीक्षा के लिए विनय-प्रार्थना की। गुरुदेव जी के कृपाप्रसाद से प्रीतमनगर के हाल में संतों के सान्निध्य में मेरी दीक्षा हुई। दूसरे दिन गुरुदेव जी के पास बैठकर मैंने साधना मार्ग में चलने का अपना संकल्प बताया। गुरुदेव जी ने साधना संबंधी कुछ बातें और सावधानियां बतायीं। आश्रम के विषय में पूछने पर बताया कि बेटी, घर में रहकर ही साधनामय जीवन बिता सकती हो। छत्तीसगढ़ में कई साधिकाएं हैं वे अपने-अपने घर में साधनारत हैं। मैंने संतोष कर लिया।

वहां से फिर कई आश्रमों में जाना हुआ। काठमांडू नेपाल भी गये। इस प्रकार पारख सिद्धांत के सभी महापुरुषों के दर्शन-सत्संग का लाभ लेते हुए एक महीना की यात्रा के बाद गुजरात वापस लौटना हुआ। वहां से आने के बाद मैंने अपना संकल्प घर के सभी सदस्यों बताया। उस समय गुरुदेव जी का परिचय माता-पिता के अलावा किसी को था ही नहीं, सब लोग मेरे संकल्प से नाराज रहे। कोई भी मेरी बातों से सहमत नहीं हुआ। किसी ने सहयोग की बात नहीं की। नारी घट! घर छोड़ कर कहां जाऊं? क्या करूं? बड़ी विचित्र स्थिति। रातों की नींद हराम! गुरुदेव जी की कृपा हुई और मेरा संकट हरने गुरुदेव गुजरात पधारे। गड़ोथ गांव में भक्त श्री दीपसिंगभाई के पिताजी के देहावसान निमित्त श्रद्धांजलि का कार्यक्रम रखा गया था। समाचार आया तो हम लोग वहां पहुंच गये। माता-पिता तथा प्रकाश भाई ने मेरे विषय में गुरुदेव जी से चर्चा की। गुरु जी की बातों से सबको काफी संतोष हुआ। फिर धर्मपुरी गांव में सत्संग के लिए गुरुदेव जी से निवेदन किया, गुरु जी की कृपा हुई और एक दिन के लिए गुरुदेव धर्मपुरी पधारे। उस समय सभी सगे-सम्बन्धी, नेमी-प्रेमी आये और दर्शन-सत्संग का लाभ लिये। सबको बहुत-बहुत संतोष हुआ और पूरा परिवार ऐसे समर्पित हुआ कि जैसे "एक बार जो दर्शन पाता है, बस आप ही का हो जाता है।"

परम पूज्य गुरुदेव जी वर्तमान के युगपुरुष थे। वे सबके दिल में बस गये हैं। उनका व्यक्तित्व, कर्तृत्व और वक्तृत्व अद्वितीय था। गुरुदेव के जीवन को देखा जाये तो उनकी कथनी, करनी, रहनी और लेखनी में कहीं पर भी किसी प्रकार का अंधविश्वास, चमत्कार, अतिशयोक्ति, कोई मान्यता या कल्पना, दिखावा, ढोंग-पाखंड या किसी प्रकार की भी भ्रांतियां देखने में नहीं आतीं। सत्य कहने में बिलकुल निर्भीक थे। साथ-साथ समन्वयात्मक दृष्टिकोण भी था। गुरुदेव जी वर्ण-आश्रम, कुल-परंपरा, जात-पांत तथा साम्प्रदायिक भावनाओं से ऊपर उठे हुए महापुरुष थे। वे किसी

राजनीतिक चर्चा में कभी अपना समय और शक्ति बरबाद नहीं करते थे और राजनेताओं से भी बचकर रहना चाहते थे। उन्होंने अपने जीवन में मान-सम्मान, धन-सम्पत्ति, पूजा-प्रतिष्ठा, यश-कीर्ति की ओर रंच मात्र भी ध्यान नहीं दिया। हमेशा वैराग्य भाव और उदार चित्त रहे। उन्होंने सभी जगह से सार-सत्य को लिया। भीड़ का भी कोई मोह नहीं था। मैं गुरुदेव जी से नयी-नयी जुड़ी थी। बड़ौदा में हम लोगों ने कार्यक्रम रखा था तो अपेक्षा से बहुत कम लोग सत्संग सुनने आये थे। मुझे बहुत दुख हुआ। गुरुदेव जी के प्रवचन के पहले मैं गुरुदेव जी के निवास पर गयी और दुखी होकर कही—गुरुदेव, खास कोई श्रोता नहीं आये हैं। तब गुरु जी मुस्कुराये और कहा—बेटी, तुम श्रोता हो कि नहीं? मैंने कहा, हूं। तब गुरु जी ने कहा—तुम श्रोता और मैं वक्ता, बस काफी है। चिन्ता क्यों करती हो? ऐसे महापुरुष आज के जमाने में कहां मिलेंगे!

गुरुदेव जी सहनशीलता के अथाह सागर थे। करुणा की मूर्ति थे। कोई छोटी-मोटी आलोचना-निंदा होती उसमें तो कोई प्रतिक्रिया या विवाद तो बिलकुल नहीं लेकिन हजारों की भीड़ में, बड़े मंच से भी आपकी आलोचना-निंदा हुई उसमें भी कभी चेहरे में कोई भाव नहीं उत्तेजना का और एक शब्द में कोई उस बात का जिक्र नहीं। हर परिस्थिति में आप प्रसन्न मुद्रा में रहते थे। आलोचना करने वाले के प्रति करुणा भाव रखते थे।

गुरुदेव जी क्षमा के मूर्तिमान स्वरूप थे। किसी विषय में किसी की गलती पर एकांत में उसको समझाने और सुधारने का प्रयास करते। कभी कठोरता से भी कहना पड़े तो भी अंदर से स्नेह और प्यार रहता था। सबके लिए हितभावना रखते थे। सबके प्रति अपनापन का भाव रहता था। उनका सूत्र है प्रेम में स्वर्ग है और अनासक्ति में मोक्ष। अन्दर से बिलकुल दुखरहित और असंग थे। व्यवहार में प्रेम से परिपूर्ण थे इसलिए सब लोग अन्दर से महसूस करते थे कि गुरु जी मुझे बहुत प्यार करते हैं। गुरुदेव जी हर परिस्थिति में अपने आप में शांत रहते थे। कोई व्यक्ति कितना भी अशांत हो, कई प्रकार की उलझनों में उलझा हो मगर गुरुदेव जी के पास जाने से, आपके दर्शन मात्र से उसको शांति मिलती थी, सुकून मिलता था।

व्यवहार और परमार्थ दोनों पक्ष को जीवन में जी करके एक आदर्श स्थापित किये थे। जीवन जीने की कला सिखाये। आपका जीवन देखें तो सब कुछ एकदम व्यवस्थित और संयमित। खाना-पीना, देखना-सुनना, चलना-फिरना, बात-व्यवहार सब में संयम। सद्गुण-सदाचार तो रोम-रोम में समाये हुए थे। सहनशीलता ऐसी कि चाहे दूर के लोग हों, चाहे नजदीक के सब की खूब सहते थे। हम लोगों को भी समय-समय पर कहा करते थे कि अगुवा को तो सबसे ज्यादा सहना चाहिए। सहनशीलता ही साधक की साधना है। आप कहा करते थे कि हमें अपने आप को ऐसा बनाना चाहिए कि अंदर से लगे ही न कि मैं सह रहा हूं। आपने अपने को इतना तराशा था कि कोई पहलू बाकी ही नहीं था। व्यावहारिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, दार्शनिक पक्ष सब में गहराई तक गये और जो उपयोगी लगा सब जीवन में आचरित किये और जीवन सफल बना दिये। अन्य मत-पंथ के संत-स्वामी, आचार्य, मंडलेश्वर, महामंडलेश्वर कोई भी हो सभी के साथ आदर-प्रेम-सत्कार तथा समता का बरताव करते थे। अपने कर्तव्य पालन में कभी नहीं चूकते थे। हम लोगों को भी कहा करते थे कि अपने सिद्धांत में निष्ठा रखना और दूसरे मत का आदर करना, यह सबका कर्तव्य है। गुरुदेव जी का दृष्टिकोण बहुत विशाल था।

गुरुदेव जी का सूत्र है—कम खाओ और गम खाओ। आप भोजन बहुत संयमपूर्वक लेते थे और समय का भी ख्याल रखते थे। इसलिए स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहा और समाज के लिए बहुत कुछ करके गये और अंतिम श्वास तक किसी प्रकार की कोई तकलीफ नहीं रही। मन के संबंध में तो कहना ही क्या! हमेशा क्लेशरहित,

पीड़ारहित, किसी प्रकार की कोई गांठ नहीं, निर्मल और पवित्र मन वाले महापुरुष थे। कबीर साहेब की साखी चरितार्थ होती है—"यह मन तो निर्मल भया....।" मानसिक विकारों से ऊपर उठे हुए एकदम प्रसन्नचित्त रहते थे। सभी प्रकार की बातों के लिए हमेशा जागृत-सावधान रहते थे। आप कहा करते थे सावधानी ही साधना है। सद्गुरु कबीर साहेब की वह पंक्ति—"ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया" चरितार्थ कर गये। जीवन में किसी प्रकार का कोई दाग नहीं। जन्मदिन पर आपसे जब कोई बात होती थी तो आप कहते थे जन्मदिन नहीं, मृत्युदिन को याद करो। वास्तव में आपका जीवन साधना की शुरुआत से ही दृढ़ वैराग्यमय रहा जो आपकी प्रथम रचना वैराग्य संजीवनी को पढ़कर ही जाना जा सकता है।

गुरुदेव जी ने नारी समाज को संरक्षण दिया। हम लोगों को आपकी छत्रछाया मिली, यह बहुत बड़ी क्रांति है। आपने हमें साहस दिया तथा आज साधिकाओं के लिए कई आश्रम बने और सभी लोग एक साथ रह कर साधना कर रही हैं। सबको एक आधार मिला। आपने हम लोगों के लिए इतना अच्छा नियम बनाया जिसमें हमारी सुरक्षा है। गुरुदेव जी कितनी दूरदृष्टि के महापुरुष थे। आज के युग में हमारे लिए आपके दिये हुए नियम ही सुरक्षा कवच हैं जैसे मां सीता जी के लिए लक्ष्मण रेखा। हमारा कितना बड़ा सद्भाग्य उदय हुआ कि आप जैसे महापुरुष हमारे जीवन में आये और हमको ज्ञान के दीपक के साथ-साथ प्रेम-स्नेह-वात्सल्य की छत्रछाया दिये। नहीं तो, पता नहीं हमारी क्या गति-मति होती? हम आपके ऋणी सदा रहेंगे। गुरुदेव जी के अनंत उपकार को याद करते हुए आपके पावन चरण-कमलों में श्रद्धा-सुमन समर्पित और कोटि-कोटि वंदन।

कबीर पारख आश्रम
धर्मपुरी, वडोदरा, गुजरात

गुरुदेव की यादों में हृदय की वाणी

अर्चना त्रिपाठी

1997 ई. में मुझे सर्वप्रथम गुरुदेव जी के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुरुदेव जी से मिलने के पूर्व मेरे मन में अनेक प्रकार के प्रश्न उठते रहते थे, जिसका जिक्र मैंने कभी किसी से नहीं किया। बस मन में ही उनका जवाब ढूंढ़ती-मथती रहती थी। किसी से कहती भी तो कैसे क्योंकि मुझे कोई दिखाई ही नहीं देता था जो मेरे मनोभावों को समझे। कभी-कभी तो मुझे यही लगता था कि या तो मैं ही पागल हूं या दुनिया के लोग ही दिग्भ्रमित हैं। लेकिन जिस दिन मैंने गुरुदेव जी के दर्शन किया और उनकी वाणी सुनी उसी दिन मुझे जीवन का सब कुछ मिल गया। आपके मिलने पर मुझे वैसे ही अनुभव हुआ जैसे जलविहीन तड़पती मछली को सुन्दर सरोवर मिल जाये। मेरे जीवन को आपने भक्ति-ज्ञान के रस से हरा-भरा कर दिया। मैंने गुरुदेव जी को पाकर ही अपना अस्तित्व समझा। सही मायने में गुरुदेव जी के द्वारा ही मेरा जन्म हुआ।

गुरुदेव जी ने हमें हर मोड़ पर और हर परिस्थिति में मार्गदर्शन दिया है। मेरे माता-पिता, दादा-दादी आदि हिन्दू परम्परा के अनुसार भक्ति-उपासना करते थे, मैं भी उन्हीं का अनुगमन करती थी। जन्म से सारी सुख-सुविधा उपलब्ध होने के बाद भी मैं वैराग्य-व्यथा का अनुभव करती रहती थी। सब समय मेरे मन में यही

विचार आता था कि मैं कौन हूं, कहां से आयी हूं, मेरा भगवान कौन है, इस पृथ्वी पर मुझे कौन लाया है। सारा संसार मुझे वीरान दिखाई देता था। जब मैं गुरुदेव जी से मिली तो आपने मेरा सारा समाधान कर दिया। आपने कहा—बेटी, तुम जिस भगवान को ढूंढ़ रही हो वह तुम स्वयं हो। बाहर से कोई परमात्मा मिलने वाला नहीं है। बाहर यदि खोजना ही है तो प्राणियों एवं मनुष्यों में उसके दर्शन करो, अन्दर आत्मा स्वयं है। सबके साथ सुन्दर बरताव की सीख और स्वयं (आत्मा) का बोध जब से आपने दिया, मैं सब समय अपने आप को परमात्मा के बीच पाती हूं। गुरुदेव ने कहा—बेटी, हम भी तुम्हारा केवल मार्गदर्शन कर सकते हैं, काम तो तुम्हें स्वयं करना पड़ेगा।

पहले मैं विष्णु भगवान, माता लक्ष्मी आदि की पूजा-उपासना करती थी, लेकिन गुरुदेव जी के मिलने के बाद मेरे हृदय में वह स्थान आपका हो गया है। गुरुदेव जी से मिलने के पूर्व मुझे आपकी लिखी एक पुस्तक मिली 'सहज समाधि'। इसे पढ़ने के बाद लगा कि ये संत मेरे हृदय की प्यास बुझा सकते हैं। और जब आपके दर्शन पायी तो कल्पना से भी अधिक मुझे आपसे मिला। फिर तो मेरा मन सदैव के लिए आपके चरणों में समर्पित हो गया। इसी संदर्भ में गुरुदेव जी से जुड़ा हुआ मेरा एक संस्मरण है जिसे मैं यहां उद्धृत करना चाहती हूं—

सन 2003 ई. में मैं एक बार फैजाबाद से इलाहाबाद (नैनी) रिलेशन में गयी थी। उन दिनों मेरी बेटी बहुत छोटी थी। अचानक उसका स्वास्थ्य बिगड़ गया और साथ-साथ मेरा भी। कई डाक्टरों को दिखाने के बाद भी कोई लाभ नहीं हुआ। ऐसी स्थिति में मैं काफी व्याकुल थी। इस दुखद परिस्थिति से मैं काफी उदास हो चुकी थी। मेरे मन में यही हो रहा था कि मैं कहां जाऊं जहां मुझे पूर्ण आत्मशांति की प्राप्ति हो। उसी समय एकाएक मुझे गुरुदेव जी का स्मरण आ गया। मैंने मन ही मन में उनकी आराधना की, इससे मुझे बड़ी आत्मशांति मिली और हम लोग प्रसन्नतापूर्वक फैजाबाद वापस आ गये।

सन् 2006-07-08 में जब आपके आश्रम (इलाहाबाद) में ध्यान शिविर में मैंने भाग लिया तो अत्यन्त निकट से आपके चरणों में रहने एवं ध्यान-सत्संग का अवसर प्राप्त हुआ। आपकी हर चर्चा से अमृत रस निकलता था। यहां तक जब कभी थोड़े समय के लिए भी आपसे फोन पर बात होती तो अत्यन्त प्यार से आप व्यवहार-परमार्थ की उज्ज्वलता पर कुछ चर्चा अवश्य कर देते थे। गुरुदेव अपनी महानता स्वयं कभी प्रकट नहीं करते थे। लेकिन आपको मैं अपने अनेक जन्मों की तपस्या के बाद पायी हूं। वैसे तो मैं आपको हमेशा याद करती हूं, लेकिन जब अत्यन्त विरह भाव से याद करती हूं तो गुरुदेव जी मुझे मेरे पास मिले और अपने ज्ञानामृत वाणी से मेरी पिपासा को शांत करते रहे। गुरुदेव जी ने मेरे इस जीवन को सुसज्जित बनाकर इसमें ज्ञान का प्रकाश जलाया और आगे भी उन्हीं के ज्ञान एवं बोध से मार्गदर्शन मिलता रहेगा। जरूरत है हमें सच्ची भावना के साथ उनके बताये मार्ग पर चलने की। गुरुदेव जी हमारे साथ हैं। जितना ही हम उनके विचारों को अपनायेंगे उतना ही हम उनको अपने निकट पायेंगे। और हमेशा के लिए हम उनके चरणों की धूल बन जायेंगे। उन्होंने हमें स्वयं सद्गुरु कबीर साहेब की साखी सुनाया है—

जो तू चाहै मूझको, छाड़ सकल की आस।
मुझ ही ऐसा होय रहो, सब सुख तेरे पास॥

अंत में आपके पवित्र चरणों में नतमस्तक होकर मेरा शत-शत प्रणाम! त्रयबार साहेब बन्दगी।

अश्विनीपुरम् कालोनी, जब्ती वजीरगंज,
फैजाबाद, उ. प्र.

तेरे द्वार खड़ा भगवान...

साध्वी जया

पूज्य सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी की स्मृति मेरे अन्तःपटल पर...

तथागत बुद्ध ने कहा है—कुछ चीजों का मिलना कठिन होता है। एक है मनुष्य जन्म का पाना। यह होने के उपरान्त दो चीजें दुर्लभ हैं, सद्धर्म का श्रवण और बुद्ध का उत्पन्न होना।

न जाने कितने जन्मों के पुण्य संचय करने के बाद व्यक्ति को उसके जीवन में किसी सद्गुरु का अमृत साहचर्य और सान्निध्य उपलब्ध होता है। जिसके भीतर नूर उतरता है, ऐसा महापुरुष कई जन्मों के बाद किसी पुण्य संयोग से ही उपलब्ध हो पाता है। अतीत में ऐसे नूर हुए, वर्तमान में भी ऐसे नूर होते हैं।

ऐसे ही नूर का सान्निध्य मुझे 25 साल तक मिला। पूज्यवर गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी का दर्शन मुझे इलाहाबाद के 14वें वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर कबीर पारख संस्थान, प्रीतमनगर के सत्संग हाल में हुआ। उनका प्रतिभासंपन्न अद्भुत व्यक्तित्व मुझे आकर्षित कर गया। वहीं पर, जीवन में पहली बार मैंने संतों का इतना विशाल वृंद देखा। बच्चों जैसा मेरा मन उस समय सबको देखकर बड़ा ही कुतूहल महसूस करता था।

मन में शंकाएं थीं। पूज्यवर गुरुदेव जी ने उन सारी शंकाओं का समाधान किया। मैं तो भूल चुकी थी पर गुरुदेव जी को 19 साल के बाद भी याद था। उन्होंने कहा था "पहली बार जब तुम मुझसे मिली थी तो कई प्रश्न तुमने पूछे थे।" मैंने कहा, "हां गुरुदेव! अब सारे प्रश्नों का समाधान हो गया है।"

मैंने यह गहराई से महसूस किया कि गुरुदेव जी को परख प्रिय थी। वे परम पारखी थे और हर पल परख में ही जीये। उनकी परख सब समय नित्य प्रज्वलित ज्योति थी। उनका संपूर्ण व्यक्तित्व आत्मा के आलोक में लौट चुका था। वे संपूर्ण जाग्रत महापुरुष थे।

गुरुदेव जी को दुख प्रिय नहीं था। उन्होंने अपने जीवन के संपूर्ण दुखों को मिटा डाला था और करुणा करके जब तक शरीर में प्राण रहा दुखी जीवों के दुख दूर करने के लिए भक्ति, ज्ञान और वैराग्य का उपदेश देते रहे।

गद्य और पद्य की उनकी रचनाएं बड़ी सरल और रोचक हैं। हर विषय के हर पहलू को उन्होंने उदारतापूर्वक समझने का प्रयत्न किया। निर्णय प्रेमी गुरुदेव संसार की महत्त्वपूर्ण रचनाओं में से मधु की तरह सार को संग्रहित करते रहे। उनका जीवन भर भारत भ्रमण करते हुए निरंतर ज्ञान-उपदेश देते रहना... सद्गुरु कबीर और भगवान बुद्ध की याद दिलाता है। इस युग के वे 'कबीर' ही थे। कबीर को उन्होंने जीया।

"मुझ ही ऐसा होय रहो" जी कर...

"ज्यों की त्यों धर दीन्हीं चदरिया।"

वैराग्य सम्पन्न निष्काम गुरुदेव जी अत्यन्त संवेदनशील महापुरुष थे। जीव मात्र के लिए उनके हृदय में करुणा भरी रहती थी। मानव मात्र का वे

सहृदय स्वागत करते थे। दुखी लोगों को जब सुनते थे तो उन्हें पूर्ण आत्मीयता के साथ समझाते थे। उनकी वाणी मधुर, प्रिय एवं शान्ति प्रदान करने वाली थी।

गुरुदेव जी का संपूर्ण व्यक्तित्व अमृत तुल्य तो था ही, पर उनकी आंखें बड़ी ही सुंदर थीं। एक अंग्रेज ने लिखा था, "गांधी जी की आंखें बच्चों जैसी निर्मल, निर्दोष और पवित्र हैं।" गुरुदेव जी के पास मैं जब भी जाती, मुझे लगता गुरुदेवजी की आंखों में मुझे गांधी जी के दर्शन हो रहे हैं। स्थिर, निर्मल, निर्दोष....चमकती उनकी आंखों से प्रेम का निर्झर प्रवाहित होता रहता था। उनके पास कोई भी जाता, प्रवाह रूप बहते उस निर्झर प्रपात में अपने आप को पूर्ण भीगा...पूर्ण शांत और शीतल महसूस करता। स्नेहपूर्ण दर्शन पाने के लिए मेरे पैर स्वाभाविक उनकी ओर गमन कर देते।

उनके स्पर्श से हृदय मीठा स्पंदन महसूस करता था। उन स्पंदनों में से मधुर ध्वनि की एक लय...

भोर जब होने को थी...
लगा कि मेरे प्रिय शिष्य अभी सोये हैं।
खुद उठाया आपने झाड़ू...।
बुहारा कक्ष और आंगन भी।
फिर लगा,
अब मुझे उन्हें जगाना चाहिए...
बिना आहट पहुंचे उनके पास...
सहलाने लगे धीरे-धीरे गाल...
मृदु कोमल स्पर्श उनका...
आंखें खुली तो सुना...।
मधुर एक सुर...।
"तेरे द्वार खड़ा भगवान"
लगा, जैसे कि...समा गया हूं...
गुरुदेव के हृदय की अंतरतम गहराई में...
पाई पूर्णता हृदय ने वहां भक्ति की..
ज्ञान की...प्रेम की और ध्यान की भी...
"बिनु गायन तहवाँ उठे गीत।"

आत्मलीन गुरुदेव जी सभी प्राणधारियों में आत्मा के ही सुंदर रूप को निहारते रहे। जब बोलते थे तो आत्मतत्त्व रूपी मोती बिखेरते थे और जब मौन होते थे तो आत्मा की गहराई में डूबकर पूर्ण शान्त हो जाते थे। वे इस तरह स्वरूप में लीन हो चुके थे कि कोई भी स्थिति उन्हें कभी भी विचलित न कर सकी।

गुरुदेव जी महान धनी थे, इसलिए अपार धन-संपत्ति वे हम सबके लिए छोड़ गये। वे कुछ ऐसे रत्न छोड़ गये हैं जो समाज को प्रकाशित करते रहेंगे।

ऐसे सद्गुरु अंधकार में डूबे संसार को प्रकाशित करने के लिए आते हैं। वे अमर होते हैं। मौत उन्हें छूती नहीं। वे परम तृप्ति को पा चुके होते हैं। मौत वहीं पहुंचती है जहां प्रमाद और मूर्च्छा होती है। आत्मस्थित अप्रमत्त लोग मरकर भी नहीं मरते। वे 'अमृत' होते हैं।

स्वरूपलीन सद्गुरु का संपूर्ण जीवन लयबद्ध सुरों का एक मधुर संगीत था। उनके जीवन का हर सुर हृदय के अंतरतम को छू कर आत्मलीन कर देता है।....वहां सुनायी देती है एक मीठी गूंज... "अपना काम करो।"

कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम, जोटवड
पंचमहाल, गुजरात

किसी ने तुम्हारे लिए कितना ही अनुचित शब्द कहा हो, उसके प्रति अपने मन में क्रोध न रखो। जो जैसा समझ पाता है वह वैसा कहता है। जब समझ में परिवर्तन हो जाता है तब कथन में भी परिवर्तन हो जाता है। तुम्हें विशाल शांतिसागर हो जाना चाहिए। तुम जान-बूझकर किसी को उद्वेगित न करो। यदि तुम अपने लिए किसी का गलत व्यवहार पाओ तो उसमें स्वयं उद्वेगित न होओ। पूर्ण शांति तुम्हारी साधुता है। जिस बात को लेकर उद्वेगित हुआ जाता है वह आज-कल में मर जाती है। *(पूज्य गुरुदेव जी : बसे आनंद अटारी)*

धरा का धरोहर : सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी

गौरव दास

भारतीय अर्वाचीन संत परम्परा में जब-जब संत प्रवर सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी का नाम लिया जायेगा तब-तब एक ऐसे महामानव की खूबसूरत तस्वीर जनमानस के सामने खड़ी हो जाया करेगी, जिसमें सत्य-प्रेम-करुणा के साथ मानवता, सरलता, मृदुता, कोमलता, स्पष्टवादिता, साधुता, शीतलता, सहनशीलता, समरसता, निर्छलता, निर्वैरता, निर्दोषता, निर्भयता, सहजता, दूरदर्शिता, संयमशीलता, श्रमशीलता, कर्मठता, धार्मिकता, आध्यात्मिकता, सामाजिकता आदि कई चेहरे एक साथ दिखाई पड़ेंगे।

जी हां! मैं बात कर रहा हूं अध्यात्म गगन के उस सितारे की जिसकी चमक कभी धूमिल नहीं हो सकती। उनके व्यक्तित्व के जितने पहलू हैं सब अंतहीन वर्णनीय हैं। वे सबसे पहले मनुष्य थे। किसी माता-पिता के लाल थे। फिर वे साधक थे, संत थे, योगी थे, तपस्वी थे, ध्यानी थे, ज्ञानी थे, विद्वान थे, लेखक थे, कवि थे, प्रवक्ता थे, गुरु थे, सद्गुरु थे, व्यवस्थापक थे, अभिभावक थे, शिल्पकार थे, कर्मकरों के पक्षधर थे, दबे-कुचले और पीड़ित लोगों के मसीहा थे, वैद्य और डॉक्टर थे, मूक लोगों की आवाज थे, शोषक वर्ग के विरोधी थे, मानव समानता की वकालत करने वाले अधिवक्ता थे, आलोचक थे, प्रतिपादक थे, नायक थे, संवाहक थे, दार्शनिक थे, मनोविज्ञानी थे, शरीर विज्ञानी थे, सत्यवादी थे, साहसी थे, संयमी थे, परोपकारी थे और अगणित सद्गुणधारी महापुरुष थे। उनके जैसे केवल वे ही थे। उनकी तुलना किसी से नहीं हो सकती है।

26 सितम्बर 2012 के प्रातःकाल की खबर सबके लिए दिल दहला देने वाली थी, लेकिन यह सच थी कि हजारों-लाखों लोग जिनकी आवाज सुनने के लिए मौन हो जाते थे, वे आज स्वयं आर्यमौन होकर चिरनिद्रा में लीन हो गये।

परम पावन कालजयी संत सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी सन् 1950 के पहले तक कबीरपंथ और पारख सिद्धान्त को जानते नहीं थे। 1950 में कबीरपंथ से परिचय हुआ, और 1953 में 21 वर्ष की कच्ची उम्र में सद्गुरु कबीर के ज्ञान-मशाल को लेकर आजीवन तप-त्याग-वैराग्य की कंटीली राह पर चलना स्वीकार कर लिये। तबसे लगातार 60 वर्षों तक कबीर के निष्कलुष दर्शन को आत्मसात कर जन जागरण का बिगुल बजाते रहे। सेवक और सिपाही बनकर समाज की निगरानी करने वाला ऐसा प्रहरी महापुरुष युगों-युगों में कभी आता है।

अत्यन्त निकट और अन्तरंग होकर उनके अन्तर्बाह्य जीवन को देखने-समझने का अवसर मिला। मैं अपने को खुशनसीब मानता हूं कि कुछ दिनों तक उनकी निकटवर्ती सेवा भी करने का सौभाग्य मिला। बड़े विश्वास और दृढ़ता के साथ कह सकता हूं कि उनका जीवन और व्यक्तित्व उस रंगविहीन, पारदर्शी कांच की तरह था जिसमें सब कुछ स्पष्ट रूप से आर-पार दिखता था। कहीं भी दोहरे जीवन की छाया दूर-दूर तक नजर नहीं आती थी। जो भीतर वही बाहर। जो कहना वही करना। जो करना वही जीना। जो जीना वही बताना। ऐसी ज्ञान की व्यावहारिक और आदर्शपूर्ण जिन्दगी के बारे में इतिहास के पन्नों में पढ़ते थे, देखे नहीं थे।

आपकी शताधिक रचनाएं आपके अन्तः और बाह्य जीवन की जीवंत छाया है। अब आपके जीवन को पढ़ने के लिए आपका साहित्य एक सशक्त पाठशाला

होगा, जिसमें आपके कर्तृत्व एवं व्यक्तित्व पर शोध-खोज करने वालों को नया आयाम मिलेगा।

आपका साधनामय जीवन अपने आप में एक प्रयोगशाला था। आप कहा करते थे कि ज्ञान की चर्चा केवल जुबान से कर लेना उधारी का ज्ञान है। ज्ञान तब अपना होता है जब उसका प्रयोग किया जाये। आपने जीवन भर ज्ञान का प्रयोग किया। आपका पूरा जीवन आध्यात्मिक ज्ञान का पर्याय बन गया। आपका ज्ञान और आपका जीवन घुल-मिलकर एक हो गया। तभी तो बौद्ध मत के मूर्धन्य विद्वान भिक्षु भदंत आनन्द कौशल्यायन ने आपसे पहली बार मुलाकात करते हुए कहा था—"यह चलता-फिरता विश्वविद्यालय किधर से आ रहा है?"

आपके त्यागमय जीवन और साधुता की रहनी से प्रभावित होकर आपके साहचर्य-संरक्षण में रहने वाले साधकों की एक जमात है, जिसे आपका संत समाज कहा जाता है। यह एक ऐसा संत समाज है जिसे आपका उपवन कहा जा सकता है। इस उपवन में जितने फूल खिले हैं उन सभी में आपके सद्गुणों की सुवास अन्तर्निहित है। किसी भी फूल को गौर से निहारने पर आपकी छवि परिलक्षित होती है।

कबीर पारख संस्थान की स्थापना, साहित्य रचना, आदर्श संत समाज, सामाजिक संरचना, भारत के बहुत बड़े क्षेत्र में प्रचार-प्रसार, साहित्य का प्रकाशन, वितरण, निश्चित ही आपके बहुआयामी संदेशों को सम्पूर्ण भारत ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व पटल पर स्थापित करेंगे और वह दिन भी आयेगा जब सम्पूर्ण मानव जगत इस महामानव का यशोगान करेगा।

अंत में मैं अपने हृदय की भावांजलि, श्रद्धांजलि, पुष्पांजलि, स्वरांजलि परम पूज्य गुरुदेव जी के चरणों में समर्पित करता हूं जिन्होंने पंच तत्त्व की झीनी चादर 80 वर्ष तक ओढ़कर ज्यों की त्यों बेदाग धर के चले गये। ऐसे महापुरुष के आगमन से ही धरा धन्य होती है और इतिहास धरोहर के रूप में सुरक्षित रखता है।

श्री कबीर आश्रम, किशनगढ़, अजमेर, राजस्थान

मानवता का यह भव्य रूप

जो देश जाति मत पंथ लिंग, सब भेद-भाव से हो अलिप्त।
मद द्वेष कलह ममता ईर्ष्या, माया में न किंचित प्रलिप्तû
जो सबको देता प्यार सदा, लखता सब में अपना स्वरूप।
मानवता का यह भव्य रूपû 1û

जिनकी दृष्टी में सनक-सनन्दन, बुद्ध व्यास वो महावीर।
ईसा मूसा हजरत रसूल, वो राम कृष्ण तुलसी कबीरû
ऋषि दयानन्द या अन्य जगत के, संत सभी श्रद्धेय रूप।
मानवता का यह भव्य रूपû 2û

जो गीता वेद कुरान बाइबिल, सभी का है आदर करता।
पर दो-दो=चार न्याय करता, दो-दो=दस कभी न अनुसरताû
निष्पक्ष सभी पर एक दृष्टि, सब अपने प्रिय-यह मति अनूप।
मानवता का यह भव्य रूपû 3û

(पूज्य गुरुदेव जी : हृदय के गीत)

तेरा तुझको सौंपता

वीरेन्द्र दास

परम पूज्य गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी ज्ञान, विवेक, वैराग्य से संपन्न व्यक्तित्व के धनी थे। तभी तो वे अपने इतने विरक्त शिष्यों को, साध्वियों को, भक्तों को अपना (ज्ञान, विवेक, वैराग्य) धन बांटते रहे। उनका यह धन कभी घटा नहीं, कभी खत्म नहीं हुआ, अपितु जितना बांटते रहे उतना ही बढ़ता रहा। वे अपनी कथनी, करनी और रहनी से हर क्षण ज्ञान-धन उड़ेलते रहे हैं जितना जो ले सके उतना ही अच्छा है। वे इतने उदार थे कि कोई भी क्षण ऐसा नहीं था कि उनके जीवन से ज्ञान-धन निःसृत न होता हो, क्योंकि ज्ञान ही उनका जीवन था, वे ज्ञानमय थे।

हीरे के तराशने वाले उसके छप्पन पहल बनाते हैं और हर पहल में एक विशेष चमक देते हैं लेकिन हमें तराशने वाले सद्गुरुदेव के सम्बन्ध में हम क्या कहें कि उनके कितने पहल थे। गुरुदेव जी कहते थे, इस संसार में जड़-चेतन दोनों अनादि तत्त्व हैं। तुम चेतन हो और तुम्हारा शरीर जड़ है। चेतन स्थिर होता है, अपरिवर्तनशील, एकरस होता है। लेकिन जड़ तत्त्व चलायमान हैं, बनते हैं, बिगड़ते हैं। तुम्हारा शरीर जन्म से ही खोने लगा है। तुम्हारा बचपन का शरीर अभी कहां है, कुमार-किशोरावस्था का शरीर कहां है, जवानी का शरीर कहां है—सब चेतन की उपस्थिति में ही अपनी आंखों के सामने बदल गये और एक समय आता है कि हम स्वयं अपनी वृद्धावस्था, मरणासन्न अवस्था देखते हैं, पर देखने वाला मैं वही रहता हूं। 'मैं' केन्द्र में है और 'शरीर' परिधि में। शरीर 'मैं' तत्त्व का चक्कर काटता हुआ निरन्तर गिरगिट की तरह रंग बदलता रहता है। यही जड़ तत्त्वों की विशेषता है।

परम पूज्य गुरुदेव जी हमेशा साक्षी भाव में ही जीने वाले थे। उनके सामने न जाने कैसे-कैसे दृश्य उपस्थित होते थे, उन दृश्यों को देखकर हम (निकट रहने वाले) कभी लोभ में तो कभी मोह में पड़ जाने की स्थिति अपने अन्दर अनुभव करते थे, लेकिन गुरुदेव जी के लिए तो वे सारे दृश्य बादल की तरह बदलते हुए नजर आते थे, उनमें कुछ सार नहीं दिखाई देता था कि उनके प्रति मन में कुछ आकर्षण पैदा हो, बल्कि विजाति हैं, मिले हैं, बिछुड़ जायेंगे यही भाव हमेशा बना रहता था। गुरुदेव जी ने वह धन पाया था जो उनका स्वयं का था तो भला वे उस आत्मधन को कैसे छोड़ देते, बल्कि वह धन कभी न छूटे, ऐसा विचार कर उन्होंने उसके प्रति मोह बना लिया, ऐसा मोह कि कभी छूटे ही न! सच कहें तो गुरुदेव जी असली मोही थे। ऐसा मोही कभी, कहीं देखने को नहीं मिलता है। गुरुदेव जी से मैंने पूछा—गुरुदेव जी! प्राणी, पदार्थ तथा परिस्थितियों के बीच किस तरह जीया जाये कि हम उनमें मोह न बना सकें और उनके साथ बने भी रहें? गुरुदेव जी ने कहा—देखो बेटा! इसी संसार में वे भी रहते रहे हैं, अभी हैं तथा आगे भी रहेंगे, जिन्हें हम महापुरुष कहते हैं। और हम लोग भी हैं। उन्हीं प्राणी-पदार्थ तथा परिस्थितियों का उपयोग वे भी करते हैं और हम भी। लेकिन हम उन्हीं प्राणी, पदार्थ तथा परिस्थितियों में अपने को उलझा लिया करते हैं—तनाव, विवाद, लड़ाई-झगड़े, राग-द्वेषादि में पड़कर अशांत हो जाया करते हैं। पर महापुरुष उन्हें जीवन-निर्वाह की सामग्री मानते हैं

और वैसा ही उनका प्रयोग करते हैं, जिससे केवल उनका निर्वाह हो जाये। वे निर्वाह लेते हुए उनसे अपने लिए कोई बंधन नहीं बनाते हैं, बल्कि उन्हें जीवन-निर्वाह की औषध रूप मानते हैं और उसी रूप में उनका सेवन कर तृप्त भी रहते हैं।

पर हम उन्हें जीवन-निर्वाह की सामग्री नहीं मानकर भोग की सामग्री मानते हैं और वैसा ही उनका उपभोग भी करते हैं तो रोग तो होगा ही, हम रोगी होंगे ही, हमें रोगी होने से भला कौन बचा सकता है। बेटा! इन बातों का ध्यान रखना और अपने कल्याण के लिए प्राप्त प्राणी, पदार्थ तथा परिस्थितियों को निर्वाह की सामग्री मानकर उनसे केवल निर्वाह ही लेना। उनका प्रयोग वाह! वाह! के लिए कभी नहीं करना, अन्यथा लोभ-मोह के दलदल में फंस जाओगे, जीवन भर फटफटाते रह जाओगे और तुम्हारे लिए यहां आना (साधना मार्ग में) ऐसा न हो जाये कि आया था हरि भजन को, ओटन लगे कपास। अतः सावधान!

गुरुदेव जी से मैंने पूछा—गुरुदेव जी! आप अपने इतने विरक्त शिष्यों के बीच रहते हैं, अपनी शांति किस प्रकार बनाये रखते हैं, क्योंकि आपसे कभी कोई किसी के प्रति शिकायत लेकर आता है कि अमुक ने मुझे ऐसा कहा, बहुत बुरा लगा, आप उन्हें समझा दें। इसी प्रकार अन्य साधक कोई शिकायत लेकर आता है।

गुरुदेव जी ने कहा—बेटा! मैं सबकी बातें बड़े प्रेम से सुनकर उन्हें पूरा-पूरा संतोष देता हूं ताकि वे उन जलाने वाली बातों से पूर्णतः खाली हो जायें और आराम महसूस करें और मैं भी स्वयं संतुष्ट रहता हूं। समय आता है समस्या का समाधान अपने आप हो जाता है। ज्ञान से, विवेक से, वैराग्य से विचारों में परिवर्तन होता रहता है। बस!

परम पूज्य गुरुदेव जी का चित्त व्यवहार-परमार्थ दोनों दिशाओं के लिए एक समान सुलझा हुआ था। उनका व्यावहारिक जीवन जितना साफ-सुथरा था, उतना ही आध्यात्मिक जीवन भी। गुरुदेव जी अध्यात्म की उलझी हुई व्याख्याओं को भी सुलझाकर लोगों के बीच अपनी बात रखने में सफल रहे हैं। वे गूढ़-से-गूढ़ बात को भी सहज और सरल ढंग से बताने में बड़े प्रवीण थे। लोग बाहर की ओर ईश्वर-परमात्मा, खुदा-गॉड, देवी-देवतादि निहारते थे, लेकिन सद्गुरु देव का इशारा अंतरात्मा की ओर ही था। वे स्वयं आत्मवेत्ता थे और दूसरों को भी आत्मा ही परमात्मा, खुदा, गॉड है—इस तत्त्व का बोध देते थे।

मैं भी कम नहीं उलझा था, लेकिन समय से गुरुदेव जी के दर्शन हुए, तत्पश्चात कल्याण हेतु उनके चरणों में समर्पण हुआ। गुरुदेव जी का दिशा-निर्देश मिलता रहा, धीरे-धीरे मेरे उलझे हुए चित्त में परिवर्तन घटित होने लगा। मुझे भी अब विश्वास होने लगा कि चित्त सुलझेगा। मैं पूज्य गुरुदेव जी को उन्हीं के शोधे हुए अपने चित्त से शत-शत नमन करता हूं। मुझे दृढ़ विश्वास है कि उनके बताये हुए पथ पर चलकर मैं अपना चित्त पूरा-का-पूरा निर्मल कर सकता हूं।

मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपता, क्या लागत है मोर॥

कबीर पारख संस्थान, प्रीतमनगर, इलाहाबाद

ऐ काजी पण्डित सुन लो, जो राम रहीम तुम्हारे।
घट घट में बोल रहे हैं, इनको दुख मत दो प्यारे॥
दिल दया रहम को तज कर, संध्या नमाज खाली है।
प्राणी से वैर बना कर, ईश्वर पूजा जाली है॥
सब पूजा धर्म कर्म है, निर्मल मन वाणी काया।
मानव में प्रेम प्रसारण, अरु जीव मात्र पर दाया॥

(पूज्य गुरुदेव जी : हृदय के गीत)

तेरा दीद ही मेरा अरमान है

सौम्येन्द्र दास

प्राणी का शरीर पके आम की तरह है। कब टूटकर गिर जाये कहा नहीं जा सकता। बस, डाल से लगे हैं और स्थिति करीब गिर जाने की है।

मैंने जिंदगी में कुछ अपनों और परायों की शवयात्रा देखी है, कुछ अपनों और परायों की शोकसभा में श्रद्धांजलि समर्पित की है, लेकिन आज जिनकी शवयात्रा देखी है, आज जिनकी श्रद्धांजलि है उस महापुरुष के चले जाने से जिंदगी सहम-सी गयी है। यह मेरी जिंदगी का सबसे आश्चर्यचकित एवं दिल को दहला देने वाला दिन है। कभी लगता है कि कैसे झेल पायेंगे इन क्षणों को, उनकी अनुपस्थिति को।

वे एक ऐसे इंसान थे जिनके बगैर जिंदगी अधूरी-सी लगती है। सारी खुशियां अधूरी हैं। उनकी यादों के आगोश में दिल डूबता जाता है।

समय तो रुकता नहीं मगर क्या करें कुछ यूं हुआ
पूरे नगर में बरसात हुई, अपने घर को छोड़कर।

गुरु-शिष्य के बीच में श्रद्धा-भक्ति की दीवानगी भी अजीब चीज होती है। इसीलिए तो उनके शरीरांत के बाद उनका एक शिष्य कहां गया पता नहीं चला। हालांकि वे कहीं जिंदा हैं यह कुछ दिनों के बाद पता चला। उनकी भावना देखिए—वे हैं तो पूरी दुनिया है, वे नहीं तो कुछ भी नहीं। वे थे तो जीवन सहज और सरल लगता था। अब वे जाते-जाते आंखों में आंसू दे गये। कबीर साहेब की साखी है—

ऐसी करनी कर चलें हम हंसे जग रोये।
करम ऐसा किया तूने भुलाया जा नहीं सकता।

जब आप बीजक व्याख्या लिखते थे तब की बात है, आपने लिखा है कि मुझे समाधि-सुख के बाद कबीर साहेब की वाणी एवं अन्य वैराग्यप्रद ग्रंथों के अध्ययन में सुख लगता है। मैं तो असली सुख क्या है यह भी नहीं जानता था। गांव में हर साल एक रात के लिए संतों का आना होता था। मैं भण्डारा खा लेना ही साधुओं का सत्संग समझता था। मैं तो मुक्ति-साधना से सर्वथा अनजान था। जब आपकी 'सपने सोया मानवा' पुस्तिका मिली तो वह जीवन को झकझोर कर जगा दी और तब कुछ जीवन समझ में आया और साथ ही मेरी शंकाओं का समाधान होता चला गया। लगा जैसी मेरी प्यास थी वैसा ही होता जा रहा है। फिर तो आपसे दोस्ती ही हो गयी, और आपने बीजक व्याख्या दूसरा भाग पढ़ने को दिया। फिर कुछ दिनों में आपके चरणों में आ गया। आपने कहा था—मेरी 'सपने सोया मानवा' पुस्तिका पढ़कर जाग गया। मैं मौन रहा। बहते हुए को यान मिल जाये ऐसे आप मिले। आप पूर्ण मुक्त थे, तरण तारण, हरन सब दूषन वाले थे। आप मुक्तिपद में थे और साथ के लोगों को भी बोध दे रहे थे।

आप प्रायः कहा करते थे शरीर तो छुटा-छुटाया है। सभी शरीर छोड़कर जीयो। आपके जीवन में हमें यही देखने को भी मिला। जब मैं आपके चरण-शरण में आया तब आपको साइटिका हुई थी। उन दिनों पलारी में कार्यक्रम था। तीन दिन लगातार दर्द बढ़ता रहा। दवाइयां तो चल रही थीं, लेकिन असर नहीं दिखा रही थीं। डण्डा के सहारे चलते थे, बूढ़े की तरह झुककर। किसी तरह गाड़ी में बैठकर मंच तक जाते, लेकिन जब

बोलना शुरू करते तो नहीं लगता था कि इस आदमी को तकलीफ भी है। बंदगी के समय बताते थे कि कल से भी ज्यादा आज दर्द बढ़ा है। ऐसा ही तीनों दिन तक बढ़ता रहा, लेकिन होठों की मुस्कान, चेहरे की प्रसन्नता में कमी नहीं आयी। आप एकरस थे और लोगों का मिलना भी बरकरार था। यह सबको सहते-मुस्कुराते आपका पूरा जीवन व्यक्त करता है कि आप देह-मुक्त थे।

गुरुदेव जी शांत, गंभीर, मौनी तो थे ही साथ ही अपने शिष्यों में कुछ मीठा विनोद भी कर लेते थे। इसी दर्द के दरमियान आपने कहा था—देखो, आज तीसरा दिन है, दवाई भी ले रहा हूं, फिर भी दर्द बढ़ता ही जा रहा है। गुरुक्षेम से कहता हूं भूत-बाधा लगी है। दर्द कम नहीं हो रहा है, बैगा से झाड़-फूंक करवाओ तो दर्द कम हो, लेकिन तुम लोग तो मानते ही नहीं हो। मैं तो नया था आपकी तकलीफें देखकर रोना आता था। इसी बीच आपने मेरे लिए कहा था अभी श्याम गर्भ में है। अगर मेरा शरीर छुट जाय तो भी इसे दुख नहीं होगा।

आप हमेशा प्रसन्न मुद्रा में रहते थे। इसी विनोदी भाव पर मुहम्मदनगर (उ. प्र.) में अपना संस्मरण सुना रहे थे कि पहले एक गांव से दूसरे गांव प्रायः सुबह पैदल चलना होता था, तो मैंने समाज-जमात के संतों से कहा कि तुम लोग यहीं शौच करोगे कि रास्ते में करोगे? कुछ लोग कहे यहीं करेंगे, कुछ लोग कहे रास्ते में करेंगे। आपने हंसते हुए कहा—दोनों गलत। न कोई यहां टट्टी करेगा न रास्ते में, बल्कि दूर जाकर खेत-मैदान में करेगा। इस प्रकार वे विनोद भी कर लेते थे और सागर के समान शांत-गंभीर भी रहते थे। इसीलिए तो कहता हूं—

समंदर से पूछो लहरें क्या होती हैं,
मेरे सद्गुरु से पूछो मुक्ति क्या होती है?

× × ×

सद्गुरु हमसे रीझकर कहा एक प्रसंग।
बरसा बादल प्रेम का भीज गया सब अंग॥

× × ×

कोई फूल बरसाये या अंगारे,
संत को तो सब हैं प्यारे॥

अब फूल से ही पूछना कि क्या उसने कभी भेद किया है खुशबू लुटाने में? अरे, वह तो डाल से जुदा कर देने वाले को भी महका देता है। सच्चे संत का जीवन प्रेम का ही होता है। आप कहा करते थे—प्रेम में स्वर्ग है और अनासक्ति में मोक्ष है।

इतिहास गवाह है, बड़े-बड़े विद्वान, ऋषि-मुनि, संत-फकीरों को भी कष्ट दिया गया। ईसा को तो क्रास पर ही लटका दिया, फिर भी वे प्रेम का ही संदेश दिये। और ऐश्वर्य भी संतों को ही जाता है। वस्तुतः दोनों में सच्चे संत-सद्गुरु विचलित नहीं होते हैं।

वैसे ये चीजें जहां रहो, घर, परिवार, समाज, छोटे-बड़े रूपों में जीवन में आ ही जाती हैं। जिसे आम आदमी नहीं संभाल पाते और उलझकर जीते-मरते हैं। सद्गुरु तो आत्मलीन हैं। उनकी ऊंची स्थिति है। वे अच्छी तरह जानते हैं कि क्षमा मांगना और क्षमा करना ही शांति का रास्ता है। इतने वर्षों में हमारे द्वारा कितनी गलतियां हुईं, जिन्हें आप निर्विकार भाव से सहे और अपनी शरण में ही जगह दिये। आप कहा करते थे कि मुझे भरी सभा में गाली मिली और मैंने एक शब्द भी उसको नहीं छुआ। फलतः मैं कभी अशांत नहीं हुआ। आप भगवान शंकर की तरह अपने जीवन में मिले कटु-से-कटु शब्दों के विष को पी गये। भगवान शंकर तो एक ही बार विष पीये, आप तो जीवन भर पीते रहे। आप सच्चे अर्थों में हमारे सद्गुरु थे। गलती होने पर आप अपने शिष्यों को बैठाकर प्रेम से समझाते थे न कि उन्हें भगाते थे। अपनी शरण में, सेवा में रखते थे, अपनी गोद में बैठाते थे। कबीर साहेब की यह पंक्ति आपका जीवन था, 'निंदक नियरे राखिये, आंगन कुटी

छवाय।' आपकी करुणा, उदारता, प्रेम सबको बराबर मिला है। आप धन को धन नहीं जन को धन मानते थे। एक नया साधक, जब उसका हाथ टूटा तो आपसे उसने बताया कि साहेब जी 2000 रुपया लगा, तब आपने कहा तुम्हारे लिए 2000 क्या है, दो लाख लगा सकते हैं। आप बराबर कहते थे धन जन के लिए है। उसे विवेकपूर्वक खर्च करो। हे मेरे सद्गुरु! आप पर अंगारे बरसाने वाले भी आपके दर्शन के लिए चल पड़ते हैं।

आपकी निष्पक्षता को जानते हुए भी किसी ने विरोध किया तो किसी ने आलोचनात्मक पुस्तकें लिखीं, इस पर भी आप अपना काम करते रहे। पहले केवल भण्डारा और कुछ लोगों द्वारा शंका-समाधान करना वह भी किसी आंगन-घर में बैठकर इसी को सत्संग हो गया समझते थे। इस रूप को आपने बदल दिया और पण्डाल लगाकर सामूहिक रूप से सत्संग होने लगा, जिससे सबको लाभ मिला और आज भव्य रूप में जन-जन तक ज्ञान का प्रचार-प्रसार हो रहा है। इतना ही नहीं, एक नये युग का निर्माण हुआ। आपको ही केन्द्र में रखकर, कुछ ब्रह्मचारिणी आश्रम भी बने। जहां आपके द्वारा दिये हुए नियमों पर चलकर साध्वियां अपना कल्याण और धर्म का प्रचार-प्रसार कर रही हैं।

हे गुरुदेव! आप नियम के बड़े पक्के रहे। ब्रह्मचारिणी आश्रम में कार्यक्रम तो दिये लेकिन आसन ग्रहण कभी नहीं किये और यही उन लोगों को भी नियम दिये थे कि इस ब्रह्मचारिणी आश्रम में पुरुष नाम का जंतु भी नहीं होना चाहिए और जो भी अधिकारी बने तुम्हारे ही बीच के हों।

कबीरपंथ में ध्यान करना और अनेक जगहों पर ध्यान-शिविर लगाना आप ही के द्वारा हुआ। कबीर साहेब की वाणियों पर एवं निर्गुणी धारा के अन्य संतों पर आपने तो लिखा ही साथ ही अन्य काव्यों पर भी लिखा। उनकी कल्याणकारी बातों को सबके सामने रखा और झूठी बातों की समीक्षा किया। रामायण पर 'रामायण रहस्य', वेदों पर 'वेद क्या कहते हैं?', गीता पर 'गीतासार', उपनिषदों पर 'उपनिषद् सौरभ', योग दर्शन पर 'योग दर्शन' परख भाष्य, जो सभी के लिए हितकर हुए। इनके लिखे जाने पर किसी ने पण्डिताई बुद्धि बताया तो किसी ने कड़ी आलोचना की, फिर भी आप निर्भीक होकर लिखते रहे। लोग अच्छा-बुरा कहते रहे और जीवन के अंतिम छोर पर हजार पृष्ठों वाली 'महाभारत मीमांसा' दे गये।

आप मोक्ष की बातों पर लिखने और कहने को महत्त्व नहीं देते थे किन्तु उस पर चलने को महत्त्व देते थे। आप में वह हुनर था कि काजर की कोठरी रूपी संसार में रहकर बेदाग निकले। एक बड़े समाज के अनुशास्ता-गुरु रहकर भी सदैव आत्मस्थिति में विराजमान रहे और अपने शिष्यों को भी यह कला सिखाते रहे। हे सद्गुरु! आपके द्वारा जो बोध मिला है वही आज हमें काम दे रहा है। निश्चित है इस पर चलकर हम सब गुरुभाई संन्यास के विकेट पर यादगार पारी खेलकर ही लौटेंगे। साधु वेष देते समय जो आप बताते हैं कि संन्यास के मार्ग पर चलकर ही मुक्तिदशा को प्राप्त करते हैं, यही हमारा प्रयास होगा। आपका जीवन हम सबके लिए मोक्ष शास्त्र हो गया है। आपके प्रेम और अनुशासन द्वारा ही समाज में एकता, प्रेम, उदारता और सहयोग की भावना उभर कर आयी है।

सबके दिल में यही तमन्ना है—

"तेरा दीद ही मेरा अरमान है,
जिंदगी के लिए और क्या चाहिए।
तेरी राह की खाक हो जाऊंगा,
बंदगी के लिए और क्या चाहिए।"

इसी भाव के साथ आपके पावन चरणों में श्रद्धा समर्पित करते हुए त्रयबार साहेब बंदगी।

कबीर पारख संस्थान
प्रीतमनगर, इलाहाबाद

श्रद्धेय संत श्री अभिलाष साहेब : संस्मरण

श्री पारसनाथ 'जिज्ञासु'

संत श्री अभिलाष साहेब कबीरपंथ की एक बहुत महत्त्वपूर्ण हस्ती रहे हैं। उनके ज्ञान और दर्शन की आभा ऐसी रही है कि उनकी वाणी सुनने के बाद कोई भी व्यक्ति उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था। उनकी सहज मुस्कान, सरल व्यक्तित्व, मृदु भाषा और आत्मिक व्यवहार इतने प्रभावशाली थे कि उनसे पहली मुलाकात पर भी ऐसा लगता था कि वर्षों की जान-पहचान है। आज बड़े दुख की बात है कि अब वे हमारे बीच नहीं हैं। 'साहेब' मेरे लिए उन चुनिन्दा विभूतियों में से रहे हैं जिनके व्यक्तित्व ने मेरे ऊपर गहरा प्रभाव डाला है। वे आज के युग में कबीर के आधुनिक स्वरूप थे। कबीर विचारधारा के प्रचार-प्रसार में उनके द्वारा किये गये प्रयास और विशाल साहित्य लेखन के लिए यह समाज सदैव उनका ऋणी रहेगा। मेरे हृदय में उनके लिए अपार श्रद्धा है जो हमेशा रहेगी। भले ही आज वे सशरीर हमारे बीच नहीं हैं, परन्तु उनकी वाणी और ज्ञान हमेशा हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

मेरा परिवार मूल रूप से कबीरपंथ से जुड़ा रहा है। बाल्य अवस्था से ही मुझे कबीरपंथी संतों का सान्निध्य मिलता रहा है। आज से 25 वर्ष पूर्व ऐसे ही एक कबीरपंथी संत श्रद्धेय जंगली साहेब के द्वारा मुझे श्रद्धेय संत श्री अभिलाष साहेब की ख्याति के बारे में जानकारी मिली थी। उन्होंने बताया था कि संत श्री अभिलाष साहेब कबीरपंथ के बहुत बड़े संत हैं और कबीर पर उन्होंने बहुत सारे साहित्य लिखे हैं, उनका आश्रम अयोध्या में है। उन्होंने यह भी कहा था कि जब आप कभी अयोध्या जायें तो उनसे जरूर मिलें। संयोग से जुलाई 1987 में मेरी पोस्टिंग, डिप्टी डायरेक्टर, समाज कल्याण, फैजाबाद मण्डल के पद पर हो गयी। 'साहेब' के बारे में संत जंगली साहेब द्वारा बतायी गयी बात मुझे याद थी। जैसा मैंने उनके बारे में सुन रखा था, उसके कारण मुझे श्रद्धेय श्री अभिलाष साहेब से मिलने की प्रबल इच्छा थी। समय मिलते ही मैं कबीर मठ जियनपुर, अयोध्या गया परन्तु वहां साहेब से मुलाकात नहीं हो पायी। वहां पर उपस्थित संतों ने बताया कि साहेब आजकल प्रीतमनगर, इलाहाबाद के आश्रम में रहते हैं। यह जानकर मुझे बहुत निराशा हुई। मैंने जब उनके द्वारा लिखे हुए साहित्य के बारे में पूछा तो वहां पर संतों ने बहुत सारी पुस्तकें दिखाई, जिसमें से मैंने रामायण रहस्य, कबीर दर्शन और बीजक आदि कुछ किताबें ही पढ़ने के लिए लिया। उन किताबों को पढ़ने के बाद मैं उनसे बहुत प्रभावित हुआ। जब मैं अपर जिलाधिकारी, जालौन के पद पर कार्यरत था, उस समय एक केस की पैरवी के सिलसिले में हाईकोर्ट इलाहाबाद गया था। उस समय भी मैं प्रीतमनगर इलाहाबाद साहेब से मिलने गया था परन्तु वहां भी उनसे मुलाकात नहीं हो सकी, पता चला कि वे इस समय भ्रमण कार्यक्रम पर दूसरे प्रदेश में हैं।

दोबारा जब मेरी पोस्टिंग अपर जिलाधिकारी परियोजना, फैजाबाद के पद पर हुई उस समय मेरी मुलाकात संत राम प्रसाद, ब्लाक प्रमुख विकास खण्ड

सोहावल से हुई। बातचीत के दौरान पता चला वे साहेब के शिष्य हैं। उन्होंने बताया कि साहेब एक भंडारे के कार्यक्रम में फैजाबाद में एक गांव में आनेवाले हैं, वहां उनसे मुलाकात हो सकती है। यह जानकर मुझे बहुत खुशी हुई और मैं बड़ी उत्सुकता के साथ उनसे मिलने उस गांव में पहुंचा। वहां पहली बार साहेब से मेरी मुलाकात हुई। मैंने साहेब बन्दगी किया और अपना परिचय देकर उन्हीं के सान्निध्य में बैठकर अपने आने का प्रयोजन बताया। साहेब से मिलकर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे मैं अपने किसी पूर्व परिचित संत से मिल रहा हूं। इस पहली मुलाकात में मैं साहेब के व्यक्तित्व से प्रभावित हुआ। उनसे मिलने के बाद कुछ बातों पर मैंने अपनी जिज्ञासा को शान्त किया और भोजनोपरांत वहां से चला आया। इतने अल्प समय के मुलाकात से मुझे संतोष नहीं हुआ था।

यह संयोग ही था कि मई 2002 में मेरी पोस्टिंग मुख्य विकास अधिकारी, इलाहाबाद के पद पर हो गयी। पहली बार मैं अपने परियोजना निदेशक के साथ साहेब से मिलने कबीर आश्रम पहुंचा। वर्षावास होने के कारण साहेब आश्रम पर ही थे इसलिए उनसे मेरी मुलाकात हो गयी। मैंने अपने बारे में उन्हें जानकारी दी तो वे भी बड़े खुश हुए। कुछ देर तक बातचीत के बाद जब मैं चलने को हुआ तो उन्होंने मुझे 'बीजक पारख प्रबोधिनी व्याख्या' जो दो भाग में थी, पढ़ने के लिए दिया और कहा, "यह मेरा बीजक पर भाष्य है इसको जरूर पढ़ियेगा।" जब मैंने इन पुस्तकों का मूल्य देना चाहा तो उन्होंने बड़े स्नेह से कहा—"इन पुस्तकों को आप पढ़ डालें, यही इनका मूल्य है।" इसके बाद आश्रम पर मेरा आना-जाना आरम्भ हो गया। मिलते-जुलते मैं साहेब के इतना करीब आ गया कि अपने किसी भी शंका-समाधान के लिए उनसे बेझिझक प्रश्न पूछ सकता था। वे मेरे प्रश्नों को बड़े धैर्य से सुनते और उनका समाधान बड़े ही सहज भाव से करते थे।

एक बार मैं सपरिवार कबीर आश्रम में उनसे मिलने गया था। प्रसंगवश मैंने पूछ ही लिया कि आप ब्राह्मण कुल में पैदा होकर भी कबीर विचारधारा से प्रभावित कैसे हो गये। जबकि कबीर साहेब ने अपने बीजक में ब्राह्मणवाद की कटु आलोचना की है। उस पर वे गंभीर हो गये और कुछ देर चुप रहने के बाद अपने जीवन के शुरुआती दिनों से लेकर कबीरपंथ में दीक्षित होने के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि संतों के वचन खासकर श्री रामसूरत साहेब की वाणी सुनकर मैं बहुत प्रभावित हुआ था, बाद में मैं उन्हीं का शिष्य हो गया। तब से लेकर आज तक मैं निरंतर कबीर विचारधारा के प्रचार व प्रसार में लगा हूं। उन्होंने यह भी बताया था कि वे मात्र कक्षा दो तक पढ़े हैं। मुझे यह सुनकर आश्चर्य हुआ। जब मैंने पूछा कि संस्कृत की इतनी अच्छी जानकारी आपको कैसे हुई तो उन्होंने बताया कि यह सब मैंने स्वाध्याय से सीखा और जाना है। चर्चा के दौरान उन्होंने यह भी कहा कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल मेरे सम्बन्धी थे। वे हिन्दी साहित्य के विद्वान थे परन्तु उन्होंने कबीर साहेब में कोई गुण नहीं पाया और उलटे उनकी आलोचना ही किया है। इस बात को लेकर साहेब ने अपनी लिखी हुई पुस्तक 'कबीर पर शुक्ल की और मेरी दृष्टि' मुझे उपलब्ध करायी और कहा कि इसको जरूर पढ़ियेगा। जब मैंने इस पुस्तक को पढ़ा तो मुझे मालूम हुआ कि वास्तव में आपकी सोच तार्किक और वैज्ञानिक है और आप धार्मिक रूढ़ियों से बहुत ऊपर उठ चुके हैं।

सेवानिवृत्ति के बाद मैं गोरखपुर में स्थायी निवास कर रहा हूं। इस बीच साहेब का जब-जब गोरखपुर आना हुआ तब-तब मुझे उनके दर्शन करने का अवसर मिलता रहा। अन्तिम बार नवम्बर 2011 में साहेब के आने के कार्यक्रम की जानकारी मुझे कार्यक्रम के आयोजक श्री रामनरेश चौबे द्वारा दी गयी थी। उस कार्यक्रम में काफी दिनों बाद साहेब से मेरी मुलाकात हो रही थी। जब मैं साहेब से मिलने उनके पास पहुंचा और उनका चरण स्पर्श करना चाहा तो उन्होंने उठकर मेरे दोनों

हाथों को पकड़ लिया। जब हम लोग आमने-सामने हुए तब उन्होंने मुझे पहचान लिया और बड़े आश्चर्य तथा आत्मीयता के साथ मुस्कुराते हुए मेरा कुशलक्षेम पूछा। प्रसाद के रूप में छोहारा खिलाकर पानी पिलाया। मैंने बातचीत के दौरान उनसे पूछा कि आपकी क्या आयु है? उन्होंने बताया कि 79वें साल में चल रहा हूं। उस पर मैंने कहा कि आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। इस पर उन्होंने तुरंत जवाब दिया कि 'आप भी तो काफी ठीक हैं।' मैं लगातार तीनों दिन संत समागम के कार्य में शामिल रहा। अबकी बार न जाने क्या बात थी, मैं उनसे सर्वाधिक प्रभावित रहा। इस बार उनका प्रवचन इतना मृदु लेकिन दृढ़ था जैसे उनके रूप में कबीर बोल रहे हों। अंतिम दिन धार्मिक पाखण्ड और अंधविश्वास पर बोलते हुए उन्होंने कहा था कि "यह सब मिथ्या और बकवास है, सब ठगी का धन्धा है।" उनके इन शब्दों से मैं बहुत प्रभावित हुआ। तीसरे दिन के कार्यक्रम की समाप्ति पर मेरे द्वारा ही आभार व्यक्त किया गया था।

साहेब से मेरी अन्तिम मुलाकात दिनांक 5 दिसम्बर, 2011 को गोरखपुर रेलवे स्टेशन पर स्टेशन अधीक्षक के विश्राम कक्ष में हुई थी। मेरे साथ मेरा छोटा पुत्र भी था। वह भी साहेब पर बहुत श्रद्धा रखता है। उस समय वे जनपद पडरौना के कार्यक्रम से वापस आकर इलाहाबाद जाने की तैयारी में थे। उनके साथ संत मण्डली भी थी जिसमें मुख्य रूप से संत धर्मेन्द्र साहेब, संत देवेन्द्र साहेब सहित करीब सात-आठ संत जन उपस्थित थे। वहां पर कुछ श्रद्धालु भी उनसे मिलने आये थे। मुलाकात के दौरान उनसे कुछ बिन्दुओं पर बात भी हुई थी। संयोग से न जाने क्यों मैंने उनसे यह पूछ लिया कि अब आपकी आयु अधिक हो चुकी है इसलिए आपके बाद कौन आपका उत्तराधिकारी होगा? इस पर उन्होंने बड़े सहज भाव से कहा था कि हमारे न रहने पर जो योग्य होगा वह जिम्मेदारी सम्भाल लेगा। यह बात पूछ कर मैं मन ही मन पश्चाताप भी कर रहा था कि कहीं उनकी भावनाओं को ठेस तो नहीं पहुंची होगी? अन्त में इलाहाबाद जाने के लिए चौरीचौरा एक्सप्रेस प्लेटफार्म पर लग गयी थी। हम सभी उनके साथ ट्रेन की ओर प्लेटफार्म पर चल दिये। चलते-चलते भी वे सभी से बात करते जा रहे थे। साहेब के लिए एसी-2 कोच में बर्थ आरक्षित थी। मेरे पुत्र व उनके सहायक उन्हें कोच में बैठाने के लिए बर्थ खोजने व सामान और बिस्तर लगाने की व्यवस्था कर रहे थे। सब व्यवस्थित हो जाने पर साहेब कोच में चढ़ गये, परन्तु वे अन्दर न जाकर दरवाजे पर ही खड़े रहे, चूंकि हम लोग उन्हें 'सी आफ' करने के लिए प्लेटफार्म पर खड़े थे इसलिए वे भी कोच के दरवाजे का हत्था पकड़कर बाहर हम लोगों से बात करते रहे। इसी बीच उन्होंने मुझसे कहा कि लाओत्ज़े की किताब बुक स्टाल पर बिक रही थी, उसे आपने खरीदा कि नहीं? मैंने कहा कि नहीं, इस पर उन्होंने कहा कि बहुत अच्छी किताब है। लाओत्जे पर मेरा भाष्य है इसे जरूर पढ़िएगा। हमारे बगल में श्री रामनरेश चौबे खड़े थे उन्होंने कहा कि यह किताब मेरे पास है तथा वे इसे मेरे घर पहुंचा देंगे। ट्रेन के छूटने पर मैंने साहेब से उनके स्वास्थ्य की प्रशंसा करते हुए यह पूछा कि आप कौन-सी जड़ी-बूटी खाते हैं? कृपया हमें भी बतायें, जिससे हम लोग भी स्वस्थ रह सकें। उनका हमारे लिए यह अन्तिम संदेश था कि "कम खायें गम खायें। बस, स्वास्थ्य का यही मूल मंत्र है।" इसके बाद ट्रेन हार्न देकर चल पड़ी और हम लोग सर्द हवाओं में निगाहों के ओझल होने तक उन्हें देखते रहे।

वर्षा समाप्त होने के बाद इलाहाबाद जाने और साहेब के दर्शन करने का मेरा कार्यक्रम था। इसी बीच दिनांक 26 सितम्बर को लगभग 10 बजे श्री रामनरेश चौबे द्वारा दूरभाष पर यह खबर दी गयी कि 'साहेब नहीं रहे।' जब मुझे यह खबर मिली, साहेब का माला पहने हुए फोटो मेरे सामने था। फोटो निहारते-निहारते मैं अतीत की यादों में डूब गया...।

राप्तीनगर, गोरखपुर, उ. प्र.

सन्त प्रवर अभिलाष साहेब की अद्भुत परख

श्रीयुत श्रीपति

परम पूज्य श्री अभिलाष साहेब को शत-शत नमन। अभिलाष साहेब से मैं सर्वप्रथम सन् 1998 ई. में कबीर आश्रम इलाहाबाद में मिला। मेरे मिलने का प्रयोजन कबीर 'बीजक' के 112 वें शब्द का अर्थ जानने हेतु था। शब्द इस प्रकार है—

झगरा एक बढ़ो राजाराम, जो निरुवारे सो निर्बान।
ब्रह्म बड़ा कि जहाँ से आया, बेद बड़ा कि जिन्ह उपजाया।
ई मन बड़ा कि जेहि मन माना, राम बड़ा कि रामहिं जाना।
भ्रमि भ्रमि कबिरा फिरे उदास, तीर्थ बड़ा कि तीर्थ का दास॥

मैंने स्पष्ट रूप से उन्हें उक्त आशय बता दिया। वे मुस्कराये। उन्हें यह समझते देर नहीं लगी कि मैं कबीर के गूढ़ रहस्य समझना चाहता था। उन्होंने मुझे कबीर दर्शन और जगन्मीमांसा दिया और कहा कि इनका अध्ययन करना। शब्द 112वें का अर्थ समझाया और कहा कि बीजक व्याख्या दो भागों में कबीर पारख संस्थान में मौजूद है, उसे ले जाकर अध्ययन करें। तब कबीर दर्शन समझ सकेंगे। मैंने बीजक व्याख्या के दोनों भाग भी लिया। टीका के साथ बीजक को पढ़ने से सद्गुरु कबीर साहेब के भाव को मैं कुछ-कुछ समझने लगा। 'बीजक' के भाव समझने के लिए मेरे अन्दर रुचि बढ़ती गयी। संयोग से जून 2003 में नगर आयुक्त, नगर निगम इलाहाबाद के पद पर स्थानान्तरित होकर मैं इलाहाबाद आ गया। समय-समय पर महात्मा अभिलाष साहेब के पास मैं जाता रहा। कुशल-क्षेम पूछने के बाद वे यह प्रश्न अवश्य पूछते थे कि 'बीजक' का अध्ययन चल रहा है कि नहीं। कुछ समय तक मैं कहता रहा कि थोड़ा-थोड़ा पढ़ रहा हूं। उन्होंने मुझे यही कहा कि पूरा बीजक पढ़ो। बार-बार पढ़ोगे तो गूढ़ प्रश्न भी स्पष्ट हो जायेगा। निरन्तर बीजक अध्ययन में मेरी रुचि बढ़ती गयी। पूरा बीजक पढ़ा। इसके साथ ही रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा कबीर के सौ पदों का अनुवाद भी पढ़ा। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने क्षितिमोहन सेन द्वारा कबीर के क्षेपकरूप में प्राप्त सौ पदों का बांगला भाषा में अनुवादित पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद किया है। इसमें बीजक का समूचा एक पद भी नहीं है। परन्तु बीजक की कुछ पंक्तियों से ही रवीन्द्रनाथ टैगोर इतने प्रभावित हुए कि उसका अनुवाद नोबेल पुरस्कार पाने के बाद किया।

कबीर बीजक को बार-बार पढ़ने की इच्छा सदैव मन में रहने लगी। इस भाव बोध को भी महात्मा अभिलाष साहेब के सामने मैंने प्रकट किया। उन्होंने कहा, अध्ययन जारी रखना। जिसे पढ़ा था उसे पुनः व्याख्या के साथ पढ़ने पर सद्गुरु कबीर के भाव की गहराई समझ में आने लगी। अभिलाष साहेब की व्याख्या तथा बीजक की मूल प्रति मैं सदैव अपने पास रखने लगा। यहां तक कि शासकीय यात्रा के दौरान गाड़ी में उक्त किताबें मेरे द्वारा अवश्य रखी जाती थी। इन्हीं दिनों लखनऊ से आजमगढ़ जाते समय बाराबंकी शहर में मेरी गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गयी। गाड़ी चूर-चूर हो गयी। मुझे, मेरे ड्राइवर व अर्दली को चोटें आयीं। यह बात मेरे द्वारा गुरुदेव अभिलाष साहेब को बतायी गयी तो उन्होंने

पूछा चोट तो नहीं आयी। मैंने बताया चोटें तो आयीं। मेरी बीजक व्याख्या पीछे शीशे के पास से फाटक के शीशे से बाहर गिर गयी थी। वे मुस्कुराये। जान गये कि बीजक में मेरी रुचि हो गयी है।

कुछ दिन के बाद पुनः उनसे मिलने इलाहाबाद उनके आश्रम में गया, मिला। सायंकाल संभवतः 5-6 बजे के बीच उनके कक्ष में सामने सामूहिक बंदगी होती थी। उसी समय अपने शिष्यों को समझाते हुए मेरे विषय में कहा "ये श्रीपति भाई साहब हैं। श्रीपति भाई साहब बड़े अधिकारी और सन्त हैं। आप लोग नहीं जानते हैं।" मैं अभिलाष साहेब के मुख से श्रीपति भाई साहब शब्द सुनकर अचम्भित हो गया। इस बात को उस दिन आश्रम में कई संत-भक्तों को मैंने कहा। इसके पूर्व कबीर आश्रम तक जाने वाली नगर निगम की खराब सड़क को बनवाने, कबीर पारख संस्थान को संगम क्षेत्र इलाहाबाद में स्थान दिलाने तथा पारख संस्थान की भूमि के लम्बित मुकदमे के सही तथ्य सम्बन्धित अधिकारी को समझाकर उसका समाधान कराने में मैं अपना कर्तव्य समझा था। मुझे अभिलाष साहेब की श्रद्धालुओं और भक्तों की कबीर-वाणी की तरफ झुकाव को परख लेने की शक्ति की अनुभूति होती है।

गुजरात प्रान्त के सूरत शहर में 3 मई से 8 मई 2009 तक पारख संस्थान इलाहाबाद की अध्यक्षता में ध्यान शिविर आयोजित था। दिनांक 7 मई 2009 को पूज्य अभिलाष साहेब ने अपने प्रवचन में मेरे द्वारा उनके पास आने का सर्वप्रथम हेतु बीजक के 112 वें शब्द का जिक्र करते हुए कहा कि "मेरे एक मित्र श्रीपति जी हैं जो नगर आयुक्त नगर निगम इलाहाबाद के पद पर रहे हैं। अन्य महत्त्वपूर्ण पदों पर भी रहे हैं। वे हमारी पुस्तकों के प्रेमी हैं। गाड़ी में भी बीजक रखे रहते हैं। एक बार उनकी गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गयी। गाड़ी से बीजक गिरा। गाड़ी बुरी तरह टूटी। श्रीपति जी का कुछ नहीं हुआ। वे अपने से उच्च अधिकारी से अनुमति लेकर उन्हें कबीर-वाणी सुनाते रहते हैं तथा अपने अधीनस्थों को प्रेम से बैठाकर कबीर-वाणी सुनाते रहते हैं। बड़े अद्भुत अधिकारी हैं। किसी समस्या से घबराते नहीं। समस्या से उनके चेहरे पर शिकन नहीं आती।" फिर अपना प्रवचन उसी शब्द पर दिया। कहा "मैं उसी 112वें शब्द की चर्चा करने जा रहा हूं। इसी बहाने उनको याद कर लिया।" सन्त अभिलाष साहेब ने मुझे सूरत में प्रवचन में याद किया और उनकी याद मेरे दिल में हमेशा के लिए स्थित हो गयी। मेरे प्रति उक्त कथन हेतु मैं आपका शत-शत नमन करता हूं। उनके प्रवचन की सी. डी. बनी है। जिसे देखकर उनके उक्त शब्द सुने जा सकते हैं। उक्त सी. डी. आश्रम के संतों द्वारा मुझे भी दी गयी है।

सन्तप्रवर अभिलाष साहेब ने कबीर साहेब की कथनी के अनुसार करनी को अपने जीवन में उतारा। अनेक आश्रमों तथा सन्तनामधारी साधुओं से वार्ता करने का अवसर मिला परन्तु वे कथनी के अनुसार करनी में नहीं पाये गये।

जो स्वयं हीन है, वह दूसरे का कल्याण नहीं कर सकता। सद्गुरु ने कहा कि पवित्र रहनी युक्त पुरुष ही वन्दनीय हैं। विवेक-वैराग्य सम्पन्न, पवित्र आचरण वाले सन्त अभिलाष साहेब की शरण में रहने वाले सन्त धर्मेन्द्र साहेब तथा सभी सन्तों का भी मैं नमन करता हूं और सद्गुरु कबीर साहेब के दर्शन को निरन्तर विश्व कल्याण के लिए प्रचार करने के सन्त अभिलाष साहेब की निर्मल धारा प्रवाहित रखने की कामना रखता हूं।

झूंसी आवास विकास कालोनी

झूंसी, इलाहाबाद

धरा क्या रहेगी, जब धरा में न होगे तुम

श्री प्रकाश द्विवेदी

26 दिसम्बर, 2012 को प्रातः 3.30 बजे साहेब के नश्वर पंचभौतिक कलेवर त्याग कर विदेहमुक्त होने की मारक सूचना से मन प्रकृतिस्थ नहीं है।

कामता प्रसाद सुंदरलाल साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फैज़ाबाद के हिन्दी विभाग में अगस्त, 1974 को मैंने हिन्दी से एम. ए. करने के लिए नामांकन कराया था। यह कार्य वहां के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. राजनारायण जी मिश्र की अहैतुकी कृपा से हुआ था। उन्होंने ही शुल्क के 54 रुपये 50 पैसे भी दिये थे। ऐसे उदार जन उस समय भी बहुत नहीं थे, जिनके नामस्मरण से मन पवित्र हो जाता है।

एम. ए. करते एक माह ही हुआ था कि मेरी कक्षा में एक छात्र ने प्रवेश लिया, जो किसी जूनियर हाई स्कूल या हाईस्कूल में प्राचार्य था। वह पूर्वाह्न अपना प्राचार्यत्व निभा अपराह्न 1.15 पर पढ़ने आता था नाम था—भानुप्रसाद पाण्डेय 'भानु'। मेरी कक्षा में मेरे अलावा वही एक कवि था। एक दिन उसने 'सद्गुरु कबीर' पर मुझसे कविता लिखने का आग्रह किया, जब मैंने कविता लिखने में रुचि न दिखलायी, तब उसने कविताओं के निरंतर प्रकाशित होते रहने का लोभ दे, मुझसे कविता लिखवा ली। कुछ महीनों बाद 'पारख प्रकाश' में मेरी वह कविता प्रकाशित होकर आयी, तथा कुछ दिनों में ही उसके संपादक सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब का पत्र आया। कविता-प्रकाशन से तो प्रसन्नता हुई ही, किन्तु उतनी नहीं, जितनी प्रसन्नता साहेब के पत्र से, क्योंकि मेरी कविताएं तो 15-16 वर्ष की अवस्था से ही पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी थीं। अपने पत्र में साहेब ने मेरी कविता की प्रशंसा की थी। एक प्रकार से उनकी ओर से मेरे लिए उनका यह सबसे बड़ा प्रमाण पत्र था। उसके बाद से तो साहेब के प्रोत्साहन पत्र तथा उनके मूल्यवान ग्रंथ मुझे मिलने ही लगे थे। साहेब के पत्र मेरे लिए रत्नकणों की भांति हैं। उनका त्रैमासिक 'पारख प्रकाश' अन्य पत्र-पत्रिकाओं से सर्वथा भिन्न है। इसमें सार ही रहता है, अन्य कुछ भी नहीं। रुपये के लोभ में इसमें कभी कोई परिवर्तन न हुआ। इसमें विज्ञापन अथवा समीक्षा आदि प्रकाशित नहीं होती। केवल एक बार मेरे विशेष आग्रह पर साहेब ने मेरी ब्रजभाषा काव्यकृति 'उद्धवदूत' की इसमें समीक्षा की थी। वह समीक्षा देखकर कोई भी समीक्षा का मानक समझ सकता है। वह समीक्षा सिद्ध कर देती है कि साहेब आचार्य पं. रामचन्द्र शुक्ल के अत्यन्त निकट के गौरव वंशज थे, किन्तु जहां आचार्य शुक्ल ने 'सद्गुरु कबीर' पर अनुदार दृष्टि अपनायी, वहां साहेब से उनका वैमत्य हुआ। आचार्य शुक्ल की आत्मा इन प्रखर प्रातिभ को स्मरण कर, अवश्य प्रसन्न-पुलकित होती होगी।

मेरी कविताओं के लिए मुझे समय-समय पर पुरस्कार-सम्मान प्राप्त होते रहे हैं। जो भी सम्मान-पुरस्कार मुझे मिलता साहेब को अपना संरक्षक मान, अवश्य बताता। किन्तु उनसे कभी वे प्रसन्न न होते। वे कहते—'मैं तो चाहता हूं, तुम्हें कहीं कोई नौकरी मिल जाती, जिससे तुम्हारा जीवन व्यवस्थित हो जाता।' दुख है कि वह जीवन व्यवस्थित कर देने वाली नौकरी मुझे अब तक न मिली और सबको छोड़, साहेब भी चले गये। अब मेरे लिए ऐसी चिन्ता कौन करेगा? स्थितियों को जानकर, शायद इसीलिए जब कभी मैं उनके दर्शनों के लिए, उनके आश्रम जाता था, साहेब

मुझे मार्गव्यय के साथ, अपने मूल्यवान ग्रन्थ-कैसेट आदि सहर्ष प्रदान करते थे। दुख है कि मेरी यह अर्थमयी पीड़ा उनके अतिरिक्त कौन समझेगा? ऐसे थे उदारमना साहेब!

स्मृति शेष साहेब को पाकर मैं जहां कभी अत्यन्त सम्पन्न था, वहीं उन्हें खोकर आज उतना ही विपन्न। उन पर संस्मरण-लेख लिखने के क्षणों में, स्मृति में उनके संस्मरणों की भीड़ पर भीड़ उमड़ पड़ रही है। किसे छोड़ूं, किसे अपनाऊं, समझ में नहीं आता। अपौरुषेय कहे जाने वाले वेदों पर तात्त्विक विवेचन लिखने के लिए मैंने साहेब से अनेक बार प्रार्थना की थी, किन्तु अन्य अनेक कार्यों के करते रहने की अति व्यस्तता में वे मेरा निवेदन वर्षों से पूर्ण नहीं कर पा रहे थे। संयोगवश वर्षों पूर्व के हरिद्वार कुंभ में साहेब के अप्रत्याशित दर्शन हुए तो मैंने अपनी वही प्रार्थना पुनः दुहरायी थी, तथा किंचित हठ के साथ यह भी कह दिया था, यदि मेरी यह प्रार्थना शीघ्र पूरी न हुई तो मैं अब आपके आश्रम आना ही बन्द कर दूंगा।

विगत अनेक वर्षों की भांति साहेब के त्रिदिवसीय (क्वार शुक्ल त्रयोदशी से पूर्णिमा पर्यन्त) अधिवेशन में भाग लेने के लिए जैसे ही आश्रम पर पहुंचा, साहेब के अनेक प्रपन्नों ने कहा—'गुरु जी ने 'वेद क्या कहते हैं?' ग्रन्थ पूर्ण कर दिया है।' साहेब उस क्षण तक कथा-मण्डप से कथा कहकर आये नहीं थे। आते ही सहर्ष उन्होंने भी कहा "मैंने तुम्हारा काम पूरा कर दिया है।" तथा ग्रंथ प्रकाशित होते ही, मेरी प्रति रजिस्टर्ड डाक से उन्होंने मेरे पास भेज दी। मैंने जब तक उनका वह दिव्य ग्रंथ पढ़ नहीं लिया, तब तक कोई दूसरा ग्रंथ छुआ तक नहीं। साहेब का यह अनिर्वचनीय वात्सल्य था मेरे प्रति।

संस्थान के कुछ अन्यों ने भी 'महाभारत' पर लिखने के लिए साहेब से आग्रह किया था, और मैंने भी, किन्तु एक बार अति व्यस्त होने के कारण साहेब प्रकृतिस्थ नहीं थे, और मैंने वही प्रार्थना उनके सामने पुनः दोहरा दी थी, अतः साहेब ने डांट दिया था। उनका डांटना भी मुझे बुरा न लगा था, क्योंकि यह उनका अधिकार था। दुख है कि अब मुझे कोई डांटने वाला भी नहीं रहा। समय मिलते ही साहेब ने 'महाभारत' भी पूर्ण कर दिया। निर्वाण के लगभग एक वर्ष पूर्व, आश्रम जाने पर साहेब ने कहा था—'तुम्हारा महाभारत वाला कार्य भी पूर्ण हो गया।' मन प्रसन्नता से भर गया था। ग्रंथ द्रुत गति से प्रकाशित होने लगा था। साहेब ने कहा था, 'अधिवेशन में आओगे तो ग्रंथ मिल जायेगा।'

संयोगवश मुझे अनुज रत्न प्रकाश के साथ अपनी ज्येष्ठाग्रजा श्रीमती कलावती के तीसरे आत्मज अविनाश त्रिपाठी के गृहप्रवेश पर जून 18, 2012 को इलाहाबाद जाना पड़ा। वहां से साहेब का आश्रम बहुत दूर था। किन्तु नियति ने साहेब के दर्शनों के लिए मुझसे भी अधिक भावना अनुज रत्न प्रकाश में भरी, अतः दोनों भाई रात भर के जगे निंदियारे नयन, आश्रम पहुंचकर, साहेब के दर्शन किये। आश्रमस्थ संतों के अतिरिक्त साहेब ने आगत सज्जनों को भी मेरा परिचय अनुज रत्न प्रकाश की चर्चा के साथ दिया। क्या मालूम था कि अनुज रत्न के साथ मेरा भी साहेब का यही अंतिम दर्शन हो जायेगा। दुख है तो यही कि अपने अन्य ग्रंथों की भांति साहेब अपना यह 'महाभारत' ग्रंथ मुझे अब अपने कर-कमलों द्वारा न दे सकेंगे। अतः उसकी प्राप्ति में मुझे वह सुख न मिल सकेगा, जो अन्य ग्रन्थों की प्राप्ति से मिलता था, किन्तु किया ही क्या जा सकता है?

मेरे कनिष्ठात्मज नमित के निधन की सूचना जब साहेब को मिली, तब वे गुड़गांव में थे। वहीं से उन्होंने संवेदना पत्र भेजा था, जिससे परिवार को बड़ी शांति मिली थी—

प्रिय प्रकाश द्विवेदी,

खूब प्रसन्न रहो।

धर्मेन्द्र ने गुड़गांव में आकर मुझसे बताया कि तुम्हारे कनिष्ठ पुत्र नमित का निधन हो गया है। निश्चित ही अत्यन्त दुखद घटना हुई, किन्तु किया ही क्या जा सकता है? होनी के आगे सब विवश हैं। ऐसी घटनाएं तो रात-दिन होती रहती हैं, परन्तु जब अपने लोगों में होती है, तब अधिक चोट लगती है। अंततः इस बात को भूलने में ही शांति है। अधिकतर बच्चे की मां को

ज्यादा दुख होता है, और वह भी ममता के कारण। जहां अपनी ममता नहीं रहती, वहां कुछ नहीं होता। इसीलिए संत वैराग्य दृढ़ाते हैं। यहां की किसी वस्तु में अपना कोई अधिकार नहीं है, और न भरोसा ही किया जा सकता है।

जीवन अंतर्मुखता बिना सारहीन है। इसलिए अपने व्यवहार का काम करते हुए साधना करनी चाहिए। दुख निरोधक शक्ति विवेक है। वह जितना बलवान होगा, दुख उतना ही कम होगा। पूर्ण विवेक के प्रकाश में दुखों का पूर्ण अंत होगा।

जीवन जा रहा है। सब कुछ छूट रहा है, जो अपना नहीं है, उससे मोह व्यर्थ है, और संसार में कुछ भी अपना नहीं है। शरीर भी अपना नहीं है, आत्म अस्तित्व ही अपना है। विचारकर देखो, अनादि काल से नामालूम कितने पुत्र, पिता, माता, भाई, पति, पत्नी छोड़ते आ रहे हैं। यह जीव मुसाफिर है। यह कभी टिकता नहीं है। यहां तो बस, धाय की तरह रहना चाहिए। जिसके लिए जिम्मेदारी हो उसको प्रेम से निभा दे, और सब समय निर्मोह रहे। निर्मोहिता में ही शांति है, सुख है और निर्भयता है। गयी बात के लिए भावुक होना उचित नहीं है। अंततः पूरे परिवार के लिए शुभकामना।

हितचिंतक

अभिलाष दास

मैं जब कभी किसी समस्या में उलझता था, साहेब अपने समाधानपत्रों से मेरी चिन्ता दूर कर देते थे। यही सोच मन दुख से भरा जा रहा है कि अब कौन चिन्ता-मुक्त करेगा? किन्तु लगता नहीं कि साहेब कहीं गये हैं। मेरी सरस्वती तो मुखर हो कह रही है—

कौन कहता है, तुम आज जगती में नहीं।
जगती रहेगी, जागते ही तो रहोगे तुम।
काल का प्रवाह भले, बहता है, बहा करे।
उसके प्रवाह में न, भूले भी बहोगे तुम।
कहने को दुनिया है, चाहे कहती जो रहे।
अपना कवित्व, नित्य कवि हो कहोगे तुम।
सीधी सच बात मेरी, टेढ़ी नहीं, झूठी नहीं।
धरा क्या रहेगी, जब धरा में न होगे तुमû

साहित्य सदन सेठवा, मालीपुरा, फैजाबाद, उ. प्र.

जीवन की ज्योति जगा दो

यह जीवन दुर्लभतम है, लभ हुआ पुण्य संचित से।
होकर विवेक का सागर, क्यों भटक रहा वंचित-सेû
मन के विमोह ममता मद, ईर्ष्या अज्ञान भगा दो।
जीवन की ज्योति जगा दोû 1û

यह स्वर्णिम समय सुमन-सा, जाकर नहिं लौट सकेगा।
तरुणाई जरजरता बन, अन्तिम यह श्वास रुकेगाû
नहिं मौत से तुम बच सकते, चाहे सब शक्ति लगा दो।
जीवन की ज्योति जगा दोû 2û

नद की प्रवाहधारा सम, संसार सरकता जाता।
सबसे वियुक्त होकर के, अंतिम में तू रह जाताû
बनकर पारखी परख तू, मन माया मोह जला दो।
जीवन की ज्योति जगा दोû 3û

(पूज्य गुरुदेव जी : हृदय के गीत)

आदर्श जीवन के मसीहा

राम दास

संत रहनी, ज्ञान, वैराग्य, साधना और शान्ति के क्षेत्र में अपना अमिट चिह्न बनाने वाले महान संत सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी के जीवन और दर्शन पर यत्किंचित विचार यहां प्रस्तुत है।

गुरुदेव जी ने अपने प्रारम्भिक जीवन में ही एक आदर्श के पथ पर चलना शुरू किया। आपका आदर्श उत्तरोत्तर महान होता गया और इसी पथ पर चलते-चलते आप स्वयं सबके आदर्श हो गये।

बचपन में आप बच्चों और युवकों को अपना मित्र नहीं बनाते थे। जब आपकी उम्र 12-14 वर्ष की थी तो आपके मित्र 60-70 वर्ष के वृद्ध सज्जन होते थे! उनके पास बैठकर आप बातें करते और रामायण, भागवत, गीता आदि की कथा सुनाते और स्वयं उनसे जीवन के अनुभवपूर्ण विचार सुनते जो आपके मन-मस्तिष्क में एक नयी शक्ति का संचार करते।

जब आपकी अठारह वर्ष की उम्र हुई तो सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब जी के दर्शन हुए, उन्हीं के सत्संग एवं विचारों से प्रभावित होकर आप 21वें वर्ष के पूर्वार्द्ध में ही सदैव के लिए गुरुदेव की शरण में आ गये। पूर्वाश्रम में रहते-रहते ही आपको अपने गुरुदेव से सद्गुरु श्री विशाल देव की दिव्य रहनी और विचार सुनने को मिले। 1953 ई. में जब विशाल देव के दर्शन पहली बार आपने किया तो आपको लगा कि जैसे उनका नाम है वैसे ही निष्काम स्थिति को प्राप्त ये पूर्ण पुरुष हैं। उनकी दिव्य रहनी का गहरा प्रभाव आपके जीवन पर पड़ा और आपने उन्हें अपना आदर्श गुरु मान लिया।

बचपन में आपने कबीर और कबीरपंथ का केवल नाम सुना था, लेकिन उनके विचारों से आप अपरिचित थे। कुछ भक्तों-संतों से उनके तर्कपूर्ण विचार सुनते तो आपको चौंक होती, क्योंकि आप कट्टर सनातन धर्म को मानने वाले परिवार में पैदा हुए थे। लेकिन जब कबीर विचार को आप सुने तो लगा कि आखिर सच तो यही है। मन में मान्यताओं का कुछ वितर्क भी चला, अंततः मन ने स्वीकारा कि तर्कपूर्ण बातों से ही तो मन के पर्दे हटते हैं। फिर तो कबीर को आपने सदैव के लिए सैद्धान्तिक सद्गुरु स्वीकार कर लिया जिसके बोधदाता गुरु सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब जी हुए।

इस विचारधारा में आकर संतों के सत्संग और सद्गुरु कबीर की वाणियों के सागर में आपने ऐसी डुबकी लगायी कि आपका आमूलचूल परिवर्तन हो गया। जिसके परिणामस्वरूप शताधिक अनोखे ग्रंथ आपने समाज को दिये। जीवन की तमाम कठिनाइयों को सहते हुए और समाज को कल्याण की दिव्य प्रेरणा देते हुए वैराग्य जीवन में लगभग 60 वर्षों का लम्बा समय आपने बिताया। भ्रमण में आपकी यात्राओं एवं अन्य अनेक असुविधाओं को देखते हुए, कभी-कभी कुछ प्रेमी भक्त-संत कहते कि गुरुदेव, अब आप इस अवस्था में स्थायी रूप से कहीं विश्राम करें। लेकिन आपने कभी भी इन बातों पर ध्यान नहीं दिया। गुरुदेव ने सब समय तथागत बुद्ध, स्वामी महावीर और सद्गुरु कबीर का उदाहरण सामने रखा। आप कहते थे कि अपने-अपने समय में ये सभी संत पैदल भ्रमण करते रहे, फिर इस विकसित युग में मैं असुविधा के डर से कहीं स्थायी रुक जाऊं, यह उचित नहीं है। साधु को भ्रमण और सत्संग नहीं छोड़ना चाहिए। 1984 ई. तक आप बारहों महीने भ्रमण करते रहे। इसके बाद तीन महीने इलाहाबाद आश्रम में वर्षावास और आठ-नौ

महीने भ्रमण में रहते थे। सत्संग कार्यक्रमों में भ्रमण का यही क्रम आपके जीवन के अंत तक चलता रहा। जीवन के अंतिम दिन में ऐसा लग रहा था कि एक कार्यक्रम छूट ही जायेगा। लेकिन अंतस में बैठी दृढ़निश्चयता की अपार प्रज्ञा मानो कह रही हो कि मैंने व्यवहार और विचारों में कभी व्यतिक्रम नहीं किया फिर अंत में यह कैसे हो सकता है। उसी की पुनः आवाज आयी कि मैं शरीर का त्याग कर सकता हूं लेकिन निश्चय का त्याग नहीं कर सकता। यही हुआ। 1,2,3 अक्टूबर को निश्चित कार्यक्रम के पहले ही 26 सितम्बर को आपने इस असार संसार का परित्याग कर दिया।

इस प्रकार घर में रहते-रहते वृद्धों का, साधना-जीवन में विशाल देव का, तथा भ्रमण और प्रचार-प्रसार में बुद्ध, महावीर और कबीर का आदर्श आपने लिया। इन आदर्शों के पथ पर चलकर आपने खुद पर ऐसा साधना-संयम किया कि आप स्वयं मानव समाज के आदर्श हो गये।

गुरुदेव जी का जीवन पुष्पवाटिका की तरह है जिसमें सद्गुण रूपी अगणित पुष्प विभिन्न रंगों में खिले हैं। उनमें हम जिस पुष्प के पास जाते हैं उसी से मनोहर सुवास आती है।

सब समय प्रसन्न रहना आपका सहज स्वभाव था। आपकी याद आते ही एक ऐसी देदीप्यमान मूर्ति सामने खड़ी हो जाती है, जिसके रोम-रोम से प्रसन्नता एवं आनन्द की किरणें निकल रही हैं। वह प्रसन्नता केवल ऊपर-ऊपर की नहीं आंतरिक है। हृदय ही आपका कुछ ऐसा था जिसमें दुख, अवसाद, चिन्ता का नामोनिशान नहीं था। ऐसी सुखद स्थिति का आजीवन आपने लुत्फ उठाया और जन-जन में खुले दिल से वितरण भी किया।

आपकी एकाग्रता ऐसी थी जिसे शब्दों में कहना कठिन है। ध्यान एवं स्वरूपस्थिति की सर्वोच्च ऊंचाई में आप थे ही, आपकी इस अवस्था को कह पाने में हम सर्वथा असमर्थ हैं। अगणित बार ऐसी घटना घटी। कुछ संत या भक्त आपके दर्शनार्थ आते हैं। मैं आपके पास अनुमति के लिए जाकर बंदगी करता, लेकिन आप ऐसी तन्मयता से अध्ययन या लेखन में लगे रहते कि आपको पता ही नहीं चल पाता। अंत में जोरों से आहट आने पर आप उस तरफ देखते थे। एक शब्द में कहें तो जिस क्षण जो सोचना चाहिए उस क्षण आप वही सोचते थे। आवश्यक विचार सोचने के अलावा आप उठते-बैठते, चलते-लेटते सब समय विचारों से अपने आप में रहते थे।

आपका जीवन प्रेम-भक्ति के रस से तरबतर था। गुरुजनों, मित्रों एवं शिष्यों के साथ प्रेम का बरताव कैसे करना चाहिए, इस कला में आप अत्यन्त कुशल थे। आप अपने गुरुदेव के निकट खड़ाऊं कभी नहीं पहनते थे। उनके पास पहुंचने के बहुत पहले गाड़ी से उतर जाया करते थे और मिलने पर बंदगी-प्रणाम के बाद चरणोदक अवश्य लेते थे। आपके गुरुदेव सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब जी ने अपने अंतिम समय में अन्य संतों से आपके भक्ति-भाव का बखान करते हुए कहा था—"भक्ति तो अभिलाष दास ने निभाया है।" सामान्य संतों-भक्तों के सामने पहले ही हाथ जोड़ लेना आपका सहज स्वभाव था। शिष्य साधकों एवं बच्चों को तो गोद में जैसे आप रखते थे। उनके साथ हंसी-विनोद भी कर लेते थे तथा ठहाका मारकर समय से हंसते और हंसाते थे। प्यार-स्नेह देते हुए सामने वाले को व्यवहार-परमार्थ की ऐसी ऊंची बात बता देते कि सामने वाले का मन सहज ही आपकी ओर आकर्षित हो जाता था। यह सब करते हुए भी आप सबसे सर्वथा निस्पृह रहते थे। इन सूत्रों को आपने अपने जीवन में अक्षरशः निभाया—

1. प्रेम में स्वर्ग और अनासक्ति में मोक्ष है।

2. अपने लिए कठोर और दूसरों के लिए कोमल बनो।

3. अपने को इतना मधुर बनाओ कि तुम्हारे जीवन से प्रेम का शीतल फौव्वारा निकलता रहे।

प्राणि मात्र को प्रेम लुटाते हुए आप निष्पृहता की कठोर मूर्ति थे। प्यारा से प्यारा और अत्यन्त निकट का व्यक्ति, वर्षों साथ रहने वाला भी आपसे दूर हो जाये

तो थोड़ा भी उसके लिए फिक्र नहीं करते थे। आपकी यह पंक्तियां आपके जीवन पर अक्षरशः लागू होती हैं—

प्रिय के वियोग के दिन को, पहले से मन में साधो।
जो मिल करके छुट जाये, उसको न कभी आराधोû

निष्पक्ष व्यक्ति ही निर्भय और निश्चिंत होता है। इस विषय में गुरुदेव की ऊंचाई असीम है। क्या ब्राह्मण क्या अब्राह्मण, क्या हिन्दू क्या मुसलमान, कौन अपना शिष्य कौन दूसरे संतों का शिष्य, क्या स्वमत क्या परमत, कौन अपने प्रदेश का कौन दूसरे प्रदेश का, निकट वाले-दूर वाले, धनी-गरीब, सबको आपने निष्पक्षतापूर्वक अपनाया, सबको प्रेम लुटाया। निष्पक्षता का मतलब अविचार नहीं, बल्कि 'सार-सार को गहि रहे' वाली दृष्टि आपने अपनाया। सद्गुरु कबीर की इसी दृष्टि के आधार पर योग दर्शन भाष्य, तथागत बुद्ध क्या कहते हैं?, शंकराचार्य क्या कहते हैं?, रामायण रहस्य, मानसमणि, तुलसी पंचामृत, वेद क्या कहते हैं?, लाओत्जे क्या कहते हैं? और महाभारत मीमांसा आदि ग्रंथ रत्न आपने दिया। आपने समाज, धर्म और जीवन के गलत तत्त्वों के साथ कभी समझौता नहीं किया। लेकिन सत्य जहां भी मिला उसे धो-पोंछकर अपनाने में कोई संकोच नहीं किया।

उदारता के बिना जीवन संकुचित और अधूरा होता है। आपके व्यक्तित्व में अनन्त ऊंचाइयां हैं तो साधना में सीमातीत गहराई है। फिर उदारता में आप पीछे कैसे रह सकते हैं। जिज्ञासुओं को खुले दिल से पुस्तकें देते थे। आगन्तुक संतों को मुक्त हाथ से कपड़े, प्रसाद और पूजा-विदाई देते थे। साधकों एवं भक्तों के रहने, खाने, पहनने आदि की अच्छी से अच्छी व्यवस्था करते-करवाते थे। विद्यार्थियों एवं गरीबों के लिए आपकी विशेष कृपा होती। थोड़े में कहें तो गुरुदेव का हृदय और हाथ दोनों एक समान उदार थे।

किसी उद्देश्य की सिद्धि नियम के बिना नहीं हो सकती। गुरुदेव की दिनचर्या के छोटे-बड़े प्रत्येक कार्य नियमित होते थे। आपका खाना-पीना, सोना-जागना, शौच, मंजन, स्नान, लेखन, प्रवचन, लोगों से मिलना-जुलना, टहलना-विश्राम, कार्यक्रमों में जाना और आश्रम में रहना आदि सभी कार्य संयम और नियम के सर्वथा अनुकूल हुआ करते थे।

पवित्रता ही परमात्म तत्त्व की निशानी है। गुरुदेव टकसार और पवित्रता के कट्टर पक्षधर थे। एक बार भूखे रह लेना आप पंसद कर लेते थे लेकिन अपवित्रता कभी पसंद नहीं करते थे। मन, वाणी, कर्म और उद्देश्य पवित्र हों इसके साथ-साथ खान-पान, स्नान, आसन, बिस्तर, निवास, हाथ-पैर तथा शरीर के सभी अंग साफ और स्वच्छ होने चाहिए। इसकी आप भरपूर शिक्षा देते और स्वयं अमल करते थे।

शान्ति तो फूलों का पराग है, भिखारी का खजाना है, रोगी का स्वास्थ्य है। इसी के लिए आपने गृह त्याग किया था, मृत्यु का वेष पहना था, यही तो आपके जीवन का लक्ष्य था। इसकी प्राप्ति के लिए आपने अपनी सारी शक्ति लगा दिया। इसकी तुलना में आपने जीवन को जीवन नहीं समझा। इसकी रक्षा के लिए गुरुदेव जी हर कीमत चुकाने के लिए तैयार रहते थे। ऐसा जो निश्चय का धनी है, शान्ति और मुक्ति उसके चरण चूमती हैं।

सद्गुरु अभिलाष साहेब का जीवन इतिहास में एक अद्भुत घटना है। आपके लेखन-प्रवचन, भ्रमण, समाज-संगठन और साधना की उत्तुंगता को देखकर क्या संत, क्या भक्त, क्या विद्वान, क्या अविद्वान सभी आश्चर्य करते हैं। आप में स्वाभाविक वह आकर्षण है कि जो भी आपको एक बार देख, सुन, पढ़ लेता है वह प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता। आपने अपने इस जीवन से समाज को जो कुछ दिया, सभ्य मानव समाज सदा उसके लिए ऋणी रहेगा। आपके जीवन पर हम गहराई से सोचते हैं तो भी थाह लगा पाना बड़ा कठिन होता है। संसार से उदास होते हुए भी आप उसके कल्याण के लिए सब समय कर्मशील रहे। परमार्थ में आप अत्यन्त निष्क्रिय[1] हैं तो व्यवहार में कुशल कर्मकर

———

1- मन का क्रिया शून्य होना ही परमार्थ है।

हैं। जैसे आप लेख लिखने में कुशल हैं वैसे ही छंद रचना में निष्णात हैं। प्रवचन में जैसे आपकी धारावाहिता है, शैली में वैसी ही मिठास है और विषय-वस्तु वैसे ही तर्कपूर्ण तथा प्रामाणिक होती है। व्यक्ति से, ग्रंथ-पंथ से सार-असार के ग्रहण-त्याग की शक्ति भी आपकी बेजोड़ है। संतों को साथ लेकर आठ-नौ महीने तक भारत के विभिन्न क्षेत्रों में भ्रमण करते रहना यह कार्यशक्ति भी आपकी बेमिसाल है। भ्रमण कार्यक्रम की व्यस्तता में भी आप भारी भरकम ग्रन्थ लिखते रहते थे। सद्गुरु कबीर ने जो सूत्र दिये उसको व्याख्यायित करने और जन-जन तक फैलाने में आपने तनिक भी कोर-कसर नहीं रखा।

गुरुदेव जी के साथ मेरे जीवन में घटित अनेक मीठे-मीठे संस्मरण भी हैं। जब मैं सन् 1988 में पहली बार आपके दर्शन किया तो मन में अद्भुत अनुभूति हुई किन्तु संकोची स्वभाववश आपके निकट न जा सका। दूसरे वर्ष 1989 के वार्षिक अधिवेशन में आया। दूसरे दिन सुबह आपकी बंदगी करने गया। उस समय आपने पूछा—बेटा, कहां से आये हो? फिर आपने पूछा—जलपान किये हो या नहीं? ऐसे शब्द सुनकर मन में बड़ी प्रसन्नता हुई।

आपकी शरण में आने के बाद एक बार प्रातः भ्रमण में मैं आपके साथ गया। आपसे मेरे ही विषय में बचपन की कुछ चर्चा होने लगी। मैंने कहा—गुरुदेव! उस समय आपकी पुस्तकें पढ़ने का बहुत शौक था, लेकिन पैसे ही नहीं रहते थे। मुश्किल से 25-30 रुपये की पुस्तकें खरीद पाता था।

गुरुदेव ने कहा—बेटा, मुझसे कह दिये होते तो तुम जितना चाहते उतनी पुस्तकें मैं दे देता।

एक बार गुरुदेव के भोजनोपरान्त आपकी ही थाली में मैं भोजन कर रहा था। भोजन कुछ कम था। मेरे खाते-खाते ही आप आ गये। आपने कहा—थोड़ा कुछ फल ला दूं? मैंने कहा—गुरुदेव, जरूरत पड़ने पर मैं ले लूंगा। आपने कहा—नहीं, मैं अभी छीलकर सेब लाता हूं। पुनः मैं रोकते हुए कहा—गुरुदेव, आप ऐसा न करें। आपने कहा—तुम मुझे रोज स्वादिष्ट मीठा भोजन कराते हो तो मैं तुम्हारे लिए एक सेब भी नहीं छील सकता। आपके शब्द सुनकर मैं झुक गया। गुरुदेव स्वयं फल अमनिया करके लाये और मेरी थाली में डाल दिये। खाते-खाते शील-संकोचवश मैं केवल आपके चरणों को देख सका और मेरी आंखें नम हो गयीं।

एक बार मैं अपने कक्ष में सो रहा था, मेरे पास तकिया नहीं था। सुबह गुरुदेव मेरे पास आये, गाल सहलाते हुए आप कहते हैं—बेटा! तुम तकिया नहीं लगाते हो। मैं अपने पास से कुछ कपड़े दे देता हूं। मैंने कहा—गुरुदेव, मेरे पास कपड़े हैं। उससे बना लूंगा। आपने कहा—तो कल से थोड़ा तकिया लगाकर ही सोना।

इस प्रकार गुरुदेव के बीच हुई वार्ता एवं प्यार की बातें लिखी जायें तो एक पुस्तक ही तैयार हो जायेगी। आपका हमारे जीवन पर अनन्त उपकार हैं उसको हम शब्दों में कैसे कह सकते हैं!

हे गुरुदेव! यह आपका शाश्वत विचार है कि 'जीवन क्षणिक है।' उसी नियम के अन्दर आपका शरीर भी था। आप तो शरीर को वैसे ही समझते थे जैसे "अमेरिका-इंग्लैण्ड में मिट्टी का छोटा पिंड पड़ा हो तो उससे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं, वैसे ही आज कल में यह हमारा माना हुआ शरीर हो जायेगा।" आपके देह-वियोग से आप तो अपनी स्थिति को सदा के लिए प्राप्त हो गये, जिसके लिए जीवनभर आपने परिश्रम किया वह उद्देश्य पूर्ण हुआ, आपका कुछ नहीं खोया। खोया तो हमारा खोया। हमारा आपसे स्वार्थ था, हमारी अपेक्षा थी कि आपसे बोध-विचार एवं साधना की सीख मिलती रहे। लेकिन प्रारब्ध को कोई जानता नहीं, आप बीच में ही हाथ छुड़ाकर चले गये।

ठीक है, प्रकृति के इस कटु सत्य को हम स्वीकारते हैं, क्योंकि किसी भी यौगिक चीज का एक न एक दिन वियोग होता ही है। यही गुरुदेव की शिक्षाएं हैं, इसी पथ पर चलकर शान्ति की प्राप्ति हो सकती है। अंत में आपके पावन चरणों में करबद्ध नतमस्तक होते हुए पुनः हम हृदय से भाव भरे श्रद्धा-सुमन समर्पित करते हैं।

कबीर पारख संस्थान, प्रीतमनगर, इलाहाबाद

मेरे गुरुदेव

विवेक दास

मेरे आध्यात्मिक जीवन के पोषक, तिमिर भास्कर पूज्यवर गुरुदेव की स्मृति में सादर श्रद्धा-सुमन समर्पित है।

मैं बचपन से ही चार महापुरुषों से अत्यन्त प्रभावित रहा हूं। वे हैं महात्मा बुद्ध, स्वामी महावीर, सद्गुरु कबीर और महात्मा गांधी। आध्यात्मिक मार्ग में चलने की प्रेरणा इन महापुरुषों से मिली है किन्तु जब गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी का दर्शन हुआ तब मुझे लगा कि ये चारों महापुरुष गुरुदेवजी में अन्तर्भुक्त हो गये हैं। मैं गुरुदेव जी से मिलकर बहुत प्रभावित हुआ और मुझे याद है, एक साथ ही मैंने गुरुदेव जी से पन्द्रह प्रश्न कर डाले। गुरुदेव जी ने बड़ी शालीनता और सहजता से उत्तर दिया और मुझे पूरा संतोष हुआ। उसके कुछ महीनों के पश्चात तो आपकी शरण में ही रहने का अवसर प्राप्त हो गया।

गुरुदेव जी का समय संयोजन बड़ा अद्भुत था। वे क्षण-क्षण का दोहन करते थे। ऐसा कभी नहीं लगता था कि उनका समय व्यर्थ जा रहा है। या तो ध्यान करते या अध्ययन करते या लिखते या सत्संग करते। गुरुदेव जी के पास अनर्गल और व्यर्थ बातों के लिए समय ही नहीं था। इसीलिए गुरुदेव जी इतनी साहित्य-रचना कर समाज की सेवा कर सके।

गुरुदेव जी उच्चकोटि के विद्वान, कवि, लेखक, कुशल वक्ता और समाज सुधारक तो थे ही लेकिन इससे भी कहीं अधिक वे एक महान संत थे। उनका प्रतिक्रियारहित मन, संसार से उदासीनता, विषयों से अनासक्ति, दिखावारहित सहज जीवन और जागरूकता उनके संतत्व को उद्घाटित करते थे।

सद्गुरु कबीर ने कहा है—"जो रहे करवा सो निकरे टोटी।" जो करवा (टोंटीदार हंडी) में रहेगा वही तो टोंटी से निकलेगा। ऐसे ही जिसके अन्दर जो रहेगा वही निकलेगा, विकार है तो विकार, दुख है तो दुख, सुख है तो सुख, प्रसन्नता है तो प्रसन्नता। गुरुदेव जी से कभी भी मिलना होता या फोन से बात होती पहले यही कहते थे—बेटा, प्रसन्न हो न? हमेशा विवेक बलवान बनाये रखना, कहीं भी संसार के आकर्षण में पड़कर दुखी मत होना। यह बात कौन कह सकता है? जो स्वयं दुखमुक्त हो।

संत अनाकर्षण की स्थिति में होते हैं यह गुरुदेव जी को देखकर पता चला। कुछ वर्ष उनके सान्निध्य में रहने का अवसर मिला किन्तु कभी भी मुझे यह नहीं लगा कि गुरुदेव जी का कहीं देखने-सुनने, खाने-पीने में आकर्षण है। वास्तव में यही उनके मुक्त जीवन की पहचान है।

इलाहाबाद आश्रम की बात है। उस समय मैं गुरुदेव जी की सेवा में था। किसी भक्त ने बहुत बढ़िया फल और मिठाई चढ़ायी। हम लोग जो सेवा में थे उसमें से कुछ फल और मिठाई निकालकर गुरुदेवजी के लिए रख लिये। जब गुरुदेव को यह पता चला तो उन्होंने कहा, देखो, जो आया है वह केवल मेरे लिए नहीं है, पूरे समाज का है। मैं समाज का अगुवा हूं तो इसका मतलब यह नहीं कि मैं उसमें से अधिक उपयोग करूं,

उसे सब संतों में बांटो और मेरे लिए सिर्फ एक-एक ही निकालकर रखना।

गुरुदेव जी इतना संयमित भोजन करते थे कि उनको समय से भूख लग जाती थी। एक बार की बात है उस समय मैं गुरुदेव जी की सेवा में था। गुरुदेव जी ने मुझे बुलाया और कहा, "देखो, मुझे जल्दी भूख लग जाती है, तुम मुझे जल्दी भोजन करा दोगे तो ठीक रहेगा।" उस दिन मैंने गुरुदेव जी के लिए अलग से थोड़ी सब्जी बनायी और रोटी जो समाज के लिए बन रही थी उसमें से लाकर गुरुदेव जी को खिलाया। दूसरे दिन फिर शाम को भंडार की तरफ जा रहा था तो गुरुदेव जी ने बुलाकर कहा—"बेटा! हमारे मेरे लिए अलग कुछ मत बनाना, जो समाज के लिए बनता है उसे ही लाना। यदि नहीं बना हो तो केवल रोटी ले आना। हम रोटी फल के साथ खा लेंगे।" यह थी उनकी समता दृष्टि।

गुरुदेव जी प्रेम के अगाध सागर थे। उनके सान्निध्य में जो भी आता उसे लगता था कि गुरुदेव जी मुझे ही अधिक प्रेम करते थे। मुझे भी ऐसा ही लगता था। उनका प्रेम संकुचित और स्वार्थमय नहीं था। अपितु निःस्वार्थ और निश्चल था और इसीलिए वे सबको प्रेम दे सके और इतने बड़े समाज के अनुशास्ता हो सके। गुरुदेव जी सबको प्रेम देते थे किन्तु सबसे अनासक्त भी रहते थे। सद्गुरु कबीर के 'ढाई आखर' को गुरुदेव जी ने अक्षरशः चरितार्थ किया।

गुरुदेव जी प्रेम ही नहीं करते थे, गुस्सा भी करते थे लेकिन उनका गुस्सा उस मां के गुस्से के समान होता था जो कभी-कभी अपने बच्चे के लिए करती है। उसमें बच्चे के लिए द्वेष नहीं बल्कि हितकामना होती है। कभी गुरुदेव जी गुस्सा करते थे तो उसमें हमारे सुधार की भावना होती थी।

गुरुदेव जी में एक बात और देखने में मिलती थी कि वे छोटे-से-छोटे के भी अच्छे कामों की प्रशंसा करते थे। जैसे कि किसी ने अच्छा प्रवचन कर दिया या अच्छा लेख लिख दिया या अच्छा भोजन बनाया या और भी कोई काम किया तो वे प्रशंसा किये बिना नहीं रहते थे। किसी से कुछ गलती हो जाती थी तो उसे सहारा भी देते थे, उसे सुधारने का मौका देते थे। सचमुच गुरुदेव सिर्फ गुरुदेव जैसे ही थे।

गुरुदेव जी एक जीवन्मुक्त पुरुष थे और वे विदेहमुक्त हो गये। वे आज हमारे बीच सशरीर तो नहीं हैं किन्तु उनका ज्ञान, उनका आदर्श हमारे बीच है। उनका साहित्य है। हमें उनके ज्ञान और आदर्श को अपनाकर अपने और पर के कल्याण में लगना चाहिए। बस, यही गुरुदेव जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

श्री कबीर पारख आश्रम

सणिया हेमाद, सूरत, गुजरात

अभी-अभी शरीर छूटने का अवसर आये, तो हमारे मन में कोई पीड़ा एवं टीस न हो, अपितु चित्त परमानंद में डूबा हो। यही जीवन की सफलता है। क्लेशरहित मन शांति का लक्षण है। मन से सब कुछ छोड़ देने पर जीवन में दुख नहीं रहता। दुख का कारण तो मन का भौतिक क्षेत्र से जुड़ना है। जब साधक सब तरफ से अपने मन को समेट लेता है तब उसे कोई कष्ट नहीं होता। किसमें ममता करके अपने को बंधन में डाला जाये! अपनी असंगता ही सच्ची स्थिति है।

(पूज्य गुरुदेव जी : उड़ि चलो हंसा अमरलोक को)

पारख बोध विधाता

साध्वी राजेश्वरी

सम्पूर्ण संसार में सूर्य एक जगह पर उदित होता है, परन्तु उसका प्रकाश सर्वत्र संसार में फैल जाता है। ऐसे ही महापुरुषों का प्रादुर्भाव किसी एक जगह पर हुआ करता है परन्तु अपने दिव्य ज्ञान की रश्मियों से वे समूचे धराधाम को आलोकित कर देते हैं।

अपने भारत देश में उत्तर प्रदेश की पावनभूमि पर जन्में परम पूज्य सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी हैं। आपका प्रथम दर्शन मुझे प्रीतमनगर कबीर मंदिर, इलाहाबाद में 1983 में हुआ था। आपके दर्शनों से मुझे ऐसा अहसास हुआ जैसे संसार की सबसे बड़ी सम्पत्ति हासिल हो गयी। मुझे एक असीम शांति का अनुभव हुआ।

आत्मिक शान्ति की प्रेरक मूर्ति, सरल एवं तपस्वी, उदार महामना, ज्ञान-वैराग्य की संपन्नता आपके व्यक्तित्व की प्रमुख पहचान थी। आपने संत परम्परा पर अनूठी पकड़ के साथ-साथ कबीर वांग्मय को बड़े ही सहज ढंग से जनमानस में रखा। भारतीय संस्कृति में जब भी सद्गुरु कबीर देव को याद किया जायेगा परमपूज्य सद्गुरु श्री अभिलाष देव जी को बड़े ही श्रद्धाभाव से जरूर याद किया जायेगा। सच्चे अर्थों में साधक की साधना-यात्रा का सशक्त सम्बल आपका साहित्य है, जिससे आपने समूचे समाज में अलौकिक प्रतिभा को बिखेरा।

कबीरपंथ के कुशल व्याख्याता तथा लेखनी के धनी होते हुए छोटे-बड़े सबके साथ सौहार्द्रपूर्ण व्यवहार आपके जीवन दर्शन को समस्त दिशाओं में महकाता है। आपका कृतित्व और व्यक्तित्व कितना सरल और महान था यह कहना तथा लिखना दोनों ही कठिन है। आज से बारह वर्ष पहले जब मैंने सरोजनी नगर, लखनऊ में संस्था कायम की तो आपसे निवेदन किया कि गुरु जी! आपके ही कर-कमलों द्वारा आश्रम का उद्घाटन हो जाये। गुरु जी ने बड़े ही सहज रूप से मुस्कराते हुए कहा—मेरी बेटी! जैसा कहेगी वैसा कर लेंगे। यदा-कदा आपका पदार्पण हम सबको प्रसन्नता और आत्मबल प्रदान करता रहता था।

आपके पास जो भी जाता था वह आपका ही हो जाता था। सब यही कहते थे कि पूज्यवर मुझे ही सबसे ज्यादा स्नेह करते हैं। आप प्रतिभा के धनी तथा मानव मात्र के मसीहा थे। आप सदैव मानव की पीड़ा कैसे दूर हो, मानव अपनी मानवता को पहचान कर मानवोचित कर्म करे इसके लिए हरसम्भव प्रयासरत रहते थे। आपका जीवन मात्र सद्गुणों का समुच्चय था। इसी कारण से दुनिया के लोग आप पर न्योछावर थे। आपके जीवन का ऐसा एक भी उदाहरण नहीं है जो आपने कभी किसी से विरोध किया हो। आप अनुकूलता-प्रतिकूलता के झंझावात से अप्रभावित होकर जीवन जीये।

अध्यात्म क्षेत्र की यह भी एक अनूठी पहचान है—कबीरपंथ में आपने साध्वी समाज के आत्म कल्याण हेतु अत्यन्त महानतम कार्य करके एक मिसाल कायम की। ऐसा अन्यत्र देखने को नहीं मिलता। साध्वी समाज युग-युगान्तरों तक उपकृत रहकर आपसे सम्बल प्राप्त करके अपने जीवन को कृतार्थ करता रहेगा।

पूज्यवर 26 सितम्बर, 2012 को पंच भौतिक नश्वर शरीर का परित्याग करके स्वरूपलीन हो गये। निश्चित ही हम सबको एक अपूरणीय क्षति और गहरा आघात

पहुंचा परन्तु हम सब प्रकृति के नियमों से बंधे हैं। जन्म के साथ ही मृत्यु पीछा कर रही है फिर इससे कौन बच सकेगा? किसकी ताकत है जो कारण-कार्य व्यवस्था को झूठा कर सके? पूज्यवर द्वारा रचित साहित्य तथा अपने पीछे छोड़ा विशाल साधु-समाज ही हम सबका मार्गदर्शक बनेगा। अंत में इन पंक्तियों के साथ आपके पावन चरणों में भावभीनी शत-शत श्रद्धांजलि समर्पित करती हूं—

कोटि दिलों में हरपल हरदम करते हैं जो निवास।
पारख बोध विधाता साहेब सद्गुरु श्री अभिलाषû

संत कबीर अध्यात्म संस्थान
सरोजनीनगर, लखनऊ, उ. प्र.

मोक्ष का आशीर्वाद

पारुल

सद्गुरु स्वामी अन्तर्यामी जय गुरुदेव जय गुरुदेव।

मैं गुरुदेव से पहली बार नड़ियाद में संतराम मंदिर में मिली थी। मैंने गुरुदेव के प्रवचनों की सी. डी. मुकेश भाई से पाई थी और उनको बार-बार सुनती थी। तभी मेरे मन में उनसे जल्द मिलने की अभिलाषा जगी। मई 2011 में उनका नड़ियाद में प्रोग्राम था, मैं वहीं उनके दर्शन करने गयी थी।

जब मैं गुरुदेव को पहली बार मिली तो उन्होंने मेरा नाम पूछा। मैंने बताया—पारुल। गुरुदेव तुरन्त बोले—इसका अर्थ जानती हो, बेटी? मैंने कहा—नहीं। उन्होंने कहा, पार हो जाना। इस जीवन रूपी संसार-सागर से पार हो जाना...। मैं तो यह सुनकर धन्य हो गयी और लगा गुरुदेव ने मुझे मोक्ष का आशीर्वाद ही जैसे दे दिया हो। मुझे लगा मेरे जीवन की नैया जैसे पार हो गयी। फिर तीन दिन उनका प्रवचन सुनती रही। मन अन्दर से ऐसा शान्त हो गया कि कोई प्रश्न या शंका रही ही नहीं। उनके दर्शन मात्र से जैसे समाधि स्थिति का अनुभव होता था। मन नितान्त शान्त हो गया, मानो अपने आप में डूब गया हो। गुरुदेव धन्य थे और बहुतों को उन्होंने प्रेरणा दी थी और कल्याण किया था। ऐसे विरल पुरुष धरती पर बार-बार नहीं आते। यह मेरा बहुत सौभाग्य था कि मुझे तीन दिन उनको सुनने और दर्शन करने का मौका मिला।

फिर यहां अमेरिका आ जाने से फोन पर समय-समय से आशीर्वाद लेती थी। वे हमेशा बड़े प्यार से आशीर्वाद देते थे "खुश रहो बेटी, खुश रहो।" ऐसा कहते थे, और ध्यान करती हो या नहीं, ऐसा प्रश्न करते थे। उन्हें याद करके मेरा मन आज भी भर आता है कि गुरुदेव अब हमारे बीच सशरीर नहीं रहे, परन्तु उनके विचार और आशीर्वाद हमेशा हमारे साथ हैं। वे ही विकट परिस्थिति में हमें सहयोग करते हैं और समता की प्राप्ति कराते हैं तथा मन को धैर्य दिलाते हैं।

गुरुदेव का चले जाना एक बड़ा हादसा है। इससे अधिक दुख कुछ नहीं हो सकता, ऐसा प्रतीत होता है। गुरुदेव के पीछे उनके साथी और सहयोगी संत संस्थान को व्यवस्थित चला रहे हैं और ऐसे दुखद क्षणों में अपने आपको भी संभाल कर रखे हुए हैं। गुरुदेव के प्रिय एवं निकटतम साथी राम साहेब ने गुरुदेव की इस तरह से सेवा की थी जैसे एक मां अपने बच्चे को संभालती है। आप सभी संतों को गुरुदेव का विशेष आशीर्वाद और अनुग्रह हमेशा बना रहे, ऐसी शुभकामना है। साहेब बंदगी!

वाशिंगटन डी. सी., अमेरिका

गुरुदेव जी के श्री चरणों में श्रद्धा का एक पुष्प

साध्वी श्रद्धा

गुरुदेव जी के बारे में संतों से सुनती थी। सन् 1999 में कबीर आश्रम नवापारा (राजिम) रायपुर के ध्यान शिविर में जाने का समय बना। वहां मैंने पहली बार आपके दर्शन किया। गांव से आश्रम जाते समय रास्ते में एक सज्जन भावविभोर होकर कहने लगे, गुरुदेव जी की वाणी में अमृत है। गुरुदेव जी प्रवचन करते हैं तो लगता है कि सुनते ही रहें। मैं सोचती थी कि गुरुदेव मनुष्य हैं या भगवान, जिनकी वाणी से अमृत वर्षा होती है। जब ध्यान-शिविर में गयी और आपके विचारों को सुनी तब लगा, सच तो है। गुरुदेव मनुष्य के रूप में भगवान ही हैं। आपकी वाणी में वह ओज और सत्य दर्शन है जो सारे अंधविश्वास और चमत्कार को काट देता है, जो केवल कर्म सुधार को ही शान्ति का रास्ता बताता है, जो परमतत्त्व को बाहर नहीं भीतर की तरफ संकेत करता है, जिनको लाखों लोग मंत्रमुग्ध होकर सुनते हैं। आपके पास आने वाले की झोली कभी खाली जाती ही नहीं। ऐसा उपदेश करने वाला व्यक्ति भगवान के अलावा दूसरा हो ही नहीं सकता। एक बार जो आपको सुनता वह दुबारा सुनने के लिए मजबूर हो जाता था, यही आपकी गुप्त प्रीति थी।

सन् 2002 में हमारे आश्रम का गुरुदेव जी के कर-कमलों द्वारा उद्घाटन हुआ। झंडा फहराने के बाद गुरुदेव ने मेरी एवं मेरे साथी सुमन साहेब की ओर देखते हुए पूछा—ये दोनों बच्चियां कहां रहती हैं? संतों ने बताया कि गुरुदेव, ये यहीं रहती हैं और यह आश्रम इन्हीं लोगों का है, तब आपने विनोद करते हुए कहा—तब तो हम यहां नहीं रह सकते। क्योंकि आपका नियम था कि साधिकाओं के आश्रम में पुरुष निवास नहीं कर सकता। फिर गुरुदेव ने समझाते हुए कहा—बेटी, तुम दोनों आपस में प्रेम और सुमति से रहना, तभी स्वयं साधना में आगे बढ़ सकोगी और दूसरों पर भी इसका अच्छा प्रभाव पड़ेगा। गुरुदेव का यह आशीर्वाद सदा हम लोगों के साथ छाया की तरह बना रहा। आज गुरुदेव की ही कृपा से आश्रम में हम सब तेरह (13) साधिकाएं प्रेम से रहती हैं।

दूर रहते हुए भी गुरुदेव हम लोगों की छोटी-छोटी बातों का भी ख्याल रखते थे। एक बार हम कई साधिकाएं गुरुदेव के पास बंदगी करने गयीं। कुशल समाचार पूछने के बाद गुरुदेव ने पूछा—बेटी, तुम किसी प्रकार की चिन्ता तो नहीं करती हो कि आगे खाने-पीने, पहनने, रहने आदि की व्यवस्था हो पायेगी कि नहीं। मैंने कहा—नहीं, गुरुदेव, कोई चिन्ता नहीं होती है। तब आपने समझाते हुए कहा कि चिन्ता मत करना, सब मिलेगा। खाने को मिलेगा, पहनने को मिलेगा और छाया भी मिलेगी। यदि कमी पड़े तो मुझे बताना।

इन दिनों आश्रम में हम लोगों की संख्या अधिक देखकर एक बार गुरुदेव ने पूछा—तुम्हें किसी से शिकायत तो नहीं है? मैंने कहा—नहीं गुरुदेव, किसी से कोई शिकायत नहीं है। हमारे यहां सभी बच्चे अच्छे हैं। इतना सुनकर गुरुदेव जी ने खुश होकर कहा, बेटी, सब समय शिकायत रहित जीवन जीना। शिकायत भरा जीवन

नरक का जीवन है। हां, कोई सुधरना न चाहे तो उससे हाथ जोड़ लेना, मोह मत करना। मैंने कहा—गुरुदेव, एक को निकाल दें, तो जो हैं उनमें फिर कोई परेशान करने वाले नहीं होंगे? गुरुदेव ने कहा, ऐसा तो नहीं होता। हां, स्वयं की सहनशीलता और प्रेम से सब सुधार होता रहता है।

आश्रम में प्रतिवर्ष कार्यक्रम होने के लिए जब मैंने गुरुदेव से निवेदन किया तो आपने स्वीकार करते हुए कहा—हमारे आने से भीड़ आ जाती है। तुम्हें भार पड़ेगा, तुम संभाल लोगी? मैंने कहा—गुरुदेव! गांव के सब लोग सहयोग करते हैं, हमें कोई भार नहीं पड़ेगा। बस, आगे होना पड़ता है। गुरुदेव ने कहा—ठीक है बेटी, करो, जीवन रहा तो अवश्य आऊंगा।

गुरुदेव जी प्रेम के सागर थे। आपके हृदय में छोटे-बड़े, ऊंच-नीच, गरीब-अमीर की भावना नहीं थी। जो भी आपसे मिलने जाता था, अपनी झोली में आपका प्यार भरकर ही वापस लौटता था। कई महापुरुष बहुत वैराग्यवान होते हैं लेकिन व्यवहार से एकदम दूर रहते हैं। त्यागी होते हैं किन्तु प्रेम शब्द को बन्धन मानते हैं। ज्ञानी होते हैं लेकिन मात्र मंच पर ही उनका ज्ञान काम आता है। सामान्य लोगों को उनसे कुछ मिल ही नहीं पाता। लेकिन गुरुदेव अद्‌भुत रहे। वे त्याग-वैराग्य की मूर्ति थे। ज्ञान के धनी थे। फिर भी प्रेम के सागर थे। छोटा-सा बच्चा भी आपसे मिलने जाता तो आपका प्यार पाकर हंसते हुए वापस आता था। मैं जब भी आपके पास जाती तो सोचती कि आज कौन-सा आशीर्वाद गुरुदेव से मिलेगा। लेकिन जब वापस आती तो मन में विशेष आनन्द की अनुभूति होती। मुझे यही लगता कि जिसकी मुझे जरूरत है वह आप जान जाते हैं।

जब आपके प्यार और सान्निध्य की याद आती है तो नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगती है। मैं सोचती हूं कि मेरे ऊपर गुरुदेव की कितनी कृपा है।

गुरुदेव जी सहनशीलता की मूर्ति थे। वे स्वयं सबका सहकर शांत रहते थे। आपके साथ रहने वाले हों या बाहर से मिलने वाले हों आप छोटे-बड़े सबका ऊंच-नीच सहकर सबके साथ समता का व्यवहार करते हुए स्वयं प्रसन्न रहते और सबको प्रसन्न रखते थे।

14 सितम्बर 2012 को मैंने गुरुदेव जी से फोन पर बात की। मेरे पूछने के पहले ही गुरुदेव ने हम लोगों का कुशल समाचार पूछ लिया। फिर मैंने आपके स्वास्थ्य के बारे में पूछा। आपने जोर से हंसते हुए कहा—तुम्हारा ठीक है तो मेरा क्यों नहीं ठीक रहेगा? क्या तुम मुझे बूढ़ा समझती हो? मैंने कहा—हमारे गुरुदेव कभी बूढ़े नहीं हो सकते। गुरुदेव ने हंसते हुए कहा—वाह बेटी! यह तुम्हारा मोह है। शरीर की जो अवस्था है वह तो आना ही है। फिर आपने अपने दांतों के बारे में बताया कि सभी दांत उखड़वा दिया हूं। थोड़े दिनों में मेरे सभी दांत लग जायेंगे।

गुरुदेव जी से हमें हर कला सीखने को मिली। सुख से जीने की कला बताया ही, सुख से कैसे मरें यह भी आपने बताया। खाने-पीने, बैठने-उठने और बात-व्यवहार के लिए भी आपने बताया कि कैसे करें और रहें। गुरुदेव जी निकट रहने वाले-दूर रहने वाले, स्व मत वाले-पर मत वाले सबके साथ समता भाव बनाये रखते थे।

एक बार मैं कार्यक्रमों से वापस आकर आपके दर्शन करने पोटियाडीह आश्रम में गयी। बंदगी के बाद जब बैठी तब गुरुदेव ने पूछा—तुम्हारी रामत पूरी हो गयी? मैंने कहा—जी गुरुदेव, पूरी हो गयी। फिर मैंने कहा—गुरुदेव, इस समय क्या लिख रहे हैं? आपने कहा—इस समय धनी धरम साहेब की वाणी पर काम कर रहा हूं। मैंने कहा—गुरुदेव! धरम साहेब गृहस्थ थे कि विरक्त? आपने कहा—वे न गृहस्थ थे न विरक्त, दोनों से परे थे। श्री धरम साहेब पहले गृहस्थ थे लेकिन सद्‌गुरु का बोध पाकर घर में रहते-रहते विरक्त की दशा अपना लिये और महान हो गये। फिर आपने समझाया सबसे सार ग्रहण करो। वह जहां से भी मिले।

अन्य मत-पंथ वाले भी आपकी महान उच्च कोटि के संतों में गणना करते हैं। यहां तक कि विरोधी विचार वाले भी आपकी कीमत को समझते हैं। अपने अहंकारवश दूसरों के बीच आपका नाम नहीं लेते लेकिन आपका नाम छिपाकर आपकी पुस्तकें पढ़ते हैं, आपके भजन गाते हैं।

हे गुरुदेव! आप बीच में ही हमें छोड़कर चले गये। अब हम अपने आप को कैसे समझायें कि गुरुदेव की ही सीख है—मोह छोड़ो। हमें तो आपसे ही मोह हो गया है। आपके जाने से हमें उतना दुख है कि माता-पिता या अन्य प्रिय जनों के बिछुड़ने से भी नहीं होता। अंत में आपके श्री चरणों में सिर झुकाते हुए आपकी बेटी श्रद्धा, श्रद्धा का एक पुष्प चढ़ा रही है।

कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम

मूरा, धमतरी, छ. ग.

पूज्यपाद गुरुदेव की स्मृति में

साध्वी समीक्षा

पूज्य गुरुदेव जी मानव समाज के मसीहा और अध्यात्म क्षेत्र के प्रकाशस्तम्भ थे। उनके बारे में कुछ कहना उसी प्रकार है, जैसे कोई कहे कि आकाश में कितने तारे हैं, गिनती करके बताओ। आकाश में तारों की गिनती कर पाना असंभव है क्योंकि तारे असंख्य-अनगिनत हैं। इसी प्रकार गुरुदेव जी का हर पक्ष चाहे ज्ञान पक्ष हो, चाहे आचार पक्ष हो, चाहे दर्शन पक्ष हो चाहे व्यवहार या वैराग्य पक्ष हो—हर पक्ष अपने आप में अनोखा एवं गरिमामय है, जिसका वर्णन कर पाना असंभव है। उसे शब्दों से बयान नहीं किया जा सकता। वर्णन या व्याख्या उस वस्तु की की जाती है जिसका आदि और अंत हो। गुरुदेव जी का उपकार तो अनंत है। उनका व्यक्तित्व और कर्तृत्व सागर की तरह अथाह है।

गुरुदेव जी का जीवन सांप्रदायिकता रहित शुद्ध अध्यात्म, जातिवादी भावना से रहित शुद्ध मानवता, चमत्कार रहित साधनात्मक उन्नति, बोझिल कर्मकाण्ड रहित सदाचारमय धर्म का जीवंत स्वरूप था। जीव-दया, मानव-प्रेम और अनासक्ति आपके उपदेश है। आपकी वाणी और चरित्र समवेत रूप थे।

जैसे हीरे के हर पहल में चमक होती है वैसे ही गुरुदेव जी के जीवन का हर पहलू जगमगाता है। गुरुदेव जी सरल, सौम्य और मृदुभाषी थे। उनके सामने केवल संत-महात्मा ही नहीं भक्त लोग भी अपनी मानसिक, घरेलू एवं निजी समस्याओं को खुली पुस्तक की तरह रख देते थे। गुरुदेव जी बड़े धैर्य, एकाग्रता और अपनापन से उन समस्याओं को सुनते थे और उनका समुचित हल बताते थे। यही कारण है कि गुरुदेव जी सबके दिल में बसे हुए हैं।

गुरुदेव जी न मिले होते तो हमें जीवन जीने की शैली न आती। जीवन किसे कहते हैं, जीवन और जगत का क्या सम्बन्ध है, बंधन कैसे छूटे, यह समझ न पाते। सद्गुरु कबीर ने नारी-पुरुष को समानता की दृष्टि से देखा। दोनों के शरीर के कुछ अंगों में भिन्नता है किन्तु दोनों के शरीर में एक समान चेतन-आत्मा निवास करती है। दोनों को साधना करने का बराबर अधिकार है। सद्गुरु कबीर के बाद अनेक संत महापुरुष हुए, धर्म के प्रचारक एवं अध्यात्म के अनुयायी हुए। लेकिन

किसी ने नारी उत्थान एवं नारी कल्याण के लिए उतना ध्यान नहीं दिया जितना परम पूज्य गुरुदेव जी ने दिया।

पुरुषों के दिलोदिमाग में नारियों के प्रति यह भ्रान्ति घर कर गयी थी कि नारी अशुभ है, पाप योनि है, घर की चारदीवारी एवं परिवार के बीच में इनकी मर्यादा है। पुरुषों का मानना था कि नारियों में विवेक और सहनशीलता की कमी होती है। दुनिया की जितनी गलतियां एवं दोष हैं वे नारियों में देखते थे। ऐसे तुच्छ बुद्धिवाले लोगों का मानना था कि नारियां स्वतंत्र किसी आश्रम में एक साथ रहकर साधना नहीं कर सकतीं। क्योंकि ये स्वभाव से झगड़ालू एवं ईर्ष्यालु प्रकृति की होती हैं। ऐसे समय में एक युगपुरुष युगद्रष्टा परमपूज्य गुरुदेव जी हुए जिन्होंने नारियों को ऊंचा स्थान दिया। सद्गुरु कबीर ने नारी-पुरुष की समानता का बीज बोया और उसको वृक्ष का रूप देनेवाले पूज्य गुरुदेव जी हैं। सबके दिल में नारियों के प्रति सम्मान व आदर दिलाने का पूरा श्रेय पूज्य गुरुदेव जी को है।

जब हमारी पूज्या बड़ी लोगों ने गुरुदेव जी के समक्ष यह बात रखी कि पुरुषों के साधना करने के लिए अनेकों आश्रम हैं किन्तु हमारे लिए कोई आश्रम नहीं है जिसमें रहकर साधना कर अपना कल्याण कर सकें। हम लोगों के लिए भी एक आश्रम का निर्माण होना चाहिए। गुरुदेव जी को यह बात अच्छी लगी और उन्होंने आश्रम-निर्माण के लिए सहज स्वीकृति दे दी। गुरुदेव जी ने कहा—तुम लोग आश्रम निर्माण करो। उसकी व्यवस्थापिका एवं संचालिका तुम ही लोग रहोगी और सदस्या भी नारियां ही रहेंगी। कोई भी पुरुष आश्रम का व्यवस्थापक, संचालक और सदस्य नहीं होगा। इसमें तुम्हीं लोगों की भलाई और मर्यादा है। इस प्रकार गुरुदेव जी ने हमें नियम रूपी सुरक्षा कवच दिये जो सदैव हमारा रक्षक है।

गुरुदेव जी के निर्देशानुसार कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम पोटियाडीह (छत्तीसगढ़) का निर्माण हुआ। जिसका उद्घाटन 26 मार्च, 1993 को परमपूज्य गुरुदेव जी के कर-कमलों द्वारा हुआ, जिसमें अभी 32 साधिका बहनें साधनामय जीवन बिता रही हैं। आश्रम की व्यवस्थापिका और गुरु के रूप में पूज्या श्री सुशीला साहेब जी हैं। गुरुदेव जी के संरक्षण में साधिकाओं के लिए तीन आश्रम हैं। कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम पोटियाडीह (छत्तीसगढ़), मूरा (छत्तीसगढ़) और धर्मपुरी (गुजरात)। आज साध्वी समाज में लेखिका, प्रवक्ता और अनुवादिका जो कुछ भी हैं सब गुरुदेव जी के आशीर्वाद और कृपाप्रसाद का ही फल है। हम सभी गुरुदेव जी के आजीवन ऋणी रहेंगे। गुरु का उपकार और ऋण तो कभी चुकाया नहीं जा सकता। यदि गुरुदेव जी हमें मान-सम्मान और अधिकार न दिये होते तो हमारा ज्ञान उसी प्रकार बह जाता जैसे बारिश होती है और पानी को रुकने का उपयुक्त स्थान न मिलने पर यत्र-तत्र बह जाता है। गुरुदेव जी का आशीर्वाद न मिलता, उनके ज्ञान और उपदेश न मिले होते तो हमारा जीवन इतना व्यवस्थित न होता। गुरुदेव जी अपने सान्निध्य में रहने वाले संत-महात्माओं को जितना प्यार, स्नेह, प्रेम और वात्सल्य देते थे, उतना ही प्यार, स्नेह और प्रेम हम सबको भी देते थे। उनके मन में किसी प्रकार का कोई पक्षपात नहीं था। हम गुरुदेव जी से दूर रहकर भी उनके हृदय के करीब थे। हम उनके प्रेम के निर्झर जल प्रपात में सदैव सराबोर रहते थे। जिसमें केवल आनंद की अनुभूति होती है। पहले मुझे लगता था क्या गुरु भी मां-बाप का रूप हो सकता है। करुणामयी, ममतामयी अपार प्यार न्योछावर करने वाली मां जैसी गुरु भी हो सकता है?

क्योंकि मां-बाप तो हमें अपने स्नेह एवं वात्सल्य की शीतल छाया में रखते हैं। मैं संत-महात्माओं से गुरुदेव जी के बारे में सुनी थी कि वे जीवन निर्माण की छोटी-छोटी बातें बड़े प्यार से बताते हैं। कैसे चलना है, कैसे बोलना है, कैसे बैठना है, कैसे सोना है, कैसे झाड़ू लगाना है, कैसे बर्तन मांजना है, कैसे कपड़ा पहनना है, कैसे ब्रश करना है, कैसे जीभी करना है और

शुरू में जो नये साधक आता था जिसको ब्रश करना नहीं आता था उसे गुरुदेव जी अपने हाथों से ब्रश करना सिखाते थे कि ब्रश इस प्रकार किया जाता है।

जैसे मां अपने छोटे बच्चे को अंगुली पकड़कर जीवन के हर मोड़ पर चलना सिखाती है वैसे ही गुरुदेव जी छोटी-छोटी जीवनोपयोगी बातों को बड़ी बारीकी से समझाते थे। ऐसे करुणामय, वात्सल्यमय सच्चे और यथार्थ सद्गुरु के चरण और शरण को जो छोड़कर चला जाता है उससे बढ़कर इस दुनिया में कोई दुर्भाग्यशाली और अभागा व्यक्ति नहीं है। क्योंकि ऐसे सच्चे और परम वैराग्यवान महापुरुष कभी-कभी और किसी-किसी को मिलते हैं। जब हजारों-हजारों जन्मों का पुण्य उदय होता है, सौभाग्य जगता है, तब ऐसे महान आत्मा का सान्निध्य मिलता है। हम बड़े सौभाग्यशाली हैं कि हमें ऐसे प्रतिभासम्पन्न सच्चे सद्गुरु का ज्ञान, उपदेश, सान्निध्य और आशीर्वाद मिला। वरना हम पुस्तकों और चित्रों में पढ़ और देख पाते जैसे सद्गुरु कबीर, पूज्य विशाल देव जी, बुद्ध, महावीर, लाओत्जे आदि अनेक संत-महापुरुष हुए, जिन्हें ग्रन्थों एवं चित्रों में पढ़ते और देखते हैं।

हमारा दुर्भाग्य उदय हो गया कि गुरुदेव जी हमें अनाथ छोड़कर इस दुनिया से बहुत जल्दी चले गये। यह तो एक दिन होना ही था। विधि के विधान के सामने हम सब नतमस्तक हैं क्योंकि यही विश्व का शाश्वत नियम है कि जो जन्मता है उसकी मृत्यु निश्चित है, जो खिलता है उसके मुरझाने का भी नम्बर आता है। यदि गुरुदेव जी 100 से अधिक वर्ष भी जीवित रहकर जाते तो भी हमें यही लगता कि गुरुदेव जी बहुत जल्दी चले गये। ऐसा कौन व्यक्ति होगा जो गुरुदेव जी जैसे करुणा के सागर, ममता की मूर्ति, प्यार के विशाल सागर और त्यागमूर्ति परम वैराग्यवान महापुरुष को अपनी आंखों से ओझल होते देखना चाहेगा।

इस दुनिया से जाना सबको है चाहे राजा हो, चाहे रंक हो, अमीर हो गरीब हो, गृहस्थ हो या विरक्त हो या महापुरुष हो। सबको बारी-बारी से एक-एक करके जाना है। किन्तु जाने-जाने में अन्तर होता है। एक गृहस्थ व्यक्ति इस दुनिया से जाता है तो अपने बच्चे के नाम पर, पत्नी के नाम पर या परिवार के किसी सदस्य के नाम पर, भौतिक संपत्ति छोड़कर जाता है किन्तु सन्त-महापुरुष इस दुनिया से जाते हैं तो व्यक्ति विशेष को नहीं, पूरी दुनिया को ज्ञान देकर, नसीहत देकर जाते हैं। उनके नसीहतों और उपदेशों पर चलेंगे तो हमारा ही कल्याण होगा।

सद्गुरु कबीर ने कहा है—

गुरु समान दाता नहीं, याचक शिष्य समान।
तीन लोक की संपदा, सो गुरु दीन्हीं दान॥

सद्गुरु कहते हैं गुरु के समान इस दुनिया में कोई दाता नहीं है। यह सुनने में अटपटा लगता है। गुरु दाता कैसे हो सकता है, न उनके पास कोई रुपये-पैसे हैं, न कोई फैक्टरी है, न कोई बिजनेस, न कोई भौतिक सम्पत्ति है जो गुरु देते होंगे। वैसे तो संसार में बड़े-बड़े सेठ, जमींदार, उद्योगपति हैं जो लाखों, करोड़ों एवं अरबों का दान करते हैं। कोई-कोई तो अपनी संपूर्ण सम्पत्ति दान में लगा देते हैं। इन दानों में श्रेष्ठ दान गुरु जो दान देते हैं वह है। क्योंकि वे हमें अक्षय आत्म-धन का बोध कराते हैं जिसमें स्थित होने पर केवल शांति और आनंद की अनुभूति होती है। गुरुदेव जी हमें यही सीख दिये कि संसार और शरीर के मिथ्या अभिमान में पड़कर गफलत में मत सोओ क्योंकि मौत कभी भी आ सकती है। गुरुदेव जी यही कहा करते थे कि मैं हर वक्त गठरी-मोटरी बांधकर तैयार बैठा हूं। मौत जब कभी भी आ जाये मुझे कोई परवाह नहीं। मुझे जो काम करना था वह कर चुका हूं। वे संसार और शरीर में रहते हुए भी असंग-अनासक्त थे। वे सदैव अपने स्वरूप में स्थित रहते थे। गुरुदेव जी को इस दुनिया में सबसे प्यारी और परमप्रिय मौत थी। वैराग्य संजीवनी जो पूज्य गुरुदेव जी की प्रथम रचना है उसकी यह पंक्ति है—

हम मुक्ति इच्छुक के लिये तू तो सहायक है सदा।
स्मरण तेरे मात्र से जाता रहे कलिमल मदा॰
अंतिम समय बतलाय कर दुखदृष्टि उर जाया करे।
रे मौत प्यारी मौत मेरे सामने आया करे॰

गुरुदेव जी मौत का स्मरण करते थे। अनेक बार शारीरिक जीवन का अंत होता है, किन्तु हमारे आत्मिक जीवन का कभी अंत नहीं होता। असत्ता सत्ता में नहीं आती और सत्ता की कभी शून्यता नहीं होती। हमारे क्षणिक जीवन की सार्थकता है अमर जीवन में प्रवेश पाना। गुरुदेव जी का पार्थिव शरीर हमारे बीच नहीं है, किन्तु उनके उपदेश, ज्ञान और साहित्य तथा उनकी कथनी-करनी-रहनी की एकरूपता पूरी दुनिया में सूर्य की तरह प्रकाशित रहेगी।

ऐसे महापुरुष मरते नहीं अमर हो जाते हैं। उनके लिए मर गये जैसे तुच्छ शब्दों का प्रयोग नहीं करते, किन्तु कहा जाता है निर्वाण को प्राप्त हो गये, स्वरूपलीन हो गये, अमर आत्मा में स्थित होकर अमरत्व को प्राप्त हो गये।

गुरुदेव जी पाखण्ड, दंभ, कुरीतियां, जड़-पूजा, देवी-देवता की झूठी मान्यता, कर्मकांड, चमत्कार, प्रदर्शन और दिखावा के विरोधी थे। पारख सिद्धान्त के मूल आचार्य सद्गुरु कबीर ने भी इन्हीं सारी बातों को डंके की चोट पर ऊंचे स्वर में दुनिया के सामने कहा था। क्रांतिकारी विचार, आचार और दर्शन प्रणाली की दृष्टि से देखें तो गुरुदेव जी को सद्गुरु कबीर का दूसरा रूप कहना अतिशयोक्ति न होगी। पारख सिद्धान्त अवतारवाद और चमत्कारवाद नहीं मानता। गुरुदेव जी ऐसे महामानव हैं जो संसार और शरीर में रहकर भी विदेहमुक्त और जीवन्मुक्त पुरुष थे। फिर ऐसे महापुरुष के लिए जन्म-मरण का प्रश्न ही नहीं उठता। गुरुदेव जी प्रदर्शन का नहीं आत्मदर्शन का जीवन जीये, दिखावा एवं बहिर्मुखी का नहीं अन्तर्मुखी का जीवन जीये, ढोंग का नहीं ढंग का जीवन जिये और जीवन के अंतिम श्वास तक प्रदर्शन और चमत्कार के विरोध में कहते रहे।

सच्ची श्रद्धांजलि तभी होगी जब हम गुरुदेव जी के ज्ञान, उपदेश और रहनी को अपने जीवन में चरितार्थ करेंगे। हम केवल अपने मुख से उनके गुणों की गाथा गाते रहें, प्रशंसा करते रहें किन्तु गुरुदेव ने हमेशा जो कहा, उन्होंने जैसा जीवन जीया, आडम्बर और दिखावा का विरोध किया उसे जीवन में न उतारें और उन्होंने जिसका विरोध किया उसी चीज को दुनिया के सामने पेश करें, हम भावना के आवेश में आकर बह जायें तो हमारी भक्ति, आस्था और शिष्यत्व सब दिखावा और थोथा है। गुरुदेव जी की स्मृतियां, ज्ञान, उपदेश और आदर्श एक सीमित घेरा तक नहीं है। किन्तु उनके ज्ञान, उपदेश, साहित्य और उनके आदर्श की स्मृति दुनिया में सबके दिल में, सबके ख्वाबों में समायी हुई है।

अतः हम ऐसे गलत आदर्श पेश न करें, ऐसा काम न करें कि दुनिया वाले हम पर हंसे या व्यंग्य करें और हमारे गुरु के नाम पर छींटाकशी करने लगें, उन पर कीचड़ उछालें। यह हम पर निर्भर करता है कि गुरु के वर्चस्व, गुरु की महिमा, उनकी महत्ता को दुनिया के सामने किस रूप में रखना है। सच्ची गुरु भक्ति, आस्था, शिष्यत्व और पुजारी का पद उसी व्यक्ति को प्राप्त होगा जो गुरुदेव जी की बातों को अपने जीवन में उतारेंगे और सबके प्रति प्रेम, संगठन, समता और सारे राग-द्वेष को त्यागकर सबके प्रति आत्मभाव रखेंगे।

अंत में मैं अपने मन-मंदिर में विराजमान परम आराध्य गुरुदेव जी और अपने हृदय कक्ष में स्थित परम वैराग्यवान त्यागमूर्ति गुरुदेव जी के श्री चरणों में कोटि-कोटि नमन करती हूं।

कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम
पोटियाडीह, धमतरी, छ. ग.

जिंदगी की दौड़ तुमने मेट डाली

साध्वी समता

गुरुदेव जी का हृदय प्रेम का अथाह सागर था। वे करुणा की साक्षात मूर्ति थे। उनकी दृष्टि में न कोई छोटा था, न कोई बड़ा। गुरुदेव जी ने जाति-पांति, छुआछूत, वर्णभेद से ऊपर उठकर केवल मानवता को सर्वोच्च माना। उन्होंने सबको गले से लगाया। तभी तो आज गुरुदेव जी सबके हृदय में समाये हुए हैं।

गुरुदेव जी के जीवन में कथनी, करनी और रहनी में एकरूपता थी। वे जैसा जीये, वैसा ही लोगों को उपदेश के माध्यम से कहे। पहले अपने जीवन में 'प्रैक्टिकल' किये, फिर 'थ्योरी' (सिद्धान्त) के रूप में लोगों के सामने प्रस्तुत किये। गुरुदेव जी का नश्वर शरीर तो नहीं रहा, लेकिन उनका आचरण, ज्ञान, उपदेश मशाल की तरह हमेशा प्रज्वलित रहेगा, कभी बुझेगा नहीं। उनकी ज्ञान-ज्योति से हमारा जीवन जगमगाता रहेगा। अपना मार्ग प्रशस्त करने के लिए गुरुदेव जी की एक-एक वाणी हमारे लिए प्रेरणास्रोत है।

कहते हैं कि हीरे का हर पहल अपने आप में चमकदार होता है। वैसे ही गुरुदेव जी का चाहे व्यावहारिक हो, चाहे सामाजिक, चाहे साहित्यिक हो, चाहे दार्शनिक, चाहे आध्यात्मिक पक्ष हो, हर क्षेत्र में उनका व्यक्तित्व चमकदार, प्रकाशवान था। व्यवहार के क्षेत्र में गुरुदेव जी ने जो भूमिका निभायी, वह सराहनीय है। गुरुदेव जी ने साधकों के साथ, जो भी उनकी शरण में आये, कभी माता के रूप में, कभी पिता के रूप में, कभी सखा के रूप में अपने आप को प्रस्तुत किया। गुरुदेव जी के वात्सल्य, करुणा, प्रेम, त्याग और वैराग्य का ही फल है जो इतना बड़ा संस्थान कायम हुआ है। गुरुदेव जी केवल माता, पिता और मित्र ही नहीं वे एक शिल्पकार भी थे। जो भी जिज्ञासु उनकी शरण में आया उन्होंने शिल्पकार बनकर गढ़ने और छीलने का काम किया अर्थात हमारे अंदर जो मनोविकार हैं, दोष-दुर्गुण हैं, उन्हें छुड़ाने के लिए सद्ज्ञान रूपी वाणी से गढ़ते रहे, छीलते रहे, सतत सावधान करते रहे, मार्गदर्शन करते रहे जिससे हमारा जीवन निर्मल और पवित्र बन सके। गुरुदेव जी चाहते थे कि उनके सतत प्रयास से जो मूर्ति बने वह सुंदर और प्रतिष्ठित हो।

गुरुदेव जी का जीवन इतना सरल था कि जो भी उनसे मिलने जाता उसे कभी नकारते नहीं थे। उनका हृदय इतना विशाल था कि जो भी जिज्ञासु या दीन-दुखी उनकी शरण में आया, सबको आश्रय मिला। सरल जीवन, सरल भाषण, सरल व्यवहार, सरल बरताव, सरलता से लोगों से मिलना-जुलना उनका स्वाभाविक गुण था। गुरुदेव जी ने अपने जीवन एवं मन को इतना सरल बना लिया था कि जो भी उनके दर्शन के लिए आते प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। सरल स्वभाव के कारण गुरुदेव जी जीवन की सर्वोच्च ऊंचाई पर पहुंचकर पूज्य और प्रतिष्ठित बन गये।

गुरुदेव जी ने समाज को क्या दिया, यह किसी से छुपा नहीं है। संत समाज, भक्त समाज या साध्वी समाज सबके कल्याण के लिए अपना तन-मन समर्पित कर दिये। गुरुदेव जी का पूरा जीवन धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन और सद्ग्रन्थों की रचना में ही व्यतीत हुआ। इसके साथ-साथ धर्म प्रचार एवं लोक-कल्याण के

लिए अनेक प्रदेशों में भी गये। गुरुदेव जी आजीवन संघर्षशील और कर्मठ बने रहे। गुरुदेव जी द्वारा रचित जो ग्रन्थ हैं वे हमारे लिए अनुपम उपहार हैं।

गुरुदेव जी हमेशा कहा करते थे कि शरीर नश्वर है और संसार परिवर्तनशील है। शरीर और संसार को हम कभी भी अपने वश में नहीं कर सकते। जो चीज छूटने वाली है, विनशने वाली है उन पर आज तक किसी का वश नहीं चला। शरीर और संसार के भौतिक ऐश्वर्यों पर कोई अपना स्वामित्व नहीं जता सका। लेकिन यह मूढ़ मन इन्हीं प्राणी और पदार्थों के मोह में आकंठ डूबा हुआ है। इन्हें अपना मान-मान कर उन पर अपना अधिकार जमा रहा है। लेकिन यह सब कुछ एक दिन स्वप्न की भांति छूट जायेगा, कुछ भी हाथ नहीं आयेगा। और न ही कुछ साथ जायेगा। सब यहीं धरा का धरा रह जायेगा। गुरुदेव जी कहते थे कि धन-संपत्ति, पुत्र-परिवार, पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान, सब क्षणिक है। इनमें कोई सुख नहीं है। सब माया है, धोखा है। संसार प्रपंच से भरा हुआ है। इसमें उलझो मत। वरना ठोकर ही खाओगे। गुरुदेव जी हम सबको हमेशा सावधान करते रहे कि अपने आप को लोगों की भीड़ से अलग कर लो और विचारों की भीड़ से भी अपने आपको छुड़ा लो, क्योंकि यह सब बंधन का कारण है। प्राणी और पदार्थ का अहंकार झूठा है। संसार में जीव अकेला आया है और अकेला जायेगा। गुरुदेव जी का यह कथन अक्षरशः सत्य और हृदय को छू लेने वाला है—

अहंकार के मिथ्यापन को तनिक नहीं पहचाना।
बीत गई अनमोल जिंदगी पड़ा विवश हो जाना।
बहुत बोलने वालों को भी मौन साधना होगा।
बहुत जानने वालों को भी स्मृति खोना होगा।
बहुत भीड़ भी छँट जायेगी टुट जायेगा नाता।
जीव पथिक आया इकला ही, और अकेले जाता।

गुरुदेव जी के बारे में जितना भी कहा जाये वह कम ही है। वे तो अद्वितीय, बेलाग और आप्त पुरुष थे। गुरुदेव जी सांसारिकता से ऊपर उठकर अपने आप में स्थित हो चुके थे। न उनके मन में प्राणियों के प्रति मोह था, न पदार्थों के प्रति लोभ। गुरुदेव जी निर्भीक, निर्विवाद और निर्लेप जीवन जीये। संसार के सुख-दुख, हर्ष-शोक, लाभ-हानि, अनुकूलता-प्रतिकूलता सबको क्षणिक मानते थे। तभी तो गुरुदेव जी इन सबसे ऊपर उठकर अपने आप में लीन रहते थे।

गुरुदेव जी की पहली रचना 'वैराग्य संजीवनी' जो पद्य में है उसे पढ़कर ऐसा लगता है कि गुरुदेव जी बहुत जल्दी ही अपना काम कर चुके थे। वैराग्य संजीवनी गुरुदेव जी के साधना-जीवन का निचोड़ है। वैराग्य संजीवनी का एक-एक शब्द संजीवनी बूटी है आत्मा की अमरता को प्राप्त करने के लिए। गुरुदेव जी कहा करते थे कि मौत को याद करो। यहां सब क्षणभंगुर है। गुरुदेव जी ने वैराग्य संजीवनी में कहा है कि—

धन राज विद्या बुद्धि यौवन रूप बहु परचार हो।
ये स्वप्न सम मोको दिखें वैराग्य ही इक प्यार हो।
तन आज ही छुट जायेगा तू पाठ सिखलाया करे।
रे मौत प्यारी मौत मेरे सामने आया करेû

गुरुदेव जी नश्वर शरीर को छोड़कर चले गये लेकिन उनका ज्ञान, उनकी रहनी, उनका आदर्श हमारे लिए एक धरोहर है, अमूल्य निधि है जो हमारे लोक-परलोक को सुधारने के लिए संबल है। गुरुदेव जी जीवन यात्रा में कभी थके नहीं। यात्रा करते-करते गुरुदेव जी अपने निज धाम में पहुंचकर अपने स्वरूप में लीन हो गये और जाते-जाते यही संदेश दे गये कि मौत अचानक आयेगी और सब कुछ छोड़कर इस संसार से जाना होगा। उनकी याद में हर किसी का हृदय चाहे वह संत-समाज हो या भक्त-समाज भाव विह्वल हो जाता है, आंखें नम हो जाती हैं कि गुरुदेव इस तरह अचानक छोड़कर चले गये।

जिन्दगी की दौड़ तुमने मेट डाली,
कर दिया विश्रांति जीवन में निराली।
जन्म-जन्मों की पिपासा हुई तर्पित,
तेरी यादों में सुमन-श्रद्धा समर्पित।

गुरुदेव जी के पावन चरणों में शत-शत नमन।

कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम
पोटियाडीह, धमतरी, छ. ग.

सद्गुरु की प्रेरणा

सुश्री शोभा के. सी.

मेरे नाना-नानी कबीरपन्थ से परिचित थे। नेपाल की महिला सन्त श्री शान्ति साहेब मेरी मां की असली गुरु थी जिन्होंने मां को कबीरपन्थ से परिचय करवाया। जब मां की शादी हुई तो ससुराल में बाबूजी की दोनों बुआ कबीरपन्थ से परिचित थीं और कोई नहीं जानता था (जानना नहीं चाहते थे)। मेरा घर कबीर आश्रम के पास में है। पास में होने से मैं बचपन से आती-जाती रही। पहले पारख सिद्धान्त के विषय में तो मैं नहीं जानती थी क्योंकि बच्ची थी। मेरी इतनी समझ नहीं थी। फिर धीरे-धीरे आश्रम में आने वाले सन्तों का दर्शन-सत्संग का लाभ लेती गयी तब मुझे पता चला कबीरपन्थ क्या है। इसी क्रम में सन् 1981 में श्री अभिलाष साहेब पहली बार नेपाल आये और मैंने उनका दर्शन किया। इसके बाद सन् 1993 में मैं माता-पिता के साथ इलाहाबाद गयी वहां दुबारा दर्शन मिला। 1994 में फिर गयी। इस समय गुरु जी से मेरी थोड़ी बातचीत शुरू हो गयी थी। गुरु जी ने पूछा—शादी के विषय में क्या विचार है? मैंने कहा—इस विषय में कुछ सोचा नहीं है। फिर गुरु जी कहे "शादी करोगी तो दुख में पड़ जाओगी। अभी निश्चय करो कि मुझे शादी नहीं करनी है। बेटा, वीर बनो। तुम तो वीर हो ही। वीर बनकर ही अपना सुधार किया जा सकता है, नहीं तो इस संसार के दुख में डूब जाओगी।" उस समय मैं हंसकर बातों को टाल दी।

उसके दो साल बाद एक दिन मैं गुरु जी के दर्शन करने गयी तो साथ में कलकत्ता के प्रेम प्रकाश जी भी थे तो गुरु जी ने उनको मेरा परिचय देते हुए कहा कि "यह साधनामय जीवन जीना चाहती है" फिर उसी समय मैंने मन-ही-मन निश्चय किया कि अब मैं वही करूंगी जो गुरु जी कहते हैं। आज जब मैं गुरु जी के उस वाक्य को याद करती हूं तो मन-ही-मन उनको धन्यवाद देती हूं। साथ ही अपने को भी शाबासी देती हूं क्योंकि गुरु जी यह सब नहीं कहते और मैं यह निश्चय नहीं करती तो मैं भी औरों की तरह व्यवहार में भूल गयी होती। आज जो खुशी और स्वतंत्रता मुझे मिली है शायद वह नहीं मिलती। अध्यात्म की तरफ लगती या नहीं, क्या पता।

मैं गुरु जी से बेहद प्रभावित हूं। जब गुरु जी सामने होते थे तो मुझे ऐसा होता था कि मैं उनके चेहरे को निहारती रहूं और उनके भीतर की शान्ति और आनन्द को अपने में महसूस करूं। आश्रम के पास में होने से बहुत से सन्तों का सेवा-सत्संग का लाभ मिला। उन दिनों श्री विशाल साहेब जी की चर्चा करते थे पर मुझे उनका दर्शन नहीं मिला। जितना सुनती थी उसी के आधार पर उनकी झलक मुझे गुरु जी में दिखाई देती थी। जब भी प्रवचन करें तो श्री विशाल साहेब का नाम लेकर चर्चा जरूर करते थे। इससे भी लगता था कि मैं उनके दर्शन इनके रूप में कर रही हूं।

हर बार गुरु जी कहा करते थे कि बाहर से चेला, धन, जमीन, मठ, मन्दिर बढ़ाने से अपना कोई लाभ नहीं। कोई कितना ही सम्मान करे इससे भी लाभ नहीं। अपने को जानना और उसमें ठहर जाना ही अपना है। अपने को जानो, मन को स्ववश करो यही अपना काम है। यह शब्द मन में बार-बार गूंजता है और लगता है कि गुरु जी मेरे साथ ही हैं। आज भी मन को विश्वास दिलाना मुश्किल हो रहा है कि वे नहीं हैं। पर इस कटु सत्य को स्वीकारना मेरी बाध्यता है।

पूजा प्रतिष्ठान मार्ग, पुरानो बानेश्वर, काठमांडू, नेपाल

मेरा संबल टूट गया

श्री भावसिंह हिरवानी

जानता था एक दिन हमें छोड़कर चले जायेंगे लेकिन इतनी जल्दी साथ छूट जायेगा, इसका जरा भी अंदेशा नहीं था। समाचार सुना तो स्तब्ध रह गया। आंखें भर आयीं और आंसू रोके नहीं रुके। यह सच है कि साहेब जी हमारे कोई नहीं थे, पर अपनों से बढ़कर थे। उनके सान्निध्य में रहकर मुझे ऐसा लगा जैसे वे मुझे बहुत-बहुत-बहुत प्यार करते हैं, बिल्कुल एक बच्चे की तरह।

युवावस्था में ही मैं साहेब जी के संपर्क में आ गया था। उनका प्रथम दर्शन मेरी जन्मभूमि ग्राम पेंवरों में हुआ तब मैं हाईस्कूल में पढ़ता था। हमारे गांव में चार-पांच परिवार ही ऐसे थे जिसे बड़े कबिरहा के रूप में जानते थे। तब इस तरह का बड़ा आयोजन नहीं होता था और साधु-संत रामत करते हुए एक गांव से दूसरे गांव जाया करते थे। एक दिन जब मैं स्कूल से घर आया तो देखा कुछ साधु हमारे घर में बैठे हुए हैं, और कमरे से मेरा सामान निकाला जा रहा है। एक साधु खूंटी में टंगी मेरी चड्डी को लकड़ी से टांगकर बाहर निकाल रहे थे। यह देख मुझे बहुत गुस्सा आया। मैंने झपटकर उनसे चड्डी छीन ली और बंदगी भी नहीं किया। मेरी नाराजगी भांप साधु बोले थे, "लगता है बच्चा नाराज हो गया।" पर मैं कुछ नहीं बोला। उस वक्त पूज्य श्री रामसूरत साहेब जी अपनी संत मंडली के साथ पधारे हुए थे और पूज्य श्री अभिलाष साहेब मुख्य प्रवक्ता थे।

तब संतों के प्रति मेरी धारणा बिल्कुल अच्छी नहीं थी। मैं इन्हें समाज के ऊपर भार और पलायनवादी मानता था जो जीवन के संघर्षों से घबराकर भागे हुए हैं। लेकिन पता नहीं क्यों मैं दोपहर और रात के प्रवचन में साहेब के सामने बैठ जाता और बड़े ध्यान से उनका प्रवचन सुनता था। इसी बीच साधुओं को चिढ़ाने के लिए मैंने गांव के तिराहे की एक दीवार पर यह जुमला लिख दिया, "मूड़ मुड़ाये तीन गुण, मिट गयी सिर की खाज। बिन मांगे रोटी मिले, लोग कहें महाराज।" साधु तो साधु थे, भला उन्हें क्या फर्क पड़ता, पर मैं स्वयं भीतर से बहुत उद्वेलित था।

एक शाम प्रवचन के बाद मित्रों के साथ गांव के बाहर तालाब की ओर टहल रहा था। तालाब से लगा हुआ मैदान और बगीचा भी था। साधु-संत तफरीह करने पहले ही निकल चुके थे। साहेब जी अंधियारा होने तक एक पेड़ के नीचे मौन बैठा करते थे। हम लोगों के बीच ईश्वर एक है या अनेक इस बात को लेकर बहस होने लगी। लोग अपने-अपने ढंग से जवाब प्रस्तुत करने लगे पर मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। तब मैं यही मानता था कि इस संसार में कोई शक्ति जरूर है जो इस दुनिया का सर्जक और संचालक है। बाकी सब भी यही मानते थे। लेकिन साहेब जी का यह कथन हम नहीं पचा पा रहे थे कि यहां कोई जगत नियंता नहीं है और जीव ही शिव है। बहस करते-करते हम साहेब जी के करीब रास्ते में पहुंच गये। मैंने मित्रों से कहा, "चलो, साहेब जी से पूछते हैं," पर किसी में हिम्मत नहीं हुई और मैं अकेला ही चला गया।

बंदगी करके सामने बैठ गया तो साहेब जी बोले, "कहो, क्या बात है?" मैंने कहा, "कहते हैं ईश्वर एक

है फिर वह अनेक कैसे हो सकता है?" जवाब में साहेब जी ने मुझसे ही प्रतिप्रश्न किया था, "तुम क्या समझते हो?" मैंने कहा, "मैं तो समझता हूं कि ईश्वर केवल एक ही है।" तब साहेब जी मुझे जीव, जगत और ब्रह्म के विषय में समझाते रहे। जब ईश्वर को उन्होंने केवल कल्पना की चीज कहा तो मैं बहुत अचंभित हुआ। उसके बाद उन्होंने मुझे कुछ किताबें भी पढ़ने को दीं। उस दिन साहेब जी ने मेरे मन में अध्यात्म तत्त्व का जो बीजारोपण किया वह कालांतर में निरंतर पल्लवित और पुष्पित होता रहा। अब तक मैं पूज्य गुरुदेव जी श्री रामसूरत साहेब का शिष्यत्व ग्रहण कर चुका था। इसीलिए कभी-कभी साहेब जी विनोद में कहा करते थे कि यह हमारा गुरुभाई है।

जब मैं ग्यारहवीं पास कर चुका था, हमारे गृह ग्राम पेंवरों में श्री रामसूरत साहेब जी का साप्ताहिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। उसी समय मेरी एक कहानी 'वापसी' लखनऊ की एक मासिक पत्रिका 'अटल तपस्वी' में प्रकाशित हुई थी। इस कहानी का पात्र एक साधु था जो पुनः गृहस्थी में लौट आता है। मैंने संकोच करते हुए वह पत्रिका साहेब जी को दिखाया। साधुओं के खिलाफत में लिखी उस कहानी को पढ़कर साहेब जी मुस्कुराने लगे और उन्होंने मेरी पीठ थपथपाकर मुझे शाबासी दी। इसके बाद पारख प्रकाश के प्रकाशन की योजना बनी तो उन्होंने मुझे पत्र लिखा कि मैं कहानी लिखकर भेजूं। पारख प्रकाश के प्रवेशांक में मेरी पहली कहानी 'बहाना' छपी तो संत-भक्तों ने खूब प्रशंसा की और मेरी लेखनी ऐसी चली कि मैंने फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। मैं बहुत विनम्रतापूर्वक स्वीकार करता हूं कि साहेब जी की वजह से मैं साहित्य के इस मुकाम तक पहुंच सका।

नौकरी में आने के बाद मैं वहां की व्यवस्था और कानून-कायदा देख बहुत उबियाता था। जब असह्य हो गया तो साहेब जी को पत्र लिखा कि मैं कुछ दिन उनके साथ रहना चाहता हूं। यह सन् 1972 की बात है। साहेब जी उस समय कलकत्ता में भैया श्री प्रेमप्रकाश जी के यहां विराजमान थे। उनके निर्देशानुसार मैं कलकत्ता पहुंच गया। फिर साहेब जी ड्राइवर के साथ स्वयं मुझे लेने आये। समझ सकते हैं, मैं कितना भाग्यशाली था? किन्तु वहां पहुंचने के थोड़ी देर बाद मुझे अच्छी डांट पड़ी। जैसे ही स्नान करके मैं साहेब जी के पास बैठा भैया प्रेम प्रकाश मुझसे मिलने आ गये। वे मुझे यात्रा और घर-परिवार के विषय में पूछने लगे लेकिन मैं थोड़ी देर बाद अपने बालों में उंगली चलाने लगा। फिर वे उठकर चले गये। तब साहेब जी मुझे डांटते हुए बोले, "प्रेम प्रकाश जी अपना सारा काम छोड़कर तुमसे मिलने आये थे और थोड़ी-सी बात करके तुम सिर खुजलाने लगे। ऐसे समय में तुम्हें उनकी आंखों में आंखें डालकर खुलकर बात करनी चाहिए।" मैं शर्मिन्दा जरूर हुआ लेकिन उनके सामने बच्चा था। एक कान से सुना और दूसरे से निकाल दिया।

कलकत्ता प्रवास के दौरान साहेब जी मुझे विक्टोरिया मेमोरियल, वहां का विशाल पुस्तकालय, धर्मतल्ला मैदान, भैया प्रेम प्रकाश की फैक्ट्री तथा उस प्रेस में भी ले गये जहां से पारख प्रकाश का प्रकाशन होता था। भैया प्रेम प्रकाश के यहां जो आत्मीय स्नेह मिला उसके लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। बस इतना ही कह सकता हूं कि मैं अत्यन्त भाग्यशाली था। यहीं साहेब जी और भैया प्रेम प्रकाश दोनों ने मुझे सख्त लहजे में आदेश दिया था कि मैं नौकरी छोड़ने की बात फिर कभी मन में न लाऊं। उस समय वहां श्री परीक्षा साहेब और श्री रतन साहेब भी थे। एक दिन मुझे फिर शरारत सूझी और मैं रतन साहेब से पूछ बैठा कि क्या साहेब आप स्वार्थी हैं? रतन साहेब बहुत सरल, अत्यंत विनम्र स्वभाव के संत हैं। जवाब में उन्होंने हंसते हुए कहा था, "हां, मैं स्वार्थी हूं।" जब बात साहेब जी तक पहुंची तो फिर मुझे अच्छी डांट पड़ी।

वहां से हम बिहार प्रांत के भागलपुर गये जहां सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया था। शायद दो दिवसीय कार्यक्रम था जो दो सत्रों में चलता था। साहेब जी को हर सत्र में आधा घंटा का समय दिया

जाता था। जब वे बोलना शुरू करते तो हजारों की भारी भीड़ एकदम खामोश होकर उनका प्रवचन सुनती थी। साहेब जी में वक्त की नजाकत को पहचानने की अद्‌भुत क्षमता थी। वे धर्म को अलग रखकर व्यावहारिक पक्ष पर अपने विचार रखते थे और लोग दम साधे सुना करते थे। उस समय मैं साहेब जी की आसनी लेकर मंच तक जाता था। मुझे पैंट-शर्ट में साहेब जी के साथ घूमते देख लोगों को आश्चर्य होता था। वहां से हम वाराणसी पहुंचे थे और पुस्तक प्रकाशक बैजनाथ जी के यहां रुके थे। साहेब जी अपने नेमी-प्रेमियों से मेरा परिचय दिया करते थे कि यह पारख प्रकाश का कहानी लेखक भावसिंह हिरवानी है। यहां मुझे साहेब जी के साथ सभी धार्मिक-ऐतिहासिक प्रमुख स्थलों को देखने का अवसर मिला। इसी दौरान काशी करवट भी मैंने देखा जहां जीते-जी स्वर्ग जाने की चाह रखने वाले लोगों को किस तरह मौत के घाट उतार दिया जाता था तथा लाश को सुरंग के माध्यम से गंगा में प्रवाहित कर दिया जाता था। लहरतारा के कबीर आश्रम एवं कबीर चौरा में हमने बहुत वक्त बिताया। कबीर चौरा में मुझे नीरू-नीमा टीला के अलावा कबीर साहेब के द्वारा इस्तेमाल किये गये कई सामानों को देखने का अवसर मिला। लगभग पन्द्रह दिनों तक साहेब जी के सान्निध्य में बिल्कुल नयी ऊर्जा से ओत-प्रोत हो मैं वापस लौटा था। अब तक मैं पूरी तरह साहेब जी की आत्मीयता में बंध चुका था।

जब भी मैं जिन्दगी में उलझ गया तब साहेब जी के चरणों में जाकर बैठ गया। एक बार मेरी दयनीय स्थिति देख साहेब ने मुझसे कारण पूछा और फिर खूब फटकारा। इतना कि मैं रोने लगा, फिर सिर पर हाथ रखकर बोले, "उम्र बढ़ने के साथ जीवन में सुलझाव आना चाहिए लेकिन तुम तो माया की मूर्ति बने बैठे हो। यह बिल्कुल ठीक नहीं है। सारे प्रपंच छोड़ो और व्यवस्थित जीवन जीओ।" इस तरह जीवन के हर मोड़ पर उन्होंने मेरा पथ-प्रदर्शन ही नहीं किया बल्कि मेरा सम्बल भी बढ़ाया।

तब आज की तरह आवागमन की सुविधाएं नहीं थीं। संत प्रायः पैदल ही एक गांव से दूसरे गांव रामत करते हुए जाया करते थे। उनके सामानों को बैलगाड़ी से पहुंचा दिया जाता था। मैंने अपने गृह ग्राम में छोटा-सा मकान बनवाया था। उसी उपलक्ष्य में मैं साहेब जी से दो दिन के कार्यक्रम के लिए बंदगी किया तो वे सहर्ष तैयार हो गये। तब साहेब जी की पीठ में कुछ फुंसियां निकल आयी थीं जिसे वे रायपुर के एक प्रोफेसर को दिखाना चाहते थे। साधन तो और कुछ नहीं था, हम दोनों चार बजे तैयार होकर मोटर सायकल से रायपुर पहुंच गये और काम पूरा करके दोपहर दो बजे तक वापस लौट आये थे। दो सौ कि.मी. मोटर सायकल चला कर मैं बुरी तरह थक गया था किन्तु साहेब जी थोड़ा विश्राम करके 4 बजे प्रवचन में बैठ गये। यात्रा के दौरान साहेब जी कह रहे थे, जब तुम स्पीड में गाड़ी मोड़ते हो तो लगता है, बस, यह गिरने ही वाली है। गाड़ी चलाना भी एक योग ही है। तुम अच्छा चला लेते हो। उन्हें जब भी अधिक दूर जाना हुआ मैं हमेशा हाजिर रहता था। इस तरह जब भी अवसर मिला, मैं साहेब जी की सेवा करके बहुत आनंदित हुआ।

अक्सर हम दोनों पति-पत्नी एक साथ साहेब जी के दर्शन करने जाते थे और साहेब जी हर बार हमारे पूरे परिवार का कुशल-क्षेम पूछा करते थे। एक बार उनका कार्यक्रम छत्तीसगढ़ के गंगोरीपार में चल रहा था। यह राजिम के माघ मेले का वक्त था। प्रति वर्ष की भांति उस समय भी नवापारा में साहेब जी का तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित था। इधर-उधर की बातों के बाद वे बोले कि तुम हमारे साथ नवापारा चलो और पूरे तीन दिन वहां रहो। न कहने की तो गुंजाइश ही नहीं थी। जब वहां से वापसी के वक्त बंदगी करने गया तो वे हंसने लगे, "ठीक है, अब जाओ। तीन दिन जमीन पर सो लिया यही बहुत है।" साहेब जी हमेशा मेरी भलाई के लिए कहा करते थे, यह मैं अच्छी तरह जानता था, इसलिए उनकी डांट भी अच्छी लगती थी। मेरी पत्नी से हमेशा पूछा करते थे, "यह तुम्हें तंग तो

नहीं करता? यदि कोई शिकायत हो तो मुझसे कहना, मैं इसकी खबर लूंगा।" और हम दोनों उनके सामने बैठे मुस्कुराते रहते। एक दिन जब हम दोनों पोटियाडीह में उनके दर्शन करने पहुंचे तो उन्होंने मुझसे पूछा कि ध्यान करते हो कि नहीं? मैंने उन्हें तुरन्त जवाब दिया कि नहीं करता। इस पर भी साहेब जी ने मुझे अच्छी डांट पिलायी, "नहीं कहते हो! अभी नहीं करोगे तो फिर कब करोगे? जब शरीर जर्जर हो जायेगा। अब से रोज नियमित ध्यान में बैठा करो।" ऐसा निष्छल स्नेह था उनका।

सौभाग्य से ऐसे कई अवसर आये जब साहेब जी का आसन हमारे आवास में रहा। सबसे अच्छी बात यह रही कि पत्नी हमेशा सहयोगी रही। विपरीत परिस्थितियों में भी उसने उफ तक नहीं किया। संभवत: यह सन् 1980-81 की बात है। तब मैं नगरी में कार्यरत था। उस वक्त मैंने नगरी में साहेब जी का पहली बार कार्यक्रम आयोजित किया तो वहां उस कार्यक्रम की बहुत चर्चा हुई। पहले तो जैनी बंधु दूर-दूर रहकर उनका प्रवचन सुनते रहे फिर वे खुलकर सामने आये। वे साहेब जी के प्रवचन से इतने प्रभावित हुए कि अगले साल वहां साहेब जी के कार्यक्रम में उन्होंने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। तब मैं गुरूर लौट आया था फिर भी मुझे विशेष रूप से आमंत्रण भेजा गया था। मुझे उनका उत्साह देखकर बहुत खुशी हुई थी।

नगरी में पहली बार के कार्यक्रम के दौरान साहेब जी का आसन मेरे ही आवास में था। वे कार्यक्रम स्थल पैदल ही आया करते थे। कार्यक्रम के पश्चात वापस लौटते तो पिछले दरवाजे से भीतर प्रवेश करते थे। पत्नी उन दिनों को याद करके बताती है, "साहेब जी बहुत मधुर आवाज में पुकारते थे, 'बिटिया दरवाजा खोलो' उनकी आवाज ऐसी होती थी कि आत्मा भीतर तक भीग जाती थी।" घर में और कोई कर्मचारी नहीं होने से पत्नी को ही सारा काम निबटाना पड़ता था। उसका काम देख साहेब जी कई बार बोले थे, "बिटिया, काम बहुत हो जाता है और तुम थक जाती हो। अब बेटे की शादी कर दो, बहू आयेगी तो आराम मिलेगा।" और जब आमदी में बड़े लड़के की शादी हो गयी तो बोले, "मैं इस शादी से खुश हूं।" सुना तो यह भी था कि हमारी समधन श्रीमती छबि को अपने पास बिठाकर पूछते रहे कि तुम इस शादी से दुखी तो नहीं हो? साहेब जी का व्यवहार हमारे प्रति इतना आत्मीय था कि हम दोनों पति-पत्नी हर साल उनके दर्शन के लिए जरूर जाते थे। उनके सान्निध्य में थोड़ी देर तक बैठकर हमें सचमुच बहुत संतुष्टि मिलती थी। कुछ साल पहले जब हमारे समधी ने साहेब जी का कार्यक्रम आमदी में आयोजित किया तो घर में अलग शौचालय की व्यवस्था नहीं होने से साहेब जी का आसन अन्यत्र रखना चाहते थे। जब यह खबर साहेब जी तक पहुंची तो उन्होंने कहा कि हम अपनी बिटिया के घर में रहेंगे, भले ही हमें शौच के लिए बाहर जाना पड़े। ऐसा था साहेब जी का आत्मीय व्यवहार! यद्यपि उनके आने के पूर्व सारी व्यवस्था पूरी हो गयी।

आमदी में सम्बन्ध जुड़ने के बाद अक्सर हम दोनों समधी एक साथ साहेब के दर्शन के लिए जाते थे। हम दोनों को साथ देखकर अन्य संतगण तो हंसते ही थे साहेब जी भी विनोद किया करते थे, "इसे भी पकड़ लाये। अच्छा है इसे छोड़ना मत।" कभी जब मैं नहीं पहुंच पाता तो समधी से मेरे विषय में पूछते और मैं अकेला होता तो वे समधी के सम्बन्ध में मुझसे पूछा करते। एक दिन बातों ही बातों में समधी से जुड़ी कोई घटना बताते हुए हंसने लगे और बोले, "तुम्हारा समधी हेमू एकदम भोला भंडारी है। कुछ बोलो तो बस हां कह देगा। चाहे आगे-पीछे कुछ पता न हो।"

मुझे यह स्वीकारने में जरा भी संकोच नहीं है कि मैं साहेब जी की कृपा से साहित्य के क्षेत्र में इस ऊंचाई तक पहुंच सका। उन्होंने मुझे कहानियों का संग्रह प्रकाशित करने के लिए स्वयं संपादित करके देने के लिए कहा। जब एक संग्रह के लिए कहानियों को दिया तो फिर

बोले, "क्या और नहीं है?" मैंने कहा, 'है'। तब साहेब जी बोले, "फिर देते क्यों नहीं?" इस समय मैं उन्हें कबीर नाटक लिख कर दे चुका था। इस तरह सन् 1999 में उन्होंने एक साथ मेरी तीन किताबों का प्रकाशन किया। दो कहानी संग्रह और कबीर नाटक। पहला कहानी संग्रह तो सन् 1983 में आ चुका था। यह मेरे प्रति साहेब जी की अतिशय आत्मीयता और आशीर्वाद का परिणाम था वरना मेरी हैसियत ऐसी नहीं थी।

कुछ वर्ष पहले हमारे गृह ग्राम पेंवरों में साहेब जी का कार्यक्रम चल रहा था। मेरी मां बुढ़ापे की वजह से चलने-फिरने में असमर्थ थी किन्तु वह साहेब जी के दर्शन करना चाहती थी। जब साहेब जी तक खबर पहुंची तो वे हमारे घर जाने के लिए तैयार हो गये। यद्यपि साहेब जी बहुत पहले ही घरों में जाना बंद कर चुके थे तथा पैर छूकर बंदगी करने से परहेज करते थे। हम गली में चले जा रहे थे तब साहेब जी बोले, "तुम्हारा कबीर नाटक एक सफल कृति रही।" इसी समय मेरा पोता आदित्य सामने से दौड़ता हुआ आया और साहेब जी के चरणों में अपना सिर रख दिया। साहेब जी हंसते हुए बोले, "खुश रहो बेटा। तुम्हारा पोता है?" मैंने 'जी' कहा तो वे फिर हंसने लगे, "पोता-पोती के आगे सचमुच किसी का बस नहीं चलता। यह तो बड़ा उस्ताद है।" घर में पूजा के बाद जब हम लोग साहेब जी की आरती करने लगे तब वह फिर उठ कर अकेला थाली को पकड़ लिया और आरती करने लगा। इस बार भी साहेब जी मुस्कुराते हुए बोले, "वाह, बड़ा अद्‌भुत बालक है।"

चूंकि साहेब जी का दर्शन छत्तीसगढ़ में ही हर वर्ष हो जाता था मैं लगभग पच्चीस साल तक इलाहाबाद नहीं जा सका। सेवानिवृत्ति के बाद सन् 2007 के ध्यान शिविर में पहुंचा तो पास बैठे ब्रह्मचारियों को मेरे विषय में बताने लगे कि जब यह युवक था तब से मेरे संपर्क में आया है। जब इसके गांव में कार्यक्रम होता था, हाफ पैंट पहने मेरे सामने आकर बैठ जाता था। फिर शादी हुई, नौकरी लगी और धीरे-धीरे लिखते-लिखते इस मुकाम तक पहुंच गया। एक बार यह अपने हाथ भर के बच्चे को लेकर मेरे पास आया और कहने लगा, साहेब जी हम लोग इसे साधु बनाना चाहते हैं तब मैंने कहा था, "मेरा बेटा खुद साधु नहीं बनना चाहता और अपने बेटे को साधु बनाना चाहता है।" इतना कहकर साहेब जी हंसने लगे और हम लोग भी हंसे बगैर नहीं रह सके।

इस वर्ष अगस्त में नवापारा के ध्यान शिविर में साहेब जी का दर्शन मेरे लिए अंतिम साबित हुआ। मैं सद्‌गुरु कबीर के व्यक्तित्व पर केन्द्रित उपन्यास पर काम कर रहा था। इस विषय में वे मुझसे दो-तीन बार पूछ चुके थे और मैंने उन्हें पाण्डुलिपि इसी ध्यान शिविर में लेकर आने की बात कही थी। मैं आमदी वाले समधी को लेकर उनके दर्शन करने पहुंचा तो पहले की ही भांति हम दोनों को देखकर हंसने लगे, "इसे भी पकड़ लाये।" मैंने 'जी' कहा तो वे हम दोनों को अपने निकट बुला लिये। फिर घर-परिवार की कुशलक्षेम के साथ मेरी पत्नी के विषय में भी पूछे, इसके बाद पुस्तकों के सम्बन्ध में चर्चा होती रही। जाते ही मैंने श्री राम साहेब को उपन्यास की पांडुलिपि दे दिया था। मैंने उन्हें बताया कि उपन्यास ला दिया हूं तो वे बोले, "मैं समझ गया था।" अंत में उन्होंने कहा, "जाओगे तो जरूर लेकिन भोजन करके जाना।" यह साहेब जी का मेरे लिए कहा गया अंतिम वाक्य था।

आज उन्हें याद करता हूं तो आंखें भर आती हैं। बहुत दूर रहते हुए भी मैं साहेब जी के कितने करीब था। ऐसा लगता है मेरे मार्गदर्शक पिता, मेरे जीवन का सम्बल टूट गया और मैं बेसहारा रह गया हूं। अब मेरी गलती पर मुझे डांटने वाला कोई नहीं रहा। उनकी डांट में भी मेरे लिए कितना स्नेह था यह मैं ही महसूस करता हूं। इस संस्मरण के बहाने मैं उन्हें अपनी अश्रुपूरित श्रद्धांजलि के साथ शत-शत साहेब बंदगी अर्पित करता हूं।

कोलिहामार, गुरूर, बालोद,
छत्तीसगढ़

अभिलाष दास : अहंकार-विसर्जन का कलाकार

रविनन्दन सिंह

बात बीस वर्ष पहले की है। 1992 में मैं विश्वविद्यालय की पढ़ाई खत्म कर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहा था और अल्लापुर मुहल्ले में रह रहा था। एक दिन सूचना मिली कि कबीर परंपरा के बड़े आचार्य अभिलाष दास जी अपनी मंडली के साथ अल्लापुर के संगम सभा-मण्डप में संगोष्ठी करने वाले हैं। वहां उनका संभाषण होना था। मैंने सोचा कि कबीर के संदर्भ पर होने वाली चर्चा में मैं भी भाग लूं। मैं कबीर को अपना मानस गुरु मानता था और आज भी मानता हूं। मुझे कबीर संबंधी अपने ज्ञान पर भ्रम भी था, कदाचित दंभ भी। मैंने कुछ साथियों के साथ मिलकर तय किया कि अभिलाष दास जी से कबीर दर्शन एवं चिन्तन के कुछ बिन्दुओं पर सवाल जवाब किया जाये। नियत तिथि एवं समय पर हम लोग सभास्थल पर पहुंच गये। अभिलाष दास जी एक चौकी पर विराजमान थे, नीचे दरी पर उनके बगल में उनकी गायक मण्डली तैयार थी तथा सामने श्रोतागण एवं भक्तजन बैठे थे। मैं भी साथियों के साथ स्थान लेकर बैठ गया। संयोजक की उद्घोषणा के पश्चात अभिलाष जी का संभाषण शुरू हुआ। सम्भाषण के पश्चात उनकी गायन-मण्डली ने कबीर के भजन गाये। जब कार्यक्रम समाप्त हुआ उसी समय मैं अभिलाष जी के पास जाकर उनसे कुछ प्रश्न करने संबंधी निवेदन किया। उनकी सहमति के पश्चात मैं अपने तुच्छ ज्ञान के दंभ से भरा हुआ अनेक प्रश्न करना शुरू किया। जैसे—कबीर ने माला और मूर्ति का विरोध किया था फिर आप कबीर को मूर्तिवत खड़ा करके माला-फूल क्यों चढ़ाते हैं? कबीर किसी भी तरह के कर्मकाण्ड के विरोधी थे तो आप लोगों ने मुण्डन कराना, श्वेत वस्त्र धारण करना तथा अन्य कर्मकाण्डों को क्यों विकसित किया, क्या ऐसा करके आप कबीर के सच्चे अनुयायी हो सकते हैं? कबीर सहजता के उपासक थे वहीं कबीरपंथी अनेक प्रकार के बाह्यानुशासनों से लदे हुए हैं जबकि कबीर आत्मानुशासन की बात करते हैं, ऐसे में आप कबीर के सच्चे अनुयायी कैसे हैं? इसी तरह के अनेक प्रश्न मैंने किये और उन प्रश्नों में जिज्ञासा का भाव नहीं था बल्कि आरोप थे। किन्तु मैंने देखा कि अभिलाष जी सहज रहे, उनके चेहरे पर हल्की मुस्कुराहट थी मानो वे मेरी नादानी को समझ रहे हों। एक-एक प्रश्न का उन्होंने सहजता से उत्तर दिया, तर्कों के साथ बातें रखीं। ऐसा लग रहा था कि ज्ञान की वर्षा हो रही है और मेरा सारा दम्भ उस वर्षा जल से पिघलकर बह रहा है। धीरे-धीरे प्रेम और स्नेह के शब्दों ने मेरे ज्ञान-अहंकार के पत्थर को चूर-चूर कर दिया। मैं महसूस करने लगा कि अभिलाष दास ने कबीर को आत्मसात कर लिया है, अथवा कबीर ने परकाया प्रवेश करते हुए अभिलाष दास जी में अपने को स्थापित कर लिया है। मैं नतमस्तक था और अभिलाष जी ने मुस्कराते हुए मेरे सिर पर हाथ रखा। मेरे मानस गुरु का आशीर्वाद मुझे मिल चुका था।

समय गुजरता रहा, अभिलाष दास की कीर्ति का विस्तार होता रहा। उनकी खुशबू दिगन्त में विसरित होती रही। वे एक पौधे से विकसित होकर वटवृक्ष का आकार लेते रहे। मेरी उनसे दूसरी मुलाकात नहीं हुई

किन्तु उनके साहित्य का अध्ययन करता रहा, उसी से मैं उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विस्तार का आंकलन करता था। भले ही उनसे मेरी दूसरी मुलाकात नहीं हुई किन्तु अपार्थिव संवाद उनसे हमेशा बना रहा। कई बार मुलाकातों एवं अत्यन्त करीब होने पर भी सूक्ष्म एवं अदृश्य प्रकाश नहीं मिल पाता और दूर रहकर भी सूक्ष्म संवाद किया जा सकता है। इसी प्रकार का एक सूक्ष्म रिश्ता मेरे और अभिलाष दास जी में बना रहा। शरीर से दूर किन्तु आत्मा के करीब। वे कबीरमय थे और मैं कबीर अनुरागी। एक दिन अचानक समाचार-पत्रों से सूचना मिली कि वे पार्थिव रूप में नहीं रहे। दुख हुआ किन्तु खुशी हुई कि कोई वटवृक्ष था जो अपना दुनियवी दायित्व पूरा कर गया। उसके द्वारा अनेक नये वटवृक्ष उगाये गये, विकसित हुए। कबीर की परम्परा एवं चिन्तन को आगे बढ़ाने में अभिलाष दास हमेशा स्मरण किये जायेंगे। जब-जब कबीर की स्मृति होगी, अभिलाष दास जी का संदर्भ आयेगा। उसी तरह जैसे बुद्ध के साथ आनंद, महावीर के साथ भद्रबाहु, नानक के साथ मरदाना, परमहंस के साथ विवेकानन्द का संदर्भ आता है।

कबीर दर्शन का बीज शब्द है 'सहज'। उनके चिन्तन में 'सहज' शब्द अनेक बार, अनेक संदर्भों में आता है। जैसे, सहजशीलता, सहज अनुभूति, सहजमार्ग, सहजशून्य, सहजसमाधि आदि। कबीर का केन्द्रीय भाव था सहजता की प्राप्ति जिसे गीता में स्वभाव या समभाव में स्थित होना कहा गया है। अभिलाष जी इसी सहजता के प्रचारक थे। आज की यान्त्रिक जीवन शैली में हर व्यक्ति मशीन की तरह व्यवहार कर रहा है, अवसादों से ग्रस्त है। ऐसे में सहजता स्थापित कर लेना अत्यन्त कठिन है। पूरी प्रकृति सहज है, केवल मनुष्य असहज है। यहां तक कि जंगल के पशु-पक्षी भी सहज हैं मानव को छोड़कर। आदमी जो है वैसा दिखता नहीं और जैसा दिखता है वैसा होता नहीं। भीतर कुछ है, बाहर कुछ है। बाहर-भीतर का यही भेद असहजता का कारक है। यह भेद वहीं है जहां अहंकार है, जैसा मुझे था ज्ञान का अहंकार। अभिलाष दास जी ने बड़ा उपकार किया मेरे ऊपर। मेरे अहंकार को उन्होंने आइना दिखा दिया। सहजता और अहंकार दो विरोधी चीजें हैं। दोनों एक साथ नहीं रह सकते। सहजता तभी आयेगी जब अहंकार का विलय हो जायेगा। सहजता अहंकार के विसर्जन का परिणाम भी है और कारक भी। सहजता अहंकार के विसर्जन का कल्प है।

अभिलाष दास जी सहजता की प्रतिमूर्ति थे। यह सहजता सिद्धों, साधकों, संतों, सूफियों और भक्तों को कठिन साधना के पश्चात मिल पाती है। यह कठिन मार्ग है। वीतरागी बनकर ही इसे हासिल किया जा सकता है। किन्तु वीतरागी बन पाना आसान नहीं है। राग के ध्रुवों पर जाना आसान है, विराग के ध्रुवान्त पर चले जाना भी आसान है किन्तु वीतराग बन जाना कठिन है। वस्तुतः जीवन दो ध्रुवों—बुद्धि एवं भावना के बीच ही जिया जाता है। बुद्धि के छोर पर की गयी यात्रा बाहर की समृद्धि अर्जित करती और भावना के छोर पर की गयी यात्रा अन्दर की समृद्धि खड़ा करती है। बाहर और भीतर दोनों यात्राओं का संतुलन ही सहजता है। केवल बाह्य या केवल अभ्यान्तर दोनों अधूरे हैं। दोनों के बीच का संतुलन ही वीतराग है, सहजता है। बुद्ध दर्शन का प्रसिद्ध कथन कि वीणा के तारों को इतना मत खींचो कि टूट जाये, इतना ढीला मत कर दो कि जीवन-संगीत मर जाये। न अधिक खींचना, न अधिक ढीला करना, यही सहजता है, यहीं से संगीत का सोता फूटने लगता है। बस, छोड़ना है खुद को भावना और बुद्धि की सरणियों के बीच। बह जाना है नदी के प्रवाह के साथ। खोल देना है बंधनों को, बंदिशों को तोड़ देना है। कोई प्रतिरोध न रह जाय अन्दर भी, बाहर भी। जो बहना शुरू कर देगा उसका अहंकार विसर्जित होने लगेगा, सहजता की यात्रा प्रारंभ हो जायेगी। किन्तु जिसका भरोसा बुद्धि पर है, तर्क पर है, वे इस मर्म को नहीं समझ सकेंगे। कबीर का मार्ग

सहज मार्ग है, एक प्रवाह है। इस पर चलने के पूर्व अपने अहंकार को जला देना होगा। विविध सिद्धान्तों, पूजा-पद्धतियों और बाह्याचारों का लबादा ओढ़कर सहजता प्राप्त करना संभव नहीं है। ऐसा बावरा या मस्ताना ही सहज होगा जो प्रवाह में बह रहा हो, जो दुनियवी दायित्वों के बीच में रहकर भी मुक्त हो, विदेह बन चुका हो, जो पत्र-पुष्प की जगह स्वयं को परमात्मा की वेदी पर समर्पित कर चुका हो, अहं को विसर्जित कर चुका हो। अभिलाष जी ऐसे ही सिद्ध पुरुष हैं जो कामनाओं की दुनिया के बीच रहकर भी निष्काम साधना करते रहे, मुक्त रहे तथा अब तो पार्थिव शरीर से मुक्ति लेकर अनंत यात्री बन चुके हैं।

अभिलाष दास जी कुण्डली में बसे कस्तूरी के खोजी हैं। उनके अनुसार शान्ति, आनंद बाहर नहीं, अन्दर स्थित है। बाहर से देखने पर पूरी मनुष्य जाति धार्मिक मालूम होती है किन्तु अन्दर से शान्ति और आनन्द नहीं उपलब्ध हो पाता। जिधर देखिए वहीं पूजास्थलों की भरमार है। एक तरफ मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारे आदि बनते ही जा रहे हैं दूसरी ओर अवसाद, अराजकता, अशान्ति, विघटन, हिंसा आदि का आयतन भी बढ़ता जा रहा है। यदि पूजा स्थलों के निर्माण से, मूर्ति-पूजा आदि से शान्ति मिलती तो दुनिया के सारे कल्मष अब तक समाप्त हो जाते। किन्तु हकीकत इसके विपरीत है। बाह्य धार्मिक प्रयत्न शान्ति नहीं दे सकते। उसके लिए अन्दर उतरने की कला आनी चाहिए। सहजता के मार्ग पर चलकर ही अन्दर प्रवेश किया जा सकता है। प्रेम के माध्यम से ही अंहकार का विसर्जन किया जा सकता है। कबीर, नानक, चैतन्य का यही मार्ग है। अभिलाष दास जी ने इसी मार्ग को चुना। उनकी दौड़ अलग थी, वे दुनिया की दौड़ में शामिल नहीं थे।

उपनिषदों के अनुसार विद्या दो प्रकार की है— 'अपरा' और 'परा'। अपरा अर्थात दुनियवी विद्या नाम-रूप तथा दिक-काल से घिरे हुए जगत की विद्या है जो अंधकार में प्रवेश कराती है। कबीर इसी विद्या की ओर इशारा करते हुए कहते हैं कि 'हे विद्या तू बड़ी अविद्या, तुम सन्तन की कदर न जानी।' कठोपनिषद् का कथन है कि—'अविद्या में स्थित स्वयं को पंडित मानते हैं यद्यपि वे मूढ़ होते हैं, वे उसी प्रकार भटकते रहते हैं जैसे कोई अंधा आदमी रास्ते में भटकता है।' दूसरी विद्या परा विद्या है जो सत्य एवं ब्रह्म का चिंतन कराते हुए आनंद की प्राप्ति कराती है। यह मनुष्यों को बंधनों से मुक्त करती है। यही विद्या है जो सारे धर्मों का भेद मिटा देती है। बुद्ध के अनुसार संसार के दुखों का मूल कारण 'अविद्या' है और विद्या के अंकुरित होने पर स्वतः दुखों का शमन हो जाता है। दोनों विद्याएं एक साथ नहीं रहतीं। दोनों के प्रतीक अहंकार और प्रेम भी एक साथ नहीं रह सकते। कबीर इसी तरफ इशारा करते हुए कहते हैं—

जब मैं था तब तू नहीं, अब तू है मैं नाहिं।
प्रेम गली अति सांकरी, जामें दो न समाहिं।

'विद्या' की साधना यम-नियम-अनुशासन का मार्ग है। एक लम्बी साधना के पश्चात विद्या की प्राप्ति होती है और तब जाकर जीवन में स्थायी सुख उपलब्ध हो पाता है। किन्तु इसके लिए कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता है भीतर प्रवेश करने की। आनंद कहीं बाहर नहीं बल्कि हमारा स्वभाव है जो अवसादों, सिद्धान्तों, विचारों की परतों के नीचे दबा हुआ है। आवश्यकता है इन परतों को हटाने की, भीतर प्रवेश करने की। किन्तु भीतर प्रवेश करने की कला हमें आती नहीं है इसीलिए सर्वत्र दुख है। जो बाहर है, उसे अहंकार है और वही दुखी है। जो अन्दर है वही सहज है और सुखी है। बाहर होने का अर्थ है वासनाओं में रहना, इच्छाओं के वश में होना, शर्तों पर जीना। शर्त होती है कि अमुक कामना पूरी हो जाये तभी सुख आयेगा, कामनाएं पूरी होंगी तभी जीवन शुरू होगा। शर्तें जीवन भर आगे चलती हैं और मनुष्य उसके पीछे भागता रहता है। यह मरीचिका दौड़ चलती रहती है और एक

दिन दौड़ते-दौड़ते वह गिरता है और उसे हम मृत्यु कहते हैं। शर्तें मरीचिका दौड़ में कभी पूरी नहीं होंगी। शर्तों के पूरा होने का इन्तजार बेमानी है। जीवन के लिए कल की प्रतीक्षा ही बेमानी है। जीवन तो अभी है और यहीं है, फिर कल क्यों? शर्तों ने हमारी हंसी छीन ली है। अब बौद्धिक लोग नहीं हंसते केवल पागल हंसते हैं, दीवाने हंसते हैं। कहा है किसी ने—

या तो दीवाना हंसे, या खुदा जिसे तौफीक दे।
वरना इस दुनिया में आकर मुस्कुराता कौन है॥

अभिलाष दास जी ऐसे ही दीवाने थे, मस्ताने थे। वे जीवनपर्यन्त मुक्त रहे, मुक्ति की कामना करते रहे। सहज थे, सहज मार्ग के प्रचारक थे। उन्हें किसी प्रकार का अहंकार नहीं था क्योंकि उनके पास शर्तें नहीं थीं। वे अन्दर और बाहर के सन्तुलन पर टिके थे अतः उनके पास वासनाएं भी नहीं थीं। वे पूर्णतः आजाद थे। इस जगत में भी आजाद और उस जगत में भी। कबीर की पंक्तियों से ही मैं उन्हें श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूं—

हमन है इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या।
रहें आज़ाद या जग में, हमें दुनिया से यारी क्या॥

हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद

सद्गुरुदेव के प्रथम दर्शन

विमलनाभ श्रीवास्तव

सर्वप्रथम मैं अपने श्रद्धा-सुमन सद्गुरुदेव के चरणों में समर्पित करता हूं।

श्रद्धा सुमन है अर्पित, गुरुदेव आपके चरणों में।
स्वीकार करो मेरा बन्दन, है शीश आपके चरणों में॥

मेरे पूज्य पिताजी के आध्यात्मिक गुरु राधास्वामी मत के संत महर्षि शिवव्रत लाल वर्मन (दातादयाल) जी के प्रभावशाली तेजमयी आकर्षक चित्र के अवलोकन तथा उनके तपस्थली जो वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश के जिला ज्ञानपुर के गोपीगंज में स्थापित 'राधास्वामी धाम' पर प्रति वर्ष महर्षि जी के जन्म एवं निर्वाण दिवस महाशिवरात्रि के अवसर पर उनके परम शिष्य परम संत पं. फकीर चन्द (परम दयाल) जी के आगमन पर मुझे उनका सान्निध्य एवं सत्संग प्राप्त होता रहा। जिसके प्रभाव से मेरे कुछ सत कर्म जाग्रत हुए और आध्यात्मिक अभिरुचि प्रस्फुटित हुई।

भूमि में पड़े हुए स्वस्थ बीजों का उचित समय पर प्रस्फुटित होना निश्चित है। इसी क्रम के अनुसार मेरे भी प्रारब्ध ने मुझे सद्गुरुदेव के पास लाकर खड़ा कर दिया। परम संत, रहनी सम्पन्न प्रातः स्मरणीय सद्गुरुदेव जी के दर्शन का सर्वप्रथम सौभाग्य मुझे कबीर मन्दिर प्रीतमनगर, इलाहाबाद में सन् 1987 में रविवारीय सत्संग के अवसर पर प्राप्त हुआ। उनके आकर्षक व्यक्तित्व, ओजपूर्ण वाणी एवं प्रभावशाली प्रवचन ने मुझे अनायास ही अपनी ओर आकर्षित कर लिया। उस दिन के बाद से पूज्य गुरुदेव के प्रति मेरी श्रद्धा एवं आस्था उत्तरोत्तर बढ़ती ही गयी। मेरा हमेशा यह प्रयास रहता था कि

उनका अधिक से अधिक दर्शन एवं सत्संग प्राप्त होता रहे। अतः मैं समय से पहले पहुंचकर उनका चरण स्पर्श करता और मुझे वे 'मस्त रहो' का आशीर्वाद देते थे।

एक रोज वे मौज में थे। मेरे चरण स्पर्श करने के पश्चात उन्होंने 'मस्त रहो' का आशीर्वाद दिया और कहा "इस संसार को इसी जीवन में जीत कर जाना है। और जीवन की अवधि बहुत थोड़ी है। यह भी पता नहीं कि कब समाप्त हो जाये। अतः अभी से कमर कसकर डट पड़ना है। संसार को जीतना, अपनी इच्छाओं को जीतना है।" उनके इस वाक्य को मैंने गुरुमंत्र मानकर धारण कर लिया और इस ओर प्रयास करता रहा। परन्तु इसकी वास्तविक विधि कबीर मन्दिर प्रीतमनगर, इलाहाबाद में सद्गुरुदेव के निर्देशन में आयोजित ध्यान शिविर से प्राप्त हुई। मेरी जिज्ञासाओं का समाधान उनके प्रवचनों से स्वतः प्राप्त हो जाता रहा। अतः मुझे उनसे प्रश्न पूछने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। एक बार मैंने उनसे अलग में प्रश्न किया कि "क्या गुरु दीक्षा लेना आवश्यक है? क्या संत-सद्गुरु के द्वारा प्राप्त ज्ञान के आधार पर अंतिम लक्ष्य तक नहीं पहुंचा जा सकता।" उनका उत्तर था—"हां! गुरु दीक्षा लेना आवश्यक है।" फिर तो आगे किसी प्रश्न का सवाल ही नहीं था। मैंने उनसे अपनी विनती एक कविता के इन पंक्तियों के माध्यम से किया।

सद्गुरु अब मोहि दीक्षा दीजै।
अब तक गुरु कबहुँ नहीं कीन्हों, मोहि शरण अब लीजै।
बहुत ज्ञान की सुधा पिलाये, तृप्त मोहिं अब कीजै॥

उस समय कबीर आश्रम, कबीर नगर, इलाहाबाद में ध्यान शिविर चल रहा था। उन्होंने कहा "मैं तो रोज दीक्षा दे रहा हूं।" मैंने गले में रुद्राक्ष की माला पहन रखी थी। उन्होंने कहा "तुम 108 मनका (दाने) की माला धारण किये हो, मैं तो एक मनका (दाना) की माला देता हूं। जब तुम्हारा मन बिलकुल पक्का हो जाये तो आ जाना।" एक दिन प्रातः 9.00 बजे के लगभग कुछ फल-फूल, माला एवं मिष्ठान्न आदि लेकर पहुंच गया। उस समय गुरुदेव जी अपने कक्ष में अकेले थे। उन्होंने संत श्री राम साहेब को बुलाया जिन्होंने शीघ्र ही आरती आदि की व्यवस्था कर दी और सद्गुरुदेव ने कुछ बातें बतायी और मेरे गले में दीक्षा के प्रतीक चिह्न के रूप में माला पहना दिया।

परम श्रद्धेय संत श्री धर्मेन्द्र साहेब जी के दिशा-निर्देश में मेरे द्वारा अनेक संतों, महात्माओं, चिन्तकों, एवं विचारकों के उत्तम विचारों को संकलित कर 'विचारमाला' के नाम से एक पुस्तक प्रकाशित होकर कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद के वार्षिक अधिवेशन पर वर्ष 2009 में आई। मुझे यह ज्ञात भी नहीं था कि पूज्य सद्गुरुदेव जी ने इसका अवलोकन किया है या नहीं। शाम का समय था, पूज्य सद्गुरुदेव जी अपने कक्ष के बाहर बैठे थे। मैं सामान्य रूप से बन्दगी करने गया। बन्दगी के पश्चात उनका वही आशीर्वाद 'मस्त रहो' प्राप्त हुआ। उन्होंने कहा "अच्छे मोती चुने हो, इसके सहारे अपना जीवन पार कर लो।"

वर्ष 2011 के वार्षिक अधिवेशन में सद्गुरु निवास के बाहर एक बैनर टंगा था—"है लक्ष्य पहुंचना उस मंजिल तक जिसके आगे राह नहीं।" मेरी समझ में जीवन की नौका को इस संसार-सागर से पार लगाने के लिए सद्गुरुदेव का यही एक गुरुमंत्र पर्याप्त है।

-राजरूपपुर, इलाहाबाद

करम ऐसा किया तूने

महेश दास

गुरु मेरी पूजा, गुरु गोविन्द।
गुरु मेरा पारब्रह्म, गुरु भगवंतऊ

परम आराध्य सद्गुरु के पावन चरणों में मेरा शत-शत नमन।

भारतीय इतिहास के मध्य युग में जिस प्रकार से सद्गुरु कबीर साहेब एक अभूतपूर्व प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व लेकर अवतरित हुए थे, वे युग के सजग प्रहरी थे। अंधविश्वास, परमुखापेक्षिता एवं संकीर्ण मनोवृत्तियों की पंकिल भूमि से समाज को उठाने का प्रयास आजीवन किया था, उसी प्रकार की संपूर्ण प्रतिभा को लेकर सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी ने संपूर्ण समाज को अपने ज्ञान-प्रकाश से आलोकित किया। जैसे सद्गुरु कबीर में सागर जैसा व्यक्तित्व था, उनके लिए संपूर्णानन्द ने कहा है—"कबीर जैसे महापुरुष का जीवन उस हीरे के समान है जिसके कई पहल होते हैं। हर पहल अपने में संपूर्ण सुन्दर और ज्योतिर्मय होता है।" हीरे के छप्पन पहल बताये जाते हैं। उसी प्रकार पूज्यपाद गुरुदेव जी के अनेक पहल हैं और हर पहल अपने आप में उज्ज्वल और बेदाग है। वे पहल हैं—

सागर जैसा व्यक्तित्व, साधक, संत, योगी, प्रखर ज्ञानी, तपस्वी, महान प्रतिभा के धनी, दिव्य चरित्र, उच्च विचारक, उदार व्यवहार, प्रगल्भ बुद्धि, स्पष्ट प्रवचन, निष्फिक्र जीवन, निस्संदेह बोध, अखंड वैराग्य, पूर्ण आत्मलीन पुरुष, विद्वान, लेखक, कवि, प्रवक्ता, आलोचक, दार्शनिक, गुरु, सद्गुरु, व्यवस्थापक, अभिभावक, शिल्पकार, प्रतिपादक, नायक, संवाहक, साहसी, पुरुषार्थी, समतावादी, सत्यवादी, संयमी, परोपकारी, समय प्रबन्धन के धनी, एकाग्रनिष्ठ, अनासक्त जीवन, मधुकर वृत्ति, निष्कलुष जीवन, विरति विरागी, यथार्थवादी दृष्टिकोण, नैराश्यभावी, बेदाग, बेलाग, कर्मकरों के पक्षधर, दबे-कुचले और पीड़ित लोगों के मसीहा, मूक लोगों की आवाज, शोषक वर्ग के विरोधी, मानव समानता की वकालत करने वाले अधिवक्ता, मनोविज्ञानी, शरीर विज्ञानी, समाज सुधारक, जातिगत श्रेष्ठता के विरोधी, बंधुत्व भावना, न्याय तथा एकता के प्रतिपादक; अंध मान्यता, अंधविश्वास, बाह्याडम्बरता, जातिप्रथा के उन्मूलन कर्ता।

भारत में जन्में हजारों-हजार मनीषियों ने संपूर्ण मानवता के कल्याण के लिए नये-नये सूत्र और नये-नये प्रयोग तलाशे हैं। भारत की मनीषा ने भले ही हवाई जहाज का आविष्कार न किया हो, लेकिन मनुष्य के अंदर रहने वाली चेतना का विकास अवश्य किया है। भारत भले ही अपने बलबूते पर चंद्रलोक तक न पहुंचा हो, लेकिन अंतरलोक तक अवश्य पहुंचा है। यही कारण है कि भारत के पास राम की मर्यादा है, कृष्ण के कर्मयोग की परंपरा है, महावीर की अहिंसा के रूप में इंसानियत का दृष्टिकोण है, तथागत बुद्ध के पास करुणा और संतुलित जीवन के लिए मध्य मार्ग है तो सद्गुरु कबीर जैसे मस्तमौला का सत्य का निरूपण और सारे भ्रम मान्यताओं और अंधपरम्पराओं पर प्रहार है।

ऐसे ही पूज्य गुरुदेव जी अपनी कथनी, करनी और रहनी के द्वारा मानव समाज को अमूल्य ज्ञानरत्न दे

गये। एक लम्बा जीवन जीने वाले गुरुदेव के जीवन पर आज तक चारित्रिक अंगुली किसी ने नहीं उठायी। उनका संपूर्ण जीवन एक खुला हुआ ग्रंथ था। बेदाग और बेलाग जीवन रहा। भीतर से पूर्ण अनासक्त और बाहर से निष्कलुष जीवन रहा। उनका महावाक्य है—

देह क्षेत्र में कर्म प्रवणता, मन प्रदेश में अचल समाधि।
जीवन का साफल्य इसी में, जब मानस होवै निर्व्याधिû
(हृदय के गीत)

वे मन, कर्म, वचन से सदैव प्राणि मात्र के कल्याण के लिए पुरुषार्थ करते रहे। परमार्थ पथिकों को सदैव सावधान करते रहे। वे सदैव अपनी वाणियों से अलख जगाते रहे—

दो दिन की जिन्दगी में मत दाग तू लगाना,
चलना सम्हल सम्हल के माया नगर यही हैû
(भजनावली)

वैसे तो गुरुदेव जी का हर वाक्य, हर क्रियाकलाप हम सबके लिए प्रेरणादायी रहा। उनका हर वाक्य वेद-शास्त्रों की सूक्तियों से कम नहीं रहा। उनके कुछ महासूत्र ऐसे हैं जो जीवन कल्याण के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। वे महासूत्र हैं—

1. कम खाओ गम खाओ—यदि हम कम खाते हैं तो हमारा स्वास्थ्य ठीक रहेगा और गम खाते हैं अर्थात कम और संतुलित बोलते हैं और सहन करते हैं तो वाद-विवाद और मन की अशांति से दूर रहेंगे। क्योंकि लड़ाई-झगड़े का मूल कारण ज्यादा बोलना होता है। गीताकार भी कहते हैं—

युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु।

जो अपने आहार-विहार और कर्मों की चेष्टा उचित रखता है वह सब समय सुखी रहता है। किसी ने बहुत अच्छा कहा है—

भरम भादौ सकल छूटै, चक्र सब घट खोलिये।
अल्प भोजन अल्पनिद्रा, अल्पमुख से बोलियेû

सद्गुरु सदैव कम खाने पर जोर देते थे। जो भी उनके संपर्क में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में रहते उन्हें कम खाने की और गम खाने की राय देते रहते थे।

2. सावधानी ही साधना है—जब हम असावधान होते हैं तो साधना से और कल्याण से दूर चले जाते हैं। तथागत बुद्ध ने धम्मपदं के अप्पमाद वग्गो में कहा है—

अप्पमादो अमत पदं पमादो मच्चुनो पदं।
अप्पमत्ता न मीयन्ति ये पमत्ता यथा मताû

अप्रमाद अमृत पद है और प्रमाद मृत्यु पद है। हर व्यक्ति प्रमादी है। सबके पास इगो प्राब्लम अर्थात अहंकार की समस्या है। कल्याणार्थी को अपने प्रमाद पर ध्यान देने की आवश्यकता है। अपने दोषों को जब तक गिन-गिन कर बाहर नहीं करेंगे तब तक अप्रमाद की स्थिति को प्राप्त नहीं किया जा सकता। जब तक आदमी आत्मनिरीक्षण नहीं करता तब तक निर्दोषता का जीवन नहीं जी सकता। साधक यहीं पर भूल कर बैठता है। वह अपने भीतर के दोषों को खंगालता नहीं है। जब तक वह दोष-दुर्गुणों को छोड़ेगा नहीं, तब तक आत्मबोध को, अमृत पद को पा नहीं सकता। गुरुवर कहा करते थे कि जब साधक अकेले बैठकर अपनी समीक्षा न कर दूसरों की समीक्षा में लग जाते हैं, दूसरे के व्यवहार और क्रियाकलापों की ही समीक्षा करते रह जाते हैं यहीं से असावधानी होती है। साधक व्यर्थ चिंतन, व्यर्थ बात और व्यर्थ व्यवहार से बचे रहें तो सावधानी ही साधना है इस सूत्र का पालन होता रहेगा।

3. रुके न और लौटे न—साधना मार्ग में जब कोई चले और उसे सही ज्ञान हो जाये तो उसके बाद सही स्थिति तक पहुंचने के लिए उसे दो काम करने होंगे, वे हैं—'रुके न और लौटे न।' यदि किसी को बैंगलोर जाना है तो उसको दो ही काम करना होगा—1. रुके न और 2. लौटे न। यदि कुछ दूर चले और रुक गये तो वह नहीं पहुंच पायेगा। और लौट गये तो पहुंचने की बात ही नहीं है।

साधना मार्ग में लोग चलते हैं तो कुछ जीवन सुधार की स्थूल क्रियाकलाप जैसे मोटे-मोटे दोषों को छोड़ दिये, सदाचार, संयम, कुछ बोलने-गाने की प्रक्रिया जान लिये तो मान लिये कि हममें पूर्णता आ गयी और

यहीं पर रुक गये। आगे का काम सूक्ष्म आसक्तियों, सूक्ष्म दोष-दुर्गुण के त्याग की ओर ध्यान नहीं दिये तो काम बनने वाला नहीं, मार्ग तय नहीं हुआ। अभी तो कुछ दूरी ही तय की गयी है। गुरुदेव जी प्रायः कहा करते थे कि साधक के मोटे-मोटे दोष छूट जाने और उसको अपने सिद्धान्त का ज्ञान, जड़-चेतन का पूरा ज्ञान होने के बाद उसका मुख्य काम रह जाता है स्वभाव का सुधार। इसका सुधार हो गया तो मानो उसका पूरा काम हो गया।

हम सब जानते हैं लौटने और रुकने का क्या परिणाम होता है? कछुए और खरगोश की कहानी इसी बात की ओर इंगित करती है कि रुकने और लौटने का परिणाम क्या होता है। खरगोश दौड़ने में बहुत तेज और कछुआ चलने में बहुत मंथर गति लेकिन जीतता कौन है? कछुआ जीतता है, क्यों? एक ही विशेषता है—निरंतरता। कछुआ न लौटता है और न रुकता है। निरंतर चलने के कारण बाजी जीत जाता है और खरगोश तेज दौड़ने वाला होने के बावजूद रुक जाता है, उसमें निरंतरता नहीं होने के कारण हार जाता है। योगदर्शन में कहा गया है, "स तू दीर्घकालनैरन्तर्यसत्कारासेवितो दृढ़ भूमिः।" अर्थात रुके न, चलता रहे निरंतर, लौटे न। लौट जाने का मतलब उलटा काम करना। जो सदाचार और संयम का जीवन जी रहे थे उसका उलटा करना अर्थात जीवन में असंयम, पठन-पाठन न कर व्यर्थ में समय बिताना और दोष-दुर्गुणों को अपना लेना। परिणाम—मंजिल तक नहीं पहुंचना।

पूज्यवर गुरुदेव ऐसे मंजिल पर पहुंचाने वाले सद्गुरु थे। उनके व्यक्तित्व में चार चांद लगे थे। व्यवहार पक्ष और परमार्थ पक्ष जो जीवन के दो महत्त्वपूर्ण पहलू हैं दोनों में उन्होंने जो प्रकाश दिया है युग-युगान्तर तक मानव समाज को उससे प्रेरणा मिलती रहेगी।

4. जन ही धन है—पूज्य श्री कहा करते थे कि परिवार-समाज में रहने वाले प्रत्येक सदस्य को धन मानें तो व्यवहार बहुत सुंदर और सुगठित रूप से चलेगा। परिवार या समाज में रहने वाले किसी भी सदस्य की उपेक्षा की जायेगी और भौतिक पदार्थों की ओर ध्यान देंगे तो परिवार और समाज में प्रेम स्थिर ही नहीं रह पायेगा।

5. आपस में सुन्दर व्यवहार—जो व्यवहार हम दूसरों से अपने लिए चाहते हैं वही व्यवहार हम दूसरों के प्रति करें। हर व्यक्ति चाहता है कि लोग मेरे साथ सुंदर व्यवहार करें, तो उसे भी चाहिए कि वैसा ही व्यवहार उनके प्रति करे।

पूज्यवर गुरुदेव जी का अनंत उपकार हम सब पर है। उनके उपकार को भुलाया नहीं जा सकता। गुरुदेव जी अपनी स्वरूपस्थिति का काम बहुत पहले ही कर चुके थे। अपनी बात समाज में रखने के पहले वे प्रायोगिक जीवन जीकर कहते थे और वही अमर संदेश हर परमार्थी को देते थे। वे कहते थे—

"बिना सद्आचरण धारे न कथनी काम आती है।"

'द बुक ऑफ मिरदाद' में मिकायन ने जब मिरदाद से प्रश्न पूछा कि क्या आप बता सकते हैं कि आप कौन हैं? आपका असली नाम, आपका देश कहां है, तो मिरदाद ने मिकायन से कहा था कि मिरदाद को जंजीरों से बांधना और पर्दों में छिपाना वैसे ही है जैसे गरुड़ को उस अंडे में डालना जिसे तोड़कर वह बाहर निकला है। जो आदमी अपने कवच में नहीं है उसे कौन-सा नाम दिया जाये। जिसके हृदय में संपूर्ण विश्व के प्रति करुणा और प्रेम समाया है उसे किस देश का कहा जाये। तब मिरदाद ने मिकायन से कहा था कि मित्र! अगर तुम मुझे जानना ही चाहते हो तो पहले अपने आपको जान लो। ऐसा करके तुम मेरी वास्तविकता को जान सकोगे।"

ऐसे ही पूज्य गुरुदेव जी साधकों को आत्मतत्त्व का बोध देते रहे। वे कहते थे कि व्यवहार के लिए भौतिक नाम, रूप, देश की आवश्यकता है। अंत में सब छूट जायेंगे, रह जायेगा केवल अपनी निज सत्ता, आत्मसत्ता।

गुरुदेव जी का जीवन सब समय राग-द्वेष विहीन जीवन रहा क्योंकि जिसको कुछ पाना नहीं, कुछ चाहना नहीं, उसे संसार के प्राणी-पदार्थों से क्या लेना-देना। वे हर समय अपना और संसार का सम्बन्ध क्षणिक

और अल्प मानते रहे। उनकी हर वाणी शरीर-संसार की असारता और स्वरूप की अमरता की ओर इंगित करती रही—

हृदय से जगत को नहीं चाहता हूँ,
हमारी जगत से ये अंतिम बिदाईû

उनका मन सूखे नारियल की तरह संसार-शरीर में रहते हुए सदैव अपने स्वरूप में स्थित रहा तभी तो उनकी वाणी परिलक्षित होती है—

हुआ पूर अभिलाष जो चाहते थे,
सदा के लिए अब अभय देश पाईû

कहा गया है—वेद का सार सत्य है, सत्य का सार इन्द्रिय-मन का संयम है, संयम का सार त्याग है—इन सभी सद्गुणों के पर्याय पूज्यवर गुरुदेव जी थे।

उस परम सद्गुरु, करुणानिधान, दीनबन्धु, करुणासागर के उपकार और असीम कृपा को हृदय से भूल पाना असंभव है, क्योंकि—

"करम ऐसा किया तूने, भुलाया जा नहीं सकता।"

उस महामानव को कोटि-कोटि नमन।

कबीर पारख संस्थान, प्रीतमनगर, इलाहाबाद

हम हंसे जग रोये

शिवप्रसाद मिश्र

26 सितम्बर 2012 को प्रातः सविता समय से पूर्व ब्राह्ममुहूर्त में लगभग साढ़े तीन बजे संत शिरोमणि अभिलाष साहेब का शरीर कबीर आश्रम, कबीरनगर इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश में शांत हो गया। सूरज की किरणें जमीन तक पहुंच नहीं पायी थीं कि यह दुखद समाचार धरती पर अविरल गति से दूर-दूर तक फैल गया। चारों दिशाओं से लोग आश्रम की ओर दौड़ पड़े। उनके अंतिम दर्शन के लिए भीड़ उमड़ने लगी। पूर्व संध्या में आश्रम के साधु-संतों के साथ गुरुदेव जी साहेब बन्दगी में थे। नित्य की भांति अपने बिस्तर पर सोये और 'ऐसी करनी कर चलो, हम हंसे जग रोये' को सार्थक करते हुए इस असार संसार से सदा के लिए विदा हो गये। उनका सारा जीवन सरल, सादा, सुखद था और वैसे ही मृत्यु भी सुखद हुई। किसी डॉक्टर-वैद्य की उन्हें जरूरत नहीं पड़ी और न किसी से एक गिलास पानी मांगा।

उत्तर भारत का ऐसा कोई प्रदेश नहीं जहां से लोग उनके अंतिम दर्शन के लिए न आये हों। आश्रम का दोनों खण्ड साधु-संतों और भक्तों की भीड़ से खचाखच भरा था। इतनी भीड़ पर भी संयम और सन्नाटा का यह एक अद्भुत दृश्य था। ऐसे में हर व्यक्ति के मन में एक प्रश्न उठता है कि इस महापुरुष में वे कौन-कौन से गुण थे जिनके कारण अनुयायियों की इतनी भीड़ उमड़ पड़ी। सद्गुरु अभिलाष साहेब के जीवन और उनकी जीवन शैली को शब्दों में बांधना कठिन ही नहीं असंभव भी है, जैसे कोई पूछे सूर्य में तपन कितना है? चांद में शीतलता कितनी है? सागर की गहराई और उसका प्रवाह कैसा है? धरती कितनी सहनशील है? वैसे ही युगपुरुष अभिलाष साहेब में कितना ज्ञान-वैराग्य, कितनी निष्पक्षता, क्षमाशीलता, सहनशीलता और उदारता है इसकी व्याख्या कर पाना भी असंभव है।

सद्गुरु अभिलाष साहेब द्वारा लिखी 'गीतासार' पुस्तक की भूमिका मैं छब्बीस वर्ष पूर्व पढ़ा था। प्रसंग रोचक और तर्कसंगत था। इसी पुस्तक से प्रभावित होकर मैंने गुरुदेव के दर्शन पहली बार कबीर मंदिर

प्रीतमनगर में किया था। फिर तो उनके सान्निध्य में मैंने बीजक के दोनों भाग के अतिरिक्त उनकी और भी पुस्तकें पढ़ी।

इस प्रकार उनकी गहन शीतल छाया में मेरा जीवन पलने लगा। उनकी महती कृपा से और पूज्य धर्मेन्द्र साहेब जी की देख-रेख में मुझे पारख प्रकाश के एक कोने में थोड़ी सी जगह मिल गयी। जो मेरे लिए गौरव की बात थी। उन्होंने मेरे जीवन से अंधकार मिटाया, सच्चा मार्ग दिखाया, जीवन जीने की कला सिखायी, व्यवहार सिखाया। आज उनके अभाव में लगता है जैसे मेरा सब कुछ लुट गया हो। जब वे नहीं तो कुछ नहीं, किन्तु पारख दृष्टि से विवेकपूर्वक जब हम विचार करें तो ऐसा नहीं है, वे तो हमारे लिए ज्ञान कोष छोड़ गये हैं जो न कभी क्षीण होगा और न कभी नष्ट हो सकता है। सद्गुरु जी द्वारा लिखी एक सौ से अधिक पुस्तकें भारत और भारत परिधि के बाहर एक विशाल भूभाग तक अजर-अमर दीप की तरह फैल चुकी हैं। इन्हीं पुस्तकों को पढ़कर गुरुदेव के पवित्र विचारों को आधार मानकर लाखों-करोड़ों लोग अपने जीवन के गूढ़ तत्त्वों को समझ चुके हैं और न जाने कितने लोग इस पथ पर अग्रसर हैं।

जग जानता है पूज्य अभिलाष साहेब महात्मा कबीर के खेमे में एक ऊंचे स्थान पर विराजमान थे, आज हैं, और सदैव रहेंगे। कबीर साहेब का प्रामाणिक ग्रंथ 'बीजक' है। बीजक की सरल भाषा में व्याख्या करके पाठकों को समझने के लिए सहज कर दिया। बड़ी संख्या में लोगों ने इस पुण्य ग्रंथ को आदर के साथ अपनाया है। आपने अनुभव किया होगा कि बड़े-बड़े महात्मा अपने धर्म और सम्प्रदाय की तारीफ और तरक्की में सारा जीवन लगा देते हैं। दूसरे के धर्मों की निन्दा करते हैं, अपने धर्म को ही मोक्ष का द्वार बताते हैं, किन्तु संतश्रेष्ठ अभिलाष साहेब जी ऐसे महात्माओं से भिन्न थे। वे सम्पूर्ण मानव जाति के उद्धारक थे। उन्हें जहां भी अंधेरा दिखा वे वहीं पर ज्ञान का दीपक जलाये। वेद क्या कहते हैं?, शंकराचार्य क्या कहते हैं?, बुद्ध क्या कहते हैं?, गीतासार, उपनिषद् सौरभ, अष्टावक्र गीता, रामायण रहस्य और महाभारत मीमांसा आदि पुस्तकों को लिखकर पूज्य अभिलाष साहेब जी ने जनमानस में एक क्रान्ति पैदा कर दी है। उपरोक्त पुस्तकों को विद्वानों ने पढ़ा और गुरुवर की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

लेख लिखने के दो दिन पूर्व मुझे डॉ. आत्माराम त्रिपाठी ने जो संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान और भदरी प्रतापगढ़ इण्टर कालेज के अवकाश प्राप्त प्रवक्ता हैं, फोन पर बताया कि वे महाभारत मीमांसा आधे से अधिक पढ़ चुके हैं। उन्होंने गुरुदेव की मीमांसा को हृदय से सराहा और कहा कि आज ऐसे ही विद्वानों की आवश्यकता है जो धर्मग्रन्थों से काल्पनिक विचारों को बाहर कर दें।

कभी-कभी कुछ लोगों से यह बात सुनने को मिलती है कि वेद नारी वर्ग व शूद्र वर्ग को पढ़ना वर्जित है किन्तु गुरुदेव जी ने 'वेद क्या कहते हैं?' पुस्तक में उपरोक्त विचारों का घोर खण्डन किया है। वेद की ऋचाएं ऋषि-मुनियों के अतिरिक्त विदुषी नारियों और तथाकथित शूद्र संतों के द्वारा लिखी गयी हैं। वैदिक काल में वर्ण-व्यवस्था कर्म पर आधारित थी। सभी त्यौहार और उत्सव सभी वर्ग के लोग मिल जुलकर मनाते थे। सच पूछिये तो गुरुदेव ने अनेकों धर्मग्रन्थों की काल्पनिक कथाओं को अलग कर के धर्मग्रन्थों का आदर-सत्कार बढ़ाया है। सद्गुरु अभिलाष साहेब सभी धर्मों का आदर करते थे। वे नीर-क्षीर विवेकी थे। उनका कहना था सभी धार्मिक ग्रंथ मनुष्य के लिखे हुए हैं। उनमें से पाठक को चाहिए वह पारख दृष्टि से विवेकपूर्वक हीरा-मोती बटोर ले। असंभव कथन, चमत्कार और काल्पनिक प्रसंगों में न स्वयं उलझे न किसी को उलझाये। कबीर अनुयायियों को जितना लाभ गुरुदेव जी से हुआ उससे कहीं अधिक लाभ उन धार्मिक लोगों को हुआ जो सच और सुख की तलाश में भटके हुए थे।

सद्गुरु अभिलाष साहेब अपने शिष्यों-भक्तों से दूरी बनाकर नहीं रहते थे। वे सभी को पुत्रवत प्यार

करते थे। आज यही कारण है कि आश्रम के सभी महात्मा विद्वान, चरित्रवान, सहनशील और गुणवान हैं। यहां की कार्यकारिणी अति पवित्र है। पदलोलुपता का दोष किंचित मात्र नहीं है। स्वयं सद्गुरु अभिलाष साहेब के पास भी कुछ भी नहीं था। था भी तो केवल सोने के लिए बिस्तर, पहनने के लिए दो जोड़ी कपड़े। ऐसे वैराग्यवान पूज्य गुरुदेव जी थे कि उनका कहीं किसी बैंक में एक बचत खाता भी नहीं था। गुरुदेव जी की साधुता, विनम्रता उच्चकोटि की थी। उनसे मिलने जो भी आया उन्हीं का होकर रह गया। आश्रम के साधु-संतों पर उनकी गहरी छाप है। उनकी प्रभावशाली शिक्षा और सीख आश्रम के संतों में देखी जा सकती है। कार्यकारिणी का गठन एक व्यवस्था के संचालन और निर्वहन के लिए है। किसी पदाधिकारी के पास न तो कोई आफिस अलग से है और न किसी के नाम का नेम प्लेट। कार्यकारिणी में सभी संत एक दूसरे के पूरक और सहयोगी हैं। श्रमशीलता तो यहां के साधुओं का सौंदर्य है। साधु-संत की रहनी अगर किसी को देखनी हो तो इलाहाबाद के कबीर मंदिर में आकर देख लें। यह सब कुछ संत अभिलाष साहेब की ही देन है।

मैं आश्रम के साधु-संतों और कार्यकारिणी के सदस्यों के विवेक की भूरि-भूरि सराहना करता हूं जिन लोगों ने उत्तराधिकार पद के लिए पूज्य धर्मेन्द्र साहेब का चयन किया है। हमें पूरा भरोसा है कि पूज्य धर्मेन्द्र साहेब जी के दिशा-निर्देश में आश्रम क्षण-क्षण पग-पग विकास की दिशा में अग्रसर होता रहेगा।

मुझे विश्वास है कि एक दिन कबीर आश्रम, प्रीतम नगर इलाहाबाद जो सद्गुरु अभिलाष साहेब की तपस्थली है देश-विदेश के अनेकों विद्वानों के लिए शोध केन्द्र बनेगा। गुरुदेव जी की पुस्तकों का गहन अध्ययन और उस पर शोध कार्य प्रतिपादित होगा। गुरुदेव जी की तपस्थली से निकली ज्ञान-गंगा में मानव जाति का कल्याण सुनिश्चित है, न किंचित संशयास्ति। संसार का क्रम टूटता नहीं, प्रकृति अपने नियमों पर दृढ़ है। नियति की शृंखला को न कोई तोड़ पाया है न कोई तोड़ पायेगा। अतः हम सभी को गुरुदेव जी के अभाव से उपजी पीड़ा को सहना और संतोष करना ही उचित है। किसी ने ठीक ही कहा है—

सृष्टि का सृष्टि करना नियम है,
मृत्यु का मृत्यु ही नित्य क्रम है।
एक में व्याप्त खुशियां सृजन की,
दूसरे में सिसकता रुदन है।
खोता नहीं यहां पर कुछ भी,
केवल जिल्द बदलती पोथी।
जैसे रात उतार चांदनी,
पहने सुबह धूप की धोती।

प्रीतमनगर, इलाहाबाद

सबसे मीठा और प्यार से बोलो तथा कोमल बरताव करो। सावधान रहो, यह काम प्रायः पास वाले व्यक्तियों के प्रति नहीं हो पाता जो मनुष्य की सबसे बड़ी दुर्बलता है। जीवन के व्यवहार में सच्चा सुख तब मिलेगा जब साथियों से प्यार का व्यवहार होगा। निष्काम और निरहंकार रहो, बस, प्यार की अजस्त्रधारा जीवन में निरंतर बहती रहेगी। हमारा छुद्र मन नाना कामनाओं और अहंता-ममताओं में ग्रसित रहता है, इसलिए हम कसैले रहते हैं, अतः वाणी और व्यवहार भी कसैले रहते हैं। निष्काम, निर्मम और अहंकार रहित हो जायें; बस अमृत हो जायें और अमृत बरसाते चलें।

(पूज्य गुरुदेव जी : बसे आनंद अटारी)

गुरुदेव जी—नर से नारायण

ब्रह्मचारी भूपेन्द्र

अस्त होते हुए सूर्य ने संसार के लोगों से कहा कि मैं तो जा रहा हूं। मेरे चले जाने पर मेरा काम कौन करेगा? सभी मौन थे। सभा में पूरी तरह सन्नाटा था। तभी एक दीपक ने सामने आकर कहा—महाराज, मेरे से जितना सम्भव हो सकेगा अपनी क्षमता और शक्ति के अनुसार यह काम मैं करूंगा। इसी प्रकार मैं भी उस महामानव पूज्यवर गुरुदेव जी के बारे में लिखने का प्रयास कर रहा हूं। गुरुदेव जी के जीवनवृत्त की कुछ व्यावहारिक, आध्यात्मिक, कल्याणकारी विशेषताओं पर थोड़ा निवेदन कर रहा हूं।

अल्पकाल में भी अध्यात्म की उच्च बात कह देना—गुरुदेव जी का ऐसा व्यक्तित्व रहा है कि जो भी व्यक्ति श्रद्धा-भावपूर्वक उनसे मिलता वह उन्हीं का हो जाता था। अनेक भक्तों, साधकों एवं संतों का यह अनुभव है। मुझे सन् 1995 की फरवरी में आपके प्रथम दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। तब भी मैं उन्हें पूरा पाया था और अन्त समय तक पूर्णता में ही देखता रहा। उस समय मैं कक्षा 10 का छात्र था। आपका आगमन ग्राम-कोसमर्रा, तहसील-धमतरी (छ. ग.) में हुआ था। संयोग से मेरे शरीर के पिताजी ने छोटा-नया मकान बनवाया था। उसी में आपका निवास था। सुबह लगभग 9.00 बजे आप स्नान करके बरामदा में टहल रहे थे। दूर की यात्रा से आये थे। मैं उसी समय स्नान करके फूल लेकर आपकी बंदगी करने पहुंचा। अन्य संतजन स्नानादि कार्य में व्यस्त थे। गुरुदेव जी फूल अपने हाथ में लिये और मुझे सीने से लगा लिये। मुझे घोर आश्चर्य हुआ। जो महापुरुष अपना चरण तक स्पर्श नहीं कराते हैं वे मुझे अपने सीने से कैसे लगा लिये! इस बात को मैं किससे बताता, मन-ही-मन आनंदित होता रहा। मेरी खुशी का कोई ठिकाना न था। तत्पश्चात गुरुदेव जी ने मेरा नाम पूछा। मैंने कहा—गुरुदेव जी, मेरा नाम 'भूकेन्द्र' है। गुरुदेव जी ने कहा—बेटा, तुम्हारा नाम बहुत ही अच्छा है। भू = भूमण्डल यह शरीर है और आत्मा उसका केन्द्र है। शरीर-संसार का मोह त्यागकर आत्मा (केन्द्र) में लौट आना ही इस जीवन की सार्थकता है।

इस प्रकार गुरुदेव जी पहली मुलाकात में और थोड़े ही शब्दों में अध्यात्म का सार कह दिये। गुरुदेव जी का वह प्रथम उपदेश मुझे आज तक याद है और कभी भूलेगा नहीं। फिर बाद में मैं आपकी गोद में ही आ गया। आज से ही सही मैं आपके इस उपदेश को आत्मसात करने का संकल्प लेता हूं। यही मेरी तरफ से आपके लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी। सचमुच प्रथम दर्शन में ही गुरुदेव जी मेरे मन-मंदिर के आराध्य देव हो गये थे।

आपके पास जो भी साधक आया वह आपके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर आया और वह जहां भी रहा आपको आराध्य मानकर साधना करता रहा। यह आपके व्यक्तित्व का अद्‌भुत आकर्षण रहा है। पहली मुलाकात में ही हर व्यक्ति अपनापन महसूस करता

रहा और सदैव के लिए आपका हो जाता था। इतना बड़ा संत समाज और साध्वी-समाज आपके व्यक्तित्व का गवाह है।

नर से नारायण—संसार में सभी बच्चों का जन्म एक जैसा ही होता है। एक ही जैसे हाड़-चाम से सबका शरीर गठित होता है। ऐसा ही गुरुदेव जी का भी शरीर रहा है। शरीर के स्तर पर सब बराबर हो सकते हैं। परन्तु मानसिक जगत पर गुरुदेव जी नर होते हुए भी साक्षात नारायण (भगवान) हो गये थे। एक बार मंदिर की सीढ़ी पर लगे पत्थर ने मंदिर के भीतर बैठी मूर्ति से कहा कि हम दोनों सजातीय हैं। जिस तत्त्व से आप बने हैं उसी तत्त्व से मैं भी बना हूं। फिर भी आपका स्थान भीतर है, लोग आते हैं फूल चढ़ाते हैं, आपकी पूजा, वंदना, आरती करते हैं और मुझ पर लोग पैर रखकर चढ़ते हैं। हम दोनों में इतना अंतर क्यों? मंदिर के भीतर स्थापित मूर्ति ने जवाब दिया—भाई, तुम ठीक कहते हो। अंतर इसलिए कि जिस समय कलाकार ने मूर्ति बनाने के लिए गढ़ना-छीलना शुरू किया। मैं उस चोट को, छेनी और हथौड़ों के प्रहार को सहता रहा और तुम उस प्रहार से टूट गये। यही कारण है कि मैं अखण्ड बना रहा और सुन्दर मूर्ति बन गया।

सचमुच गुरुदेव जी उस मूर्ति की भांति ही थे। जीवन में आयी हुई हर परिस्थिति को वे झेलते रहे, सहते रहे और भीतर के काम, क्रोध, लोभ, मोहादि विकारों को जीतकर नर से नारायण हो गये। उनका उपदेश यही होता था कि हर आदमी महान बन सकता है। सबके भीतर महानता छिपी हुई है। केवल प्रकट करने की आवश्यकता है। उनकी दृष्टि में दुनिया का सबसे सरल काम कोई है तो वह है 'मोक्ष' प्राप्त करना। वे कहा करते थे अपने मन को बाहर से लौटाकर अपने आप में रख लो बस उसी क्षण मोक्ष है और इसमें साधक की पूरी स्ववशता है।

शरीर सबका एक जैसा होता है मगर एक महापुरुष की जीवन शैली में और सामान्य मनुष्य की जीवन शैली में धरती और आकाश का नहीं बल्कि आकाश-पाताल का अंतर होता है। पूज्य गुरुदेव जी शरीर में रहते हुए भी बहुत पहले से ही शरीर का मोह छोड़ चुके थे। उनका शरीर में रहना और न रहना उनके लिए एक बराबर था। बिलकुल बेदाग और बेलाग उनका जीवन था जैसा कि इमली का बीज। इमली का बीज इमली में रहते हुए भी एकदम अलग साफ-सुथरा, बेदाग होता है। उसमें थोड़ा भी दाग-धब्बा दिखाई नहीं देता। जब भी अलग करो, स्वच्छ निर्मल रहता है। ऐसे ही गुरुदेव जी बाहर-भीतर से निर्मल, पवित्र, प्रशांत, धीर, गंभीर, सदैव समरसता में जीने वाले थे। इस कोटि से साधारण मनुष्य से तुलना किया जाये तो वह एक अंश में भी बराबरी नहीं कर सकता। कहां वे चौबीस घंटे आत्मानुभव, आत्मानुभूति में जीने वाले महापुरुष और कहां सांसारिकता में जीने वाले! वे देह में रहते हुए भी देह से रहित थे। संसार में रहते हुए भी संसार से अलग थे। सद्गुरु कबीर ने जो कहा है—"ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया" गुरुदेव जी ने चरितार्थ करके हम सबको दिखा दिया। हे गुरुदेव! आप जैसे महापुरुषों के सहारे हमारा भी उद्धार हो जाता।

बेदाग जीवन—गुरुदेव जी लगभग 80 वर्ष की उम्र तक दुनिया में रहे और जब तक रहे सूर्यवत दुनिया को प्रकाशित करते रहे। प्रवचन स्थल पर लोग मिलते थे। निवास पर भी स्त्री-पुरुष मिलते थे। साध्वियों का लंबा समाज आपको गुरु-पीर, अनुशास्ता मानकर साधनारत है। वे भी यत्र-तत्र मिलती रहती थीं। फिर भी इतने लंबे वर्ष की अवधि में कोई भी आपके चरित्र पर अंगुली नहीं उठा सका। एक तरफ प्रशंसकों की भीड़ थी तो दूसरी ओर आलोचकों-निन्दकों की कतार थी। पर गुरुदेव जी कभी भी अपनी निंदा व प्रशंसा से प्रभावित नहीं हुए। यह बात सत्य है कि जो साधक अपनी प्रशंसा सुनकर फूल जाता है और निंदा-आलोचना सुनकर क्षोभित हो जाता है वह कभी भी साधना-पथ में सफल नहीं हो सकता। साधना की सफलता तभी है

जब लोग कहते रहें और हम जो करना है उसी काम में निरंतर लगे रहें। ध्यान यह रखें कि हमसे कोई भूल या गलती न होने पाये। अनेक लेखक ऐसे थे जो आपके बारे में लिखते रहे हैं पर कहीं भी चारित्रिक दोष लगाने की उनकी भी हिम्मत नहीं हुई। इसका ठोस कारण मेरी छोटी बुद्धि के अनुसार यह था कि गुरुदेव जी को मैंने आज तक यह नहीं देखा कि वे किसी स्त्री अथवा साध्वी को बिठाकर लंबा उपदेश दिये हों या कुछ साध्वियों को बिठाकर लंबा व्याख्यान दिये हों। जो भी मिलने आते चाहे वे गृहस्थ स्त्री-पुरुष हों या पुरुष साधक अथवा संत एवं साध्वियां हों, वे थोड़े ही समय में व्यवहार व अध्यात्म की ऊंची बात कहकर विदा कर देते थे। इससे अपना भी समय सुरक्षित रहता और सामने वाले का भी।

परम पूज्य गुरुदेव जी के इस आचरण से छोटे-बड़े साधक-साधिकाएं, संत प्रेरणा लें ही, साथ ही खासकर मैं उन सभी संतों, गुरुजनों, पथ-प्रदर्शकों, साध्वियों के मुखिया एवं समाज के सभी क्षेत्र के वक्ताओं से निवेदन करता हूं कि हम सब अपने जीवन में सफल होना चाहते हों और चारित्रिक दोषों से बचना चाहते हों तो किसी स्त्री-साधिका या कुछ साध्वियों को अपने कक्ष में बैठाकर कभी भी देर तक उपदेश न करें। (यही बात स्त्री साधिकाओं को अपने लिए समझ लेना चाहिए) जो कहना हो थोड़े में कह दें और सभा में अध्यात्म की गूढ़ बात अथवा व्यावहारिक चर्चा का विस्तार करें। जिससे अपने तथा औरों के चरित्र की रक्षा-सुरक्षा हो सके।

पारदर्शी व्यक्तित्व—गुरुदेव जी का जीवन अत्यंत पारदर्शी था। कोई बनावटीपन नहीं था। जो भीतर था वही बाहर भी। वे सदैव सत्य कहते थे और सत्य में जीते थे। कितने ऐसे प्रवक्ता एवं संत होते हैं जिनका मंच पर जाने का अलग पोशाक होता है, निवास पर पहनने का अलग। कोई मिलने आ गया तो पहले दर्पण के सामने खड़े होकर सब ठीक-ठाक कर लेते हैं, तब मिलते हैं। गुरुदेव जी का जीवन अत्यंत सरल-सादा था। वे जिस अचला-लंगोटी को नहाकर पहनते जब तक पुनः स्नान न कर ले उसे धारण किये रहते थे। चाहे उन्हें मंच पर बैठना हो, प्रवचन करना हो या किसी संत, साधक, साधिका, विद्वान, नेता, डॉक्टर, कमिश्नर से मिलना हो सब समय उसी वेशभूषा, चेहरे की प्रसन्नता और मीठी वाणी से पेश आते थे। डांटना-फटकारना तो उन्हें कभी देखा ही नहीं यद्यपि हम जैसे नादान साधकों से जाने-अनजाने कितनी ही गलतियां हुआ करती थीं। कभी वे जान पाते तो पूरा स्नेह के साथ उसी प्रेम भरे हृदय से सीने से लगाते जैसे पहले लगाते रहे हैं और मीठे शब्दों से समझाते थे। मानो वे गांधी जी के इन वचनों को चरितार्थ कर रहे हों, "घृणा पाप से करो पापी से नहीं।"

वे मां की तरह सभी साधकों का ध्यान रखते व संभाल करते थे। उनके प्रेम भरे सीने से लिपटने पर जिस आनंद की अनुभूति होती थी उसे वही साधक समझ सकता है जिसे ऐसा सुअवसर प्राप्त हुआ है। दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि अब हम बिलकुल अनाथ हो गये हैं। अब गुरुदेव का वह स्नेह, प्यार और उनकी गोद की छाया कहां प्राप्त होगी। वे जैसे बाहर से सुन्दर दिखते थे वैसे भीतर से भी सुंदर थे।

गुरुदेव जी का व्यक्तित्व बिलकुल दर्पण जैसा था उनके सामने जो भी आता, अपना ही चेहरा देखता। विद्वान आता तो विद्वान को पाता, साधक आता तो साधक व्यक्तित्व को देखता। आत्मज्ञानी पुरुष आत्मज्ञान से ओत-प्रोत पाता। हम भी अपने को ऐसा बनायें कि सब समय बाहर-भीतर एक हो सकें।

मृत्यु की याद तथा अनुभव—गुरुदेव जी को 18 वर्ष की उम्र में कबीरपंथ तथा पारख सिद्धांत का परिचय हुआ था। 21 वर्ष की अवस्था में उन्होंने घर छोड़कर सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब जी की शरण में आकर उनसे साधु दीक्षा ली थी। गुरुदेव जी की प्रथम रचना 'वैराग्य संजीवनी' है जिसे गुरुदेव ने 22 से 24

वर्ष की अवस्था में लिखा है। इस ग्रंथ को पढ़कर कोई अच्छी तरह समझ सकता है कि गुरुदेव जी नवजवानी की अवस्था से ही मृत्यु की याद किये हैं और बराबर करते रहे हैं। उन्हीं के शब्दों में देखें—

"रे मौत प्यारी मौत मेरे सामने आया करे।
शय्या हमारी तू बिछा अंतिम यही सोना पड़े।
फिर से विषय के भंवर में पड़कर नहीं रोना पड़े।"

इन पंक्तियों को पढ़कर सद्गुरु कबीर की साखी याद हो जाती है—

जेहि मरने से जग डरे, मेरो मन आनंद।
कब मरिहौं कब पाइहौं, पूरण परमानंदû

गुरुदेव जी 15 मई, 2010 को कबीर आश्रम इलाहाबाद में सुबह प्रवचन कर रहे थे। प्रवचन के दौरान ही वे अचानक मौन हो गये। उनका सिर झुक-सा गया। संतों ने देखा और संभाला। दो मिनट पश्चात गुरुदेव ने कहा—मैं ठीक हूं। मुझे कुछ नहीं हुआ है और शरबत पीकर पुनः वैराग्य की बातें कहीं। इस दिन के पश्चात गुरुदेव जी बराबर कहते रहे हैं—मैंने जीवन के साथ-साथ मौत का भी अनुभव कर लिया है। मौत में कोई दुख नहीं है। एकदम शांति ही शांति है। और सचमुच गुरुदेव जी 26.09.2012 को हमेशा के लिए परमशांति में विलीन हो गये। बगल में रहने वाले साधक भी नहीं जान पाये। इस प्रकार महापुरुष का जीवन तो शांतिप्रिय रहा ही मरण भी शांति से हो गया। हम सभी साधक देहाध्यास से छुटकारा पाना चाहें तो गुरुदेव के इस सूत्र को जीवन-प्राण मानकर जीवन में धारण कर लें, वह सूत्र है "मृत्यु की याद"।

साधक का लक्ष्य—गुरुदेव जी के पास मैं जब भी जाता कुछ व्यावहारिक चर्चा करते फिर अपने परम लक्ष्य की याद करा देते थे। वे कहते थे "बेटा, साधक का यह लक्ष्य होना चाहिए कि शरीर धारण कर पुनः संसार में न आना पड़े।" गुरुदेव जी ने एक भजन में स्वयं को संबोधित करते हुए लिखा है—"दुखालय जगत का पुनः हो न दर्शन, यही अब हमारा हृदय चाहता है।" (भजनावली) प्रत्येक साधक अगर अपने लक्ष्य की याद रखता है तो एक दिन जरूर वह अपनी मंजिल तक पहुंच सकता है।

उनकी एकाग्रता—गुरुदेव जी हर क्षेत्र में अद्वितीय महापुरुष थे। उनकी जितनी विशेषताएं कही जायें कम हैं। उनका हर पहलू एक से बढ़कर एक है। वे एकाग्रता एवं स्थिरता की तो प्रतिमूर्ति ही थे। उनकी स्थिरता के सामने मंदिर में बैठी मूर्ति भी शरमा जाती थी। वे कहीं बैठे हों, लिख रहे हों, भोजन कर रहे हों, बातचीत कर रहे हों या फिर गाड़ी में, ट्रेन में यात्रा कर रहे हों। कोई भी परिस्थिति उनकी एकाग्रता को भंग नहीं कर सकती थी। यहां तक कि रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर बैठे हुए भी उसी मुद्रा में शांतचित्त, ध्यानस्थ देखा गया। एकाग्रता पर उनका जबरदस्त अधिकार था। वे कहा करते थे—"मैं अपने लिए तथा समाज के लिए जो कुछ कर पाया वह मेरी एकाग्रता का ही परिणाम है।" सद्गुरु कबीर की यह पंक्ति—"नित अमावस नित संक्रांति नित नित नौ ग्रह बैठे पांति" (बीजक, शब्द-49) को आपने अपने जीवन में चरितार्थ करके साधक समाज को यह दिखा दिया कि सद्गुरु कबीर की एक-एक पंक्ति को जीवन में उतारा जा सकता है।

बड़ों का आदर—छोटों को स्नेह तथा बड़ों का आदर करना तो कोई आपसे ही सीखे। गुरुदेव जी अध्यात्म के शिखर पर पहुंचे हुए महापुरुष थे। व्यवहार में भी आपकी ऊंचाई उतनी ही थी। मैंने निकट से देखा आप अपने बड़े गुरुभाइयों का दूर पर ही अपनी खड़ाऊं उतारकर बंदगी करते थे। आप कहते भी थे कि मैंने अपने बड़े गुरुभाइयों की खड़ाऊं-चप्पल पर कभी पैर तक नहीं रखा। कदाचित भूलवश पैर पड़ जाये तो उसे धो-पोछकर वे ससम्मान व्यवस्थित करते थे।

गुरुदेव जी का व्यक्तित्व गहरा सागर है इसमें जो जितना ही गोता लगायेगा वह उतना ही रत्न पायेगा। केवल लिखना, कहना, महिमा गाना औपचारिक मात्र है, इससे कल्याण होने वाला नहीं है। कल्याण होगा

गुरुदेव के बताये रास्ते पर चलने से और उनकी बतायी बातों को जीवन में उतारने से। श्रद्धांजलि सभा में कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम पोटियाडीह की एक साधिका ने कहा था कि गुरुदेव के न रहने पर मैं यह संकल्प करती हूं कि मैं अपने समय को कभी भी व्यर्थ नहीं करूंगी। कितनी वीर है वह साधिका! उनका संकल्प मेरे हृदय में भी हलचल मचा दिया है। मैं और आप सब केवल दो संकल्प करें और उसे जीवन भर निभायें यही गुरुदेव के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

(i) मैं अपने समय का सदैव सदुपयोग करूंगा/करूंगी।

(ii) किसी गलती को दुबारा नहीं दोहराऊंगा/दोहराऊंगी।

पूज्य गुरुदेव जी के पावन चरणों में अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए त्रयबार साहेब बंदगी।

कबीर पारख संस्थान
प्रीतमनगर, इलाहाबाद

प्रतिभा के धनी

श्री विचार साहेब

सद्गुरु कबीर की संत परंपरा छः सौ वर्षों से अबाध गति से चली आ रही है। जिसमें अनेक मनस्वी, विचारक, तपस्वी, वैराग्यवान संत होते आये हैं। सद्गुरु कबीर के विचारों से अनेक जिज्ञासु लाभान्वित हुए। जिसके परिणाम में आज उनकी परंपरा अक्षुण्ण रूप से स्थित है। इसी परंपरा में बीसवीं शताब्दी में ऐसे महापुरुष का आविर्भाव हुआ जिन्होंने अपने तप, त्याग, वैराग्य, रहनी एवं कथनी से समाज को प्रभावित किया। जो वैदिक विचारधारा को छोड़कर सद्गुरु कबीर की संत परंपरा में विधिवत दीक्षा-शिक्षा स्वीकार किये और सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब जी से संन्यास ग्रहण किये। आपका नाम रखा गया 'अभिलाष दास'। आप इक्कीस-बाइस वर्ष की उम्र में संसार को दुख रूप समझकर वैराग्य के लिए निकल पड़े।

आप अनेक जन्मों के संस्कारी थे। जैसे आग राख में दबी होती है और हवा के संपर्क से चमक जाती है, वैसे गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी की शरण पाते ही आपके ज्ञान, वैराग्य, साधना, तप, त्याग थोड़े दिन में चमकने लगे। कहावत है—होनहार बिरवान के होत चीकने पात। जब से वैराग्य मार्ग का अनुसरण किये, तभी से अपना लक्ष्य कल्याण की प्राप्ति और सेवा, साधना तथा स्वरूप में स्थित होना समझे। आपने मोटे काम को कभी भी छोटा नहीं समझा, बल्कि स्थूल से स्थूल काम को जैसे झाड़ू लगाना, चौका लगाना, भोजन बनाना, बर्तन साफ करना, बड़े-बूढ़े संतों के कपड़े साफ करना, कोई रास्ते पर गंदगी कर दिया हो, उसे उठाकर दूर फेंक देना आदि बड़े प्रेम और निष्ठा से किया। एक बाजार का संस्मरण याद आ गया। उस समय गुरुदेव जी के साथ में संत समाज था। यह घटना सन् 1974-75 की है। उस बाजार को पार कर संत लोग भक्तों के घर भोजन-भंडारा करने जाया करते थे। साथ में पूज्य गुरुदेव जी भी होते थे। कई

दिनों तक देखा गया कि बाजार वाले दुकानदार अपनी दुकान को झाड़कर कूरा-करकट बीच रास्ते में डाल देते हैं। उसी रास्ते को पार कर महात्मा आया-जाया करते हैं। एक दिन गुरुदेव जी ने पाठ-सत्संग के बाद संतों को कहा कि सुबह ही बाजार के मुख्य रास्ते को साफ करना है। अब गुरुदेव के वचन को कौन टाले? रात्रि में ही टोकरी-झाड़ू आदि लेकर रख लिया गया और ब्राह्ममुहूर्त में बाजार के कूड़ा-कचरा को साफ-सुथरा कर दिये। सुबह बाजार के दुकानदार आश्चर्यचकित हो गये और पता चलने पर सब सराहने लगे, कि धन्य हो महात्मन! आप लोगों जैसे संत मिलना दुर्लभ है।

आपकी प्रथम रचना 'वैराग्य संजीवनी' है जो मुमुक्षुओं के लिए अमूल्य साधना का सोपान है। दिन जितने बीतते गये आपके हृदय से अनुभव वाणी का स्रोत काव्य, लेख के रूप में प्रवाहित होने लगा। निरंतर के पठन, मनन-चिंतन से हृदय इतना परिशुद्ध हो गया था कि चलते-फिरते, उठते-बैठते अपनी साधना-वैराग्य की मस्ती में मस्त रहना सीखा। परम पूज्य गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी के सान्निध्य में रहकर अपने आपको अच्छी तरह से तराशा। उसी का फल है, कि थोड़े दिनों में ग्रंथों का नव-निर्माण होना, कबीर साहेब की वाणी का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करने में तत्पर होना। जिससे धीरे-धीरे प्रभावित होकर जिज्ञासु जन आपकी शरण में आने लगे। कुछ वर्षों के बाद तो आपके पास जिज्ञासुओं, मुमुक्षुओं का एक अच्छा लम्बा समाज हो गया। इधर जिज्ञासुओं का बढ़ना प्रारंभ हुआ उधर आपकी वाणी अनेक पुस्तकों के रूप में समाज में फैलने लगी। सरल भाषा, कहने-लिखने की मधुर शैली, बोलने की कला चारों ओर प्रभावित करने लगी। कबीर साहेब की वाणी के साथ-साथ वैदिक साहित्य पर भाष्य, गीता, रामायण, महाभारत आदि पर तथा संत परम्परा के महापुरुषों की वाणी पर काम कर सौ से अधिक पुस्तकों की रचना किये।

आप केवल हिन्दी भाषा ही नहीं, अपितु संस्कृत के पंडित थे। इसके अलावा अंग्रेजी, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, नेपाली, पाली आदि भाषाओं के भी ज्ञाता थे।

गुरुदेव जी के सूत्र हैं—सेवा, साधना, स्वाध्याय। जो जिज्ञासु इस त्रिवेणी में निमज्जन करेगा वह शीघ्र अपना उद्देश्य-कल्याण को प्राप्त करेगा और जो इन साधनों से अपने को दूर रखेगा वह कभी भी अपने गंतव्य को प्राप्त नहीं करेगा। आपका उपदेश व्यवहार से शुरू होकर अध्यात्म के शिखर पर जाकर रुकता था। अर्थात पहले व्यवहार पवित्र होगा तब परमार्थ सधेगा। जिसका व्यवहार ही बिगड़ा है उसका परमार्थ-कल्याण नहीं बन सकता। गुरुदेव जी आजीवन भ्रमणशील रहे। आपकी यात्रा लम्बी होती थी और सघन कार्यक्रम चलते थे। आप बड़े साहसी, संयमी, व्यवस्थित थे। लम्बी उम्र में भी थकते नहीं थे। जिनको कार्यक्रम का समय दे दिया उससे कभी हटे नहीं बल्कि समय का ध्यान रखकर वहां पहुंचते थे।

चाहे रागी हो या विरागी। समय का चक्र सब पर चलता है, किसी को भी नहीं छोड़ता है। गुरुदेव 25 सितम्बर को सुबह 7 बजे श्री पलटू साहेब की वाणी पर उपदेश किये। यह कौन जानता था कि यह संतों के लिए अंतिम उपदेश-शिक्षा है। पूरे दिन सबसे मिले, बात किये, सबका समाचार पूछे। शयन किये और तीन बजे ब्राह्ममुहूर्त में स्वस्वरूप में सदैव के लिए लीन हो गये।

आज गुरुदेव जी का पार्थिव शरीर नहीं है किन्तु उनकी शिक्षा, उपदेश, उनका साहित्य अमर है। हम अपने जीवन में उनके उपदेश का जितना आचरण करेंगे उतना ही हम अपने को गुरुदेव जी के सन्निकट पायेंगे।

संत कबीर सेवा संस्थान
रोहतक रोड, रामपुरा, दिल्ली

वीतराग ज्ञानमूर्ति युगपुरुष को विनम्र श्रद्धांजलि

शीलेन्द्र दास

पूज्य गुरुदेव स्वरूपलीन सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी का व्यक्तित्व बहु आयामी था। जो अपने आचरण से उपदेश देता है वही सबसे बड़ा वक्ता, सबसे बड़ा पंडित और सबसे बड़ा समाज सुधारक है। गुरुदेव जी आचरण और व्यवहार में पक्के थे। जैसे कहते वैसे जीते थे। 'जस कथनी तस करनी' को जीवन का मूलमंत्र बनाये।

आप स्कूल तो चार-छः महीने ही गये, परंतु जिन्दगी भर विद्यार्थी बने रहे। स्वाध्याय उनका सबसे बड़ा विद्यापीठ था। अंग्रेजी की कहावत 'नो नालेज विदाउट कालेज' आपने झूठा साबित कर दिया। वैसे आप अनेक स्कूल, कालेज, यूनिवर्सिटी में गये; परंतु पढ़ने नहीं, पढ़ाने (उपदेश देने) गये। कालेज-यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर, वाइस चांसलर, अनेक विषयों पर मास्टर, डिग्रीधारी, दर्शन और साहित्य के पी-एच. डी. विद्वान जो भी आये गुरुदेव जी के सामने बौने साबित हुए। मठाधीश, गादीपति, आचार्य, पंथाचार्य, मंडलेश्वर, महामंडलेश्वर, नेशनल-इंटरनेशनल वक्ता, जगद्गुरु, विश्वगुरु, ब्रह्मांडगुरु जैसे मनीषी लोग एक सीधे-सादे आडम्बर रहित सरल संत के सामने स्वयं को हलके महसूस किये। जिस पर बड़े-बड़े विद्वान भी गोता खाते हैं, ऐसे संस्कृत साहित्य—वेद, उपनिषद्, योग दर्शन, विवेक चूड़ामणि, गीता, रामायण, महाभारत आदि पर आपकी व्याख्या और समीक्षा पढ़े तो विद्यावारिधि, शास्त्री, आचार्य लोग भी दंग रह गये। पहली-दूसरी कक्षा के विद्यार्थी विद्वानों के लिए चुनौती बन गये।

गुरुदेव को जहां भी ज्ञान के हीरे-मोती मिले चुन-चुनकर उठाते गये। 'कोई पारखि लिया उठाय'—कबीर वाणी को समृद्ध किये। वाणी के विशाल बगीचे में मधुमक्खी की तरह पराग इकट्ठे कर-करके हमारे लिए जीवनदायिनी मधु प्रस्तुत कर गये। 'सार सार को गहि रहे', 'लेवे फटकि पछोरि' वाली कबीर वाणी पूरा-पूरा व्यवहार में उतारे। ज्ञान की विशाल धरोहर इकट्ठे कर अमूल्य खजाना दे गये। आपकी मेहनत से कबीर का पकवान अत्यन्त स्वादीला और ताकतवर बन गया।

अन्य गादीपति संत-महंतों की भांति गुरुदेव जी एक जगह आश्रम में गादी-तकिया लगाकर आराम नहीं फरमाये, बल्कि सद्गुरु कबीर की भांति 'देश विदेशे हौं फिरा, गांव गांव की खोरि' अंतिम श्वास तक निरंतर प्रवास में व्यस्त रहे। मेहनती इतना कि एक पल भी नहीं खोये। यहां तक कि स्टेशन में भी यदि कुछ देर बैठना पड़ता तो हाथ में पुस्तक दिख जाती थी। जहां भी रहे यदि अवसर हो तो वही उनका स्टडीरूम बन जाता था।

दीर्घकाल के अध्ययन-मनन-चिंतन के बाद गुरुदेव जी ने बीजक पर जो काम किया है, बेजोड़ है। इतना सरल और सुगम अर्थ देकर विद्वान ही नहीं सामान्य व्यक्ति को भी बड़ी सरलता से समझाने में पूर्ण सफल रहे हैं। तभी तो अपने ही जीवनकाल में लगभग 2000 पृष्ठों की विशाल बीजक व्याख्या सत्रह बार प्रकाशित किये। बीजक के विचार को बंद कमरे से निकालकर

चौराहे पर लाने वालों में गुरुदेव जी कबीरपंथ में पहले व्यक्ति हैं। दूसरा महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है—कबीर दर्शन। शोधपूर्ण ग्रंथ की रचना कर सद्गुरु कबीर साहेब के मूल सिद्धांत 'पारख सिद्धान्त' को अन्य भारतीय दर्शनों के समकक्ष रख दिये।

गुरुदेव जी पवित्रता-शुद्धता को परम पूजा मानते थे। वे महा टकसारी संत थे। शुद्धता की दृष्टि से भक्तों को पैर तक छूने नहीं देते थे। गले में हार तक नहीं डलवाते थे। परंतु इतना ही सच नहीं है। वे महाकारुणिक और प्रेमात्म हृदय वाले थे। नये-पुराने परिचित-अपरिचित नवयुवक साधक, मुमुक्षु आते तो उन्हें बाहुपाश में लेकर सीने से लगाने में कभी हिचकिचाये नहीं। महा टकसारी होते हुए भी किसी काम को हलका नहीं माने। चाहे नाली सफाई करना हो या संडास, आंगन बुहारना हो या सड़क, छोटा काम नहीं माने। नीचे कुछ ज्वलंत प्रसंग हैं—

बात सन 1982 की है। इलाहाबाद अधिवेशन के बाद गुरुदेव जी के साथ मुझे प्रथम बार कोलकाता जाना हुआ। उस समय पारख प्रकाश का प्रकाशन कोलकाता में होता था। इसलिए गुरुदेव जी दो-चार साथियों को लेकर वर्ष में दो बार कोलकाता जाते थे। और महीना-डेढ़ महीना रुकते थे। मुझे गुरुदेव जी की शरण में आये 5-6 माह हो रहे थे। उस समय मैं गुरुदेव जी से पाठ लेकर बीजक याद कर रहा था। एक दिन अचानक सुबह 9 बजे के आसपास मेरे पेट में जोरों से दर्द उठा। अन्य संत रसोई वगैरह के काम में व्यस्त थे। मैं अकेला निवास रूम में लेटा हुआ था। अचानक गुरुदेव जी आये और मुझे लेटे देखे तो बोले—"यह लेटने का समय है? पाठ याद कर लिये?" मैंने कहा—"साहेब जी, पेट में दर्द हो रहा है।" इतना सुनते ही गुरुदेव जी खड़ाऊ पहने उकड़ू बैठ गये और हजार मना करने के बावजूद लग गये मेरे पेट को मलने। मेरे प्रभु के पवित्र हाथों की मालिश से 15-20 मिनट में दर्द शांत हुआ और मैं नींद में चला गया।

यह बात सन 1984 की है। उस समय प्रीतमनगर में निवास होता था, कबीरनगर का वर्तमान रूप नहीं था। श्री सहनशील साहेब जी के साथ मेरी ड्यूटी भंडार में लगी थी। गुरुदेव जी के भोजन के बाद ही घंटी लगती थी। भोजनोपरांत गुरुदेव जी आश्रम में सभी जगह एक राउंड कर लेते थे। यह नित्य का क्रम था। श्री उदार साहेब जी को बुखार था। जहां आज आफिस है वहां उस समय संतों का निवास होता था। गुरुदेव जी राउंड करते हुए उनकी तबियत पूछने कमरे में दाखिल हुए। भोजन की घंटी लगी ही थी। गुरुदेव जी के दाखिल होते ही उदार साहेब जी लेटे से उठकर बैठ गये। जैसे बैठे तुरंत उन्हें जोरों से वमन होने लगा। अन्य संत घृणाते हुए तुरंत कमरे से बाहर निकल गये। गुरुदेव जी स्वयं धमेला लाये। अपने हाथों उल्टी उठाये। यह मैं अपनी नरी आंखों देखते ही रह गया।

सन 1984-85 में दीपावली के समय श्री सनाथ साहेब जी के निर्देशन में गुरुदेव जी का महाराष्ट्र के नागपुर अमरावती जिले में तथा रघुवापट्टी में करीब दो माह का भ्रमण हुआ। साथ में 10-12 संत थे। मैं गुरुदेव जी की सेवा में था। शायद अमरावती जिले में अचलपुर गांव था। गांव में पहले संडास-बाथरूम तो होते नहीं थे। इसलिए गांव के बाहर खेतों में कुआं अथवा बोर पर नहाना-धोना होता था। गांव के बाहर करीब मील भर दूर खेत में कुआं था। वहीं नहाना-धोना होता था। अन्य संत सब नहा लिये थे। ठंड के कारण गुरुदेव जी की पीठ में वायु प्रकोप उठ आया था। इसलिए गुरुदेव जी 9-10 बजे तक धूप लेकर नहाते थे। गुरुदेव जी नहाने कुआं पर आये। कुआं के आजू-बाजू चार-पांच सूखी-गीली टट्टियां पड़ी थीं। गुरुदेव जी कहीं से कचड़े में से कापी के पुट्ठे (जिल्द) और खप्पड़ के टुकड़े लेकर सारी गंदगी दूर फेंक आये। मेरी आंखें तो देखती ही रह गयीं।

इन तीनों घटनाओं का जिक्र करने का एक ही मकसद है कि गुरुदेव जी न किसी काम को हलका

माने और न किसी काम से घृणा किये। जैसा कहते थे वैसा रहते थे। छोटा काम करने से कोई छोटा नहीं होता। महापुरुष व्यवहार में उतारकर हमारे लिए आदर्श छोड़ जाते हैं।

जात-पांत, छुआछूत पर सद्गुरु कबीर साहेब ने अपनी वाणी में जमकर कहा है। इसके बावजूद यह भी सच है कि करीब-करीब सभी कबीर आश्रमों में छुआछूत की शर्मनाक परंपरा व्याप्त थी। निम्न कही जाने वाली जाति से आये संतों-भक्तों को थाली-बर्तन भी नहीं दिया जाता था। रसोई में प्रवेश वर्जित था। सद्गुरु कबीर से लेकर इतने लंबे अंतराल के बाद इस जहरीले और शर्मनाक परंपरा पर किसी ने आवाज उठायी तो वे हैं पूज्य गुरुदेव जी। केवल कहे नहीं, व्यावहरिक बनकर दिखाये, जीवन जीकर दिखाये। इस पर जरा भी मुरौवत नहीं किये। कबीर के मानवतावाद को बड़ी निडरता, दृढ़ विश्वास और ठोस प्रमाण के साथ लोगों में रखते रहे। इस जहर के उन्मूलन के लिए कसकर लिखे और बोले। चाहे कट्टर हिन्दुओं की सभा हो, चाहे साधु-आचार्यों की सभा हो, चाहे ब्राह्मण, पुरोहितों-पुजारियों की सभा हो—सब जगह भारतीय ग्रंथों का प्रमाण प्रस्तुत कर अपनी बातों को खुलकर और धारदार ढंग से पेश करते रहे। गुरुदेव जी की बातों को लोग गौर से सुनते और सत्य को समझने तथा विचारने के लिए मजबूर होते।

कबीरपंथियों की सभा तो अपनी ही सभा होती। वहां तो पूछना ही क्या, सप्रमाण कबीर वाणी प्रस्तुत कर सभा को रोमांचित कर देते। इसका परिणाम यह आया कि वर्तमान में लगभग पूरे कबीरपंथ में नया-पुराना जो भी मठ आश्रम हो—खान-पान, रहन-सहन, उठक-बैठक सभी क्षेत्र में छुआछूत का यह शर्मनाक व्यवहार समाप्त-सा हो गया है। अब कहीं सुनने में नहीं आता कि अमुक आश्रम में अथवा घेरा में अलग थाली-बर्तन का व्यवहार करते हैं। अब उनके साथ भी रसोई से लेकर स्टेज तक सामान्य व्यवहार होने लगा है। यह गुरुदेव जी की कथनी, करनी, रहनी का प्रभाव कहा जाये तो गलत न होगा। गुरुदेव जी सभा में पूछते—"टट्टी फेंककर जगह को साफ करने वाला अपवित्र या टट्टी कर जगह को गंदी करने वाला? और भंगी कौन नहीं? सुबह उठकर पहला काम सब भंगी का ही तो करते हैं।" गुरुदेव जी के किसी भी आश्रम में साफ-सफाई के लिए कभी भी पेशेवर सफाई कर्मी बुलाया नहीं जाता। सारे काम साधक-संत ही कर लेते हैं। गुरुदेव जी के आश्रमों में केवल एक ही जाति के लोग रहते हैं और वह है—'मानव'। सद्गुरु कबीर साहेब की भांति गुरुदेव जी विशाल दिल के मानवतावादी संत थे तथा उसके पूर्ण हिमायती थे।

मेरे प्रभु के लिए संक्षेप में कहूं तो विद्वान, कवि, लेखक, वक्ता, व्याख्याता, विचारक एवं कुशल प्रशासक के सारे गुण तो आप में थे। माता-पिता, भ्राता-दाता, त्राता, सेवक, स्वामी के सारे फर्ज तो आप निभाते रहे। दयासिंधु, करुणामूर्ति, गरीब निवाज, दीनबंधु, दीनानाथ, प्रेमसागर, आनंदसागर, मंगलमूर्ति, बन्दीछोर इन सारी महिमाओं से आप पूर्ण थे। महर्षि कपिल, कारुणिक पुरुष महात्मा बुद्ध, अहिंसा के पुजारी महात्मा महावीर, संतों में शिरताज सद्गुरु कबीर जैसे महापुरुषों के जीवंत स्वरूप का दर्शन आप में हुआ। सांई तेरा रूप है हजार, फिर कहां तक करूं विस्तार।

मेरे प्रभु! आप ज्ञान का जो अमूल्य खजाना हमारे लिए छोड़ गये हैं, कभी छूटने वाला नहीं है। न कभी लुप्त होने वाला है। खुलकर हंसने और हंसाने वाले मेरे प्रभु का जीवंत व्यक्तित्व हमारे दिल में समाकर अमरता का परिचय दे रहा है। वीतराग, ज्ञानमूर्ति, पारखरूप, वैराग्य विभूति युगपुरुष को जीवन अध्याय की समाप्ति पर विनम्र श्रद्धांजलि। साहेब बंदगी....।

भक्तिधाम, पायल पार्क
मकरपुरा, वडोदरा, गुजरात

अलबेला मसीहा

रामेश्वर दयाल

स्वरूपलीन सद्गुरु श्री अभिलाष देव के प्रथम दर्शन अप्रैल, 1962 में छत्तीसगढ़, रायपुर, अभनपुर के पास 'करगा' ग्राम में हुए थे जब वे स्वरूपलीन सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब जी के साथ 'रम्मत' में पधारे थे। पुनः दर्रा में प्रातःकालीन प्रवचन लाभ, भोजन, विश्राम के बाद सायंकाल जब चलने लगा तो श्री गुरुदेव जी ने मुझे अपनी प्रथम रचना 'वैराग्य संजीवनी', 'विवेक प्रकाश टीका' तथा 'सन्त वचनामृत' प्रसादस्वरूप दिया।

मेरे एक मातामह श्री गोपीवल्लभ त्रिवेदी जी, आयुर्वेदाचार्य (जो कि मेरे प्रथम आध्यात्मिक गुरु थे) एवं हाईस्कूल तक की शिक्षा के एक शिक्षक श्री महेन्द्र पाल सिंह जी यादव का मेरे जीवन पर बहुआयामी प्रभाव पड़ा। इनमें से मुख्य प्रभाव था धर्म के प्रति रुझान, परोपकार, परपीड़ा कातरता, सेवा की भावना और कर्मकाण्ड। मैंने हाईस्कूल परीक्षा के वर्ष 1955 में 'धर्मविशारद' और 'हिन्दी प्रथमा' परीक्षाएं भी उत्तीर्ण की थीं। मैंने बचपन में ही सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा था। शान्ति की खोज में कुछ भटका भी था। 1957 में पढ़ाई बन्द करके गंगा घाट पर कर्णवास में एक वर्ष रहा था। वहां अद्वैतवादी संत श्री निर्मलानन्द जी महाराज से दीक्षा लिया था, परन्तु कुछ हजम नहीं हो रहा था। मैं अर्द्ध कर्मकाण्डी था। विवेक प्रकाश टीका के अध्ययन, मनन, चिन्तन ने मेरे सब भ्रम मिटा दिये। मैं अर्द्ध कर्मकाण्डी से समर्पित जीववादी हो गया।

वर्ष 1968 के पूर्वार्द्ध में बड़हरा आश्रम से पत्राचार करके मई-जून में मसकनवा में श्री साहिबदीन से मिलकर बभनान में श्री रामलाल जी गुप्त के यहां पहुंचा। श्री रामलाल जी के साथ अगले दिन बड़हरा आश्रम पहुंचा। कुछ दिन आश्रम पर रहकर पुनः संतों के साथ भक्तराज श्री शंकर भगत के यहां मुहम्मदनगर जाकर गुरुदेव के दर्शन किया। मुहम्मदनगर से गुरुदेव जी बीजक टीका व अन्य ग्रंथ प्रकाशन हेतु वाराणसी पधारे। गुरुदेव जी के साथ श्री सजीवन साहेब और श्री राम खिलावन जी (सुधार साहेब) थे। श्री रामखिलावन जी और मेरे बीच रोजाना भोजन के बाद बर्तन साफ करने के लिए छीना-झपटी होती थी। एक दिन शाम को श्री रामखिलावन जी मेरे बर्तन झपट लिये। गुरुदेव जी के साथ जब टहलने गया तो पार्क की बेंच पर बैठकर बड़े प्यार से गुरुदेव जी बोले—आज आपसे गलती हुई। मैं समझ गया और निवेदन किया कि उन्होंने झपट लिया। गुरुदेव जी ने कहा—आप भी तो झपट सकते थे। कितना बढ़िया तरीका समझाने का और कितना बढ़िया नियम विनम्र बने रहने का, अहंकार से बचाने का। यह गुरुदेव जी की विशेषता थी, जैसा कि वे अपने प्रवचनों में कहते थे वैसा ही वे आचरण भी करते थे; किसी की भी गलती पर वे उसे अकेले में समझाते थे।

जैसा कि गुरुदेव जी के बारे में उनसे मिलने वाला हर व्यक्ति सोचता है कि गुरुदेव उससे विशेष प्यार करते हैं, मैं भी ऐसा ही सोचता हूं। गुरुदेव के व्यक्तित्व, कर्तृत्व और रहनी में ऐसा आकर्षण था कि व्यक्ति प्रभावित हुए बिना रह ही नहीं सकता था। गुरुदेव जी ने

बीजक मूल पर भूमिका लिखने का अवसर देकर मुझ अबोध बालक को फर्श से अर्श दिखा दिया एवं पारख सिद्धान्त पर और अधिक गम्भीरता से चिन्तन-मनन करने का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

गुरुदेव जी का जीवनयापन इतना सरल, सहज था कि उन्हें आमंत्रित करना किसी को भी लेशमात्र कष्टसाध्य नहीं था। मेरे यहां कई बार उनके आवास और भोजन की व्यवस्था से मैं स्वयं सन्तुष्ट नहीं रहता था; परन्तु गुरुदेव जी के चेहरे पर सदैव अक्षय प्रसन्नता ही दिखाई दी। उन्होंने कभी भी किसी विशेष व्यवस्था के लिए संकेत भी नहीं किया।

गुरुदेव जी की शरण में आने वाले को वे प्रथम बार में ही साथ नहीं लगाते थे। मैं मई-जून 1968 में गुरुदेव जी की शरण में लगने निकला था वैसे ही श्री सुधार साहेब भी आये थे। गुरुदेव जी ने वाराणसी से पहले श्री सुधार साहेब को वापस भेजा और कुछ दिन बाद मुझे भी वापस भेज दिया और कहा कि घर-गृहस्थी में रहकर भी साधना, भजन, निज कल्याण का काम हो सकता है।

गुरुदेव जी का किसी बात को कहने और समझाने का तरीका बड़ा निराला और मर्मस्पर्शी होता था। 1997 गांधीनगर ध्यान शिविर के बाद गुरुदेव जी को माउण्ट आबू जाना था। गुरुदेव जी के साथ पोर्च में खड़ा था। गुरुदेव जी बोले—पहले पहल जब तुम मिले थे तब तुम भी युवा थे, मैं भी युवा था। अब तुम भी पक गये; मैं भी पक गया। समय से सबका शरीर पकता है। हमें अपने मन को पकाना चाहिए। गुरुदेव जी अपना मन बहुत पहले पका चुके थे फिर भी कहते हैं हमें अपने मन को पकाना चाहिए। कितना निरहंकार, कितना सतत सावधान थे। हम सबके लिए अनुकरणीय है।

धार्मिक जगत में आज गुरुआई-महन्ती के लिए चहुं ओर भागमभाग, आपाधापी, मारामारी, मुकदमेबाजी हो रही है; अपने को बड़ा और सही सिद्ध करने के लिए झूठ, फरेब, मनगढ़ंत किस्से गढ़े जा रहे हैं, तथ्यों को छिपाकर लोगों को गुमराह किया जा रहा है। गुरुदेव जी इससे कोसों दूर थे—वे इसे मायाजाल और बन्धन मानते थे। गुरुदेव ने जितने लोगों को गुरुचिह्न 'कण्ठी' दी वह मात्र गुरु परम्परा के निर्वहन हेतु ही दिया। बुद्धिजीवियों को वे कण्ठी देने के बजाय निर्देशित करते थे कि कण्ठी लेना महत्त्वपूर्ण नहीं है, महत्त्वपूर्ण है आचरण और रहनी। जिसने अपना आचरण सुधार लिया, जिसकी रहनी पवित्र है वह दीक्षित ही है। बुद्धिजीवियों को उनका निर्देश रहता था कि वे अपने प्रवचनों में जो कुछ कहते हैं वह सब दीक्षा ही तो है—अतः घर में रहकर ही साधना करो। गुरुदेव जी की इसी विचारधारा का परिणाम है कि उन्होंने मात्र छप्पन लोगों को ही साधु वेष दिया।

गुरुदेव जी के लिए लिखने को मेरा आधी सदी का साथ बहुत कुछ दे गया है। इस सफर का अन्तिम दिन 26 सितम्बर, 2012 मेरे ऊपर वज्रपात कर गया। उस दिन आश्रम की प्रातः 4 बजे की घण्टी नहीं बजी थी। मैं अपने आसन पर अस्वस्थ पड़ा था कि लगभग 4 बजकर 5-7 मिनट पर अमलेन्द्र साहेब बदहवास आवाज दिये कि जल्दी चलो, गुरु जी को कुछ हो गया। सुनते ही मैं उनके साथ दौड़ा। जाकर बेहोशी दूर करने का पूरा आकस्मिक उपचार किया। कोई हलचल न होने पर श्वास-प्रश्वास-नाड़ी आदि और शारीरिक शीतलता देखकर मुझे जैसे काठ मार गया। सभी सन्तों के साथ मैं डाक्टर के यहां यंत्रवत घूमता रहा। हमारा अलबेला मसीहा हमें छोड़ गया था।

हमारा मसीहा अपने ज्ञान भण्डार के रूप में सदैव हमारा और आने वाली अनन्त पुश्तों का मार्गदर्शन करता रहेगा। हम उनके दिखाये मार्ग और जीवन्त आचरण का अनुसरण कर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दें।

गभाना, नगलानत्था, अलीगढ़, उ. प्र.

अभिलाष साहेब : एक सत्यान्वेषी सन्त

डॉ. आत्माराम त्रिपाठी

प्रथम दर्शन मैंने कबीर मन्दिर, प्रीतम नगर, प्रयाग के भव्य वार्षिकोत्सव में किया था। समारोह की अध्यक्षता श्री रामवृक्ष मिश्र (उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ न्यायाधीश) कर रहे थे। संयोगात अपने विचार व्यक्त करने के लिए मैं भी आमंत्रित था। इसके सूत्रधार श्री शिवप्रसाद मिश्र जी थे। ये कबीर मन्दिर के विविध कार्यक्रमों में सक्रिय सहयोगी रहते हैं। अनेक अनुभवी साधु-सन्तों ने कबीर के पृथक-पृथक पक्षों पर गंभीर विवेचनाएं प्रस्तुत कीं। सत्संग सार्थक रहा।

मैं हिन्दी का शिक्षक रहा हूं। संत अभिलाष जी की प्रकाशित कतिपय पुस्तकों को यथासंभव पढ़ा भी है। कबीर दर्शन में उनकी गहरी पैठ रही है। कबीर के जीवन वृत्त के संदर्भ में हिन्दी साहित्य के मर्मज्ञ और धुरन्धर अपुष्ट अप्रामाणिक दन्त कथाओं को वास्तविक यथार्थ साक्ष्य मान, अपने वाक्-जाल में उलझे दिखाई दिये। कबीर का जन्म, विवाह, परिवार, निधन आदि के सम्बन्ध में समाज और साहित्य जगत के मध्य फैली भ्रांतियों के प्रति अपने लेखन और सम्बोधनों द्वारा साधकों को वे सदा सावधान करते रहे। दृष्टान्त सीता माता की कथा का देते। वहां भी उनकी विनम्र असहमति रही। "धरती से प्रादुर्भाव अन्ततः उसी में तिरोभाव! ऐसा क्यों ? यह सब क्या है?" पर्यटक साधु ने अनवरत अपने भ्रमण क्षेत्र को सतर्क किया।

अभिलाष दास जी का साहित्य सृजन एक सच्चे शोधक का अद्‌भुत परिणाम है। उनका अध्ययन विशाल है और वैसे ही सृजन। भारतीय मनीषा के वे पोषक हैं, समर्थक तो हैं पर एक सत्यान्वेषी के रूप में। अत्युक्ति, अतिशयोक्ति, चमत्कारी एवं काल्पनिक महिमा-मंडन का जो पौराणिक भण्डार भरा पड़ा है और समाज अन्धानुकरण में लिप्त है, उन सबका वे तथ्यात्मक शालीनता से निषेध करते हैं।

"वेद तो वेद है"—उनकी यह सूक्तिमयी स्वीकारता उनके अध्ययन की तात्त्विक साक्षिता है।

भारतीय दर्शन का मंथन कर 'पारख दर्शन' की देदीप्यमान मान्यता प्रतिष्ठापित की। साधकों के लिए ही नहीं वरन् किसी भी विचारवान के लिए वे आदर्श सन्त हैं। अनासक्त, कर्मयोगी, कथनी-करनी की रहनि के वे अतुलनीय उदाहरण हैं। जीवन-पर्यन्त निश्छल, नितान्त निष्कलुष, पवित्र अंतःकरण, सहज, सरल, साधु सत्यान्वेषी संत रहे। सदाचारी की दिव्यता, धवल-वेष में उनके बाह्य और आभ्यांतरिक व्यक्तित्व की समग्र परिभाषा थी।

उस यशस्वी सन्त की स्मृति में जितना भी कहें शब्दों के अर्थ शिथिल लगते हैं। अपने 'पारख दर्शन' के ज्ञान-यज्ञ से उन्होंने प्रयाग की सार्थकता प्रदान की। इस अकिंचन की विनम्र श्रद्धांजलि।

कुंडा, प्रतापगढ़, उ. प्र.

मेरे प्यारे गुरुदेव जी

जगन्नाथ दास

मौत उसी की जिस पर, दुनिया अफसोस करे।
वरना तो आदमी आता ही है, मरने के लिए।

आज परम पूज्य गुरुदेव जी से जुड़े संत, भक्त, साध्वी ऐसा कौन-सा घर और घट है जहां शोक की छाया न हो। सबके अन्दर शोक की छाया दिख रही है। चेहरे पर मायूसी, आंखों में आंसू, मन में तड़पन लिये सब यही कह रहे हैं—"हम अनाथ हो गये। हमारे साधनामार्ग में अंधेरा छा गया। अब क्या होगा। आदि।" ऐसा क्यों कहते हैं हम? क्या उनसे हमारा कोई संबंध था? जी, हां! संबंध था। वह संबंध था भक्ति का, साधना का, गुरु-शिष्य का। संसार में अनेक गुरु-सद्गुरु हैं उनसे हमारा संबंध क्यों नहीं था? क्यों आज हम तड़प रहे हैं—परम पूज्य अभिलाष देव के लिए? ऐसी कौन-सी विशेषता थी उनमें?

वस्तुतः वे महापुरुष सबको प्यार देते थे। जैसे प्रकृति में सूरज, चांद, हवा आदि हैं और ये सब हमेशा गतिशील हैं। सूरज सबको प्रकाश देता है, हवा सब जगह फैली है। इसी से प्राणी जीवित हैं। सूरज चांद सबके हैं और सब उनके हैं, वहां कोई भेदभाव नहीं है। ठीक उसी प्रकार गुरुदेव जी सबके हैं और सब उनके हैं। वे सबको ज्ञान रूपी प्रकाश, शीतलता रूपी हवा देते हैं। उनके लिए कोई पराया नहीं है। वे संतों को जितना प्यार, स्नेह देते थे उतना भक्तों को भी देते थे। परिचित-अपरिचित का कोई भेद नहीं था, उनके पास।

उनका व्यक्तित्व इतना विशाल था कि जो एक बार दर्शन करता था वह उन्हीं का हो जाता था। सचमुच यह पंक्ति उनके लिए चरितार्थ हो जाती थी कि "एक बार जो दर्शन पाता है बस आप ही का हो जाता है।" ऐसा क्या था जो एक बार मिलने से ही लोग उनके हो जाते थे? उनके पास निष्छल-निष्काम प्रेम की बहुत बड़ी संपत्ति थी और थी उनकी स्वरूपस्थिति रूपी साधना। वे संयम की उपासना करते थे—

1. संयम ही उनका उपास्य था।
2. कर्म ही उनकी पूजा थी।
3. शांति ही उनकी संपत्ति थी।
4. प्रेम ही उनका पाठ था।
5. ज्ञान ही उनका अस्त्र था।
6. सावधानी ही उनकी साधना थी।
7. ध्यान ही उनका मंत्र था।
8. एकाग्रता ही उनकी विद्या थी।
9. त्याग ही उनका आभूषण था।
10. मानवता ही उनका धर्म था।
11. आत्मा ही उनका परमात्मा था।
12. समता ही उनका योग था।
13. निर्भयता ही उनका कवच था।
14. मोक्ष ही उनका साध्य था।

ये चौदह रत्नों के वे स्वामी थे। इन्हीं सद्गुणों में वे हमेशा जीते थे और इन्हीं का उपदेश भी देते थे। उनका जीवन पुष्प वाटिका के समान था। यही कारण था कि भक्त-भंवरे उनको घेरे रहते थे।

परम पूज्य गुरुदेव जी से जो मुझे मिला है, उसको मैं लेखनी या वक्तव्य से नहीं व्यक्त कर सकता। वह तो मैं ही जानता हूं। आज मैं जो कुछ सीखा-समझा हूं उन्हीं की कृपा से। जो थोड़ा-बहुत शांति का अनुभव कर रहा हूं उन्हीं की बदौलत। यदि गुरुदेव न मिले होते तो पता नहीं मैं कहां भटकता दुख भोगता? पूज्य गुरुदेव जी का मैंने सन् 1998 में नेपाल (सुनसरी) मधुबन हाईस्कूल में दर्शन किया। गुरुदेव का तीन दिन कार्यक्रम वहां था। जब मैं वहां गुरुदेव से बंदगी किया तो गुरुदेव मीठे स्वर में बोले—क्या नाम है तुम्हारा बेटा! मैंने कहा, 'जगन्नाथ'। नाम सुनते ही गुरुदेव मुस्कुराये और बोले—बेटा, तुम तो जग के नाथ हो। फिर उदास क्यों हो? मैं बोला—गुरुदेव मुझे दीक्षा चाहिए? वे बोले—क्यों? अभी तो तुम पढ़ रहे हो, तुम्हारी उम्र थोड़ी है। अभी पढ़ो फिर समय से दीक्षा हो जायेगी। उस समय मेरी उम्र 18 वर्ष की थी। मैंने कहा—नहीं गुरुदेव! मुझे दीक्षा चाहिए, मैं दीक्षा लेकर ही जाऊंगा। फिर गुरुदेव वहीं दीक्षा दिये। गुरुदेव से छूटते समय मैं कहा—गुरुदेव! मैं भी आपके साथ जाऊंगा। गुरुदेव बोले, ठीक है, अभी पढ़ो। फिर समय से आ जाना। मैं एक वर्ष बाद सन् 1999 में गुरुदेव के पास आ गया।

तब से मुझे समय-समय से उनके पास सेवा में भी रहने का सुअवसर मिला। जब मैं गुरुदेव जी के पास रहता था तो हमेशा मन में प्रसन्नता रहती थी। उनका खान-पान, बात-व्यवहार, रहन-सहन अत्यन्त शांतिपूर्वक होते थे। वे जब भोजन करने बैठते थे तो इतना शांतिपूर्वक करते थे जैसे पूजा में बैठे हों।

कबीर आश्रम इलाहाबाद में एक बार मैं गुरुदेव जी को भोजन करा रहा था। मैंने भूल से रोटी का थरमस बायें रखने की बजाय दायें रख दिया। गुरुदेव जी फल खाने के बाद बायीं ओर देखे तो रोटी का थरमस है ही नहीं। वे सब्जी खाकर दाल पी लिये और उठ गये। मैं थाली उठाते समय देखा तो थरमस खुला ही नहीं है। मैंने सोचा हो सकता है गुरुदेव को आज रोटी खाने की इच्छा न रही हो। दूसरे दिन फिर वैसा ही हुआ। गुरुदेव जी केवल फल, सब्जी और दाल खा-पीकर उठ गये। मैं थाली उठाने गया तो देखा थरमस बंद है, रोटी निकली ही नहीं है। मैं भयभीत हो गया कि गुरु जी रोटी क्यों नहीं खा रहे हैं, क्या गलती हो गयी मुझसे। तीसरे दिन जब वे भोजन करने लगे तो मैं वहीं खड़ा रहा, वे फल खाये और बायीं ओर देखे तो थरमस नहीं दिखा फिर सब्जी खाये और दाल पीने लगे। मैं दौड़कर गया और पूछा—गुरुदेव, आप रोटी नहीं खाये? गुरुदेव बोले—कहां है रोटी? मैंने कहा—आपकी दायीं ओर रोटी का थरमस रखा है। वे देखे और बोले—तुम रोटी का थरमस उलटा रख दिये, मैंने देखा ही नहीं। अच्छा, अब तो फल-सब्जी खा लिया, काम भर का हो गया। गुरुदेव दाल पीकर उठ गये और कुछ नहीं बोले कि तुम गलत किये, तुम्हें बायीं ओर थरमस रखना चाहिए।

इधर थाली उठाते-उठाते मेरी आंखों से आंसू निकलने लगे। मैं रोने लगा कि मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गयी है जो क्षमा करने योग्य नहीं है। पर गुरुदेव मुझे एक शब्द भी कुछ नहीं कहे कि तुम गलत किये। गुरुदेव जी का यह संस्मरण जीवन में मैं कभी नहीं भूल सकता हूं क्योंकि इतनी बड़ी गलती मां-बाप भी नहीं सह सकते वह भी तीन-तीन दिन। पूज्य गुरुदेव जी का हृदय इतना विशाल था कि वे बड़ी-से-बड़ी समस्या को हंसते हुए और स्नेह से समाधान में बदल देते थे। वे 'समस्या का हिस्सा नहीं, समाधान के हिस्सा थे।' उनका हृदय महासागर की तरह था, जिसमें करुणा, प्रेम, स्नेह, वात्सल्य रूपी शीतल जल भरा रहता था। उनका जीवन ही एक रामायण था, एक गीता था और एक जीता-जागता संस्मरण था। वहां सबको ज्ञान, भाईचारे के व्यवहार की सीख मिलती थी। कथनी-करनी और रहनी के वे मूर्ति थे।

वे जीवन भर बेदाग, बेलाग रहे। वे जीवन भर जैसा रहे और कहे वैसा ही वे अंतिम (मृत्यु) तक बने रहे। जिस जगह उनका शरीर छूटा वहां वे जैसे कोई

करवट लेकर सो रहे हों वैसे बायीं करवट लेटे थे। उनको जैसी शरीर रूपी चादर मिली वैसे ही वे जीये, कहे और छोड़कर चले गये। वे उसमें दाग नहीं लगने दिये।

सचमुच वे सद्गुरु कबीर की इस पंक्ति को चरितार्थ कर दिये—

"ज्यों की त्यों धरि दीनी चदरिया।"

गुरुदेव जी अपने प्रवचन के दौरान यही बताते थे कि—

1. सदैव सावधान रहो, सावधानी ही साधना है। सावधानी हटी कि दुर्घटना घटी।
2. चलते रहो, रुको मत और लौटो मत।
3. निर्मोहता ही असली ज्ञान है।
4. कभी भी प्रमाद न करो, सदैव विनम्र रहो।
5. हमेशा स्वरूप भाव में जियो।
6. सदैव मौत की याद रखो।
7. सबसे मीठा बोलो, सबसे मधुर व्यवहार करो।

हम पूज्य गुरुदेव के इन अमृत उपदेशों को आत्मसात करें यही उनके प्रति असली श्रद्धांजलि होगी।

कबीर पारख संस्थान
प्रीतमनगर, इलाहाबाद

कुशल चिकित्सक

आदर्श साहेब

देखते-ही-देखते इंसान कितने चल दिये।
तन्दुरुस्त खूबसूरत चलते-फिरते चल दियेû
जिनके आने-जाने का बयाँ औरों को हम करते हैं आज।
दोस्त हमको कल कहेंगे वे भी आज चल दियेû

चलने के इस सिलसिला को रंग चढ़ाते हुए हमारे ही नहीं जो मानवता के पद पोषक अनगिनत लोगों के दिल की धड़कन बनकर जीवन को प्रभावित करते रहे और आगे भी करते रहेंगे वे लौहपुरुष श्री अभिलाष देव भी आज सुबह (26.09.2012) चल दिये। किधर चल दिये? अज्ञान के द्योतक शरीर को हान कर आत्मा के सूरज की ओर! अपने अस्तित्व की ओर। जागरण के प्रभात की ओर।

राजस-तामस में सोयी हुए मनोवृत्तियों को स्ववशता के उजाले पक्ष की ओर जागरण देने के लिए जो महापुरुष छः दशक तक सात्विक आलोक बिखेरता रहा, वह जाते-जाते भी जागरण का ही संकेत देकर गया। लगता है उसने सोना सीखा ही नहीं, इस फिकर की आग में तड़पने वाले संसार के मुसाफिरखाना में वह निष्फिक्र जागता रहा और जगाता रहा।

सच में दुनिया एक मुसाफिरखाना तो है ही साथ-साथ अजायबघर भी लगता है। पर जो यहां आते हैं अधिकतम लोग इस मुसाफिरखाना को मुसाफिरखाना नहीं समझते हैं। अपना घर ही समझने की भूल करते हैं। हमारी यही भूल जीवन भर शूल बनकर पेश आने में विलम्ब नहीं करती है। फिर वह महापुरुष सांसारिकता में डुबने वाला मन को ललकारता है—

"तू मृत्यु की कफनी लिया पर हाय क्यों मरता नहीं।"

"तू जन्म लेते ही मृत्यु की कफनी ओढ़कर आया था पर संसार की भूल-भुलैया अर्थात अजायबघर में

ऐसा दृढ़ सम्बन्ध बनाया कि यह मन मृत्यु का स्मरण तक करना नहीं चाहता, मरने की बात तो दूर।" सद्गुरु का यहां विशेष जोर साधक के ऊपर है। साधक मुसाफिरखाना को समझने और उससे मोह-ममता हटाने के लिए गृहस्थ वेष त्यागकर संन्यास वेष में आता है, फिर भी वह अपने सत्य में एकरस नहीं हो पाने के कारण विरक्त दशा में भी वह दुनियादारी के चक्कर में अपने को क्षण-क्षण पीड़ित करता रहता है। यह साधना की ऊंचाई न बनकर अपव्यय साबित होता है।

जीवन अपव्यय में समाप्त हो यह सद्गुरु रूपी चिकित्सक को स्वीकार नहीं है। इसलिए वे मृत्यु को परम मित्र मानते हैं और कह उठते हैं—"रे मौत प्यारी मौत मेरे सामने आया करे"। जैसे सन्त सम्राट सद्गुरु कबीर उद्घोष करते हैं— *"जेहि मरने से जग डरे, मेरो मन आनन्द। कब मरिहौं कब पाइहौं, पूरण परमानन्द।"* उसी परम दशा में सद्गुरु चिकित्सक अपनी परम मित्र मौत को सामने देख लेने की शौक रखते हैं। इसलिए तो हाड़-मांस का ढांचा और टट्टी-पेशाब की पोटली इस शरीर को अपने से पृथक मानकर मोह-ममता से बचे रहते हैं और बन्धन के मूल स्रोत विजाति घटों से सदैव स्त्री-पुरुष दोनों को सावधान रहने का सन्देश देते हैं। यथा—

जिस देह की चमड़ी चमक में लुब्ध होकर मर रहा
कामाग्नि में पाँखी बना निज शांति पर से जर रहा
वह सर्पिणी से भी दुखद जो प्राण से लगती प्रिये
मल-मूत्र की टट्टी अरे! तू बावला किसके लिए।

पूज्य सद्गुरु श्री आज्ञा साहेब जी की कृपा से सन् 1996 में पूज्य साहेब का दर्शन उन्नीसवें अधिवेशन के अवसर पर श्री कबीर मन्दिर प्रीतमनगर कालोनी, इलाहाबाद में हुआ था। उस समय सामान्य भेंट और दर्शन ही सम्भव था। ज्यादा भीड़-भाड़ में निकट होने का अवसर नहीं बना। सन् 1999 में जब गुरुदेव का कार्यक्रम नेपाल में सुनसरी जिला में हुआ, उसी अवसर पर काठमांडू आश्रम का प्रतिनिधि बनकर दर्शन लाभ मिला। उसी समय गुरुदेव का अंतरंग हो गया। फिर तो भक्तिभाव का जो चिह्न अपनाने का संस्कार है विधिवत रूप में यहीं मधुबन गांव में हुआ। गुरुदेव ने दयाभाव दर्शाते हुए दीक्षा का अधिकारी बनाया। ज्ञान और वैराग्य की प्रतिमूर्ति सद्गुरु की छत्रछाया उसके बाद निरन्तर मिलते रहने के अपूर्व सिलसिला के कारण ही यह भूमिका बीज यह शब्द संयोजन करने में काबिल हो रहा हूं, ऐसा हमें भास होता है।

अत्यन्त गंभीर और शालीन व्यक्तित्व से विभूषित गुरुदेव की अमृतवाणी से हमारे गुरुदेव श्री आज्ञा साहेब जी अत्यन्त प्रभावित थे। जीवन की अन्तिम घड़ी तक बीजक व्याख्या स्वयं सुनते रहे और अन्य को सुनाने की भूमिका बनाते रहे। जिस समय सद्गुरु विशाल देव के यहां वैराग्य संजीवनी पुस्तक पहुंची और सद्गुरु श्री विशाल देव देखे तो लेखक के वैराग्य भाव को जान गये। शायद यही भाव के आदान-प्रदान बीच कबीर मन्दिर बड़हरा एवं बाराबंकी समाज निकट हो गये। सद्गुरु विशाल देव की महान रचना भवयान से पूज्य सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब एवं गुरुदेव अत्यन्त प्रभावित हो गये। छत्तीसगढ़ के क्षेत्र में महीनों 'भवयान' के आधार में ही कथा के प्रोग्राम दोनों महापुरुष करते थे, ये सब बातें पूज्य गुरुदेव श्री आज्ञा साहेब बताते थे। कुल मिलाकर पूज्य गुरुदेव श्री आज्ञा साहेब का सम्बन्ध इलाहाबाद समाज से तब से अन्त तक एकरस बना रहा। मुक्तिद्वार अन्तर्गत निवृत्ति साहस शतक और शान्ति शतक दोनों सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब और गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी की शंका-समाधान में विशाल देव द्वारा दिया उत्तर ही का समग्र रूप है, यह बात हम अपने गुरुदेव के मुखारविन्द से सुने थे।

जिस हृदय-कमल से निःसृत मृदु वाणी सबको शीतलता प्रदान करती है, वह वाणी चाहे देश में मुखरित हो या विदेश में, सबकी उष्ण विकृति को शीतल प्रकृति में बदल देती है। यही विशेषता पूज्य गुरुदेव में ओतप्रोत

थी। हम यहां (नेपाल) के भक्तिभाव में निमज्जन करने वाले हृदय की आवाज को उद्घाटित करने में हिम्मत करते हैं। श्री साहेब जी के विचार किसी संप्रदाय विशेष, वर्ग विशेष या जाति विशेष वालों के लिए न होकर मानव मात्र के लिए कल्याणकारी होते थे। यही कारण है कि आज भी काठमाण्डू में अनेक ऐसे भक्त-सज्जन सत्य के जिज्ञासुजन हैं जो कहते रहते थे कि साहेब जी का यहां आने का क्या प्रोग्राम है, हमें अवश्य सूचित करियेगा। काठमाण्डू के अनेक भक्त-सज्जन साहेब जी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व से खूब प्रभावित हैं।

जैसे सद्गुरु विशाल देव में प्रतिपक्ष बनकर उभर आने वालों के लिए भी अपार दया और स्नेह था वही पूर्ण भाव आप में भी विद्यमान था। इसका साक्षात्कार हमें अपने जीवन में आपकी सन्निकटता से हुआ है। आपके समग्र जीवन में जितना आपने विशाल वचनामृत का आदर किया और उन वचनों को जन-जन में प्रवाहित करने में जिस कटिबद्धता से भूमिका निभाई वह सदैव स्तुत्य है। वचनामृत के प्रेमी लोग इस उपकार को कभी भुला नहीं पायेंगे। इसी कारण गुरुदेव बारम्बार घोषणा करते थे कि मेरे जीवन में दो महापुरुष सामने आये एक जिन्होंने सद्गुरु कबीर का राजमार्ग दिखाकर आत्मबोध की पूंजी लखा दिया, दूसरा जो बोलता है उसी के तहत जीवन के सांचा में अपने को ढालता है, वह दूसरा महापुरुष आदर्श पुरुष विशाल देव ही थे।

पूज्य गुरुदेव श्री आज्ञा साहेब जी के निमन्त्रण में आप पहली बार सन् 1981 में काठमांडू पधारे, विविध स्थानों पर आपके सत्संग से लोग लाभान्वित हुए। फिर तो आप अनेक बार नेपालवासी भक्तों को अपने प्रेम की छत्रछाया देते रहे। अन्तिम यात्रा 2011 अप्रैल में पोखरावासी भक्त लीलाकृष्ण भूर्तेल ने ऐतिहासिक कार्यक्रम पोखरा में रखा, और हमारे आश्रम के परम सेवक श्री ध्रुव के. सी. के विशेष आग्रह से उसी समय साप्ताहिक सत्संग का दीप काठमांडू में जलाया, यही रोशनी आखिरी साबित हुई। यह सौभाग्य नेपाली समाज को यहीं तक था।

"यह मिट्टी का लौंदा अभी छूटे या कल, हमने पत्तल में भोजन कर लेने वत मोक्ष के कार्य इस शरीर से सम्पादित कर लिया है। अब इस पत्तल को कोई कूड़ेदान में डाले या जला दे या बहा दे, हमें इसकी क्या परवाह करना!" ऐसा उद्घोष करने में उदार महापुरुष अपनी पूज्यता का जड़ संस्कार लोगों में फैलने नहीं पाये इस उद्देश्य से कोई स्मारक या समाधि बने और ख्याति विस्तार हो, इस अन्ध दौड़ से विपरीत चलने का मन पालता था, पर समाज का भावुक हृदय अपने इष्ट को जंगल में छोड़ देने की लापरवाही कैसे कर सकता है। इसलिए अपने आप में ही हम स्ववश रह सकते हैं, अपने माने हुए शरीर पर भी नहीं, यह गुरुदेव जी का कथन अक्षरशः साबित हुआ। शरीर पर समाज का हाथ लग गया और आप 'स्व' अपने में समा गये।

आज गुरुदेव जी का भौतिक रूप उन्हीं भौतिक तत्त्वों में समा गया, लेकिन जो ज्ञान का मधु समाज को सौंप गये हैं निश्चित रूप में कबीर पारख संस्थान के अधिकारी वर्ग एवं सेवक दल भी राम के सेवक हनुमानवत उसको संभाल रखेंगे और उसे समाज में वितरित करेंगे। यही पुरुषार्थ की एकरसता अपने इष्ट के त्याग-वैराग-साधना की रश्मि युग-युगान्तर तक भटके हुए पथिक को राह दिखाती रहेगी, अमी रस सिंचन करती रहेगी, इसी शुभाकांक्षा के साथ इस विरह की घड़ी में हम काठमांडू नेपाल के सन्त-भक्त समाज की ओर से हार्दिक भावभीनी श्रद्धांजलि गुरुदेव के चरण-कमलों में अर्पित करते हैं।

कबीर सत्संग आश्रम, पूजा प्रतिष्ठान मार्ग
पुरानो बानेश्वर, काठमांडो, नेपाल

जब गुरुदेव के प्रथम दर्शन पाये

रणजीत कबीरपंथी

संसार के समस्त व्यक्तियों को हम तीन श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं। प्रथम प्रकार के वे जिनका नाम कभी न लिया जाये तो ही ठीक है, जैसे हिटलर, मुसोलिनी, चंगेज खां, नादिरशाह आदि या और भी इन्हीं जैसे मानवता विरोधी व्यक्ति। दूसरे प्रकार के वे होते हैं, जिन्हें कभी-कभी स्मरण कर लिया जाये तो उचित रहता है, जैसे बंधु-बांधव, रिश्तेदार, मित्र आदि। तीसरे प्रकार के वे होते हैं जिन्हें हरदम, हरपल, हरक्षण याद किया जाये तो बहुत ही अच्छा लगता है। मन प्रफुल्लित एवं प्रमुदित बना रहता है। ऐसे महापुरुषों में सद्गुरु कबीर, संत रविदास, गुरुनानक, दादू, दरिया, पलटू, नाभा इत्यादि के नाम गिनाये जा सकते हैं। ऐसे ही महामानवों में एक नाम और दर्ज हो चुका है, और वह नाम है परम पूजनीय प्रातः स्मरणीय सद्गुरु अभिलाष साहेब जी।

सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी का जन्म 17 अगस्त, 1933 को उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले में एक छोटे से गांव खानतारा में हुआ था। बचपन से ही आपको धार्मिक संस्कार विरासत में मिले थे। इसलिए आप साधु-संतों के सत्संग में अधिक समय व्यतीत किया करते थे। वैसे आप प्रारम्भ में धार्मिक माने गये कर्मकाण्डों के समर्थक थे परन्तु अपनी 18-20 वर्ष की आयु में जब आप पारखी संतों के सम्पर्क में आये तो आपके पूर्व जन्मों के संस्कार जग गये। सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब के सम्पर्क में आने के पश्चात तो आपने पीछे मुड़कर नहीं देखा। कर्मकाण्डों के तमाम कचरे को जलाकर खाक कर डाला और जाति-वर्ण, सम्प्रदायों से ऊपर उठकर पूरी तरह से मानवता के पुजारी बन गये तथा सद्गुरु कबीर साहेब की तरह सबकी खैर मनाने के लिए निकल पड़े।

मैं आपके सम्पर्क में सन् 1975 में आया। तब से लेकर अनवरत रूप से मुझे आपने अपना स्नेह-भाजन बनाये रखा। अपने विद्यार्थी जीवन से ही स्वाध्यायी होने के कारण जब मैंने आप द्वारा रचित कल्याण-पथ नामक सद्ग्रंथ पढ़ा तो मुझे लगा कि इस कृति के रचयिता के अवश्य ही दर्शन करने चाहिए। उस समय मैं उज्जैन (मध्य प्रदेश) में बी. एड. प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा था। काशी में बुलानाला में तब आप पुस्तक-प्रकाशन के लिए निवास कर रहे थे। मैं वहां पहुंचा और आपकी प्रथम झलक पाकर इतना अभिभूत हुआ कि मैं उसका वर्णन शब्दों में नहीं कर सकता। मुझे लगा कि मैंने साक्षात सद्गुरु कबीर साहेब के ही दर्शन कर लिये हैं। और हकीकत में आज आपको आधुनिक कबीर की संज्ञा से विभूषित किया जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्योंकि सद्गुरु कबीर साहेब ने आज से पांच सौ वर्ष पूर्व जिस प्रकार जाति-वर्ण, सम्प्रदायों पर अपने ज्ञान-लुआठे से प्रहार कर मानवता का मार्ग प्रशस्त किया था, ठीक उन्हीं की तरह आपने अपनी निराली शैली में जाति-वर्ण और सम्प्रदायों के विषैले वृक्ष की जड़ों को खोखला करने में कोई कसर बाकी नहीं रखी।

इस विषय में मुझे एक संस्मरण याद हो आया। एक बार मैं प्रीतमनगर में गुरु जी से अंधविश्वासों के खिलाफ लिखी गयी अपनी 'जग बौराना' नामक पुस्तक

को संशोधित करवा रहा था। तभी मैंने उनसे निवेदन किया कि "साहेब जी, यहां पर कार्यक्रम में बाहर से आये कुछ लोग मुझसे मेरी जाति पूछते हैं। मैं क्या बताऊं?" तब उन्होंने बड़े ही प्रेम से कहा, "बेटे, उन्हें बता दो कि मैं तो गुरु जी की ही जाति का हूं, उन्हीं के वर्ण का हूं और उन्हीं के गोत्र का हूं।" आपके मुख से इतनी मीठी, इतनी अपनत्व भरी वाणी तथा इतने उद्दात विचार सुनकर मेरे नेत्रों में प्रेमाश्रु छलक आये। मैं अभिभूत हो उठा।

मेरी दृष्टि में साहेब जी के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि उनसे जो भी मिलता उसे यही लगता कि साहेब जी सबसे अधिक प्रेम उससे ही करते हैं। वास्तव में यह खूबी किन्हीं बिरले-बिरले व्यक्ति में ही होती है।

साहेब जी आज शारीरिक रूप से हमारे बीच में नहीं हैं परन्तु उनकी पावन स्मृतियां हमारे मनोमस्तिष्क में गहरे उतरी हुई हैं। उनकी उन मीठी परम पावन तथा प्रेरणादायी स्मृतियों की सुवास से हम अपने जीवन को सुवासित कर सकते हैं।

काल के गाल में सब समा जाते हैं। उसे कोई पराजित नहीं कर सकता। परन्तु कुछ महामानव ऐसे होते हैं जो उसकी छाती को रौंदकर उसका अतिक्रमण कर जाते हैं, उससे बहुत आगे निकल जाते हैं। उसे चारों खाने चित्त करके उसकी छाती पर अपनी कीर्ति पताका गाड़ देते हैं। साहेब जी ने यही किया। काल की छाती को रौंद डाला और अपनी कीर्ति पताका उसकी छाती पर लहरा दी। ज्यों-ज्यों समय गुजरता जायेगा, आपके नाम की पताका और भी अधिक लहराती जायेगी।

अंत में मैं उन्हें अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मेरी दृष्टि में आपको वास्तविक श्रद्धांजलि देना तो यही होगा कि हम आपके बताये मार्ग पर चलकर इसी जीवन में अपने चरम और परम लक्ष्य को प्राप्त कर लें। हमारे द्वारा अन्य प्रकार से दी गयी श्रद्धांजलि तो औपचारिक मात्र ही होगी। आपको शत-शत वंदन। साहेब बंदगी! साहेब बंदगी!! साहेब बंदगी!!!

कबीर आश्रम, सुवासरा मंडी, मंदसौर, म. प्र.

गुरुदेव से परिचय एवं गुरुदेव की ममता

रामशिरोमणि मिश्र

मैं ऐसे परिवार एवं समाज में रहता हूं जहां उषा काल के पूर्व से ही शंख एवं घण्टियों की आवाज पूरे शांत वातावरण में हिलोरे करनी लगती है। मेरे पूज्य माता-पिता प्रयाग में प्रति वर्ष होने वाले माघ मेले में कल्पवास किया करते हैं, उनकी सेवा हेतु प्रतिदिन उनके कैम्प में आता-जाता रहा। उसी कल्पवास की सेवा के समय एक पुस्तक की दुकान जो कि बांध के इस पार परेड में लगी थी उस पर दृष्टि पड़ी, जिस पर लिखा था—कबीर साहित्य। मैं पैदल चलकर बुक स्टाल पर पहुंचा। वहां पर श्रद्धेय श्री देवेन्द्र साहेब अपनी मधुर वाणी से ग्राहकों को संतुष्ट कर रहे थे। वहां पर मैंने देखा कि बहुत सारी पुस्तकें क्रमबद्ध तरीके से सुव्यवस्थित रखी हुई हैं। किन्तु सभी पुस्तकों के लेखक एक ही हैं। यह बात मेरे हृदय को प्रभावित की कि अनेक विषयों पर एक ही लेखक द्वारा पुस्तकें लिखी गयी हैं, अवश्य कोई अच्छा विद्वान होगा।

मैंने वहां से पतली-पतली कई पुस्तकें क्रय की और पढ़ने लगा और ऐसी जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि मैं रात को दो बजे जग कर पुस्तकों को पढ़ता। मैं परम पूज्य गुरुदेव के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानता था। किन्तु पुस्तकों को पढ़ते समय ऐसा लगे कि मैं पुस्तकों को पढ़ ही नहीं रहा हूं वरन पुस्तक के लेखक हमें उपदेश कर रहे हैं।

मैं उस समय एक सरकारी कम्पनी में काम कर रहा था तथा मेरे साथ ही जयन्तीपुर प्रीतमनगर के श्री वी. के. सिंह भी कार्यरत थे। मैंने उनसे गुरु जी से मिलने की इच्छा प्रकट की। यह सब होते एक वर्ष से अधिक का समय व्यतीत हो गया। वह शुभ दिन आ गया जब श्री सिंह साहेब से गुरु जी से मिलने का समय निश्चित हो गया।

श्री वी. के. सिंह आश्रम के पड़ोसी ही थे। उनके साथ प्रीतमनगर आश्रम पहुंचा। वहां पर साधु लोगों से गुरु जी के दर्शन हेतु अनुरोध किया गया। हाथ-पांव धोकर पहले तल्ले पर पहुंचे, देखा कि एक दिव्य मूर्ति आसन पर मूर्तिवत बैठे हैं। उनके प्रथम दर्शन करते ही आंखें छलक आयीं। फिर बन्दगी करके सामने रखी दरी पर हम दोनों शान्त बैठ गये। गुरु जी ने कुशलक्षेम के साथ पूछा, पहली बार आये हो।

मैंने विनम्रतापूर्वक अपना परिचय दिया तथा श्री सिंह साहेब को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए बताया कि आपके पास तक पहुंचने के माध्यम यही हैं।

यहां इस मार्मिक घटना का उल्लेख करना आवश्यक है कि इस समय मैं जिस कम्पनी में कार्य करता था वह बन्द हो चुकी थी। वेतन नहीं मिलता था। मेरी पूज्या माता जी गम्भीर रूप से बीमार थी जो बिस्तर पर पड़ी थी, हिल-डुल नहीं सकती थी; मेरे भाई की पत्नी क्षय रोग से पीड़ित थी, उसका भी इलाज चल रहा था। ऐसी विषम परिस्थिति में मुझे पहली बार परम पूज्य गुरुदेव का दर्शन प्राप्त हुआ। 'और मोटा की बांह' मिल गयी।

मेरे निवास से आश्रम की दूरी लगभग 28-30 कि.मी. होगी। मैं साइकिल से आश्रम जाता क्योंकि स्कूटर चलाने हेतु पैसे नहीं थे। 10-15 रुपया यदि जेब में रहते तो उसे खर्च नहीं करता लेकिन अब अभाव दुख नहीं दे पाता था। जब भी गुरुदेव के दर्शन के लिए पहुंचता, बन्दगी के बाद पूज्य गुरुदेव स्वयं अपने हाथों से उपलब्ध खाने-पीने की चीजें कटोरा में लाकर देते और कहते, जाओ पहले खाकर पानी पी लो फिर बात करते हैं। सारा स्नेह हम पर डाल देते। घर के एक-एक बच्चे तक की कुशल पूछते, सब ठीक हो जायेगा, ऐसा वैराग्यपूर्ण साहस देते। आश्रम में कितनी भी भीड़ रही है, कितने भी भक्त गुरु जी के सामने दरी पर बैठे हों लेकिन गुरु जी ऐसा प्रेम करते जैसे कि अकेला उनके सम्मुख हूं और वे हमसे अकेले बात कर रहे हैं।

गुरु जी के त्याग-वैराग्य की ऐसी खुशबू फैलती रही कि मेरे घर-परिवार, भाई-बहन सब गुरु जी को हृदय से मानने लगे।

मुझे अपने बेटे मनीष की वे पंक्तियां नहीं भूलतीं, जब मैंने गुरु जी के देह त्याग के बारे में 27 सितम्बर, 2012 को मेल किया तब उसने यही उत्तर में लिखा कि हमारी जो भी प्रगति हुई है उसके पीछे गुरु जी की ही प्रेरणा है, अब हम किससे अपनी समस्या बतायेंगे, कौन हमें संबल देगा।

परम पूज्य गुरुदेव जी ने ऐसा साहस दिया कि सारी समस्याओं से निकल पाया और गुरु जी की वाणी सदैव मार्गदर्शन करती रहती है।

गुरुदेव के बारे में कुछ भी पंक्तियां लिखने के लिए उस स्थिति में व्यक्ति को पहुंचना पड़ेगा जहां पर गुरुदेव जी स्थित थे।

गांव ऊंचे पहाड़ पर, औ मोटा की बांह।
कबीर अस ठाकुर सेइये, उबरिये जाकी छांहû

थरवई, फाफामऊ, इलाहाबाद

तैं सुत मान हमारी सेवा...

गुरुरमन दास

इस धराधाम पर जन्म तो अनेक लोगों का होता रहता है, परन्तु कुछ ऐसे महापुरुष हुए जिनके जीवन की सुगन्ध से सम्पूर्ण धरा कालान्तर तक सुवासित होती रही है। पुष्पों की सुगन्ध तो हवा के रुख की ओर ही जाती है, परन्तु महापुरुषों के जीवन के कृतित्व एवं व्यक्तित्व की सुगन्ध तो सर्वत्र दिग्दिगान्तर तक फैल जाती है। ऐसे ही महामानव के रूप में सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी ने जनमानस के कल्याण की दिशा प्रशस्त की है।

चूंकि मेरा जन्म भक्त परिवार में हुआ है जिससे बचपन से ही संत-गुरुजनों के दर्शन-सत्संग का लाभ मिलता रहा है। एक बार मैं लगभग 18 वर्ष की उम्र में सद्गुरु श्री प्रेम साहेब जी के दर्शनार्थ बंधियाबाग (सरैया-बाराबंकी) गया था। उस समय सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी भी वहीं पर विराजमान थे। दो दिन उनके साथ रहने का अवसर मिला। मुझे अपार खुशी एवं प्रसन्नता हुई। फिर गुरुदेव जी के साथ ही कबीर मंदिर डालीगंज, लखनऊ आना हुआ। बस का किराया मैंने चुपके से कंडक्टर को दिया। परन्तु गुरुदेव जी नहीं चाहते थे कि यह बच्चा खर्चा करे। जब रिक्शा द्वारा कबीर मंदिर पहुंचे और वहां जैसे ही मैंने जेब में हाथ डाला वैसे ही गुरुदेव ने मेरा हाथ पकड़ लिया और बड़े प्यार से कहा—'बेटा, ज्यादा खर्च मत करो। जब तुम कमाने लगो तब सेवा करना।' संयोग कुछ ऐसा बना कि मैं कमाकर गुरुदेव की सेवा तो नहीं कर सका, बल्कि गुरुदेव जी ही अपनी शरण में लेकर वर्षों तक पालते-पोषते रहे।

वस्तुतः हम सब गुरु की जो भी सेवा करते हैं वह नाशवान चीजों द्वारा ही करते हैं, परन्तु गुरु द्वारा की गयी बोध-आत्मज्ञान की सेवा ऐसी अविनाशी सेवा है जो हमें भवसागर से ही पार कर देती है। फिर तो साधक को आत्म-शान्ति का साम्राज्य ही प्राप्त हो जाता है।

'तै सुत मान हमारी सेवा, तो कहँ राज देउँ हो देवा'
(सद्गुरु कबीर देव)

'नाशमान तन सेवा तुम्हरी, बोध अनाशी चीजें'
(सद्गुरु विशाल देव)

सद्गुरु हम सबके बीच शरीर से तो नहीं रहे परन्तु आपकी कृतियां भक्ति-साधना मार्ग के लिए युग-युगान्तर तक संबल का कार्य करती रहेंगी। आपकी वाणी की झंकार हम सबके दिल में सदैव गूंजती रहेगी। गुरुदेव जी के बारे में जितना कहा-लिखा जाये कम ही है।

सब धरती कागद करूं, लेखनी सब बनराय।
सात समुद्र की मसि करूं, गुरु गुण लिखा न जाय॥

अंततः वर्तमान के संत-गुरुजनों से करबद्ध प्रार्थना है कि इस किंकर दास पर अपनी कृपा बनाये रखें। मैं पूज्य गुरुदेव को शत-शत वंदन करता हूं एवं अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित करता हूं।

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

और हम गुरुदेव से जुड़ गये !

युवराज, पुष्पा, आदित्य, आयुषि

30, 31 दिसम्बर, 2004 और 1 जनवरी, 2005 नहीं भूलने वाले तीन दिन, जब पहली बार गुरुदेव जी के दर्शन हुए। जैसा सुना था उससे कहीं अधिक देखा, परखा और पाया कि कोई संत किसी कागज-चिट्ठी का सहारा न लेते हुए घण्टों तक प्रवचन करते हैं। ऐसा पहली बार देखने को मिला। देखकर आश्चर्य हो रहा था कि बिना सिर हिलाये, बिना हाथ हिलाये अध्यात्म के बेजोड़ भारी शब्द बिना किसी आवेश के गुरुदेव की वाणी से निकलकर सीधे मानसपटल पर बराबर आघात करते रहे। प्रवचनों के दिन हम शब्दों को सत्य की कसौटी पर अपनी बुद्धि से तौलते रहे और अंततः मानना पड़ा, यही निर्गुण ज्ञान है, आत्मज्ञान है।

गुरुदेव जी का कार्यक्रम उन दिनों ग्राम राजना, जिला छिंदवाड़ा में था। करीब एक वर्ष पहले सी. एस. टी. मुंबई स्टेशन पर गाड़ी लेट होने की वजह से बुक स्टॉल पर एक किताब 'मैं कौन हूं' पढ़ने को मिली जिससे अध्यात्म की अलग दिशा का ज्ञान हुआ। दिये हुए पते पर कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद से हमारे कैप्टन मित्र को फोन करके महत्त्वपूर्ण 10 किताबें लाने को कहा। वह रायपुर वार्षिक छुट्टी के लिए कुछ ही दिनों में आने वाला था। रायपुर से किताबें नागपुर मंगाई गयीं तथा महीने भर में ही बहुत कुछ पढ़ लिया। प्रथम किताब 'मोक्षशास्त्र' पढ़ी। 11 अध्याय के इस ग्रंथ ने जीवन की आध्यात्मिक धारा ही बदल दी। स्वबोध का प्रकाश, निर्णय वाणी, जड़-चेतन सत्ता विचार सद्गुरु श्री विशाल साहेब का कल्याणपरक संदेश आदि विषयों को पढ़कर गुरुदेव जी से मिलने की उत्कण्ठा जागृत हो गयी। हम इलाहाबाद टेलीफोन करते थे और कार्यक्रम की जानकारी लेते थे। वहीं से 6 महीने पहले कार्यक्रम का पता चला तथा तीनों दिन समय निकालकर राजना में ही रुक गये। उन्हीं तीन दिनों के सत्संग लाभ के पश्चात हमारा पूरा परिवार पूर्णरूपेण गुरुदेव जी से जुड़ गया। उसी दिन से हमारी ऐसी चेतना जागी, भास हुआ और हमें गुरुदेव जी पारिवारिक ज्येष्ठ सदस्य के रूप में मिल गये। उस समय से आज 8 सालों से हमारी कार्य-पद्धति तथा जीवन जीने के नियम का पूरा स्ट्रक्चर ही बदल गया। हमारी कोई भी पारिवारिक समस्या रही उसका समाधान हम गुरु जी से ही पूछते थे और वही करते थे। आजकल तो यह नियम हो गया था कि किसी ने घर में कुछ गड़बड़ की तो शिकायत तुरंत गुरु जी के पास जाती थी तथा तुरंत सभी सही हो जाते थे और नियम से रहते थे। गुरुदेव जी की नम्रता, प्यार का प्रसाद हमें सत्य जीवन जीने के लिए मजबूर कर देता था।

इस शताब्दी को हम धर्म मंथनकाल कह सकते हैं। धर्म को शुद्ध बौद्धिक कसौटी पर कसते समय यह देखा जाता है कि वह समभाव, समन्वय तथा सत्य का समर्थक है कि नहीं। उसी तरह गुरु जी ने हमारी बुद्धि पर पड़ा हुआ परदा भी पूरी तरह उठा दिया तथा आत्मा ही सत्य है इसका पूरा भास करा दिया। कर्मफल-भोग

सिद्धांत, कारण-कार्य व्यवस्था के नियम, जड़-चेतन विश्लेषण, धर्म की परिभाषा, संत कबीर का सहज ज्ञान, सहज समाधि तथा हर पल अपने जीवन की शुचिता का आदर्श, गुरुदेव जी की यही देन हमारे जीवन के आदर्श हैं।

उन दिनों जनवरी, 2007 का कार्यक्रम नागपुर गीता मंदिर में भव्य रहा। पहली बार नागपुर में हम काफी समाज जोड़ पाये थे। कई विद्वानों की विचार संगोष्ठी भी रखी गयी थी। एक संस्मरण हमें याद आता है। डॉ. भाऊ लोखंडे डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर अंतर्राष्ट्रीय पीठ के अध्यक्ष तथा गौतम बुद्ध के प्रखर समीक्षक हैं। कार्यक्रम के कुछ समय पश्चात हमें मिले तो पूज्य गुरुदेव जी के विषय में चर्चा हुई। उन्होंने कहा कि गुरु जी की वाणी समुद्र के समान शान्त और गम्भीर लगती है लेकिन मस्तिष्क में कहीं ज्वालामुखी का विस्फोट कर देती है, झकझोर कर रख देती है, तथा विचार करने पर मजबूर कर देती है। वैसे ही वेदप्रकाश मिश्रा भी कहते हैं कि गुरु जी के ग्रंथ हमारे लिए रीडर डाइजेस्ट हैं। ऐसे विलक्षण प्रतिभाशाली संत के जाने का समाचार सुनकर सारा समाज व्यथित हो गया।

हमें लगता है यह आठ ही साल का सम्बन्ध गुरुदेव जी से हमारा आठ जन्मों का संबंध है। सन् 2012 जुलाई में नागपुर में हमारा काफी समय गुरुदेव जी के साथ बीता। परिवार के सभी सदस्यों को अलग-अलग समझाते रहे, अनेक शंकाओं का समाधान किया। हमारी बेटी आयुषि ने प्रश्न किया कि हमारा मन सुख और दुख में रोता है, दोनों में क्या फरक है? आयुषि के प्रश्न सटीक होते हैं और वह वैसे ही उत्तर चाहती है। उसका आई. क्यू. भी गुरुदेव जी से मैच होता है। गुरु जी मुझे आटोणे जी और मेरी पत्नी पुष्पा को बेटी कहते थे। पुष्पा ने गुरु जी से कहा—साहेब, आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है। आप कमजोर हो गये हैं। गुरु जी ने तुरंत उत्तर दिया, 'अरे, इसे तो जाना ही है'। मैंने तुरंत पूछ लिया—साहेब, यह तो ठीक है लेकिन हमारा क्या होगा? गुरुदेव जी ने कहा—मैं आप सभी के साथ सदैव रहूंगा। आप मेरी कोई भी पुस्तक खोलेंगे मैं वहीं नजर आऊंगा। अपने मन को मजबूत रखना और दो महीने के पश्चात 26 सितम्बर को मैं सुबह 8 बजे बगीचे से घर वापस आने पर देखता हूं कि मेरी श्रीमती बहुत जोर से रो रही हैं। मैंने पूछा क्या हो गया? उसके गले से आवाज निकलना मुश्किल था। मुझे लगा कि परिवार के किसी सदस्य का निधन हो गया होगा। उसी वक्त इलाहाबाद से फोन आया, गुरुदेव जी का शरीर छूट गया। अपने आप ही मैं सुन्न हो गया। दस मिनट बाद काफी फोन आये।

सद्गुरुदेव अपने आपको इतनी जल्दी दुनिया से समेट लेंगे, ऐसा उनकी उम्र तथा दिनचर्या को देखकर नहीं लगता था। सिर्फ आठ साल तक ही हमें उनका सान्निध्य मिल पाया और ज्ञान का लाभ ले पाये। हमारे जीवन पर बहुत असहनीय आघात हुआ है। कभी-कभी ऐसा लगता है कि जड़ तत्त्व की परिवर्तनशीलता ही सर्वोपरि है। कहीं जीवात्मा उसके आगे कठपुतली ही तो नहीं है? आयुषि की यही पंक्तियां अंत में मन को संयमित करती हैं—

ऐ दिल तू क्यों रोता है?
दुनिया में तो यूं ही होता है।
थोड़ी खुशी है सबका हिस्सा,
बाकी तो गम ही है सबका किस्सा।
यहां से सभी तो जायेंगे,
फिर कभी न वापस आयेंगे।
ऐ दिल तू क्यों रोता है?

ऐसे अनगिनत संस्मरणों से ही हम हमेशा गुरुदेव जी के साथ रहेंगे। अब यही स्मरण तथा उनकी वाणी हमारे जीवन का आधार रहेगी। परमपूज्य सद्गुरुदेव जी के पावन चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए त्रयबार साहेब बन्दगी...।

शारदा मंदिर, गणेश पेठ, नागपुर, महाराष्ट्र

मेरे मन-मंदिर के परम आराध्य गुरुदेव जी

साध्वी सुमेधा

मैंने कभी सोचा भी न था कि हम सब गुरुदेव जी की करुणामयी वात्सल्य भरी शीतल छत्रछाया से इतने जल्दी विहीन हो जायेंगे। आपके विषय में 'मैं क्या लिखूं?' जो जितना भी लिखेंगे वह आधा-अधूरा प्रयास होगा। क्योंकि लिखना और कहना अपनी समझ और पहुंच के अनुसार होता है। आपके सम्पूर्ण जीवनवृत्त को, व्यक्तित्व को, रहनी और आचरण को स्वरूपस्थिति को अक्षरशः स्पष्ट रूप में कैसे प्रस्तुत किया जा सकता है। क्योंकि शब्द अनुभव के विषय में मौन है। और फिर आपके विषय में कोई आप जैसा महामानव ही बता सकता है। हम तो सब विधि से अल्पज्ञ हैं।

आप हमारे जैसे अनेकों मुमुक्षु-जिज्ञासुओं की जीवन नैया के खेवैया थे। आपने हमारे जीवन में एक महान शिल्पकार की भूमिका निभाई। आप एक कुम्हार से कम नहीं थे। आप एक कुशल वैद्य, मनोवैज्ञानिक, शल्य चिकित्सक थे। रोगी की नब्ज को पकड़कर भली-भांति उपचार करना आपको बड़ी कुशलता से आता था।

आप में मां से अधिक ममता, पिता से अधिक प्यार, मित्र से अधिक सहयोग एवं गुरु से अधिक गंभीरता थी। आप सरल, सहज, मृदुभाषी थे। प्रसंगवशात खुलकर हंसना, कम एवं मीठा मृदु भाषा का प्रयोग आपका सहज स्वभाव था। परिचित-अपरिचित बड़े-बूढ़े, स्त्री-पुरुष, बच्चे जो भी मिलते वे सब एक अनोखे आनंद की अनुभूति किये बिना नहीं रहते। आपकी मुलाकात को सहज ही वे वर्षों-वर्षों भुला न पाते। मेरा स्वयं का अनुभव—सन् 1997 में प्रीतम नगर में सिर्फ 5-7 मिनट की मुलाकात में कुशल-मंगल के साथ गुरुदेव से मुखरित वाणी 'संसार दुख से भरा है।' आज तक न भुला पायी। यह मेरी साधना का एक अंग बन गयी।

आपके लेख या प्रवचन में आकर्षण का जो जादू है। वह सबके चित्त को चुरा लेता है। हर जिज्ञासु-हृदय को यही अनुभूति होती है कि गुरुदेव सिर्फ मेरे लिए या मेरी समस्याओं पर बोल या कह रहे हैं। हर समय लाजवाब असरकारक समाधान लोगों को मिलता रहा। आपकी कथनी, करनी एवं रहनी की एकरूपता के कारण आपके व्यक्तित्व में चुम्बकीय असर था।

आपका व्यवहार पक्ष, आचरण पक्ष, दर्शन पक्ष, अध्यात्म पक्ष, सभी पक्ष हीरे की तरह ठोस एवं ज्योतित थे। कहीं कोई कसर-खोट न थी।

आपने नारी समाज के उत्थान एवं कल्याण में बेदाग रहकर जो अहम एवं महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी उसके विषय में मुझ अल्पमति को शब्दकोष में कोई शब्द नहीं मिल रहा है, जिसे लिखकर मैं उपकृत हो सकूं। सद्गुरु कबीर साहेब का एक दोहा इस समय मुझे याद आ रहा है—

सब धरती कागद करूँ, लेखनी सब बनराय।
सात समुद्र की मसि करूँ, गुरु गुण लिखा न जाय॥

आप जैसे वैरागी, स्ववश चित्त, सौम्यमना, कुशल समाज नायक, स्थिर आसन में लिमिटेड भाषण में जादू वत मंत्रमुग्ध कर सभी के दिलों में बसने वाले, ध्यान और समाधि की ओर लोगों को अभिमुख करने में कुशल कारगर हस्ती को लिये समाज के बीच कोई युगद्रष्टा शीघ्र देखने को नहीं मिलेगा। आपकी वैराग्य संजीवनी, हृदय के गीत एवं भजनावली एक स्थितप्रज्ञ कवि की छवि दर्शाती है। आपके लेखों में ब्रह्मचर्य,

साधना सम्बन्धी अध्यात्म के अनुभवों से ओतप्रोत वासना की दुखरूपता, जगत की नश्वरता एवं आत्मा की अमरता का अनूठा संगम एवं दर्शन है। इससे सहज अनुभव किया जा सकता है कि आप कितने बड़े अनुभवयुक्त स्थितप्रज्ञ लेखक थे। आपके भाषण की शैली सरल, सहज, शांत होते हुए भी सार-सत्य जड़-चेतन बोध युक्त सारे भ्रम-पाखण्ड-चमत्कार एवं कल्पना की उड़ानों को समूल नष्ट कर देने में पूर्णतः समर्थ थी।

आपके संरक्षण में जो संत समाज एवं साध्वी समाज की संरचना हुई वह अद्‌भुत एवं अद्वितीय है। आपके समाज को छोड़कर ऐसा साधनामय सभी अंगों से सुगठित समाज देखने को नहीं मिलता। आपके समाज की एक अलग ही पहचान लोगों को आकर्षित करती है। आपके द्वारा गढ़ी गयी एक-एक मूर्ति में सेवा, संयम, साधना; ज्ञान, भक्ति, वैराग्य; दया, क्षमा, शील; लेख, भजन एवं प्रवचनों की त्रिवेणी समाहित है। भले ही वह अहंकार निरसन के कारण अपने को समाज में प्रस्तुत न करता हो।

आप जैसे स्थितप्रज्ञ खण्डन-मण्डन की शुष्क भाषण शैली से मुक्त, समस्त दुर्गुणों से उदासीन, पूर्ण निष्काम, निष्पंद, संकल्प-शून्य स्थिति के धनी, महान समाज नायक-सुधारक, युगद्रष्टा, निष्काम वृत्ति में समाहित, स्व-परमत के दिलों के प्यारे, समस्त सद्‌गुणों से समाहित, सहृदय, निर्मोही, अमानी, निष्कामी पूर्ण पुरुष परमपूज्य प्रातःस्मरणीय हम सबके सद्‌गुरुदेव जी के पावन श्री चरणों में मुझ अल्पमति की भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित है।

कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम, पोटियाडीह, धमतरी, छ. ग.

कीचड़ में कमल

साध्वी विशाखा

पहले जो हमारे यहां संत आया करते थे उन्होंने मुझे गुरुदेव जी की कुछ पुस्तकें दी थी जिनको मैं पढ़ा करती थी। फिर अन्दर से जिज्ञासा हुई कि ऐसे महापुरुष के मुझे कब दर्शन होंगे। फिर मैंने साहेब लोगों से कहा कि मुझे इलाहाबाद का पता दे दें। तब साहेब लोगों ने गुरुदेव जी के बारे में बताया कि पारख सिद्धान्त में सबसे बड़े महापुरुष वर्तमान में श्री अभिलाष साहेब जी ही हैं। उनके दर्शन करने में विलम्ब न करो। तब मैं पहली बार आपके दर्शन सन् 2008 में की थी। आपके दर्शन करते ही ऐसा लगा कि गुरुदेव जी तो मेरे दिल में ही समा गये हैं। आपका जीवन ऐसा पवित्र जीवन था कि जितनी ही प्रशंसा की जाये, उतना कम ही है।

वर्तमान के समय में मानो आप कबीर साहेब ही थे। आप अपने सिद्धान्त की बातें लोगों को इतने मीठे शब्दों में समझाते थे कि लोग सुनते ही आपसे जुड़ जाते थे। आपका जीवन कमल के फूल के सदृश था। जैसे कमल कीचड़ में रहते हुए भी कीचड़ से अलग रहता है वैसे ही आप संसार रूपी कीचड़ में रहते हुए भी संसार और शरीर से अनासक्त थे। गुरुदेव जी हरदम शरीर की नश्वरता के बारे में बताया करते थे।

ध्यान शिविर के समय 1-8-2012 को जब गुरुदेव जी से मिली तो मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं था। तब राम साहेब जी ने बताया कि गुरुदेव जी इनका स्वास्थ्य ठीक नहीं है। तब गुरुदेव जी कहने लगे—बेटी, शरीर की चिन्ता नहीं करना। यह नश्वर है। तुम्हें कुछ नहीं हो सकता, ठीक हो जाओगी। डॉक्टर से मिल लेना। घर जाते समय उनका अन्तिम शब्द था—बेटी, खूब वैराग्य करो, वैराग्यवान बनो।

मैं सदैव गुरुदेव जी के कहे हुए पथ पर चलती रहूं, यही मेरी सच्ची श्रद्धांजलि है।

कबीर पारख आश्रम, धर्मपुरी, वडोदरा, गुजरात

तुम्हें ढूंढ़ रहा है प्यार

साध्वी श्वेता

गुरुदेव जी के बारे में जो कुछ भी कहें कम है। गुरुदेव का व्यक्तित्व ही ऐसा था कि जो भी उनके पास जाता खुशियों का खजाना लेकर वापस आता था। आपके पास व्यावहारिक, पारमार्थिक, सामाजिक एवं मानसिक समस्त समस्याओं का समाधान था। साथ-साथ शांति और संतोष मिलता था। गुरुदेव जी स्वयं अपने आप में प्रकाशित थे और दूसरों को वैसे ही प्रकाशित करते थे। आप में व्यवहार-परमार्थ की हर कला थी। आपमें छोटे-बड़े, अमीर-गरीब का कोई भेदभाव नहीं था और न छुआछूत, जाति-पांति एवं मत-मजहब आदि का भेदभाव ही था। आप सब समय समता एवं सहजता में जीते थे। गुरुदेव जी की वाणी में अमृत था। जो कोई भी आपकी वाणी सुनता वह मंत्रमुग्ध होकर सुनता ही रह जाता था। एक बार आपके पास जो जाता वह आपका ही हो जाता था। गुरुदेव जी का हृदय अत्यन्त विशाल था जो भी आपके पास जाता आप यह नहीं देखते कि उसका रंग-रूप कैसा है, या उसके कपड़े मैले-कुचैले हैं तो मैं उससे दूर रहूं, बात न करूं, आप सबसे प्यार एवं सहानुभूति रखते हुए बातें करते थे।

गुरुदेव जी प्रेम के सागर थे। आपके हृदय में छोटे-बड़े, अमीर-गरीब की भावना नहीं थी। जो भी गुरुदेव जी से मिलने जाता था अपनी झोली में गुरुदेव का प्यार भरकर लाता था। आज हजारों लोग गुरुदेव के प्यार को याद करके आंसू बहा रहे हैं। गुरुदेव जी की ब्रह्मचारिणी-साध्वी समाज के लिए बहुत बड़ी कृपा है। कबीरपंथ में ऐसा कोई महापुरुष नहीं हुआ जिसने ब्रह्मचारिणी समाज को आधार दिया हो। पूज्य गुरुदेव जी का आधार पाकर ही साधिकाएं आश्रम बनाकर साधनामय जीवन जी रही हैं और समाज की सेवा कर रही हैं।

हमारे गुरुदेव जी का ऐसा नियम था कि हम आपके चरण नहीं छू सकती थीं, दूर से ही बंदगी करती थीं, लेकिन गुरुदेव का प्यार हम लोगों के प्रति कभी कम नहीं हुआ। हम लोगों को कभी आपने अहसास नहीं होने दिया कि हम आपसे दूर हैं। दूर रहकर भी गुरुदेव का प्यार वैसा ही मिलता रहा जैसा प्यार संतों को मिलता था। गुरुदेव जी में अद्‌भुत आकर्षण था। गुरुदेव जी की शिक्षा, प्यार एवं व्यवहार भरे उपदेशों को याद कर उनके बताये मार्ग पर चलें तो गुरुदेव हमसे दूर नहीं हैं। हमारे पास ही हैं। विवेक की दृष्टि से तो सही है। पर शरीर में केवल मस्तिष्क ही नहीं है, हृदय भी है। उसको कैसे संतोष होगा? गुरुदेव उस सूर्य की तरह हैं जिसका प्रकाश दुनिया के कोने-कोने में फैला है। हम कहीं भी जायें आपके लिखे ग्रन्थों के माध्यम से आपका ज्ञान मिल सकता है। लेकिन हे प्रभो! आपके बिना आपका प्यार हमें कैसे मिलेगा? यहीं पर वह कहानी याद आती है—

एक बच्ची अपने पिता की गोद में बैठकर रोज कहानी सुना करती थी। एक दिन पिता ने कहा—बेटी! रोज मैं कहां तक कहानी सुनाता रहूंगा। अब मैं कहानियां

रिकार्ड कर दूंगा। तुम्हारा जब मन कहे कहानी सुन लिया करना। बच्ची ने कहा—पिताजी! रिकार्ड से मैं कहानी तो सुन सकती हूं, लेकिन रिकार्ड से आपका प्यार तो नहीं पा सकती, आपकी गोद में नहीं बैठ सकती। यही बात हम लोगों की है। जब गुरुदेव जी हम लोगों को समझाते थे तब प्यार से हंसते हुए समझाते थे और जोर देकर कहते थे—बेटी, खुश रहना, प्रसन्न रहना, दुखी कभी मत होना। दुनिया में दुख नाम की कोई चीज है ही नहीं, इसलिए सदा प्रसन्न रहो। गुरुदेव जी के प्यार की कमी हर समय खटकती है।

गुरुदेव जी हर समय शरीर की नश्वरता और संसार की परिवर्तनशीलता के बारे में बताते थे कि यह शरीर पानी के बुलबुले के समान है। मिट्टी के कच्चे घड़ा की तरह है। यह मिट्टी का शरीर कब भहराकर फूट जाये इसे कौन जानता है। इसलिए जल्दी से सबको अपना काम करना है। शरीर कल्याण करने के लिए मिला हुआ है। इसकी सफलता है किसी भी स्थिति में दुखी न होना, हर समय प्रसन्न रहना।

गुरुदेव जी के नहीं रहने की खबर सुनते ही ऐसा लगा कि मानो पैरों के नीचे की धरती खिसक गयी हो, जैसे हवा थम गयी हो। आभास होता था कि शरीर तो है लेकिन उसमें प्राण नहीं है। आपके नहीं रहने पर हर भीड़ सूनी लगती है और सभी रौनक फीकी लगती है। सूरज तो है लेकिन मानो बादल से ढक गया हो। चांद तो है किंतु मानो उसकी चांदनी को ग्रहण लग गया हो। चारों तरफ सन्नाटा और अंधेरा छा गया हो। मानो कुछ नजर आता ही नहीं।

गुरुदेव जी ने अन्धमान्यता एवं असत्य के साथ कभी समझौता नहीं किया। आपने सद्गुरु कबीर के उपदेशों को पूरी निर्भयता के साथ समाज में प्रस्तुत किया।

भूत-प्रेत, जादू-टोना आदि मिथ्या मान्यता एवं अंधविश्वास है। गुरुदेव ने समाज में मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने का काम किया। आपने परोक्ष से ऊपर उठकर अपरोक्ष का उपदेश दिया। इसके लिए आपने सेवा, सत्संग, गुरु भक्ति का उपदेश दिया। अन्ततः आत्मस्थिति ही हमारी मंजिल है। इसकी प्राप्ति के लिए सद्गुरु का निर्भ्रांत बोध ही संबल-सहारा है।

गुरुदेव की एक-एक क्रिया आदर्शपूर्ण है। आपकी दृष्टि इतनी सूक्ष्म एवं तत्त्वदर्शी है कि अन्य मत-पंथों के ग्रन्थों से भी आपने सार-सत्य निकालकर पारख सिद्धांत की सम्पन्नता को बढ़ा दिया। गुरुदेव जी जीवन में अगणित कठिनाइयां सहकर अपने लक्ष्य में दृढ़ रहे। आपका त्याग, वैराग्य, तपस्या, सहनशीलता आदि अद्भुत है। आपका यशोगान तब तक गाया जायेगा जब तक मानवता जीवित रहेगी।

पूज्यवर गुरुदेव जी का जीवन गैस में लगे हुए उस मेंथल के समान था जो जलकर खाक हो चुका है, लेकिन जब तक वह टूटा नहीं है तब तक प्रकाश देता है। आपने बहुत पहले ही अपनी समस्त मनोवासनाओं को वैराग्याग्नि में जलाकर भस्म कर दिया था। लेकिन जब तक प्रारब्ध शरीर रूप मेंथल रहा संसार को ज्ञान का प्रकाश देता रहा। यह ज्ञान का प्रकाश जब तक संसार है प्रकाशित होता रहेगा।

आपके आदर्शमय जीवन से कबीरपंथ को ही नहीं बल्कि पूरे मानव समाज को सब समय प्रेरणा मिलती रहेगी। हे गुरुदेव! अन्त में आपके पावन श्री चरणों में श्रद्धा-भक्ति के साथ शत-शत नमन करते हुए मैं भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित करती हूं।

कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम

मूरा, धमतरी, छ. ग.

तेरे चरणों में स्वामी मेरा कोटि प्रणाम

साध्वी स्मिता

यहां मैं उस सितारे की चर्चा करने जा रही हूं जो दिन और रात सब समय चमकता है।

मैं उस पर्वत की चर्चा करने जा रही हूं जो अडिग होते हुए भी चलता है और चलते हुए भी अडिग रहने की प्रेरणा देता है।

मैं उस गुल की चर्चा करने जा रही हूं जो ऋतु और मौसम से परे है। जो सब समय खिलता और महकता है।

मैं उस समुद्र की चर्चा करने जा रही हूं जिसके पेट में सीमातीत रत्न हैं ही उसके ऊपर भी अगणित रत्न तैरते हैं।

मैं उस उपवन की महिमा गाने जा रही हूं जो सदाबहार है। वे हैं संतों, साधकों, साध्वियों, भक्तों के प्यारे पूज्यपाद सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी।

गुरुदेव जी का पहली बार दर्शन मुझे सन् 2002 में ग्राम हसदा में हुआ। उस समय मैं कक्षा सात में पढ़ रही थी। आपके दर्शन पाकर और प्रवचन सुनकर मेरे मन में साधनात्मक प्रश्न उठा। आपसे बात करने का मेरा विचार हुआ। फिर मैं आपके पास गयी। गुरुदेव जी मेरे मन की बातें जान गये और कहे—बेटी! तुम्हें कुछ पूछना है? फिर मैंने अपने मन की बातें कह दी। आपने मुझे मार्गदर्शन किया।

बाद में मैं सोचने लगी कि आप मेरे मन की बात कैसे जान गये। उसी समय से मैं गुरुदेव जी से मिलती रही और अपने मन की बात बताती रही।

जब भी गुरुदेव जी से मैं मिलती तो शरीर-संसार एवं प्राणी-पदार्थों की नश्वरता के बारे में आप बताते थे। मृत्यु को हर क्षण सामने देखने के लिए कहते थे। सारा संबंध झूठा एवं क्षणभंगुर है। इसलिए मृत्यु को सदैव याद रखना चाहिए।

गुरुदेव जी वैराग्य पर बहुत जोर देते थे और कहते थे खूब वैराग्य बढ़ाओ और सदैव प्रसन्न रहो, खूब अध्ययन करो, यही मेरा आशीर्वाद है। कुछ रहने वाला नहीं है, सब समाप्त हो जायेगा।

जिस दिन गुरुदेव जी की अंतिम यात्रा निकाली गयी तो लोग कहते थे कि 'जब तक सूरज-चांद रहेगा। गुरुदेव जी का नाम रहेगा', परन्तु देखा जाता है कि सूरज और चांद के प्रकाश की किरणें बंद कमरे में और जमीन की गहराई में नहीं पहुंच पातीं, किन्तु अपने ज्ञान-प्रकाश एवं दिव्य जीवन आदर्श से लोगों के हृदय के अंधकार को मिटाकर गुरुदेव ने ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, प्रेम के प्रकाश से प्रकाशित किया है।

देश-विदेश में हर जगह कोने-कोने में गुरुदेव जी का ज्ञान-प्रकाश फैला है। जहां आप नहीं पहुंचे हैं वहां भी आपके ग्रंथों को पढ़कर लोगों का अंधेरा दूर हुआ और लोगों को शांति-सुख एवं भक्ति-वैराग्य का प्रकाश मिलता रहा और आगे भी मिलता रहेगा।

गुरुदेव जी का हृदय इतना विशाल था कि उसको मापा नहीं जा सकता। आपके लिए जितना कहा जाये उतना कम है। आपका व्यक्तित्व और कर्तृत्व अद्भुत

था। नारी समाज को गुरुदेव जी ने आधार दिया है। हम जैसे लड़कियों को यदि आप आधार नहीं देते तो पता नहीं हम कहां होते, इसका सहज अंदाज लगाया जा सकता है। कितने बड़े-बड़े संत हैं, महामंडलेश्वर हैं, हर प्रकार से सक्षम होते हुए भी लड़कियों को आधार नहीं दे पाते हैं। कितने अन्य मत-पंथों से जुड़ी हुई लड़कियां कहती हैं कि हम भी साधनामय जीवन जीना चाहती हैं, किन्तु हम लोगों को ऐसा संबल-सहारा ही नहीं मिल पाता। बेचारी इधर-उधर भटककर सांसारिकता की उलझनों में रोते-बिलखते उनका जीवन बीत जाता है।

आपने नारी जाति को सदा ऊपर उठाया है। नारी जाति, मासूम लड़कियों की पीड़ा और उसकी मजबूरियों को आपने समझा और समझकर ऊपर उठाने के लिए अथक प्रयास किया।

आज आपकी कृपा से ही हम सबको बल मिला है। आपके ही आधार पर कई जगह ब्रह्मचारिणी आश्रमों का निर्माण हुआ।

गुरुदेव जी इतने सरल थे कि बच्चों के साथ बच्चे बन जाते थे।

गुरुदेव जी हर प्रकार से पूर्ण रहे। जो लोग आपको नहीं समझ पाये वे आपको गाली दिये, अपमानित किये, यहां तक कि छली-कपटी, मोही, लोभी इस तरह न जाने कितनी गालियां दिये। बड़ी-बड़ी प्रतिकूलताएं आपके ऊपर आयीं। लेकिन आपने सबको गले से लगाया। सबको प्यार दिया। जैसे मां अपने बच्चों की हर गलती को माफ कर सीने से लगाती है, प्यार करती है, उनकी हर प्रकार से रक्षा करती है और उनकी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखती है, वैसे ही आप मां हृदय के रहे। सबकी गलतियों को भूल सबसे प्यार करते रहे, सबको प्यार देते रहे।

गुरुदेव जी कहा करते थे कि "दूसरे के उगले हुए जहर को पी लो और अपने जहर को मारो।" आपने केवल कहा नहीं, किया है।

कितने बड़े-बड़े गुरु, महंत, आचार्य, महामंडलेश्वर संत आदि हुए सब में सब गुण नहीं रहते लेकिन गुरुदेव जी में हर गुण, हर कला, कूट-कूटकर भरी हुई थी।

कितनों को भजन गाने आता है, तो प्रवचन करना नहीं आता, यदि उनके जीवन में वैराग्य-ज्ञान होता है तो विनम्रता और कुशलतापूर्वक व्यवहार करना नहीं आता। परन्तु हमारे गुरुदेव जी तो सब प्रकार से सम्पन्न रहे। आप ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, प्रेम, करुणा, दया, क्षमा, शील, विवेक, विचार आदि सभी रत्नों की खान थे।

गुरुदेव जी सफाई-स्वच्छता पर बहुत ध्यान देते थे। सबसे प्रेम से मिलते थे, हंसते और हंसाते थे। आप अद्‌भुत प्रतिभा के धनी थे। आपका पुरुषार्थ एवं प्रतिभा लोगों को वैसे ही आकर्षित करती थी जैसे चुम्बक लोहे को आकर्षित करता है। आपके ज्ञान, वैराग्य एवं निष्काम प्रेम से लोग सहज खिंचे चले आते थे।

लोग जिस मोटे काम को गंदगी समझकर घृणा करते हैं आप उन कार्यों को भी सेवा-पूजा समझकर प्रेम से करते थे और उसी की प्रेरणा देते थे। आप कहते थे कि कोई भी काम छोटा-बड़ा नहीं होता।

आपके लिए कोई छोटा-बड़ा नहीं था। आपकी महिमा-महानता के बारे में जितना कहा जाये उतना कम है। फिर भी आपकी ऐसी विनम्रता कि आप अपने को सदैव सेवक मानते थे और समाज की सेवा करते रहे। आपका चलना-बोलना, हंसना, देखना, खाना, हर कार्य अद्‌भुत आकर्षक और आदर्शपूर्ण था।

हे मेरे परम आराध्य गुरुदेव जी! अंत में आपके पवित्र श्री चरणों में हृदय से कोटि-कोटि नमन करते हुए मैं श्रद्धा-सुमन समर्पित करती हूं।

पुनः त्रयबार साहेब बंदगी।

कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम

मूरा, धमतरी, छ.ग.

पूज्यवर गुरुदेव जी को श्रद्धांजलि

साध्वी सुप्रज्ञा

पूज्यवर गुरुदेव जी के चरणों में कोटि-कोटि नमन, कोटि-कोटि प्रणाम, त्रयबार साहेब बंदगी करते हुए अंसुवन की धारा से मेरा सादर श्रद्धा-सुमन समर्पित है।

संसार के तूफानों में, गुरुदेव का मिला सहारा।
जब डूबा भवसागर में, गुरुदेव ने मुझे उबारा॥

पूज्यवर गुरुदेव जी ऐसे थे जो एक बार दर्शन करता था, बस, उन्हीं का हो जाता था।

कबीर जब हम पैदा हुए, जग हंसे हम रोये।
ऐसी करनी कर चलो, हम हंसे जग रोये॥

गुरुदेव ऐसी करनी करके चले गये कि संसार के लोग रो रहे हैं। पता नहीं इस जीव ने कितनी ठोकरें खायीं, कितनी बार जन्म लेकर भवसागर में भटकता रहा पर ऐसे गुरुदेव मिले जीवन में जो हम सबको भवसागर पार करने के लिए हमारे हाथों में पतवार देकर चल दिये। आप हरदम कहा करते थे कि देह भवसागर है, बेटा, इसी जीवन में इस देह का नाश कर दो। इस शरीर में और मत आना। बचपन से लेकर आज तक क्या मिला केवल दुख, दुख ही मिला। इसलिए इस जन्म में ही भवसागर पार करना है।

आपकी जैसी कथनी थी वैसी करनी थी। आप धैर्य, प्रेम और करुणा के सागर थे। आपकी दृष्टि में न कोई छोटा था, न कोई बड़ा। आप सभी धर्म-सम्प्रदाय को आदर देने वाले थे। कभी किसी पक्ष में नहीं पड़े। हर रूढ़ि को तोड़ा। अंधविश्वास, छुआछूत, जादू-टोना, देवी-देवता, भूत-प्रेत आदि को न मानने की बात उन्होंने पूरे जन-जन में देश-विदेश में प्रचार किया। लोगों में इससे जागरूकता बहुत हुई। गुरुदेव जी ने खाने-पीने में संयम, सादा जीवन उच्च विचार को चरितार्थ किया। गुरुदेव जी पारख सिद्धांत के कमल के फूल, गुलाब की तरह खुशबू, सूरज की तरह प्रकाश, चांद की तरह शीतल, तारों की तरह चमक, वायु की तरह कोमल व मंद-मंद बहने वाला, नदियों की तरह निश्चल बहने वाला, ओजस्वी वाणियों के प्रणेता, दुनिया को रास्ता दिखाने वाले पथिक थे।

जो नारियों का सम्मान करता है उसका सभी सम्मान करते हैं, इस बात को आपने साबित कर दिखाया। नारियों को सावधान करके नारियों में जागरूकता लाया। पूरा नारी समाज गुरुदेव की इस बात को याद करता है, सदा करता रहेगा।

मुझे तो गुरुदेव की शरण में आकर बेशकीमती धन मिला। ज्ञान का खजाना मिला। ऐसी सीढ़ी दिये, ऐसी नाव दिये, ऐसा पतवार हाथ में पकड़ा दिया है कि अब बस, मुझे पार हो जाना है। पता नहीं इस जीव ने ऐसा कौन-सा पुण्य किया था जो मुझे बचपन से ऐसे मानवीय एकता के मसीहा, युगद्रष्टा पूज्यवर सद्गुरु मिले। उनकी दृष्टि जब हम बच्चों पर पड़ती थी तो हम उस करुणा के सागर में गहराई तक डूब जाते थे। हम ब्रह्मचारिणियों को ऐसे समर्थ गुरु मिले जो हम सब बहनों के लिए आश्रम बनवाकर, वीर बनाकर चले गये। उस सद्गुरु को कोटि-कोटि नमन। गुरुदेव के जो बनाये नियम हैं उसी रास्ते पर चलेंगे तभी साधना सही होगी। गुरुवर के तीन सूत्र याद रखेंगे, तो हमारा जीवन सफल हो सकता है—

1. कम खाओ गम खाओ।
2. सावधानी ही साधना है।
3. रुके न, लौटे न।

गुरुदेव के बनाये नियम एवं बताये रास्ते पर अंतिम सांस तक चलकर इस मन को गुरुदेव के चरणों में बिठाकर रखूंगी, उसी दिन पूज्यवर गुरुदेव जी के प्रति मेरी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम, पोटियाडीह, छ. ग.

भटकते का सहारा

रामशरन मौर्य

स्वरूपलीन सद्गुरु अभिलाष साहेब जी के चरणों में शत-शत नमन!

समय-समय पर संत-महापुरुष इस धरती पर आकर अपना आदर्श छोड़कर चले जाते हैं, पश्चात उनके जीवन का आदर्श पूरे मानव समाज के लिए प्रेरणा-स्रोत बन जाता है। सद्गुरु कबीर की परम्परा में ऐसे ही महामानव के रूप में श्री अभिलाष साहेब जी आये तथा करनी-कथनी-रहनी इन तीनों गुणों को अपने जीवन में आत्मसात किये। आप स्वयं अपने जीवन में दिव्य आचरण करते हुए अपने उपदेश-प्रवचन में जीवन जीने की कला, अंधविश्वास, चमत्कार, झूठी महिमा, ऊंच-नीच, जाति-पांति के कुचक्र से परे मानव-मानव की एकता, समन्वय, आत्मज्ञान पर सदैव जोर देते रहे और अंत में स्वरूपस्थिति प्राप्त कर स्व में ही लीन हो गये।

सर्वप्रथम मुझे गुरुवर अभिलाष साहेब का दर्शन गोरखपुर घासी कटरा, कबीर आश्रम पर सन् 2001 में प्राप्त हुआ। इसके पहले मैं अनेक सम्प्रदायों में भटकते हुए भ्रमण किया परन्तु मुझे कहीं से सन्तुष्टि नहीं मिली थी। जब मैंने साहेब जी के प्रवचनों को श्रवण किया तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरा सारा भ्रम इन सन्त से समाप्त हो सकता है। आपके बुक स्टाल से पुस्तक खरीदा, उसको पढ़ा। उसमें लिखे पते के आधार पर एक साथी के साथ सन् 2001 के वार्षिक अधिवेशन में कबीर आश्रम, इलाहाबाद पहुंच गया। साहेब जी के प्रवचन सुनने एवं उनसे मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। मैंने उनको एक पत्र दिया, साधना-ध्यान के बारे में जो मेरी कमी थी, मैं ठीक ढंग से नहीं समझ पा रहा था, कृपा करके उसे विस्तार से समझाने का कष्ट करें। साहेब जी ने कहा—इस भीड़ में लोगों का मिलना-जुलना लगा रहता है। इसके बारे में समझने के लिए खाली समय में आओ, जिससे बातें हो सके। परन्तु दूसरे दिन की पहली मीटिंग में साधना एवं ध्यान पर पूरा एक घंटे का प्रवचन आप दिये, हमारा कुछ संशय समाप्त हुआ। प्रत्येक वर्ष ध्यान शिविर तथा वार्षिक अधिवेशन में लगातार जाता रहा।

साहेब जी एक बार बरामदे में कुर्सी पर विराजमान थे, हम भी बन्दगी करके बैठ गये। उन्होंने कहा—अभी संशय समाप्त हुए कि नहीं? मैंने कहा, अभी कुछ शेष रह गये हैं। आपने आदेश दिया कबीर दर्शन एवं बीजक पारख प्रबोधिनी व्याख्या को बार-बार पढ़ो एवं जो संशय समाप्त न हो उसके लिए व्यक्तिगत मुझसे मिलो। यह सन् 2004 की बात है। आपके प्रवचन एवं पुस्तकों के अध्ययन से सभी संशय समाप्त हो गये।

मेरी पुरानी मान्यताएं जब पारख सिद्धांत से कटने लगती थीं तो मैं तिलमिला उठता था, लेकिन विवेक-विचार करने पर पारख सिद्धान्त सत्य दिखता था। धीरे-धीरे पुरानी मान्यताएं समाप्त हो गयीं और मेरे मन में पारख सिद्धान्त पूरी तरह से प्रतिष्ठित हो गया। सन् 2005 के ध्यान शिविर के अन्तिम दिन साहेब से विधिवत दीक्षा लिया और तब से अपने गृहस्थ आश्रम में रहते हुए उनके द्वारा बताये गये सेवा-साधना, ध्यान-स्वाध्याय में जीवन के क्षण बीत रहे हैं।

मेरे मन में साहेब जी को अपने क्षेत्र में लाने का विचार उठने लगा। मैंने प्रार्थना पत्र सन् 2008 में दिया

परन्तु किसी कारणवश कार्यक्रम नहीं मिल पाया। सन् 2011 में श्री राम आसरे तिवारी एवं सद्गुरु कबीर मानव धर्म संस्थान के सदस्यों की सर्वसम्मति से साहेब जी का कार्यक्रम लेने का निर्णय किया गया। किसी भी महीने में कार्यक्रम देंगे, लिया जायेगा। क्योंकि एक बार हम लोगों के इच्छानुसार कार्यक्रम मांगने पर कैंसिल हो चुका था। सौभाग्यवश 30 नवम्बर एवं 1 दिसम्बर सन् 2011 में कार्यक्रम की तिथि अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र साहेब द्वारा स्वीकृत हुई।

साहेब जी का कार्यक्रम 27,28,29 नवम्बर सन् 2011 को श्री रामनरेश चौबे जी के नेतृत्व में गोरखपुर टाउन हाल में था। उसी के बाद हमारे यहां साहेब जी का आगमन होना था। साहेब जी का निवास भालोटिया मार्केट में था। श्री रामआसरे तिवारी, मनोज जी के साथ हम लोग साहेब से मिलने गये। बन्दगी भाव हुआ तत्पश्चात आपने पूछा—तुम्हारे यहां चलना है, रहने की क्या व्यवस्था है? यहां की व्यवस्था को देखकर हमारी सन्तों के रहने की व्यवस्था बौनी लग रही थी। मैंने कहा—गुरु जी, हमारे पास तीन कमरे नीचे एवं एक ऊपरी मंजिल पर है। नीचे का कमरा संतों के लिए एवं ऊपरी मंजिल का कमरा आपके लिए है, लेकिन यहां जैसी व्यवस्था नहीं है। आपका उत्तर था—मैं फूस की झोपड़ी में भी रह सकता हूं बशर्ते वह साफ-सुथरी हो एवं वहां पर शांत वातावरण हो।

सन्त मण्डली के साथ साहेब जी का 30 नवम्बर सुबह 9 बजे रकौली में पदार्पण हुआ। विधिवत पहले दिन के दोनों सत्रों में साहेब जी का प्रवचन हुआ। गुरु जी के प्रवचन से जनता बहुत खुश थी। लोगों से सुना गया कि जो साहेब जी बता रहे हैं वह लोगों को नई बात एवं सारभौमिक सत्यता की जानकारी मिल रही है। यहां बहुत सन्त आये लेकिन ऐसा प्रवचन सुनने को नहीं मिला जो सत्य-असत्य का निर्णय करने वाली वाणी हो। ऐसा इसलिए कह रहे थे क्योंकि रकौली में बहुत बड़ा यज्ञ हुआ था। उसमें बहुत प्रतिष्ठित संतों को बुलाया गया था। दूसरे दिन दोनों सत्र में लोगों की काफी भीड़ उमड़ पड़ी एवं साहेब के प्रवचनों को सुनकर लोग अपने को धन्य मानने लगे कि ऐसे सन्त का दर्शन जीवन में मिल गया।

साहेब जी से मिलने के लिए दोपहर बाद ग्राम झुड़िया से पूर्व प्रधान श्री लालचन्द तिवारी, भास्कर तिवारी एवं अन्य लोगों के साथ उपस्थित हुए। आपसे लोग प्रश्न पूछते गये, आप इन लोगों को बहुत ही सटीक सारगर्भित वचनों से उत्तर देते रहे। सभी लोग आपके तर्क एवं उदाहरणपूर्वक उत्तर से बहुत प्रभावित हुए। अन्त में जब बाहर निकले मुझसे मिले तो वे सभी लोग अपनी भावनाओं को रोक न सके और कहे कि ये साधारण सन्त नहीं हैं।

गुरु जी छत पर कुर्सी पर विराजमान थे, शाम का वक्त था। मैं उनके पास गया और बन्दगी करके बैठ गया। मैंने कहा—साहेब, अगर मेरी सेवा में कोई गलती हो गयी हो तो उसे क्षमा कीजियेगा। आपने तुरन्त कहा—अगर मुझसे गलती हो गयी हो तो? मैं उनके इस उत्तर से अवाक रह गया। थोड़ी देर संभलकर मैंने कहा—आपसे गलती हो ही नहीं सकती। आप मुस्कुराते रहे। अपने घर एवं क्षेत्र में लाकर धन्य हो गया क्योंकि आपके आगमन से पूरे मानव समाज एवं प्रकृति की ओर से मेरे ऊपर कृपा बरस रही थी। मेरे परिवार के जो लोग गुरुमंत्र नहीं लिये थे, आपसे सभी लोग दीक्षित हुए तथा क्षेत्र के कुछ लोग भी आपसे दीक्षित हुए। पूरा समाज आपके आदर्श से उपकृत हुआ, आपके सान्निध्य में बिताये गये क्षण हमारे जीवन की सांसों में रचे-बसे हैं जिसे मैं कभी भूल नहीं पाऊंगा। जो आपसे जुड़ा धन्य हो गया।

जब मैंने संत श्री रामचेत साहेब के द्वारा मोबाइल से सुना कि साहेब जी का शरीर छूट चुका है, एकाएक विश्वास नहीं हुआ क्योंकि अभी कुछ दिन पहले ध्यान शिविर से लौटा था, साहेब बिलकुल स्वस्थ थे। फिर दिल्ली श्री विचार साहेब के पास फोन किया, वहां से भी वही दुखद समाचार मिला। उसके बाद साहेब की समाधि एवं श्रद्धांजलि सभा में सम्मिलित होने के लिए चल दिया। वहां का दृश्य देखकर हृदय दुख से भर गया। साहेब जी अपने प्रवचन में हमेशा कहा करते थे—मेरा काम पूरा हो गया है, प्रारब्धवशात शरीर चल

रहा है। प्रारब्ध पूरा होने पर यह शरीर कहीं भी भूलुंठित हो जायेगा। इससे कोई मोह नहीं है। सद्गुरु कबीर की वह साखी याद आती है—

आया है सो जायेगा, राजा रंक फकीर।
एक सिंहासन चढ़ि चला, एक बंधा जंजीर॥

साहेब जी सिंहासन पर बैठकर स्वरूपलीन हो गये। आज वे हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनका दिया हुआ ज्ञान एवं उनकी पुस्तकें सदा जीवन को आलोकित करती रहेंगी।

रकौली, गोरखपुर, उ. प्र.

सद्गुरु अभिलाष साहेब जी : कुछ संस्मरण

डॉ. उदयराम साहू

पूज्यवर गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी से प्रथम मुलाकात 1982 ई. में ग्राम लाफिन खुर्द में हुई। उन्हें लेने मैं राजदूत मोटर सायकिल से गया था। लाफिनखुर्द से सुबह आठ बजे राजदूत मोटर सायकिल से ग्राम भोरिंग लाना था। रास्ते में नाला मिला। पुल नहीं बना था। साहेब जी बोले—आप गाड़ी सम्हालो और मैं पीछे से धकेल रहा हूं फिर पार हो जायेंगे। उन्होंने कहा—ऐसा ही जीवन है। एक दूसरे के सहारे से भवसागर पार हुआ जा सकता है। इतने बड़े महापुरुष और मोटर सायकिल को धक्का देकर निकालना! इसे देखकर मैं हतप्रभ था।

फिर 1996 ई. में उनको ध्यान शिविर, नवापारा में प्रथम बार एक सत्र में बाहर से सुना। फिर तो मैं उनका अनन्य भक्त हो गया। दिनांक 14.2.2012 को ग्राम संकरी से भोरिंग सुबह 6 बजे आये। जैसे ही गाड़ी से उतरे मुझसे पूछे कि आसन कहां है? मैंने कहा—गुरुदेव! आसन ऊपर है। उन्होंने विनोदपूर्वक कहा कि डाक्टर साहब मुझे अभी से ऊपर भेज रहे हैं। मैंने कहा—नहीं गुरुदेव! यह आसन तो केवल 3 दिनों के लिए है। फिर उन्होंने कहा कि हमेशा मृत्यु को याद करते रहना चाहिए।

भोरिंग की सभा में कुछ बातें कहे, मैं उन्हें उद्धृत कर देना चाहता हूं। प्रश्न था क्या यही विकास है? हमें गहराई से देखने-समझने की जरूरत है कि हम विकास की ओर हैं या विनाश की ओर? विकास के नाम पर हमने कपड़े छोटे कर डाले। घरों के दरवाजे-खिड़की बंद कर डाले, नदी-नाले और आसमान बांट डाले और भी बहुत सारी चीजों को विकास के नाम पर बदल डाले। आध्यात्मिक जीवन शैली ने तो हमें अधिक समय तक बने रहने के लिए निरोगी काया दी। उसकी भेंट में आज हम 20 वर्ष में मधुमेह, हृदयरोग, कमर दर्द, बालों में सफेदी, हिलते दांत, आंखों पर चश्मा, फूलती सांस से सब झेल रहे हैं। क्या यही हमारा विकास है? अध्यात्म और अनुशासन पर आधारित जीवन-शैली में एक घर में 50 व्यक्ति भी एक साथ रह लेते थे परन्तु आज दो व्यक्तियों के बीच भी दो चूल्हे जलने लगे हैं। क्या यही विकास है?

गुरुदेव कहा करते थे—मूलभूत चीजें नहीं बदली जा सकतीं। मूलभूत चीजों के लिए आधुनिक या प्राचीन का कोई भेद नहीं हो सकता। जैसे जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी, आकाश, कल भी हमारी जरूरत थे, आज भी हैं। वैसे ही ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनंद, शक्ति ये मूलभूत गुण कल भी हमारी जरूरत थे और आज भी हमें चाहिए। उनकी ये वाणी सुनकर मेरा दिल आज भी आह्लादित हो जाता है। मुझे लगता है कि गुरुदेव अभी भी यही हैं। उनकी मृत्यु नहीं हुई है। लगता है कि प्रतिदिन मुझे दर्शन दे रहे हैं। वे आज हमारे बीच नहीं रहे लेकिन वे हमारे लिए जो चीज छोड़कर गये हैं यदि उन पर अमल करें तो स्वयं का क्या, संसार का विकास होने में देर नहीं लग सकती।

भोरिंग, महासमुंद, (छ.ग.)

कच्चे वैराग्य से वापसी

मस्तराम शिवहरे

परम पूज्य सद्गुरु अभिलाष साहेब की बीजक व्याख्या पढ़ने एवं सन् 2001 में उनसे दीक्षित होने के पश्चात मुझमें काफी परिवर्तन आया है। मैं पहले एक कर्तव्यनिष्ठ, निडर, समयबद्ध वन अधिकारी था किन्तु साथ ही अपने अधीनस्थों एवं वनचोरों के प्रति निर्दयी भी था। अत्यधिक क्रोधी, अधीनस्थों द्वारा गलत कार्यों के लिए उन्हें कठोर दंड देना, मैं जरूरी समझता था। मुझे वन विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी 'कलम कसाई' के नाम से पुकारते थे। सन् 2001 से परम पूज्य गुरु जी का सान्निध्य मिलने पर मैं क्षमावान, कर्मचारियों के प्रति प्रेम, बड़े अधिकारियों से अच्छा तालमेल रखने लगा था। मैं अक्टूबर 2003 में ससम्मान शासकीय सेवा से पूर्णतः निवृत्त हो चुका हूं।

मैं और मेरी पत्नी हम दो ही साथ-साथ छिंदवाड़ा स्थित स्वयं के मकान में रह रहे हैं। मैंने अपनी 36 वर्ष की शासकीय नौकरी में अपनी पत्नी को कभी किसी प्रकार की सुविधा से वंचित नहीं किया है।

माह सितम्बर 2004 की शाम को एक अप्रत्याशित घटना घटित हुई, जब मेरी पत्नी ने कहा "अब तू काहे का साहेब? रिटायर्ड हो गया है, तो बर्तन मांजने में क्या हर्ज है?" उसके इन अपमान भरे शब्दों से मेरा अंतस क्रोध की ज्वाला से धधक उठा। मैं आपे से बाहर हो गया और उसे भारी प्रताड़ित कर चुपचाप घर छोड़ दिया। मेरे मन में गृहस्थ जीवन के प्रति ग्लानि ने जन्म ले लिया था।

मैं पहले नवापारा आश्रम गया और वहां संतों के साथ 6-7 दिन रहा, उसके बाद परमपूज्य गुरु जी से मिलने की हार्दिक इच्छा हुई। अतः मैं रायपुर-कटनी होते हुए इलाहाबाद आ गया। पूज्य गुरु जी के चरणों में, मेरे साथ उक्त घटना जो हुई थी, उसे अश्रुपूरित नेत्रों के साथ व्यक्त कर दिया। मैंने गुरु जी से निवेदन किया कि "मैं अब शेष जीवन यहीं आश्रम में रहकर व्यतीत करूंगा, मैं अपने कक्ष में रह लूंगा।"

पूज्य गुरु जी ने कहा, "बेटा, यह पूरा आश्रम तुम्हारा है। तुम जहां चाहो वहां रह सकते हो। परंतु तुम्हारा बेटा अमेरिका से आया है। तुम इस बार घर लौट जाओ, यदि तुम्हारे साथ पुनः इस तरह अपमान भरा व्यवहार होता है तो आश्रम आ जाना और फिर कभी नहीं लौटना।"

परम पूज्य गुरुदेव का यह आदेश मैंने भारी मन से शिरोधार्य किया और छिन्दवाड़ा (घर) लौटने हेतु तैयार हो गया। यह सत्य है कि पत्नी के कटु वचनों से मेरे हृदय में वैराग्य प्रस्फुटित हो गया था, किन्तु सद्गुरु की पारखी दृष्टि ने यह देख लिया था कि मेरा यह वैराग्य पक्का न होकर कच्ची अवस्था का है, इसलिए उन्होंने मुझे घर लौट जाने का आदेश किया था।

संस्मरण के रूप में यह संक्षिप्त किन्तु मेरे जीवन की महत्त्वपूर्ण घटना स्वरूपलीन सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब की स्मृति में सादर समर्पित है।

बलिदान भवन, चर्च के सामने,
नागपुर रोड, छिंदवाड़ा, म. प्र.

जीवन बगिया महक उठी

वेद प्रकाश

मनुष्य जीवन भर संसार की गतिविधियों में उलझा रहता है और समय आने पर चला जाता है। जीवन में उसे कभी एहसास ही नहीं हो पाता कि वह क्या उद्देश्य लेकर आया था, क्या करना है और क्या नहीं।

मैं जब पूज्य श्री गुरुदेव जी के सान्निध्य में आया और तब ही जीवन के विषय में समझ पाया। बिना गुरु के जीवन में पूर्णता आना संभव नहीं। अच्छा गुरु हजारों में एक मिलता है और सौभाग्य से प्राप्त होता है। मैं बड़े गर्व के साथ कह सकता हूं कि मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ।

पूज्य श्री गुरुदेव के समक्ष बैठते ही मन शान्त होने लगता था और विचारों का आवेग जैसे थम-सा जाता था। कुछ बोलने या प्रश्न करने की आवश्यकता ही नहीं होती थी। जब मन शान्त होता है तब मन भीतर की ओर मुड़ता है, भीतर की गतिविधियों को जानने लगता है। जीवन की वास्तविकता से उसका सामना होता है। वास्तविकता को बदला तो नहीं जा सकता किन्तु उसे समझने का मार्ग बदल जाता है। और वह मार्ग प्रशस्त हुआ पूज्य श्री गुरुदेव के आशीर्वाद से।

पूज्य श्री गुरुदेव जी का बीता हुआ कल हमारा आने वाला कल हो, यह हर एक साधक के अंतर-मन की मांग है। हर साधक के मन में पूज्य श्री गुरुदेव जी के प्रति विश्वास था, श्रद्धा, आस्था और निष्ठा थी। श्रद्धा जीवन की पवित्रता का सम्मान करने का नाम है। श्रद्धा जीवन को मूल्यवान बनाती है क्योंकि श्रद्धा आत्म विषय है, अर्थात पूज्य श्री गुरुदेव जी हमारी आत्मा में निवास करते थे, हैं और रहेंगे।

पूज्य गुरुदेव जी का जीवन अवर्णनीय है। उनकी दिनचर्या सुनियोजित थी, जिसके फलस्वरूप इतने सारे अमूल्य ग्रन्थों का संकलन हमारे पास है और जिसका लाभ हम सभी को मिला। इससे हमारी जीवन रूपी बगिया आज महक उठी है। हमें भी अपने जीवन में समय के सुनियोजन पर ध्यान देने की जरूरत है। ज्यादातर हम अपना समय व्यर्थ की कल्पनाओं में गवां देते हैं। कल्पना स्वतंत्र भी हो सकती है और स्मृति के साथ भी जुड़ सकती है। अधिकांशतः दोनों साथ-साथ होते हैं और स्मृति के संस्कार ही कल्पना का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

पूज्य श्री गुरुदेव जी कितने एकाग्रचित्त होकर अपना कार्य करते थे, इससे भी हम भली-भांति परिचित हैं। हमें जब भी आशीर्वाद ग्रहण करने उनके समक्ष जाने का सुअवसर प्राप्त होता, तब हम यह देख पाते थे। पूज्य श्री गुरुदेव जी ग्रन्थों की रचना में तल्लीन होते और जहां पर रुकते, हमें आशीर्वाद देते कुशल-क्षेम पूछते तत्पश्चात उसी तल्लीनता के साथ आगे बढ़ जाते थे। यह अद्‌भुत विलक्षणता है और न जाने इस तरह की कितनी विलक्षणताएं हमारे पूज्य श्री गुरुदेव जी में विद्यमान थीं।

अंत में पूज्य श्री गुरुदेव जी के दिये हुए आशीष वचनों का अक्षरशः उल्लेख करना चाहूंगा जो मुझे उनसे अंतिम मिलन के समय प्राप्त हुए।

"सदैव प्रसन्न रहो। अध्ययन, ध्यान, चिन्तन में लगे रहो। मन महाप्रपंची है। यह बिला वजह की बातें, आसक्ति, विकार, कही-सुनी बातें सामने लाकर रखने का आदती है, इसलिए बाकी समय में मन का साक्षी रहा करो। जो मन में उठे उसे त्यागते रहो, त्यागते रहो। मन को सदैव निर्मल रखो। यही जीवन का फल है।"

पूज्य श्री गुरुदेव जी के चरणों में सादर नमन!!

भिलाई, दुर्ग, छ.ग.

पूर्ण हुई मन की अभिलाषा

विकास साहेब

मेरी उम्र उन दिनों पंद्रह वर्ष की रही होगी। ठंड के दिन थे। दादा जी लगभग प्रतिदिन शाम को घर पर आते और आग के पास पाटले पर बैठ जाते। फिर कुशल समाचार पूछने के बाद वे कहते—बेटा! कुछ ज्ञान चर्चा पढ़कर सुनाओ। नित्य की भांति उस दिन भी वे घर में प्रवेश किये, उन्हें बैठाया गया। मैं अपनी कुछ पाठ्य पुस्तकें पढ़ रहा था। उनके आते ही वह सब एक तरफ रख दिया। चर्चा के दौरान प्रसंग रामायण का आया। उन्होंने कहा—मेरे घर में विश्राम सागर रखा हुआ है, उसे तुम लाकर पढ़ा करो। मैंने कहा—ठीक है दादा जी! जब आप आइये तो उसे भी लिये आइये। दूसरे दिन कपड़े में बंधी हुई 'विश्राम सागर' पुस्तक दादा जी लेकर आये, और मुझे देते हुए बोले, लो, इसे तुम पढ़कर सुनाया करो।

विश्राम सागर पुस्तक हाथों में पाकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं पढ़ने लगा, उसकी रोचक बातें मन को प्रभावित करतीं। भगवान की बात जब आती तो मन में अद्‌भुत श्रद्धा-भाव उमड़ पड़ता। उसी में एक जगह बात आयी कि सभी युगों में भगवान का अवतार होता है। वर्तमान कलयुग में भी वह अवतार लेगा, और पौराणिक चर्चा यह भी मैंने सुन रखी थी कि भगवान इसी उत्तर प्रदेश में अवतार लेगा। इस बात पर दादा जी भावुकता एवं महिमापूर्ण बातों की चर्चा करते और मैं एक विचित्र कल्पना में डूब जाता, कि हे परमात्मा ! इस कलयुग में तू जहां भी अवतार लेगा और जैसे भी मिलेगा, तेरे दर्शन मैं अवश्य करूंगा। मन का यह सपना कैसे साकार हो, इसी भावना में मन चिंतित रहता था।

एक दिन कबीर आश्रम बैगवां, कौशाम्बी के संत श्री निर्भय साहेब घर पर पधारे। उनसे कुछ सत्संग ज्ञान चर्चा हुई। उन्होंने कहा—बच्चा! इस वर्ष इलाहाबाद कबीर मंदिर के भंडारा में तुम भी चलो। मेरे मन में कुतूहल हुआ, अतः मैंने तुरन्त भंडारा की तिथि पूछी। निश्चित तिथि की जानकारी के बाद बेसब्री से उसकी प्रतीक्षा करने लगा। समय आने पर कबीर मंदिर, प्रीतम नगर, इलाहाबाद के छठें वार्षिक अधिवेशन में आया।

यहां का संत समाज, संतों का रहन-सहन, सत्संग-विचार, सफाई-स्वच्छता आदि देखकर मन की खुशी का ठिकाना न रहा। मन ही मन मैं गद्‌गद हो उठा, और जब मैं सत्संग सभा में बैठा प्रवचन सुन रहा था, तभी अंत में पूज्य गुरुदेव सद्‌गुरु अभिलाष साहेब जी मंच पर पधारे। कुछ ही मिनट में उनके प्रवचन की कर्णप्रिय आवाज आने लगी। एक-एक शब्द जैसे अमृत रस से भरा हो और वह मानो मेरे लिए ही कहा जा रहा हो। गुरुदेव के इस प्रथम प्रवचन से ही मेरे मन में एक सुखद अनुभूति हुई।

यह सब देखकर और प्रत्यक्ष गुरुदेव का दर्शन करके मेरे मन का पूर्व सपना पूरा हुआ। इसके बाद सब समय यही विचार आते कि जिस अवतारी गुरु या ईश्वर का दर्शन करना चाहते थे वे यही हैं। ईश्वर को लोग इसीलिए तो चाहते हैं कि वह हमारे सारे दुखों को मिटाकर हमें भवसागर से पार कर दे, जो केवल भावना मात्र है। अथक परिश्रम करने पर भी अलग ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती। लेकिन संत-गुरु रूप में जो ईश्वर हैं, ये निश्चित ही जगत जीवों के भवतारक हैं। ऐसे मनोजयी, आत्मज्ञानी महापुरुषों से बढ़कर दूसरा

कौन अवतार हो सकता है।

गुरुदेव के प्रथम दर्शन करने के बाद ही प्रीतम नगर कबीर मंदिर हमारा तीर्थ बन गया और गुरुदेव हमारे उपास्य देव हो गये। सन् 1991 में साधु जीवन में आकर गुरु आश्रम (कबीर आश्रम बैगवां, कौशाम्बी) में रहना हुआ तब भी जीवन के हर मोड़ पर आप ही मेरे पथ प्रदर्शक रहे। जीवन में आयी अनेक विषम परिस्थितियों में भी अपना प्यार और निर्देश देकर सहारा दिया। समय-समय से आपके सान्निध्य और सामीप्य में सेवा में रहने का भी सौभाग्य प्राप्त होता रहा। आपसे मिले प्यार, उपकार एवं आशीर्वाद को भुलाया नहीं जा सकता। इन सब बातों की याद आते ही हृदय गद्‌गद एवं भावविभोर हो जाता है।

अत्यधिक खुशी तो तब हुई जब मेरी मंसा के अनुसार मेरे अनुज राम साहेब गुरुदेव की शरण में आये। उन्होंने गुरुदेव की अंतरंग सेवा का कार्य पूर्ण तत्परता, निष्ठा एवं अनन्य भक्ति भाव से गुरुदेव के अंतिम क्षणों तक निभाया। यह सब गुरुदेव एवं संतों की कृपा से ही हो सका।

चांद की शीतलता कभी मिटती नहीं, सूर्य का प्रकाश निरंतर जगमगाता है, उपवन की सुवास सबको आकर्षित करती है, नदी की धारा सतत प्रवाहित रहती है, लेकिन हे गुरुदेव, आपको खोकर मानो हमारा सब कुछ खो गया। आप तो जीवन भर सबको खुशियां लुटाते रहे, सबके दिलों का दीप जलाते रहे। ऐसे ज्ञानालोकित महामना परम पूज्य सद्‌गुरु श्री अभिलाष साहेब को यह मानव समाज तब तक याद करता रहेगा, जब तक मानव मात्र को शान्ति की पिपासा रहेगी। गुरुदेव आपकी यादों में हृदय-वाटिका से श्रद्धाभाव का एक पुष्प समर्पित है।

कबीर आश्रम बैगवां, कौशांबी, उत्तर प्रदेश

साधु तहाँ तक भय करे

अमलेन्द्र दास

मेरा जीवन तो एक अनगढ़ पत्थर की तरह था। जब गुरुदेव जी का सत्संग और सद्‌ग्रंथ मिले तब समझ में आया कि जीवन को संवारने का काम और शांति-लाभ लेना है तो सद्‌गुरु के सान्निध्य में ही हो सकता है, तब से मैं बराबर सद्‌ग्रंथों का अध्ययन करता रहा। परिणामस्वरूप संसार की नश्वरता का बोध बढ़ता गया और एक दिन गुरुदेव जी की चरण-शरण में आ ही गया, इसके लिए मन में बड़ी तमन्ना थी।

मैं तो सोचता था कि संतों के बीच रहूंगा और जो बन पड़ेगी सेवा करूंगा। गुरुदेव मुझ जैसे छोटे साधक से कहां बातचीत करेंगे। सामूहिक रूप से रोज दर्शन-लाभ होता रहेगा, लेकिन आया तो देखा गुरुदेव जी का प्रेम सबके लिए बराबर है। कहीं अलग से आना-जाना होता था तो जरूर हाल-चाल पूछते थे। साथ ही संत समाज का प्रेम, और फिर रोज चार घण्टे का सत्संग-ध्यान जो जीवन को ही बदल दे। आज गुरुदेव जी द्वारा मिला हुआ ज्ञान काम दे रहा है जिससे मन में एक संतोष बंधता है।

गुरुदेव जी मन के संकल्पों के त्याग पर ज्यादा जोर देते थे। वे बराबर कहा करते थे कि साधक अपने मन का द्रष्टा बने, मन में आये हुए विकारों को देखे और उससे हटता जाये, उसमें मिले न, और रोज अकेले में बैठकर अभ्यास करे तो एक समय ऐसा भी आयेगा कि हम विकारमुक्त हो जायेंगे। लेकिन सावधानी जीवनभर रखना होगा क्योंकि पंच विषय शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध तो सदैव हमारे सामने हैं। कबीर साहेब की साखी है—

मन को मृतक जानि के, मत कीजै विश्वास।
साधु तहाँ तक भय करे, जब तक पिंजर श्वास॰

परम पूज्य गुरुदेव जी के बताये हुए ज्ञान मार्ग पर बराबर चल सकूं तो यही असली श्रद्धांजलि होगी।

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

जस कथनी तस रहनी

राजेन्द्र दास

संत श्री अभिलाष साहेब जी की विशेषता थी, जो जीवन में करते थे, वही बोलते भी थे। मैं सन 1962 ई. में कबीरपंथ में दीक्षित हुआ, उस समय भी मुझे परम पारखी संत श्री हंस साहेब मिले जो बाद में छत्तीसगढ़ के कोमाखान कबीर मंदिर के महंत हुए। 1962 से 1972 तक कई बार छत्तीसगढ़ जाकर दर्शन किया। मेरा सत्संग-भजन निर्बाध चलता था। इसी बीच सन् 1969 में मेरे यहां सत्संग में एक महात्मा बहुत सारी किताब लेकर बेचने के लिए लाये, उसी में श्री अभिलाष साहेब जी की पुस्तकें लेकर आये थे। मैं साहेब की सारी पुस्तकों को खरीद लिया और साहेब जी का पता लगाने लगा।

पत्राचार के माध्यम से तो दर्शन हो गया लेकिन सशरीर दर्शन नहीं हो पाया था। पत्राचार के माध्यम से भागलपुर में कबीरपंथ के अखिल भारतीय सम्मेलन की जानकारी दी गयी। सम्मेलन 20, 21, 22 जून 1972 को था। श्री साहेब जी अपने शिष्यों के साथ 19 जून, 1972 को भागलपुर पधारे। 20 जून, 1972 को मेरा सौभाग्य जगा और बी. एड. कालेज में साहेब जी का दर्शन हुआ। काफी प्रश्नोत्तर हुआ और श्री साहेब जी ने स्पष्ट रूप से मेरे सामने दो विचार रखे। गृहस्थी जीवन या विरक्त जीवन। मैं श्री साहेब जी से 24 घंटे का समय लिया और सोच-समझकर उनको 21 जून, 72 को बताया कि मैं विरक्त जीवन बिताऊंगा। लेकिन अभी साथ नहीं जाऊंगा क्योंकि मैं शिक्षक-प्रशिक्षण ले रहा हूं। प्रशिक्षण समाप्त होने के बाद पास आने की आज्ञा मांगी, आज्ञा मिल गयी। फिर क्या, मैं काशी में बुलानाला में विश्वेश्वर प्रेस पहुंच गया। दो माह रहकर फिर बिहार चला आया। बराबर सत्संग का प्रोग्राम चलता था। पुनः 1974 के हरिद्वार में श्री साहेब जी के पास पहुंचा। वहां मुझे ब्रह्मचारी की दीक्षा दी गयी।

समय-समय से साल में 4 माह से 6 माह तक साथ रहने का मौका लगा। बिहार के भ्रमण के दौरान कई जगह से आग्रह हुआ कि श्री अभिलाष साहेब जी का प्रोग्राम बिहार में होना चाहिए। मैं इस कार्य में लग गया और भागलपुर के बाद पचीरा ग्राम रुद्रानन्द जी पूर्णिया फिर कबीर मठ डंगराहा (पूर्णिया) इस प्रकार मेरे सहयोग से 1975 से 80 ई. तक बिहार में कई बार कार्यक्रम हुए।

गुरुदेव जी का जब असरगंज-मुंगेर में कार्यक्रम हुआ तब श्री साहेब जी को मोटरसाइकिल के द्वारा रामबिहारीपुर कबीर मंदिर दिखाने के लिए लाया, तथा अन्य संतों को भी लाया। 1989 ई. जब श्री साहेब जी रामबिहारीपुर कबीर मंदिर खड़गपुर, मुंगेर पधारे तो कहने लगे भाई! मैं तो समझता था कि तुम बहुत सुकुमार हो जीवन में कुछ नहीं कर पाओगे। जब काम देखा तो लगा तुम बहुत कर्मठ हो। इस प्रकार श्री साहेब जी का कार्यक्रम 15, 16, 17 अप्रैल, 1994 और 1997 ई. में हुआ।

पूज्य श्री साहेब जी की बड़ी विशेषता यह थी कि जब से साहेब जी का सम्पर्क हुआ, कभी मुझसे जाति नहीं पूछे। एक साधु मुझे अयोध्या में जाति पूछे थे तो

श्री निर्बंध साहेब जी ने कहा था—जाति तो देख रहे हो गोरा है। दो पैर और दो हाथ वाला है। जब भी साथ रहने का मौका मिला तो सेवा में ही रहा।

यह मुझे कभी आभास तक नहीं हुआ कि श्री साहेब जी मुझे केवल ऊपर से आशीर्वाद देते हैं।

मैंने श्री साहेब जी की वाणी के प्रचार के लिए जो कार्य किया, इसके संबंध में श्री साहेब जी कभी-कभी अपना उद्‌गार प्रकट करते थे कि राजेन्द्र कभी पंडित तो कभी सिर पर गट्ठर लेकर मजदूर भी बन जाता है।

आज के परिवेश में महात्मा तो बहुत हुए, हो रहे हैं और आगे भी होंगे, लेकिन पूरे कबीरपंथ में जो काम सद्‌गुरु श्री अभिलाष साहेब जी ने किया वैसा काम करने वाले नजर नहीं आते हैं। आज के परिवेश में गाल बजाने वाले तो एक से एक महात्मा हैं, लेकिन कथनी और करनी में जमीन-आसमान का अंतर है।

श्री कबीर साहेब जी की अटपटी वाणी को जो साधारण लोग नहीं समझ पाते थे, उस वाणी को श्री साहेब जी ने सरल शब्दों में व्यक्त करने का जीवन भर प्रयास किया।

केवल कबीरपंथ ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक स्तर पर कोई ऐसा सम्प्रदाय नहीं है जो श्री साहेब जी की लेखनी को पढ़-सुनकर आत्मविभोर नहीं हुए। देश ही नहीं, वरन विदेश में भी उनकी वाणी को लोग अवलोकन करने के लिए बाध्य हैं। केवल अवलोकन ही नहीं, बल्कि वाणी को पढ़-सुनकर अपने जीवन को संभालने लगे हैं। कितने अपना जीवन तो अच्छी तरह संभाल लिये।

श्री साहेब जी के संबंध में जितना लिखा जाये या कहा जाये वह थोड़ा ही होगा। उनका चाहे व्यावहारिक क्षेत्र हो चाहे आध्यात्मिक क्षेत्र दोनों में समवाय संबंध था। जैसे धागा और रुई का संबंध है, उसी प्रकार उनका जीवन तपा-तपाया था। हर पहलू पर विचार करने पर यही कहा जा सकता है कि गुरुदेव जी का जीवन मानवतावाद से ओत-प्रोत था।

आने वाला समय बतलायेगा, श्री अभिलाष साहेब जी भारतीय इतिहास में द्वितीय कबीर थे।

श्री कबीर मंदिर, रामबिहारीपुर,
हवेली खड़गपुर, मुंगेर, बिहार

तुम्हारी उत्कर्षता देखकर कोई ईर्ष्या में जलता है, तो इसमें क्या उपाय है जो तुम सबके मन को शीतल कर सको। वह तो जब स्वयं अपने मन को शुद्ध करेगा तब शीतल हो सकता है। अतएव तुम अपने कल्याण के लिए विचार करो, दूसरे की चिन्ता छोड़ दो। तुम्हारा अधिकार अपने ऊपर है। अपने को ठीक करो और निश्चिंत रहो।

दूसरों द्वारा ईर्ष्या-द्वेष करने से तुम्हारी हानि नहीं हो सकती। तुम्हारी हानि तो तब होगी जब तुम स्वयं ईर्ष्या-द्वेष की क्रिया करने लगोगे। यदि कोई तुम्हारे सामने असुविधा उत्पन्न करता है, तो तुम्हें तपस्या एवं तितिक्षा करने का अवसर मिलता है। इससे तुम भीतर ठोस होओगे। याद रखो, तुम अपने विरोधियों के प्रति भी अहित भावना नहीं रखना। मन अत्यंत स्वच्छ हो जाने पर यह प्रतिक्रिया उत्पन्न ही नहीं हो सकती। हमारी यही परम सावधानी होगी कि हम सदैव अपने मन को स्वच्छ रखें।

(पूज्य गुरुदेव जी : समुद्र समाना बुन्द में)

सद्गुरु अभिलाष साहेब को श्रद्धा-सुमन समर्पित

संत डॉ. जितेन्द्र साहेब

पृथ्वी रत्नगर्भा है। इसकी कुक्षि में अनंत रत्न छिपे हुए हैं, जो समय-समय पर प्रकट होकर अपने तेज पुंज से जगत को आलोकित कर धरती पर अमर छाप छोड़ जाते हैं। दुनिया बाद में उसका अनुगमन कर अपने सौभाग्य को प्राप्त करती है। पृथ्वी के उन रत्नों में एक रत्न सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी भी हैं जो अपनी ज्ञान गरिमा से देदीप्यमान नक्षत्र के समान इस धरा पर चमक रहे हैं। श्री अभिलाष साहेब जी सद्गुरु कबीर साहेब के आत्मज्ञान और पारख सिद्धांत को अपने जीवन में अक्षरशः पालन करते हुए अपना कल्याण किये और उसका प्रचार-प्रसार अन्तिम सांस तक किये। वे अपने पंचभूत शरीर को 26.9.12 को ब्राह्ममुहूर्त बेला में परित्याग कर स्वरूपलीन हो गये। उनका पार्थिव शरीर श्रद्धालुओं, भक्तजनों तथा साधु-संतों के दर्शनार्थ आश्रम के सत्संग हाल में रखा गया। भारत के प्रायः सभी प्रांतों से साधु-संत एवं श्रद्धालु भक्त समाज दुख के सागर में डूबे हुए हजारों की संख्या में इलाहाबाद कबीर मन्दिर में पहुंचने लगे। जो जैसे सुने, वे वैसे इलाहाबाद के लिए चल दिये। धीरे-धीरे अपार जन सैलाब उमड़ पड़ा। सभी अपने निश्छल हृदय से उन दिव्य आत्मा को श्रद्धा-सुमन समर्पित किये। आंखें भले ही सबकी नहीं रो रही थीं परन्तु हृदय सबका रो रहा था। सभी हतप्रभ एवं अचम्भित थे कि अचानक साहेब जी का शरीर छूट गया। "बिनसत लगे न बारा हो।" किसी के मन-मस्तिष्क में इस तरह की कल्पना भी नहीं थी। लेकिन सच को कौन झुठला सकता है? प्रारब्ध को कौन मिटा सकता है? एक दिन जाना तो निश्चित है। वह घटित हो गया।

"दश द्वारे का पींजरा, तामें पंछी पौन।
रहिबे को अचरज अहै, जात अचम्भौ कौनû"

स्वस्थ शरीर था उनका। पहले किसी को भी एक बार में विश्वास ही नहीं हुआ, अर्थात विश्वास को भी विश्वास का सहारा लेना पड़ा कि वास्तव में साहेब जी अपने पार्थिव शरीर का त्याग कर दिये। वे अपनी संतुष्टि के लिए दूसरे व्यक्ति से मोबाइल फोन से संपर्क किये, तब उसे विश्वास हुआ कि साहेब जी शांत हो गये। कबीरपंथ का प्रकाशमान सूर्य अस्त हो गया। जिसकी क्षतिपूर्ति सम्भव नहीं है। आज महकता हुआ चमन वीरान लग रहा है।

यह सच है कि एक दिन सबको इस संसार से चला जाना है। यह अटल सत्य है कि यहां न कोई रहा है न रहेगा। अज्ञान के कारण लोग अमरता का अनुभव करते हैं, लेकिन मौत तो एक दिन आती ही है। सद्गुरु कबीर साहेब कहते हैं—

जो जो आया रहन नहीं पाया,
कहा राव कहा दीना हो।

सब का जाना सुनिश्चित है। परन्तु जाने-जाने में बड़ा अन्तर है।

आया है सो जायेगा, राजा रंक फकीर।
कोई सिंहासन चढ़ चले, कोई बंधे जंजीरû

आज श्री अभिलाष साहेब सशरीर तो लोगों के सामने नहीं हैं परन्तु आत्मभाव से सबके हृदय में निवास करते हैं। उनके प्रति सभी के हृदय में श्रद्धा का भाव

विराजमान है। सद्गुरु अभिलाष साहेब अपने पंचभूत शरीर को छोड़कर इस संसार से सिंहासन पर चढ़कर चले गये। उनकी कीर्ति और यश इस संसार में अमर रहेंगे। वे त्याग-वैराग्य की प्रतिमूर्ति थे। समता, शृजुता और प्रेम रस उनमें लबालब भरा हुआ था। उनका जीवन आदर्श रूप था। उनका मन अहंकार-रहित और निर्मल था। वे किसी का भी अहित नहीं सोचते थे, सबका कल्याण चाहते थे। कोई भी उनसे मिलने के लिए आता तो उससे निष्कपट होकर बड़े प्रेम से मिलते थे। आत्मीय भाव से समाचार पूछते थे। सबको अच्छी बात की शिक्षा देते थे। निंदा-शिकायत से दूर रहते थे। सब में गुण देखते थे। मैंने जब-जब उनका दर्शन किया तब-तब बड़ी प्रसन्नता के साथ मिले और मेरे ऊपर सदा स्नेहभाव रखते थे। पूर्णिया के जब कोई संत-ब्रह्मचारी दर्शन किये तो मेरे विषय में अवश्य पूछ लेते थे। सब में अच्छाई देखना उनकी बहुत बड़ी महानता एवं विशेषता थी। साधना, भक्ति, त्याग, वैराग्य और सत्संग पर विशेष जोर देते थे। सबको प्रेम और भाईचारा का पाठ पढ़ाते रहते थे। दिखावेपन से दूर रहकर सहज और सादा जीवन जीते थे तथा दूसरे को भी जीने के लिए प्रेरित करते रहते थे।

संत श्री अभिलाष साहेब आदर्श पुरुष थे। उनकी जीवन शैली सबके लिए प्रेरणा स्रोत है। वे अपने जीवन को व्यवस्थित नियम में बांधकर जीये थे। अन्त तक उस नियम का निर्वहन किये। उसी नियम का प्रतिफल है आज उच्चतम चोटी पर पहुंचे हुए हैं। वे अपने नियम के बड़े पक्के थे। एक बार कोलकाता आये हुए थे। धरमतल्ला मैदान में रविवार के दिन सत्संग होता है। संयोगवशात मैं आ गया। संचालक महोदय ने मुझे समय दे दिया। मैं कुछ देर निवेदन किया। समय निर्धारित नहीं होने से तथा संचालक की ओर से संकेत नहीं करने के कारण कुछ अधिक समय निवेदन किया। तत्पश्चात श्री साहेब जी प्रवचन किये और 15 मिनट ही बोलकर अपनी वाणी में विराम लगा दिये। सबकी इच्छा थी कि साहेब जी और बोलें, लेकिन साहेब जी निर्विकार भाव से बोले—इतनी ही बातों पर विचार करो और उसे अपने जीवन में धारण करो, बहुत है। इतना समय पर ध्यान देते थे और नियम का पालन करते थे। उनकी दैनिक जीवनचर्या का अवलोकन किया जाये। सुबह तीन बजे ब्राह्ममुहूर्त में प्रत्येक दिन उठना। शौचादि क्रिया से निवृत होकर ध्यान करना, चिंतन-मनन करना, स्वाध्याय करना, प्रत्येक दिन डायरी लिखना तथा पुस्तक लेखन कार्य करना। सुबह-सामूहिक बन्दगी के बाद आये हुए दर्शनार्थियों से मिलना, उनसे बातचीत करना। भोजन ग्रहण करने के बाद कुछ देर विश्राम करना। पुनः स्वाध्याय एवं लेखन कार्य करना एवं आये हुए दर्शनार्थियों से मिलना, किसी प्रकार की शंका हो तो समाधान करना। शाम को बन्दगी के बाद भोजन तथा रात्रि नौ बजे विश्राम करना। इसके अतिरिक्त आश्रम के नियमों के अनुसार सुबह-शाम के पाठ-ध्यान, सत्संग में भाग लेना एवं आश्रमवासी साधकों को अध्यात्म की शिक्षा देना। सम्पूर्ण देश में सत्संग-प्रवचन करना तथा साधु-ब्रह्मचारी एवं आश्रम के व्यवस्थापक को समय-समय पर मार्गदर्शन करना। सब कुछ करते हुए सबसे निर्भार रहना। सुख-दुख, हानि-लाभ से रहित होकर सहज सेवा में समर्पित कर दिये। कबीर साहेब के पावन ज्ञान का उपदेश सत्संग-प्रवचन के माध्यम से भारतवर्ष में करते रहे और लेखनी के माध्यम से शताधिक पुस्तकों की रचना कर, मानव जगत का साधना पथ-प्रशस्त किये। अध्यात्म को अपनी लेखनी के द्वारा सहज और सरल बनाने का प्रयास किये। इस कार्य में उन्हें सफलता भी मिली। अपनी रचना से संत-साहित्य एवं कबीरपंथ को समृद्ध किये। मूल रचना, टीका, भाष्यग्रन्थ, लेख, पद, भजन की रचना किये। अनेक संत-महापुरुषों की वाणी की टीका कर प्रकाशित किये तथा कई ग्रंथों का संपादन भी किये। छोटे-बड़े सौ से अधिक पुस्तकों की रचना कर, अध्यात्म की गुत्थी को सुलझाये। धर्म के नाम पर चला आ रहा अंधविश्वास, पाखंड, बाह्याडम्बर को दूर कर, मानव समाज को धर्म और अध्यात्म के सच्चे स्वरूप का दिग्दर्शन कराये।

कबीरमठ, गंज, मणिगादी, दरभंगा, बिहार

सद्गुरु की याद में

हीरेन्द्र दास

सद्गुरु की याद में, क्या कहूं नादान हूं।
मन वाणी बुद्धि से, सब तरह लाचार हूंû

गुरुदेव जी दया के महासागर थे, मानवता के महापुजारी थे। महा ध्यानी थे, लेखक, कवि और प्रवक्ता थे, ज्ञानी-पंडित थे, महान संत, सद्गुरु और मुक्त पुरुष थे। व्यवहार में सबको अपना मानते थे। सबको हृदय से प्यार और स्नेह देते थे, क्षमा की महामूर्ति थे।

गुरुदेव जी की सेवा करने का मुझे कई बार सौभाग्य प्राप्त हुआ है। गुरुदेव जी की हर क्रिया पूजा होती थी। मैं बारीकी से देखता था और देखता ही रह जाता था। गुरुदेव जी जब चलते थे, तब चलने का ही काम करते थे। नम्र दृष्टि से सिर झुकाकर। भोजन करते थे तो भोजन ही करते, थाली पर ही दृष्टि होती थी। जब लिखते-पढ़ते थे तब डायरी-पुस्तक पर ही एकाग्र होते थे। मैं कई बार बंदगी करने या कोई बात को लेकर जाता था तो बंदगी कर के खड़ा रहता था, गुरुदेव जी इतने एकाग्र होते थे देख ही नहीं पाते। तब फिर से आवाज लगाकर बंदगी करता था।

गुरुदेव जी मान-बड़ाई, दिखावा, प्रदर्शन से बहुत दूर रहते थे। गुरुदेव जी स्वावलम्बी थे, दूसरे के भरोसे नहीं रहते थे। झट से उठकर अपना काम कर लेते थे। गुरुदेव जी ने जितनी पुस्तकें लिखी हैं और लोगों को उपदेश-प्रवचन दिया है उस पर पहले स्वयं जीते थे, तब लिखते-कहते थे। गुरुदेव जी के अंदर ज्ञान, भक्ति, वैराग्य कूट-कूट कर भरे थे।

गुरुदेव जी की शरण में 1998 में आया। उसके पहले कई बार दर्शन हुए थे। गुरुदेव जी की रहनी-गहनी, बोली-बानी में अद्भुत जादू था। गुरुदेव जी के साथ बीतीं बहुत सारी बातें याद आ रही हैं लेकिन एक-दो घटना ही लिखता हूं।

गुरुदेव जी को कहीं बाहर से आना था। रविवार का दिन था। प्रीतमनगर, कबीर मंदिर में प्रवचन देना था। श्री राम साहेब ने मुझसे कहा कि कबीरनगर से गीली खिचड़ी बनाकर लाना। मैं खिचड़ी बनाकर कुकर सहित ले गया। गुरुदेव जी प्रेम से खाये। खाने के बाद बिना कुछ कहे बड़े प्रेम से दिखाये, एक कंकर जो मूंगफली के दाने के बराबर था। गुरुदेव जी क्षमा की मूर्ति थे।

मुझे कहीं जाना होता था तो गुरुदेव जी की बंदगी कर उनसे आज्ञा लेता था। वे अपने कर-कमलों से रुपये निकाल कर देते थे। जब मैं कहता कि गुरुदेव, रुपये हैं मेरे पास, तब गुरुदेव जी बड़े प्यार से कहते यह सब किसके लिए हैं। प्रेम से रुपये हाथ में थमा देते थे।

मां अपने शिशु बालक को अपनी गोद में लेती है, हृदय में समाती है, ऐसे ही गुरुदेव जी अपनी गोद में और हृदय में समाते थे। ऐसे गुरुदेव जी के प्यार को पाकर प्रेम के आंसू आंखों में भर आते हैं। गुरुदेव जी के अंतिम दर्शन 25 सितम्बर, 2012 सायं 6 बजे हुए जब आप भंडार घर से अपने निवास में आ रहे थे।

हंसते और हंसाते थे, देते सब को प्यार।
स्वरूप में स्थित थे, छूट गया संसारû

गुरुदेव जी आज पार्थिव शरीर से नहीं हैं, लेकिन गुरु कभी मरते नहीं हैं, क्योंकि उनका ज्ञान अमर है। मैं उनके बताये मार्ग पर चलता रहूं, यही मेरी उनके प्रति श्रद्धांजलि है। गुरुदेव जी को शत-शत नमन।

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

परम सद्गुरु की एक झलक

रमेश दास

भूले न भूल पाऊं गुरुवर वो तेरा प्यार।
कैसे कहूं किससे कहूं मेरे परवरदिगार॥
सदा विराजे अपने आप में देते रहे संदेश।
नेह के बंधन तोड़ के चले गये निज देश॥
जब तक यह धरती रहे, जब तक रहे आकाश।
नाम तेरा अमर रहे, गुरुवर हे अभिलाष॥

कोई यह पूछे कि आकाश में कितने तारे हैं जरा गिनकर बताओ, तो बता पाना सर्वथा असंभव है। ठीक वैसे ही पूज्यपाद सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी के बारे में लिखना और कहना असंभव है। क्योंकि गुरुदेव जी वहां स्थित थे जहां दुनिया नहीं थी। तो फिर इस दुनिया में रहकर उनके बारे में लिखना कैसे संभव है? फिर भी उस अव्यक्त विषय को व्यक्त करने का एक लघु प्रयास कर रहा हूं।

कौन जानता था कि उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के खानतारा गांव में 17 अगस्त 1933 ई. को जन्मा एक छोटा-सा शिशु रामसुमिरन आगे चलकर इतना बड़ा काम कर जायेगा। बालक रामसुमिरन बचपन से ही तीव्र और कुशाग्र बुद्धि के थे। जब से वे गुरु की शरण में आये तब से साधना की एकरस स्थिति में चलने लग गये और एक दिन पूर्णता को प्राप्त हो गये। इस पर एक घटना याद आती है।

यह घटना सन् 2005 की है। गुरुदेव जी छत पर कुर्सी में विराजमान थे। उन दिनों मैं आपकी सेवा में था। एकांत क्षण जानकर मैं गुरुदेव जी के पास अपनी आसनी बिछाकर बैठ गया। उन्होंने कहा—बेटा! कुछ पूछना है? मैंने कहा—गुरुदेव, आप अपने स्वरूप में कब स्थित हुए? आप इसकी तारीख बता दें तो हम लोग उस दिन उत्सव मनायेंगे। गुरुदेव ने कहा—बेटा, इसके बारे में कोई तारीख बता पाना मुश्किल है। क्योंकि यह मेरे निरंतर की साधना का परिणाम है। इसके बाद गुरुदेव जी ने कबीर साहेब की दो साखियां कहीं, वे हैं—

काजर केरी कोठरी, बुड़ता है संसार।
बलिहारी तेहि पुरुष की, जो पैठि के निकरनहार॥
काजर ही की कोठरी, काजर ही का कोट।
तोंदी कारी ना भई, रहा सो ओटहि ओट॥
(बीजक, साखी 226, 227)

सच है जो व्यक्ति सबसे निष्काम हो जाता है वह संसार के लिए पूजनीय एवं वंदनीय हो जाता है।

उनका जीवन एक आईने के समान था। जिसमें हर शख्स अपना चेहरा साफ-साफ देख सकता था। जैसे बाहर वैसे भीतर और जैसे भीतर वैसे बाहर। उनका जीवन पारदर्शी था। उनके भीतर अहंकारादि विकारों की कोई गुंजाइश नहीं थी। वे दिल के साफ और शांति के महासागर थे।

आप सामान्य साधक के साथ भी मित्रवत व्यवहार करते थे। बच्चों के सामने बच्चा बन जाना और सयानों के साथ सयाना बन जाना, आपके जीवन का सहज स्वभाव हो गया था। विनम्रता इतनी कि किसी के हाथ

जोड़ने से पहले स्वयं हाथ जोड़ लेते थे और आगंतुक के बैठ जाने के बाद ही आप आसन ग्रहण करते थे। कुशल मंगल इस प्रकार पूछते कि जिसे शब्दों से बयान कर पाना असंभव है। मिलने के बाद सब लोग यह महसूस करते थे कि गुरुदेव जी सबसे ज्यादा मुझे ही चाहते हैं। यह गुरुदेव जी के महान व्यक्तित्व का परिचायक है।

वे अपने शिष्यों को मित्र कहते थे और महज कहते ही नहीं थे अपितु वैसा व्यवहार भी रखते थे। जब कोई साधक बीमार पड़ जाता तो उसकी सेवा में लग जाना, मालिश कर देना, दवा की और जलपानादि की व्यवस्था स्वयं कर देना, इस बात का साक्षी है।

एक बार की घटना है। उन दिनों भ्रमण में मैं गुरुदेव जी की सेवा में था। भोजन-भण्डार गुरुदेव जी के निवास से कुछ दूर भक्त के यहां था। मैं गुरुदेव जी के लिए भोजन लाया और गुरुदेव को भोजन कराकर बचे हुए प्रसाद को अपने आसन के पास लाकर खाने लगा। गुरुदेव जी कुछ ही देर में टहलते हुए मेरे आसन के पास आ गये।

गुरुदेव जी ने देखा कि इसके पास पर्याप्त भोजन नहीं है। आपने कहा—बेटा! तुम्हारे पास भोजन कम है। डिब्बा लाओ, मैं भण्डार घर से ला देता हूं। मैंने कहा—गुरुदेव! इतना भोजन मेरे लिए पर्याप्त है। गुरुदेव ने कहा—संकोच मत करो, तुम मेरी सेवा करते हो तो क्या मैं तुम्हारी इतनी सेवा नहीं कर सकता। ऐसा कहकर गुरुदेव जी डिब्बा लेकर स्वयं भण्डार घर चले गये और सन्तों से भोजन मांगकर ले आये।

पूज्यवर गुरुदेव जी में कथनी, करनी और रहनी की बेजोड़ एकता थी। वे किसी बात को कहने से पहले अपने जीवन में प्रयोग कर उसका आचरण कर लेते थे तब उस बात को समाज के बीच रखते थे। हमारे लिए उनका जीवन एक बहुत बड़ा धरोहर है, एक आदर्श है। हम उनके जीवन के आदर्शों को लेकर अपने जीवन को महान बना सकते हैं।

कथनी, करनी और रहनी की एकता के कारण उनका जीवन चुम्बकीय हो गया था।[1] कोई जिज्ञासु-भक्त उनके दर्शन-श्रवण के बाद उनसे अप्रभावित नहीं रह सकता था। इसका प्रमाण यह है कि उनके जीवनकाल में सैकड़ों साधु-साध्वियां विरक्त मार्ग में साधनारत थे और लाखों की संख्या में भक्तों का समाज खड़ा हो गया था तथा आज भी वे साधु-साध्वियां उसी प्रकार साधनारत हैं जिस प्रकार उनका संरक्षण पाकर साधनारत रहे हैं। आपने एक व्यवस्थित समाज और संस्था दी है जिसके माध्यम से समाज की विनम्र सेवा हो रही है।

पूज्यवर गुरुदेव जी अपने समय का पूरा सदुपयोग करते थे। उनका समय से उठना और समय से सोना, समय से भोजन करना, समय से लिखना-पढ़ना नित्य का क्रम था। उसी बीच में वे लोगों से मिल भी लिया करते थे। जब आगंतुक चले जाते तो तुरंत वहीं से लिखना शुरू करते जहां से बंद किये होते थे। इसमें आपको जरा भी विलम्ब नहीं होता था। उनका यह ढंग उनकी जबर्दस्त एकाग्रता का परिचय देता है।

सद्गुरु कबीर साहेब के बाद कबीरपंथ के प्रचार-प्रसार में गुरुदेव जी की महती भूमिका रही। संस्था का निर्माण, साधु-साध्वी समाज का अलग-अलग निर्माण, पारख प्रकाश और पुस्तकों का लेखन आपने पूरे मनोयोगपूर्वक किया। उनकी शताधिक पुस्तकें हीरे-मोती की तरह हैं जो अनेक भाषाओं में अनुवादित होकर देश-विदेश में बहुत काम कर रही हैं। उनकी हर पुस्तक मानो एक शास्त्र है जिसे पढ़कर और आचरण कर आदमी सदा-सदा के लिए अविचल शांति को उपलब्ध हो सकता है। उनके लिए यह कहना अतिशयोक्ति न होगी—

———————

1. जस कथनी तस करनी, जस चुम्बक तस ज्ञान।
कहहिं कबीर चुम्बक बिना, क्यों जीते संग्रामû
(बीजक, साखी 314)

सर्व गुणों के धाम गुरु, जग से रहे उदास।
संतों के सिरमौर हो, हे गुरुदेव अभिलाषû

वे मानवता के पुजारी थे। उनके दिल में जातिवाद, संप्रदायवाद, वर्णादि को लेकर रंचमात्र भी भेदभाव नहीं था। इसी कारण कबीरपंथ ही नहीं अन्य मत-पंथ के लोग भी उनकी बातों को तहेदिल से स्वीकारते थे। इस प्रसंग में एक संस्मरण याद आता है—

एक बार गुरुदेव जी राजस्थान के नागौर जिले के लिलिया ग्राम में थे। गुरुदेव जी बरामदे में कुर्सी में विराजमान थे। उनके दर्शनार्थ तीन नवयुवक आये। दो तो दरी पर बैठ जाते हैं और तीसरा नवयुवक कंबल ओढ़े आंगन में खुली जमीन पर बैठ जाता है।

गुरुदेव ने उससे कहा कि बेटा, दरी पर बैठ जाओ। उसने उत्तर में संकेत से जमीन पर बैठना स्वीकारा। कुछ देर बाद एक नवयुवक ने कहा—गुरुदेव! यह हरिजन है। इसलिए दरी पर नहीं बैठा। गुरुदेव ने कहा—तब तो इसे दरी पर अवश्य बैठना चाहिए। मैं तो हरिजन को ही आदर देता हूं, दुर्जन को नहीं।

यह बात सत्य है कि कबीर साहेब ने जाति-पांति का खूब खुलकर खण्डन किया लेकिन दुख की बात है कि उनकी परंपरा के अनुयायी ही उनकी बातों को न मानकर जाति के आधार पर लोगों से व्यवहार करने लगे। पूज्यवर गुरुदेव जी ने इसके विरोध में कहा कि चाहे कहीं का भी रहने वाला व्यक्ति हो, मानव केवल मानव है। मिथ्या जाति के आधार पर मानवता का मूल्यांकन करना घोर अपराध है।

आपने कबीरपंथ के लिए एक और बहुत बड़ा काम किया। कबीरपंथ में भी अन्य मतों की तरह अन्य पंथों के अवतारों का खण्डन करते थे, किन्तु सद्गुरु कबीर के लिए कबीरपंथ में चल रहे 'अवतार' शब्द के लिए मौन हो जाते थे। इसका विरोध पूज्यवर गुरुदेव जी ने खुलकर किया। उन्होंने कहा कि अन्य मत-पंथ के महापुरुष जैसे मानव हैं ठीक वैसे ही सद्गुरु कबीर साहेब केवल मानव हैं। वे अपने सुकर्मों के बल पर महापुरुष कहलाये। उनको अलौकिक बताना उनके विचारों के विरुद्ध है।

गुरुदेव जी का अचानक चले जाना हम सबके लिए एक दुखद घटना है। लेकिन जरा विचार करें कि जिस तिथि को हम उनका परिनिर्वाण दिवस कहते हैं, वह तो उनका प्रारब्धांत दिवस था। गुरुदेव जी अपने आप को साधना द्वारा अपने नश्वर शरीर से दशकों पूर्व पृथक कर लिये थे।

आज उनका न होना एक बहुत बड़ी क्षति है। इसकी पूर्ति इतिहास कब करेगा, इसे भविष्य ही बतायेगा।

ऐसे महामानव, परम सद्गुरु को तहेदिल से भावभीनी श्रद्धा-सुमन समर्पित करते हुए कोटि-कोटि नमन करता हूं।

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

सुख ढूँढ़ रहे तुम वन में, गिरि गह्वर के कन्दर में।
पर नहीं पता तू पाया, वह है तेरे अन्दर मेंû
तेरे ही अन्तस्तल में, सुख-सागर लहराता है।
पर तू विपन्न हो करके, दर-दर ठोकर खाता है।
जब मन विषयों से मुड़कर, अपने में आ जायेगा।
सब चंचलता को तजकर, स्थिरता को पायेगाû
तब सुख का स्त्रोत खुलेगा, जो है अनन्त अपने में।
इसको पाकर फिर मन को, नहिं होगा दुख सपने मेंû

(पूज्य गुरुदेव जी : हृदय के गीत)

सद्गुरु की कृपा

श्री भगवान साह

सद्ज्ञान, भक्ति, वैराग्य की प्रतिमूर्ति सद्गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी के चरणों में शत-शत नमन करते हुए अपने कुछ संस्मरण प्रकट कर रहा हूं जिसको मैं जीवनपर्यन्त विस्मृत नहीं कर सकूंगा।

सन् 1968 के लगभग श्री संतशरण साहेब जी के सान्निध्य में मुझे पूज्य गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी का दर्शन-प्रवचन लाभ अपने ही आवास के बगल वेदान्ती की मां (धर्मपत्नी स्व. रामसमोखन गुप्ता) के आवास में प्राप्त हुआ। तब से मैं साहेब जी के आगमन की प्रतीक्षा सदैव करता रहता। भक्त माताप्रसाद जी नियारिया गुरुदेव जी का प्रवचन सार्वजनिक स्थल चौक घंटाघर पर कराने हेतु कई वर्षों से उत्सुक थे। कालान्तर में मैंने उन्हें सहयोग देकर साहेब जी का प्रवचन चौक घंटाघर पर आयोजित कराया जिसमें भक्तों के अतिरिक्त अन्य नगर व ग्रामीण क्षेत्र के नर-नारी प्रवचन लाभ प्राप्त कर प्रभावित हुए। सबसे अधिक मुस्लिम तथा सिख भाई प्रभावित हुए। इस प्रकार साहेब जी के आने पर चौक घंटाघर पर प्रवचन का आयोजन कई वर्षों तक चलता रहा। स्थानीय कैलाशबाग में दो बार साप्ताहिक सत्संग का भी कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके अतिरिक्त मेंहदीहाता व सालपुर में साहेब जी का जब भी आगमन होता मैं बड़ी निष्ठा और लगन के साथ संलग्न रहता था।

गुरुदेव मुझे बहुत नजदीक से जानने व मानने लगे थे। उपदेशों का प्रभाव मेरी जीवनचर्या में समाहित होने लगा था। सन् 1982 में मेरी पत्नी का देहान्त हो गया था। 2-3 महीने बाद गुरुदेव जी का जब आगमन हुआ तब एकान्त में उन्होंने मेरी मनोदशा पूछी उसके बाद कहा, 'देखो, तुम्हारे तीन बच्चे हैं। यदि इनका और अपना भविष्य सुधारना हो तो इनकी शिक्षा-दीक्षा, पालन-पोषण का समुचित ध्यान रखो और यदि अपना कल्याण चाहते हो तो पुनर्विवाह की बात सोचना तक नहीं'। सद्गुरुदेव की यह वाणी मेरे लिए अमृतवाणी हो गयी। मेरे स्व विचार से समर्थित वाणी से मुझे आत्मबल प्राप्त हुआ। जिसका परिणाम मैं वर्तमान के सुख-शांतिमय जीवन में प्रत्यक्ष अनुभव कर रहा हूं।

मुझे स्मरण है कि साहेब जी जब बीजक टीका लिख रहे थे तो कितनी एकाग्रता से लिखते थे। एक-दो पृष्ठ लेखन मैंने भी देखा था। एक बार जब विवेकानन्द-साहित्य का अध्ययन कर रहे थे तब अंग्रेजी की डिक्शनरी खोलकर यदा-कदा शब्दार्थ देख लिया करते थे। अभी गत वर्ष हमारे यहां 'कबीर सत्संग समारोह' अरुण कुमार वैश्य के सद्प्रयास से सम्पन्न हुआ था उसमें साहेब जी का आगमन हुआ। उनका अपूर्व स्नेह स्मरण करके नेत्र जलपूरित हो जाते हैं जब साहेब जी ने मेरा हाथ पकड़कर अपने साथ जमीन पर बिठा लिया और बड़ी उत्सुकता से कहने लगे कि मैंने 'महाभारत मीमांसा' लिखी है। उसके कुछ प्रसंगों पर मुझसे बड़ी देर तक चर्चा करते रहे। परम पूज्य गुरुदेव जी की वह आत्मीयता अब केवल आत्मा की ही वस्तु बनकर रहेगी। इलाहाबाद में समाधि-समय मिट्टी डालते समय मेरी क्या दशा थी मैं वर्णन नहीं कर सकता।

परमपूज्य के चरणों में एक सुमन!

करनैलगंज, गोण्डा, उ. प्र.

कथनी-करनी में अभेद

अरुण कुमार वैश्य

प्रातः स्मरणीय, परमपूजनीय, सद्गुरुदेव संत शिरोमणि श्री अभिलाष साहेब जी के चरणों में कोटि-कोटि नमन!

मुझे 1982 में प्रथम बार गुरुदेव जी का दर्शन लाभ स्थानीय भक्तिमयी 'वेदान्ती की मां' के आवास पर प्राप्त हुआ था तभी से मैं प्रभावित होकर गुरुदेव जी का ही हो गया था। उस समय मेरी उम्र लगभग 14 वर्ष थी। मैं ईश्वरवादी संस्कारों वाला था जो मुझे परिवार व समाज से प्राप्त हुआ था। किन्तु गुरुदेव की वाणी से मुझे विवेक-प्रकाश दिखने लगा था। मेरे विभिन्न शंका-समाधान हेतु मुझे 'जगन्मीमांसा' पुस्तक प्रदान किये जिससे मेरे रूढ़िवादी चिन्तन समाप्त हो गये और चिन्तन को पारख दिशा प्राप्त हुई। श्रद्धा बढ़ने लगी। मैं गुरुदेव के अन्य साहित्य भी तल्लीनता से पढ़ने लगा, भ्रमजाल छटने लगे।

एक बार गुरुदेव जी को मारुति गाड़ी से स्वयं चालक बनकर मूंजापुर ले जाने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ था और श्री प्रेम साहेब जी के दर्शन पाकर मैं कृतार्थ हुआ था। आपके निष्पक्ष विचार, निःस्वार्थ स्नेह, सादगी, सहनशीलता, कथनी-करनी में अभेद दर्शन अद्वितीय व निराले थे। गुरुदेव जी के दर्शन हेतु मैं कई बार इलाहाबाद तथा अन्य क्षेत्रों में जहां कहीं भी सुन पाता था कि उनका आगमन हुआ है, उत्सुकतापूर्वक जाता था। अपने नगर व ग्रामीण क्षेत्र में गुरुदेव जी के प्रवचन कार्यक्रम में मैं यथोचित सेवा में संलग्न रहता था। गत वर्ष 12 नवंबर को मैंने 'सद्गुरु कबीर सत्संग समारोह' का आयोजन अपने 'बालकृष्ण ग्राउण्ड' में रखा था। गुरुदेव जी के प्रवचन ने कबीरपंथी भक्तों को ही नहीं नगर व क्षेत्र के सभी नर-नारियों, हिन्दू-मुस्लिम-सिख भाइयों को प्रभावित किया। साहेब जी की प्रशंसा सर्वत्र व्याप्त है। मुस्लिम और सिख बंधु बड़ी तन्मयता से प्रवचन सुनने आते थे।

गुरुदेव जी का भारतीय साहित्य-दर्शन पर ही नहीं, विश्व दर्शन पर अधिकार था। आपके अनुभव व चिन्तन का लाभ आपके साहित्य, स्मरण व कैसेटों के द्वारा सदैव प्राप्त होता रहेगा। उन वाणियों के बीच आप स्वतः उपदेश देते तथा सबको शरण में लगाते प्रतीत होते रहेंगे।

अभी जल्द ही माता जी (अम्मा) की तबीयत इतनी खराब हुई कि मुझे लिपटकर रोने लगीं। मैंने जैसे ही अपने मोबाइल द्वारा गुरुदेव जी की वाणियों को सुनाना प्रारम्भ किया तो सामान्य हो गयीं।

परिवर्तन इस असार संसार का नियम है किन्तु जिसने सद्गुरुदेव जी की एक भी वाणी अपना ली और अपने को समर्पित कर दिया वह निर्भय-निर्विकार भाव से सुख-शान्ति प्राप्त करेगा।

सद्गुरु श्री गुरुदेव जी का एक संस्मरण मुझे याद है। सन् 1991 में एक बार मैं बहुत विचलित था। मन में तमाम प्रकार की उलझनें थीं। दुनिया से इतना घबड़ा चुका था कि जीने की इच्छा ही खत्म हो चुकी थी। मेंहदीहाता में गुरुदेव जी आये हुए थे। मैं दर्शन करने गया और अपनी बातें बतायीं। गुरुदेव जी ध्यान से मेरी बात सुनते गये। मैं रोने लगा तब गुरुदेव जी ने मुझे सीने से चिपका लिया। उस अनुभव का वर्णन करना मेरे सामर्थ्य में नहीं है। उस दिन मेरा नया जन्म हुआ और

फिर सब कुछ मेरे गुरुदेव जी ही हो गये। और आज मैं जो कुछ भी हूं श्री गुरुदेव जी की कृपा से है। इसका सीधा असर मेरे मन-मस्तिष्क पर रहता है। कोई भी गलत काम होने से पहले गुरुदेव जी का स्मरण आने से नष्ट हो जाता है। मैंने महसूस किया है कि मात्र गुरुदेव जी के स्मरण से ही इतनी शांति मिलती है कि शायद और कहीं मिले। मैंने गुरुदेव जी का छोटा-सा मंदिर अपने घर में बना रखा है। जब मैं मंदिर के सामने जाता हूं तो गुरुदेव के स्मरण में आंसू निकलने लगते हैं। और मैं गुरुदेव जी के चरणों में अपने को पाता हूं। अपने आपकी पहचान मुझे गुरुदेव जी के द्वारा हुई। जब तक मैं अपने शरीर को खुद जानता था, तब तक मैं बहुत विचलित था, मगर आज मैं अपने आपसे बहुत सन्तुष्ट हूं। मेरा विनम्र अनुरोध है कि गुरुदेव की कृपा हम पर बराबर बनी रहे तथा आश्रम से मेरा जुड़ाव बराबर बना रहे। सभी संतों की कृपा हम पर बना रहे और मैं भूल कर भी इधर-उधर न भटकूं; यही मेरा गुरुदेव और संत समाज से निवेदन है। बराबर मेरा प्रेम आप सभी संतों के प्रति बना रहे। यही मेरी कामना है।

मैं और मेरा परिवार सद्गुरुदेव के प्रति अपनी श्रद्धांजलि नम नेत्रों से समर्पित करते हैं।

करनैलगंज, गोण्डा, उ. प्र.

श्रद्धा-सुमन की एक पाती गुरुवर के नाम

डॉ. राजेन्द्र गदिया

प्रतिक्षण वंदनीय संतप्रवर श्री अभिलाष साहेब जी की भौतिक काया भले ही पंचतत्त्व में विलीन हो गयी है पर उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व का इतिहास देखें तो पाते हैं कि वे एक महामानव के साथ-साथ एक संपूर्ण संस्था की तरह थे। कबीर साहेब जी को हमने देखा नहीं पर आपकी चर्या देखकर ऐसा आभास होता था कि सचमुच में कबीर जी ऐसे ही रहे होंगे। वे सदैव एक जैसा व्यवहार प्रदर्शित करते थे। ओजपूर्ण चेहरा, शांतमना मुद्रा दर्शनार्थियों को बरबस ही आकर्षित करती थी। वे पात्र देखकर अपने विचार रखते थे तथा अपने नजदीक रहने वालों को उनकी गलतियों पर बख्शते नहीं थे। कम शब्दों में बहुत अधिक कहने का उनमें विशेष गुण था। उनका महाविद्यालयीन अध्ययन नहीं था तथापि उन्होंने गूढ़ विषयों पर, लब्धप्रतिष्ठित ग्रंथों पर चिंतन-मनन कर अपनी मौलिक टिप्पणियां की हैं। प्रतिदिन ब्राह्ममुहूर्त में उठकर वे कुछ-न-कुछ अवश्य ही लिखा करते थे। यात्राओं के दौरान भी ये पठन-पाठन जारी रखते थे। समय का सदुपयोग तथा जीवन के प्रत्येक क्षण की सार्थकता वे बखूबी जानते थे। उनमें आचार्यों-सी गम्भीरता तथा बालक-सी चंचलता दृष्टिगोचर होती थी। वे स्वयं के लिए बेहद कठिन तथा दूसरों के लिए काफी सरल थे। वे धुन तथा सुर के पक्के थे, एक बार जो ठान लिये उसे पूरा करके ही विश्राम लेते थे। देश तथा समाज में फैली कुरीतियों पर वे शास्त्रसम्मत प्रहार करते थे। उनकी भाषा बेहद सरल थी। वर्ष पर्यन्त के निर्धारित कार्यक्रमों में प्रायः फेरबदल नहीं होता था। कुल मिलाकर समूचे राष्ट्र ने एक अति विशिष्ट महामना को खोया है। हम सभी मन-वचन-काय से संत श्री को अपनी विनयांजलि समर्पित करते हैं।

नवापारा-राजिम, रायपुर, छ.ग.

सद्गुरु अभिलाष साहेब जी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

राजकुमार पटेल

परम पूज्य, परम श्रद्धेय, जन-जन के प्राणों में बसने वाले पूज्य गुरुवर 'सद्गुरु अभिलाष साहेब जी' आज हमारे बीच नहीं रहे, यह दिल कतई मानने को तैयार नहीं है, लेकिन मानना पड़ेगा, इसे बदला नहीं जा सकता। कुदरत के इस विधान को तोड़ा नहीं जा सकता, स्वीकारना ही होगा, चाहे मन से, चाहे बेमन से। इस दुनिया से एक दिन सभी को जाना ही होगा, चाहे राजा हो, रंक हो या फकीर। सद्गुरु कबीर साहेब की अमृतवाणी है—

आया है सो जायेगा, राजा रंक फकीर।
एक सिंहासन चढ़ चलै, एक बंधे जंजीरû

पूज्य गुरुवर ने यह कहावत चरितार्थ कर दिया। वे सचमुच ज्ञान के सिंहासन पर चढ़कर गये। उन्होंने अपने जीवन को इस तरह तराशा जैसे एक शिल्पी सुन्दर मूर्ति गढ़ता है। एक सुनार सुन्दर आभूषण गढ़ता है। उन्होंने अपने जीवन में कोई दाग नहीं लगने दिया—

"ज्यों की त्यों धरि दीनी चदरिया।"

और अपने जीवन को उच्चता के शिखर पर पहुंचा दिया। इतना धीर-गंभीर शांत पुरुष, जिनके रोम-रोम से शांति टपकती थी, जिनकी वाणी से अमृत झरता था। जो क्षमा के सागर थे, क्रोध से लाखों कोस दूर, करुणा और दया के सागर, विद्वता के धनी, जिन्होंने अपनी लेखनी से छोटी-बड़ी लगभग 130 ग्रंथों की रचना कर डाली। अब भी उनकी कलम रुकी नहीं थी। अनेक संतों की वाणियों पर लिख रहे थे।

26-9-2012 प्रातः तीन बजे की काली रात ने साहेब जी को हमसे छीन लिया। प्रातः छः बजे यह दुखद समाचार जैसे ही मैंने सुना कि सद्गुरु अभिलाष साहेब जी हमारे बीच नहीं रहे, एकबारगी मेरा हृदय कांप गया। यह क्या हो गया, जैसे पैरों तले जमीन खिसक गयी। मुझे लगा कबीरपंथ का सूर्य अस्त हो गया। निश्चित ही वह हमारे लिए बेहद दुखद घड़ी थी, क्योंकि साहेब जी हमेशा-हमेशा के लिए हमसे विदा हो गये थे। लेकिन पूज्य गुरुवर के लिए निश्चित ही यह सुखद घड़ी थी। क्योंकि वे मोक्ष को प्राप्त हो गये थे, निर्वाण को प्राप्त हो गये थे, परमानंद को प्राप्त हो गये थे। अपने स्वरूप में लीन हो गये थे। सारी तैयारी आदमी इसी दिन के लिए करता है। सद्गुरु कबीर की साखी है—

"कब मरिहौं कब पाइहौं, पूरण परमानंद।"

सचमुच अभिलाष साहेब जी एक युगपुरुष थे। हजारों-हजारों वर्षों में कोई युगपुरुष पैदा होता है। सद्गुरु कबीर साहेब के बाद इतना धीर-गंभीर, बुद्धि का सागर, सरलता और विनम्रता का अद्भुत संगम, सौम्यता और मृदुता, सबको अपने में समाहित कर लेने की अद्भुत शक्ति, समन्वय का अद्भुत गुण, उनका कोई शत्रु व मित्र नहीं, सबको एक नजर से देखने की अद्भुत क्षमता, अपने विरोधी को भी गले लगाते थे। उन्हीं की लिखी पंक्ति है—

"उनका अपना नहीं कोई इसलिए सभी अपने थे।"

कुदरत ने उनके व्यक्तित्व में ऐसी चमक भर दी थी, जिसका कोई दूसरा उदाहरण नहीं। उनका लंबा 6 फुट का कद, गौर वर्ण, आकर्षक व्यक्तित्व, रंग-रूप

और लावण्य से सराबोर, तेजस्वी वक्ता, बहुत ही नपे-तुले अंदाज में बोलना, वाणी में विनम्रता, विद्वता और ज्ञान के धनी, त्याग और वैराग्य की मूर्ति। उनके संपर्क में जो भी आता खिंचा चला आता। कुदरत उन पर मेहरबान थी। ऐसा महापुरुष कबीरपंथ में सद्गुरु कबीर को छोड़कर न इससे पहले कभी हुआ और न निकट भविष्य में होने की संभावना है।

कबीरपंथ में सद्गुरु कबीर साहेब जी के बाद संतों की एक लम्बी शृंखला है। सद्गुरु अभिलाष साहेब जी इस शृंखला की एक मजबूत कड़ी थे। उन्होंने अपनी उच्च रहनी से सबको आकर्षित किया था।

वक्ता, प्रवक्ता एवं विद्वान होना सरल है। कोई धाराप्रवाह बोल सकता है, कोई अच्छा लेखक हो सकता है, अच्छा विचारक हो सकता है। ये सब बाह्य आकर्षण हैं। लेकिन उच्च रहनी बनाना, यह बहुत कठिन है। सारा जीवन नींबू की तरह निचोड़ कर रख देना। जीते जी अपने को मार देना, अपने मन-इन्द्रियों को मार देना आसान काम नहीं है।

साहेब जी में दोनों गुण मौजूद थे। वे एक अच्छे वक्ता और प्रवक्ता थे, विद्वता के धनी थे, वे एक अच्छे लेखक और विचारक थे और साथ ही उनमें उच्च रहनी, कथनी और करनी की एकरूपता का अद्भुत संगम था। वे ध्यान और समाधि के अभ्यस्त महापुरुष थे। वे ध्यान और समाधि की अनंत गहराई में डूबे हुए थे। वे स्थितप्रज्ञ महापुरुष थे। इसीलिए उनकी वाणी से अमृत झरता था। वे अंदर और बाहर एक थे। उनके जीवन में बनावट नहीं थी, दिखावा नहीं था। वे समता में जीते थे। सबके साथ समता का व्यवहार करते थे। किसी को छोटा-बड़ा नहीं मानते थे। उनको अहंकार छू तक नहीं गया था।

इसका सबसे बड़ा उदाहरण कि उन्होंने 130 पुस्तकों की रचना की और किसी पुस्तक में अपना चित्र नहीं छापने दिया। जबकि देखा जाता है कोई एक छोटी-सी पुस्तक लिखता है और उसके मुखपृष्ठ पर ही अपनी फोटो छपवा देता है और पुस्तक के अंदर भी ढेरों चित्र छपवा देता है।

साहेब जी की एक और विशेषता थी कि वे कभी किसी को अपना शिष्य नहीं कहते थे। जबकि उनके लाखों गृहस्थ भक्त थे और सैकड़ों साधु और साध्वियां हैं। यहां तक कि आश्रम में रहने वाले साधुओं और ब्रह्मचारियों को कभी अपना शिष्य नहीं कहते थे। हमेशा साथी कहा करते थे। कितनी उदारता, कितनी सरलता थी उनमें। ऐसा व्यक्तित्व खोजना मुश्किल। विनम्रता कूट-कूट कर भरी थी। पूर्णतः अन्तर्मुखी पुरुष थे, पूर्णतः जीवन्मुक्त महापुरुष थे, गजब का व्यक्तित्व था उनका, अद्भुत महापुरुष।

आश्रम में रहने वाले साधु एवं ब्रह्मचारियों को हर छोटी-बड़ी बात का मार्गदर्शन देते थे। यहां तक कि कैसे बैठा जाये, कैसे चला जाये, कैसे आसन लगाना और कैसे उसे लपेटकर व्यवस्थित रखना, साफ-सुथरा रखना, सारे परिसर को स्वच्छ रखना सबको सिखाते थे। उनकी एक और विशेषता कि अगर कोई कार्य अधूरा पड़ा है या नहीं हुआ है तो बिना किसी को कुछ कहे स्वयं ही कर दिया करते थे।

उनके जीवन की कुछ घटनाएं मैंने सुनी हैं कि एक बार साहेब जी संतों के साथ ट्रेन में सफर कर रहे थे। सुबह जब संत लोग शौचालय गये तो देखा गंदा है तो वापस लौट आये, किसी की जाने की हिम्मत नहीं हुई। लेकिन जब साहेब जी को मालूम पड़ा तो साहेब जी चुपचाप पेपर लेकर गये और पूरी लैट्रिन को कागज से साफ कर और फिर पानी डालकर चमका दिये। फिर आकर संतों से कहा, जाओ शौचालय। संत देखकर हक्का-बक्का रह गये, कि साहेब जी ने यह क्या कर दिया। इतनी सरलता, विनम्रता कहां मिलेगी। कर्मठता भी कूट-कूट कर भरी थी।

एक और घटना। एक बार एक गांव में सड़क के दोनों किनारों में मल ही मल पड़ा था, आने-जाने में काफी असुविधा होती थी, सब तरफ गंदगी थी, अच्छा

नहीं लगता था। साहेब जी ने कुछ संतों को साथ लेकर स्वयं पूरी सड़क साफ की और पूरे में झाड़ू लगवायी। और गांव वालों को समझाया कि सड़क किनारे शौच न जायें, लेकिन गांव वाले कहां मानने वाले थे, दूसरे दिन फिर वैसे ही गंदगी कर दिये, क्योंकि उनकी वैसी आदत ही पड़ गयी थी। अपने को सुधारना नहीं चाहते थे। साहेब जी बहुत ही उदार, बहुत ही सरल और कर्मठ व्यक्तित्व के मालिक थे।

उनकी कर्मठता की मिसाल तो इसी से लगती है कि इस थोड़े से जीवनकाल में उन्होंने 130 पुस्तकों की रचना कर डालीं। ताज्जुब की बात यह है कि सारी पुस्तकें सफर के दौरान लिखीं। कोई व्यक्ति पूरे जीवन काल में 2-4 पुस्तकें ही लिख देता है, तो बड़ा विद्वान माना जाता है। बड़ा नाम हो जाता है। साहेब जी इस सबके बाद भी अहंकार रहित थे।

मेरे जीवन का एक संस्मरण जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। शायद ही किसी के जीवन में ऐसा क्षण आया हो, जैसा सौभाग्य मुझे मिला।

बात सन् 1984 जून माह की है। जब मैं अपने मित्रों श्री सुखराम जी एवं श्री चिंतामणि जी के साथ साहेब जी के दर्शनार्थ प्रथम बार जबलपुर से इलाहाबाद आया था। आश्रम में आने पर पूज्य संत श्री धर्मेन्द्र साहेब जी एवं संत श्री गुरुबोध साहेब जी से मुलाकात हुई। श्री धर्मेन्द्र साहेब जी ने हम लोगों का परिचय पूछा और आने का आशय।

हम लोगों ने अपना परिचय दिया और बताया कि हम बुरहानपुर आश्रम से जुड़े हैं। साहेब जी का बड़ा नाम सुना है इसलिए साहेब जी के दर्शनार्थ हम लोग यहां आये हैं। धर्मेन्द्र साहेब जी ने कहा कि साहेब जी तो अभी आश्रम में नहीं हैं। भ्रमण पर हैं। लेकिन अगर दर्शन करना हो तो जियनपुर आश्रम में कल शाम तक साहेब जी पहुंचेंगे, वहां दर्शन मिल जायेगा।

हम तीनों मित्र आश्रम में भोजन इत्यादि कर, सायंकाल ट्रेन पकड़कर जियनपुर अयोध्या आश्रम के लिए रवाना हो गये। दूसरे दिन सुबह आश्रम पहुंच गये। वहां भी संतों ने खूब स्वागत किया। स्नान और भोजन के बाद विश्राम किया। शाम को साहेब जी के आगमन की प्रतीक्षा थी। सायंकाल लगभग 6 बजे साहेब जी अन्य संतों के साथ जियनपुर आश्रम पहुंचे। जहां प्रथम बार साहेब जी के दर्शन किये। साहेब जी को देखकर हृदय गद्गद हो गया। एक अलग-सी प्रसन्नता और खुशी थी।

साहेब जी थोड़ी देर बैठने के बाद सभी लोगों की कुशलता पूछे और फिर शौच एवं स्नान आदि के लिए चले गये। उन दिनों आश्रम में एक कुआं था, जिससे पानी खींचकर स्नान करना पड़ता था। मैंने भी साहेब जी के सेवार्थ कुएं से पानी खींचकर साहेब जी को दिया। साहेब जी ने इसी दौरान मुझसे पूछा—कहां से आना हुआ। मैंने कहा कि मैं बुरहानपुर आश्रम से जुड़ा हूं। आपका काफी नाम सुना था इसलिए आपके दर्शनार्थ यहां आया हूं। साहेब जी ने कहा—कोई ग्रंथ पढ़े हो, तो मैंने कहा श्री पूरण साहेब की बीजक टीका पढ़ी है और जड़-चेतन भेद प्रकाश। इतना सुनना था कि साहेब जी ने मुझे गले से लगा लिया। थोड़ी देर तक अपने सीने से लगाये रहे। मैं तो सकपका गया, मेरे पैरों तले जमीन खिसक गई हो ऐसे लगा। थोड़ी देर के लिए मैं सन्न रह गया। फिर साहेब जी ने आशीर्वाद देते हुए कहा, खूब पढ़ो, खूब खुश रहो, खूब आगे बढ़ो।

मैंने सोचा जिस महापुरुष के चरणों की धूल के लिए लोग तरसते हैं और कहां मेरा परम सौभाग्य कि पूज्य गुरुवर ने मुझे गले से लगा लिया। मैंने अपने साथियों को यह बात बताई तो वे सब हैरान रह गये कि यह कैसे हो गया। परम सौभाग्य है तुम्हारा जो ऐसा अवसर मिला। तब से आज तक साहेब जी से जुड़ा हूं। लगभग 28 वर्ष हो गये पीछे मुड़कर नहीं देखा। उत्तरोत्तर आगे बढ़ता गया।

साहेब जी के मार्गदर्शन में जीवन के गूढ़ रहस्यों को समझा। साहेब जी ने जीवन के हर पहलू पर गहन

गंभीर विचार, अनेक ग्रंथों के माध्यम से समाज को दिया। लेकिन सन् 1994-95 से ध्यान शिविर की शुरुआत कर समाज को एक नई दिशा दी। एक नये युग का सूत्रपात कर दिया।

पारख सिद्धान्त में सद्गुरु कबीर साहेब जी ने जड़ और चेतन के रहस्य पर से पर्दा उठाया, साथ ही खानी जाल और वाणी जाल को परखाया कि ये मनुष्य जाति के लिए भारी बंधन हैं। मानव को इन सारे भेदों को परखकर सबसे अलग होकर अपने स्वरूप में स्थित होना चाहिए। यही मोक्ष मार्ग है।

मनुष्य स्वाध्याय के द्वारा जड़-चेतन के भेद को बौद्धिक स्तर पर समझ सकता है, पर अपने स्वरूप में कैसे स्थित हुआ जाये, और अपने स्वरूप को कैसे अनुभव किया जाये, यह कठिन समस्या बनी हुई थी। साधु-ब्रह्मचारी तो आश्रम में ध्यान-समाधि किया करते थे। परंतु गृहस्थ भक्त इन सबसे अंजान और बेखबर थे, कि यह ध्यान-समाधि होती क्या है और उसे कैसे किया जाये। यह एक अबूझ पहेली बनी हुई थी। जिसे साहेब जी ने आम भक्तों के लिए ध्यान शिविर का आयोजन कर, इस कार्य को सरल कर दिया।

साहेब जी के मार्गदर्शन में तीन जगह इलाहाबाद, नवापारा (राजिम) और सूरत में ध्यान शिविर के आयोजन होते थे। इन आयोजनों से न केवल साधु-ब्रह्मचारियों को बल्कि गृहस्थ भक्तों को भी बहुत लाभ हुआ। मैंने स्वयं गुरुवर के मार्गदर्शन में ध्यान-समाधि के रहस्य को समझा और उसमें अच्छी सफलता पाई।

अंतिम विदाई—26-9-2012 को साहेब जी के देहावसान की खबर सुनकर मैं अपने परिवार सहित एवं जबलपुर के लगभग 20 भक्तों के साथ तुरंत प्रातः 9 बजे की ट्रेन पकड़कर सायंकाल 5 बजे इलाहाबाद आ गया। यहां आकर अश्रुपूर्ण नेत्रों से अपने महान शास्ता के अंतिम दर्शन किये। आंसू रुकने का नाम नहीं ले रहे थे, लेकिन सभी लोग आंसुओं को हृदय में रोककर साहेब जी के अंतिम दर्शन कर रहे थे। जाना तो सभी को एक दिन है, लेकिन इतनी जल्दी यह घड़ी आ जायेगी, किसी ने सोचा भी नहीं था।

तीन दिन तक साहेब जी के शरीर को भक्तों के दर्शनार्थ रखा गया। पूरे देश से साहेब जी के दर्शनार्थ एवं उनकी अंतिम यात्रा में शामिल होने के लिए हजारों भक्त इलाहाबाद पहुंचे। दिनांक 28-9-2012 को सभी भक्तों ने अपने सद्गुरु, अपने शास्ता के अंतिम दर्शन किये, फिर उनकी अंतिम पूजा, वंदना और आरती की गयी। फिर लगभग 12 बजे शव-यात्रा निकाली गयी। सभी भक्तों, साधु, संतों, साध्वियों की आंखों में आंसू थे, सभी अश्रुपूरित नेत्रों से अपने विदा होते शास्ता को निहार रहे थे। सभी अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे थे। आश्रम के परिसर में ही साहेब जी की अंतिम यात्रा निकाली गयी। सड़क के दोनों किनारों पर, साहेब जी के दर्शनार्थ लोग खड़े थे, सभी लोग अपने महान शास्ता को एकटक निहार रहे थे—फिर यह सूर्य कभी दिखाई नहीं देगा।

समाधि स्थल को भी बहुत ही अच्छे ढंग से सजाया गया था। पूरे गड्ढे को सफेद कपड़ों से अच्छे से ढांका गया था और फूल मालाओं से बहुत सुसज्जित किया गया था, फिर साहेब जी को उसमें उतारा गया और समाधि के रूप में ही उन्हें बैठाया गया। फिर सभी भक्तों ने अश्रुपूरित नेत्रों से साहेब जी को एक-एक मुट्ठी मिट्टी और फूल डालकर अंतिम विदाई दी।

साहेब जी तो अब हमारे बीच नहीं रहे, लेकिन वे हमेशा हमारे दिलों में धड़कते रहेंगे। वे हमारी यादों, हमारी स्मृतियों में हमेशा बने रहेंगे। उनकी कमी तो हमेशा हमें खलेगी, उसकी पूर्ति कभी नहीं हो सकती।

अपने महान शास्ता, परम श्रद्धेय पूज्य सद्गुरु देव के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए वंदन, अभिनंदन और कोटिशः नमन।

शिखा सिलाई केन्द्र
तिलवाड़ा रोड, वृद्धाश्रम के पास
जबलपुर, म. प्र.

सदाबहार ताजगी !

यतीन्द्र दास

समंदर को एक ही बार चखने की जरूरत है, कहीं से भी चखें खारा ही लगेगा। असीम आसमान में कहीं से भी प्रवेश करें, असीम अनंतता ही हाथ आयेगी। मिट्टी कहीं की भी हो, बिना भेदभाव किये हर किसी को अपने आंचल में समाकर अनंत विश्राम प्रदान करती है।

सरलता और सौम्यता के पर्याय बन चुके पूज्यवर गुरुदेव अभिलाष साहेब प्रेमरस और ज्ञानप्रकाश से लबालब भरे ऐसे मसीहा थे कि जो भी उनके द्वार पर आता एक झलक में ही उनका हो जाता और उसके लिए अनंत शांति व अक्षय आनंद का भंडार खुल जाता।

कबीर-वाणी और शाश्वत-जीवन के महान प्रवक्ता, कबीरपंथ और भारतीय संत परंपरा की मशाल, साधकों के अमर संजीवन, महान त्यागी-वैरागी, भारतीय धर्म-साहित्य के पुरोधा, ममतामयी छांव और एक नजर में अपना बना लेने वाले मनमोहनी सूरत के धनी गुरुदेव जी बचपन से ही कुछ कर गुजरने की अद्‌भुत क्षमता वाले थे। प्रतिभा उनमें कूट-कूट कर भरी थी।

उनका जन्म ही यह संदेश देने के लिए हुआ था कि एक साधारण इंसान भी मानव-मूल्य की महानतम ऊंचाई, अनंत शांतिरूपी स्वरूपस्थिति या भगवत्ता को पा सकता है।

उनका जीवन इस बात का मजबूत गवाह है कि आपके अंदर जज्बा और जुनून हो तो आप अपनी तकदीर खुद ही लिख सकते हैं। 9 साल की कच्ची उम्र में घर-परिवार को संभालना, 18 साल की अवस्था में गुरु के सान्निध्य में आना, मात्र 4-6 माह की स्कूली शिक्षा लेने के बावजूद 21 वर्ष की अल्पायु में महान संजीवनी बूटी 'वैराग्य संजीवनी' की छंदबद्ध रचना, शुरुआती दौर में भारत के गांवों में पैदल घूम-घूमकर ज्ञान का अलख जगाना, अभाव की हालत में केवल उबले गेहूं पर गुजारा कर प्रीतमनगर, इलाहाबाद में भव्य कबीर मंदिर का निर्माण, सैकड़ों विरक्त शिष्य और हजारों सद्‌गृहस्थ शिष्यों को दीक्षा-शिक्षा और दिव्य-जीवन संदेश देकर शांति और खुशियों से जीना सिखाना तथा भाषा और साहित्य पर जबरदस्त पकड़ इत्यादि उनके अद्‌भुत जीवन के कुछ नमूने हैं।

मेरी जन्मभूमि में मेरा परिवार कबीरपंथ में पहले से ही दीक्षित है। जन्मभूमि से 1 कि.मी. दूर करहीभदर कबीर आश्रम में वे अपने गुरुदेव जी के साथ अक्सर आते रहते थे। मेरा बचपन यह सब देखते-देखते बड़ा हुआ। फिर तो आप उस आश्रम में जब तक आपका शरीर रहा, अपनी संत-मंडली सहित हर साल अमृत-वर्षा करने आते रहे।

कुछ धुंधली-सी यादों के मुताबिक सन् 1982 में श्रद्धेय श्री गुरुभूषण साहेब जी (तब सुरेन्द्र नाम से महाविद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थी) एवं परिवार के साथ पहली बार गुरुदेव जी के दर्शन करने इलाहाबाद आया था। फिर 1994 में नवापारा कबीर आश्रम में उनके आगमन के दौरान मैंने उनसे आजीवन साधनामय जीवन जीने की प्रार्थना की। तब उनके कहने पर एक साल की प्रतीक्षा के बाद सन् 1995 में सदा के लिए उनके चरण-शरण हो गया।

जब आप मुझे पहली बार अपने हृदय से लगाये थे तो जो ऊष्मा और आनंद की अनुभूति हुई वह मेरी जिंदगी भर खुशहाल रहने के लिए जीवन-बीमा हो गया। उनका अगाध वात्सल्य एवं मार्मिक जीवन-संदेश का ही परिणाम है कि मुझे जीवन का रहस्य समझ में आने लगा और आनंद मिलने लगा।

ओस के कण जैसे एकदम ताजा-तरीन और सदाबहार ऊर्जा से आबाद रहने वाले गुरूदेव को मैं पिछले 18 साल से लगातार सुनता आ रहा हूं। आप इलाहाबाद आश्रम में हर सुबह कबीर-वाणी और विभिन्न आध्यात्मिक विषयों पर अमृत-प्रवचन देते रहे। घूम-फिरकर बातें वही की वही होने के बावजूद उनकी शैली और संदेश में जरा भी बासीपन नजर नहीं आया, बल्कि हर बार ऐसे लगा कि गुरुदेव को आज पहली बार श्रवण कर रहे हैं। आपने न सिर्फ कबीरपंथ में बल्कि समूची संत-परंपरा और मत-मजहब में नयी वैचारिक और वैज्ञानिक क्रांति कर एक नये युग का सूत्रपात किया। कबीर के ज्ञान और जीवन जीने की कला को गांव की गलियों, शहर के चौराहों में जा-जाकर दिया और लोगों को नये और सही ढंग से सोचने पर मजबूर किया। अपने 125 से भी ज्यादा आध्यात्मिक ग्रन्थों और जीवन-प्रेरक संबंधी प्रवचनों के जरिए आप जाने-अनजाने में, अमीर-गरीब में और देश-विदेश के लाखों घरों में दीया बनकर अज्ञान-अंधकार को दूर किये और करते रहेंगे।

आप अपनी कथनी, करनी और रहनी से सदियों तक जनमानस के हृदय में विराजते रहेंगे।

कबीर आश्रम, खड़गपुर
मिदनापुर, पश्चिम बंगाल

संतत्व में परिनिष्ठित कर्मठता के स्वरूप थे

शुभ दास

जो थोड़े में संतोष रखने वाले थे, जो सहाना नहीं वरन सहन करना जानते थे, जो गालियों के बदले प्रत्युत्तर देना नहीं अपितु समता रखते व मुस्कुराते थे, जो मालिक होते हुए भी मालिकपना की चाह न रखने वाले और कबीर की वाणी को व्यवहार में ढालने वाले थे, जो शालीनता की प्रतिमूर्ति थे और जिनके किशोरावस्था में परिश्रम की निरन्तरता यह थी कि गायत्री मंत्र, 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' 'ॐ नमो शिवाय' एवं राम नाम जपते हुए जीभ में घट्ठे पड़ते थे, अन्ततः सात्विक संस्कार व धार्मिक आचरण के प्रभाव से जिनको पूर्ण पारख ज्ञान मिला, ऐसे सद्गुरु अभिलाष साहेब जी की श्रद्धांजलि के अवसर पर कुछेक पुष्प सादर समर्पित हैं।

इस धरा धाम पर जो भी आता है, उसे जाना ही पड़ता है, लौटना ही पड़ता है। खिली हुई कलियों को फूलना तो है ही, साथ ही मुरझाना भी है। इतना ही क्या डालियों से अलग भी होना है। प्रकृति के इस शाश्वत एवं अपरिवर्तनीय कठोर सत्य को किसी तौर से हमें हजम करना चाहिए। इसी लिहाज में गीता कहती है— 'जन्मे हुए की मृत्यु निश्चित है और मरे हुए का जन्म निश्चित है' यथा—*जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च*û *2/26*û

इस ढंग से देखा जाये तो पूज्य श्री का शरीर छूटना कतई नयी बात नहीं जान पड़ती। परन्तु इतना होने के बावजूद जिस रोज छः बजे के लगभग मुझे यह ज्ञात हुआ कि अब उनका शरीर नहीं रहा। जैसे कि जीवन के परमाधार पूज्य सन्त बतलाते हैं शरीर क्षणभंगुर है, क्षण ही में नाश एवं भंग होने वाला है। इतना चिन्तन होने पर भी मैं कुम्हला-सा गया, सकुच गया और एकाएक सिमिट गया। जैसे सूने जंगल में शेर को देख लेने पर रोंगटे खड़े हो जाते हैं यही दशा उस रोज मेरी भी हुई। मरना नयी बात है, इसलिए नहीं वरन् ऐसे संतत्व में परिनिष्ठित कर्मठता के स्वरूप नरकेशरी के हम लोगों के बीच से गुजरने का दुख। जहां तक मैं समझता हूं यही दशा कमोबेश सबकी हुई होगी और होनी चाहिए।

इसमें कोई गुंजाइश नहीं कि वे नर-रत्न थे। हकीकत में उन्होंने जो अपने लिए किया सो तो स्तुत्य ही है जिसको शायद ही लोग जान पाये हों। मगर समाज के लिए उन्होंने जो किया बहुत किया, काफी हद तक किया और मैं कहना चाहूंगा कि उनकी तरह बिरले कर पायेंगे क्योंकि वे वे ही थे—"न भूतो न भविष्यति।"

वि. सं. 2063 में प्रथम बार उनका मुझे दर्शन हुआ साथ ही मुलाकात भी हुई। पहली बार तो मैंने थोड़ा संकोच किया या कहना चाहिए शरमाया व डर गया। फिर भी वे इतना प्यार और थपकियां देते थे कि मालूम नहीं होता कि वाकई में ये इतने बड़े संत, गुरु एवं लेखक होंगे पर सत्य तो यही है कि वे वैसे थे जैसा कि बताया गया। यथा—

बड़े बड़ाई ना करे, बड़े न बोले बोल।
हीरा मुख से ना कहे, लाख हमारा मोल॰

उन्होंने इसकी टीका व संग्रह ही नहीं किया अपितु चरितार्थ भी किया। पारखी संतों के इतिहास के दौर में अनेक नाम लिये गये हैं, लिये जा रहे हैं और लिये जायेंगे परन्तु जिस तरह नक्षत्र मण्डल में ध्रुव तारा का एक अलग ही अस्तित्व व पहचान है उसी तरह पारख सिद्धान्त के इतिहास में साहित्यिक माध्यम से पूज्य श्री सदैव जाने जायेंगे। इतिहास में अनेक लोग मर गये, उनमें से कुछेक को छोड़कर बाकी सब लापता हैं। वे लोग इसलिए लापता हो गये क्योंकि उन लोगों ने अपना न अता पाया न पता पाया। जीवन को प्रकाशित करने का काम जो करना चाहिए था वह नहीं किया इसलिए सचमुच में वे लोग मर गये। परन्तु पूज्य श्री ने मरने से पहले काल को पचा डाला। इसी का यह परिणाम है काल उनको नहीं मार सका। अतः वे अमर हो गये। *'गुरु की कृपा अमर पद पावै। अमर आय अमर ही रहि जावै॰* (विशाल देव, विनयविधान) क्योंकि उन्हें खुद का पता भी था और अता भी। असल में ऐसे पुरुष का जन्मना ही जन्मना और मरना ही मरना है। जो समर्थशाली पुरुष होते हैं, वे अपनी जीवनी खुद दिखा जाते हैं। उनकी जीवनी लिखी जायेगी ऐसी अपेक्षा कुछ अनसुहानी मालूम होती है। क्योंकि उनका चरित्र ही जीवनी, उनका कर्म ही किताब और आचरण ही उपदेश है। ऐसे ही पुरुषों में से थे वे। अतः उनको शतशः नमन। संसार में आने वालों और जाने वालों का तांता लगा रहेगा परन्तु उन जैसे कर्मठ, शालीन, विनम्र, प्रतिभावान और आप्तकाम पुरुष मिलना सच ही में मुश्किल है। अतः ऐसे नर-रत्न की श्रद्धांजलि पर मैं नेपाल काठमाण्डो (झमसीखेल) की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

अन्ततः उनकी श्रद्धांजलि यही है, उन्होंने जैसा जीवन जीया था, जिस प्रकार कहा था, जिन वास्तविकताओं को अपनाया था और जिस सत्य-पथ पर चले थे हम लोग भी उसी पथ (श्रेय पथ) पर एकरस लगे रहें। कहीं अटकें, भटकें और पटकें नहीं, वरन् इसी में जीवन निछावर कर सकें तो यह असली श्रद्धांजलि उनके लिए तो होगी ही, परन्तु अपने लिए भी यह संजीवनी साबित होगी, इसमें कोई शक नहीं। अस्तु।

कबीर सत्संग आश्रम, झमसीखेल, ललितपुर,
काठमांडो, नेपाल

चुम्बकीय शक्ति के धनी

श्रीमती विजयलक्ष्मी मेहरोत्रा

पवित्र महान आत्मा ब्रह्मलीन अभिलाष साहेब के प्रति लिखने के लिए भाव तो अधिक हैं परंतु शब्द नहीं।

प्रीतमनगर में निवास करने के पूर्व मैं लूकरगंज में किराये के मकान में रहती थी। यहां प्रीतमनगर में निवास योग्य मकान बन जाने पर मेरी पूज्या सास जी, पति गोविन्द नारायण मेहरोत्रा और पुत्र अतुल रहा करते थे। मेरे साथ लूकरगंज में पुत्र अरुण रहता था, क्योंकि लूकरगंज से वाहन के साधन सुलभ रहते थे। मैं मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में सेवारत थी। अतः यहां से आने-जाने में कठिनाई होती थी। एक दिन पति द्वारा ज्ञात हुआ कि घर के सामने कबीर मंदिर का निर्माण कार्य आरम्भ हुआ है। मुझे यह जानकर हृदय में अति प्रसन्नता हुई क्योंकि मैंने मायके में सत्संग का ज्ञान ही प्राप्त किया था। मंदिर और मूर्ति-पूजा के विषय में मेरी जानकारी नहीं थी। मैं स्वयं महर्षि मेंही महाराज से दीक्षित थी विवाह से पूर्व ही। पूज्य अभिलाष साहेब के दर्शन के लिए जब मुझे जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ और मैंने उन्हें मेंही बाबा के विषय में बताया तो वे बहुत प्रसन्न हुए। मैं जब भी लूकरगंज से प्रीतमनगर आती तब अपनी सास जी के साथ साहेब जी के पास दर्शन एवं सत्संग में जाती रहती थी। पूज्य साहेब जी हमारी सास जी का बहुत सम्मान करते थे। जब सास जी उनके चरण स्पर्श करती थीं वे कहते, 'आप माता हो। मेरे चरण स्पर्श न किया करें।' तो सास जी भी उन्हें उत्तर देती, मुझे आपने माता का स्थान दिया सो ठीक है किन्तु मेरी दृष्टि में आप एक ब्रह्मज्ञानी महापुरुष हैं। अतः मैं चरण स्पर्श अवश्य करूंगी। मेरी सास जी को कहते कि वह पूर्ण संत है तो पति को गुणातीत नाम से सम्बोधित करते थे। उन्होंने प्रीतमनगर के प्रत्येक निवासी के हृदय में अपना स्थान बनाया।

पहले प्रीतमनगर का विकास नहीं था। सड़कें भी नहीं बनी थीं। कबीर मंदिर का निर्माण होने पर जो प्लाट रिक्त पड़े रहते थे साहेब जी वहां पर सत्संग किया करते थे। अपने प्रभाव से सभी प्रीतमनगर निवासियों का सहयोग प्राप्त किया करते थे। उनके भक्तों का निवास पहले प्रीतमनगर वासियों के घरों में ही होता था। मंच बनाने के लिए अनेक घरों से तख्त की व्यवस्था होती थी। जब प्लाट पर मकानों का निर्माण हो गया तो सड़क रोक कर सड़क पर ही टेण्ट लगाकर मंच बनाकर तीन दिन का सत्संग कार्यक्रम करते रहे। अपने अथक प्रयास से कबीर आश्रम का निर्माण कितने विशाल रूप में करवाया सबके सामने है।

साहेब जी की लिखित पुस्तकें पढ़ने में बहुत आनन्द आता है। सर्वप्रथम मैंने उनकी छोटी-छोटी पुस्तकें पढ़ीं जैसे मैं कौन हूं?, ध्यान क्या है? गीतासार, उपनिषद् सौरभ। उनकी पुस्तकें सरल भाषा में ज्ञान-भक्ति-वैराग्य की शिक्षा प्रदान करती हैं। अपने जीवन के अन्तिम दिनों में उन्होंने मुझे आश्रम से श्री सतेन्द्र साहेब के हाथों प्रसाद स्वरूप 'महाभारत मीमांसा' भिजवाई

थी। उस समय मैंने अपने को बहुत धन्य माना था और पुस्तक पढ़ना आरम्भ की थी कि शीघ्र ही उनके दर्शन में जाने पर पुस्तक पर चर्चा करूंगी। वे कहा करते थे समय बड़ा बलवान और परिवर्तनशील है। उसके लिए मनुष्य को पहले से तैयार रहना चाहिए। उनकी वाणी एवं व्यवहार प्रेरणादायी था। वे नारी प्रगति के समर्थक थे। सन्तमत के ध्यान शिविर में मेरे विचार में वर्तमान समय में आप ही के द्वारा नारियों को ध्यान करने का अवसर दिया जाता था। आज कबीर मंदिर प्रीतमनगर से लेकर कबीरनगर में कबीर आश्रम आपके अथक प्रयासों की देन है समाज को, राष्ट्र को।

परम पूज्य सद्गुरु अभिलाष साहेब जी यद्यपि अपने पंच भौतिक कलेवर को त्यागकर विदेहमुक्त हो गये हैं किन्तु अपनी मृदुवाणी एवं स्नेहिल व्यवहार के कारण वे अपने भक्त-साधकों तथा शिष्यों के लिए ऊर्जास्रोत होने के कारण सदैव ही जीवित रहेंगे। संत शिरोमणि कबीर के उपासक होने के कारण उन्होंने अपना जीवन सद्गुरु कबीर की भांति ही जिया। 26 सितम्बर, 2012 को जब उनका पंचभौतिक शरीर शान्त हुआ वे शान्त मुद्रा में ध्यानावस्था में ब्रह्मलीन हो गये। उन्होंने अपना जीवन हंसते-मुस्कुराते हुए आत्मलीनता में व्यतीत किया। जब उनके भक्तों को उनके शरीर शांत होने का दुखद सन्देश मिला सब अवाक् रह गये और उनके नेत्र अश्रुपूरित हो गये। जिस समय उन्हें समाधि दी जा रही थी कबीर आश्रम में भक्तों का समुदाय उमड़ा हुआ था तथा आश्रम में सिसकियां सुनायी दे रही थीं। उन्होंने जीवन के अंत तक अपने कर्तव्यों को पूर्ण किया। अपने भक्तों को दर्शन-उपदेश देते रहे।

उनके पास अपने भक्तों के लिए एक चुम्बकीय शक्ति थी। वे एक ऐसे युगपुरुष थे जिनके इस संसार से जाने पर संत समाज की परम्परा में अपूरणीय क्षति हुई है। वे एक ऐसे संत हुए हैं जिन्होंने ब्राह्मण परिवार में जन्म लेकर ब्राह्मणों द्वारा बताये गये कर्मकाण्डों की आलोचना की है। वे प्रत्येक जाति-सम्प्रदाय के सम्माननीय और प्रिय संत थे। हिन्दू-मुसलमान, सिक्ख-ईसाई सबके प्रति उनकी सम दृष्टि थी। उन्होंने मानव धर्म को महत्त्व दिया था। वे अपने भक्तों और शिष्यों को अपने शरीर का ही अंग मानते थे। उनकी सुख-सुविधा का स्वयं निरीक्षण करते थे। अंतिम बार उनके दर्शन के लिए जब गयी, वे संत पलटू साहेब की वाणियों पर टीका लिख रहे थे। अत्यन्त शान्त और हंसमुख मुद्रा में बताया था कि पलटू साहेब पर टीका लिख रहा हूं। वे अपने व्यवहार, वाणी, कृतित्व और त्यागी पुरुषार्थ से अपने भक्तों, साधकों और शिष्यों के लिए सूर्य-चन्द्रमा की भांति सदैव अमर रहेंगे।

पूज्यपाद सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने लिए हम अंकिचन के पास शब्द नहीं है। वे इस नश्वर संसार में सद्गुरु कबीर के रूप में अवतरित होकर ब्रह्मबेला में ब्रह्मलीन हो गये। उन्होंने अपने आत्मिक पुरुषार्थ से अपने सान्निध्य में रहने वाले अपने शिष्यों को भी अपने जैसा ज्ञानवान और पुरुषार्थी बनाया। उस महान पुण्य आत्मा ने प्रीतमनगर से लेकर कबीरनगर तक इस स्थान को एक शक्ति स्थल बनाया। ऐसी महान पुण्य आत्माएं युगों-युगों में ही अवतरित होती हैं। उनको जन्म देने वाले माता-पिता धन्य हैं। परमपूज्य के शिष्यगण तथा भक्तगण उनके द्वारा प्रज्वलित की गयी कबीर ज्योति को अमर ज्योति बनाकर सद्गुरु के पदचिह्नों पर चलकर सत्य और पारख विवेक की ज्योति को प्रज्वलित किये रहें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

चायल कम्प्यूटर एकेडमी, प्रीतमनगर, इलाहाबाद

परमपूज्य श्री सद्गुरुदेव जी की स्मृति

ब्रह्मचारिणी लता

मैंने गुरुदेव जी का दर्शन सर्वप्रथम मंदरौद आश्रम में किया जहां हर वर्ष शिवरात्रि के समय मेला (कबीर मेला) लगा करता था। उस मेले में गुरुदेव जी का कार्यक्रम हर वर्ष दो-तीन दिन का हुआ करता था। जब मैं प्रथम बार दर्शन की उस समय मैं लगभग 10 वर्ष की रही। गुरुदेव जी के विषय में सुनी तो बहुत थी किन्तु दर्शन का मौका उसी समय मिला। फिर सौभाग्य से संयोग ऐसा बना कि 2002 में गुरुदेव जी का पदार्पण हमारे घर हुआ। गुरुदेव जी सुबह-सुबह अपनी संत मण्डली के साथ हमारे घर पधारे थे, उस दिन मुझे महसूस हुआ कि आज हमारे घर भगवान पधारे हैं। गुरुदेव जी को आसन पर बिठाये और पूजा-आरती किये फिर सब बारी-बारी से बन्दगी करते गये। जब हम बंदगी कर रहे थे तब गुरुदेव जी हमको पास बुलाये और बंदगी ऐसे नहीं ऐसे करते हैं बेटी कहकर हमें बंदगी करना सिखाये और कहे अपने लक्ष्य को सदा याद रखना, तुम्हारा लक्ष्य सिर्फ पढ़ाई हो और कोई बात पर ध्यान नहीं देना। उस दिन से गुरुदेव जी का हाथ सदा मेरे सिर पर रहा। गुरुदेव जी इतने महान पुरुष और इतनी सहजता और सरलता, वाणी भी उतनी मधुर, इतना ज्ञान-वैराग्य से निपुण महापुरुष सब लोगों को सहज ही अपना बना लेना कितना आश्चर्य लगता था।

गुरुदेव जी जब अपना हाथ मेरे सिर पर रखे तो उस दिन मुझे महसूस हुआ कि भगवान कैसे होता है और भगवानत्व क्या होता है। उस दिन से मैं बराबर गुरुदेव जी का दर्शन करती रही, गुरुदेव जी के वचनों को सुनती रही।

2011 में मैं छत्तीसगढ़ के प्रमुख आश्रम नवापारा राजिम के मेले में दीक्षा लेने के लिए गुरु जी के पास गयी मगर नहीं हो पाया। उसके बाद 7.8.2011 को नवापारा के ध्यान शिविर में मैंने गुरुदेव जी से दीक्षा ली। जब हम दीक्षा लिये तब हम लोग चार जने (तारा, सुमति, हेमलता और लता) थीं। उस दिन गुरुदेव जी हम लोगों को कहे कि बस, अब पढ़ाई पूरी कर ली और शादी के चक्कर में मत पड़ना, मस्त ब्रह्मचर्य जीवन जीना। विरक्त होकर जिओ और माता-पिता की सेवा करो। खूब प्रसन्न रहो, कभी उदास मत रहना। गुरुदेव जी की उस दिन की बातें हमने गांठ बांध कर रख ली। और उसी दिन संकल्प लिये कि हम वैसा ही जीवन जीयेंगे जैसा गुरुदेव जी ने कहा।

16 मार्च 2012 एक बार फिर सौभाग्य मिला गुरुदेव जी को घर लाने का। उस समय गुरुदेव जी को जब पता चला कि जिन चारों लड़कियों को उन्होंने दीक्षा दी थी वे चारों लड़कियां विरक्त जीवन जीने के लिए कमर कस ली हैं। उस दिन गुरु जी ने हमें कहा कि जहां भी रहो अपने साथ वहां का नाम रोशन करना। गुरुदेव जी की ये बातें मुझे हमेशा याद रहेंगी और उस पर चलने का प्रयास करूंगी।

गुरुदेव जी के सान्निध्य में जितने दिन बीते गुरुदेव जी का बहुत प्यार मिला। साधना मार्ग में आज तक कोई महापुरुष ऐसा नहीं हुए जो लड़कियों को सान्निध्य दिये हों, जो नारियों को साधना जीवन जीने के लिए उत्साह भरे हों। गुरुदेव जी ने साधिकाओं को अपना सान्निध्य दिया और स्वतंत्र, निष्पक्ष जीवन जीना सिखाया और उनके कल्याण का मार्ग बताया। आज अगर गुरुदेव

जी का सान्निध्य नहीं मिला होता तो हम लोग पता नहीं कहां होतीं। गुरुदेव जी का प्यार सदा हमारे लिए रहा और सदा हमें खुश रहने का मार्ग दिखाया। हमेशा हमें कल्याण का मार्ग दिखाया। हम लोगों को संसार रूपी भवसागर से पार होने का रास्ता दिखाया।

गुरुदेव जी सभी से समान भाव से प्रेम करते थे। सब के लिए उनके दिल में स्नेह का सागर रहता था। गुरुदेव जी सब समय एक ही समान रहे। गुरुदेव जी हमें ज्ञान-वैराग्य की शिक्षा देते रहे। जिस प्रकार से मां-बाप अपने बच्चों को प्यार देते हैं वही प्यार हमें गुरुदेव जी से मिला। आज हमारे बीच गुरुदेव जी का पार्थिव शरीर नहीं रहा किन्तु गुरुदेव जी द्वारा दी गयी शिक्षा हमेशा हमारे साथ रहेगी। गुरुदेव जी द्वारा दी गयी शिक्षा तो हमें उनके द्वारा रचित ग्रंथों के माध्यम से मिल जायेगी किन्तु उनसे जो प्यार मिलता था वह अब कहां मिलेगा। हम लोग तो आपके प्यार के लिए तरसते रहेंगे। जिस प्रकार एक बच्चा अपनी मां के चले जाने से मां की ममता, मां के प्यार के लिए तरस जाता है ठीक उसी प्रकार हम लोगों की स्थिति हो गयी है।

गुरुदेव जी का चले जाना पारख संस्थान के लिए एक असहनीय क्षति है जिसकी पूर्ति कभी भी नहीं हो सकती। गुरुदेव जी जैसा महापुरुष आज पूरे विश्व में कहीं देखने को नहीं मिलता। गुरुदेव जी इतने ग्रन्थों की रचना किये और वह भी कई जगहों में भ्रमण करते-करते जो हमारे लिए गुरुदेव जी की स्मृति है। उनका दिया हुआ इतना बड़ा समाज है जो गुरुदेव जी द्वारा समाज को दिया गया आशीर्वाद है।

ऐसे महान पुरुष, युगपुरुष के चरणों में मैं श्रद्धा-सुमन समर्पित करती हूं।

कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम, मूरा, धमतरी, छ.ग.

गुरुदेव को श्रद्धांजलि

साध्वी समष्टि

मानव में महा मानव, ज्ञानी में महा ज्ञानी, वैरागी में महा वैरागी, ध्यानी में महा ध्यानी, करुणा के सागर, कथनी-करनी-रहनी की त्रिवेणी संगम को मेरी सादर बंदगी, सादर श्रद्धांजलि समर्पित।

सचमुच गुरुदेव, आपने हमारे जीवन को धन्य किया। आप हमें जीवन का उद्देश्य बताये। जीने की सच्ची राह दिखाये। मुक्ति का मार्ग बताये। आपके बारे में कुछ कहूं वह तो सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। पर आपके अद्‌भुत ज्ञान से ही समाज को नई दिशा मिली है। सद्‌गुरु कबीर के वास्तविक स्वरूप को आप समाज के सामने स्थापित किये ही आप अपना पूरा जीवन मानव समाज के कल्याण के लिए समर्पित कर दिये। यह समाज आपका सदा ऋणी रहेगा। आपके आशीर्वाद से ही हमें (ब्रह्मचारिणी समाज को) एक पहचान मिली है। मैं अपने आप को धन्य समझती हूं कि मुझे आप जैसे सद्‌गुरु की शरण मिली। गुरु जी, आप तो हम सबको रुलाकर खुद हंसते हुए इस संसार से सदा के लिए चले गये। पर आपके ज्ञान की ज्योति सदा-सदा ध्रुव तारा के समान चमकती रहेगी।

एक अनोखा जो पुष्प खिला था,
जो न कभी मुरझाया।
महक उठे जन-जन का मानस,
भू पर स्वर्ग उतर आयाû
सत्य, अहिंसा, तपस, त्याग की,
सुरभि आज भी महक रही।
सद्‌गुरु देव के चरण स्पर्श से,
धन्य-धन्य हो गयी महीû

गुरुदेव जी, मैं आपके बताये हुए मार्ग पर चलकर आपके आदर्शों से सीख लेकर इस जीवन को पवित्र रखूं और आपके चरणों में सदा प्रेम रखते हुए इस जीवन का कल्याण करूं यही मेरी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम
पोटियाडीह, धमतरी, छ. ग.

प्रेम के धनी

ब्रह्मचारिणी आशा

9 जनवरी, 2010 को मैं धरमपुरी आश्रम में आई थी तब मैं गुरु जी से मिली थी। तब गुरु जी ने मुझसे कहा था कि बेटी साधना करना चाहती हो? मैंने कहा—हां। तब गुरु जी ने कहा—मरना चाहती हो। फिर मुझसे मेरा नाम पूछा। मैंने अपना नाम बताया, आशा। तो कहा—बेटी, आशा का निराशा मत करना। मुझे लगा कि गुरुदेव मुझे कुछ कहना चाहते हैं। गुरु जी यही कहना चाहते थे जिस कल्याण के रास्ते पर मैं निकली हूं, उस रास्ते को छोड़ना मत। यह जीवन बहुत मुश्किल से मिला है।

मैं पहले गुरु जी की पुस्तकें पढ़ा करती थीं। मुझे लगता कि मैं ऐसे संत-महात्मा से कब, कहां मिलूंगी। तब मुझे धरमपुरी आश्रम में दर्शन हुए। आज गुरुदेव न होते हुए भी हमारे साथ हैं। उनका ज्ञान और उनकी पुस्तकें हमारे साथ हैं। गुरु जी के एक-एक शब्द हम अपनी आत्मा में उतारेंगे तभी हम जीवन में कल्याण कर पायेंगे। गुरुदेव ने रास्ता तो बता दिया है, चलना हमें ही है। हम चलेंगे नहीं तो रास्ता कैसे पार करेंगे। अगर गुरुदेव का ज्ञान हमारे साथ है तो हम रास्ते से कभी भी डगमगायेंगे नहीं। गुरुदेव जो करते थे वे ही दूसरों को करने को कहते थे। गुरु जी का कहना था कि अपने आचरण और कर्म को देखते हुए आगे बढ़ो तब तुम अपनी मंजिल प्राप्त करोगे, लेकिन अपने मन को निर्मल बनाकर। गुरुदेव ने एक बात और कही है—सबसे प्रेम करो लेकिन मोह नहीं। संसार में आया है तो प्रेम तो करना ही पड़ेगा। लेकिन उससे चिपक मत जाना। सबको प्रेम बांटो। प्रेम ही परमात्मा है।

प्रेम ढूंढत मैं फिरूं, प्रेमी मिला न कोय।
प्रेमी सो प्रेमी मिले, विष से अमृत होय।

गुरुदेव जी कहते थे कि प्रेम में इतनी ताकत है कि बुरा इंसान भी अच्छा हो जायेगा। प्रेम में हिंसा या बैर नहीं होता। प्रेम सिर्फ प्रेम होता है। वह प्रेम किस काम का जिसमें स्वार्थ हो। प्रेम तो निःस्वार्थ होता है। गुरु जी कितने महान थे! वे हम सब से कितना प्रेम करते थे। गुरुदेव जी को देखकर हम सबको ऐसा लगता था जैसे हमें कबीर साहेब मिल गये हैं। हमारे भगवान तो गुरुदेव जी थे जिन्होंने संसार-सागर से छुड़ाकर हमें कल्याण का रास्ता दिखाया। बस हमें उनके ज्ञान की डोरी पकड़कर चलना है। वह ज्ञान की डोरी हमसे छूट न जाये। वह डोरी है—सत्संग, ध्यान और चिंतन। यदि सत्संग, ध्यान, साधना की डोरी हमसे छूटेगी नहीं, पकड़कर चलते रहेंगे तो हम भी गुरु जी की तरह हंसते-हंसते संसार-सागर से पार हो जायेंगे। तभी गुरु जी का कहना सार्थक होगा।

गुरु जी कहते थे कि जहां रहो सबसे मेल-मिलाप करके प्रेम से रहो। तुम्हारा मन हर समय खिला हुआ एवं प्रसन्न रहे। दूसरी बात गुरुदेव ने कही—दूसरों की जो बातें तुम्हें अच्छी न लगे उनको सहन करो, किन्तु दूसरों को सहाने की चेष्टा न करो और अपने मन को पवित्र बनाओ, फिर अपने आस-पास के सभी लोग देवस्वरूप दिखेंगे। गुरुदेव ने कहा कि तुम्हारे पास क्या है इसका महत्त्व नहीं है, किन्तु तुम क्या हो इसका महत्त्व है। बाहर की चीजें तुम्हें शान्ति नहीं दे सकती। शान्ति तो मिलेगी सदाचार, सद्व्यवहार, मन की निर्मलता, आत्मसंयम एवं आत्मबोध से। सबसे प्रेमपूर्वक व्यवहार

करो किन्तु सबसे अनासक्त रहो। प्रेम में स्वर्ग है और अनासक्ति में मोक्ष।

कबीर साहेब ने कहा है—

साधु ऐसा चाहिये, दुखै दुखावै नाहिं।
पान फूल छेड़े नहीं, बसे बगीचा माहिंû
कमल पत्र हैं संत जन, रहे जगत के माहिं।
बालक केरी धाय जो, आपन जानत नाहिंû

गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी ने ज्ञान का बगीचा तो लगा दिया है हम उसमें से कितने फूल तोड़ सकते हैं, हमारे ऊपर निर्भर करता है। जितने फूल हम तोड़ेंगे उतने फूलों की माला बना पायेंगे और अपने हृदय में उतार पायेंगे। गुरुदेव जी ने जो बातें हम सबसे कही हैं वे बातें हम अपने आचरण में लायेंगे तब हमारा जीवन सार्थक होगा और यही सच्ची श्रद्धांजलि है।

रतलाम, म. प्र

जीवन के कल्पतरु

साध्वी शिखा

परम पूज्य गुरुदेव जी के प्रथम दर्शन सन् 2002 के वार्षिक अधिवेशन के दौरान इलाहाबाद में हुए। उनके दर्शन पाकर ऐसा लगा जैसे मेरी सभी समस्याओं का समाधान मिल गया। फिर उसी दिन से एक नये जीवन का जन्म हुआ। इससे पहले का जीवन जीना निरर्थक लगता था, सब होते हुए भी जीवन खोखला था। पर गुरुदेव के आशीर्वाद एवं स्नेह मिलने के पश्चात यह बोध हुआ कि पाने और बटोरने में नहीं, त्याग में ही सुख-शान्ति मिलती है। मेरा जीवन धन्य हुआ। उनकी अहेतुकी कृपा और प्रेम का मैं वर्णन नहीं कर सकती। वे हर मर्ज की दवा थे। चाहे गृहस्थ भक्तों की समस्या हो या संत समाज की, सबका समाधान बड़ी सहजता से मुस्कुराते हुए करते थे।

उनके अंग-संग रहने वाले साधु-समाज जितना उनसे स्नेह, प्रेम पाते थे उतना ही उनका वात्सल्य और स्नेह हम साध्वी-समाज हजारों मील दूर रहकर पाते थे। वे मेरे अन्तर्तम के परम आराध्य देव थे। उनका निष्छल, नि:स्वार्थ, निष्काम, निर्मोहतापूर्ण प्रेम की जब भी याद आती है, तो मैं अद्‌भुत आनंद से भर जाती हूं।

गुरुदेव जी नियम के पक्के और अनुशासनप्रिय थे। अपनी रहनी और बोध में रहकर वे बिना किसी भेदभाव के अपने संत समाज एवं साध्वी-समाज को अपना अमृत-रस प्रेम बांटते थे। उनके शिक्षा-उपदेश आज भी मेरे कानों में गूंजते रहते हैं। उनके मुखारविन्द से निकला यह वाक्य—"बेटी! अगर हम नियम-सयंम से नहीं रहेंगे, किसी भी चीज में अति करेंगे तो प्रकृति हमें थप्पड़ मारकर सिखायेगी।" कितना जीवंत और हृदय को मथ देनेवाला है।

उनकी प्रवचन शैली इतनी गजब की और चुभने वाली थी कि हजारों की संख्या में बैठे श्रोताओं में से हर किसी को लगता था कि गुरुदेव जी सिर्फ मेरे लिए ही बोल रहे हैं क्योंकि वे जो भी बोलते थे हर व्यक्ति के अंत:करण को छूती हुई बातें होती थीं। मानव जीवन में किन कारणों से दुख आता है और उसका निवारण कैसे हो, इसका बड़ा आसान और सरल रास्ता बताते थे। गुरुदेव जी मेरे जीवन में वरदान स्वरूप मिले हुए कल्पतरु थे, जिनकी शीतल छाया में मैंने वरदान मांगा नहीं, अपितु जो मिला है उसमें ही सुखी और संतुष्ट जीवन जीना सीख लिया। हर परिस्थिति में गुरुदेव का बहुत बड़ा सहारा था। गुरुदेव जी क्या थे, सारा-का-सारा वर्णन नहीं किया जा सकता। पर वे जो भी थे, अद्‌भुत थे। मैं उनके चरणों में श्रद्धा-सुमन समर्पित करती हूं।

श्री कबीर मंदिर

बागबाहरा, महासमुंद, छ. ग.

जैसा करते वैसा कहते

ब्रह्मचारी अनिल

परम पूज्य गुरुदेव जी जैसा जीते-करते थे वैसा कहते थे, न कि कहते थे तब करते थे। गुरुदेव जी कहा करते थे, सभी से एक समान व्यवहार करना चाहिए, सबको एक दृष्टि से देखना चाहिए, यहां कोई छोटा-बड़ा नहीं है। गुरुदेव जी का प्यार, स्नेह, करुणा चाहे जो कहें, वह बातों से कहा नहीं जा सकता। कलम और कागज के पन्नों में लिखकर व्यक्त किया नहीं जा सकता। गुरुदेव जी को सिर्फ हृदय से समझा जा सकता है। एक संस्मरण है। कबीर पारख संस्थान इलाहाबाद में वार्षिक कार्यक्रम की तैयारी चल रही थी। कार्यक्रम का आमंत्रण देने के लिए बाहर जाना था, मैंने स्कूटर चालू किया। गलती से स्कूटर का क्लच छूट गया और स्कूटर झटके से जंप किया और मैं नीचे गाड़ी में दब गया। मुझे एक कक्ष में लाया गया। गुरुदेव जी भी आये फिर डाक्टर के पास ले गये। पैर का अंगूठा टूट जाने की वजह से डाक्टर ने प्लास्टर चढ़ा दिया, कार्यक्रम के बाद गुरु जी का भ्रमण कार्यक्रम शुरू हो गया। गुरुदेव जी दो-चार दिन बाद जब बाहर से आते तो जरूर जहां मेरा आसन था वहां आते और सर्वप्रथम यही कहते, मेरा लाल मेरे पास आने में असमर्थ है इसलिए अपने लाल के पास मैं स्वयं आ जाया करता हूं। इस प्रकार गुरु जी सबकी याद रखते थे। किसी का स्वास्थ्य गड़बड़ हो और गुरुदेव जी को पता चले तो गुरुदेव जी उसको देखने के लिए अवश्य जाते और बीच-बीच में उसके बारे में पूछताछ करते थे।

गुरुदेव जी अपना एक मिनट भी व्यर्थ जाने नहीं देते थे। गुरुदेव जी व्यस्त होते हुए भी इतनी पुस्तकें लिखे और साथ-साथ सौभाग्य की बात यह है कि गुरुदेव जी साधकों को खुलकर समय देते थे और स्नेह से सबको गद्‌गद कर देते थे। गुरुदेव जी लिखते-पढ़ते, मनन-चिन्तन करते या किसी भी स्थिति में हों, वहां पर कोई साधक मिलने के लिए आता तो आप सब काम छोड़कर उसकी तबीयत के बारे में पूछते और प्यार से सीने से लगा लेते। इसके बाद जरूर पूछते कि अपने लाल की क्या सेवा करूं। परम पूज्य गुरुदेव जी का हृदय इतना विशाल था कि जो भी उनके पास जाता उन्हीं का हो जाता। हम सब को यही महसूस होता था कि गुरुदेव जी हमसे ही ज्यादा प्यार करते हैं, लेकिन हकीकत यह नहीं थी। हकीकत तो यह थी कि गुरुदेव जी सबसे बराबर प्रेम करते थे। हम सब आपस में अपने-अपने हृदय की बात कहते, साथियों में चर्चा चलती कि गुरुदेव जी मुझे सीने से लगाते हैं। मेरी बहुत याद रखते हैं। ये बातें सब के सब कहते इससे पता चलता है कि गुरुदेव जी एक से नहीं अपितु सबसे बराबर प्यार करते थे।

गुरुदेव जी अपने पास रहनेवाले साधकों को ही प्यार देते थे, ऐसी बात नहीं बल्कि जितने भी उनकी दृष्टि में आते सभी को एक निगाह से देखते थे। जब गुरुदेव जी का भ्रमण कार्यक्रम चलता था, उस दौरान एक गांव से दूसरे गांव जाना होता था। तो कभी-कभी रास्ते में किसी भक्त के यहां पूजा के लिए जाना होता और जलपान भी करना पड़ता तो हम सब जलपान के लिए बैठ जाते थे। लेकिन गुरुदेव जी जलपान करने से पहले यह कहते, जाओ ड्राइवर को बुला लाओ और

बुलाने के बाद उनको संतों के साथ बैठाकर उनको भी जलपान देने को कहते। इतना ही नहीं अंत में ड्राइवर को गुरुदेव जी अपने हाथों से स्वयं कुछ रुपये भी देते। बड़े ही अद्‌भुत पुरुष थे। करने और कहने में कोई अन्तर नहीं था, उनका जीवन ही साधकों के लिए खुली किताब था। उनका एक-एक क्रियाकलाप देखने और करने योग्य था। जो भी साधक उनके सान्निध्य में रहे हैं, अपने आपको बड़ा ही धन्य महसूस करते हैं।

गुरुदेव जी कहा करते थे, *"ऊठत बैठत कबहूँ न छूटे ऐसी तारी लागी"* उनके कहने और करने में तनिक भी अंतर नहीं था। आप कहते थे यह हाड़-चाम का शरीर है, टट्टी-पेशाब से भरा हुआ है, गीला चाम लपेटा हुआ है, इसके सड़ने-गलने से हमें रंचमात्र भी विचलित नहीं होना चाहिए, क्योंकि हम शरीर नहीं हैं, हम शरीर से अलग चेतन हैं। लेकिन जब तक शरीर में हैं, तब तक शरीर की देखभाल करना पड़ता है। और हकीकत में गुरुदेव जी भोजन दवाई के रूप में लेते थे। गुरुदेव जी शरीर में रहते हुए शरीर से बिलकुल अलग थे। प्रत्यक्ष घटना है। सन् 2010 इलाहाबाद वार्षिक कार्यक्रम के बाद कोछाबाजार कार्यक्रम में जाना हुआ। आश्रम की गाड़ी थी, गुरुदेव जी के साथ सात महात्मा और थे। जाते-जाते रास्ते पर कुत्ता आया। बचाने का प्रयास किया गया। गाड़ी संभली नहीं पलट गयी। हम लोग एक दूसरे से दब गये। संयोग था कि किसी को गहरी चोट नहीं लगी। फिर गांव वाले आये और गाड़ी के ऊपर चढ़कर हम लोगों को एक-एक कर बाहर निकाले, और दूसरी गाड़ी बुलाकर हम लोगों को जहां जाना था वहां पहुंचाये। फिर कुछ देर बाद डाक्टर आये और मलहम-पट्टी करके चले गये। इस घटना में सबसे ज्यादा चोट लगी थी तो गुरुदेव जी को, लेकिन गुरुदेव जी एकदम चुप शांत बैठे हुए थे। गुरुदेव जी के हाथ और कान से खून बह रहा था। शारीरिक पीड़ा हो रही थी, लेकिन गुरुदेव जी उस पीड़ा को बहुत ही सहज रूप से स्वीकार कर, शांत-गंभीर मुद्रा में बैठे थे, क्योंकि गुरुदेव जी अच्छी तरह से जानते थे कि चोट शरीर में लगी है, अंतःकरण में नहीं। यहां पर गुरुदेव जी की कथनी और करनी स्पष्ट झलकती है। आप कहते थे हाड़-चाम का शरीर है। इसके रहने और न रहने पर मेरा कोई नुकसान नहीं है और होता यही था कि शरीर पर आने वाली हर अनुकूलता और प्रतिकूलता से गुरुदेव जी तनिक भी रीझते और खीझते नहीं थे। शरीर में होने वाली पीड़ा को अपने अन्दर प्रवेश करने नहीं देते थे। उसी प्रकार संसार की सांसारिकता गुरुदेव जी की छाया को भी नहीं छू सकती थी।

दुख इस बात का है कि गुरुदेव जी अचानक इस दुनिया को छोड़कर चले गये, समय से पूर्व ही। संसार का नियम है, जाना तो सबको पड़ता है, लेकिन हम सब की कुछ और आशाएं थीं कि गुरुदेव जी के सान्निध्य में रहने का और अवसर मिलेगा। गुरुदेव जी के लिए इस दुनिया में रहना और नहीं रहना एक ही समान था। क्योंकि वे शरीर में रहते हुए भी शरीर के मोह से ऊपर उठ गये थे।

खुशी इस बात की है कि मनुष्य तन पाकर जो काम हम सब को करना चाहिए, वह काम गुरुदेव जी बहुत पहले ही कर लिये थे, और जनकल्याण के लिए उन्होंने अथक परिश्रम कर लगभग 125 ग्रन्थ लिखे। और सौभाग्य की बात यह है कि हम सबको सद्‌गुरुदेव के सान्निध्य में रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ। सद्‌गुरु कबीर ने कहा है—*जाको सद्‌गुरु न मिला, व्याकुल दहुँ दिश धाय। आँखि न सूझै बावरा, घर जरै घूर बुतायऊ* जिनको सद्‌गुरु नहीं मिलता है बेचारे दर-दर भटकते हैं। और बड़े ही सौभाग्य की बात है कि गुरुदेव जी न रहने पर भी गुरुदेव जी हमारे साथ हैं। वह कैसे? वे हैं गुरुदेव जी से मिला हुआ खजाना, उनका स्नेह, उनका प्यार, उनके सान्निध्य में रह रहे संत समाज। उन्होंने क्या नहीं दिया। गुरुदेव जी से मिले हुए खजाना का हम जितना ही सदुपयोग करेंगे वह उतना ही बढ़ता जायेगा, कभी कम होने वाला नहीं है। और साथ-साथ

गुरुदेव जी ने एक व्यवस्थित संत समाज तैयार किया है। अब गुरुदेव जी नहीं हैं, लेकिन कोई गुरुदेव जी का दर्शन करना चाहे, गुरुदेव जी का सद्गुण देखना चाहे तो इसी समाज और संतों को देखकर गुरुदेव जी का प्रत्यक्ष रूप में दर्शन कर सकते हैं।

गुरुदेव जी अपने शिष्यों को एक अच्छे साधक के रूप में देखना चाहते थे और साधकों को बड़ी से लेकर छोटी-छोटी बातों को बताते रहते। गुरुदेव जी अपने शिष्यों को शिष्य कभी नहीं कहते अपितु साथी ही कहते थे। एक माता-पिता अपने बच्चों का जितना ध्यान रखते हैं, उससे कहीं ज्यादा गुरुदेव जी हम सब का ध्यान रखते थे। गुरुदेव जी हम लोगों की कोई भी समस्या हो मानसिक, शारीरिक, आर्थिक सभी का समाधान करते थे।

गुरुदेव जी से हम सबको प्यार मिला, खजानों का अम्बार मिला, संतों का समाज मिला। अब हम सब का कर्तव्य है, गुरुदेव जी द्वारा मिला हुआ खजाना सुरक्षित रखें और गुरुदेव जी द्वारा दिया हुआ संत समाज-भक्त समाज आज जैसा व्यवस्थित रूप में है उसको उसी रूप में देखने के लिए, हम सब के सब सहभागी बनें और हम ऐसा कर्म करें जो उचित हो जिसके करने से अपने संत समाज की और गुरुदेव जी की बदनामी न हो, ताकि गुरुदेव जी द्वारा प्रज्वलित ज्ञान-मशाल बुझने न पाये, सदा जलती रहे। और इस दीपक की किरण से इस धराधाम पर जो भी आये प्रज्वलित होता रहे, इस संसार के आडम्बर से अपने आपको बचा ले और कल्याण का सहभागी बने। परम पूज्य गुरुदेव जी का सच्चा शिष्य वही हो सकता है जो गुरुदेव जी द्वारा बताये मार्ग पर चलकर जीवन में शांति प्राप्त करे, यही गुरुदेव जी की सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

'तेरी यादों में सुमन-श्रद्धा समर्पित'

ब्रह्मचारी चेतन

सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी के इस शरीर-संसार को छोड़कर चले जाने से किसके मन में दुख नहीं हुआ होगा। जो भी देखे, सुने सबकी आंखों में आंसू बहते हुए देखा गया। जैसे सूर्य अपने समय से उगता है और संसार को प्रकाशित करता है और समय से अस्त हो जाता है, ऐसे ही सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी इस धराधाम में आये और घूमते-विचरते हुए इस संसार को अपने ज्ञान-प्रकाश से प्रकाशित करते रहे, और अंत में 26.9.2012 को शरीर-कलेवर को छोड़कर अपने स्वरूप में लीन हो गये।

गुरुदेव जी एक क्रान्तिकारी पुरुष थे। वे समाज में एक क्रान्ति लाये और समाज को नयी दिशा दिये। सद्गुरु कबीर साहेब ने जाति-पांति, छुआछूत का खंडन तो किया लेकिन कबीरपंथ के कई मठों में जाति-पांति छुआछूत माना जाता था। परन्तु गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी ने उसे पूरी तरह से तोड़ दिया। उन्होंने जैसे कहा वैसे जीवन जीया। उनकी कथनी और करनी में समानता थी।

गुरुदेव जी ध्यान के प्रति जागृति लाने के लिए कई जगह ध्यान शिविर लगवाते थे, जिससे सभी वर्ग के

लोग ध्यान से लाभ लेते रहे। कबीरपंथ में ध्यान को उतना महत्त्व नहीं दिया जाता था, परन्तु गुरुदेव ने ध्यान के महत्त्व को बताया कि ध्यान क्यों करना चाहिए, ध्यान से क्या लाभ है? ध्यान के सम्बन्ध में गुरुदेव ने हमें नई दिशा दी।

एक महत्त्वपूर्ण चीज और है। गुरुदेव जी ने हमारे समाज को विपुल साहित्य रूपी सम्पत्ति दिया जो कभी विलुप्त नहीं हो सकती। समाज उनका सदैव ऋणी रहेगा। सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी का नाम संत-परंपरा में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा।

गुरुदेव जी की छोटी-छोटी पुस्तकें मुझे मिलीं। जैसे कबीरपंथी जीवनचर्या, वैराग्य संजीवनी, विवेक प्रकाश सटीक आदि जिसे पढ़कर मेरे मन में वैराग्य का भाव दृढ़ हुआ और मई सन् 1978 में कबीर मंदिर इलाहाबाद आया और करीब दो महीने तक रहा, फिर गुरुदेव जी मुझे वापस घर लौटा दिये। आश्रम में निवास कर रहे संतों ने मुझसे कहा कि साहेब जी एक बार घर लौटाते हैं और यदि दुबारा फिर आओगे तो नहीं लौटायेंगे।

मैं घर लौट आया, लेकिन फिर से इलाहाबाद जा नहीं पाया। आश्रम में रहकर जो मुझे शांति मिली, गुरुदेव जी की करुणा और संतों का प्रेम मिला, उसकी याद आती और मन में इधर का लगाव बना रहा। फिर गुरुदेव जी का कार्यक्रम चपरीद में 1987 में था। तब मैं चपरीद गया और गुरुदेव जी के दर्शन किया। जहां निवास था वहां मिला और गुरुदेव जी को बताया कि साहेब जी, मेरी पत्नी का शरीर छूट गया है छोटे-छोटे बच्चे हैं, क्या करूं। तब गुरुदेव जी ने कहा कि देखो, जो हो गया, सो हो गया। अब सावधान! दूसरी लाने की इच्छा मत करना, नहीं तो नरक भोगना पड़ेगा। यह मंत्र याद रखना। तब से मैं गुरुदेव जी के इस वचन को याद रखा। उस वक्त मेरी उम्र 32 वर्ष थी।

उसके बाद फरवरी 2004 को श्री गुरुजतन साहेब जी के आश्रम संकरी में आ गया। फिर घर वापस नहीं गया। 2005 में जब गुरुदेव जी छत्तीसगढ़ आये तो श्री गुरुजतन साहेब ने मुझे गुरुदेव जी की रामत में घूम आने के लिए कहा। जब दर्रा पहुंचा तो गुरुदेव जी से मिलकर कहा कि साहेब जी मैं भी आपकी शरण में रहना चाहता हूं। गुरुदेव कह दिये ठीक है चलो। फिर गुरुदेव जी के साथ मैं इलाहाबाद आ गया। इस तरह मैं भटकते-भटकते, वासनाओं के थपेड़े खाता हुआ गुरुदेव की शरण में आया और सुखपूर्वक उनकी छत्रछाया में साधना कर रहा हूं।

जब यह घटना घटी तो मन को बहुत जोर से आघात लगा। अब सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी के स्थान पर श्री धर्मेन्द्र साहेब जी विराजमान हैं। अब हम यही आशा करते हैं कि जिस तरह गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी के दिशा-निर्देश में साधना कर रहे थे, इसी प्रकार आप भी हम सबको निर्देश दें, ताकि साधना-स्वाध्याय सुचारु रूप से चले।

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

सबके शरीर में जहर है। साधक अपने शरीर के जहर को मारे और दूसरे के शरीर से यदि जहर उछलकर अपने ऊपर आये तो उसे निर्विकार भाव से सहन करने का पूर्ण प्रयास करे। बस, यही संसार में जीने का तरीका है। अपने जहर को मारना और दूसरे के जहर को सहना ही साधना है। जिसकी यह साधना अखंडरूप से निरंतर चलती है उसी का बेड़ा पार होता है। ऐसा साधक किसी मनुष्य से उलझता नहीं। जो किसी से नहीं उलझता उसकी शक्ति व्यर्थ न जाकर रचनात्मक दिशा में लगती है और वह तिल-तिल करके अपने को शोधता हुआ इसी जीवन में मुक्त हो जाता है।

(पूज्य गुरुदेव जी : सब सुख तेरे पास)

तेरे एहसान का बदला चुकाया जा नहीं सकता

ब्रह्मचारी धनंजय

मेरे मन मंदिर के देवता परम पूज्य गुरुदेव जी के श्री चरणों में बार-बार हृदय का नमन!

आज आपकी याद में मैं अपने हृदय में छुपे भावों को कोरे पन्नों में उतारने का प्रयास कर रहा हूं। मैं आपके लिए क्या कहूं। आप एक ऐसे महान व्यक्तित्व के धनी थे कि हर क्षण अपनी कथनी, करनी और रहनी के माध्यम से ज्ञान की वर्षा करते रहे हैं। आप कहते थे कि यह संसार स्वप्नवत है, यहां कुछ भी सदा साथ नहीं रहेगा। आप अन्त तक अपने प्रवचनों में सदा यही बात कहते और दर्शाते थे, जिसका जीता-जागता प्रमाण आपकी लेखनी से लिखी 125 ग्रन्थ तथा हजारों जगह दिये गये प्रवचनों की सी.डी., डी.वी.डी. तथा अनेकों तस्वीर इत्यादि हैं।

आप सदा ही हम साधकों को लाल, बेटा, साथी या मित्र कहकर ही संबोधित करते थे। आपके चेहरे की मुस्कुराहट और प्रसन्नता देखकर कोई भी मुग्ध हो जाता था। आपके चेहरे की प्रसन्नता देखते ही मेरी सारी थकान दूर हो जाती थी, इसलिए भी मैं आपका सदा दिवाना हूं। मैं आपसे इन 6-7 वर्षों में हजारों बार अकेले में मिला लेकिन कभी ऐसा वक्त नहीं था जब आप मुझे 'आओ मेरे लाल' कहकर अपने सीने से न लगाये हों। आप बड़े ही सहज और सरल ढंग से व्यंग्य भी किया करते थे। जब आप व्यंग्य करते हुए मुझे पुकारते तो आप मुझे धनेन्द्र कहकर पुकारा करते थे और हंसी में डूबकर मुझे भी हंसा देते थे। आप एक ममतामयी मां की तरह प्यार और स्नेह ही नहीं दिये, साथ-साथ मुझे हाथ मांजना, ब्रश करना और झाड़ू लगाना भी अपने हाथों से ही सिखाया है। जो दृश्य मुझे आज भी दिखाई देता है।

आपका संपूर्ण जीवन पढ़ने योग्य है। जहां आप व्यवहार के माहिर प्रणेता थे वहीं दूसरी ओर सफाई-शुद्धता के सच्चे पक्षधर भी थे। आप सफाई और शुद्धता के इतने प्रेमी थे कि मैं क्या कहूं। जब भी हम सभी में से कोई भी आपकी सेवा में रहता वह देखता कि जितना शुद्ध आपकी भोजन की थाली होती उतना ही शुद्ध आपके शरीर के वस्त्र और उतना ही शुद्ध आपके चरण एवं चरण पादुका। आपको यदि अपने कमरे की लाइट और पंखों के बटनों या दरवाजों की सिटकिनियों को छूने की जरूरत पड़ जाती तो आप उपयोग के बाद अपना हाथ धोना कभी नहीं भूलते थे। जिसका गहरा प्रभाव आश्रमवासियों पर तथा भक्तों पर भी पड़ा। और यही कारण था कि आप अपने पैर भक्तों को छूने नहीं देते थे। आप कहते थे कि ये लोग जमीन पर हाथ धरते हैं फिर हमारे पैर छूना चाहते हैं। और यही बात हम सब को भी बताते थे कि कभी अपने पैर भक्तों से नहीं छुवाना।

आप सदैव ही चाहे वह रात का समय हो या दिन का, सुबह का हो या शाम का हर समय ज्ञान, ध्यान और वैराग्य की ऐसी बूटी पिलाते कि साधक का मन तुरन्त शान्त हो जाता था और वह खुद अपनी गलतियों का अनुभव करने लग जाता था। आप जाते-जाते अंतिम में मौत की बात जरूर याद दिला देते और कहते कि आज-काल में हम सब को काल के गाल में जाना है। काल हम सब को चबैना की भांति चबा रहा है। कुछ

को मुट्ठी में दबाया है तो कुछ को मुख में रखा है और आज कल में हमारी भी बारी आने वाली है। वे अपनी रचना में लिखते भी हैं—

रे मौत प्यारी मौत मेरे सामने आया करे।
तू सामने रहती नहीं तब सत्य तन यह भासता।
सदज्ञान मुक्ति ध्येय नश्वर दृष्टि जग प्रति नाशता।
निज थीर पद को भूल कर मन भोग विषयों में चरे।
रे मौत प्यारी मौत मेरे सामने आया करेû

आप सदैव इस बात की याद दिलाते और कहते कि "आज अंतिम मुलाकात है।" आप चाहे साधक-साधिका हो या नर-नारी सबको यही ज्ञान उपदेश करते हुए अंतिम मुलाकात की बात याद कराते। मेरी आपसे अंतिम मुलाकात 25 सितम्बर को शाम 5.30 बजे हुई। हर बार की भांति आज भी आपने मुझे सीने से लगा लिया और कहा—मेरे लाल की तबीयत कैसी है? फिर लगभग आधा घंटे तक बात होती रही। आपको याद करते हुए दुनिया का कोई भी व्यक्ति यह कहने से नहीं चूकेगा कि आप बेदाग थे और बेदाग चले गये। हर आदमी आज भी आपको यह कहता है कि—

करम ऐसा किया तूने भुलाया जा नहीं सकता।
तेरे एहसान का बदला चुकाया जा नहीं सकताû

आप आज हम लोगों के बीच नहीं हैं तो ऐसा लगता है कि हमारा सब कुछ लुट गया, हमारा सूर्य अस्त हो गया। आपकी याद में हृदय इतना रो रहा है कि मैं व्यक्त नहीं कर सकता। ऐसा लगता है कि जो हमें उंगली पकड़कर चलना सिखा रहे थे वे ही आज हम बच्चों को अनाथ बनाकर चले गये। आपके साथ बिताये वे हर क्षण याद आते हैं जब हम बच्चों की गलतियों को भी बड़ी मधुरता से स्वीकार कर लेते थे और हमें सहज सरल ढंग से समझाते थे। अब तो आपके न रहने पर ऐसा लगता है जैसे सूर्य के न रहने पर सारा संसार अंधकारमय लगने लगता है किन्तु आपके द्वारा दिये गये ज्ञान, विचार और उपदेशों की तरफ जब नजर जाती है तब लगता है कि अब इसी ज्ञान और विचार को लेकर अपना दीपक जलाना है और उस दीपक के सहारे आपके आदर्शमय जीवन को लेकर अपनी मंजिल को तय करना है क्योंकि आपका बीता हुआ जीवन हमारे सामने आदर्श के रूप में प्रस्तुत है। आपके द्वारा लिखे गये सद्ग्रन्थों को पढ़ने से ऐसा लगता है कि आप आज भी हमारे सामने विराजमान हैं। आप जैसे महान संत शिरोमणि का हम सबके बीच से चले जाना इस समाज एवं पूरी दुनिया के लिए अपूरणीय क्षति है जिसे भविष्य कभी पाट नहीं सकेगा। फिर भी आपने जो अपने ग्रन्थों में ज्ञान मशाल खड़ा किया है वह कभी नहीं बुझेगा। आप ऐसे वैराग्य की मूर्ति थे जो अपना काम 23-24 वर्ष की अवस्था में कर चुके थे और जीवन भर इस संसार में कमल के पत्ते के समान निर्लिप्त जीवन जीते रहे और अन्त तक यही संदेश जन-जन को देते रहे कि—

हृदय से जगत को नहीं चाहता हूं,
हमारी जगत से ये अंतिम बिदाईû

मैं अंत में यही संकल्प लेता हूं कि आपने जो मुझे जीवन जीने का ढंग, साधना करने का ढंग और अपनी मंजिल को प्राप्त करने की कला बतायी है, उसे सचौटी पूर्वक जीवन में उतारूंगा और एक सच्चा शिष्य होने का पूरा फर्ज अदा करूंगा। यही आपके प्रति मेरी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। मैं अपने महान गुरु को अपने द्रवित हृदय एवं अश्रुपूर्ण नेत्रों से भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित करता हूं।

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

जब से मैं जाना आप को सीखा जगत को भूलना
स्थिर परख पारख मिली छूटा रहँट का झूलना
जब दौड़ बाहर की मिटी अन्तर खुला भण्डार है
आपा मिटाया आप का फिर मिट गया संसार है
जब आप अपने से मिला क्या और से मिलना रहा
जड़ वासना से छुट गया क्या और से छुटना रहा
जब मित्र अपने को किया क्या खोज करता यार है
आपा मिटाया आप का फिर मिट गया संसार है

(पूज्य गुरुदेव जी : आदेश प्रभा)

श्रद्धेय सद्गुरु-चरणों में समर्पित स्मृति सुमन मंजूषा

आर. जे. मौर्य

पारखी सन्तों के समुल्लास, भक्तजनों के प्रखर विश्वास, गुणी जनों के पारख-प्रकाश और संतप्त जनों के स्नेहिल एवं सुखद-शीतल सुवास जीवन्मुक्त श्री अभिलाष साहेब के श्री चरणों में सुमन श्रद्धांजलि समर्पित है। हे सद्गुरुदेव! धन्यों में मूर्द्धन्य हैं आप! धन्य है आपका पितृ-कुल, धन्य है आपके परिजन-स्वजन! धन्य हैं वे भाग्यवान लोग जिनके मध्य आपका निवास, आवास और प्रवास रहा। जिनके हृदय आपकी मधुरवाणी के सन्देश, उपदेश, निर्देश एवं आदेश से निमज्जित एवं आप्लावित होते रहे। धन्य है वह धरा, आश्रम और पीठासन जहां भाग्यशाली जन समुदाय आपके अमृत वचनों-प्रवचनों से गद्गद होता रहा है। धन्य है आपकी अप्रतिम साधना और स्वाध्याय मनीषा जिसने इस संसार को 120 से अधिक पुस्तकों का प्रणयन कर अमूल्य उपहार प्रदान किया है। आपकी पुस्तक-माला एवं प्रवचन-माला आपके सरस्वती पुत्र होने का साक्षात निर्विवाद प्रमाण है। आपकी अनवरत बहुमुखी अध्ययनशीलता, निरन्तर लेखन-प्रवाहशीलता एवं गम्भीर चिन्तनशीलता तथा प्रवचन-प्रवीणता, बहु-आयामी अनुभवशीलता अन्य पारखी सन्तों में दुर्लभ है। आपकी कथनी, करनी और रहनी में एकरूपता जीवन्त रही है। आपके मन, वचन और कर्म में सरलता, आत्मीयता एवं सदाचारिता सर्वथा विद्यमान रही। आप जैसे सद्गुरु की यथार्थ श्लाघा में यह श्लोक प्रस्तुत है—

मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्।

हे तपोधन! आपकी कठोर तपस्या, सेवा, स्वाध्याय एवं योग-साधना के परिणामस्वरूप आप शून्य से उठकर शिखर पर आरूढ़ हुए, सामान्य से असामान्य कीर्तिमान पर विराजमान हुए। कबीर-वाणी के उन्नायक पुरोधा! आपने वर्तमान युग के समाज में कबीर के मूल्यों एवं दर्शन की अनिवार्य प्रासंगिकता को चतुर्दिक प्रतिष्ठापित किया और शोषित, पीड़ित, भ्रमित, अन्धविश्वासों की आंधी से त्रस्त मानव-समाज को अपनी तिमिर-नाशिनी एवं बुद्धि-विवेक-विकासिनी मेधा से स्वोद्धार-आत्मोद्धार हेतु अग्रसर किया। आपने मूकों को विवेक-वाणी दी और पंगुओं को सेवा-स्वावलम्बन से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। आपने भेद-भीति की दीवारों को ध्वस्त किया और समाज में समता, सहिष्णुता, सहयोग और स्वाधिकार की सद्भावना का जागरण किया। देश-काल-पात्र की परख करते हुए आपने अनेक प्रदेशों में कबीर आश्रम एवं मठों की स्थापना की और वहां कबीर मत के पारखी-दीक्षित-प्रशिक्षित ब्रह्मचारियों, साधुओं सन्तों को, नारी जागरण हेतु साध्वियों को समायोजित किया। कबीर मत में इस दृष्टि से आपका विशिष्ट योगदान है।

मानवता के सम्पोषक आपने समाज के सन्तुलित एवं बहुमुखी विकास के लिए सद्गुण-सम्पन्न मानव को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया है। "न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्।" कबीर वचनामृत में भी यही सत्य प्रतिध्वनित हुआ है—"मानुष तेरा गुण बड़ा, मांसु न आवै काज।" मानुष दुर्लभ जन्म है। 'मानव-जीवन में सुख-दुख का' कर्ता और भोक्ता उसका मन है। मनोवृत्ति ही मनुष्य को भोगी और योगी, अनुरागी और विरागी बनाती है। मलिन मन ही नरक है और निर्मल मन ही स्वर्ग है।

बुद्धि-विवेक से अनुशासित मन दुर्मन से सुमन होकर अमन की स्थिति पाकर स्वरूपस्थ-स्वस्थ होकर आत्माराम में लीन हो जाता है। माया मुक्त हो स्वरूपलीन हो जाता है। हमारे श्रद्धेय साहेब की ऐसी ही परमोलब्धि है। सद्गुरुदेव ने हमें यही बीजक-रहस्य प्रदान किया है।

हे करुणानिधान! आप ज्ञान के सूर्य हैं। आपको यह मन्दबुद्धि कैसे दीपक की लौ दिखलाये। आप अपार महिमा के सागर हैं, टूटी नौका से ऐसे सागर को पार करने का दुस्साहस कौन कर सकता है। आप अक्षरी-साधना के अनुपम उत्तुंग प्रकाश पुंज हैं, आपका यशोगान अक्षर विहीन मूढ़ जन कैसे कर सकता है? भक्त-हृदय-सम्राट! करुणावतार! पूजन-विधि-सामग्री विहीन मैं कैसे आपके द्वार पर आऊं?

अहो! आप तो आप में स्थित हैं। स्वस्थ हैं। आप तो यहां सदा विद्यमान हैं। आपके सत्संग के वे अमृतवचन सर्वदा मुखरित हैं-गुंजायमान हैं। यह शरीर मरणधर्मा है। शीर्यते इति शरीरम्। शरीर क्षरणशील है किन्तु शरीरी-देही तो अक्षर है। मृत्यु विषादकारिणी नहीं, अपितु आह्लादकारिणी सदा शान्तिदायिनी जननी है। आपके अन्तिम प्रवचनों के पावन ज्ञानोद्घोष में अनन्तिम रूप से रमता हुआ जागतिक जीवन के द्वन्द्व में किंकर्तव्यविमूढ़!! मरणधर्मा नामरूप संबलित जन अथ इति।

कबीरनगर, इलाहाबाद

मानवता का सूरज डूब गया — मेरे संस्मरण

बरसाइत दास महन्त

तारीख 25-9-2012 की रात्रि हम सबके जीवन में घोर अन्धकार लेकर उपस्थित हुई, क्योंकि इसी दिन सूर्यास्त के साथ ही संत श्री अभिलाष साहेब रूपी मानवता का सूरज हमेशा के लिए अस्त हो गया। अर्थात इस रात्रि के चौथे प्रहर में पूज्यपाद श्री अभिलाष साहेब ने अंतिम सांस ली।

भगिनी क्रिस्तिन ने कहा है—"कभी-कभी समय की दीर्घ अवधि के बाद एक ऐसा मनुष्य हमारे इस ग्रह में आ पहुंचता है, जो असंदिग्ध रूप से किसी दूसरे मण्डल से आया हुआ एक पर्यटक होता है जो उस दूरवर्ती क्षेत्र की, जहां से वह आया है, महिमा, शक्ति और दीप्ति का कुछ अंश इस दुखपूर्ण संसार में लाता है। वह मनुष्यों के बीच विचरता है, लेकिन वह इस मर्त्यभूमि का नहीं है। वह है एक तीर्थयात्री, एक अजनबी। वह केवल एक रात के लिए ही यहां ठहरता है। वह अपने चारों ओर के मनुष्यों के जीवन से अपने को सम्बद्ध पाता है; उनके हर्ष-विषाद का साथी बनता है, उनके साथ सुखी होता है, उनके साथ दुखी भी होता है, लेकिन इन सबों के बीच वह यह नहीं भूलता कि वह कौन है, कहां से आया है और उसके यहां आने का क्या उद्देश्य है। वह कभी अपने दिव्यत्व को नहीं भूलता। वह सदैव याद रखता है कि वह महान तेजस्वी एवं महामहिमान्वित आत्मा है। वह जानता है कि वह उस वर्णनातीत स्वर्गीय क्षेत्र से आया है, जहां सूर्य अथवा चन्द्र की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह क्षेत्र आलोकों के आलोक से आलोकित है।"

वे आगे और कहती हैं—"इस प्रकार का मनुष्य सभी तुलना से परे है, क्योंकि वह समस्त साधारण मापदण्डों और आदर्शों के अतीत है। अन्य लोग तेजस्वी हो सकते हैं। अन्य लोग शायद महान हो सकते हैं, लेकिन यह महत्त्व उनके अपने वर्ग के दूसरे लोगों की तुलना में ही संभव है। अन्य मनुष्य अपने साथियों की तुलना में साधु, तेजस्वी, प्रतिभावान हो सकते हैं। पर यह सब केवल तुलना की बात है।"

भगिनी क्रिस्तिन की यह बात संतप्रवर श्री अभिलाष साहेब के लिए भी शत-प्रतिशत ठीक बैठती है क्योंकि पूज्यपाद सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब भी तुलना से परे हैं। एक सन्त साधारण मनुष्य से अधिक पवित्र, अधिक पुण्यवान, अधिक एकनिष्ठ होता है। किन्तु सन्त श्री अभिलाष साहेब के सम्बन्ध में कोई तुलना नहीं हो सकती। वे स्वयं ही अपने वर्ग के हैं। वे एक दूसरे स्तर के हैं, न कि इस सांसारिक स्तर के। वे एक असाधारण, अप्रतिम एवं दिव्य आत्मा हैं। वे भी कभी अपने दिव्यत्व को नहीं भूले। अपने स्वरूप को नहीं भूले। और अन्त में वे अपने स्वरूप में स्थित हो ही गये। मैं यह सोचकर गौरव महसूस करता हूं कि मैंने भी इस एक ऐसे मनुष्य को देखा है, उसकी वाणी सुनी है और उसके प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित की है।

धन्य है वह देश जिसने उनको जन्म दिया, धन्य हैं वे लोग जिन्होंने उनके दर्शन किये और धन्य हैं वे सन्तजन धन्य, धन्य, धन्य—जिन्हें उनके पादपद्मों में बैठने का सौभाग्य मिला।

सन्त श्री अभिलाष साहेब एक मानवतावादी सन्त थे। सद्गुरु कबीर साहेब के इस लोक से प्रयाण करने के बाद मानवतावादी सन्तों में उन्हीं का ही स्थान ऊंचा है। उन्होंने जीवनभर मानवता की वकालत की। वे सचमुच मानवता के मार्तण्ड थे। पृथ्वी पर जब-जब मानवता की दुहाई दी जायेगी तब-तब सद्गुरु कबीर साहेब के साथ पूज्य गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब को भी याद किया जायेगा। मानवता की जो मशाल सद्गुरु कबीर साहेब ने जलायी थी उसे संत श्री अभिलाष साहेब ने बुझने नहीं दिया। अब वे वह मशाल हमें थमा कर चले गये अर्थात नयी पीढ़ी को सौंप दिये। नयी पीढ़ी उसे कब तक सुरक्षित रख पाती है, इसे तो वक्त ही बतायेगा। अब हमारा यह कर्तव्य बन जाता है कि उनके द्वारा सौंपी गयी इस मशाल को हम कभी बुझने न दें। यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

संत श्री अभिलाष साहेब धार्मिक जगत के एक जाज्वल्यमान नक्षत्र थे। वे आध्यात्मिक जगत में उल्का के समान आये और अचानक अदृश्य हो गये। उनका अभ्युदय कबीरपंथ के इतिहास की एक क्रान्तिकारी घटना है। सन्त श्री अभिलाष साहेब ने अपने जीवन में सौ से भी अधिक पुस्तकें लिखी हैं। उनका ज्ञान बहुआयामी था। वे ज्ञान के सागर थे। जहां उन्होंने एक तरफ 'कबीर कौन?', 'कृष्ण कौन?', 'हिन्दू कौन?', 'ब्राह्मण कौन?', 'मैं कौन हूं', 'जीवन क्या है?' जैसी छोटी-छोटी पुस्तकें लिखीं हैं, वहीं दूसरी तरफ 'कबीर दर्शन', 'रामायण रहस्य', 'वेद क्या कहते हैं?' 'बुद्ध क्या कहते हैं?' 'लाओत्ज़े क्या कहते हैं?' जैसे महान ग्रन्थ भी लिखे हैं। उन्होंने अनेक ग्रन्थों की टीकाएं भी की हैं, जैसे सद्गुरु कबीर कृत 'बीजक' की पारख प्रबोधिनी टीका एवं पारख प्रबोधिनी व्याख्या (दो खण्डों में), श्री राम रहस साहेब कृत 'पंचग्रन्थी' की टीका आदि। जैसा उनका कृतित्व था, वैसा उनका व्यक्तित्व भी। एक वाक्य में कहें तो उनका जीवन सद्गुरु कबीर के कथन—'ज्यों की त्यों धरि दीनी चदरिया' को पूर्णतः चरितार्थ करता है। उनकी कथनी और करनी में समानता थी। वे जैसा कहते थे वैसा करते भी थे। आपके विशेष पठनीय ग्रन्थ हैं—'ढाई आखर', 'गीतासार', 'ब्रह्मचर्य जीवन', 'शाश्वत जीवन', 'जगन्मीमांसा', 'उपनिषद् सौरभ', 'कल्याण पथ', 'कबीर पर शुक्ल की और मेरी दृष्टि', 'राम से कबीर', 'स्त्री बाल शिक्षा' आदि। मैं

आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अधिक विस्तार से लिखना नहीं चाहता क्योंकि मैं जानता हूं कि इस पर प्रकाश डालना सूर्य को दीपक दिखाने की तरह है। आपने अपनी ज्ञान रश्मि से सारे संसार को आलोकित किया है और जब तक आपके ग्रंथ इस संसार में रहेंगे तब तक सारे संसार को आलोकित करते रहेंगे।

मुझे जीवन में पांच बार सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब का दर्शन-लाभ प्राप्त हुआ है। उनका दर्शन मेरे लिए भगवद्दर्शन से कोई कम नहीं था। उनका दर्शन पाकर मैं अपने जीवन को कृतकृत्य मानता हूं। मैं यह समझता हूं कि मैंने पूर्व जन्म में निश्चित ही कोई पुण्य का कार्य किया था जिसके फलस्वरूप मुझे उनका दर्शन लाभ प्राप्त हुआ। उनका प्रथम दर्शन ग्राम कटेकोनी खुर्द, जिला-जांजगीर चांपा (छ. ग.) की पावन धरा पर हुआ। वे सन् 1992 के जनवरी महीने में अपनी संत मंडली सहित सत्संग हेतु पधारे थे। वे 8 से 12 जनवरी तक यहां कार्यक्रम दिये। जिसके दौरान मुझे उनकी अमृतमयी वाणी सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। लोग उनका प्रवचन सुनकर चकित रह गये। उनके प्रवचन में जादुई प्रभाव था। मैं भी उनका प्रवचन सुनकर मंत्रमुग्ध हो गया। वहां उनसे मेरी बातचीत भी हुई। जब मैंने उन्हें अपना परिचय दिया तो वे बोल उठे—'छत्तीसगढ़ में तो पनिका जाति पूर्णतः कबीरपंथी हैं।' मैंने कहा—हां, साहेब।' तब गुरुदेव जी ने कहा—'तो फिर एकाध बार इलाहाबाद आइए।' मैंने कहा—'ठीक है साहेब।' मैंने उनसे करीबन 5-6 मिनट तक बातचीत की किन्तु उनके यही दो वाक्य मुझे याद हैं।

द्वितीय दर्शन छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में सन् 1993 के फरवरी माह में हुआ। तृतीय दर्शन छत्तीसगढ़ की औद्योगिक नगरी कोरबा में। चतुर्थ दर्शन अप्रैल, 2006 ई. में ग्राम छपोरा, जिला जांजगीर-चांपा (छत्तीसगढ़) में हुआ, जहां मैंने सपरिवार उनसे दीक्षा भी ली। पंचम एवं अंतिम दर्शन लाभ मुझे डोंगिया सुलोनी, जिला-जांजगीर-चांपा छत्तीसगढ़ में अप्रैल, 2011 में प्राप्त हुआ, जहां मैंने सपरिवार उनसे मुलाकात की तथा आशीर्वाद भी लिया। प्रवचन के दौरान आपने कहा था कि मृत्यु निश्चित है। इससे कोई नहीं बच सकता। जब आज तक कोई नहीं बच पाया है, तो हम कैसे बच सकते हैं। किन्तु मृत्यु से डरने की कोई बात नहीं। जब मृत्यु आयेगी तो जीव इस देह को सहज ही त्याग देगा। वे सद्गुरु कबीर की इस साखी पर विश्वास करते थे—

जेहि मरने से जग डरे, मेरो मन आनन्द।
कब मरिहौं कब पाइहौं, पूरन परमानन्द॥

आज श्री अभिलाष साहेब इस दुनिया में नहीं रहे। उन्होंने संसार के नियम का पालन किया। किन्तु उनका ज्ञान, उनका बताया मार्ग, उनकी प्रेरणा, उनकी सीख आज भी हमारे साथ हैं। हम उनकी बातों पर अमल कर अपने जीवन को उच्च तथा महान बना सकते हैं और समय की बालुका में अपने आचरण रूपी पदचिह्न छोड़ सकते हैं, जैसे कि संत श्री अभिलाष साहेब ने स्वयं छोड़ा। सही कहा है लांगफेलो ने—

'Lives of great men all remind us
We can make our lives sublime
And departing leave behind us
Footprints on the sands of time.'

(महापुरुषों की जीवनियां हमें याद दिलाती हैं कि हम भी अपना जीवन महान बना सकते हैं। जब हम संसार से चले जायेंगे, तब समय रूपी बालुका पर हमारे आचरण रूपी पदचिह्न रह जायेंगे।)

व्याख्याता, शा. उ. मा. वि, डभरा
जांजगीर-चाँपा, छत्तीसगढ़

मुझे मिला अविस्मरणीय 'क्षमादान'

श्री श्याम सुन्दर सर्राफ

सन् 1998, स्थानीय कबीर आश्रम में पांच दिवसीय बेसिक एक्यूप्रेशर प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया था। प्रशिक्षण देने का दायित्व दिया गया था, 'एक्यूप्रेशर शोध, प्रशिक्षण एवं उपचार संस्थान' को। संस्थान के प्रशिक्षकों की टीम के एक सदस्य के रूप में मैं भी कबीर आश्रम पहुंचा।

प्रशिक्षण शिविर के प्रथम दिन उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि थे कबीर आश्रम के प्रमुख संत शिरोमणि श्री अभिलाष साहेब जी। संयोग से उद्घाटन समारोह में संचालन का दायित्व मुझे दिया गया। मुझे संचालन का कोई विशेष अनुभव नहीं था, एक-दो बार मौका अवश्य मिला था। उद्घाटन समारोह प्रारंभ हुआ। लगभग एक घंटे का कार्यक्रम था। सब कुछ होने के बाद, समारोह के अन्त में मैं आदरणीय मुख्य अतिथि जी से सम्बोधन के लिए प्रार्थना करना भूल गया तथा उद्घाटन समारोह का बिना मुख्य अतिथि के आशीर्वाद के ही समापन हो गया। उद्घाटन के बाद पांच घंटे तक प्रशिक्षण भी चला। मुझे अपनी भूल का एहसास ही नहीं हुआ।

सायंकाल घर पहुंचने पर एकाएक मुझे अपनी भूल का एहसास हुआ। मन एकदम व्यथित हो गया। इतनी भयंकर भूल...! यह तो एक प्रकार से मेरी लापरवाही के कारण मुख्य अतिथि जी का अपमान हो गया। मैंने एक्यूप्रेशर संस्थान में अपने सहयोगी श्री के. सी. गोयल को अपनी इस अक्षम्य भूल की जानकारी दी। हम लोगों ने निश्चय किया कि दूसरे दिन प्रशिक्षण के पूर्व ही संत जी से उनके कबीर मंदिर स्थित आवास पर जाकर क्षमाप्रार्थना की जाये।

पूर्व निश्चित योजना के अनुसार दूसरे दिन प्रातः हम लोग कबीर मंदिर पहुंचे। संत जी ने मंदिर में अपने आवास पर हमें बुलाया। मैंने अश्रुपूरित नेत्रों से, बहुत डरते हुए, बड़ी शर्मिंदगी के साथ कल हुई भूल के लिए उनसे क्षमा मांगी। शायद मुझे अपनी बात कहने में 2-3 मिनट लगे होंगे।

परन्तु यह क्या...? संत जी ने, मुस्कुराते हुए, मेरी लापरवाही के प्रति जरा भी क्रोध न करते हुए, मुझे क्षमा ही नहीं किया अपितु चौथे दिन होने वाले समापन समारोह के बारे में जानकारी प्राप्त की तथा मेरे बिना कुछ कहे ही, पूछा कि "मुझे कितने बजे तक पहुंचना है?" मैं हतप्रभ था। मेरी आंखों से अश्रुधारा प्रवाहित हो रही थी। मैं कल्पना ही नहीं कर पा रहा था कि मुझे इस प्रकार क्षमादान मिलेगा।

चौथे दिन समापन के निर्धारित समय पर संत शिरोमणि अभिलाष साहेब जी निश्चित समय से पांच मिनट पूर्व ही प्रशिक्षण स्थल पर पहुंच गये, हम सभी को आशीर्वाद दिये।

आज भी जब मुझे अपनी लापरवाही तथा पूज्य संत अभिलाष साहेब जी द्वारा दिये गये 'अविस्मरणीय क्षमादान' की याद आती है तो मेरे नेत्र संत जी के प्रति श्रद्धा से नम हो जाते हैं।

एक्यूप्रेशर शोध, प्रशिक्षण एवं उपचार संस्थान
मिण्टो रोड, इलाहाबाद

श्रद्धांजलि

अशोक कुमार शुक्ल

सद्गुरु देव अभिलाष साहेब जी के बारे में कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाने जैसा है, किन्तु कहे बिना रहा भी नहीं जा रहा है। उन्हें देखकर मुझे ऐसा लगता था जैसे कि स्वयं कबीर ही अवतरित हुए हैं। जब कबीर साहेब जी इस संसार में रहे होंगे तो जैसी रहनी एवं कथनी रही होगी, वैसी ही सद्गुरु देव अभिलाष साहेब जी की थी। उनकी कथनी, करनी एवं रहनी में कोई अन्तर नहीं दिखता था। मैं सन् 2004 से उनके सम्पर्क में था। जब आया तो कर्मकाण्ड एवं तमाम देवी-देवताओं की पूजा-याचना में उलझा था। पूजा करते समय यदि किसी देवता की पहले पूजा कर ली या जो मंत्र पहले बोलना था बाद में बोल दिया या अन्य कोई त्रुटि हो गयी तो दिन भर डरा-डरा रहता था कि कहीं कोई अनहोनी न हो जाये, किन्तु सद्गुरु देव से मिलने के बाद भ्रम के बादल ऐसे छटे कि सारा भ्रम-डर दूर हो गया। अब उन देवी-देवताओं, मंत्रों आदि से डर नहीं लगता क्योंकि सच्चा रास्ता, आत्मबोध का रास्ता, स्वरूपस्थिति के रास्ते का पता चल गया और पता चल गया कि साधना याने साध+ना अर्थात इच्छा रहित होना ही साधना है।

उनसे मैं बहुत अधिक प्रभावित हुआ और दिल से चाहता था कि वे दीर्घायु हों। एक बार मुझे पता चला कि वे कलकत्ता जाने वाले हैं, अतः उनसे मिलने पर मेरे 'आपकी कलकत्ता की यात्रा मंगलमय हो।' कहते ही उन्होंने कहा—शुक्ला जी, क्या मंगलमय होना (यह बात 2007 की है) अब जो कुछ करना था कर लिया। कुछ करना बाकी नहीं है। यह शरीर आज छूट जाये या कुछ वर्ष और जी लें, कोई अन्तर नहीं पड़ता है। ऐसे निर्मोही एवं पूर्ण पुरुष थे हमारे सद्गुरु देव साहेब जी।

सद्गुरु देव साहेब जी चाहते तो और जी सकते थे ऐसा मेरा मानना है, किन्तु वे साधारण लोगों की तरह दवा खा-खाकर, खांस-थूककर किसी प्रकार जीना नहीं चाहते थे। उनकी पीठ में दर्द रहा करता था जो सामने की ओर बढ़ रहा था और दिल की बीमारी के लक्षण भी थे, किन्तु उन्होंने उसकी बहुत परवाह नहीं किया न शिष्यों द्वारा करने दिया। वे सहज ढंग से जीते रहे और सहज ही ढंग से अपने स्वरूप में स्थित हो गये। उनके अन्दर शरीर का कोई मोह नहीं था क्योंकि वे अच्छी तरह जानते थे कि जिंदगी एक किराये का घर है, एक न एक दिन बदलना पड़ेगा और बिना किसी मोह के उन्होंने अपना शरीर छोड़ दिया। उनके जाने से पारख संस्थान की, आश्रम की, संत समाज की एवं हम भक्तों की अपूरणीय क्षति हुई है। वे अध्यात्म का सच्चा रास्ता बताने वाले थे। अतः पूरे आध्यात्मिक जगत की महान क्षति हुई है। वे तो शान्तात्मा हो गये। हम सबकी मदद करें, यही अभिलाषा है।

पोस्टमास्टर, कचहरी, इलाहाबाद

यदि मन दुखी है, तो हम जीवन को ठीक से नहीं जी रहे हैं; और यदि मन प्रसन्न है और निरंतर प्रसन्न हैं, तो जीवन ठीक से जीया जा रहा है। जीवन की विकृति है दुख और जीवन की संस्कृति है सुख। हम बाहर धन मानते हैं, किंतु वह ऊपरी है। वस्तुतः धन मन की पूरी निर्मलता, ग्रंथिहीनता एवं तृष्णाहीनता है। जिसका मन कहीं बंधा नहीं है उसका मन ही आनंद-सागर बन सकता है। द्रष्टा चेतन तो स्वभाव से ही शुद्ध है, मन को शुद्ध करना है।

(पूज्य गुरुदेव जी : उड़ि चलो हंसा अमरलोक को)

परमपूज्य गुरुदेव जी की स्मृति में

ब्रह्मचारी रामेश्वर

मेरे दिल के टुकड़े हजार हुए,
कोई यहां गिरा कोई वहां गिरा।

अपने जीवन में किसी के विषय में लिखने का अवसर मिला तो परमपूज्य गुरुदेव जी के विषय में, वह भी उनके शरीरांत के बाद। अतीत को, जो दुख एवं दर्द से भरा है, क्या पता था कि मेरी लेखनी की शुरुआत यहीं से होगी।

परम पूज्य गुरुदेव जी के विषय में लिखने से पहले मैंने अपने दिल को जोड़ने का काम किया। मेरी यह भावुकता नहीं है। कोई यह न समझे कि मेरा मोह बोल रहा है, नहीं-नहीं, बस इसलिए कि मैं नहीं चाहता था कि परम पूज्य गुरुदेव जी की छत्रछाया मेरे सिर से कभी हटे। सदा बनी रहे। और कौन अभागा नहीं चाहेगा, लेकिन समय बदला और सब कुछ बदल गया।

हम लोग गुरुदेव जी के दिल के टुकड़े ही तो हैं। संसार की वेदना अपने आप से दूर ले जाया करती है और गुरुदेव जी के प्रति वेदना अपने आप से जोड़ने का काम करती है, इसलिए हमारे दिल के हजारों टुकड़े जो बिखर गये थे उनको जोड़ने का काम परम पूज्य गुरुदेव जी की याद में उनकी अनूठी कृपा और उनकी शरण में ही हम करेंगे।

परम पूज्य गुरुदेव जी से मेरी पहली मुलाकात सन् 1999 में छपरा बिहार में हुई जो मेरे घर से 40 कि.मी. पर है। उस समय मेरी उम्र 30 वर्ष की थी। मुझे पता चला कि कबीरपंथ के कोई महान संत आ रहे हैं। मैं गुरुदेव जी के दर्शनार्थ तैयार हो गया और समयानुसार पहुंच गया। समय से प्रवचन शुरू हुआ। अनेक संतों द्वारा भजन-प्रवचन का लाभ मिला। अन्त में परम पूज्य गुरुदेव का प्रवचन होना था। सभी श्रोतागण पंडाल में बैठे थे, तब तक एक सफेद कार पंडाल के पास आकर खड़ी हो गयी और सब लोग खड़े हो गये। मैं समझ गया कि यही बड़े गुरुदेव जी ही होंगे। गुरुदेव जी कार से उतरे और मंच की तरफ चल दिये और बैठने से पहले खड़े-खड़े गुरुदेव जी सबको हाथ जोड़ लिये। गुरुदेव जी की यह मुद्रा मुझे बहुत प्रभावित किया कि इतने बड़े संत और इतनी विनम्रता, सहजता और सरलता। फिर प्रवचन शुरू हुआ। प्रवचन के अंत में गुरुदेव जी ने मेरे दिल को छूने वाली बात कह दी, जिसकी मुझे खोज थी। वह थी साधना की बातें।

गुरुदेव जी ने कहा जितनी भी साधना पद्धतियां हैं वह सब मन को एकाग्र करने के लिए हैं, जबकि मैं बाह्य साधना को ही सब कुछ मानता था जैसे नाम जप, शब्द सुनना, अनाहत नाद, ज्योति देखना इत्यादि। उपरोक्त दोनों बातों ने मुझको गुरुदेव जी से अभिन्न कर दिया और मैं सदा-सदा के लिए सन् 2003 में गुरुदेव जी को समर्पित हो गया।

परमपूज्य गुरुदेव जी के विषय में क्या लिख सकता हूं। लिखने की जिज्ञासा और बातें तो बहुत हैं किंतु गुरु जी ने जैसा जीवन जीया है उसके विषय में पूरा-पूरा लिखना मेरे लिए सम्भव नहीं है। गुरु जी जेयी पुरुष थे। जेयी पुरुष का मतलब जिन्होंने जीवन जीया हो। सब लोग जीवन जीते नहीं हैं बल्कि जीवन को खोते हैं। जीवन जीने वाले थोड़े ही लोग हैं जिनको इतिहास ने संजोकर रखा है। अगर इतिहास से उन्हें निकाल

दिया जाये तो दुनिया का इतिहास मुरदा हो जायेगा।

गुरुदेव जी से मेरी अंतिम मुलाकात 25. 9. 2012 को शाम के समय हुई। भण्डार-गृह के बाहर मैं ईंट बिछवाकर फर्श बनवा रहा था। गुरुदेव जी आये और खड़े होकर इत्मीनान से लगभग आधा घंटा तक देखते रहे। इतनी देर तक गुरु जी कहीं नहीं रुकते थे। इसी बीच में मेरी और गुरुदेव जी नजर आपस में मिली। गुरु जी केवल मुस्कुराये, बात नहीं हुई। मुस्कुराहट से ही ऐसा लगा मानो गुरु जी को जो कहना था उन्होंने कह दिया। मुझे क्या पता था कि यही अंतिम मिलन होगा। और सुबह तो मानो मेरे दिल के टुकड़े हजार हुए, कोई यहां गिरा कोई वहां गिरा। मैं परम पूज्य गुरुदेव जी के आदर्शों पर चलने का संकल्प लेता हूं। गुरुदेव जी के प्रति मेरी यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

श्रद्धांजलि

सत्यानन्द त्यागी

पूर्णकाम अक्मलपीर (पूरा साहिब) अभिलाष साहेब के व्यक्तित्व से यथार्थ स्वरूपज्ञान, स्वरूपस्थिति, प्रचंड वैराग्य, सदाचार एवं शिष्टाचार रूपी अमृत रस निरंतर निःसृत होता रहता था, जिसका पान कर जिज्ञासु प्रेमी लोग अपने को कृतार्थ मानते थे। वे कठिन विरोध व अपमान सहकर भी विरोधियों को सदैव सम्मान देते थे। वे निन्दा-स्तुति में भी सदा सम रहकर निर्द्वन्द्व बने रहे। उनका कर्तृत्व दुनिया वालों के लिए आदर्श बन निरंतर प्रेरित और प्रकाशित करता रहा और रहेगा। उनका मन-वाणी-शरीर पर पूर्ण संयम था। वे सहनशीलता में पत्थर के समान कठोर, निश्चलता में हिमालय के समान अचल, गंभीरता में सागर के समान गहरे और फूल के समान कोमल थे। उनकी प्रतिभा ऐसी विलक्षण थी कि विरोधी, द्वेषी अथवा निन्दक भी उनके सामने आते ही पानी-पानी हो जाते थे। उनकी सम्प्रेषण क्षमता बड़ी गजब की थी। यहां तक कि उनके प्रवचनों के कैसेट उत्तारवादियों से लेकर अवतारवादियों, वैदिकों, अवैदिकों के आश्रमों, घरों, गरीबों की झोपड़ी और राजनेताओं के महलों में बजते सुनाई देते हैं। उनका दर्शन कर गरीब-अमीर, विद्वान-साधारण जन सब अपने आप को कृतकृत्य मानते थे। उनकी कथनी और करनी में पूर्ण साम्य था। बड़ा से बड़ा अपमान होने पर भी उनके मन में प्रतिशोध की भावना कभी नहीं उत्पन्न हुई।

उनके द्वारा लिखित बीजक व्याख्या कबीर दर्शन, बुद्ध क्या कहते हैं?, शंकराचार्य क्या कहते हैं?, वेद क्या कहते हैं? आदि एक सौ पचीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशस्तम्भ बनकर जनमानस के अज्ञानान्धकार को नष्ट करती रहेंगी। उनकी पुस्तकें इस बात का प्रमाण हैं कि उनके मन में किसी सम्प्रदाय या मजहब के महापुरुषों एवं उनके मान्य ग्रन्थों से घृणा नहीं थी। सारग्राह्यता उनका सिद्धान्त था। अपने जीवन में उन्होंने "ढाई आखर प्रेम का" पूरा-पूरा आचरण किया। पार्थिव शरीर किसी का भी अमर नहीं रह सकता। महापुरुषों के जीवन-दर्शन का लाभ हम उनके द्वारा लिखित सद्ग्रन्थों से निरन्तर ले सकते हैं। पुस्तकों में लेखक की आत्मा निवास करती है। उनमें उनकी पवित्र रहनी और सच्ची अभिव्यक्ति रहती है। ऐसे पूर्णकाम, पूर्णतृप्त, स्वरूपलीन, द्रष्टापुरुष महाविधे पारखबोध प्रदाता सद्गुरु अभिलाष साहेब के चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए त्रयबार साहेब बन्दगी है।

करमा बाजार, इलाहाबाद

हीरे के पहल छप्पन, आपके अनंत

ब्रह्मचारी शैलेन्द्र

सूर्य जब प्रकाश देता है तब वह नहीं सोचता है कि धर्मी को अपना प्रकाश दूं और अधर्मी को न दूं। वह तो सामान्य रूप से सभी को अपना प्रकाश देता है। ऐसा ही जीवन परम पूज्य सद्गुरु अभिलाष साहेब जी का था। वे कभी भी किसी से वैर नहीं रखे। उन्होंने सभी को बराबर प्यार दिया। चाहे वह नारी हो या नर सबके साथ समानता का व्यवहार किया। उनका हृदय मां के हृदय की तरह गम्भीर और शांत था। जैसे मां बड़ी-से-बड़ी मुश्किलों को बहुत सहज ढंग से सह लेती है तथा शांत रहती है और अपने ममत्व को नहीं छोड़ती है, और साथ ही वह सभी से मीठा व्यवहार करती है, वैसे ही परम पूज्य सद्गुरुदेव जी का जीवन था।

उन्होंने सबको सहा, सभी कठिनाइयों को पार किया, सभी को गले लगाया और अपने हृदय का प्यार दिया। लेकिन वे अपने स्वरूपभाव से कभी अलग नहीं हुए।

सन् 2006 में जब मैंने पहली बार गुरुदेव जी के दर्शन किये, तभी से मेरा मन गुरुदेव जी के चरणों में रहने के लिए प्रेरित होने लगा और 2010 में मैं घर छोड़ दिया। जब मैं पहली बार गुरु जी के निकट गया, तो उन्होंने कहा—आ गया मेरा लाल। ये शब्द सुनकर मेरा हृदय कांप गया कि मैं आज तक कहां भटकता रहा। आपने मुझ दास को पास बुलाया और अपने पवित्र हाथों से मेरे गंदे हाथों को पकड़ा और आपने कहा—बताओ, मैं अपने लाल की क्या सेवा करूं? उसके बाद आपने मुझ दास को अपने सीने से लगा लिया। उस समय मुझे लगा कि सारे जहां की खुशी मिल गयी। आपका प्यार जब भी याद आता है, तो आंखों से आंसू बहने लगते हैं।

कहा जाता है कि हीरे के छप्पन पहल होते हैं। और हर पहल अपने आप में चमकदार होता है। आपका जीवन ऐसा ही था। आपका हर क्रिया-कलाप प्रकाश देता था। जिसको देखकर अधम-से-अधम प्राणी का भी मन आपकी तरफ खिंच जाता था तो अच्छे लोगों को क्या कहा जाये? आपके जैसा महान व्यक्तित्व का महापुरुष होना बहुत ही मुश्किल लगता है। आपने हमेशा अपने को एक साधक समझा, कभी भी आपने अपने को गुरु नहीं माना। एक बार मैं और एक साथी, दोनों आपके पास गये। कुछ देर बैठने के बाद मैंने कहा—भगवन्! हम साधकों को कुछ उपदेश करें। हम अनादि से विषय-वासनाओं के थप्पड़ खाये और खा रहे हैं। आपने कुछ देर ज्ञान-वैराग्य की बातें कही फिर आपने कहा—बेटा! मैं भी विषय-वासनाओं का थप्पड़ खाया हूं और सावधान न रहूं तो फिर खाऊंगा। ऐसा कहना तो आपकी महान विनम्रता थी।

आप एक महान वैराग्यवान महापुरुष थे। आपके सामने मनोविकार टिक नहीं सकते थे। आपका जीवन आकाश की भांति निर्मल एवं स्वच्छ था। किसी प्रकार का आवरण नहीं था। आकाश तो अनेकों आवरणों से भरा पड़ा है, बेदाग नहीं है, लेकिन आपका जीवन बेदाग था, उसमें किसी प्रकार का आवरण नहीं था। आप हमेशा दूसरों के लिए जीये। दूसरों के लिए वही जी सकता है—जिसने अपने को निर्मल बना लिया हो, अपने को भव-बंधनों से छुड़ा लिया हो। आपने हमेशा लोगों को ज्ञान-वैराग्य की बातें बतायी। क्योंकि आपके

पास ज्ञान, वैराग्य एवं प्रेम आदि सद्गुणों का ही भंडार था। सद्गुरु कबीर साहेब ने कहा—जो रहे करवा सो निकरै टोटी।

आपने लोगों को सावधान करते हुए कहा—

जिस देह की चमड़ी चमक में लुब्ध होकर मर रहा।
कामाग्नि में पांखी बना निज शान्ति पर से जर रहा।
वह सर्पिणी से भी दुखद जो प्राण से लगती प्रिये।
मल-मूत्र की टट्टी अरे! तू बावला किसके लिए।

आपका जीवन अथाह सागर था। जिस प्रकार समुद्र में सब कुछ समा जाता है उसी प्रकार आप सभी कठिनाइयों को, मुसीबतों को अपने हृदय में समाहित कर अपने जीवन का उद्धार किये। हम भी अपने जीवन को बेदाग बनायें; यही गुरु जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। परम पूज्य श्री सद्गुरु देव जी के चरणों में श्रद्धा-सुमन समर्पित करता हूं।

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

गुरुदेव का प्रेम

ब्रह्मचारी युधिष्ठिर

बचपन में जब मैंने पढ़ना सीख लिया, तब मैंने अपने पिता से सद्ग्रन्थ पढ़ने की इच्छा व्यक्त की लेकिन वे नहीं मंगा सके। आगे चलकर मेरे एक मित्र के पास कबीर अमृतवाणी की एक प्रति मिली। मैं उसको पढ़ता। पढ़ने में बहुत बढ़िया लगती, लेकिन कुछ समझ में नहीं आता। आध्यात्मिक साहित्य पढ़ने की इच्छा लगातार बढ़ती जा रही थी, लेकिन पुस्तकें कहां मिलेगी कोई जानकारी नहीं थी। फिर कुछ समय बाद जाना कि इलाहाबाद से प्रकाशित है। सन् 2002 में वी. पी. द्वारा पुस्तकें मंगाई और पढ़ने लगा। सभी पुस्तकों में एक ही लेखक, 'अभिलाष दास' लिखा रहता था, मेरी उनके प्रति उत्सुकता बढ़ती गयी, और उनके प्रति प्रेम भाव जागने लगा। मैं विद्यालय के पुस्तकों के साथ सद्गुरु की पुस्तकों को भी पढ़ता। जितना समझ में आता जीवन में प्रयोग करता। अपने साथी से भी उनकी चर्चा करता था। सन् 2005 में भागलपुर में गुरुदेव जी का कार्यक्रम था। मैं मन में उत्सुकता लिए उनको देखने के लिए आ पहुंचा। शाम को पांच बजे थे और गुरुदेव प्रवचन कर रहे थे। बड़ा शान्त और मौन वातावरण था पंडाल के भीतर। चारों ओर लोग उपस्थित थे और बोलने वाले के प्रति प्रेम से भरे हुए थे। उस प्रवचन को कुछ देर तक सुना और सुनते-सुनते कब सो गया कुछ पता ही नहीं चला। उसके बाद इलाहाबाद के वार्षिक अधिवेशन में शामिल होने के लिए इलाहाबाद आ गया। मेरे मन में होने लगा कि मैं भी ऐसे संत समाज के बीच रहूं।

सन् 2007 में कटिहार में गुरुदेव को सुना। शहर की एक धर्मशाला में गुरुदेव जी का निवास था। रात्रि में मैं भी उसी छत पर सोया। सुबह पांच बजे सो ही रहा था कि दूसरे महात्मा हड़बड़ा कर उठे और तेजी से बिस्तर समेटकर नीचे उतर गये। तभी देखा गुरुदेव बड़ी तेज चाल से सुबह छत पर टहल रहे हैं। मैं उन्हें देखकर गद्गद हो गया। मैं फिर भी नीचे नहीं उतरा और छत पर ही बैठा रहा। गुरुदेव जी ने टहलने के बाद व्यायाम किया। तब उनका ध्यान मेरी ओर गया। उन्होंने मुझसे कुछ बातें की। मैं उनके वचन सुनकर आनन्दित हो गया। मेरा मन आह्लादित हो उठा। यह

देखकर कि गुरुदेव जैसे महापुरुष ने मेरे जैसे अनजान से इतने प्रेम से बातें की। थोड़े क्षणों में इतना प्रेम गुरुदेव से मिला, कभी किसी से नहीं पाया था। गुरुदेव के प्रवचन आगे के दो दिन भी सुनता रहा और फिर संसार व्यर्थ लगने लगा। उनके विचारों ने मेरा मोह खत्म कर दिया। उनकी ऊर्जा और शान्ति में मेरा मन रंग गया। इस बीच गुरुदेव के और भी दर्शन हुए। गुरुदेव जी से जो भी साधक, साधु और भगत मिलने जाता, वह उनके दर्शन-स्पर्श से आह्लादित हो उठता था। उसे लगता कि गुरु जी उसे ही ज्यादा चाहते हैं। गुरुदेव की दृष्टि ऐसी ही थी। उनकी आंखें आने वालों को प्रेम से निहारा करतीं और ओठों की मुस्कान आनेवालों को अपने दिल की बातें बताने को उत्सुक करतीं।

इसके बाद गुरुदेव की शरण में आश्रम रहने लगा। मैं गुरुदेव जी की बीजक व्याख्या पढ़ने लगा। वह बहुत ही सरल और रुचिपूर्ण लगी। बीजक पर उनके प्रवचन और भी बेजोड़ हैं। सभी संतों का प्रेम और गुरुदेव का आशीष मिलने लगा। हम लोग आश्रम परिसर में जहां भी काम करते, गुरुदेव टहलते हुए आ जाते। हम सब गुरुभाई उन्हें देखकर आनंदित हो उठते। वे हम सब को सेवा करते देखकर मुस्करा उठते और हल्का-सा विनोद भी कर लेते। बस, हमारी बैट्री फुल चार्ज हो जाती। फिर से प्रसन्नतापूर्वक काम में लग जाते। सुबह उनका सत्संग सुनना अपने आप में एक दिव्य अनुभव था। आज गुरुदेव का शरीर हमारे बीच नहीं है फिर भी उनकी गैर मौजूदगी का अनुभव नहीं होता।

26 सितम्बर को आश्रम में प्रातः उनका शरीर शान्त हो गया और उनके कक्ष में उनका शरीर रखा गया। जब मैंने उनके शरीर को देखा तो लगा ही नहीं कि गुरुदेव अब हमारे बीच नहीं हैं। ऐसा लगा कि वे ध्यान में बैठे हैं।

मैंने गुरुदेव जी से पूछा था मुझे तो ऐसा नहीं लगता है कि मैं मरूंगा। मेरे मन में मरने का भाव नहीं आता। गुरुदेव जी ने कहा—निश्चय ही तुम नहीं मरोगे। तुम्हारी देह भले ही साथ न रहे लेकिन तुम हमेशा रहोगे।

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

सदा करूं गुणगान

शंकर दास

वीतराग पारखनिष्ठ, स्वरूपलीन सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी को वन्दन करते हुए उनका उपकार व संस्मरण।

पूज्यपाद गुरुदेव का, मुझ पर उपकार महान।
कभी भुला सकता नहीं, सदा करूं गुणगानॐ

जब मैं छठवीं कक्षा में पढ़ रहा था तो मेरे गांव में एक संत आये थे जिनका नाम श्री प्रकाश साहेब था। मेरे दादाजी उनको अपने घर लाये थे। वे सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी का एक भजन सुनाये।

सभी की मौत है एक दिन न कोई रहने आया है।
जगत यह धर्मशाला है, मुसाफिर क्यों भुलाया हैॐ

पूरे भजन को सुनकर मैं मगन हो गया। मेरे जीवन में वैराग्य की शुरुआत इसी भजन से हुई। फिर प्रकाश साहेब जी मुझे सद्गुरु श्री निष्पक्ष साहेब जी के आश्रम व संतों के दर्शन कराये। जंगल में रमणीक एकान्त आश्रम देखकर मुझे अच्छा लगा। वहां आने-जाने लगा। फिर एक संत के द्वारा साहेब जी की पुस्तक मिली 'मैं कौन हूं'। उसको पढ़कर मुझे आत्मज्ञान हुआ, फिर 'ब्रह्मचर्य जीवन' पढ़ा। मुझे साहेब जी के ग्रन्थों में ही रुचि रहती थी। अधिकतर साहेब जी के ग्रन्थों को पढ़ता रहता हूं। साहेब जी का कार्यक्रम प्रथम खागा में संत सुखस्वरूप साहेब जी उर्फ राजा साहेब के माध्यम

से हुआ। सन् 1994 से प्रारम्भ हुआ तब से पूज्य गुरुदेव जी हमारे ऊपर दया दृष्टि करते रहे। कार्यक्रम बराबर प्रति वर्ष होता रहा जिससे साहेब जी के द्वारा हमारे क्षेत्र में कबीरपंथ व कबीर के विचारों को लोग काफी समझने लगे। इस वर्ष 2012 का कार्यक्रम लिया था। साहेब जी के दर्शनार्थ कबीर आश्रम जियनपुर अयोध्या से वापस होकर राजा साहेब जी के साथ आया तो साहेब जी विनोद में कहने लगे—अभी इनको भी घुमाते हो। मैंने कहा—साहेब जी, ये अभी 90 वर्ष के लगभग हैं। घूमते-फिरते हैं। कहते हैं एक जगह नहीं रहूंगा। साहेब जी मुस्कुराने लगे। हम दोनों बन्दगी करके वापस जाने के लिए निवेदन किये। साहेब जी बोले—रुको, कल जाना। मैंने कहा—साहेब, एक जगह कार्यक्रम है जाना है, भक्त लोग बुलाये हैं। साहेब जी बोले—कल भी तो आयेगा चले जाना। मैं बोला—साहेब, समय से नहीं पहुंच पायेंगे। साहेब जी बोले—फिर जाओ भाई। कुछ दूर जाने पर मुझे पश्चाताप होने लगा कि साहेब जी कितने स्नेह भरे शब्दों में कहे थे, रुक जाता तो ठीक था। फिर मन को ढाढ़स बंधाया कि अभी कार्यक्रम में आना ही है। जहां गया 25 सितम्बर की रात को सत्संग चर्चा हुई। साहेब जी के विषय में बात चली कि साहेब शताब्दी पूरा करेंगे तो समाज को बहुत ज्ञान मिलेगा।

26 सितम्बर को सुबह भोलादास जी व राम साहेब जी के फोन से मालूम हुआ कि साहेब जी का निर्वाण हो गया। राजा साहेब जी रोने लगे। मेरी आंखों से आंसू बहने लगे। मानो हमारी प्यारी से प्यारी वस्तु छुट गयी। दुख का पहाड़ टूट पड़ा। अब हमारे बीच पारख सिद्धान्त के मसीहा नहीं रहे। जिनके द्वारा समाज का इतना बड़ा विकास हुआ। जाति-पांति के भेदभाव को मिटाने, पाखण्डों को मार्मिक ढंग से दूर करने, सबको अपना ही मानने वाले बराबर स्नेह-प्रेम देने वाले सद्गुरु हमारे बीच नहीं रहे। उनके बिना सब कुछ होते हुए सूना लगता है। इस बार हमारे खागा, फतेहपुर के कार्यक्रम में साहेब जी के न रहने से संतों-भक्तों को बहुत दुख हुआ लेकिन भीड़ पहले ही जैसे रही। सब लोग संतों की वाणी प्रेम से सुनते रहे। कहते थे कि साहेब जी के बिना सूना लगता है। साहेब जी के स्नेह भरे शब्दों व उनके प्यार, दुलार व्यवहार को कभी नहीं भूल सकते। हमारे संत बताया करते थे कबीर आश्रम बैरी में एक बार आर्य समाजियों से शास्त्रार्थ हुआ था। वे साहेब जी के विचारों को सुनकर अपने आप शान्त हो गये थे। साहेब जी महान त्यागी, उदार हृदय, जिज्ञासुओं के पोषक थे, उनके गुणों का बखान हम शब्दों के द्वारा नहीं कर सकते।

परम विवेकी, स्पष्ट वक्ता, मधुरभाषी, उदार हृदय सबको बराबर स्नेह-प्रेम देने वाले सद्गुरुदेव जी की स्मृति में सादर श्रद्धांजलि समर्पित करता हूं।

कबीर आश्रम, बैरी, फतेहपुर, उ. प्र.

तुम्हारी सर्वत्र विजय और शांति कैसे रहेगी? सहनशीलता, संतोष, क्षमा और धैर्य से। यदि तुम सर्वत्र सुख से जीना चाहो तो जोर से न बोलो। पहली बात, बोलो ही कम। जब बोलो तब अत्यंत विनय और मधुरता पूर्वक। तुम्हारे लिए कोई गलत कर या कह दे तो तुम उसे क्षमा कर दो। जो दुर्व्यवहार करता हो उससे दूर रहो। उसकी चर्चा न करो। इतना ही नहीं, उसका स्मरण भी न करो। उससे न मिलो। किन्तु उसका या किसी का अहित न चाहो। सदैव अपने मन को सरल, विनम्र और निष्काम रखो।

(पूज्य गुरुदेव जी : घूंघट का पट खोल)

भाव भरे मानस के मोती....

अवधेश भूषण

मैंने परम पूज्य सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी को पहली बार सन् 1990 में कबीर साहेब की जयन्ती (कबीर जयन्ती) के पावन पर्व में कबीरनगर, कबीर आश्रम के हाल में सुबह प्रवचन करते हुए देखा। मैं वहीं बैठ गया। गुरु जी के पूरे प्रवचन के दौरान मैं हंसता रहा। मुझे ऐसा लगा कि गुरु जी मुझे देखकर हंस-हंसकर प्रवचन कर रहे हैं, लेकिन गुरुदेव जी का स्वभाव ही ऐसा था। प्रवचन समाप्ति के बाद अनेक सन्त-भक्त बन्दगी कर बैठ गये। मैं कुछ दूर खड़ा था। गुरुदेव जी ने मुझे अपने पास बुला लिया, और मेरा नाम तथा निवास पूछा। मुझे आश्चर्य लगा कि गुरुदेव जी ने मुझसे जाति के बारे में पूछा ही नहीं। बात चल ही रही थी उसी समय एक साधु आये और मेरे बारे में बताये कि ये अपने आश्रम के कम्पाउडर हैं, दो-तीन महीने से आ रहे हैं। इसके बाद से मैं साहेब जी के साप्ताहिक प्रवचन में प्रीतमनगर आश्रम आने-जाने लगा।

बीच-बीच में साहेब जी से मिलता रहा। उस समय मेरी उम्र 16 वर्ष की थी। मैं ज्ञान की बातों को तो थोड़ा-बहुत समझ लेता था, किन्तु मैं अल्पज्ञ तथा भावुक था।

मैं भगवान श्री राम का उपासक था तथा कापी पर राम-राम लिखता था। एक बार गुरु जी ने मुझसे पूछा, "कुछ ग्रन्थ, साहित्य वगैरह पढ़ते हो?" मैंने कहा—पिताजी के पास गीताप्रेस की कल्याण कुंज, परमार्थ की मंदाकिनी तथा अन्य पुस्तकें हैं। समय-समय से पढ़ता हूं। गुरु जी ने हनुमान प्रसाद पोद्दार जी की बड़ाई करते हुए कहा कि उनकी पुस्तकें अच्छी हैं, पढ़ते रहा करो। बाद में मुझे गुरु जी ने अपनी लिखी 'जीवन क्या है?', 'मैं कौन हूं?' इत्यादि पुस्तकें दी।

बड़ा आश्चर्य होता है कि गुरु जी को मेरे पूजा-पाठ के बारे में पता होते हुए भी उन्होंने नहीं रोका बल्कि यही कहा कि इसी पूजा-पाठ ने ही मुझसे मिलवाया है। तुम यह न करते तो मेरे पास तुम न आ पाते।

गुरुदेव जी के सत्संग-प्रवचन से मुझमें काफी परिवर्तन आ गया। गुरु जी के बिना मना किये ही मेरा पूजा-पाठ छुट गया। मैं भगवान श्रीराम को अब भी मानता हूं, वे हमारे पूजनीय श्रद्धेय हैं, पर जगतनियंता ब्रह्म नहीं। अहंकार-अज्ञान का विसर्जन, नीर-क्षीर विवेक गुरु के ज्ञान द्वारा होता है, पूजा-पाठ से नहीं। हां, इससे चित्त एवं मन में सात्विक भाव बना रहता है।

1. घटना—एक बार वार्षिक अधिवेशन में गुरु जी ने मुझे तीन दिन के लिए प्रीतमनगर आश्रम में रुकने को कहा। घर से अनुमति लेकर आ गया। ओढ़ने के लिए कुछ नहीं लाया था। अपनी अल्पज्ञतावश मैंने गुरु जी से कहा—"थोड़ी ठण्ड लग रही है।"

गुरु जी ने तुरन्त अपनी ओढ़ी हुई नई कीमती शाल मुझे ओढ़ा दिया और कहा कि अब इसे अपने पास रखो।

2. घटना—एक बार मैं गुरु जी के पास दर्शन के लिए गया। संयोग से उस दिन मेरे शर्ट की थोड़ी सिलाई खुल गयी थी। मैंने सोचा कि साधु-संतों एवं गुरुदेव से मिलने के लिए टीम-टाम की क्या जरूरत! गुरु जी की दृष्टि शर्ट पर पड़ी और मुझसे पूछने लगे—तुम्हारे पास और शर्ट नहीं है क्या? मैंने कहा कि 'गुरुदेव जी! उस

शर्ट को मैं धो डाला हूं।' मेरे इतना कहते ही गुरुदेव जी ने एक सफेद वस्त्र दिया और कहा कि इसमें से पैण्ट-शर्ट बनवा लो। वस्त्र इतना लम्बा-चौड़ा था कि पैण्ट-शर्ट बन गयी और दुबारा जाने पर गुरु जी ने पैण्ट-शर्ट की सिलाई का पैसा भी दे दिया। ऐसे ही एक बार हाथ पोंछने की रुमाल भी दी थी।

3. घटना—1996 की बात है। पूर्व की भांति ही गुरु जी के पास गया। गुरु जी किसी कार्यक्रम में जाने की तैयारी कर रहे थे। अचानक गुरु जी ने मुझसे कहा, "तुम्हें चलना हो तो तुम भी चलो।" मैंने कहा, गुरुदेव! घर से अनुमति लेकर आता हूं। पिताजी ने जाने की अनुमति दे दी। मैं घर से आवश्यक कपड़े लेकर गुरु जी के पास आ गया। मुझमें इतनी अल्पज्ञता थी कि घर से मैंने रुपये ही नहीं मांगा। किराया-भाड़ा का ध्यान ही नहीं रहा। इतना ही ध्यान रहा कि गुरुदेव जी की तरफ से चल रहा हूं। मेरे पास थोड़े ही रुपये थे। गुरु जी ने मेरे आने-जाने का खर्च स्वयं वहन किया। जिला गोंडा, बभनान में गुप्ता जी के यहां रुकना हुआ। गुप्ताजी गुरु जी के परम भक्त हैं, साथ ही ज्ञानी पुरुष भी। जो अभी जीवित हैं। वहां रात्रि 8 बजे सत्संग का आयोजन था जिसमें गुरु जी ने एक घण्टे प्रवचन दिया। संयोग से सुबह कलकत्ता के श्री प्रेम प्रकाश गुप्त भी आ गये। वहां से फिर बड़हरा जाना हुआ। बड़हरा आश्रम सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब का है, जो गुरुदेव जी के गुरु हैं। वहां तीन दिन कार्यक्रम रहा।

गुरु जी आम लोगों के बीच में जाकर बैठ गये तथा सन्त-भक्तों से कुशलक्षेम पूछने लगे। कुछ लोग आश्चर्य से देख रहे थे कि गुरु जी हम लोगों के बीच पैरा पर बैठ गये।

सुबह का समय था। भक्त लोग अपने घर प्रस्थान कर रहे थे। बहुत-से भक्त गुरु जी के पास रुपये चढ़ाते और बन्दगी कर चले जाते। गुरु जी सबका कुशल-क्षेम पूछते, साथ ही सबकी पारिवारिक, सामाजिक, आध्यात्मिक समस्याओं का समाधान करते। गुरु जी के पास आने वाले भक्त प्रसन्न होकर जाते। कुछ गरीब भक्तों को रुपये चढ़ाते समय मना कर देते, कहते कि तुम इसे रखो। कुछ को किराया-भाड़ा दिया, जिसमें से शायद एक गृहस्थ भक्त भी शामिल था।

यह सब घटना मैंने अपनी आंखों देखी। फिर गुरु जी के साथ मैं तथा अन्य संत अयोध्या आ गये। श्री प्रेम प्रकाश गुप्त भी साथ थे। वहां मैंने गुरु जी के साथ अयोध्या के मंदिर देखे।

गुरु जी जब अयोध्या से कलकत्ता जाने लगे तो अनेक संत-भक्त अपने घर-आश्रम जाने की तैयारी करने लगे। गुरु जी के जाने के बाद मैं फफककर रो पड़ा।

गुरुजी के पास किसी प्रकार का शौक नहीं था जैसे स्वयं के पास चार पहिया वाहन हो। वाहन खरीदने का रुपया रहते हुए भी वे हमेशा सरकारी बस एवं ट्रेनों पर सफर करते थे। गुरु जी कहते थे कि यह सब बस-ट्रेनें अपनी ही हैं।

यह गुरु जी की महानता है जो अपने को 'गुरु' नहीं समझते थे कि हम अच्छे ठाट-बाट से चलें। गुरु जी चाहते तो बहुत कुछ कर लेते। प्रचार-प्रसार की बेताबी गुरु जी में नहीं रहती थी। सब सहज रूप से करते चले गये, सब सहज रूप से होता गया। गुरुदेव जी कहते थे कि साधु का काम है साधना करना, अपनी साधुता में रहना, पूर्ण निष्काम हो जाना। यह गुरुदेव जी की प्राथमिकता रहती थी। इसके बाद सहज रूप से समाज की जो सेवा हो जाये बस। गुरुदेव जी तो मुक्त पुरुष थे। ऐसे महापुरुष का जीवन लोगों के कल्याण के लिए प्रेरणास्रोत होता है। साहेब जी के लिखे हुए साहित्य सन्त-भक्तों के लिए प्रेरणास्रोत तो हैं ही। उनकी डांट-फटकार भी अज्ञान-निद्रा से जगाने के लिए कल्याणप्रद है, क्योंकि सबके प्रति कल्याण भावना थी। वे कृतार्थ थे, इसलिए सबको कृतार्थ रूप देखना चाहते थे। यही गुरु जी की महानता थी।

गुरु जी समाज सुधारक के रूप में—गुरुदेव जी का कार्यक्रम देश के कोने-कोने में होता था। पड़ोसी

देश नेपाल में भी गुरुदेव का जाना होता था। इन कार्यक्रमों में जगह-जगह हजारों की संख्या में लोगों के बीच बोलना होता था। गुरु जी के प्रवचनों से व्यक्ति में परिवार के प्रति कर्तव्य, समाज तथा देश के प्रति कर्तव्य, आध्यात्मिक कर्तव्य का बोध होता था। टोना-टोटका, भूत-प्रेत, ओझा-बैगा के भ्रमजाल को मिथ्या-छल-कपट बताकर, गांव-गांव, जिला-जिला, अनेक प्रदेशों में जाकर अपने ओजस्वी भाषण से लोगों को जाग्रत कर देते थे। यह गुरुदेवजी का सामाजिक क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान था। छुआछूत, ऊंच-नीच की भावना कुचलकर, 'मानव सिर्फ मानव है' का ज्ञान देश के कोने-कोने तक पहुंचाना, यह गुरु जी की बहुत बड़ी देश सेवा है।

गुरु जी की धार्मिक सहिष्णुता—गुरुजी सभी धर्मों के ग्रन्थों को आदर देते थे। उनके ग्रन्थों का अध्ययन भी करते थे। सभी धर्मों के महापुरुषों का आदर करते थे। गुरु जी द्वारा लिखित 'संसार के महापुरुष' ग्रंथ पाठकगण पढ़कर गुरु जी की भावनाओं को समझ सकते हैं। कोई धर्मग्रन्थ स्वतः प्रमाण नहीं है। सत्य दृष्टि, नीर-क्षीर विवेक से सभी ग्रन्थों का अवलोकन करना चाहिए, ऐसा गुरुदेव जी का मत था। जिसका जीवन ईमान-सत्य से ओत-प्रोत है उसके लिए सभी धर्मों के महापुरुष अपने हो जाते हैं। गुरुदेव जी का जीवन ऐसा ही था।

महानिर्वाण—26 सितम्बर 2012 को सुबह 9.30 बजे मुझे किसी भक्त ने मोबाइल पर सूचित किया कि गुरु जी नहीं रहे। यह सूचना पाकर मानो मैं अनाथ हो गया हूं, मेरा सब कुछ लुट गया हो, मैं ऐसा अनुभव करने लगा था। एकदम अधीर हो गया था। खबर पाकर सन्तों एवं भक्तों का सैलाब आश्रम परिसर में इकट्ठा हो गया। सन्तों के द्वारा निर्णय हुआ कि गुरुदेव जी की समाधि आश्रम परिसर में ही 28 सितम्बर सुबह 10 बजे दी जायेगी। देश के कोने-कोने से सन्त-भक्त एवं विद्वतजन गुरु जी के अन्तिम दर्शन के लिए आते रहे।

28 सितम्बर को ही संतों की सभा में सभी विद्वानों ने एवं संस्थान के संतों ने गुरु जी के परम शिष्य पूज्य संत श्री धर्मेन्द्र साहेब जी को गुरु जी के उत्तराधिकारी के रूप में सर्वसम्मति से चयन किया। इस प्रसंग पर मुझे बाइबिल में लिखी हुई बात याद आ गयी, कितना सुन्दर भाव है—

"मेरे दास को देखो जिसे मैं संभाले हूं। मेरे चुने हुए को, जिससे मेरा जी प्रसन्न है, मैंने उस पर अपना आत्मा रखा है, वह जाति-जाति के लिए न्याय प्रकट करेगा।"

देश के कोने-कोने में गुरु जी के नाम से भण्डारा का आयोजन भक्तों द्वारा किया गया, ऐसा मैंने वर्तमान गुरु पूज्य श्री धर्मेन्द्र साहेब जी द्वारा अधिवेशन में प्रवचन के दरम्यान सुना। श्री गुरुवेन्द्र साहेब जी ने बताया कि गुरु जी के नाम से जो भी सन्त-भक्त भण्डारा करता, वह गांव के हर घर में प्रसाद पहुंचाता।

जन-जन को प्रेम लुटाने वाले, लोगों के हृदय में ज्ञान के दीप जलाने वाले, परमपूज्य, परम आराध्य, प्रातः स्मरणीय सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी का शरीर आज हमारे बीच नहीं है पर साहेब जी की सत्ता तो है। गुरु जी स्वयं कहते थे, "शरीर रहे या न रहे, मैं तो रहूंगा, मेरी आत्मसत्ता तो रहेगी ही।" गुरु जी तो हमारे बीच हैं, बस उनका शरीर नहीं है। गुरु जी अपने स्वलिखित साहित्य में, सन्त-भक्तों के दिलों में सदैव अमर रहेंगे। आनेवाली पीढ़ी में सन्त-भक्तों के लिए अपने साहित्य एवं ग्रन्थों के माध्यम से गुरु जी हम लोगों के लिए प्रेरणाप्रद बनकर सदैव के लिए अमर हो गये हैं।

मैं नतमस्तक होकर उनकी वन्दना करता हूं जिनकी कृपाओं का ऋण मैं कभी नहीं चुका सकता।

गूँथ-गूँथ आँसू की माला, अर्पित करने आये हैं,
भाव भरे मानस के मोती, तुम्हें चढ़ाने आये हैं।

नीवां, इलाहाबाद

जागत कीजे भोर

रूपदास साहू

विश्व वंदनीय संत सम्राट सद्गुरु कबीर साहेब सम प्रातःस्मरणीय स्वरूपलीन सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी के चरण कमलों में कोटिशः नमन। गुरु जी के समक्ष कुछ पल बीता था वह याद करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित है।

गुरु जी का प्रथम दर्शन 1971 नयापारा राजिम (छ.ग.) में कार्यक्रम के दौरान हुआ। उसी समय सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब का भी प्रथम दर्शन हुआ था। गुरु जी हम लोगों को स्वयं नारियल भेंट करने के लिए दिये। हम लोग भेंट कर ही रहे थे कि सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब ने कहा कि अभिलाष दास कहां हैं, प्रोग्राम शुरू करना चाहिए। उस समय 2.30 बजे थे। गुरु जी स्टेज पर पहुंच चुके थे। कुछ सेकेण्ड के अंतराल में ही स्टेज से गुरु जी की आवाज सुनायी पड़ी फिर सब वहां जाकर प्रवचन सुने।

सन 1976 में ग्राम कुल्हाड़ी में भक्त महंगू साहू के माध्यम से गुरुजी का कार्यक्रम हो रहा था। सायंकाल राखी ग्राम में कार्यक्रम के बारे में सुना और चल पड़ा। प्रवचन 10 बजे रात में समाप्त हुआ। स्टेज से उतरने के बाद मैंने गुरु जी की बंदगी की। गुरु जी बोले, रूपदास, तुम्हारा आसन कहां है? मैं बोला—स्वामी जी! यहां मेरा कोई परिचय नहीं है। गुरु जी बोले, बेटा! आओ हमारे पास सोओ। मैं पीछे-पीछे चला, वहां दो संतों का आसन लग गया था। मैं थोड़ा ठिठक गया। फिर गुरु जी बोले—बेटा, यहां आओ। हमारे पास लगाओ। मैं गुरु जी के कहने पर इतना पास आसन लगाया कि मात्र दो हाथ का फासला रहा होगा। मई-जून का महीना कमीज-बनियान निकालकर सोया था। लगभग 4 बजे नींद खुली, देखा गुरु जी ध्यान में बैठे हैं। हम लोगों को भी जग जाना था पर दो संत सोये हुए थे मैं भी सो रहा था। करीब 6 बजे गुरु जी बोले—सब जागो और हम लोग जग गये। पहनने के लिए कमीज को पकड़ा, उसमें कुछ पैसा चिल्लर के रूप में था, उसमें आवाज हुई। गुरु जी तो नजदीक ही थे। आवाज सुनकर सद्गुरु कबीर साहेब का यह भजन गाने लगे—

तेरी गठरी में लागा चोर, बटोहिया का सोवे॥ टेक॥
पांच पच्चीस तीस हैं चोरवा, ये सब कीन्हा शोर॥ 1॥
जागु सबेरा बाट अनेरा, फिर नहीं लागे जोर॥ 2॥
भव सागर एक नदी बहत है, बिन उतरे जा बोर॥ 3॥
कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, जागत कीजे भोर॥ 4॥

1988 ई. में गुरु जी का कार्यक्रम एक दिन जरौदा में हुआ था। उस समय साथ में धर्मेन्द्र साहेब एवं परीक्षा साहेब आये हुए थे। मिट्टी की दीवार, एक कमरा फूटा हुआ जिसे लकड़ी टिकाकर रखा गया था। वहां से गुरु जी झुककर गये। दरवाजा भी बिलकुल छोटा उसमें भी गुरुदेव जी झुककर निकल गये। वैसे आंगन से भी जा सकते थे लेकिन गुरु जी मेरे घर पर सभी जगह अपनी चरण रज छोड़ते हुए चले थे जो आज गुरु जी की याद और ताजा करता है।

दिनांक 29. 7. 2012 दिन रविवार, कबीर आश्रम नयापारा में ध्यान शिविर के समापन का दिन। छत्तीसगढ़ कबीरपंथी साहू समाज के द्वारा समाज हित के लिए कुछ नियमावली बनाकर समाज के परिवार को सद्गुरु

कबीर साहेब के सिद्धांत व विचारों के माध्यम से एक सूत्र में पिरोकर रखने के लिए नियमावली का प्रकाशन कराना था जिसके लिए गुरुजी से सम्मति लेने समाज के कुछ कार्यकर्ता पहुंचे थे। गुरु जी कुछ प्रारूप सुनकर सहर्ष अपनी सम्मति प्रदान किये जो निम्नानुसार है—

छत्तीसगढ़ कबीरपंथी साहू समाज की नियमावली प्रकाशित होने जा रही है यह सुनकर प्रसन्नता हुई। यह समाज सद्गुरु कबीर के सिद्धांत तथा सदाचार को पंथ के परिवार के लोगों में शिक्षा एवं उपदेश के माध्यम से फैलाता है और लोगों को ज्ञान तथा सदाचार की तरफ उन्मुख होने की प्रेरणा देता है। इस भौतिक युग की आंधी में यथार्थ ज्ञान और सदाचार का जितना प्रचार किया जाये अच्छा है। धन, विद्या, पद आदि चाहे जितने बढ़ जायें मन की निर्मलता के बिना न आचरण शुद्ध होगा और न जीवन में शांति मिलेगी। अतएव इस सदाचार और सत्यज्ञान के प्रचारक समाज को बहुत-बहुत धन्यवाद, हितकामना है कि यह समाज अधिक जोर से यह काम करे।

हितचिंतक

अभिलाष दास

जरौदा, तर्रा, रायपुर, छ. ग.

गुरु की दया, साधु की संगत

देवसिंग साहू

ज्ञान, वैराग्य और प्रेम की ओजस्वी धारा को प्रवाहित करने वाले सद्गुरु श्री अभिलाष देव के बारे में जो कुछ कहा जाये कम ही होगा। फिर भी मैं अपने हृदय की कुछ बातें लिखने जा रहा हूं।

आज जो मेरी स्थिति इतनी अच्छी है गुरुदेव जी की कृपा से ही है। जो कुछ मेरे में अच्छाई है गुरुदेव जी की ही कृपा है। यदि गुरुदेव नहीं मिले होते तो मैं भटकता रहता। अपने को बहुत बड़ा सौभाग्यशाली मानता हूं जो कि अपने ग्राम परसुली में चार बार आगमन हुआ, उनका सान्निध्य लाभ मिला।

प्रथम बार जब कार्यक्रम करना हुआ तो ग्राम डोटोपार से लाना था। मैं गया। उस समय बैलगाड़ी का जमाना था, मिट्टी की सड़क थी। आते-आते मुझसे गुरुदेव पूछे—कुछ पढ़ाई किये हो? मैंने बताया—गुरुदेव जी! कक्षा आठ तक पढ़ा हूं। फिर गुरुदेव जी ने पूछा—तुम संतों की पुस्तक पढ़ते हो। मैंने कहा—आपके द्वारा रचित भजनावली, स्त्री बाल शिक्षा, मैं कौन हूं? ये तीन पुस्तकें पढ़ा हूं। तब पुनः गुरुदेव जी प्रश्न किये तुम कौन हो? गुरुदेव जी के इस प्रश्न पर मैं चुप हो गया। गुरुदेव जी धीरे से बोले—बेटा, बताओ। तब मैं कुछ साहस बटोरकर बताया—मैं अजर, अमर, अविनाशी शुद्ध चेतन हूं। इतना बताने के बाद गुरुदेव जी ने मुझे अपनी गोद में बैठा लिया। मैं संकोच में पड़ गया और नीचे उतर गया तो गुरुदेव जी ने फिर मुझे उठाकर पुनः बैठा लिया। मैंने बैलगाड़ी में बैठे-बैठे संकल्प लिया कि यदि गुरु बनाऊंगा तो आप को ही।

फिर अपने गांव में आ जाने के बाद जहां गुरुदेव जी का निवास था वहीं मैंने दीक्षा ली। यह मेरे जीवन का प्रथम दर्शन था। गुरुदेव जी की छाया और महान कृपा सदा बनी रही।

परम पूज्य गुरुदेव जी का पुनः कार्यक्रम लेने की चर्चा चली और साप्ताहिक कार्यक्रम लेने की बात हुई। मैं कार्यक्रम लेने के लिए इलाहाबाद गया। आवेदन दिया, तो गुरुदेव जी ने समझाया कि कार्यक्रम पहले

की तरह छोटा नहीं होता, अब बृहत रूप में होता है। इसलिए साप्ताहिक कार्यक्रम न होकर दो-तीन दिन का ले लो। लेकिन मैं अपने हठ में अड़ा रहा। अंत में साहेब जी पांच दिन का कार्यक्रम दिये। उसके बाद साहेब जी ने समझाया—कार्यक्रम में खर्च बहुत होता है, इसलिए गांव में जाकर कार्यक्रम की रूपरेखा बताना और उसके बाद पत्र लिखकर सूचित करना। फोन का जमाना नहीं था। पत्र-व्यवहार चलता था। लोगों को अड़चन लगे तो हम कार्यक्रम को कैन्सिल कर सकते हैं। गांव में जाकर बताने पर सभी प्रसन्न हो गये, और गुरुदेव जी को पत्र लिखकर सूचित किया कि कार्यक्रम तय है। इस प्रकार गुरुदेव जी आर्थिक, मानसिक, शारीरिक सभी स्थितियों को देखते हुए अपना कार्यक्रम चलाते थे ताकि किसी को भार महसूस न हो।

गुरुदेव जी जब हमारे गांव में आये तो प्रवचन के लिए जाने से पहले जहां बाहर से आने वाले भक्तों का भोजन बनता था वहां जाते और भोजन की व्यवस्था के बारे में पूछताछ करते थे कि भक्तों के लिए भोजन बन रहा है नहीं, क्योंकि हमारे ग्राम में ऐसा बृहत कार्यक्रम पहली बार हो रहा था। व्यवस्था में कुछ गड़बड़ी न हो, और भक्तों की बदनामी न हो, गुरुदेव जी इस दृष्टि से व्यवस्था देखने जाते थे। कहते कि व्यवस्था के बारे में मुझे बताते रहना।

फिर 1991 और 2001 में कार्यक्रम हुआ। और अंतिम कार्यक्रम 2008 में हुआ। गुरुदेव का जीवन उसी प्रकार था जैसे कमल का पत्ता पानी में रहते हुए पानी में लिपायमान नहीं होता। गुरुदेव जी संसार में रहते हुए संसार से बिलकुल अलग थे। संसार में रहते हुए गुरुदेव जी को सांसारिकता छू नहीं पायी। एक बार मैंने गुरुदेव जी की बन्दगी की तो गुरुदेव जी ने कहा—बेटा! जीवन में कुछ न कुछ करते रहना। अपने समय का सदुपयोग करना, व्यर्थ मत जाने देना। और स्वयं गुरुदेव जी ने वही किया। उन्होंने अपना एक सेकेण्ड व्यर्थ नहीं जाने दिया। गुरुदेव जी ने मुझे पुत्र के समान प्यार दिया और मुझे समझाते रहे। एक माता-पिता के प्यार से भी ज्यादा गुरुदेव से मुझे प्यार मिला। क्योंकि गुरुदेव जी का प्यार स्वार्थ से रहित प्यार था।

गुरुदेव जी कहा करते थे कि सावधानी ही साधना है। और उसी पर जीते थे। कभी-कभी देखने को मिलता था, सूखी रोटी हो या मेवा-मिष्ठान्न गुरुदेव जी उतना ही लेते थे जितनी जरूरत है। बाकी आप छोड़ देते थे। गुरुदेव जी सूखी रोटी और उबली हुई सब्जी बड़े मजे के साथ खाते थे।

गुरुदेव जी कहा करते थे नियम ही ईश्वर है। गुरुदेव जी नियम के पक्के थे। जहां गुरुदेव को पांच मिनट बोलने का अवसर दिया जाता था, वहां गुरुदेव जी चार मिनट में ही बात समाप्त कर देते थे।

हम भी अपने जीवन को सफल बनाना चाहते हैं तो गुरुदेव जी के कोई भी पहल को अपने जीवन में आचरित कर लें कि जीवन कैसे जीना चाहिए। जो गुरुदेव जी ने हम सबको बताया और हम सबने सुना उसी को अपने जीवन में आचरित करें, यही गुरुदेव जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

परसुली, बालोद, छ. ग.

मृत्यु की घड़ी प्यारी है। स्वरूपज्ञान में स्थित व्यक्ति के लिए शरीर का अभी कुछ काल रहना या आज ही मिट जाना बराबर है। अपितु शरीर मिट जाने पर जगत-प्रपंच से सर्वथा छुटकारा हो जाने के कारण शरीर मिटना ही सुखद है। शरीर तो सब छोड़-छोड़ कर जा रहे हैं, धन्य है वह व्यक्ति जिसने शरीर छोड़ने के पूर्व उसका मोह छोड़ दिया है। बंध और मोक्ष भावना में ही तो बनते हैं। राग की पकड़ बंधन है और राग का सर्वथा त्याग मोक्ष है।

(पूज्य गुरुदेव जी : बसे आनंद अटारी)

परम पूज्य गुरुदेव जी की स्मृति में

साध्वी वंदना

जैसे एक मां अपने बच्चे को जन्म देकर इस दुनिया से चली जाये और कोई उस बच्चे से पूछे कि बताओ तुम्हारी मां कैसी थी? तो वह बेचारा बच्चा क्या बतायेगा। वैसे ही हमारा अभी जन्म ही हुआ था, धरती पर पड़े रो ही रहे थे कि हमारे ऊपर से पूज्य गुरुदेव जी की छत्र-छाया उठ गयी। उस वक्त ऐसा लगा कि हम अनाथ हो गये, असहाय हो गये। ऐसा लगा जैसे हमें मारकर हमारी सबसे कीमती चीज किसी ने छीन लिया हो। ऐसे महान पुरुष के बारे में कुछ बोलना, कुछ लिखना जिन्हें हमने अभी तक ठीक से देखा, जाना और पहचाना भी नहीं था, कितना कठिन है। जब मैंने रास्ते में सुना कि गुरुदेव को हास्पिटल लेकर गये हैं, लेकिन उनका हांथ-पैर ठंडा हो गया है। फिर भी मेरा मन शान्त था। मुझे यह सोचकर संतोष था कि गुरुदेव हास्पिटल में हैं तो ठीक हो जायेंगे। हो सकता है अचानक शरीर में कुछ हुआ होगा। क्योंकि गुरुदेव हमेशा कहा करते थे यह शरीर रोगों का घर है। दुख का किला है और ऐसे ही बहुत-से विचार मेरे मन में आते रहे और उसी भाव से आश्रम आयी जैसे हर दिन आती थी पूज्य गुरुदेव जी एवं संतों के दर्शन और आशीर्वचन के लिए, लेकिन आश्रम आने पर पता चला कि गुरुदेव अब हमारे बीच नहीं रहे और कुछ ही देर में मैंने प्रत्यक्षरूप से देखा कि गुरुदेव का नश्वर शरीर तो है लेकिन गुरुदेव उसमें अब नहीं हैं। उस पल ऐसे-ऐसे विचार मेरे मन में उठने लगे कि अब क्या होगा, कैसे रहेंगे, कैसे जीयेंगे और किसके बताये रास्ते पर चलकर हमें हमारी मंजिल मिलेगी क्योंकि गुरुदेव हमें हर क्षण सही जीवन जीने का रास्ता बताते थे।

कभी-कभी ध्यान का पूरा समय बीत जाने पर भी विचार रुकते नहीं थे और मन शान्त नहीं होता था, लेकिन जैसे ही गुरुदेव के आने का समय होता, सत्संग हाल के पास बाहर से ही गुरुदेव की खड़ाऊं की आवाज कानों में पहुंचती विचार एकदम गायब हो जाते और मन शान्त हो जाता था।

गुरुदेव जी जब आसन पर बैठकर बोलते थे तो मैं उन्हें ही देखती रहती थी। क्योंकि उनको देखने से आंखों की चंचलता, मन की चंचलता और विचारों का बहना एकदम बन्द हो जाता था। समय-समय से मां के साथ गुरुदेव के दर्शन और उनके निकट बैठने के लिए जाया करती थी। शायद 16-17 सितम्बर रहा होगा गुरुदेव के निकट बैठने और साधना सम्बन्धी कुछ समस्या का समाधान पाने के लिए आयी थी। वही दिन अन्तिम दिन था मेरे जीवन का जो गुरुदेव के निकट बैठकर उनके दर्शन और समाधान मिला।

उस दिन को मैं कभी भी नहीं भुला पाऊंगी क्योंकि उस दिन गुरुदेव ने मेरे अन्दर जो उत्साह, जोश, प्रोत्साहन दिया और कहा कि बेटी, मुझे स्वाभिमान है तू यहां से गई, वहां विजया के पास रहकर साधना में लगी है। तुझे देखकर मुझे खुशी होती है, तू इस प्रकार साधना में आगे बढ़ती जा, यही मेरा आशीर्वाद है और आज मैं भी कहती हूं कि मुझे भी गर्व है कि मैं ऐसे परम पिता उस महान सद्गुरु की शिष्या हूं। क्योंकि ऐसे महान सद्गुरु का दर्शन, उनका आशीर्वचन फिर उनका सान्निध्य मिलना बड़े सौभाग्य की बात है। कहा भी गया है—

मानुष तन सद्गुरु मिलन, मोक्षहु इच्छा होय।
दुर्लभ तीनों परम हैं, पाय सुयोग न खोयû

और आज मुझे ये तीनों मिले हैं—मानुष का तन, सच्चे सद्गुरु और मोक्ष की इच्छा भी जगी। जिससे मैं साधना मार्ग में आयी। उस वक्त मैं सोचती थी किसके बताने से मैं अपनी मंजिल तक पहुंचूंगी। लेकिन जब मैंने विचार किया तो मेरा रास्ता सरल है, ऐसा लगने लगा और मुझे खुशी हुई।

क्योंकि गुरुदेव हमारे लिए अपना पदचिह्न छोड़ गये हैं। वैसे हर व्यक्ति की अपनी एक पहचान होती है, उसका भी कुछ चिह्न होता है। जो कुछ ही दिनों में मिट जाता है। लेकिन गुरुदेव ऐसा पदचिह्न छोड़ गये हैं जो कभी मिटने वाला नहीं है। उनके पदचिह्न हैं—उनका आदर्शमय जीवन, उनकी गंभीर, सरल व मीठी वाणी, उनका सद्ग्रन्थ-साहित्य, उनका सुव्यवस्थित व संगठित समाज, निर्मल जीवन, थोड़े में कहें तो सादा जीवन उच्च विचार। जैसे एक पिता अपने किसी योग्य (मेधा सम्पन्न) पुत्र को सारा दायित्व और छोटे बच्चों का भविष्य सौंप कर इस दुनिया से जाये वैसे ही आपने अपने रूप में अभी वर्तमान के गुरुदेव संत श्री धर्मेन्द्र साहेब जी के हाथों हमें भी और हमारे भविष्य को भी सौंप दिया है।

जैसे छोटा-सा शिशु मां के गर्भ में जो संस्कार पाता है उसका असर उसके पूरे जीवन में होता है। वैसे हमारे पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में रहकर हमने जो शिक्षा-संस्कार पाया है, उसका प्रभाव हमारे पूरे जीवन में रहेगा।

अभिमन्यु के लिए कहा जाता है कि उसने चक्रव्यूह तोड़ने की विद्या मां के गर्भ में ही सीख लिया था तो मैं सोचती हूं कि मैंने भी अपने गुरुदेव के सान्निध्य में रहकर जो संस्कार पाया है, जो कला सीखी है उसी विद्या, उसी ज्ञान से मैं भी अपने मन रूपी शत्रु को मारकर, इन्द्रिय रूपी चक्रव्यूह को दमन करके इस जीवन के रणक्षेत्र में दिग्विजयी हो सकती हूं। आपकी शिष्या आपके पावन चरणों में श्रद्धा-सुमन समर्पित करती है।

कबीर पारख आश्रम, धर्मपुरी, वडोदरा, गुजरात

घनघोर आंधियों में जलना सिखा दिया

पूनम

मुझे गुरुदेव के दर्शन का सौभाग्य सन् 2001 मई में गंगापुर सिटी में प्राप्त हुआ। तेरह वर्षों में गुरुदेव के अनेक बार दर्शन का लाभ मिल सका। गुरुदेव के अन्तिम ध्यान शिविर के दौरान मैंने अपनी शंका बतायी कि "गुरुवर, मैं जब सत्संग समारोह में जाती हूं तब मुझे प्रतिकूलता चारों तरफ से घेर लेती है। इनसे बचने का उपाय बता दीजिए।" गुरुदेव जी बोले, "बेटी, तुम अनुकूलता-प्रतिकूलता से भी ऊपर उठ जाओ। अपने आपा में रहने का अभ्यास करो।" बस उसी दिन से मैं संभल गयी चाहे कितनी भी परेशानी आ जाये मैं अपने आप को संभालने लगी और नित्य अभ्यास करने लगी। गुरुवर हमें अनाथ करके चले गये लेकिन हमें सच्चा मार्ग बता कर गये हैं। गुरुदेव के ग्रन्थों की रचना करीब 130 है। अब हमारा फर्ज बनता है कि गुरुदेव के बताये मार्ग पर चलकर हम अनुशासन में रहें और अपना कल्याण करें। इन्हीं शब्दों के साथ गुरुदेव को श्रद्धांजलि देती हूं।

विदाई गीत

मेरे गुरुवर प्यारे, जीयेंगे अब हम किसके सहारे?
आप जा तो रहे हैं, लेकिन हम युद्ध हारेऊ
हमें भी साथ ले लो पीछे, दुखड़ा कैसे सहा जाये।
किसको सुनायेंगे, दिल के दाग कालेऊ
कौन मनायेगा? कौन समझायेगा?
हम तो लुट गये, जीती बाजी हारेऊ
कसम खाके कहते हैं, तुमने नियम जो बनाये।
चाहे जान जाये, हम न उनको भुलायेऊ

भरतपुर, राजस्थान

...ऐसा गुरु कुछ कीजिये

ब्रह्मचारी प्रह्लाद

मेरे परम पूज्य, परम आराध्य सद्गुरुदेव की महानता एवं विशालता को कहूं या लिखूं तो छोटा मुख बड़ी बात होगी। मेरे गुरुदेव का जीवन दर्शन अद्भुत था। उनकी रहनी-गहनी, उनका व्यक्तित्व ही निराला था।

मैं गुरुदेव से कैसे मिला, इस पर कुछ लिखूं। मेरे जीवन में श्री विकास साहेब जी, श्री राम साहेब जी का महान उपकार है, उन्हीं दोनों सन्तों की वजह से ही मानो मैं साक्षात भगवान को पाया गुरु के रूप में। बाहर जो लोग भगवान की कल्पना करते हैं वह तो झूठा है। मैं तो चेतन आत्मा रूप भगवान में स्थित परमात्मा का दर्शन किया हूं।

2005 में बैगवां आश्रम में आया, फिर आज्ञानुसार 2008 में कबीरनगर में आया और स्थाई रूप से गुरुदेव की शरण में रहने लगा। गुरुदेव जी के जीवन दर्शन को देखकर ऐसा अनुभव होता था मानो मैं स्वर्ग में रह रहा हूं।

लोग प्रेम, समता, सहनशीलता, पुरुषार्थ और करुणा के भाव लिखा और कहा करते है, पर हमारे गुरुदेव के तो अंग-अंग से सारे सद्गुण रूप फल फूट-फूटकर चुआ करते थे।

1. कहा जाता है कि हीरे में छप्पन पहल होते हैं सब ज्योतिर्मय होते हैं। हमारे गुरुदेव में तो हजारों पहल हैं। हर पहल में वह प्रकाश है, वह तेज है, वह किरणें हैं, जो मानव जगत को युगयुगांतर तक प्रकाशित करते रहेंगे।

उनके जीवन को, पुस्तकों को, अध्ययनशीलता को देखकर ऐसा लगता था, कि वे कितने पुरुषार्थी थे। कितने ज्ञान-वैराग्य से भरे थे, टकसार के पक्के एवं नियम के मजबूत थे।

2. उनके विशाल हृदय को हम पृथ्वी के उदाहरण से समझ सकते हैं। पृथ्वी के लिए छोटा-बड़ा, ऊंचा-नीचा, धनी-गरीब सभी प्राणी बराबर हैं, सभी को समान भाव से रखती है, सभी का जीवन निर्वाह पृथ्वी से ही होता है। पेड़, पहाड़, कोयला, हीरा, मोती आदि भी पृथ्वी से पैदा होते हैं। कबीर साहेब ने कहा है— "सबकी उत्पति धरती, सब जीवन प्रतिपाल।"

इसी प्रकार गुरुदेव जी थे, जो अपने में सभी को समाहित कर लेते थे। अन्य सम्प्रदाय के लोग भी आपके पास आकर शान्ति का अनुभव करते थे और आपके जीवन दर्शन को देखकर उन्हें अपने जीवन एवं मन को बदलने में पूरा सहयोग मिलता था।

3. पानी का स्वभाव शीतल होता है, दूसरे का पोषक होता है। इसी प्रकार गुरुदेव का जीवन था। आपके पास जो भी आता आप उसे अपने ज्ञानरूपी गंगा जल से शीतल ही कर देते थे। किसी को कभी एहसास नहीं होता था कि गुरुदेव जी हमको नहीं चाहते अथवा कम चाहते हैं।

4. हम दर्पण के सामने जाते हैं तो चेहरे में लगे दाग को देख पाते हैं। मैं तो यहां तक कहूंगा कि दर्पण के सामने अपने मन को समझने में भी बहुत बड़ा सहयोग मिलता है। जब हमारे मन में कोई विकार हो, जैसे काम, क्रोध या लोभ हो तो हम दर्पण को देखना चाहें तो नहीं देख पायेंगे। गुरुदेव जी भी दर्पण के समान थे। गुरुदेव को देखते ही मन डर जाता था और

शान्त हो जाता था। गुरुदेव को देखते ही मन में क्या-क्या कमियां हैं जानने में आने लगती थीं। गुरुदेव जी के पास हमारे मन में कोई विकार हो तो जाने में बहुत ही डर लगता था। लेकिन जाता था डरते-डरते मन की बातें बताता था। एक बार तो गुरुदेव ने कहा, बेटा, घर जाने का मन तो नहीं है, तब मैंने हाथ जोड़कर कहा—नहीं। तब गुरुदेव ने कहा—लगे रहो बेटा, सब ठीक हो जायेगा। मन को देखते रहो, सब ठीक हो जायेगा। शुरू-शुरू सत्संग में जाओ, ध्यान करो, तो मन परेशान करता ही है। ऐसे ही मैं अपने में अनुभव करता हूं। शुरू में मन परेशान करता था, अब तो बिलकुल नहीं करता, और बहुत ही अच्छा अनुभव होता है। गुरुदेव के आशीर्वाद का ही फल है, जो सूक्ष्म मन की परतें कुछ-कुछ समझ में आने लगी हैं। क्योंकि गुरुदेव का जीवन स्वच्छ दर्पण था ही जो भी मिलने जाता था, अपने मन में लगे दाग को, कमियों को देख ही लेता था। और अपने दाग को धोने का प्रयास करता है। फिर एक दिन ऐसा आता है कि मन निदाग हो जाता है, निर्मल हो जाता है। निर्मल मन में ही स्वर्ग बसता है, निर्मल मन में ही सुख-शान्ति एवं स्वस्वरूप की अनुभूति होती है।

गुरुदेव जी का ज्यादा जोर साधना पर ही होता था। गुरुदेव कहते थे—"कम खाओ, गम खाओ" कम खाओगे तो पेट ठीक रहेगा और गम खाओगे तो मन ठीक रहेगा। साधना का मतलब ही होता है मन को वश में रखना।

प्रेम में जीना ही असली जीवन है। गुरुदेव जी कहा करते थे कि प्रेम में देने की भावना होती है। वही प्रेम हमें अनासक्ति तक पहुंचाता है। अनासक्त होकर प्रेम करना ही जीवन की सार्थकता है। सब हमारे हैं, हम सबके हैं। अन्ततः न हमारा कोई है, न हम किसी के हैं। हमें यह भी ध्यान में रखना है कि प्रेम के चक्कर में पड़कर कहीं अपने को फंसाना नहीं है। जीवन थोड़ा है इसको सेवा में लगाना है और इससे कल्याण का काम करना है। कल्याण का काम हो जाने के बाद कुछ बाकी नहीं रहता, सब काम मानो हो गया, सबको मानो जीत लिया।

वन्दन करूं मैं सद्गुरु का, नाम अपना दीजिये।
परमार्थ में आगे बढ़ूं, ऐसा गुरु कुछ कीजिये॥टेक॥
आपका है मार्ग जो, पारख प्रकाशी है सदा।
सत मारग पर चलूं, ऐसा गुरु कुछ कीजिये॥ 1॥
सत्य मारग है कठिन, पर हीनता में न पड़ूं।
संकल्प दृढ़ मेरा बने, ऐसा गुरु कुछ कीजिये॥ 2॥
कामना और क्रोध की, ज्वाला धधकती है सदा।
वैराग धारण मैं करूं, ऐसा गुरु कुछ कीजिये॥ 3॥
मन मोह माया में पड़ा, सन्तप्त होता है सदा।
विवेक ज्ञान मेरा जगे, ऐसा गुरु कुछ कीजिये॥ 4॥
शरीर यह दुख रूप है, ऐसा समझ में हो सदा।
प्रह्लाद भक्ति में लगे, ऐसा गुरु कुछ कीजिये॥ 5॥

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

जिसको कम खाने में विश्वास हो वह बुद्धिमान है। जिसको कम बोलने, प्राणी-पदार्थों का कम संबंध रखने, कम देखने, कम सुनने तथा कम सोचने की आदत है वह शांत मन वाला होता है। संसार से अपने को छुड़ाना साधक की बहादुरी है। सबसे घूमकर अपने आप में लीन होना महा सुख है। तुम्हें संसार से क्या मिलेगा! संसार में उलझ-उलझकर अशांति के अतिरिक्त क्या पाये हो! अब संसार से लौटकर अपने आप में डूबो। यही सच्चा आनंद है।

(पूज्य गुरुदेव जी : बसे आनंद अटारी)

मेरा संस्मरण

विवेक दास

परमपूज्य सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए शोक-संवेदना प्रकट करता हूं उनका पार्थिव शरीर तो नहीं रह गया लेकिन उनकी वाणियां अमर रहेंगी।

सर्वप्रथम पूज्यवर साहेब जी के दर्शन माह नवम्बर, सन 1971 अजुहा के कबीर आश्रम में श्री निहोरे साहेब के यहां हुआ। मैं साहेब जी के पास जाकर बन्दगी किया, बैठा। कुछ देर बाद अन्य ब्रह्मचारियों के द्वारा पता लगा कि पूज्य साहेब जी का प्रोग्राम छत्तीसगढ़ में है जिसका विवरण कागज में छपा हुआ है। मैं सुना तब दूसरे दिन साहेब जी से निवेदन किया कि मैं भी वहां जाना चाहता हूं। साहेब जी ने मुझे कार्यक्रम का छपा हुआ एक पर्चा दिया तथा उसमें लिख दिया कि इलाहाबाद से रायपुर तथा रायपुर से महासमुन्द से भोरिंग या चपरीद गांव में मिल जायेंगे। मैं उस समय जिला बांदा में राजकीय स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत था। वहां जाकर अवकाश का आवेदन-पत्र देकर जनवरी 1972 में अकेले भोरिंग पहुंचा। फिर साथ में समय से और भी गुरुजनों एवं संतों के दर्शन एवं प्रवचनों का लाभ एक-डेढ़ माह तक मिलता रहा तथा मेरे बहुत-से भ्रम निवारण हुए। वहीं परम पूज्य साहेब जी ने कबीर बीजक की टीका की एक प्रति प्रदान किया था।

मेरे घर-गांव में पूज्य सद्गुरु श्री निष्पक्ष साहेब जमात के सहित आते थे। उनसे प्रभावित होकर सन 1961 में जाकर बैरी में दीक्षा लिया लेकिन उनसे पूर्ण बोध नहीं प्राप्त हुआ। मैं इलाहाबाद में सन् 1963 में नौकरी के चक्कर में इधर-उधर घूमता था और जहां साधु-सन्त मिले उनके पास जाता था। लेकिन कबीरपंथ के कोई साधु नहीं मिलते थे। हम लोग कबीरपंथी कहलाने से झिझकते थे। जबसे पूज्य सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब के दर्शन मिले मैं धन्य हो गया। सन् 1977-1978 में साहेब जैन भवन में रहते थे। जगह की तलाश में। उस समय एक समय भोजन बनता था। कहीं-कहीं मकान बने थे नहीं तो आस-पास बाजरा, अरहर की खेती होती थी। शाम को अबूबकरपुर जाने में लोग डरते थे। हम लोग लूकरगंज आदि में घूमते-फिरते जगह की तलाश में। वहां कहीं मनपसंद जगह नहीं मिली। फिर बाद में प्रीतमनगर में एक व्यक्ति ए. जी. कालोनी वाले ने अपना प्लाट बेचने की बात की। उसी को खरीदकर आश्रम बनाना शुरू हुआ फिर लोगों का सहयोग मिलता रहा। दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति होती गयी। उस समय संत श्री गुरुबोध साहेब अध्यक्ष पद पर तथा कोई मंत्री, कोषाध्यक्ष के पद पर आसीन हुए। जब मकान बनता था उस समय हम लोग कोई ईंटें, कोई गारा सब संत-ब्रह्मचारी मिलकर देते थे। उस समय आपस में कहते थे कि अध्यक्ष जी गारा लाओ, मंत्री जी ईंटें लाओ। तब पूज्य गुरुदेव जी सुनकर हंसते थे। कितना आपस में हिलमिल कर काम करते हैं। आज जो दिखाई दे रहा है वह सुमति का ही प्रतिफल है। मैं हर महीने जाता था। साहेब जी कहते थे कि कोई संकोच नहीं करना जब मन हो आया करो। उनके प्रवचन तथा साहित्य से मेरी झिझक दूर हो गयी तथा पूर्ण पारख ज्ञान का बोध हुआ। जितना ही यशगान करूं उतना ही कम है। मैं अपनी लेखनी रोककर पूज्यवर को बार-बार श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं।

कबीर मंदिर, पहाड़पुर, कौशांबी, उ. प्र.

गुरुदेव का प्यार...

रंजीत

अनंत श्री विभूषित, महान युगद्रष्टा, सत्य, अहिंसा, प्रेम, करुणा की मूर्ति, परम वीतराग गुरुदेव सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी!

आप 26 सितंबर, 2012 को इस नश्वर शरीर और असार संसार को छोड़ गये। भले ही 80 वर्ष की अवस्था में इस नश्वर एवं स्वप्नवत संसार को आप अलविदा कह गये, लेकिन जब तक भौतिक शरीर में रहे आपने अपना काम तो किया ही, हम सबके लिए इतना आदर्श स्थापित कर गये, इतने साधना के सूत्र, आचरण की खुशबू छोड़ गये कि हम आपके सान्निध्य में जो कुछ प्राप्त किये उसको मूर्त रूप दे सकें।

आपका जीवन स्वयं एक दिव्य साधना के रूप में प्रस्तुत था। आपका एक-एक पल पूजा, एक-एक कदम महातीर्थ एवं एक-एक शब्द वेद-शास्त्र से कम नहीं थे। आपके सान्निध्य में या आपके निकट जो भी आता वह संपूर्ण वात्सल्य भाव से सराबोर होकर ही वापस लौटता। उन सबको ऐसा महसूस होता कि मैं दुनिया का पहला खुशनसीब हूं जिसे गुरुदेव का इतना प्यार मिला है।

हमेशा मुस्कान से भरा आपका मुखमंडल एवं दिव्य आभामंडल प्रकृति की गोद में खिले सूरज की भांति प्रतीत होता था जिसके प्रकाश में सभी प्रकाशित हो जाते। आपके द्वारा दिये गये सभी संदेश आपके रहनी एवं आचरण की खुशबू के रूप में था। क्योंकि आपका ज्ञान शास्त्रों से नहीं किंतु स्वयं की साधना से आया था। आपका ज्ञान पुराणों से नहीं प्राणों से निकला था। आपका साधना सूत्र किसी ग्रंथ से नहीं बल्कि एक निर्ग्रंथ चित्त की उपज थी। यही कारण था कि दिव्य रहनी की खुशबू अनायास अपनी ओर खींच लायी और उसका परिणाम एक व्यवस्थित समाज की स्थापना हो गयी। तथा आपके दिव्य आलोक में सभी साधक अपनी साधना में लग गये।

जिस प्रकार फलों से लदे हुए पेड़ पर कोई पत्थर फेंकता है तो भी वह बदले में फल ही वापस करता है। ऐसा ही आपके जीवन में जब कभी भी कोई आलोचना और कटु शब्द के पत्थर फेंके आपने बदले में हमेशा प्रेम के मीठे फल दिये। आपने हम सबको जो जीवंत संदेश दिया है उन संदेशों को खुद के जीवन में उतारकर ही सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

सत्य तो यही है आपके सान्निध्य में रहकर जो दिव्यानुभूति हुई, प्रत्येक क्रियाकलाप से जो प्रेरणा मिली उसके साथ कदम-से-कदम मिलाकर जीवन यात्रा शुरू कर उन आदर्शों को अपने प्रत्येक क्रियाकलाप में स्थापित करें यही आपके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आपके पावन श्री चरणों में शत-शत नमन करते हुए श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूं। और अंत में एक कवि की रचना प्रस्तुत करते हुए श्रद्धा भाव के साथ—

करम ऐसा किया तूने, भुलाया जा नहीं सकता।
तेरे एहसान का बदला, चुकाया जा नहीं सकताॐ
अगर मुझको न मिलता तू, बड़ा मुश्किल गुजारा था।
जो पहुंचा ह बुलंदी पर, वो टूटा सा सितारा थाॐ
दिलों पे तेरा उलफत को, मिटाया जा नहीं सकता।
मेरे हर श्वांस पे गुरुवर, फकत अधिकार तेरा होॐ
मिला जो भी मिला तुझसे, मेरा क्या था क्या मेरा है।
तुम्हें दुनिया की दौलत से, रिझाया जा नहीं सकताॐ
बड़ी ऊंची तेरी रहमत, छोटी-सी जुबां मेरी।
तुम्हें गुरुवर समझ पाऊं, है हस्ती वो कहां मेरीॐ
तेरी रहमत को शब्दों में, सुनाया जा नहीं सकता।
जगत जीवन की साया हो, यूं ही तेरी इनायत काॐ
मुझे हो शौक दुनिया में, साहा तेरी इबादत का।
बिना तेरे तो जीवन को, सजाया जा नहीं सकताॐ

कबीर आश्रम पूर्णिया, बिहार

चाह गयी चिंता मिटी

ब्रह्मचारी रवीन्द्र

मेरा जन्म कबीरपंथी परिवार में हुआ। कबीर साहेब के सिद्धान्त के विषय में मैं बचपन में अपने दादा जी से सुनता था। वे कबीरपंथी साधु थे। गुरुदेव जी का कार्यक्रम लेते रहते थे। मेरे परिवार के लोग गुरुदेव जी की पुस्तकें पढ़ते रहते थे। परिवार में समय-समय से साधु-संतों का आना-जाना एवं सत्संग लगा रहता था। गुरुदेव जी की बीजक टीका-व्याख्या दादा जी मुझसे पढ़ाते रहते थे। पुस्तक पढ़ने से मेरा मन साधना करने को हुआ। सत्संग में आता-जाता रहता था। दादा जी मुझे साधु होने के लिए बहुत कहते थे। मैं मैट्रिक परीक्षा पास हो गया था। बहुत बार इलाहाबाद आने को मन करता था। मगर माता-पिता रोक देते थे। यहां के विषय में कई संतों से सुनता था। मेरे दादा जी एक बार मुझे राह खर्च और गुरुदेव जी के नाम से पत्र लिखकर दिये थे। मेरे ऊपर घर की जिम्मेदारी थी। मुझे लगता था कि मैं इन लोगों को छोड़ दूंगा तो कैसे रहेंगे। इसी बीच मेरी मां का देहांत हो गया। दादा जी शरीर छोड़ दिये। परिवार के लोग चाहते थे कि इनकी शादी कर दें। मुझे ऐसा लगा कि अब मुझे घर छोड़ना पड़ेगा। मैंने घर वालों से कहा—मैं दिल्ली जा रहा हूं। इलाहाबाद में ध्यान शिविर चल रहा था। दिल्ली न जाकर इलाहाबाद में उतर गया। आश्रम आ गया। गुरुदेव जी से मिला। यहां के संतों की रहनी-गहनी देखकर मुझे लगा कि जिसकी मुझे तलाश है वह मिल गया।

महापुरुषों के विषय में पुस्तकों में पढ़ता या सत्संग में सुनता था। संत करुणा के सागर होते हैं, सद्गुण सम्पन्न उनका जीवन निर्विकार होता है। संतत्व गुण एक कथा के रूप में ही है। लेकिन गुरुदेव जी की कथनी एवं करनी की समानता हमें देखने को मिला। गुरुदेव जी के पास कोई साधक आता था, उसे साधना में परिपक्व बनाते थे। जो जैसा रहता है वैसा ही बनाता है। गुरु जी पूर्ण वैराग्यवान साधनापरायण संत थे। मुझे अच्छा लगने लगा। वार्षिक अधिवेशन की तैयारी चल रही थी। कार्यक्रम के बाद मुझे बुलाये और पूछे कि तुम घर नहीं गये। मैंने कहा—अब घर नहीं जाऊंगा। मैं भी साधना करूंगा। घर के विषय में पूछे—कौन-कौन हैं? क्या काम करते हो? मैंने पूरी रामकहानी सुनायी। गुरु जी ने इस दास को अपने चरणों में लगा लिया। समय-समय से मिलने के लिए जाता था। साधना संबंधी चर्चा होती थी। गुरु जी नये साधक से पूछते थे—बेटा, मन कैसा है? घर जाने का मन तो नहीं करता है? मां-बाप से ज्यादा प्रेम-स्नेह गुरुदेव से मिला। कोई चीज की कमी नहीं होने देते थे। वर्षा का समय था। दो-तीन दिन तक लगातार वर्षा हुई। भण्डार घर की तरफ से चारदीवारी गिर गयी थी। गुरुदेव को मालूम हुआ। गुरु जी शान्त भाव से सुने और कहे यह संसार है। यहां अनेक प्रकार विघ्न-बाधाएं आकर चली जाती हैं। इसमें चिन्ता-फिक्र करने की बात नहीं है। सब ठीक हो जायेगा। तुम लोग प्रसन्न रहो। गुरुदेव कभी भी किसी परिस्थिति में दुखी नहीं होते थे। उनके जीवन में यह साखी चरितार्थ थी—

चाह गयी चिन्ता मिटी, मनुवा बेपरवाह।
जिसको कछु नहीं चाहिए, सोई साहनसाहû

गुरु जी साधकों को साधना की बात बताते थे। संसार और शरीर नश्वर है। विषय-भोग में क्षणिक सुख है। मन के विकार जीव के लिए शत्रु हैं। साधना में अग्रसर होने के लिए प्रेरित करते थे, जिससे जीवन शान्तिमय व्यतीत हो तथा जीव का कल्याण हो। कहा गया है कि महापुरुष दूसरों के लिए जीते हैं। गुरुदेव जी अपना काम किये ही कल्याणार्थियों के लिए लेखनी के माध्यम से साधना-पथ तैयार कर दिये। सच्ची श्रद्धांजलि तब मानी जायेगी जब हम उनके बताये हुए ज्ञान मार्ग में चलें।

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

एक अविस्मरणीय परिचय

डॉ. सन्तोष कुमार मिश्र

मैं सद्गुरु अभिलाष साहेब को विगत दस वर्षों से ही जानता हूं, जब से मैं इलाहाबाद के प्रीतमनगर मुहल्ले में रहता हूं। मैं संस्कृत का विद्यार्थी हूं तथा अध्ययन-अध्यापन में मेरी रुचि है। मैंने कबीर पारख संस्थान द्वारा प्रकाशित कई पुस्तकों को खरीद कर पढ़ा, जिनमें अभिलाष साहेब द्वारा लिखित 'वेद क्या कहते हैं?', 'उपनिषद् सौरभ', 'गीतासार' मुख्य हैं। उनकी मंत्रों-श्लोकों की सहज एवं समाज-सम्मत व्याख्या से मैं प्रभावित हुए बिना न रह सका। इन व्याख्याओं ने मेरे अन्दर नई समीक्षा दृष्टि विकसित कर दी। मैं गुरु जी से मिलने को आतुर हो उठा। मैं कबीर आश्रम के संतों से प्रायः पूछा करता—'गुरु जी इस समय कहां हैं?' 'इलाहाबाद में नहीं हैं।' के निषेध उत्तर से मैं निराश हो जाता।

एक दिन की बात है। रविवार की शाम को मैं सब्जी खरीदने बाजार जा रहा था और गम्भीर ध्वनि सुनाई पड़ी। मैंने कबीर मंदिर में प्रवेश किया, जहां प्रवचन हो रहा था। गुरु जी ही बोल रहे थे। उनके प्रथम दर्शन से मुझे ऐसा लगा, जैसे कबीर जी का ही पुनर्जन्म हुआ हो। हलकी बढ़ी दाढ़ी, पुतलियों का स्वभावतः धीरे से ऊपर की ओर उठना, चेष्टारहित हस्त-मुद्रा में उपेदश-वाणी का सहज प्रोद्भाव हो रहा था। मैं मुग्ध-सा सुनता रहा।

अब तो कबीर आश्रम से मेरा लगाव और गहरा हो गया। मैं प्रायः रविवार को प्रवचन सुनने लगा, वार्षिक अधिवेशन में आने लगा तथा समय मिलने पर ग्रन्थालय में बैठकर अध्ययन करता।

कबीर आश्रम में गुरु जी द्वारा स्थापित एक विशाल ग्रन्थालय है, जिसमें वेद, पुराण, इतिहास, दर्शन, साहित्य, धर्म, राजनीति, भक्ति प्रभृत्ति असंख्य पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का संग्रह है। बैठकर पढ़ने की उत्तम व्यवस्था है।

जून 2010 की बात है, मुझे राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति में आयोजित होने वाली ऑल इण्डिया ओरिएण्टल कान्फ्रेन्स के लिए 'पतंजलि योग दर्शन में अविद्या' विषय पर शोध-पत्र तैयार करना था। मैं ग्रन्थालय में बैठकर दर्शन की किताबों में उलझा था, तभी एक संत जी आये, उन्होंने मुझसे कहा कि मैं पिछले तीन-चार दिनों से देख रहा हूं कि आप यहां आ रहे हैं। अभी मैंने आपकी गाड़ी बाहर खड़ी देखी, तो मिलने चला आया। मुझे अपना परिचय दीजिये। परिचय प्राप्ति के पश्चात उन्होंने मुझसे कहा—'आइए, आज आपको गुरु जी से मिलाता हूं, कभी मिले हैं आप?' उनके ऐसा कहते ही मानो मेरी मुराद पूरी हो गयी। मैंने कहा—'व्यक्तिगत रूप से तो नहीं, हां कभी-कभार रविवार की शाम को प्रवचन सुनने का अवसर मिला है।' संत जी मुझे गुरु जी के कमरे में ले गये। गुरु जी अपने आसन पर शान्त भाव से बैठे थे। चमकती आंखें, देदीप्यमान चेहरा, कमरे का दिव्य वातावरण मानो अन्तरिक्ष में सूर्य आलोकित हो रहा था। अभिवादन-परिचय के उपरान्त गुरु जी ने मुझे बैठाया और पूछा—'किस विषय पर कार्य चल रहा है?' मेरे बताने पर उन्होंने मुझसे कहा—'पतंजलि योग पर मेरा भाष्य पढ़ा क्या? ग्रन्थालय में मेरी किताबें लगी हैं।' मैंने कहा—जी, आपके भाष्य से ही मैं पतंजलि अविद्या का स्वरूप

अच्छी तरह जान सका; नहीं तो व्यास भाष्य से अविद्या को समझना बड़ा दुरूह है। फिर वे बोले, 'विभूतिपाद' भी पढ़ा क्या? मैंने कहा, नहीं गुरु जी। उन्होंने कहा—'उसे अवश्य पढ़ना।'

वस्तुतः पतंजलि योग-दर्शन में कुल चार पाद हैं—समाधिपाद, साधनपाद, विभूतिपाद तथा कैवल्यपाद। अज्ञान निरूपण साधनपाद के अन्तर्गत है, किन्तु विभूतिपाद को बिना पढ़े अज्ञान की सम्यक् समीक्षा नहीं हो सकती।

पुनः गुरु जी ने कहा—'ग्रन्थालय में कोई अव्यवस्था तो नहीं, ग्रन्थ सलीके से लगे हैं न?' मैंने कहा—जी गुरु जी।

प्रथम परिचय में इतनी बातें मैं हतप्रभ था। एक तो महापुरुष से मिलन का सौभाग्य, तिस पर इतना स्नेह।

संत-महापुरुषों का व्यक्तित्व ही ऐसा होता है। उनका क्षणमात्र का दर्शन हमारे अन्तर्मन को हिलोर देता है। हमारा मुखमण्डल प्रोद्भासित हो उठता है। विचारों में मुखरता आ जाती है या हमारी प्रवृत्ति सत्यमयी हो जाती है।

अब गुरु जी हमारे बीच नहीं हैं; उनका महाप्रयाण हो चुका है, किन्तु उनके शब्द हमारे विचार-व्यवहार में रच-बस गये हैं।

प्रीतमनगर, इलाहाबाद

निर्मोही निस्पृह

सुभाष भाई मूलजी भाई पटेल

मेरे पूज्य पिताजी सद्गत श्री मूलजी भाई हरगोविन्द दास और माता सद्गत श्रीमती लक्ष्मीबेन दोनों ही स्वरूपलीन पूज्यपाद सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी के अनन्य निष्ठावान भगत थे। मेरे अनुज डॉ. महेन्द्र भाई जी जो अमेरिका के एक शासकीय अस्पताल में कार्यरत हैं भारत जाकर गुरुदेव जी से दीक्षा लिए। सद्गुरु जी का प्रथम दर्शन सन् 1972 में हमारी जन्मभूमि ग्राम—नानाअमादरा, बोड़ेली, वडोदरा, गुजरात में हुआ। पहले भी हमारे घर में पूज्य संतों का आगमन होता था लेकिन हम सभी परिवार जनों को सद्गुरु कबीर साहेब जी के सत्य ज्ञान, भक्ति, वैराग्य आदि से ओतप्रोत सर्वोत्तम विचार पूज्य श्री साहेब जी से ही प्राप्त हुआ। साहेब जी का हमारे घर में अनेकों बार आगमन होता रहा और उनका सान्निध्य लाभ मिलता रहा है, लेकिन जब हम सपरिवार अमेरिका रहने लगे तब वह लाभ मिलना बंद हो गया, इसीलिए हम (और अन्य भगत) लोग गुरुदेव जी को अमेरिका पधारने के लिए निवेदन करते रहे। उनकी आंशिक सहमति मिली भी लेकिन वे कभी अमेरिका आने के लिए उत्साहित नहीं हुए। इस सम्बन्ध में हम लोगों ने अनेकों प्रयास किया, किन्तु सब असफल रहा। वे निर्मोही और निस्पृह महापुरुष थे। न उनका कहीं जाने का मन होता था और न ही कुछ देखने-सुनने का मन होता था। ऐसे महामना को मेरा बारम्बार नमन।

सद्गुरुदेव जी अत्यन्त सरल एवं परम कृपालु थे। वे हमारी आध्यात्मिक प्यास को बुझाते थे साथ ही हमारी पारिवारिक एवं व्यावहारिक समस्याओं का भी सरल एवं सुन्दर समाधान सुझाते थे। उनके बताये पथ पर चलकर मैं बहुत सुखी हूं। उनके आदेश, निर्देश और उपदेश ही मेरे भविष्य जीवन के सम्बल हैं। मैं, मेरे बच्चे और परिवार के अन्य सदस्य जो अमेरिका में रहते हैं पूज्य श्री साहेब जी से फोन द्वारा आशीर्वाद लेते रहते थे। वे सब समय शरीर-संसार की नश्वरता और आत्मा की अमरता का ही उपदेश देते रहते थे। सद्गुरु देव जी के चले जाने के बाद उनका महत्त्व और अधिक समझ में आने लगा है। हम समस्त परिवार जन सद्गुरु देव जी की यादों में श्रद्धाजंलि अर्पित करते हैं।

नाना अमादरा, वडोदरा, गुजरात। वर्तमान में अमेरिका

अध्यात्म जगत के सफल विज्ञानी

ब्रह्मचारी भोला

इस बात को सभी जानते हैं कि संसार में कोई अजर-अमर होकर नहीं जन्मा है। यह प्रकृति का नियम है कि जो जन्म लेता है, उसकी एक दिन मृत्यु अवश्य होनी है। जो फूल खिलता है, वह मुरझा जाता है; जो जुड़ता है वह एक दिन टूट जाता है। डाली में लगा हुआ फल पककर नीचे जमीन में गिर कर नष्ट हो जाता है। यह प्रकृति का शाश्वत नियम है। इससे कोई नहीं बच सकता, परिवर्तन होना पक्का है। चाहे वह राजा हो या त्यागी, वैरागी, तपस्वी हो, चाहे महल में रहता हो या झोपड़ी में। एक दिन सबको सब कुछ छोड़कर जाना ही पड़ेगा।

अन्तर इतना है कि कोई संसार में अपनी बुरी कमाई को छोड़कर जाता है, तो कोई अच्छे कर्म करके अपनी यश-सुगंधि, अपने पदचिह्न छोड़कर जाता है तथा जीवन रहते-रहते मुक्त हो जाता है, आवागमन से रहित हो जाता है। जीवन जीने तथा बिताने की भी कला होती है। जीवन जीने का अर्थ है, सम्यक ज्ञान, सम्यक आचरण, सरलता, विनम्रता आदि गुणों से सम्पन्न होना। इसकी आवश्यकता सबके लिए है। बस जिज्ञासा होनी चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि मनुष्य आत्मनिरीक्षण, आत्मपरीक्षण तथा आत्मसमीक्षा करें। अपने गुण-दोषों का अवलोकन करें। जन्म जीवन का आरम्भ बिन्दु है, और मृत्यु उसका अन्तिम बिन्दु है। जहां केवल जीव है, वहां भी जीवन नहीं होता, जहां केवल शरीर है, वहां भी जीवन जैसी कोई बात नहीं है। शरीर और जीव के सम्बन्ध को जीवन कहते हैं। गुरुदेव जी ने कहा है—"तन जीव मिलन की स्थिति यह जीवन की बेला है।"

पूज्य गुरुदेव जी जीवन भर हमें यही सिखाते, पढ़ाते तथा कहते रहे कि मानव जीवन से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है। इसी जीवन में कल्याण का काम कर सकते हैं। यह कर्म भूमिका है, यह मानव जीवन एक अवसर है। चूक जाने पर यह पुनः नहीं मिलता है। मन एवं बुद्धि के विकास की सारी संभावनाएं हैं। सारी इन्द्रियां सुदृढ़ हैं। जिसमें सद्गुणों को बटोरकर निश्चिंत तथा शान्तिपूर्ण जीवन जी सकते हैं। जिसे व्यवस्थित ढंग से जीवन जीने की कला आ जाती है उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। वह प्रतिकूलता में न तो दुखी होता है और न अनुकूलता में फूलता है। सब समय सामान्य रहता है। न कुछ पाने की इच्छा और न मिटने का गम। मनुष्य क्या नहीं कर सकता है। सब कुछ कर सकता है। पूज्य गुरुदेव जी हमें साहस दिलाते थे तुम क्या नहीं कर सकते, अपने संकल्प को मजबूत बनाओ, प्रसन्न होकर जीयो। कभी शोकित न हो। कुछ अपना है ही नहीं फिर किसकी सोच, किसका हर्ष? गुरुदेव जी ये बातें हम लोगों के बीच कहते रहते थे कि प्रसन्नता ही जीवन है, हंसकर जीना। प्रसन्न होकर जीने का सौभाग्य मनुष्य को ही मिला है अन्य प्राणी को नहीं।

कहा भी गया है—

कल का दिन किसने देखा है, आज के दिन को खोये क्यों?
जिन घड़ियों में हंस सकते हैं, उन घड़ियों में रोये क्यों?

पूज्य गुरुदेव जी हमेशा कहते रहे कि सब समय प्रसन्न रहो, मौत की याद रखो। वे सब समय मौत की याद करते रहते थे। जिसे न जीने की इच्छा न मरने का शोक (गम), फिर उसे किस प्राणी-पदार्थ का दुख। वे

अपना अनुभव हम सबके बीच बताया करते थे कि जब मुझे एक बार बेहोशी आयी थी उस समय की निश्चिन्तता, शान्तिपूर्ण जीवन का जो सुख था या शान्तिपूर्ण जीवन का जो अनुभव हुआ, वैसी शान्ति कहीं बाहर नहीं है। उस निश्चिंतता एवं शान्तिपूर्ण जीवन को अपनाने की जरूरत है। जो सब समय मौत की याद रखते हैं, वे कभी दुखी तथा अप्रसन्न नहीं होते। पूज्य गुरुदेव जी पहले अपने आप में अनुभव तथा निरीक्षण-परीक्षण कर लेते थे, अपने को खरा उतार लेते थे, हृदय रूपी तराजू में तौल लेते थे फिर वे अपनी बात हम सबों के बीच रखते थे।

पूज्य गुरुदेव जी हम सबको अन्त की याद दिलाया करते थे। संत अन्त की ही तो बात बताते हैं। जो अन्त को याद रखता है वह कभी ऐसा कर्म नहीं करता जिससे दुख हो, अशान्ति, पीड़ा मिले। दुखी तो वह होता है जो अपने मन को सांसारिक वस्तुओं एवं प्राणी-पदार्थों में लगाता है, जिससे क्षणिक सुख मिलता है। असली सुख-शान्ति तो सब कुछ की याद भुला देने में है। ये सारी बातें गुरुदेव कहते रहते थे। सत्य कभी पुराना नहीं होता और न कभी कहीं उसका अभाव होता है। वह तो सब समय नया ही बना रहता है। वह कभी धूमिल नहीं होता। जैसे सूर्य का प्रकाश स्वयं अपने आप में है; सूर्य का प्रकाश कभी मिटता नहीं है। उसी तरह ज्ञान तथा सत्य का कभी अभाव नहीं होता।

गुरुदेव जी का हृदय मातृवत—जैसे माता अपने पुत्र को चलना-बोलना, खाना-पीना, उठना-बैठना सब कुछ सिखाती है। यदि कोई गलती करता है, तो दो चांटा भी लगा देती है। कुछ देर बाद हृदय से लगा लेती है। ठीक इसी तरह गुरुदेव जी थे। जो सबको बिना भेदभाव किये गले से लगा लेते थे। कैसे बैठना चाहिए, कहां बैठना चाहिए, क्या खाना चाहिए, कैसे बोलना चाहिए, ये सारी बातें व्यावहारिक तो हैं ही, आध्यात्मिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण हैं। जितना प्रेम, स्नेह, गुरुदेव जी हम सबको देते थे उतना प्रेम, स्नेह, प्यार कोई माता-पिता अपने पुत्र को क्या दे पाते होंगे। वे अध्यात्म के विज्ञानी तो थे ही, व्यवहार क्षेत्र के भी बड़े मर्मज्ञ थे। जो सब को प्रेम की डोर में बांधकर समाज या परिवार में रहकर चलने का रास्ता बताते थे। उनका हृदय करुणा, प्रेम से लबालब भरा हुआ था। उनका पूरा व्यक्तित्व ही अद्‌भुत था। वे हमें दुखी तथा निराश कभी नहीं होने देते थे।

शल्य चिकित्सक—पूज्य गुरुदेव जी हम सबके दुख-दर्द को जानते-समझते थे, इसलिए वैसी ही हमें राह बताते तथा सलाह देते थे। वे चाहते थे कि सब लोग मन की पीड़ा से मुक्ति पायें। वे एक शल्य चिकित्सक की तरह थे। हमारे मन में विषय-विकारों तथा माया-मोह का कल्मष भरा हुआ है, उसे अपने ज्ञान, वैराग्य की तेज तलवार से काटकर निकालने का काम करते रहते थे। जैसे डाक्टर रोगी के रोग को आपरेशन द्वारा निकालकर उसे रोग से मुक्त कर देता है वैसे गुरुदेव जी भी हमारे अन्दर के सभी दोष-दुर्गुणों को निकालने का काम करते थे। वे यही कहते थे कि कायर मत बनो, तुम क्या नहीं कर सकते? तुम अपने आपको पहचानो, गुरुदेव जी का हृदय ऐसे ही था, वे आध्यात्मिक जगत के विज्ञानी थे।

हम आज तक सुनते ही आ रहे हैं कि कबीर, बुद्ध, महावीर, सुकरात आदि महापुरुषों ने ऐसे जीवन जीया, उन्हें कितनी यातनाएं सहनी पड़ीं, उनके गुण-चरित्र-आचरण ऐसे थे, नियम-संयमपूर्वक जीवन जीये। लेकिन आज हमारे प्रत्यक्ष पूज्य गुरुदेव जी का जीवन था। इससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि सभी महापुरुष ऐसे ही रहे होंगे। गुरुदेव जी खान-पान, आसन, व्यायाम, घूमना, सोना-जागना, मनन-चिन्तन, ध्यान-साधना सब में संयमित व समय के पाबन्द थे।

पूज्य गुरुदेव जी का पूरा जीवन अध्यात्म से भरा हुआ था। यही कहते थे, अगर सुखी रहना चाहते हो तो सारे सम्बन्ध तथा आसक्ति को मिटाते रहो। सब कुछ को छोड़ने से ही सब सुख मिलता है। खाली मन में अध्यात्म जाग्रत होता है। इसके लिए अपने मस्तिष्क को खाली रखना होगा। जब तक दिमाग में क्रोध, ईर्ष्या,

अहंकार भरा रहेगा तब तक राग-द्वेष की लहरें उठती रहेंगी। अहंकार हमें किसी के सामने झुकने नहीं देता है।

पूज्य गुरुदेव जी हमें ऐसा ज्ञान-धन देकर गये जो कभी घटने वाला नहीं है। ऐसा साधु समाज छोड़कर गये जिससे हम सभी को शिक्षा लेनी चाहिए। वे इतने सरल थे कि उनकी सरलता के गुणगान सब करते हैं और करते रहेंगे। बहुत-से लोग उनको नहीं समझ पाते थे, लेकिन उनके न रहने पर उनकी याद में आंसू बहाये हैं। उनकी भाषा बहुत ही मीठी तथा सरल और सहज थी। सामान्य-सा व्यक्ति उनके ग्रन्थों को पढ़कर लाभ ले सकता है। गूढ़ शब्दों को वे एकदम से सरल बनाकर कहते थे तथा लिखते थे। सभी मान्य ग्रन्थों को आदर देते थे। सभी ग्रन्थ मनुष्यों के बनाये हुए हैं, इसलिए सबको पढ़ना चाहिए और सबसे सार ग्रहण करना चाहिए। वे मानव मात्र के पुजारी थे, इसलिए वे कहते थे कि सब का सब दिशा में समान अधिकार है।

पूज्य गुरुदेव जी जाति-पांति, मत-पंथ का भेदभाव नहीं रखते थे। वे स्वच्छता तथा पवित्रता पर ज्यादा ध्यान देते थे। उनका हर पहलू अध्यात्म से भरा हुआ था। उनके हर पहलू में चमक थी। वे अथाह सागर की तरह थे, उनमें सब गुण समाये हुए थे। हम सबको चाहिए कि उनके ज्ञान तथा विचारों को अपने जीवन में धारण करके ज्ञान, भक्ति तथा वैराग्य में अपने आपको खरा उतारें। हमारे जीवन में भक्ति, ज्ञान, वैराग्य है तो गुरुदेव जी हमारे साथ हैं।

धन्य ऐसे महान आत्मा! बिरले होते हैं ऐसे गुरुदेव। ऐसे महापुरुष के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम करता हूं और मैं यह संकल्प करता हूं कि गुरुदेव जी के बताये हुए रास्ते पर चलकर जीने का प्रयास करूंगा।

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

ज्ञान का अमृत

ब्रह्मचारी गणेश

1. गुरुदेव के दर्शन और उनसे मिलना—नवम्बर 2011 में पढ़ाई छोड़कर भिलाई से घर जा रहा था। ट्रेन में एक संत से कुछ बातें करने के बाद मन में आया कि जिन्दगी कब खत्म हो जाये कुछ पता नहीं तो फिर ऐसे अमूल्य समय को व्यर्थ में क्यों खोया जाये। इसे खोना अमूल्य रत्न को खो देना है। जीवन-कल्याण की कामना होने लगी। कुछ दिन बीतने के बाद मन में निश्चय कर लिया कि अब मुझे साधना मार्ग में जाना चाहिए। इसका पता माता-पिता को नहीं था कि यह साधु होने जा रहा है।

जब सोन गांव में संत श्री धर्मेन्द्र साहेब जी का कार्यक्रम था। वहां जाकर साहेब जी से विनती किया कि साधना मार्ग में चलना चाहता हूं। साहेब जी ने कहा कि संकरी आश्रम में गुरुदेव जी का कार्यक्रम है। सुनकर लगा मानो मेरा भाग्य उदय हो गया।

गुरुदेव जी से 12 फरवरी 2012 रविवार को सुबह नौ-दस बजे मिलने गया था। मिलने के बाद मैंने गुरुदेव जी से निवेदन किया कि इस अबोध बालक को भी अपनी शरण में ले लीजिए। गुरुदेव जी कुछ देर मौन रहे फिर बोले—ठीक है।

शाम के चार-पांच बजे गुरु जी से मिला तो गुरुदेव जी से इतना प्यार मिला जितना प्यार माता-पिता से नहीं मिला था। मानो जो पौधा सूख रहा था उसे पानी मिल गया, डूबते हुए को सहारा मिल गया, चलते हुए

को गाड़ी मिल गयी, और प्रेमी को प्रेम का सागर मिल गया। मुझे गुरुदेव जी से अनन्य प्रेम मिला है।

भूल गया था अज्ञान में, अपने आपका नाम।
बोध कराया जिसने, अभिलाष है उसका नाम॥

2. गुरुदेव का ज्ञान धन—गुरुदेव के ज्ञान-वैराग्य के बारे में कहना सूरज को दीपक दिखाना है। गुरुदेव जी का ज्ञान ऐसा था कि जो भी एक बार सुन लेता वह उस ज्ञान का दीवाना हो जाता था। अर्थात गुरुदेव के दीवाने हो जाते थे। गुरुदेव जी वही कहते थे, वही ज्ञान देते थे जिस ज्ञान पर वे रहा करते थे, जीया करते थे।

दीप जलाये ज्ञान का, मिटा दिया अज्ञान।
निर्मल सत्य ज्ञान देकर, कर दिया कल्यान॥

जब गुरुदेव जी ज्ञान-वैराग्य की बात बताते थे तब वे जीवन की उलझी हुई गुत्थी को ऐसा सुलझा देते थे कि जीवन में कहीं उलझन नाम की कोई चीज ही नहीं रह जाती थी।

3. साधना—गुरुदेव जी सभी भक्तों और साधकों को हमेशा साधना करने की ही सीख देते थे। लोग आपसे मिलने जाते थे तो अपने कार्य को छोड़कर लोगों से मिलते थे और कहते थे कि साधना करो और कमर कसकर लगे रहो, हार मत मानना। क्योंकि लगे रहने से ही मन शांत रहेगा और तभी कल्याण हो सकता है।

आप कहा करते थे कि यह जीवन दो दिन का है। शरीर कब छूट जाय इसका कोई ठिकाना नहीं है। इसलिए इसी समय अपना कल्याण कर लेना चाहिए।

एक संस्मरण याद आया—एक दिन सुबह के तीन बजकर चालीस मिनट हो रहा था। गुरुदेव जी बीजक मंदिर की छत पर टहल रहे थे। मुझे बुलाकर कहे कि बेटा, इतनी जल्दी उठ जाते हो। मैंने कहा—जी, नींद जल्दी खुल जाती है। गुरुदेव जी ने कहा—इस शरीर को छोड़े रहना क्योंकि यह कभी भी छूट सकता है। इसके छूटने के पहले ही इसे छोड़े रहना। और साधना क्षेत्र में अन्त समय तक लगे रहना है क्योंकि मन कभी भटका सकता है। सावधान रहना, सावधानी ही साधना है।

गुरुदेव कहा करते थे कि सेवा, स्वाध्याय और साधना में मन लगाकर लगे रहना चाहिए। सेवा करने से मन शुद्ध रहता है। आप कहा करते थे—

आपा मिटाया आप का फिर मिट गया संसार है।

अर्थात अपने अहंकार को मिटा दो और संसार के प्राणी-पदार्थों से कुछ भी चाहना नहीं रहेगी तब मानो संसार मिट गया है। आपकी ही पंक्तियां आपको समर्पित हैं—

जिन्दगी की दौड़ तुमने मेट डाली।
कर दिया विश्रांति जीवन में निराली॥
जन्म जन्मों की पिपासा हुई तर्पित।
तेरी यादों में सुमन श्रद्धा समर्पित॥

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

पेट में मल-विकार न रहे और हृदय में मनोविकार न रहे, यही जीवन का सच्चा सुख है। सारी भौतिक उपलब्धियां क्षणिक हैं। उनका क्या अभिमान? सब मनुष्य अपने-अपने मन के उद्वेग में जीते हैं। तुम्हारे पास भी मन है, उससे सावधान रहो, साथ-साथ दूसरे के मनोद्वेग से भी सावधान रहो। जितना कम मनुष्यों से सम्बन्ध रखो, अच्छा है। सम्बन्ध में ही व्यवहार का विकार आता है। जितना कम व्यवहार रहेगा उतना कम विकार आने की संभावना रहेगी। इस शारीरिक झमेले में ही बंधन-मोक्ष के काम होते हैं। अतएव अति सावधानी की आवश्यकता है।

(पूज्य गुरुदेव जी : ऊंची घाटी राम की)

चलता-फिरता विश्वविद्यालय

साध्वी सुप्रिया

गुरुदेव जी एक बार संत समाज सहित नागपुर में विद्वान बौद्ध भिक्षु पूज्य श्री भदन्त आनन्द कौशल्यायन जी से मिलने गये। मिलते ही सर्वप्रथम स्वागत के स्वर में कौशल्यायन जी ने कहा—"यह चलता-फिरता विश्वविद्यालय किधर से आ रहा है?"

सच है गुरुदेव जी एक विश्वविद्यालय की तरह थे। ऐसा विश्वविद्यालय जो देश के विभिन्न नगर, गांव एवं गली-गली में पहुंचकर लोगों को जीवन का शास्त्र पढ़ाता था।

पूज्यवर गुरुदेव जी के दर्शन सर्वप्रथम मुझे 2008 ई. में मेरी जन्मभूमि उरला (छ.ग.) में हुए। इस प्रथम दर्शन में ही आपके नियम, व्यक्तित्व एवं विचारों से मैं अत्यन्त प्रभावित हुई। उरला ग्राम में तीन दिनों का आपका सत्संग कार्यक्रम था। वहां आप गुजरात से पधारे थे। ट्रेन लेट होने के कारण आने में आपको काफी विलम्ब हो गया था। जब आप वहां पहुंचे तब तक सत्संग का समय हो चुका था। समय का ध्यान रखते हुए गुरुदेव जी बिना स्नानादि किये ही थोड़ी देर में मंच पर आ गये। उस दिन मुझे लगा कि वास्तव में जो महापुरुष होते हैं वे ही समय और नियम की कीमत समझते हैं। उसी दिन मैंने निश्चय किया कि ऐसे ही महापुरुष के सान्निध्य में रहकर मैं साधना करूंगी। गुरुदेव जी की आवाज सुनते ही मुझे ऐसा लगा कि आपकी वाणी में कितनी गम्भीरता एवं मधुरता है। आपके उस थोड़े समय के सान्निध्य ने मेरे जीवन को बदल दिया।

गुरुदेव जी ने नारी साध्वियों का एक ऐसा समाज दिया जो पूरे कबीरपंथ में नहीं है। आपने नारी समाज को आगे बढ़ाया, साथ-साथ आपने नयी सीख, नयी दिशा, नया मोड़ एवं नयी मंजिल प्रदान की। संतों की तरह साध्वी बहनें भी समाज में आगे आकर शिक्षा-उपदेश देती हैं। गुरुदेव जी ने जितना संतों को प्यार, स्नेह एवं अनुशासन दिया उतना ही हम लोगों को भी दिया। हां, घट का अन्तर होने से आपने उसकी अलग मर्यादा पर विशेष ध्यान दिया। आपके इन उपकारों से साध्वी समाज सदा ऋणी रहेगा। जैसे मां की महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता, वैसे ही गुरुदेव जी की महिमा अवर्णनीय है। आपका उपकार एवं महिमा मां के उपकार से भी अधिक है क्योंकि गुरुदेव जी का उपकार निष्काम है।

हम लोग बुद्ध, महावीर, कबीर, ईसा, विवेकानन्द एवं दयानन्द को नहीं देखे लेकिन गुरुदेव जी को देखे हैं। गुरुदेव जी को देखने के बाद सभी महापुरुषों के व्यक्तित्व का अन्दाज लगाया जा सकता है। गुरुदेव जी किसी भी सिद्धान्त को सर्वप्रथम अपने जीवन पर प्रयोग करते थे उसके बाद ही समाज को देते थे।

आपने सद्गुरु कबीर की इस पंक्ति को अपने जीवन में चरितार्थ किया—"जस कथनी तस करनी, जस चुम्बक तस ज्ञान"। आपकी दयालुता, सहनशीलता, अनासक्ति, विनम्रता, सरलता आदि पर सोचते हैं तो मन अपने आप मौन हो जाता है। धन्य-धन्य गुरुदेव!

हम छोटी-छोटी साधिकाएं जब भी गुरुदेव जी के पास जाती थीं आप प्यार से कुशल समाचार पूछते थे। आप प्रायः कहा करते थे कि ये छोटी-छोटी बच्चियां साधना मार्ग में आयी हैं बड़ी वीर हैं। तुम लोगों का बढ़ता हुआ समाज देखकर हमें खुशी हो रही है। गुरुदेव जी अत्यन्त खुशदिल थे। वे स्वयं हंसते थे और सबको हंसाते थे। आप जिस आंतरिक ऐश्वर्य से सम्पन्न थे उसी धन को सब में करुणा करके उदारतापूर्वक वितरण करते थे। आप व्यवहार-परमार्थ के गूढ़तम रहस्यों को

बड़ी सरलता से समझाते थे। आप सारे अंधविश्वास एवं अबोध से ऊपर उठे वीतरागी, त्यागी, तपस्वी महान संत थे। आप साधकों के लिए वैराग्य और जीवन की नश्वरता पर विशेष उपदेश सुनाते थे। इसके लिए कुसंग से बचने के लिए कहते थे। गुरुदेव जी समय का सही उपयोग स्वयं करते थे उसी की सीख हमें भी देते थे कि बेटी, खूब स्वाध्याय-साधना करो। कहीं भी जाओ सेवा में सदैव आगे रहो, जो सेवा में आगे रहेगा वही किसी क्षेत्र में आगे बढ़ सकेगा। गुरुदेव जी के जीवन से हर कला सीखने को मिली है। जीने की कला, मरने की कला, खाने की कला, पीने की कला, चलने की कला, बैठने की कला, उठने की कला, किसी से भी बात-व्यवहार करने की कला आदि।

गुरुदेव जी का व्यक्तित्व ही ऐसा चुम्बकीय था कोई भी व्यक्ति एक बार आपसे मिलता था, आपके विचार सुनता था तो प्रभावित हुए बिना नहीं रहता था। आप मंच पर बैठते तो लगता था कि मूर्ति बैठी है। बिना हिले-डुले घंटों बोलते रहते थे। आप प्रवचन में अंधविश्वास, चमत्कार, अंधमान्यता आदि का स्पष्ट खण्डन करते थे। साथ-साथ समस्त ग्रंथ-पंथ के सार-सत्य को स्वीकारते थे। आपकी सारग्राही दृष्टि अद्‌भुत थी। आपकी यादों में आंखों से आंसू बहते हैं। गुरुदेवजी का नाम लेते ही भावनाओं में हम डूब जाते हैं। हम ही नहीं बल्कि अन्य मत-पंथ के लोगों को भी आपका अभाव खटकता है। पूज्य गुरुदेव जी के पावन श्री चरणों में मैं हृदय से कोटि-कोटि नमन करते हुए श्रद्धांजलि समर्पित करती हूं।

कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम, मूरा, धमतरी, छ. ग.

विलक्षण व्यक्तित्व के धनी

धनदेवी भंडारी

आज से 7 साल पहले परम पूज्य गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब काठमाण्डू (नेपाल) पधारे थे। उनके श्रीमुख से सद्‌गुरु कबीर के बारे में जितना सुनी और पूज्य गुरुदेव को जितना निकट से देखी उससे ऐसा लगा कि आप वर्तमान के साक्षात कबीर ही हैं। उनके दिव्य गुणों से प्रभावित होकर उसी समय मैं उनसे दीक्षा प्राप्त कर उनकी शिष्या बन सौभाग्यशालिनी बनी।

मैं अपनी माता जिनकी उम्र अब 90 वर्ष के ऊपर है के द्वारा सद्‌गुरु कबीर साहेब के ज्ञान को थोड़ा बहुत जितना जान पायी थी उसी के आधार पर जीवन भर मांसाहार और अनैतिक क्रिया-कलापों से बचकर सन्मार्ग में चलने का साहस जुटा पायी। इसी क्रम में परम पूज्य गुरु जी की दिव्य वाणी सुनने-पढ़ने के बाद सद्‌गुरु कबीर को तथा उनकी वाणी एवं साधना को और निकट से समझ पायी।

पूज्य गुरु जी ज्ञान के अतुल भण्डार थे। उनका प्रवचन, कबीरवाणी पर उनकी निष्पक्ष व्याख्या, उनका व्यक्तित्व सब विलक्षण था।

26 सितम्बर, 2012 को अकस्मात उनके निधन की सूचना मिलने पर हम स्तब्ध रह गये। सूचना पाकर हम कई लोग गुरुदेव के पार्थिव शरीर के दर्शन के लिए इलाहाबाद आये, अन्तिम दर्शन किये। 28 सितंबर को अन्तिम यात्रा के कार्यक्रम में शामिल होकर भारी दिल से गुरु जी को विदाई देनी पड़ी।

गुरु जी की याद आते ही आंखों से आंसू छलकने लगते हैं। प्राकृतिक नियमों के आगे सब विवश हैं। इसलिए पूज्य गुरुदेव की दिव्य कृतियों को पढ़कर गुरु के उपदेश का पालन करते रहना ही उनके प्रति असली श्रद्धांजलि होगी।

मैं अपने हृदय से गुरुचरणों में श्रद्धांजलि समर्पित करती हूं।

श्री गुरुदेव जी की स्मृति में कबीर आश्रम द्वारा स्मारिका के प्रकाशन हेतु कुछ आर्थिक सहयोग करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, इसके लिए हार्दिक कृतज्ञता अर्पित करती हूं।

काठमांडू, नेपाल

तारों में एक तारा तू...

साध्वी विभूति

सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी का मुझे पहली बार दर्शन हुआ था अंता में। उसके पहले मैं गुरु जी का भजन गाया करती थी। तब मैं कहा करती थी कि दादा जी, यह संत कौन हैं और अभी हैं या नहीं? तब दादा जी कहते थे—हैं। मैंने कहा—मुझे दर्शन कब कराओगे? दादा जी ने कहा—तेरा भाग्य होगा तब दर्शन होंगे? मैं सोचा करती थी कि कब मेरा भाग्य जागेगा। संयोग ऐसा हुआ कि सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी अंता में आये। मैं गुरुदेव जी के दर्शन करने गयी तो दादा जी आगे थे और मैं पीछे थी, क्योंकि मैं डरती थी। मैंने गुरुदेव जी की बन्दगी की, लेकिन दूर से की। तब गुरुदेव जी ने कहा—बेटी, पास में आओ। मैं गुरुदेव जी के पास में गयी लेकिन मैं इतना भी नहीं जानती थी कि कैसे बैठना चाहिए, तब गुरुदेव जी ने कहा—बेटी, ठीक से बैठो। तब मैं ठीक से बैठी। फिर गुरुदेव जी ने पूछा—बेटी, कुछ पढ़ी हो। मैंने कहा—नहीं, गुरुदेव जी। तब गुरुदेव जी ने कहा—कुछ पढ़ना जानती हो। मैंने कहा—गुरुदेव जी, थोड़ा जानती हूं। तब गुरुदेव जी ने कहा—बेटी, तुम अभ्यास करना। सब सीख जाओगी। तुम विद्वान बन जाओगी। गुरुदेव जी के आशीर्वाद से आज मैं पढ़ लेती हूं। गुरुदेव जी! आपका आशीर्वाद बना रहे कि मैं ज्ञान-वैराग्य में आगे बढ़ती रहूं। गुरुदेव, कृपा करना, मेरे मन-मंदिर में प्रभु, आप रमा करना।

गुरुदेव जी! आप इस संसार में एक सागर थे। जिस प्रकार सागर में नदियां मिलती हैं और मिलते ही सब सागर में समा जाती हैं उसी प्रकार आप थे। आपका मैंने एक बार दर्शन किया तो ऐसा लगता था कि आपकी शरण में रहूं। आपकी कृपा से आज मैं आपकी शरण में हूं। मेरा शरीर स्त्री का है। इसलिए चरण में तो नहीं रह सकी लेकिन सान्निध्य में तो हूं। गुरुदेव जी! आपका सान्निध्य न मिला होता तो पता नहीं आज मैं कहां होती। गुरुदेव जी, आपने संत और साध्वियों के लिए बहुत उपकार किया है। आपने सन्त और साध्वी का आश्रम अलग-अलग बनवा दिया। नियम मुझे बहुत अच्छा लगता है क्योंकि अभी तक यह नियम कोई नहीं बनाया है। गुरुदेव जी, आपकी क्या महिमा कह सकती हूं। आप तारों में सूर्य समान थे। तारे तो अनेक हैं परन्तु सूर्य एक है। इसी प्रकार सन्त तो अनेक हैं, परन्तु सद्गुरु देव श्री अभिलाष साहेब एक हैं। आपके ज्ञान का प्रकाश फैला हुआ है। गुरुदेव जी की महिमा कहने में नहीं आती। आप कबीर साहेब जैसे थे। आपका ज्ञान मुझे इसी तरह आगे बढ़ाता रहे, रास्ते पर चलती रहूं। बस, यही मेरी श्रद्धांजलि है।

कबीर पारख आश्रम, धर्मपुरी, वडोदरा, गुजरात

मन और वाणी का मौन उच्चतम उपलब्धि और आत्यंतिक सुख है। इधर-उधर की बातों में मत पड़ो। मिलना-बिछुड़ना, हानि-लाभ, अनुकूलता-प्रतिकूलता, स्तुति-निंदा—सब केवल प्रपंच है। इनसे ऊपर उठकर रहना जीवन की सच्चाई है। पूर्व की घटनाओं पर दृष्टि डालिए। वे किस तरह एकदम मर चुकी हैं। आज और भविष्य में होने वाली घटनाएं भी एकदम मर जायेंगी। इन मरी घटनाओं की याद कर क्यों उनमें व्यर्थ सड़ते हो?

(पूज्य गुरुदेव जी : उड़ि चलो हंसा अमरलोक को)

आप गुण भारा

साध्वी स्मृति

ज्ञान, वैराग्य और प्रेम की यशस्वी धारा को प्रवाहित करने वाले तत्त्वदर्शी युगद्रष्टा, हमारे हृदय मंदिर के देवता परम आराध्य सद्गुरु देव जी दया, क्षमा, संतोष, करुणा, ममता की महान मूर्ति, उनकी स्मृति में जितना लिखा जाये कम ही होगा। प्रकाश पुंज महामानव 26. 09. 2012 को प्रातः 3 बजे के लगभग नश्वर शरीर और संसार को सदा के लिए त्याग दिये। जिस समय सुना कि गुरुदेव जी हम सबको छोड़कर चले गये तो ऐसा लगा कि मानो संसार में अब मेरा कोई नहीं है क्योंकि गुरुदेव जी को मैं जिस रूप में देखती थी उसी रूप में नजर आते थे, चाहे मां के रूप में चाहे पिता के रूप में, चाहे सद्गुरु के रूप में और चाहे भगवान के रूप में।

हीरे के पहल की गणना कर ली गयी है परन्तु गुरुदेव जी ऐसे थे कि एक भी पहलू का सर्वांग वर्णन नहीं किया जा सकता। गुरुदेव जी एक ऐसे महापंडित थे और हैं जिनके वचनों को एक बार पढ़ और सुन लेने के बाद लोग न चाहते हुए भी उनके ऋणी हो जाते थे।

गुरुदेव जी की पहली पुस्तक वैराग्य संजीवनी के प्रथम प्रकरण का तीसरा पद जगत की स्थिति और मुमुक्षु का दृष्टिकोण—

नौ मास उल्टा मुख किये माता उदर सोता रहा।
झिल्ली पड़ी इन्द्रिय कसी बेहोश हो दुख से घिरे।
इस भांति से दिन रैन हम गर्भाग्नि में जाते जरे।

इन पंक्तियों को पहली बार पढ़ी तो मेरा हृदय भीतर से आक्रान्त हो गया कि गर्भ में इतना दुःख और बाहर आने पर भी दुख, तब मेरे भीतर शुद्ध संस्कार जगे और धीरे-धीरे गुरुदेव की तरफ खींचती गयी।

गुरुदेव जी का व्यक्तित्व और कर्तृत्व ऐसा है जिन्हें व्यक्त नहीं किया जा सकता।

"किस मुख से गुण मैं तव गाऊं,
गाऊं तो नहीं मैं कह पाऊं।
है बुद्धि अल्प अति मोर आप गुण भारा,
गाऊं मैं सुयश तुम्हारा।"

परम आराध्य देव जी के पावन चरणों में मैं श्रद्धासुमन अर्पित करती हूं।

कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम, पोटियाडीह, छ. ग.

कम खाने में किसी को कोई असुविधा नहीं रहती। फिर भी लोग कम नहीं खा पाते। शीघ्र पचने वाला सादा और स्वच्छ, इसके साथ स्वल्प भोजन ही शरीर के लिए सुखद होता है। ऐसा खाने से ही पेट साफ रहता है। परंतु मनुष्य जीभ-चटोर है। वह जीभ-स्वाद के चक्कर में पड़कर असंयमित भोजन करके अपने मन और पेट खराब करता है। इस क्षणिक जीवन को सुख से बिताने के लिए सब तरफ संतोष का व्यवहार चाहिए।

(पूज्य गुरुदेव जी : उड़ि चलो हंसा अमरलोक को)

अपने गुरुदेव को समर्पित

श्रीमती मंजरी मेहरोत्रा

जिनका जीवन ज्ञान-भक्ति-वैराग्य का अनूठा संगम था, गंगा-यमुना-सरस्वती की त्रिवेणी की तरह।

"भव से तारक तुम्हीं, जन उद्धारक तुम्हीं,
संत प्यारे, सद्गुरु दीनबन्धु हमारे।"

तारों की छावं में विदा हो मायके से ससुराल में कदम रखा। रात का अंधेरा छंटने लगा था, सुबह का आगमन हो रहा था। अभी ससुराल में सबसे परिचित हो ही रही थी कि सुमधुर भजनों की स्वर लहरी सुनायी दी। मन आनंदित हो उठा और साथ ही जानने को उत्सुक भी कि ये मधुर भजनों की आवाज कहां से आ रही है? ससुराल में सबने बताया कि यहां घर के सामने ही 'कबीर मंदिर' है जहां हर सुबह 5-5.30 बजे तक भजन चलते हैं। यह था—कबीर मंदिर से हमारा पहला परिचय। फिर सासू मां के साथ गुरुदेव के दर्शन को गयी। एक ओजस्वी सहृदय संत पुरुष के दर्शन हुए। अब तक मायके में तो पूजा-पाठ और मंदिर ही जाना होता था। परंतु सत्संग का सौभाग्य नहीं मिला था। यहां आकर यदा-कदा अपनी सासू मां के साथ गुरुदेव के दर्शन व उनके बेबाक व ज्ञानमयी विचारों से मन में आत्मीय संतोष और जीवन की पूर्णता का आभास होने लगा। इतना ज्ञान, वैराग्य और अपनापन था गुरुदेव में कि मन बरबस ही उनकी ओर खींचता चला जाता था। मानो कोई चुम्बकीय आकर्षण हो। गुरुदेव मानव-मन के कुशल चितेरे थे।

"तू कहा मान मन, तेरा क्षण भंग तन, चेत प्यारे।
कर ले साधन भजन तू सकारेû
पानी का बुलबुला देह तेरी,
होगी इसके विनशते न देरीû"

वैसे तो मैं हमेशा गुरु जी से दीक्षित होने का आग्रह करती, पर गुरुदेव हंसकर टाल देते और कहते कि तुम पहले मेरी लिखी पुस्तकों को पढ़ो और तुमको तो मैंने वैसे ही अपनी बेटी माना है, फिर दीक्षा की क्या आवश्यकता है? गुरुदेव के इस तर्क के आगे मैं निरुत्तर हो जाती। पिछली गुरुपूर्णिमा से एक दिन पूर्व मैं अपने बड़े बेटे अभिषेक के साथ गुरुदेव के दर्शन के लिए गयी और मैंने पुनः गुरुदेव से अनुरोध किया। हमेशा की भांति गुरुदेव मुस्कुराने लगे। मैंने भी हठ किया कि आज हम घर नहीं जायेंगे जब तक आप 'हां' नहीं कहेंगे। तब गुरु जी बेटे से बोले कि तुम्हारी मां तो भई साध्वी होने जा रही हैं तुम उसके बगैर रह लोगे ना। तब बेटा कहने लगा, मुझे तो मां की जरूरत है। तब गुरुदेव ने मुस्कुराते हुए दीक्षित होने को हां कहा और मेरे मन की बरसों की साध पूरी हुई।

"सदा भक्ति वैराग्य सद्बोध में थिर,
हृदय की अनादी अविद्या मिटा दो।
मृतक दुख क्षण भंग अपवित्र तन से,
हटा प्रेम निज रूप में तू लगा लेûû"

गुरु जी इतने विनोदी स्वभाव के थे जब भी पति अतुल जी के साथ उनके दर्शन व आशीर्वाद को जाती तो पूछते कि प्यार से रहते हो न, झगड़ा तो नहीं करते। तो हम कहते कि ज्यादा मीठा अच्छा नहीं होता, थोड़ा नमकीन (झगड़ा) भी जरूरी होता है तो गुरु जी हंसने लगते और कहते कि मैं जानता हूं तुम दोनों में बहुत प्यार है। गुरुदेव से जुड़ी न जाने कितनी यादें हैं जिन्हें शब्दों में पिरोना संभव नहीं।

"यदी मुक्ति दिल से सही चाहते हो,
तो संसार से मन हटाना पड़ेगा।"

जब वार्षिक सत्संग कार्यक्रम प्रीतमनगर में होता था तब गुरु जी के कुछ भक्त हमारे घर पर भी रुकते थे। गुरु जी की कृपा से हमको उन सबकी सेवा का सुअवसर मिल सका, फिर चाहे वो ताऊजी (प्रेम प्रकाश, कोलकाता) हो या हरिद्वार वाले अंकल-आंटी। उन 3-4 दिनों की बातें और यादें आज भी मन को प्यारी-सी अनुभूति से भर देती हैं।

"हर्‌यो मम पीर दरश गुरु दइके।
अमृत मय उपदेश सुनायो, दुर्गुण दूरि करइकेû"

गुरुदेव सभी श्रद्धालुओं, भक्तों, शिष्यों के लिए समदर्शी भाव वाले थे। गुरुदेव के स्नेह के कारण ही उनके भौतिक शरीर के स्वरूपलीन होने पर देश के कोने-कोने से उनके अनुयायियों की अपार भीड़ उनके अंतिम दर्शन के लिए आयी और सभी के आंसू रुकने का नाम नहीं ले रहे थे। सबको यही लगता था कि हमने अपने किसी आत्मीय-मीत को खो दिया है। जिनको न अब हम कभी देख सकेंगे और न उनके ज्ञानमय आशीर्वचनों को सुन सकेंगे।

"पाया मानुष का तन, आज कर ले भजन, न भुलाना।
तेरे जीवन का क्या है ठिकाना।"

आज की भाग-दौड़ की जिन्दगी में जब कहीं भी सुकून नहीं, उस समय गुरु जी की ओजस्वी वाणी, उनके निर्भीक विचार इतने अधिक प्रासंगिक हैं कि वे जीवन के हर मोड़ पर कठिन परिस्थितियों में ज्योतिपुंज की भांति हमें राह प्रशस्त करते प्रतीत होते हैं। गुरुदेव अथाह ज्ञान का सागर थे। उनकी लिखी पुस्तकें हों या भजन वे सभी हमारे पथप्रदर्शक व मार्गदर्शक हैं।

"यह संसार सराय मुसाफिर दो दिन रहने आया है।
गृह सम्पत्ति में तू मत भूले ये सपनों की माया हैû"

उन जैसे वैरागी, तपस्वी का जीवन में आशीर्वाद हम आज भी महसूस करते हैं। हम गुरुदेव के बताये मार्ग पर चल सकें, उनकी दी हुई ज्ञान-वैराग्य की बातों को आत्मसात कर सकें, मन को वैरागी बना कर्मपथ पर आगे बढ़ सकें, यही हमारी गुरुदेव को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। हमारे गुरुदेव तो अमर हैं और उनका आशीर्वाद कल भी हमारे साथ था, आज भी है और कल भी रहेगा।

चायल कम्प्यूटर एकेडमी, प्रीतमनगर, इलाहाबाद

संयम आराध्य है। संयम से खाना, संयम से पीना, संयम से व्यवहार करना, संयम से बात करना, संयम से मिलना, संयम से बिछुड़ना, सब समय संयम की आराधना करना जीवन के सच्चे सुख का साधन है। इंद्रियों के स्वाद को जीत लेने पर ही शांति का सच्चा सुख मिलता है। लंपटता जितनी मात्रा में होगी, दुख उतनी मात्रा में होगा। लंपटता को शून्य की डिग्री पर कर देना साधक की साधना है। पूर्ण संयम जीवन की सर्वोच्च स्थिति है।

* * *

साधक को पीछे के कर्मों को न देखना चाहिए। उसके लिए न मन में पुलकाव आना चाहिए और न ग्लानि। अपितु वर्तमान में पूर्ण स्वच्छ रहने का प्रयास करना चाहिए। मन के सारे जंजाल को काट दो और वर्तमान में निर्द्वन्द्व रहो। क्या कर डाले और क्या नहीं कर पाये, इसका पश्चाताप न करो, अपितु आज मन को निर्दोष तथा समाधिलीन बनाओ। वर्तमान अपने हाथ में है और इसी में अमृतपद प्राप्त करना है।

(पूज्य गुरुदेव जी : बंदे करि ले आप निबेरा)

वो अंतिम दर्शन

शारदा, बहन उमा के साथ

सद्गुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपकार।
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावनहार॥

अनंत श्री विभूषित वात्सल्य दिवाकर पूज्यवर सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब का प्रेमामृत मुझ जैसे भवसागर में भटकने वाले को पार लगावनहार है। आपकी महिमा वर्णन करने में मेरी वाणी नहीं काम कर रही है। सदा-सदा के साथी पूज्यवर गुरुदेव जी आप हमारे बीच सशरीर न होते हुए भी हमारे हृदय में अमिट सलोनी छवि छोड़ गये हैं। आपकी सुकृपा से जो कुछ मुझ असमर्थ से गुणगान करते बन रहा है मैं उसे प्रस्तुत कर रही हूं।

हे गुरु जी! आप मेरी जिन्दगी में आये तो बहार आ गयी। गुरु जी! आपको पाकर मेरी जीवन धारा ही बदल गयी। गुरु जी आपकी वाणी से अमृत रस बरसता रहा जिसका हम रसपान करती रही। आप तो दया के सागर हैं। आपकी कृपा से मेरा जीवन धन्य हो गया। मेरे जीवन को नयी रोशनी मिली। आप तो सहजता के सागर हैं। भटके हुए राही को राह दिखाने वाले हैं। मैं आपकी वाणी को सुनते ही उसमें समाहित हो जाती हूं। गुरुवर! आपके प्रवचन और ज्ञान-भक्ति-वैराग्य का क्या कहना!

आपने कहा है—

देह क्षेत्र में कर्म प्रवणता, मन प्रदेश में अचल समाधि।
जीवन का साफल्य इसी में, जब मानस होने निर्व्याधि॥

गुरुदेव में जातिवाद के संस्कार नहीं थे। आप मानव समानता के पक्षधर थे। सद्गुरु कबीर के ज्वलन्त पारखी दृष्टि एवं मानवतावादी विचार पाकर तो आपके रोम-रोम में अद्भुत साहस का संचार हो गया। आपने खूब खुलकर जातिवाद का खंडन किया। परम पूज्य गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी के कर्तृत्व, व्यक्तित्व, उपदेश, प्रवचन एवं सत्संग से न मालूम कितने लोग प्रभावित हुए। गुरु जी को सबसे प्यार-स्नेह था।

मुझे गुरु जी कब और किसके द्वारा मिले? मेरे पिता श्री रामबोध जी सच्चे गुरु की तलाश में एक पथिक की तरह रास्ते पर निकल पड़े। मेरे माता-पिता को बहुत संघर्ष करना पड़ा कि हमको ऐसा गुरु मिले जो हमें मोह-माया एवं दैहिक, दैविक, भौतिक तापों से उबार सके और हमारा सही मार्गदर्शन हो। इसलिए उन्होंने दिल्ली, मथुरा, अयोध्या, कोलकाता भ्रमण किया तभी सौभाग्य से उनको एक दिन श्री रामकेश्वर जी मिले जो कि पारख सिद्धांत के अच्छे ज्ञाता हैं। उनसे अपने सच्चे गुरु की तलाश में भटकने का कारण बताया तो उन्होंने पारख सिद्धान्त का वर्णन किया। जिससे मेरे पिता जी उनकी ओर आकर्षित हो गये।

उन्होंने पिता जी को दो पुस्तकें—बीजक और भवयान दी, जिन्हें पढ़कर उन्हें आत्म संतुष्टि मिली। जिससे उनके भाग्योदय का मार्ग प्रशस्त हो गया। उन्हीं के द्वारा पिता जी इलाहाबाद गये, गुरु जी से सन् 1990 में मिले और हमारे घर संतों का आगमन हुआ जिससे हमारे घर का रहन-सहन और वातावरण शुद्ध हो गया। तब हम लोग छोटे-छोटे थे। तभी से हम लोगों में भक्ति, श्रद्धा जागृत हुई। हम लोग बड़े हुए। संत-महात्मा के संस्कार, उनकी शिक्षा हमारी जिन्दगी की सीख बनी। हमारे माता-पिता जी की सन् 1994 में गुरु दीक्षा हुई, उनका जीवन धन्य हो गया और हमारे यहां समय-समय पर सत्संग,

प्रवचन और भण्डारा होने लगा।

गुरु जी के कृपा और उपकारों का वर्णन करना असम्भव है। गुरु जी जैसा संत दूसरा कोई नहीं क्योंकि गुरु जी कबीर साहेब के दूसरे रूप थे।

गुरु जी से मिली आखिरी फटकार एवं अंतिम दर्शन में हुई वार्तालाप का वर्णन मैं आप लोगों समक्ष प्रस्तुत करना चाहती हूं जो कि इस प्रकार है—गुरु जी के नजदीक होने के नाते मैं उनके दर्शन के लिए उपस्थित हो गयी। इसे संयोग कहूं या सौभाग्य कि मैं खिंची चली गयी। यह हमारा सौभाग्य ही था कि दवा कराने हम 25 सितंबर को 3 बजे इलाहाबाद आश्रम पहुंचे। स्नान किये, भोजन किये, फिर विश्राम के लिए कमरे में गये। फिर भोजन का समय हुआ। शाम 6 बजे की घंटी लगी। हम भोजन के लिए जा रहे थे तो सामने हमें गुरु जी बैठे दिखाई दिये। उनके पास जाकर बन्दगी किया। हमारा हाल-चाल पूछे। गुरुजी बोले—जाओ बेटा, भोजन कर लो नहीं तो समाप्त हो जायेगा। यह पिता जैसा स्नेह-प्यार नहीं तो और क्या था। मैं तो गुरु जी से मिल ही गयी लेकिन मेरा बेटा सत्यम और पति लाल जी नहीं मिल पाये थे। इसलिए मैंने अपने कमरे से राम साहेब और भूपेन्द्र साहेब से मोबाइल पर बात की। उस समय राम साहेब गुरु जी की सिंकाई कर रहे थे। फिर भी गुरु जी ने राम साहेब के पूछने पर हमें मिलने के लिए बुला लिया। हम लोग रात 8 बजे गुरु जी से मिलने गये। हम लोग गुरु जी के पास बैठे तब गुरु जी हम लोगों के स्वास्थ्य के बारे में पूछने लगे। मैंने गुरु जी से बताया कि मुझे जोड़ों में दर्द की शिकायत है। बेटे सत्यम को माइग्रेन और पति लाल जी को थायराइड की समस्या है। गुरु जी ने धैर्य बंधाते हुए कहा—बेटी, घबराना मत। "शरीरं ब्याधि मन्दिरम्" शरीर तो रोगों का घर है। अब हमें ही देखो शरीर में पता नहीं कब क्या आ जाये। आज दांत में दर्द होने के कारण दांत के डाक्टर पास गया तो डाक्टर ने कहा दो दिन कड़ी चीजें मत खाना लेकिन मैंने दो बादाम खा लिया। फिर दिलासा देते हुए कहने लगे कि बेटा, शरीर तो रोग का घर है। बीमारी को मन से मत लगाना, बीमारी तो अपना मित्र है। फिर गुरु जी ने हमें कुछ उपदेश देते हुए परिवार में एकता बनाये रखने की बातें बतायीं। कुछ और भी ज्ञान की बातें बतायी। फिर गुरु जी ने कहा—अच्छा अब जाओ, तुम लोग सो जाओ। मैंने कहा—नहीं, गुरु जी! अभी हम नहीं जायेंगे, अभी हम और कुछ देर आपके पास बैठेंगे। इस प्रकार मैं गुरु जी से जिद करती रही। गुरु जी हमसे बार-बार कहते रहे जाओ सो जाओ लेकिन मैं बार-बार जिद करती न जाने क्यूं मेरा अन्तर्मन वहां से हटने को राजी नहीं था। फिर गुरु जी प्यार से फटकार लगाते हुए बोले—जाओ, सो जाओ, सुबह मिलेंगे बेटी। हाय! यह कैसी विपत्ति आन पड़ी। यह कैसा तूफान आया कि गुरु जी सुबह 26 सितंबर को हम सबको हमेशा के लिए छोड़ गये। आज भी मैं इस घटना को याद करती हूं तो मेरी आंखें नम हो जाती हैं। मन इस बात को स्वीकार ही नहीं करता कि गुरु जी इस जहां से विदा ले चुके हैं, पैरों तले जमीन खिसक जाती है, हाय! क्या हो गया।

"ढूंढ़ता है हर जगह जो फूल वह माली नहीं।
सिर्फ जलते दीप का त्यौहार दीवाली नहींû
जिन्दगी का राज सारा इस तरह बतला दिया है।
ओंठ हंसते हैं मगर वह दर्द से खाली नहींû"

गुरु जी जाते-जाते अपने अन्तिम क्षणों में भी मुझ सौभाग्यशाली को यह शिक्षा दे गये—

'कुसंग, कुठाम, कुखाद्य, कुवाक्य आदि नरक के द्वार हैं, अतएव ये त्यागने योग्य हैं।'

परमश्रद्धेय पूज्यपाद गुरुदेव जी के पावन श्री चरणों में अनंत-अनंत प्रणाम!

साहेब बन्दगी!!!

थौरी (भोंये बाजार), अमेठी, (यू. पी.)

हृदयोद्‌गार

विश्वनाथ कौशल

आवश्यक शुद्ध व्यवहार लेते हुए परमार्थ में हर क्षण एकाग्रता से संलग्न तितिक्षुत्व, समत्व, खान-पान में सात्विकता, असंग्रहित्व, निर्ममत्व आदि एक संत में जो गुण होने चाहिए वे सभी गुण आप में विद्यमान थे। विचार-साधना-संयम में रक्ष-दक्ष रहे। जीवन सधा हुआ, शान्त एवं कृतकृत्य था। आपका एक-एक हृदयोद्‌गार जन-कल्याण की भावना से ओत-प्रोत है। भोगोन्मुख एवं बोधविहीन भ्रमित लोगों के लिए सही मार्गदर्शन देना गुरुदेव का स्वभाव था। गुरुदेव द्वारा रचित ग्रन्थों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि जागते, भ्रमण करते उनके चिन्तन का एक ही लक्ष्य था— समग्र जन जीवन को सुलझा हुआ विचार देना तथा सारे परावलम्बनों को दूर कर मनुष्य के अन्दर स्वावलम्बन का भाव जगाना, क्योंकि मनुष्य स्वयं अपनी समझ एवं श्रम-साधना से अपना समग्र भौतिक-आध्यात्मिक विकास करता है। इस तेजपुंज व्यवहार से शीघ्र ही आपकी ख्याति एवं लोकप्रियता बढ़ी और निकट से लेकर दूर तक के सज्जन आपके श्री चरणों के दर्शन हेतु आने लगे और पूरे भारत में व्यस्त प्रवचन का कार्यक्रम होता रहा।

पारख के विशेषज्ञ सन्तवर आपने सूर्य समान सद्‌गुरु कबीर के प्रकाश को भावना क्षितिज पर लाने का कार्य किया। आपकी लेखनी द्वारा भ्रम का पटल हट गया और उस पर कबीर दर्शन की प्रकाश माला अपना प्रभाव डाल रही है। हिन्दी जगत का यह सौभाग्य है कि आप जैसे गंभीर विचारक का उदय हुआ। गुरुदेव श्री का सिद्ध सारस्वत स्वर साहित्य के क्षेत्र में सद्‌गुरु के काव्य को सुस्पष्ट करने के लिए ही अवतरण हुआ था। सद्‌गुरु कबीर के ज्ञान-वैराग्य-भक्ति की पराकाष्ठा की उच्च सूक्ष्म संवेदना के आप संवाहक थे। पारखी संत गुरुदेव श्री की ज्योतिर्मय वाणी सद्‌गुरु कबीर के जीवन आयाम और उनकी कठोर साधना की वाणियों को लोक जीवन में पारख की ज्योति उतारकर नवीन जीवन का दर्शन करा रही है। आपने सद्‌गुरु कबीर के सत साहित्य का स्वरूप चित्र खींचकर उनके तपःपूत जीवन दर्शन का परम उज्ज्वल रूप जन समाज के सम्मुख उतारा है।

आपके द्वारा इलाहाबाद में रोपित कबीर पारख संस्थान रूपी पौधा आज पल्लवित-पुष्पित हो रहा है और अपनी सुगन्ध को जन-जन तक फैला रहा है। आपकी अनुभव सिद्ध लेखनी से निःसृत प्रवाहपूर्ण भाषा एवं सरस सरल शैली में निबद्ध ग्रन्थों की गंगा में निमज्जन कर साधक-भक्त अपने चरित्र को उज्ज्वल एवं पवित्र बनाकर भवसागर से मुक्त होने की दिशा में अग्रसर हो रहे हैं।

गुरुदेव! आपको अपने कर्म, ज्ञान, भक्ति एवं वैराग्य कहीं पर किसी में भी कोई संशय नहीं था। आप सर्वत्र निर्भ्रान्त थे। 80 वर्ष के जीवनकाल में हर विचार के लोगों से सम्पर्क होते हुए और कठिनाइयों का सामना करते हुए गुरुदेव जल में कमल पत्र के समान सबसे सदैव निर्लेप रहते रहे। उन्हें उनके ध्येय से न तो बड़ा से बड़ा प्रलोभन डिगा सका और न बड़ा से बड़ा भय। सतत सावधान और पूर्ण जागृत थे इसलिए गुरुदेव पूर्ण निर्विकार निर्मल स्थिति में पहुंचे हुए थे। परम पूज्य, परम श्रद्धेय, परम वन्दनीय गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब महत्तम संत महामानव कबीर के जैसे निराले पुरुष थे। भौतिक दृष्टि से आपका देहावसान हो गया है परन्तु अपने वांग्मय और यशः शरीर से जन-जन के हृदय में जीवित रहेंगे। उनकी सदाबहार रचनाएं कभी बुझ ही नहीं सकती हैं।

गुरुदेव जी को मेरा शत-शत नमन!

टुइला डूंगरी बस्ती, जमशेदपुर, झारखण्ड

श्रद्धांजलि

रामचन्द्र शर्मा

आज परम पूज्य सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी की पावन स्मृति में आयोजित श्रद्धांजलि सभा हेतु मेरे भाव मौन हैं, दिल भरा हुआ है, गला भी रुंधा-रुंधा सा है और हृदय विदीर्ण है। युगपुरुष, तत्त्वज्ञानी, मुनि, महासंत, परम पूज्य सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी के गंभीर व्यक्तित्व और कृतित्व का भान उन्हीं को हो पाया है जिनको उनके निकट बैठने या उनकी कृति को पढ़ने या उनको सुनने का थोड़ा भी सौभाग्य प्राप्त हो पाया है।

गुरुदेव का बाहरी व्यक्तित्व जितना सौम्य, स्वस्थ एवं आकर्षक रहा उतना ही उनका अन्तःकरण निर्मल एवं पवित्र रहा। ज्ञान के अथाह भंडार थे गुरुदेव, जिसका उपयोग अंतिम समय तक अपनी मृदु वाणी से हमें उपदेशित कर सावधान करते हुए, हमें जगाते हुए स्वयं चिर निद्रा में लीन हो गये। लगता है आज हमारे मध्य सद्गुरुदेव जी नहीं हैं पर सच तो यह है कि बिना गुरु कृपा के संत समागम संभव ही नहीं है। यह सब उन्हीं के आशीर्वाद से हो रहा है।

गुरुदेव जी सुविधा की सड़क के मुसाफिर नहीं रहे अपितु प्रेम की ऊबड़-खाबड़ पगडंडी के राहगीर रहे हैं, पथिक रहे हैं। कुरीतियों की सर्जरी बखूबी करते थे। उनकी वाणी सदैव ढोंग और ढकोसलों की विरोधी रही है। वे सभी सम्प्रदायों की एकता के हिमायती रहे हैं। आओ, आज हम सब परम संत युगपुरुष को तहेदिल से श्रद्धांजलि अर्पित करें। अश्रुपूरित श्रद्धांजलि से उन्हें केवल याद ही नहीं करें बल्कि उनकी रचनाओं, भजनों, शोधग्रन्थों, प्रवचनों को जीवन में उतारें। श्री अभिलाष साहेब जी उच्चारण मात्र के विषय नहीं हैं बल्कि उनका पूरा का पूरा चाल-चलन, रहन-सहन, स्वाध्याय और सम्पूर्ण जीवन आचरण में उतारने का सुचरित्र हैं।

सम्पूर्ण भारत में आपकी वाणी का जादू रहा है। केवल उपदेश ही नहीं, आपने हमेशा साहसपूर्ण संदेश दिया है। सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी सत्यता का घोष, क्रान्ति का कोष, राष्ट्र का होश, सौहार्द का जोश रहे हैं। आपकी वाणी घट-घट में उतरी, प्रेम बनकर, अमृत बनकर, प्रकाश बनकर, विवेकपूर्ण शोधग्रंथ बनकर। आपकी मधुर अमृत घोलती वाणी आम चौराहे की बोलती वाणी है। गुरुदेव कहते थे सब लोग अपनी मर्यादा में रहें। पति अपनी पत्नी को प्यार दें, पत्नी अपने पति को विश्वास दें। दोनों एक दूसरे को समझें और सरलतापूर्वक आचरण करें। वे कहा करते थे व्यवहार में सरल बनो और बच्चे की तरह अपने मन को निर्मल करो।

"मन चंगा तो कठौती में गंगा"

कबीर मन निर्मल भया, जैसे गंगा नीर।
पाछे-पाछे हरि फिरे, कहत कबीर-कबीर॥

श्री अभिलाष साहेब जी हमेशा बहते गंगा जल की तरह हर क्षण नवीन और तरोताजा रहे। सूर्य के समान जलते रहे और हम सबको प्रकाशित करते रहे। आपने नीर-क्षीर-विवेक से अपने शिष्यों को भीतरी ज्ञानामृत से दीक्षित कर सभी के ज्ञान-दीप को प्रज्वलित किया है। जिसका प्रमाण आपके समक्ष विराजित संत समाज है।

गुरुवर के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम आपके बताये हुए मार्ग ध्यान, संयम, सत्य-प्रेम-करुणा के साथ कर्मशील बनकर जीवन में शील, सदाचार का पालन करके अपने जीवन को धन्य बनायें।

किशनगढ़, राजस्थान

पूज्यपाद सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी को विनम्र श्रद्धांजलि

ज्ञानदास

पूज्यपाद सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी का प्रथम दर्शन मैंने सन् 1991-92 में अपनी 26-27 वर्ष की उम्र में छत्तीसगढ़ राज्य के कटेकोनी (खरसिया) नामक ग्राम में किया था। तभी से आपकी रहनी और सद्ज्ञान से प्रभावित होकर आपके चरणों में समर्पित हूं। 24 दिसम्बर, 1995 को अपने निवास गृह जमनीपाली (कोरबा) छत्तीसगढ़ में गुरुदेव जी से विधिवत दीक्षा लेकर नया जन्म पाया। कबीरपंथी घर में जन्म होने के बावजूद सद्गुरु श्री कबीर साहेब के सत्यज्ञान, आत्मज्ञान, पारखज्ञान, निर्णयवाणी, निर्मलवाणी को पूज्यपाद सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी से जाना। आज सारा भ्रम दूर हो गया है, सद्ज्ञान का अमूल्य खजाना मिल गया है। यह सब सद्गुरु की अपार कृपा का फल है।

सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी तो युगपुरुष थे, जीवन्मुक्त पुरुष, सच्चे कर्मयोगी, महान संत थे। उनका त्याग-वैराग्य, उनकी निर्मलता, निर्भयता, सरलता, सादगी, अनासक्ति, मधुर वाणी, व्यवहार कुशलता, रहनी सम्पन्नता, उनका एकांतपन, प्यार सब कुछ तो प्रशंसनीय है। वे नियम के पक्के और अल्पाहारी थे। इस प्रकार सद्गुरु के समान केवल सद्गुरु ही थे। वे वर्तमान युग के संतशिरोमणि थे। अध्यात्म क्षेत्र के वैज्ञानिक थे। आपकी महिमा अनंत है। हे सद्गुरु! आप धरती मां के सच्चे सपूत हैं, सच्चे लाल हैं, नररत्न हैं। आप महान थे, महान हैं और महान ही रहेंगे। आप सदा के लिए अमर हो गये। आप वंदनीय हैं, उपासनीय हैं। संसार में ऐसे महापुरुष बिरले होते हैं। आपके द्वारा दिये गये सौ से अधिक सद्ग्रंथ एवं विशाल संत-भक्त समाज जब तक इस धरती पर रहेगा तब तक समाज को प्रकाश मिलता रहेगा। उसके अध्ययन-मनन एवं सत्संग करने वालों को सत्यज्ञान, पारखज्ञान या निर्णयज्ञान के सम्बन्ध में कोई संदेह या भ्रम नहीं रह जायेगा। मानव समाज अपने कल्याण मार्ग में सदैव आगे बढ़ता रहेगा। आपके द्वारा लगाया हुआ यह विशाल बगीचा सदैव हरा-भरा, फलता-फूलता रहेगा एवं सबको शीतल छाया देता रहेगा।

सद्गुरु की कृपा एवं महत्त्व का अनुभव मैंने आप के जीवन-दर्शन से किया। सद्गुरु की वाणी सदैव वैराग्यपूर्ण होती थी। वे शरीर और संसार की नश्वरता, क्षणभंगुरता और असारता की सदैव याद दिलाते थे। अंतिम दिन (मौत) की याद दिलाते थे और सबसे सबको निर्भय बनाते थे। आपने 'हृदय के गीत' नामक ग्रंथ में कहा है—

तन जीव मिलन की स्थिति, यह जीवन की बेला है।
कोई न किसी का जग में, बस दो दिन का मेला है॥

हे सद्गुरु! आपकी महिमा का जितना भी गुणगान करूं, कम है। सद्गुरु देव जी के शरीरांत पर सद्गुरु कबीर साहेब जी की इस साखी को साकार होते हुए पहली बार मैंने अपनी आंखों से देखा कि—

कबीर जब हम पैदा हुए, जग हंसे हम रोये।
ऐसी करनी कर चलो, हम हंसे जग रोये॥

आप मानव एकता एवं मानवता के सच्चे पुजारी थे। मैं अत्यंत सौभाग्यशाली हूं कि ऐसे महान सद्गुरु के दर्शन एवं सान्निध्य के लिए ही मानो मेरा जन्म हुआ था। यह मेरे जन्म-जन्मांतर के पुण्य प्रताप का फल है। मैं परम सौभाग्यशाली इसलिए और भी हूं कि

सद्गुरुदेव जी ने एक बार कबीर आश्रम, कबीरनगर इलाहाबाद में अपने कुछ ब्रह्मचारियों को यह कहकर मेरा परिचय दिया था कि "ये हमारे अनन्य भक्त हैं" और एक बार कबीर आश्रम नवापारा (राजिम), रायपुर, छत्तीसगढ़ में मुझसे कहा था कि "इस पुत्र पर मुझे गर्व है।" इससे बड़ा सौभाग्य मेरे लिए और क्या हो सकता है! सद्गुरु की मेरे ऊपर महान कृपा थी। मेरा जीवन धन्य हो गया है।

सद्गुरु के शरीर का हमारे बीच न रहना हमारे जीवन की अपूरणीय क्षति है क्योंकि उनके शरीर के साथ रहना हम अज्ञानियों के लिए बहुत बड़ा संबल था, आधार था, कवच था, लेकिन अब उनके सद्ग्रंथ और संत ही हमारे आधार हैं। शिष्य होने के नाते हमारा कर्तव्य है कि उनके निर्देशों पर चलकर स्वयं अपना कल्याण करें और उनके सद्ग्रंथों को समाज में अधिक-से-अधिक फैलाएं जिससे समाज का भी हित हो।

हे सद्गुरु! आपके बताये मार्ग और निर्देशों पर यथाशक्ति चलता रहूंगा, जहां तक पहुंचा हूं वहां से कभी पीछे नहीं हटूंगा। यही आपके प्रति मेरी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। अपने श्रद्धा-सुमन सहित आपके चरणों में विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

जीवनमुक्त प्रभु आप थे, श्री सद्गुरु अभिलाष।
निज स्वरूप में लीन हुए, शरीर नहीं अब पास॥
मैं बड़भागी या जग में, सद्गुरु मिले जो आप।
शत-शत वंदन चरणों में, मिटा दिये मम ताप॥

एन. टी. पी. सी. कालोनी,
रिहन्द नगर, सोनभद्र, उ. प्र.

पवित्र स्मृतियां

चन्दूलाल कबीरपंथी

1. 1986 गुलवारा कटनी में, आपके प्रथम दर्शन और सत्संग के प्रभाव से मुझे लगा था, मेरा इस जन्म का पूर्ण सद्गुरु मिल गया है, फिर तो "ऐसा रंग रंगा रंगरेज ने लालो लाल कर दीन्हीं।"

2. आपने सम्पूर्ण मूल बीजक गाने की प्रेरणा दी। जब बीजक मूल कैसेट के माध्यम से आपको प्रीतम नगर के सभागार में समर्पित किया तो ठंड में ओढ़ रखे अपना कम्बल उतारकर आपने मुझे दे दिया। "यह निशानी मेरे जीवन की कहानी बन गई।" आप मेरे हृदय में बस गये। कुछ वर्षों से आपके बारम्बार दर्शन को तरसता रहा, चाहता था, आडियो सीडी पहुंचाने के बहाने जुड़ सकूंगा, पुनः कुछ दिनों का सान्निध्य प्राप्त होगा, अब वह सपना ही टूट गया।

3. बहुत वर्ष पहले 1990 के दशक में जब आडियो कैसेट में कबीर साहेब के कुछ भजनों का गायन आपकी प्रेरणा से किया था, उसी समय आपने लगभग एक माह के लिए मुझे छत्तीसगढ़ अंचल में लगातार भ्रमण कराया था, मुझे वे क्षण कभी नहीं भूल सकते।

संवेदनाएं

1. आपके बिछुड़ने से लगा जैसे हमारी शक्ति क्षीण हो गयी। हम शोक से घिर गये। पुनः आपके गंभीर शाश्वत विचारों को श्रवण किया, सहने की क्षमता बनी। अब तो आपके अमर शब्द ही हमारे प्रेरणास्रोत रहेंगे। हे सद्गुरु! आपको बारम्बार बंदगी है।

2. यद्यपि आवागमन एक प्राकृतिक प्रवाह है किन्तु आपके शरीर त्याग से एक युग की समाप्ति हो गयी है।

3. संसार में संतों-विद्वानों की यद्यपि कमी नहीं है किन्तु आप जैसा मृदुभाषी, बहुमुखी, निष्पक्ष और वैराग्यवान संत मिलना अत्यंत कठिन है। आप अद्वितीय और विलक्षण थे।

4. आपकी पवित्र कथनी, करनी और रहनी हमारे लिए आदर्श है। हे सद्गुरु! आपकी कमी कबीर समाज के लिए अविस्मरणीय है। "बन्दगी त्रैबार साहेब।"

परम श्रद्धेय अन्तर्ध्यान हुये। सद्गुरु का स्मरण करते हुए सकल संत समाज को साहेब बंदगी।

बंदगी त्रैबार साहेब — बंदगी त्रैबार होû

* * *

परम पूज्य, परम लीन, चिर समाधिस्थ, परम सद्गुरु साहेब के काया-त्याग की खबर से मैं अत्यन्त व्यथित हुआ हूं। ऐसा लगता है कि मेरा जागृत इष्ट, हम सबके परम आदर्श सद्गुरु अब कहां मिलेंगे। यद्यपि यह कटु सत्य है कि पंच तत्त्व की काया का अंततः विसर्जन होना निश्चित है, किन्तु उनकी अमूल्य साधनामयी पवित्र देही का विछोह हमारे लिए एक स्वर्ण-युग की समाप्ति जैसा है। सद्गुरु साहेब का समय काल निश्चित ही कबीर विचारों के साथ-साथ समग्र शाश्वत सत्य विचारों का स्वर्ण युग रहा है।

लगता है कि अब कौन कहेगा प्रवचन के पूर्व चन्दूलाल को एक भजन गाने दो और जब मैं अपनी या उनकी रचना से निवेदन करता, तो कहते अब एक कबीर साहेब की वाणी कहो। मेरे जीवन का स्वर्ण युग भी 1984 से साहेब जी के साहित्य से जुड़ने के उपरांत शुरू हुआ था, तब मेरी आयु 24 वर्ष थी। फिर 1986 में कटनी (गुलवारा) में साहेब के प्रथम दर्शन प्राप्त हुए थे। मेरे भक्तिमय भजनों को सुनकर सद्गुरु ने आडियो कैसेट के द्वारा प्रचार-प्रसार की अमूल्य प्रेरणा देकर मुझे इसकी सेवा का सस्नेह सुअवसर प्रदान करके, मानो कृतार्थ किया था। इसी सेवा के माध्यम से बीच-बीच में साहेब और संत समाज से मिलने का सौभाग्य लगातार कई वर्षों तक मिलता रहा है। कुछ समय तक यह अवसर चूक गया था। दो वर्ष पूर्व से पुनः इसकी चर्चा संस्थान की प्रबंध समिति से किया था ताकि साहेब जी और पवित्र संत समाज का दर्शन-सत्संग समय-समय से मिलता रहेगा। सरकारी सेवा के साथ-साथ मुझे बड़ी उत्कंठा रहती थी कि कहीं से सद्गुरु के दर्शन के सौभाग्य का कोई आमंत्रण पत्र आ जाये तो भला हो, साहेब के बिछुड़ने से यह सपना मानो टूट गया। हमारे इष्ट, हमारे आदर्श, हमारे अविरल प्रेमी, प्रेरणास्रोत, सद्गुरु हमसे बहुत दूर चले गये और अब आप कभी न मिलेंगे, हम खुद को लुटा-पिटा महसूस करते रह गये।

आपका दिया अनमोल ज्ञान भण्डार यद्यपि हमारे साथ है। हमारे बीच आपके प्रतिनिधि रूप संत आदरणीय भी विद्यमान हैं। फिर भी हे सद्गुरु! आपकी कमी कभी पूरी नहीं होगी। हे परम लीन! हम आपके सदा ऋणी और कृतज्ञ रहेंगे। आपका उपकार दुनिया में कोई नहीं चुका सकता। आपका बारम्बार वंदन है, साहेब बंदगी! साहेब बंदगी!! साहेब बंदगी!!!

जागी थी चाह मन में, तेरी छांव में चलूंगा।
तूफान ऐसे आया, सब कुछ निगल गया।
न जाने कितने जनम, भटके हुए गये हैं,
मिलने से आपके, यह जीवन सम्हल गया।
अब चाहना नहीं है, अपने में थिर रहूं बस,
पाकर विचार तेरा, संशय निकल गया।
कब तक कहेगा कोई, सीमायें हैं सभी की,
जागेगा कोई बिरला जो, निज में दल गया।
हम चिर ऋणी रहेंगे, सद्भाव पाके तेरा,
सद्ज्ञान 'चन्दु' पाकर, दुख-द्वन्द्व टल गयाû

कटंगी कला, कटनी, मध्य प्रदेश

पारख ज्ञान प्रदाता गुरुदेव जी

गोविन्द दास

मेरे पिताजी रामायणी थे। उन्हें सादगीपूर्ण जीवन पसंद था। उनके जीवन से मुझे काफी प्रेरणा मिली, लेकिन फिर भी मुझे पूरा संतोष नहीं मिला। आगे चलकर मैंने भगवान की महिमा सुनी, उस समय मेरी उम्र करीब 20 वर्ष की रही होगी। तब से मैं पूजा करना, घण्टी हिलाना और नाम जप करना आरंभ कर दिया।

पिता जी का प्रभाव होने के कारण मुझे रामायण के प्रति आस्था थी। जिसकी बदौलत मैंने गाना-बजाना और रामायण की टीका करना भी सीख लिया। इतना करने के बाद भी मुझे शांति नहीं मिली, क्योंकि मैं 'सत्य का खोजी' था।

सत्य की खोज करते-करते मेरी उम्र 45 वर्ष की हो गयी। इसी बीच अध्यात्म से जुड़े हुए व्यक्ति के नाते मुझे पता चला कि प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी का कार्यक्रम ग्राम-लाहोद, जिला-रायपुर (छ. ग.) में होने जा रहा है। यह घटना लगभग 1995-96 ई. की होगी। नियत-तिथि को जब मैं पूज्यपाद गुरुदेव जी के विचारों को सुना तो मेरा जीवन ही बदल गया। उस समय मुझे लगा कि अरे! आज तक मैं कहां भटक रहा था? सत्य ज्ञान की जानकारी तो मुझे आज हो रही है।

गुरुदेव जी को मैंने अपनी जीवन-व्यथा सुनायी। उन्होंने कहा, बेटा, जो सत्य का खोजी होता है उसे सत्य मिल ही जाता है। मैंने कहा, गुरुदेव! आप जैसे संत की जरूरत दुनिया को हमेशा है। उन्होंने सहज ढंग से कहा, जो जागने वाले होते हैं उनके लिए इशारा ही काफी होता है। इस प्रकार मैं गुरुदेव और उनके विचारों का आजीवन प्रेमी बन गया।

आज उनके नहीं रहने पर पूरे मानव समाज की दशा माली-विहीन बगिया के समान हो गयी है, फिर कौन माली (सद्गुरु) आकर इस उजड़ी बगिया को संभालेगा, इसे भविष्य ही बतायेगा।

पूज्यपाद गुरुदेव के कृपाप्रसाद से ही हमारे क्षेत्र में कबीर पारख समिति के नाम से एक समिति गठित हुई। जिसके आधार पर हम लोग पूज्यपाद गुरुदेव जी का कार्यक्रम इस क्षेत्र में कई बार करा चुके हैं। पूज्यवर गुरुदेव जी का कृपाप्रसाद है जिसकी बदौलत हमारे क्षेत्र में पारख सिद्धांत को लोग जान पाये हैं।

उनकी कृपादृष्टि हम सभी समिति भाइयों के ऊपर बनी रहती थी। जब हम लोग पूज्य गुरुदेव जी से मिलते तो ऐसा व्यवहार करते मानो हम लोग उनके निकट रहने वालों में से हों। गुरुदेव जी का स्नेह कभी नहीं भुलाया जा सकता। हम आशा करते हैं कि आगे भी उनका साधु-समाज हम लोगों के ऊपर कृपादृष्टि बनाये रखेंगे, हम लोगों को सहारा देते रहेंगे जिससे हम लोग उनका सहारा पाकर आगे बढ़ते रहेंगे और जितना बन सकेगा समाज की सेवा करते रहेंगे।

उन पारख-पदवासी, स्वरूपलीन गुरुदेव जी के पावन श्री चरणों में श्रद्धा-सुमन समर्पित करते हुए बारम्बार नतमस्तक होता हूं।

मणिपुर, सरखोर, बलोदा बाजार, छ. ग.

गुरुदेव जी की यादें

ब्रह्मचारी रोशन

1992 में जब मेरी उम्र 23 वर्ष थी, तब मेरी पहली भेंट गुरु जी से हुई थी। गुरु जी ग्राम पलारी में भक्त श्री हीरादास जी के यहां निवास कर रहे थे। मैं विश्राम के समय दोपहर 1 बजे उनसे मिलने पहुंचा। मैं उनकी साधुवेष की रहनी से अत्यंत प्रभावित हुआ। उस समय वे ध्यानावस्था में बैठे हुए थे। मैंने गुरुदेवजी से पूछा—"क्या आपने ईश्वर को देखा है?" मेरे प्रश्न से गुरु जी ने अत्यंत प्रसन्न होकर प्रेमपर्वूक कहा—"तुम्हीं तो वह ईश्वर हो।" मैं तुरंत ही गुरुदेव जी का इशारा समझ गया। उन्होंने साथ-साथ भ्रमण में चलने के लिए कहा।

सत्य की खोज में हरिद्वार, मथुरा आदि घूमते हुए मैं आखिरकार अगस्त 1994 में इलाहाबाद गुरुदेव जी की शरण में जा पहुंचा। गुरु जी के निर्मल जीवन को देखकर मैं पूर्णरूप से संतुष्ट हो गया। मुझे जिस सच्चे गुरु की तलाश थी, वह पूरी हो गयी थी। गुरुदेव जी ने मुझे पूछा—घर में पत्र लिख दिये हो कि नहीं, क्या बिना बताये घर से आये हो? तब मैंने घर में पत्र भेज दिया था। गुरु जी कहते थे, तुम्हारे माता-पिता देवस्वरूप हैं, उन्हें कष्ट नहीं होना चाहिए।

गुरु जी मन को जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण बताते थे। उन्होंने मन के अनुसंधान में पूरा जीवन बिताया। वे कहते थे—सारी साधनाएं मानसिक हैं। वे मुझसे पूछते थे—क्या तुम परमपद चाहते हो? जब मैं उत्तर देता—जी गुरु जी, मैं परमपद चाहता हूं। तब गुरु जी कहते—जो तुम्हारे मन में है वही होगा बेटा। वे विनोदपूर्वक कहते थे—नाम रोशन है, तो रोशन कर!

गुरु जी साधकों के साथ गुरु-शिष्य की तरह नहीं, साथियों जैसा व्यवहार करते थे। वे साधकों को बहुत महत्त्व देते थे। वे मुझसे कहते थे तुम मुझसे भी आगे निकल जाओ—यह एक आदर्श गुरु की पहचान है।

गुरु जी बड़े दयालु थे। अक्टूबर 1994 में अधिवेशन के पूर्व मैं बहुत बीमार था। गुरु जी मेरे पास आये, तो मैं उठकर खड़ा हुआ। लेकिन तुरंत मैं चक्कर खाकर गिरने लगा, तो गुरु जी ने मेरा हाथ पकड़कर गिरने नहीं दिया। फिर कहा—ठीक से भोजन करोगे, तो अच्छे हो जाओगे।

जनवरी 1995 में जब मैं उनके साथ भ्रमण में छत्तीसगढ़ गया, तो अपने माता-पिता के प्रेमवश फिर से इलाहाबाद लौट न सका। सेवा, स्वाध्याय, साधना घर पर ही करने लगा। दिसंबर 2008 में 14 वर्ष बाद इलाहाबाद लौटा।

गुरुदेव जी कबीर विचारों के अद्वितीय संदेशवाहक थे। हम ऐसे वैराग्यवान सत्यशोधक सद्गुरु की उपासना करते हैं।

त्यागमूर्ति परमपूज्य गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी हमारे साधु जीवन के प्रेरणास्रोत थे। जिन श्री गुरुदेव को हमने अपना जीवन समर्पित किया था, वे सशरीर नहीं हैं, लेकिन उनके सान्निध्य में बिताये दिन उनकी यादों के रूप में हमारे पास सुरक्षित हैं, जो हमारे आगे के जीवन के लिए परम संबल हैं। उनका पवित्र आदर्श जो हमारे सामने रहा, वह हमें अपने जीवन-लक्ष्य तक पहुंचने में हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा। ऐसे महान वैराग्यवान संत-सद्गुरुदेव को मेरा बारंबार नमस्कार है। उनके प्रति श्रद्धांजलि के रूप में उनके द्वारा जो शिक्षा हमें मिली है, उसका कुछ विवरण प्रस्तुत है—

सभी मनुष्य एक समान उन्नति के अधिकारी हैं। इसलिए अपना आत्मविश्वास बढ़ाओ और विश्वास रखो कि तुम भी मेरे समान दुखमुक्त हो सकते हो। गुरुदेव जी हमें सन्मार्ग में आगे बढ़ने के लिए अपार साहस प्रदान करते थे। साहस के सम्बन्ध में ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल का कथन है—"मानव के सभी गुणों में साहस पहला गुण है, क्योंकि अन्य सद्‌गुण इसी से पैदा होते हैं।"

उनका उपदेश था—कभी कोई दुखी न रहो। दुख तुम्हारे स्वरूप में नहीं है। आनंदित रहना जीव का अनादि सिद्ध अधिकार है। इसलिए हर समय प्रसन्न रहो। आज और अभी से पूर्ण आनंदित हो जाओ। निराशा को दूर हटा दो क्योंकि आशा ही जीवन है। निराशावादी व्यक्ति चिंता के मारे अधमरा हो जाता है। आशावादी प्रसन्न होकर अपनी व्यथा (दुख) को दूर कर ही लेता है। अतः सुंदर भविष्य के लिए सदैव आशावान रहें। अगर आप निराशा का बोझ अपने मस्तिष्क में एक दिन से अगले दिन तक ले जाते हैं, क्योंकि चीजें आपकी उम्मीद के मुताबिक नहीं हुई थीं, तो शायद आपकी सारी ऊर्जा समाप्त हो जायेगी।

अपने मन से सारे भय को दूर कर दो। डर हमें हरा देता है, रोके रखता है, कमजोर महसूस कराता है। इसका एकमात्र कारण यह है कि हमारा मस्तिष्क डर से भरा होता है। अपने डर पर काबू पाने की समस्या बेहद महत्त्वपूर्ण है। सद्‌गुरु कबीर ने बीजक में कहा है—*डडा डर उपजे डर होई। डर ही में डर राखु समोई।* मनुष्य का पहला कर्तव्य आज भी डर को हराना है। और इस हराने की प्रक्रिया में एक चीज बहुत महत्त्वपूर्ण है—कर्म। सकारात्मक कर्म। डर का सामना किया जाना चाहिए, इसलिए इसका सामना करें—कर्म करें।

जीवन में सकारात्मक सोच की शक्ति से लाभ लें। असफल होने के बारे में कभी न सोचें। आपको इसकी जरूरत नहीं है। मन से हीनभावना, द्वेष, नकारात्मकता के पुराने, थके, कमजोर, उत्साहहीन विचारों को धोकर बाहर निकालना होगा। इस प्रक्रिया से मानसिक इंजन पूरी तरह साफ हो जायेगा और अधिकतम शक्ति प्रदान करेगा। सफलता दिलाने के ये तीन उत्कृष्ट गुण हैं—विवेक, मेहनत और स्वास्थ्य। और इनमें महानतम है विवेक। विवेक मस्तिष्क की प्रक्रिया है—शांत, तार्किक, क्रमबद्ध तरीके से सोचने और ठोस निर्णय लेने की क्षमता।

मानसिक नियंत्रण परिपक्व और रचनात्मक विवेक का रहस्य है। मस्तिष्क एक यंत्र है, जिसे आपकी सेवा के लिए बनाया गया है, न कि आपको नष्ट करने के लिए। अनियंत्रित होने पर आपका मस्तिष्क आपका बहुत नुकसान कर सकता है, जबकि नियंत्रित होने पर असीमित शक्ति दे सकता है। ज्यादातर लोग सिर्फ इसलिए असफल होते हैं क्योंकि वे अपने मन-मस्तिष्क के स्वामी नहीं बन पाते हैं। दूसरी तरफ कई लोग मानसिक नियंत्रण के प्रयोग से आश्चर्यजनक काम कर रहे हैं। "मानसिक नियंत्रण उन मुश्किलों पर विजय दिलाता है, जो इसके बिना आपको हरा सकती है।" मानसिक रूप से अपनी असफलताओं से मुंह मोड़ लें। खुद को जान लें। कभी हार न मानें। खुद पर भरोसा रखें। कभी असफल होने के बारे में न सोचें। हम अवश्य अपने उद्देश्य में सफल होंगे। महान कवि शेक्सपीयर का कथन है—"ज्यादा बारिश संगमरमर को घिस सकती है।" अतः अपनी मेहनत पर विश्वास रखें।

सद्‌गुरु कबीर की महत्त्वपूर्ण साखी है—*"प्रेम पाट का चोलना, पहिर कबीरू नाच। पानिप दीन्हों तासु को, जो तन मन बोले साँच।"* अपने जीवन के सारे व्यवहार प्रेमपूर्वक करो। प्रेम का विचार संसार में सबसे उपचारक विचार है। आसपास के लोगों से प्रेम करो, हर एक के बारे में अच्छा सोचो। प्रेम में स्वर्ग है और अनासक्ति में मोक्ष। प्रेमविहीन हृदय के लिए संसार कालकोठरी है जो नैराश्य और अंधकार से भरी है। जिसने कभी प्रेम नहीं किया, उसने स्वर्ग में रहकर भी नरक का अनुभव किया। प्रेमविहीन जीवन नरक की दहकती ज्वाला है, जिसकी आंच में दूसरे भी जलने लगते हैं।

अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए अपने दिमाग को सामंजस्य में रखें। प्रतिदिन सारे अस्वस्थ विचारों से अपने मन को खाली करने का अभ्यास करें। खुद को पूर्ण मानें। यह घोषणा करें और बार-बार करते रहें कि आपके मन, आत्मा और शरीर में प्रबल जीवनीशक्ति प्रवाहित हो रही है। यह सोचें कि आपके शरीर के सारे तत्त्व आदर्श लय में एक साथ काम कर रहे हैं। रोगी विचारों, नफरत, द्वेष, हीनभावना आदि से खुद को मुक्त करें। यह एहसास करें कि आप खुद को स्वस्थ, उत्साहित और स्फूर्तिवान बनाने के लिए काफी कुछ कर सकते हैं।

मार्क्स ऑरेलियस का कथन है—"आत्मा विचारों के रंग में रंग जाती है।" अस्वस्थ विचार सोचेंगे तो सचमुच अस्वस्थ बनने लगेंगे। इसी तरह से स्वस्थ विचार आपको सेहतमंद बना सकते हैं। अपने मन और शरीर को सशक्त और जीवंत देखें। उनमें आपकी देखी तस्वीर जैसा ही बनने की प्रवृत्ति होती है।

यह जीवन कर्म प्रधान है। कर्म ही मनुष्य को महान बनाता है। कर्म ही जीव का सच्चा साथी है, जो कभी उसका पीछा नहीं छोड़ता। हर कार्य करने वाले की तस्वीर होता है। महत्त्वपूर्ण यह नहीं कि कोई क्या कर रहा है बल्कि महत्त्वपूर्ण यह है कि कितनी अच्छी तरह से वह किया जा रहा है। क्योंकि इसी से कार्य की कीमत निर्धारित होती है। अतः पूरी सावधानी से कर्म करने की जरूरत है। कर्म वह आईना है जो हमारा स्वरूप हमें दिखा देता है। कर्म में निरंतर श्रेष्ठता और पवित्रता भी होती है। अथर्ववेद का एक मंत्र कहता है—"सः प्रथमः कर्म कृत्याय जातः।" सर्वप्रथम आत्मा कर्म करने के लिए प्रकट हुई है।

हम परोपकार में लगे रहें। "जो मनुष्य दूसरों का उपकार करता है, वह अपना भी उपकार न केवल परिणाम में अपितु उसी कर्म में करता है, क्योंकि अच्छा कर्म करने का भाव ही स्वयं उचित पुरस्कार है।" हम सदैव कर्मशील रहें। चींटी का उदाहरण देखिए, सदैव कर्मशील रहती है और मौन रहती है। कार्य के संबंध में जार्ज बर्नाड शॉ का कथन भी विचारणीय है—"यही जीवन का सच्चा सुख है—ऐसे उद्देश्य में जिसे तुम स्वयं ही महान समझते हो, काम आ जाना; इसके पहले कि तुम घूरे पर रद्दी की तरह उठाकर फेंक दिये जाओ, काम करते-करते पूर्ण रूप से घिस जाना। प्रकृति की एक शक्ति बन जाना। यह कहीं अच्छा है बजाय इसके कि तुम रोग और आपत्तियों की एक ज्वरपीड़ित, स्वार्थपूरित, क्षुद्र कीड़ा बने हुए रोते फिरो कि दुनिया तुमको सुखी बनाने की ओर कुछ ध्यान नहीं देती।" "सुखी जीवन व्यतीत करने का उपाय यह है कि मनुष्य तन्मय होकर मनोनुकूल कार्य में अपने को लगा रखे और इस बात को सोचने के लिए कुछ भी समय न दे कि वह सुखी है या नहीं।"

आध्यात्मिक जीवन की सफलता के लिए तीन बातें आवश्यक हैं—1. जागते रहो, 2. असंगता और 3. मौन। हमें हर समय सजग रहना है कि हम दुखी तो नहीं हो रहे हैं। स्वयं आनंदित रहें और आनंद बांटें। "आनंद ही एक ऐसी वस्तु है, जो आपके पास न होने पर भी आप दूसरों को दे सकते हैं।"

जीव का ऐश्वर्य है उसका अकेलापन। असंगता में ही अपने आप का सच्चा बोध होता है। अतः समय-समय से अकेले होकर अपने स्वरूप का ध्यान करना चाहिए।

आत्मा का स्वरूप मौन है। अतः बिना मौन का पालन किये आत्मा का अनुभव असंभव है। हम व्यर्थ बोलकर अपनी और दूसरे की शांति नष्ट करते हैं। अतः वाणी संयम की महान आवश्यकता है।

यदि हम पूज्य गुरुदेव जी की दी हुई शिक्षाओं का अपने जीवन में आचरण करेंगे तो यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

किसी विद्वान ने कहा है—"महान की उपासना करना स्वयं महान होने के बराबर है।" "To love one that is great is almost to be great."

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

गुरुदेव—साधकों के भगवान

ब्रह्मचारी गीतेश

पूज्यपाद सद्गुरुदेव जी से सभी लोग परिचित हैं। सभी लोग आपके ज्ञान को जानते हैं, आपकी रहनी-गहनी को समझते हैं। आपका जीवन सरल, सहज और सादगीपूर्ण था। आप सब समय सादगी में ही जीवन जीते थे। आप सब समय प्रसन्न और अपने आप में लीन रहते थे। आपका जीवन हमारे लिए एक आदर्श स्थापित करता है। गुरुदेव जी ने जो ज्ञान-रत्न हमें दिया है वह खरे मोती के समान है। जो न कभी सड़ेगा और न गलेगा, वह निरंतर प्रकाशित होता रहेगा।

मेरे मन में थोड़ी भी कल्पना नहीं थी कि गुरुदेव जी का शरीर इतनी जल्दी शान्त हो जायेगा क्योंकि गुरुदेव जी शरीर से पूर्ण स्वस्थ थे, और एकदम बढ़िया ढंग से चल रहे थे। मन में यह आशा थी कि गुरुदेव जी अभी कम-से-कम 10-15 वर्ष और रहेंगे और गुरुदेव जी का सान्निध्य लाभ मिलता रहेगा। परन्तु प्रकृति कितनी निर्दय है, उसने हमारी आशा को निराशा में बदल दिया। यह सत्य है कि यहां कोई सदा के लिए नहीं आया है। यहां से सबको जाना है, जन्म के साथ ही मृत्यु का दिन भी तय हो जाता है।

कबीरपंथ की परम्परा में अनेक संत-महापुरुष हुए हैं। पारख-सिद्धांत के पारखी संतों से हम सब परिचित हैं—श्री गुरुदयाल साहेब, श्री रामरहस साहेब, श्री पूरण साहेब, श्री काशी साहेब, श्री लाल साहेब, श्री राघव साहेब, श्री निर्मल साहेब, श्री विशाल साहेब, श्री रामसूरत साहेब और इसी क्रम में श्री अभिलाष साहेब जी—ये सभी विभूतियां परम वैराग्यवान और परम पारखी थे। जो सत्य-असत्य का भेद खोल कर रख देते थे। जो हमारे कल्याण मार्ग में सहायक थे।

मैंने और संतों का जीवन तो नहीं देखा, किन्तु पूज्य गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी का जीवन देखा। आपका सान्निध्य लाभ लिया, ज्ञान-विचार का लाभ लिया। गुरुदेव जी अद्भुत महापुरुष थे। आपको देखते ही मन में प्रसन्नता की लहर दौड़ पड़ती थी और आपकी ज्ञान-चर्चा को सुनकर मन मुग्ध हो जाता था। ऐसा लगता था कि जीवन से सारे दुखों को मिटाने का रास्ता मिल गया। कुछ क्षण मन से दुख दूर हो जाता था और परम शांति का अनुभव होता था। आप हमारे बीच आज रहे होते, कुछ वर्ष और साथ दिये होते तो हम सब थोड़ा और सध जाते लेकिन आप तो हमें बीच में ही छोड़कर चले गये।

लेकिन हमें यह समझना चाहिए कि गुरुदेव जी शरीर को त्यागकर चले गये तो वे नहीं हैं ऐसी बात नहीं है। वे हैं, ज्ञान बनकर हमारे हृदय में हैं। पहले गुरुदेव जी एक सीमित दायरे में थे, किन्तु आज वे व्यापक हो गये। आज गुरुदेव जी उनसे जुड़े प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में ज्ञान बनकर समा गये हैं। अगर हम गुरुदेव जी के बताये हुए ज्ञान-मार्ग पर चलते हैं, तो गुरुदेव जी सब समय हमारे साथ हैं।

पूज्य गुरुदेव जी वैराग्यवान और स्वस्वरूप में लीन तो थे ही साथ-साथ आप व्यवहार करने में भी कुशल थे। आपका व्यवहार करने का तरीका ही कुछ

अलग अंदाज का था जिसे देखकर मन आपकी ओर सहज ही आकर्षित हो जाता था।

गुरुदेव जी अपने साथ रहने वाले साधकों के साथ प्रेम का व्यवहार तो करते ही थे, अन्य संतों-भक्तों से भी ऐसा ही प्रेम का व्यवहार करते थे। हर व्यक्ति को यही लगता था कि गुरुदेव जी सबसे ज्यादा प्रेम मुझसे ही करते हैं। किन्तु ऐसा नहीं था, आपके लिए सब एक समान थे और सबको एक समान आदर देते थे। जैसे कोई मां हो और उसकी कई संतान हो तो उसका प्रेम, उसकी ममता सब पर एक समान होती है। चाहे बच्चा कैसा भी हो मां के लिए प्यारा है। उसका प्रेम एक के लिए ज्यादा और दूसरे के लिए कम होता है, ऐसी बात नहीं है। ठीक इसी प्रकार गुरुदेव जी का प्रेम सबके लिए एक समान था।

गुरुदेव जी की दृष्टि में छोटे-बड़े, गरीब-अमीर, ब्राह्मण-शूद्र, हिन्दू-मुसलमान सबके प्रति समान भाव था। आप मानव को केवल मानव की दृष्टि से देखते थे और मानवता का व्यवहार करते थे।

कभी किसी साधक से गलती हो जाती तो आप साधक के सुधार और हित का भाव रखकर उसे डांट भी देते थे तो सामने वाला साधक समझ जाता था कि यह मेरी सावधानी के लिए है। हमने जिस गुरु के चरणों में अपना जीवन समर्पित किया है उन गुरु को हमारे लिए चिन्ता रहती थी कि कोई भी साधक असावधानी में अपनी हानि न करे। इसलिए वे अपने साधु-ब्रह्मचारियों को सावधान करते थे।

पूज्य गुरुदेव खुद अपने जीवन में संयम और सावधानी बरतते थे। आपसे कभी त्रुटि नहीं होती थी। आपका सभी कार्य पवित्र भाव से होता था। इसीलिए आपका हर कार्य पूजा था। आपका हर कार्य विचारपूर्वक था, हर कार्य नियम और समय के साथ होता था। आप सब समय सावधानी रखते थे। सावधानी ही आपका अस्त्र था। आपका सोना-जागना, नहाना-धोना, खाना-पीना, पढ़ना-लिखना, बात-बरताव करना, चलना-फिरना, मिलना-जुलना, हंसी-मजाक-यावत क्रिया कलाप, सब संयम और नियमपूर्वक होता था। इनमें भी आपकी साधना झलकती थी।

मैं अपने आपको सौभाग्यशाली समझता हूं कि मुझे ऐसा गुरु मिला, और मुझे आपका सान्निध्य लाभ, आपकी सेवा करने का लाभ, आपके जीवन को निकट से देखने का भी सुअवसर मिला। यह सब मुझे सहज ढंग से मिला। मुझे ज्यादा भटकने की और अधिक परिश्रम करने की जरूरत नहीं पड़ी। दुनिया में लोग सही राह के लिए भटक रहे हैं और लाखों प्रयत्न के बाद भी सही रास्ता नहीं मिल पाता है। मुझे माता-पिता का साहस और सहयोग भरपूर मिला। मैं अपने माता-पिता की प्रेरणा पाकर ही गुरुदेव जी के चरणों में आया।

गुरुदेव जी समय-समय से मुझे ज्ञान-वैराग्य की बातें बताया करते थे और समय-समय से अपने पास रखते थे। एक बार कबीर आश्रम इलाहाबाद में गुरुदेव जी थे। मैं गुरुदेव जी की सेवा में था। गुरुदेव जी अपने कक्ष में बैठकर कुछ लिख रहे थे और मैं पास में ही गुरुदेव जी के कपड़े समेट रहा था। गुरुदेव जी लिखते-लिखते रुक गये और आंख बंद करके विचार करने लगे। कुछ देर बाद आंखें खोल मेरी ओर देखे। गुरुदेव जी मुझे देखकर कहने लगे कि मेरा और तुम्हारा संबंध वैराग्य से है। जब तक तुम्हारे अंदर वैराग्य रहेगा तब तक मैं तुम्हारे साथ रहूंगा। यदि तुम मुझे चाहते हो तो अखंड वैराग्यवान बनो। यदि तुम दुनिया की माया में फंसोगे तो मेरा और तुम्हारा संबंध कट जायेगा। सच है हमने सांसारिकता को त्यागकर वैराग्य लिया है तभी हमारा संबंध गुरुदेव जी से जुड़ा है।

गुरुदेव जी मुझे अपने निकट बुलाये और मेरे गालों पर अपना हाथ प्यार से फेरे और सीने से लगा लिये और कहने लगे कि मेरे प्यारे पुत्र, तू सारी मोह-ममता, मन की चंचलता को त्यागकर मुझमें समा जा। गुरुदेव जी कहते थे कि यदि मेरा वश चलता तो मैं अपने सुख-शांति को अपने सभी साथियों में बांटकर सबको

सुखी कर देता। किन्तु यह मेरे वश की बात नहीं है। इस शब्द को सुनकर मुझे लगा कि जितनी चिन्ता हमें अपने लिए नहीं है उससे ज्यादा चिन्ता गुरुदेव जी को है। आप अपने जैसे सभी साधकों के लिए सोचते थे। हम सहज ही अंदाजा लगा सकते हैं कि गुरुदेव जी के हृदय में हम सबके प्रति कितनी करुणा का भाव था।

गुरुदेव जी हर क्षण वैराग्य और संसार की नश्वरता पर ही ध्यान रखते थे और यही सीख हम सबको देते थे। आप कई बार यह चर्चा करते थे कि संसार और शरीर केवल कूड़ा-कचड़ा का पिटारा है। संसार में मोह करना अपने आप से, अपने लक्ष्य से दूर जाना है। आप कहते थे कि मेरा शरीर और तुम्हारा शरीर मिट्टी से बना है और आज कल में यह मिट्टी में जायेगा। इस दरम्यान गुरुदेव ने मुझसे पूछा, मेरा शरीर छूट जायेगा तो रोओगे तो नहीं? मैं मौन होकर आपकी ओर देखने लगा। फिर आपने कहा कि यह पंच तत्त्वों से निर्मित शरीर तो छूटेगा ही चाहो या न चाहो और इस शरीर में कूड़ा-कचड़ा के अलावा धरा क्या है, जिसके लिए तुम रोओगे। यदि मुझे चाहते हो तो मेरे ज्ञान का आचरण करो, मैं सूक्ष्म रूप से तुम्हारे दिल में रहूंगा।

24 सितम्बर 2012 की बात है। शाम को भोजन से पहले मैं सड़क पर घूम रहा था। गुरुदेव जी मुझे देखकर अपनी ओर बुलाये और कहने लगे कि मेरा लड़का बेईमान है, मुझसे नजरें चुराकर भागता है। मैं और गुरुदेव जी जोर से हंस पड़े। शायद उसी समय गुरुदेव जी दांत के डॉक्टर के पास दांत लगवाने जाने वाले थे। मैंने आपसे पूछा कि साहेब जी! आज आपके दांत लग जायेंगे क्या? आपने कहा—हां बेटा, आज जाने की बात है। आप कुछ देर मौन हो गये फिर आप कहने लगे कि संसार कितना झूठा है। यह शरीर और संसार सब झूठे हैं। इसमें सार कुछ भी नहीं है, सब नाशवान है। आज मैं बालपन, किशोर, जवानी, अधेड़, इन सभी अवस्था को पार करके बूढ़ा हो गया हूं और दिन-दिन मृत्यु के निकट जा रहा हूं। आज-कल में यह दशा आ जानी है। इतना कहकर आप मेरी ओर देखे और कहे—तुम तो अभी जवान हो। तुम्हारे सभी दांत नये हैं, सभी अंग ठीक हैं, अभी तुम उछल-कूद कर सकते हो। लेकिन यह ध्यान रखना यदि जिन्दा रहोगे तो तुम्हारी भी यही दशा होगी। इसलिए जितना बन सके अपने आप को साधने में लगाओ। सब समय सावधानीपूर्वक, सजगतापूर्वक, होशपूर्वक अपने काम में लगो।

गुरुदेव जी सब समय मृत्यु को देखते थे, अंत दशा को देखते थे। इसलिए आपको कुछ छूट जाने का भय नहीं था और जीवन में कुछ पाने की आशा भी नहीं थी। हम कहते हैं कि गुरुदेव जी अचानक चले गये, आप अचानक नहीं गये, आपकी तैयारी पहले से ही हो चुकी थी। आप अपने बोरिया-बिस्तर समेटे पहले से ही तैयार थे। हम अज्ञानी आपके इस भेद को क्या जानें।

गुरुदेव जी जीवन रहते-रहते मृत्यु का अनुभव, अपने निजस्वरूप के सुख का अनुभव कर चुके थे। ऐसे महापुरुष के लिए मृत्यु क्या चीज है? गुरुदेव जी तो प्रारब्धवश शरीर का निर्वाह कर रहे थे। प्रारब्ध खत्म होते ही नश्वर शरीर और असार संसार छूट गया और आप अपने आप में सदा के लिए लीन हो गये।

पूज्य गुरुदेव जी को श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए गुरुदेव जी को शत-शत नमन करता हूं।

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

हमारे गुरुदेव जी

जितेन्द्र दास

गुरुदेव जी यही सदैव कहते थे कि सबको एक दिन छोड़कर जाना पड़ेगा। कौन रहने आया है? सचमुच में गुरुदेव जी का यही हुआ। हम सबको भी छोड़कर जाना है। लेकिन जाने-जाने में फर्क है। गुरुदेव जी का संसार से जाना, संतों, भक्तों, प्रेमियों के लिए सामान्य नहीं था। वे पारख सिद्धान्त के प्रकाशस्तंभ थे।

ऐसा प्रकाशस्तंभ गिर जाये या बुझ जाये, तो क्या होगा। संसार में अंधेरा छा जायेगा, दुर्घटना हो जायेगी। राहगीर भटक जायेगा।

गुरुदेव जी का अधिकतम समय स्वाध्याय, सत्संग, ध्यान-समाधि तथा सद्ग्रन्थों के लेखन कार्य में ही बीतता था। इसलिए अपने शिष्यों एवं भक्तों को भी सद्ग्रन्थों का अध्ययन एवं ध्यान-समाधि-अभ्यास के लिए जोर देते थे। वेद, शास्त्र, पुराण, उपनिषद् के गूढ़ रहस्य को सहजता से समझाते थे। वे समझकर अपने जीवन में प्रयोग भी किये।

गुरुदेव जी प्रेमियों के पोषक थे। साधकों को सीने से लगा लेते थे। सचमुच में महापुरुषों का हृदय प्रेममय होता है। साधकों की गलतियां देखकर क्रोधित नहीं होते थे किन्तु उन्हें उचित सलाह देते थे। साधक भी, गुरुदेव जी की बातों पर विचार कर उसे अमल करते थे और गलतियों के त्याग में तत्पर हो जाते थे। गुरुदेव जी साधक को डांट-फटकार कभी नहीं करते थे। उसे अकेले में शांति से समझाते थे। जबरदस्ती मनाने की बला नहीं लेते थे। गलत को गलत, सच को सच कहने का सहज स्वभाव था। बनावट एवं चमत्कार बिलकुल नहीं था। हमारे गुरुदेव जी आहार-विहार में पूर्ण संयमी थे। सद्गुरु कबीर साहेब ने कहा है— *फहम आगे फहम पाछे, फहम दाहिने डेरि। फहम पर जो फहम करे, सो फहम है मेरिऊ* इस भाव को गुरुदेव जी बिलकुल चरितार्थ किये। तभी तो ऊंचे-नीचे व्यवहार को भी सहने का सामर्थ्य गुरुदेव में कूट-कूट कर भरा था। गुरुदेव जी भोजन को दवाई समझकर ग्रहण करते थे। सादा सात्विक भोजन करते थे। जैसा स्वयं भोजन करते थे, वैसा सभी संत-भक्तों के लिए भी बनवाते थे। भण्डार घर में जो भोजन बनता था वही भोजन गुरुदेव जी भी करते थे। 'सादा भोजन उच्च विचार' को गुरुदेव जी शिरोधार्य किये। जीवनपर्यन्त उस नियम का पालन किये।

गुरुदेव जी आश्रम में वर्षाकाल में चौमासा बिताते थे और आठ महीने विचरण करते हुए प्रचार-प्रसार में लगे रहते थे। गुरुदेव जी कहा करते थे कि आश्रम में निश्चिंत रहता हूं। संत मण्डली के साथ विचरण करता हूं तो कुछ जिम्मेदारी निभाना पड़ता है। उनका विचार था कि भक्तों पर संत-समाज भारस्वरूप न हो और अच्छा धर्म प्रचार-प्रसार हो। इसके लिए गुरुदेव जी विशेष जोर देते थे।

गुरुदेव जी भौतिक शरीर से हमारे बीच नहीं हैं किन्तु सूक्ष्म शरीर से हमारे बीच उपस्थित हैं। उनका ज्ञान-प्रकाश चारों दिशाओं में जगमगा रहा है। दुनिया के लाखों-लाखों लोगों को राह बता रहा है। गुरुदेव जी की जितनी विशेषता कही जाये उतनी ही कम है। इसी के साथ गुरुदेव जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

पूज्य गुरुदेव जी का जीवन एक खुली किताब

गुरुजतन साहेब

पूज्य गुरुदेव जी का जन्म केवल आत्मकल्याण और समाज-सेवा हेतु हुआ था। यह सब त्याग से ही मिलता है। वे छोटे परिवार की ममता को त्यागकर गुरु की शरण में आये। गुरुदेव जी हमें कहा करते थे कि रोटी, कपड़े, मकान की चिंता नहीं करना, ये सब त्याग के बल पर मिलता है। जो जितना त्याग पर ध्यान देगा उसे उतनी अधिक शांति और आत्मिक उपलब्धि मिलती है। मैंने भी अपने खुद के जीवन में अनुभव किया और गुरुदेव जी के जीवन को भी अच्छी तरह से पढ़ा। गुरुदेव जी एक खुली किताब थे। इसे पढ़ने के लिए विवेक, वैराग्य, मुमुक्षुता एवं षट् संपत्ति की आवश्यकता है। जो व्यक्ति इस साधन का सहारा लेगा वही इस खुली किताब को पढ़ सकता है।

भक्ति—जब तक घर में रहे एकदम समर्पित होकर रहे। घर छोड़ने के पूर्व निर्मल सत्यज्ञान प्रभाकर और त्रिज्या का अध्ययन कर ज्ञान-वैराग्य में अपने को खूब कसे। आप 21 वर्ष की उम्र में गुरु की शरण में आये। गुरुदेव जी ने आपके जीवन दर्शन (ज्ञान, भक्ति, वैराग्य) का अध्ययन किया और दो ही दिन में कंठी एवं साधुवेष प्रदान कर दिया। फिर आप गुरु-भक्ति एवं संत-सेवा में समर्पित हो गये। 44 वर्षों से मैं आपकी शरण में रह रहा हूं। आप कभी अपने गुरु जी के पास जाते थे तो 20 फीट दूरी में खड़ाऊं छोड़ देते थे। आरती के समय मंच से उतरकर हाथ जोड़कर खड़े होते थे।

ज्ञान-वैराग्य—ज्ञान-वैराग्य भी एकरस अंतिम तक ज्यों-का-त्यों रहा। लम्बे समय के बाद गुरुदेव जी से जब मिलते थे तो यही कहते थे कि इस जीवन को अंतिम समझकर सभी वासनाओं को त्याग कर देना। इस देह को अंतिम समझना।

गुरु कबीर ने जो कहा था उसे आपने करके दिखा दिया। एक बार गुजरात वडोदरा पानी दरवाजा गये। वहां के आचार्य स्वामी रामेश्वरानंद साहेब थे। उनसे मिलने के लिए गये। स्वामी जी अपनी गद्दी के बराबर आपके लिए गद्दी लगवाये थे। आप उस पर नहीं बैठे। अपनी साफी बिछाकर बैठे तो स्वामी जी भी अपनी साफी बिछाकर नीचे बैठ गये। आपने स्वामी जी से कहा कि आप इस गद्दी के आचार्य हैं। आपको बैठना शोभा देता है तो स्वामी जी ने कहा—मैं तो कुछ दर्शनों का अध्ययन कर आचार्य बना हूं और आप गुरु कबीर के जीवन-दर्शन को अध्ययन कर आचार्य हैं। गुरु कबीर ने जो कहा उसे आपने कर दिखाया। स्वामी जी ने उदाहरण दिया कि मैं भोजन करने बैठा हूं और कोई कह दे कि आपके बगल में बैठा व्यक्ति निम्न वर्ग का है तो मैं भोजन नहीं कर पाऊंगा। लेकिन आपके अंगरक्षक, साथी, भंडारी कौन-कौन वर्ण के हैं, इसका पता आप लगाये ही नहीं। तो सच्चे आचार्य आप हैं। गुरु कबीर ने जो कहा उसे आपने कर दिखाया।

इस प्रकार गुरु भक्ति की कसौटी है। हम उनके जीवन दर्शन को अच्छी तरह अध्ययन करें और त्याग मार्ग में उत्तीर्ण हों।

मेरा वर्तमान जीवन सद्गुरु अभिलाष साहेब जी के समकालीन हुआ और आपके जीवन दर्शन को पढ़ने का, साथ रहने का अवसर मिला। कभी-कभी मेरे मन में होता था कि गुरु कबीर के समय हुआ होता, बुद्ध के समय हुआ होता, लाओत्जे के समय हुआ होता, श्री काशी साहेब, श्रीलाल साहेब के समय में हुआ होता लेकिन आपके जीवन काल में जन्म लेकर आपका सान्निध्य पाकर मैं अपने को बहुत ही सौभाग्यशाली समझता हूं कि आपको पाकर बुद्ध, महावीर, कपिल, सुकरात, लाओत्जे, कबीर सभी महापुरुषों के समय जी रहा हूं, ऐसा महसूस होता है।

कबीर आश्रम, सकरी (कोरासी), रायपुर, छ.ग.

गुरुदेव जी के ऋणी

हरदेव राम

पूज्य गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब ने कबीर दर्शन पारख सिद्धान्त के माध्यम से भारत ही नहीं, संपूर्ण विश्व में कबीर के मूल विचारों की वह रोशनी फैलाई है जो आज तक सद्गुरु कबीर के करीब पांच सौ वर्षों बाद भी किसी अन्य मनीषी ऋषि या संत द्वारा संभव नहीं हो पाया। सद्गुरु कबीर के मूल ग्रंथ 'बीजक' पर दो खण्डों में व्याख्या लिखकर जन साधारण को भी कबीर को समझने का सरल साधन उपलब्ध करा दिया। जिसे पढ़कर देश-विदेश के करोड़ों लोग जीवन के कल्याण में लग गये।

भारतवर्ष के करीब सभी मुख्य ग्रन्थों वेद, उपनिषद्, गीता, महाभारत, स्वामी शंकराचार्य की 'विवेक चूड़ामणि', भगवान बुद्ध के धम्म पदं आदि अनेक ग्रंथों का हिन्दी में भाष्य लिखकर आम जनता के लिए अध्यात्म को सही ढंग से समझने को सरल कर दिये। अपने संपूर्ण जीवन में प्रवचनों एवं ध्यान-शिविरों के द्वारा जनमानस को अपने आप को समझने, अपने अन्दर की शक्ति को जागृत कर अपना कल्याण करने का मार्ग प्रशस्त करने के लिए अथक परिश्रम करते रहे। आपका देहावसान आध्यात्मिक जगत में एक अपूरणीय क्षति है।

जड़-चेतन के भेद एवं विवेक-वैराग्य के सतत अभ्यास का सहारा लेकर अपने अनुयायियों को सेवा-साधना, स्वाध्याय एवं समाधि द्वारा इसी जीवन में जीवन्मुक्त होने की रोशनी प्रज्वलित किये। आज ऐसे जिन संतों-भक्तों को वे छोड़कर जा रहे हैं उनकी आंखें उनके प्यार की भूख में आंसुओं से डबडबा रही हैं।

हम सभी साधक उनकी दया-सेवा के ऋणी हैं। हम अपने अन्तर्तम से उनकी सेवा के लिए कृतज्ञता व्यक्त करते हैं तथा अपने श्रद्धा-सुमन उनके चरणों में समर्पित करते हैं।

साहेब बन्दगी, साहेब बन्दगी, साहेब बन्दगी!

एम. आई. जी. 3, प्रीतमनगर, इलाहाबाद

मोक्ष परम सुख है। मोक्ष है मन का सरल, शुद्ध, ग्रंथिहीन तथा प्रतिक्रिया से सर्वथा परे रहना। जिसने मोक्ष प्राप्त किया वह धन्य है। जिसने इसे नहीं पाया, वह संसार का सब कुछ पाकर भी कुछ नहीं पाया। संसार से जो कुछ मिलेगा, यदि सावधान न रहें तो विकार बनायेगा। इसलिए जीवन की सच्ची उपलब्धि प्राणी-पदार्थों का ऐश्वर्य नहीं अपितु आत्मशांति है। भूख लगने पर रूखा-सूखा भोजन मिल जाये और हर क्षण मन शांत रहे, यही जीवन की सफलता है।

(पूज्य गुरुदेव जी : भूला लोग कहैं घर मेरा)

कुछ यादगार क्षण

डॉ. दयालाल साहू

सन 1974 में गुरुदेव जी छ. ग. कार्यक्रम देने पहुंचे। जहां मैं आसपास गांवों में सत्संग सुनने जाया करता था। दूसरी जगह जाने के लिए संतों के लिए ट्रैक्टर की व्यवस्था की जाती थी। कार्यक्रम कोसमर्रा से पलारी का था। बन्दगी पश्चात साहेब जी बोले—बेटा, कल सुबह खाली रहोगे तो अपनी मोटर सायकिल से पलारी छोड़ देना। मैं गद्‌गद हो गया। दूसरे दिन 5 बजे मोटर सायकिल लेकर कोसमर्रा पहुंचा। साहेब जी को बैठा कर पलारी को निकला। कुछ दूर चलने के बाद मोटर सायकिल जोर से दौड़ाया। तुरंत साहेब जी मेरे कंधे को थपथपाते हुए बोले—बेटा, गति धीमी करो। आराम से चलो। कोई जल्दी नहीं है। गति धीमी हो गयी। इस प्रकार की सेवा 2-3 साल तक लगभग 9-10 गांवों में पहुंचाने-लाने की मिली। आज भी जब मोटर सायकिल चलाता हूं तो कम गति का साहेब का आदेश याद आता रहता है।

सन 1984 में घूमते हुए कोलकाता पहुंचा। प्रेमप्रकाश गुप्ता के यहां गुरुदेव जी विराजमान थे। मैं बहुत खुश हुआ। दूसरे दिन प्रातः बन्दगी के लिए ऊपर छत पर गया जहां गुरुदेव जी की पीठ पर एक संत द्वारा मालिश किया जा रहा था। बन्दगी पश्चात गुरुदेव जी बोले—बेटा, चलो तुम मालिश करो। मैं गद्‌गद हो गया। कितना सौभाग्यशाली हूं बिना मांगे मोती मिल गया। सेवा का मौका मात्र दो दिन मिला। मालिश कराते समय कुछ अमृत वाणी की बौछार करते रहे। उस क्षण को याद कर मैं कृतकृत्य हो जाता हूं। साहेब जी की याद हमेशा आती रहती है। मिलनसार, सहज स्वभाव, व्यावहारिक ज्ञान से पूर्ण, वैराग्यप्रिय साहेब जी के चरण-कमल में शत-शत नमन।

ग्राम-डोमा, तहसील-जिला-धमतरी, छ.ग.

यदि मन दुखी है, तो हम जीवन को ठीक से नहीं जी रहे हैं; और यदि मन प्रसन्न है और निरंतर प्रसन्न है, तो जीवन ठीक से जीया जा रहा है। जीवन की विकृति है दुख और जीवन की संस्कृति है सुख। हम बाहर धन मानते हैं, किंतु वह ऊपरी है। वस्तुतः धन मन की पूरी निर्मलता, ग्रंथिहीनता एवं तृष्णाहीनता है। जिसका मन कहीं बंधा नहीं है। उसका मन ही आनंद-सागर बन सकता है। द्रष्टा चेतन तो स्वभाव से ही शुद्ध है, मन को शुद्ध करना है।

✡ ✡ ✡

कुछ न सोचना समाधि है। जिसे स्वरूप का बोध है, वह जब सोचना बंद कर देता है तब अपनी दशा में पहुंच जाता है। यही जीव का गंतव्य है। जब वह व्यवहार में लगता है, तब सोचना तो होता है, परंतु वह बोध-वैराग्य का विषय रहता है। संसार की नश्वरता और स्वरूप की स्थिरता, ये ही उसके सोचने के विषय होते हैं। जीवन का अंतिम काम यही है, संसार से निवृत्त होकर स्वरूपलीन हो जाना।

(पूज्य गुरुदेव जी : उड़ि चलो हंसा अमरलोक को)

विलक्षण हृदय एवं प्रतिभा के धनी

रविन्द्रनाथ यादव, एडवोकेट

मैं पहली बार अपनी बेटी प्रियंका के साथ सद्गुरु से अगस्त 1998 में मिला था। सद्गुरु से मिलवाने में श्री भीम साहेब का योगदान रहा। पहली मुलाकात में गुरु जी ने मुझे पांच पुस्तकें दीं। ये पुस्तकें थीं—मैं कौन हूं?, ध्यान क्या है?, हिन्दू कौन?, ज्ञान चौंतीसा और पूजिय विप्र शील गुण हीना। इन पुस्तकों को पढ़ने के बाद मुझे ऐसा लगा कि अभी तक मैं अध्यात्म की ए.बी.सी.डी. भी नहीं जानता हूं। मैं तब तक बजरंगबली की पूजा करता था। इन पुस्तकों को पढ़ने के बाद मैंने 'कबीर दर्शन' का अध्ययन किया। कबीर दर्शन पढ़ने के बाद आध्यात्मिक भ्रम दूर हुए और मैं सुबह के ध्यान के कार्यक्रम में भाग लेने लगा। सन् 2001 में ध्यान शिविर में तीन सत्र में एक सप्ताह तक भाग लिया। इसके बाद सुबह के ध्यान में नियमित रूप से भाग लेता रहा हूं। आज मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि सद्गुरु के विचारों ने मेरा आध्यात्मिक भ्रम दूर कर दिया है। मैं अपने को सौभाग्यशाली मानता हूं कि ऐसे महापुरुष के संरक्षण में रहकर अध्यात्म के क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर मिला। एक बार गुरु जी ने मुझसे कहा था कि तुम भाग्यशाली हो कि आश्रम के पास ही मकान बनवाकर रह रहे हो, जितना अवसर मिले आश्रम का लाभ उठाते रहना। गुरु जी के इस वाक्य को ब्रह्म वाक्य मानकर मैं आश्रम से जुड़ गया और गुरु जी से समय-समय पर मिलकर अपनी समस्याओं का निदान भी पाता रहा।

सद्गुरु का व्यवहार पक्ष इतना मजबूत था कि जब हम लोग उनसे मिलते थे तब हमारी गृहस्थी के बारे में जरूर पूछते थे। ऐसा लगता था कि कोई पिता अपने पुत्र के दुख-दर्द को जानने की कोशिश कर रहा है। मैं गृहस्थी में रहते हुए भी गुरु जी को बहुत करीब पाता था। ऐसे सद्गुरु के चले जाने के बाद उनका अभाव हमेशा खटकता रहेगा। शरीर से गुरु जी भले न दिखाई पड़ें, लेकिन गुरु जी के दिये उपदेश को जब याद करता हूं तो लगता है गुरु जी हमारे हृदय में ही विराजमान हैं। गुरु जी इतने कर्मठ थे कि वे समय का दोहन करते हुए समाज को इतना दे दिये हैं कि समाज इसका लाभ उठाकर अपनी आध्यात्मिक पिपासा शान्त कर सकता है। ऐसे महापुरुष कभी-कभी पैदा होते हैं। सद्गुरु ने अपने विचारों से 'पारख सिद्धान्त' को ऋणी किया ही है साथ-साथ वैष्णव समाज को भी ऋणी कर दिया है। गुरु जी का यह विचार अत्यंत सराहनीय है कि कोई भी व्यक्ति किसी भी व्यक्ति से उसकी जाति न पूछे। इससे समाज में फैले जात-पांत का रोग दूर करने में मदद मिलेगी। गुरु जी विलक्षण हृदय व बहुप्रतिभा के धनी थे। उनके बारे में कुछ कहना, सूरज को दीपक दिखाने के समान है। ऐसे महापुरुष का संसार छोड़कर जाने से समाज की अपूरणीय क्षति हुई है, जिसकी भरपाई नहीं की जा सकती। ऐसे महापुरुष को मैं शत-शत नमन करता हूं।

कबीरनगर, इलाहाबाद

याद में तेरी

देवेन्द्र कुमार

परम पूज्यनीय शत-शत वन्दनीय

गुरुवर श्री धर्मेन्द्र साहेब जी, साहेब बन्दगी!

गुरुवर,

मैं आज प्रथम बार आपसे किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार कर रहा हूं। यद्यपि पत्र लेखन के समय मेरी भावना पूरी तरह पवित्र है फिर भी यदि मुझसे पत्र लेखन में कोई त्रुटि हो तो मुझे क्षमा कर देना। गुरु जी मैं 35वें वार्षिक अधिवेशन व परम पूजनीय गुरु जी की श्रद्धांजलि सभा में आया था जहां पर मुझे पता चला कि गुरु जी की पुण्य स्मृति में एक स्मारिका प्रकाशित होना है जिसमें भक्तों को भी अपने-अपने विचार भेजने को कहा गया था। इसी सन्दर्भ में मैं अपना कुछ अनुभव व विचार गुरु जी की स्मारिका के लिए भेज रहा हूं।

मेरा परिवार शुरू से ही पारख सिद्धांत (कबीर विचारधारा) को मानने वाला रहा है। मैं गुरु जी के सान्निध्य में प्रथम बार सन् 1997 में आया था जब गुरु जी व आप अन्य सन्तों के साथ हमारे घर पर पधारे थे। उसके बाद मुझे गुरु जी के दर्शन का अवसर कई बार मिला। मुझे इलाहाबाद व दिल्ली में गुरु जी का सत्संग सुनने को कई बार मिला। गुरु जी के सम्पर्क में आकर व उनके विचारों से प्रेरित होकर मेरे जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन आने लगा है तथा मेरा मन प्रत्यक्ष से हटने लगा है। परोक्ष को तो हम पहले से ही नहीं मानते थे। गुरु जी के प्रवचनों को सुनकर मेरे मन को जो शान्ति मिलने लगी है वह शब्दों में व्यक्त नहीं की जा सकती।

गुरुदेव जी, अन्त में मेरी आपसे विनम्र विनती है कि गुरु जी की स्मारिका के लिए उन्हें श्रद्धांजलि स्वरूप कुछ पंक्तियों को स्मारिका में कुछ स्थान मिल जाये तो मैं अपने आपको बड़ा भाग्यशाली समझूंगा।

याद में तेरी तुम्हें समर्पित श्रद्धा सुमन हमारे।
तुमने फैलाये जीवन में हम सबके उजियारेû
भादो कृष्ण द्वादसी को इस जग में आप पधारे।
भादो शुक्ल एकादश को तुम परिनिर्वाण सिधारेû
याद में तेरी तुम्हें समर्पित श्रद्धा सुमन हमारे।
सन् 97 से लौ जागी जब घर मेरे आप पधारेû
जीवन यह हुआ धन्य है दर्शन पाके तुम्हारे।
लोभ, मोह, क्रोध तज के मेरे दूर हुए अंधियारेû
धन्य है मां जगरानी जिनके गर्भ में आप पधारे।
याद में तेरी तुम्हें समर्पित श्रद्धा सुमन हमारेû
जाति धर्म का भेद न जाने तुम थे सब के सहारे।
धन्य है वह धरा जहां पर चरण पड़े हैं तुम्हारेû
बालक वृद्ध युवा नर नारि सबके अभिलाष दुलारे।
याद में तेरी तुम्हें समर्पित श्रद्धा सुमन हमारेû

मेरठ, उ. प्र.

सद्गुरुदेव की कृपा

जी. सी. वर्मा

आध्यात्मिक मार्गदर्शन के लिए एक स्वरूपस्थ सन्त के सानिध्य की अभिलाषा मई 1992 में कबीर मन्दिर, प्रीतमनगर, इलाहाबाद में कबीर दर्शन के प्रसिद्ध मर्मज्ञ एवं व्याख्याता परमपूज्य सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब के दर्शन में फलीभूत हुई। उनके दर्शन मात्र से ही मैं तृप्त हो गया। परिचय के बाद साहेब जी ने निर्देश दिया कि आगामी अक्टूबर में तीन दिन का वार्षिक सम्मेलन होगा, उस सन्त समागम में कबीर दर्शन की व्याख्या की जाती है। सत्संग का लाभ लेने के लिए अवश्य आओ।

परमपूज्य गुरुदेव जी के निर्देशानुसार मैं उस तीन दिवसीय वार्षिक सम्मेलन में सेवा भाव से प्रीतम नगर पहुंचा और सत्संग का लाभ लिया। ज्ञात हुआ कि श्री गुरुदेव जी के भ्रमण का कार्यक्रम सम्मेलन के तीसरे दिन निर्धारित होता है। मैंने भी श्री गुरुदेव जी से निवेदन किया कि वे भ्रमण कार्यक्रम में लखनऊ पधारें और मेरे आवास पर सेवा का अवसर प्रदान करने की कृपा करें। मेरा निवेदन स्वीकार हो गया और श्री गुरुदेव जी निर्धारित तिथि पर लखनऊ पधारे और इस प्रकार मुझे उनकी सेवा करने का प्रथम अवसर प्राप्त हुआ। तत्पश्चात श्री गुरुदेव जी प्रत्येक वर्ष सुविधानुसार नवम्बर अथवा दिसम्बर में सन् 2007 तक लखनऊ पधारने की कृपा किये और मैं उनके दर्शन एवं सेवा का लाभ लेता रहा और कृतार्थ हुआ।

परमपूज्य गुरुदेव जी समय-समय पर मुझे भ्रष्ट व्यवस्था से दूर रहने के लिए सावधान करते रहे कि अब काला कोट पहनने की क्या जरूरत है? दो बार तो मैं सुनकर चुप रहा और मन ही मन प्रसन्न भी हुआ कि श्री गुरुदेव जी ऐसा पूछकर मुझको भ्रष्ट व्यवहार से दूर रहने का उपदेश कर रहे हैं। तीसरी बार उन्होंने कहा कि "देखो, अब तुम जज की कुर्सी पर बैठते हो, कोई गलत काम नहीं होना चाहिए।" तब मैंने उन्हें अवगत कराया कि मैं काला कोट धन प्राप्ति के लिए नहीं पहनता हूं, बल्कि वादों में उलझे हुए लोगों की निःशुल्क सेवा के लिए पहनता हूं। दिवंगत पिताश्री ने स्पष्ट कर दिया था कि वकालत पढ़ लो, लेकिन वकालत की कमाई का एक रुपया भी घर नहीं आयेगा। इस सम्बन्ध में इण्टरमीडिएट कालेज के प्रधानाचार्य ने भी मुझको सावधान किया था कि वकालत नहीं करना और अब आप भी स्वयं सावधान कर रहे हैं। यह तो मेरा सौभाग्य है कि पिताश्री, प्रधानाचार्य जी और स्वयं गुरुदेव जी चाहते हैं कि मैं वकालत पेशा से दूर रहूं। सच्चाई तो यह है कि उपभोक्ता फोरम में पांच वर्ष तक गरीब जनता की सेवा तन, मन और धन से किया। कई बार ऐसा भी हुआ कि वादी अथवा प्रतिवादी ने अपनी व्यथा सुनाई और उसको किराये के लिए अल्प धनराशि भी दिया। ऐसा सुनकर श्री गुरुदेव जी प्रसन्न हुए।

श्री गुरुदेव जी के निर्देशानुसार कबीर जीवनी का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया। पुस्तक के शीर्षक में श्री गुरुदेव जी ने स्वयं थोड़ा परिवर्तन किया और अंग्रेजी भाषा में पुस्तक का शीर्षक "The Life and Philosophy of Saint Kabir" हो गया है। यह पुस्तक कबीर आश्रम में उपलब्ध है।

परमपूज्य श्री गुरुदेव जी को शरीर की उपयोगिता का पूरा-पूरा आभास युवावस्था में ही हो गया था, ऐसा प्रतीत होता है। वे निश्चित रूप से भौतिक शरीर के मोह से मुक्त थे। उनके जर्जर शरीर की उपयोगिता समाप्त हो गयी और उससे जीव का छुटकारा हो गया। ऐसे मुक्त जीव (श्री गुरुदेव जी) को मैं अपना श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूं।

सरोजनी नगर, लखनऊ, उ.प्र.

तेरे जैसा मीत नहीं

ब्रह्मचारी करमचन्द

26 सितम्बर 2012 का दिन हम सभी के लिए ऐसी खबर लेकर शुरू हुआ कि सबके दिल की धड़कन को तेज कर दिया और यह मानने के लिए मजबूर कर दिया कि परम पूज्य सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी इस दुनिया में नहीं रहे।

गुरुदेव जी से मेरी अंतिम मुलाकात 25 सितम्बर 2012 को हुई थी। रोज की भांति शाम 6.30 बजे डेढ़ पाव दूध में एक चम्मच हॉर्लिक्स मिलाकर ले गया और एक चम्मच च्यवनप्राश दिया। साहेब जी च्यवनप्राश खाकर दूध पी लिये। साहेब जी का यही शाम को भोजन-जलपान होता था। साहेब जी पूर्ण स्वस्थ थे। हलका-हलका शरीर में दर्द था, बस। 9.30 बजे सेंकाई करके वे अपने कक्ष में रोज की भांति अन्दर से दरवाजा बंद कर सो गये। हम लोग भी सो गये। सुबह चार बजे राम साहेब अन्दर कमरे से ही घबराहट के साथ आवाज दिये, देवेन्द्र जी! साहेब जी बाथरूम में गिर गये हैं। उस समय मैं बिस्तर पर था। इतना सुनते ही कि साहेब जी बाथरूम में गिर गये हैं, मैं तेजी से दौड़कर अन्दर गया। राम साहेब दूसरे बाथरूम में घुसकर अन्दर गये और दरवाजा खोले, हम तीनों अंदर साहेब जी के पास गये। साहेब जी के शरीर को छुए तो साहेब का शरीर एकदम ठण्डा था। साहेब की खड़ाऊ दोनों पैरों से निकल गयी थी। राम साहेब, देवेन्द्र साहेब और मैं तीनों साहेब जी को उठाकर बड़े हाल में लाये। मैं दौड़कर श्री गुरुक्षेम साहेब और अन्य संतों को बुलाया। आश्रम के सभी संत तुरन्त आ गये। साहेब जी की आंखें बंद थीं, शरीर में कोई क्रिया नहीं हो रही थी। शरीर पूरा शांत हो चुका था।

इतना सब होते हुए भी यह विश्वास नहीं होता था कि साहेब जी अब इस दुनिया में नहीं हैं। ऐसा लगता था कि हम सब एक सपना देख रहे हैं। लेकिन सपना कभी सच नहीं होता। अभी सपना टूटेगा और साहेब जी हमें पूर्ण स्वस्थ मिलेंगे। लेकिन इस कड़वे सत्य का घूंट हम सब को पीना पड़ा कि साहेब अब हमें कभी नहीं मिल सकते। जिस दीपक के उजाले में मैं 2003 से रहा वह दीपक 26 सितम्बर, 2012 को सदा-सदा के लिए बुझ गया।

साहेब के बारे में जो कुछ कहा जाये वह कम होगा। गुरु जी जैसा कोई दूसरा जोड़ा इस दुनिया में देखने को नहीं मिला। आप अद्वितीय थे। आपके द्वारा मिले आध्यात्मिक धन को हम कभी नहीं भूल सकते हैं जिसे पाकर हम अपने आपको बहुत बड़ा सौभाग्यशाली समझते हैं। साहेब जी की एक खास विशेषता थी— उनके पास जब कोई साधक मिलने जाता तो वे उसके साथ ऐसा प्रेमपूर्ण व्यवहार करते थे कि उसे लगता कि साहेब जी सबसे अधिक प्रेम मुझसे करते हैं। साहेब जी प्रेम के अथाह सागर थे। उनके पास सबके लिए बराबर प्रेम था। आप जैसा जीते थे वैसा ही बोलते और लिखते थे न कि जैसा बोलते और लिखते थे वैसा जीते थे। पहले आप खुद उस रहनी में रहते थे फिर अपना अनुभव समाज के बीच रखते थे। आपके द्वारा दिये हुए विचार और ग्रंथ हर साधक के साधना मार्ग में संबल होंगे। अधिक क्या कहूं, हे गुरुवर! 'देख लिया जग सारा मैंने, तेरे जैसा मीत नहीं'।

आपके द्वारा लिखी एक-एक पंक्ति इतनी महत्त्वपूर्ण है कि उसे हम अपने जीवन में उतारें तो हमारा जीवन

सुन्दर बन जाये। जैसे एक पंक्ति को देखें 'स्ववश पथ है त्याग जो सुखमय सरल है।' यह पंक्ति मुझे जब-जब याद आती है तब-तब मुझे ऐसा लगता है मानो हम अपना रास्ता भूल रहे थे और कोई आकर हमें हमारे रास्ते की याद दिला दिया और हम फिर अपने रास्ते पर आ गये।

हम कौन-सा काम करने में स्वतंत्र हैं और कौन-सा काम करने में परतन्त्र। त्याग करना हमारे वश में है और ग्रहण करना, प्राप्त करना हमारे वश में नहीं है, लेकिन भूलवश हम उसी काम को करते हैं जो हमारे वश में नहीं है। हम संसार के प्राणी और पदार्थों को देखकर मोह जाते हैं और उसे ग्रहण करने के चक्कर में पड़ जाते हैं और अपने जीवन के अमूल्य समय को क्षणिक सुख के लिए बरबाद कर देते हैं। अंत में मिलता क्या है, केवल धोखा। धोखा खाने से बचने के लिए जरूरी है हम प्राणी-पदार्थों की अन्तिम स्थिति को देखें। जो प्राणी-पदार्थों की अन्तिम स्थिति को देखेगा और समझेगा। उसे कभी मोह नहीं होगा। अन्तिम स्थिति है वियोग। अलग हो जाना, छूट जाना, टूट जाना। जरूरत है कि हम अभी से संसार के प्राणी-पदार्थों को छोड़ने का प्रयास करें क्योंकि छोड़ना ही हमारे वश में है। ग्रहण करना तो बहुत प्रपंच का काम है। ग्रहण करने में लाखों झंझटें खड़ी हो सकती हैं, लेकिन त्याग में कोई परेशानी नहीं। इसलिए त्याग की महत्ता को समझकर जीवन जीयें।

पूज्यपाद गुरुदेव जी हमें इस रहनी में रहकर दिखा दिये कि संसार में रहकर संसार से अलग कैसे रहा जाता है। आपको कोई अपनी जमीन-जायदाद समर्पित करना चाहता तो आप साफ मना कर देते कि मुझे नहीं चाहिए। कई भक्त अपनी प्रापर्टी आपके नाम करना चाहे लेकिन आप सदैव नकारते रहे। अपने आप को संसार के प्रपंच से बचाते रहे। आप हमेशा यह उदाहरण देते रहे कि मूंज में से सींक की तरह अपने आप को संसार से निकाल लो। मूंज में से सींक जब अलग होती है तब सींक का कोई अंश मूंज में नहीं छूटता है। ठीक इसी प्रकार आपका यहां कुछ नहीं छूटा। वस्तुतः आपका कुछ था ही नहीं तो छूटेगा क्या! आप मूंज में से सींक की तरह अपने आप को अलग कर लिये थे। आपने समाज को निर्भ्रांत जीवन जीने की प्रेरणा दी। समाज में फैले पाखण्ड और अंधविश्वास को उखाड़ फेंकने का साहस दिया, इसके लिए समाज सदैव आपका ऋणी रहेगा।

स्वरूपलीन सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी का यह वाक्य 'स्ववश पथ है त्याग, जो सुखमय सरल है'। अगर हमारे जीवन में उतर जाये तो हमारा यह दुखों से भरा हुआ जीवन सुखमय बनकर आत्मकल्याण और लोक-कल्याण में सहयोगी बन सकता है। जरूरत है हम त्याग के शाश्वत सुख को समझकर संसार के प्राणी-पदार्थों की आसक्ति और मन में भरी अहंता-ममता का त्याग कर आत्मशांति का लाभ लें। यही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

निज स्वार्थ वो भयवश कभी झूठी न साक्षी दीजिए।
नहिं भूलकर भी दूसरे का घात स्वप्नेहु कीजिए।
छल क्रूरपन झूठा वचन दुरआचरन को त्यागिए।
सीधे सरल समतालु हो और सत्य में अनुरागिए।
माता पिता बूढ़ों बड़ों को सेइए सन्मानिए।
गुरु सन्त आज्ञा मानिए तेहि पूज्य सब विधि जानिए।
सदग्रन्थ नित अवलोकिए सत्संग को नित कीजिए।
निर्वाह काज सम्हाल कर परमार्थ पथ को लीजिए।
लेना हो! लीजै नम्रता, देना हो! दीजै दान है।
करना हो! नेकी को करो, चलना हो! पथ एहसान है।
दो दिन के जीवन में अयश की पोटरी मत बाँधिए।
ऐसे सुमारग से चलो परलोक लोक सुधारिए।

(पूज्य गुरुदेव जी : आदेश प्रभा)

संत अभिलाष दास : यथा नाम तथा गुण

आनन्द नारायण शुक्ल

इलाहाबाद! संत अभिलाष दास! नाम में सादगी, चेहरे पर शालीनता और व्यवहार ऐसा कि जो भी मिलने गया, उनका दास बनकर रह गया। इससे ज्यादा किसी को उनसे अपेक्षा भी न थी। सारी आकांक्षाएं और अभिलाषाएं संत में जाकर इस प्रकार सिमट जाती थीं जैसे संत कबीर की वाणी। हालांकि आज वे हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन कबीर वाणी के पारखी के रूप में विख्यात संत की सदाशयता और उदात्त विचार आंखों के सामने तैर जाते हैं और कानों में आज भी यदा-कदा गूंजते रहते हैं। उनके प्रथम साक्षात्कार का दिन तो याद नहीं, लेकिन इतना जह्वर है कि वह दिन अन्तःस्फूर्ति भरा दिन था। वर्ष 2009 के अक्टूबर का माह था। उन दिनों मैं एक प्रतिष्ठित समाचार पत्र में मुख्य संवाददाता था। सुबह करीब 10 बजे कबीर आश्रम जा पहुंचा। आश्रम पहुंचते ही अहसास हुआ कि सच, शहर में भी ऐसी शांत और निर्मल जगह हो सकती है।

संत के दर्शन की इच्छा मन में लिए आश्रम के मुख्य कक्ष में जाकर बैठ गया। अपने छायाकार को बाहर की गतिविधियों को कवर करने के लिए भेज दिया। ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा और संत जी सम्मुख एक छोटी से मचिया पर आकर बैठ गये। संतों के साथ मिलने और उनकी आभा व ज्ञान का रसपान करने का हमेशा लालायित रहने वाला मैं अंदर ही अंदर काफी गद्गद था। आखिर बिन बोले ही उन्होंने बहुत कह दिया था। धर्म-अध्यात्म, माया और मोह जैसे फलसफे क्षणभर में ही स्पष्ट हो गये। 'माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर। कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।' 'विषय वासना उलझकर जन्म गंवाया बाद। अब पछतावा क्या करे, निज करणी कर यादû' जैसे चंद उदाहरण देकर जिस ढंग से स्पष्ट और तर्कपूर्ण बातें रखीं कि जैसे गीता का सार समाहित हो गया।

मैं छात्र जीवन से ही श्रीमद्भगवद् गीता का अनुरागी और अनुगामी रहा। गीता का भी सार आखिर यही है कि 'कर्म करते जाओ, फल की इच्छा मत करो। कर्म भी ऐसा जिससे दूसरों को कष्ट न हो। कर्म का त्याग तो कायर करते हैं। कर्म का त्याग नहीं, कर्म में त्याग सिखाती है गीता।' यही जीवन का सार भी है। जिसने इस सार से नाता जोड़ लिया उसने संसार में रहते हुए भी मोक्ष को प्राप्त कर लिया। सुख-दुख, जीवन-मरण, आखिर सब कुछ यही है। इस संत ने भी अपने निर्मल और निश्छल मन तथा वाणी और कर्म से भोली-भाली जनता का ही नहीं अपितु पढ़े-लिखे विद्वानों का भी मार्गदर्शन किया। काश! संत अभिलाष दास जैसे मीमांसकों व चिंतकों की शृंखला अनवरत चलती रहे।

संपादक-जनसंदेश टाइम्स, इलाहाबाद

पवित्रता का सुन्दर दर्पण

ब्रह्मचारी अरविन्द

मैंने जब से होश सम्हाला तब से परम पूज्य गुरुदेव जी के चित्र की पूजा-वंदना किया करता था। ऐसा करने से मन में पवित्र भावना आती थी। मेरे शरीर के पिता श्री अर्जुन दास जी (ग्राम-धावां, सिल्ली परसदा जिला-कोरबा, छत्तीसगढ़) की महान कृपा है जो मुझे परम पूज्य गुरुदेव जी के दर्शन कराये।

परम पूज्य गुरुदेव जी के पहली बार दर्शन छत्तीसगढ़ के कोरबा क्षेत्र में भटोर-ग्राम में हुए। पहली मुलाकात में मुझे गुरुदेव जी ने ऐसा ज्ञानामृत पिलाया कि संसार मुझे फीका-सा प्रतीत होने लगा। गुरुदेव जी ने मेरा नाम पूछा। मैंने अपना नाम 'अरविंद' बताया। गुरुदेव जी ने मेरे नाम का अर्थ पूछा। मैं अपने नाम का अर्थ न जानने से चुप रहा। गुरुदेव जी ने मेरे गाल पर हाथ फेरते हुए कहा—अरविंद का मतलब होता है कमल का फूल।

गुरुदेव जी ने आगे कहा कि जैसे कमल का फूल सुगंध बिखेरता है और बहुत कोमल होता है वैसे ही तुम भी अपने भविष्य का सुन्दर निर्माण करो। अच्छा जीवन जीओ। अपने मन, वाणी और कर्म को अच्छा बनाओ। किसी को तकलीफ मत देना। सेवा करना, सरल बनकर रहना, अपने व्यक्तित्व और आचरण की खुशबू बिखेरते रहना। इस संसार में कुछ नहीं रखा है। सब कुछ मिटने वाला है। तुम्हारी आत्मा अजर-अमर है।

अपने पिता की तरह तुम भी संत-गुरुजनों की सेवा, पूजा और आराधना किया करना। पूरा जीवन परोपकार-सेवा में लगाओ और अपने संस्कारों को पवित्र बनाओ।

जैसे प्रकाश के जलने से पूरा कमरा प्रकाश से भर जाता है, भूले हुए पथिक को कोई राह बता देता है, अंधे को किसी का सहारा मिल जाता है, भूखे को कोई भोजन दे जाता है, वैसे ही गुरुदेव जी के वचन मेरे लिए संजीवनी बूटी सिद्ध हुए। कुछ वर्ष के बाद गुरुदेव जी के चरणों में आजीवन अपने आपको समर्पित कर दिया। मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि संत-गुरुजनों की सेवा में रहकर उनकी सेवा-भक्ति करके जीऊंगा।

लोग स्वर्ग पाने के लिए दान, सेवा, तीर्थ, व्रतादि क्या-क्या नहीं करते हैं, फिर भी उस स्वर्ग से अछूते रह जाते हैं। मुझे सहज ही सद्गुरु की कृपा से स्वर्ग का सुख मिल गया। किसी ने भजन में गाया है—

आनंद के लुटे खजाने, सद्गुरु के दरबार में।

सच्चे सद्गुरु की शरण किसी साधक को मिल जाये, उनकी छत्रछाया में रहने का अवसर मिल जाये तो उस साधक के जीवन में आनंद ही आनंद है। जैसे छोटे बच्चे को मां की गोद मिल जाये तो वह कितना सुकून महसूस करता है वैसी ही मेरी मनोदशा है।

जहाँ धीर गम्भीर अति निश्चल,
तहाँ उठि मिलहु कबीराû

परम पूज्य गुरुदेव जी अत्यन्त ही धीरवान महापुरुष थे। सरलता और विनम्रता उनका स्वभाव था। हृदय पुष्प के समान कोमल था।

पूज्य गुरुदेव जी प्रेम के सागर थे। जो भी उनके पास जाता, आप उससे बड़े प्रेम से मिलते थे। बच्चों के सामने बच्चे जैसा व्यवहार करते, ज्ञानियों के सामने ज्ञानियों जैसा व्यवहार उनका होता था। किसी की गलती

के बारे में जब उन्हें समझाना होता तो उसे चुपके से एकांत में प्रेम से समझाते थे।

"ये तो सच है कि भगवान है,
धरती पे रूप संत गुरुजनों का
विधाता की पहचान है।"

गुरुदेव जी ज्ञान के भण्डार थे लेकिन कभी भी उन्होंने ज्ञान का प्रदर्शन नहीं किया। जहां कहीं भी उन्हें प्रवचन करने का अवसर पड़ता था, वे नियत समय के अन्दर ही प्रवचन करते थे।

गुरुदेव जी ने समाज में व्याप्त अंधविश्वास-पाखण्ड रूपी कूड़े-कचरे को साफ किया है। खुले मंच पर प्राय: कहा करते थे कि कोई बैगा-सोखा है जो मुझ पर अपना जादू छोड़ दे। टोनही-टोनहा नाम की कोई चीज दुनिया में नहीं है। वह सब मन का भ्रम है। अध्यात्म संबंधी जो भी प्रश्न हों उसके उत्तर गुरुदेव जी ने बहुत सटीक दिया है और लिखा भी है। कइयों के मुख से सुना गया कि गुरुदेव जी इस युग के कबीर थे।

सब धरती कागज करूं, लेखनी सब बनराय।
सात समुद्र की मसि करूं, गुरु गुण लिखा न जायû

गुरुदेव जी की जितनी विशेषता कही जाये कम होगी। सच्चे सद्गुरु का जीवन कैसा होता है? पूज्यपाद गुरुदेव जी की निकटतम सेवा में रहकर उन्हें देखने का अवसर मिला। अगर उनके जैसा जीवन हम सब जीना शुरू कर दें तो हम सब की तुरन्त मुक्ति हो जाये। उनके मन में लेश मात्र भी संसार के प्रति आकर्षण नहीं था। इस नाशवान शरीर को वे हर समय छोड़े हुए थे। उनकी लिखी हुई एक-एक वाणी साधकों के लिए बहुत बड़ा सम्बल है।

गुरुदेव जी कहते थे कि बाहर की यात्रा करनी हो तो आज हर तरह के साधन हैं, किन्तु स्वयं की यात्रा के लिए बाह्य साधनों की आवश्यकता नहीं है। यहां श्रद्धा, समर्पण, सम्यक ज्ञान एवं प्रबल पुरुषार्थ के सहारे पहुंचा जाता है।

गुरुदेव जी ने लाखों-करोड़ों भटके हुए मनुष्यों को शाश्वत ज्ञान का पथ बताया और शांत का वह गूढ़ रहस्य बताया जिससे जलता हुआ मन सदा-सदा के लिए शांति का अनुभव कर सके।

आपका जीवन हम सबके लिए एक आदर्श है। आपने जो कुछ भी कहा उसे अपने आचरण में उतार कर कहा। भले ही आज आप हम सबके बीच में नहीं रहे किन्तु आपने समाज को जो दिया उसके माध्यम से दुनिया आपको सदा याद रखेगी।

हे गुरुदेव! आपकी यादों में किन शब्दों का प्रयोग करें? हम सर्वथा असमर्थ हैं। बस, यह दास विदाई के क्षणों में आपके पावन चरण कमलों में श्रद्धा के पुष्प समर्पित करता है।

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

अब तो तुम मेरे हो गये !

ब्रह्मचारी देव

समुद्र की विशालता के संबंध में हम जानते हैं कि उसमें नदी, नाले, झरने तथा गटर का पानी ही क्यों न चला जाये, वह कोई भेद नहीं रखता है, सबको अपने में मिला लेता है।

इसी प्रकार महापुरुषों की महानता होती है कि वे सभी जाति-वर्ण, मत-मजहब के अच्छे-बुरे सभी लोगों को अपने हृदय में जगह देते हैं, और उन्हें सुधरने का अवसर देकर अपने समान उन्हें भी महान बना लेते हैं।

परम पूज्य सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी के संबंध में मैं क्या कहूं। वे तो एक महान अनुशास्ता थे, संतों के आदर्श स्वरूप थे। उनकी कथनी, करनी और रहनी की एकता ने अनेक विरक्त एवं गृहस्थ नर-नारियों को आकर्षित कर उन्हें सतपथ पर चलने के लिए प्रेरित किया।

यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे ऐसे आत्मज्ञानी, प्रतिभाशाली, मानवतावादी, निःष्पक्ष, दार्शनिक, कर्मठ और सद्गुण सम्पन्न महापुरुष का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

श्रद्धेय संत श्री दयाल साहेब जी और पूज्य संत श्री चूड़ामणि साहेब जी आपस में समय-समय पर सद्गुरुदेव के संबंध में, उनके पारख ज्ञान के संबंध में चर्चा करते थे तो मैं भी किनारे बैठकर सुनता था। सुनते-सुनते मेरे मन से भूत-प्रेत, देवी-देवता, ईश्वर-अवतार आदि की कल्पना की बातें छटने लगी थीं।

एक दिन मैं सद्गुरु कबीर साहेब के जन्म और मृत्यु के विषय में अपनी माता जी से कुछ प्रश्न पूछा, परंतु वे उचित उत्तर न दे सकीं। संयोग से 2003 में श्री कबीर पारख आश्रम सूरत के ध्यान शिविर में जाना हुआ। वहां गुरुदेव जी से प्रश्नों का समाधान पाकर बहुत खुश हुआ। दो-ढाई महीने सूरत आश्रम में रहना हुआ, घर वापस लौटने की इच्छा ही नहीं हो रही थी। मैंने गुरुदेव जी के पास अपने मन की इच्छा व्यक्त की। आपने बड़े प्रेम से समझाते हुए कहा—बेटा! अभी तुम बहुत छोटे हो, कम-से-कम दसवीं तक पढ़ाई कर लो, फिर आ जाना। जब उस समय आओगे तब मैं तुम्हें अपने पास रख लूंगा। गुरुदेव जी के आज्ञापालनार्थ मैं घर वापस आ गया। परंतु एक-एक दिन वर्षों की भांति बीतता था। माता-पिता को अक्सर परेशान किया करता था कि मुझे गुरुदेव जी के पास पहुंचा दीजिए। संयोग से 2011 में रायपुर जिला के चदंखुरी फार्म के पास पचेड़ा ग्राम में गुरुदेव जी का कार्यक्रम था। दसवीं की परीक्षा देने के बाद गुरुदेव जौ के पास पहुंचा और निवेदन किया—हे गुरुदेव! मैं दसवीं कक्षा की पढ़ाई पूरी करके आ गया हूं, अब तो मुझे न लौटाइये! गुरुदेव जी ने कहा—देव! अब तो तुम मेरे हो गये, अब मैं तुम्हें अपने पास ही रखूंगा।

सच है जो महापुरुष होते हैं वे जिज्ञासुओं की जिज्ञासा पूरी करते ही हैं। उन्हें कल्याण करने का अवसर भी देते हैं। गुरुदेव जी सदैव यही कहते थे कि साधक अपनी साधना में यदि सावधानीपूर्वक चलता है तो वह थोड़े ही दिनों में अपनी दिशा में अच्छी उन्नति कर लेता है, अपने को राग-द्वेष से मुक्त कर लेता है।

गुरुदेव जी अपने प्रवचनों में हम लोगों के लिए एक विशेष बात बताया करते थे कि आत्मज्ञान हो जाने के बाद, साधक के लिए एक ही काम बचा रहता है और वह है अपने खोटे स्वभावों का, त्रुटियों का, दोषों का सुधार करना, क्योंकि आत्मज्ञानी भी जब दुखी होता है तो उसका मूल कारण होता है उसके अपने दोष और दुर्गुण, जो दूर नहीं हुए हैं। अतः दोषों का सुधार हुए बिना आत्मज्ञान भी हमें सुखी नहीं कर सकता, शांति दे नहीं सकता।

गुरुदेव जी यह भी समय-समय से कहा करते थे कि जो शांत रहता है वही संत है। कैसी भी स्थिति क्यों न हो संतों की विशेषता है कि सब स्थिति में शांत रहे, सम रहे, क्योंकि स्थितियां बदलती रहती हैं, फिर हाय तौबा करने से क्या मतलब!

परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी की शरण में आकर मैं अपने लिए यह प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं उनके बताये हुए पथ पर चलकर अपने जीवन के सारे दोषों को खोज-खोज कर निर्मूल करूंगा और सब समय शांति बनी रहे वैसा अपने आप का सुंदर निर्माण करूंगा यही सद्गुरुदेव के प्रति मेरी सच्ची श्रद्धांजलि है।

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

प्रेम के सागर गुरुदेव जी

ऋषीकेश गौतम

जिन संतों द्वारा हमें प्रेम एवं शांति का अनुभव प्राप्त कर उसी में जीवन जीकर स्व में स्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और जिनके प्रतिदिन के आचरण-व्यवहार से हमें अच्छी प्रेरणा प्राप्त हुई उन सभी संत-गुरु-चरणों में हमारी ओर से सादर साहेब बंदगी। आप सभी संतों को देखकर ही हम अत्यंत दुखदायी परिस्थिति में भी अपने आपको सम्हाल पाये। जिसे हम सबसे अधिक निकट महसूस करते हैं, जब वह दूर हो जाता है तो क्या पीड़ा हो सकती है, इसका वास्तविक अनुभव हमने किया। लेकिन अगले ही क्षण यह भी निरंतर महसूस किया कि साहेब जी तो सर्वथा हमारे संग हर क्षण हैं। उनका दिया हुआ उपदेश, अमृत वचन आज मेरे आचरण में उतरने लगे हैं। और यह सही भी है कि सद्गुरु जी की उपस्थिति हम सभी के बीच उनके दिये हुए निर्देश, अनुशासन, आचरणों का सतत पालन करने से रहेगी।

सभी संतों एवं गुरुजनों को संग जानकर ही हम अपने आप को सनाथ समझने की चेष्टा कर रहे हैं। आप सभी के मार्गदर्शन, आशीष से हम सम्हल जायें, यही उम्मीद है।

कल्पना भी यह नहीं मानती कि सद्गुरु शरीर का त्याग कर स्व में लीन हो हमसे भौतिक दृष्टि से दूर हो गये, क्योंकि हमें अध्यात्म प्राप्ति में साहेब जी के भौतिक संग का जो सान्निध्य था वह परमोच्च प्रेरणाप्रद था। जिनके स्मरण मात्र से मन और हर कार्य पवित्रता के लिए हमें हर क्षण प्रेरित करता रहा, जिन्हें हमने कण-कण में महसूस किया, जो हमारे ध्यान के लिए आराध्य स्रोत हैं। मैं अभी भी महसूस करता हूं कि मेरे सद्गुरु हर क्षण मेरे साथ हैं।

संत श्री गुरुभूषण साहेब जी ने जो स्मारिका के लिए अपने विचार लिखने का अवसर दिया है वह एक कठिन कार्य जान पड़ रहा है। सद्गुरु का ऐसा कौन सा साथ है जो हम स्मरण में न रखे हों? हर बार एक नये महापुरुष के दर्शन होने से अपार लाभ हमने साहेब जी से पाया है। हमें ज्ञात है कि हमारा लिखना मात्र हमारी भावना आप संतों तक पहुंचाना है। अतः विचारशील और अच्छे विचारों के लेखकों के लेखों को ही साहेब जी की स्मारिका में रखने का प्रयास करें, जिसे पढ़कर अन्यों के लिए प्रेरणा का कारण जान पड़े। परिपक्वता के अभाव में जो त्रुटियां हुई हैं, उस अनुरूप जानकर आप इसे स्मारिका से निरस्त करें तो भी हम साधक आप सभी संतों के आशीष के पात्र बने रहेंगे, क्योंकि स्मारिका के हेतु ही सही लेकिन हम अपने मन के कुछ अध्यायों को संतों के समक्ष रखकर संतुष्ट महसूस कर रहे हैं।

हम धन्य हैं कि माता-पिता ने हमें इस राह की दिशा दी। कुछ खेद हो जाता है कि पूरी तरह से इस रास्ते पर नहीं चल पाये, कभी फिसल गये तो कभी सम्हल गये। लेकिन गत ध्यान शिविर में संतों और साहेब जी की वाणी से महसूस भी किया और आचरण-

स्वाध्याय भी प्रारंभ किया, और आज सोचता हूं कि गृहस्थ होते हुए भी हम अपना सर्वथा उद्धार करने के पूर्ण अधिकारी हैं। और इसी तरह से नित्य पग-पग बढ़ते रहे तो वह दिन भी दूर नहीं कि साहेब जी का शिष्य होने का जो सौभाग्य हमें मिला वह भी सार्थक हो जायेगा।

शोकसभा में संतों की बहुत सारी बातें याद आती हैं, और सोचता हूं कि जो क्षति हुई है वास्तव में उसे किसी भी तरह भरा नहीं जा सकता। संत श्री राम साहेब ने जैसे कहा कि साहेब जी को उन्होंने हर रूप में महसूस किया, वैसे ही हमें एक घटना याद आती है।

मैं 1997 में अकोला (महाराष्ट्र) से बीच में ही बी-टेक. की पढ़ाई छोड़कर घर वापस आया था। रैगिंग के चलते वह साल हमारा बरबाद हो गया। तत्पश्चात हमने बी.एस.सी. कम्प्यूटर मेन्टेनेन्स की शिक्षा प्राप्त की। हमें समय का पूर्ण विवरण तो ध्यान में नहीं आ रहा है लेकिन घटना 1998-2000 की है। जब साहेब जी नागपुर से रेलवे मार्ग से गोंदिया (महाराष्ट्र) होते हुए रायपुर जाने वाले थे। हम सभी परिवार समेत डिब्बे छान रहे थे कि साहेब जी के दर्शन हो जायें। थोड़े ही समय में साहेब जी के दर्शन का पहली बार मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था। ऐसे तो हम साहेब जी के प्रवचन बचपन से सुनते आये थे, लेकिन प्रत्यक्ष मिलने का अवसर नहीं बन पाया था। हमने सद्गुरु के चरणों में फूल अर्पण किये और साहेब बंदगी कर अपने जीवन को चरणों में समर्पित होने की बात कही। वह सब शब्द भीतर से अपने आप प्रवाहित हो रहे थे, प्रेरणा अपने आप ही हो रही थी। साहेब जी ने दोनों हाथों से मुझे आशीष दिया। वह वर्णन मैं यहां शब्दों में नहीं दे पा रहा हूं। मैंने सद्गुरु जी के पावन स्पर्शाशीष में स्वयं को महसूस किया। साहेब जी स्वयं ट्रेन से कुछ समय के लिए स्टेशन पर नीचे उतर आये। सभी को आशीष दे संयम एवं शील से जीने को कहा। समय के अभाव में पुनः साहेब जी ट्रेन में बैठ गये और खिड़की के पास की सीट से देख रहे थे। यह वह समय था जब मैंने साहेब जी के नेत्रों में प्रेम का सागर पाया। वह अनुपम छवि जो मुझ पर प्रेम वर्षा कर रही थी, आज भी मैं उसे महसूस कर अपने को धन्य पाता हूं। एक माता जिस प्रेम से अपने शिशु को निहारती है, मैंने उस से भी कई गुणा ज्यादा साहेब जी के नेत्रों से प्रेमवर्षा महसूस की है। समय बहुत ही स्वल्प था लेकिन अनुभव बहुत ही विशाल था। मैं धन्य हो गया था। मैं आनन्द में भावविभोर हो वैसे ही स्टेशन पर खड़ा था। ट्रेन छूटते समय साहेब जी ने राजाभानपुरी (राजनांदगांव) प्रवचन सुनने को आने को कहा। मैं अपने छोटे चाचा जी के साथ दूसरे दिन प्रवचन के पूर्व ही पहुंच गया और दर्शन करने साहेब जी के आसन वाली जगह पर गया। साहेब जी ने बैठाया और फल देकर खाने को कहा और कहा कि संयमशील से शुद्ध आचरण करो। थककर आये हो थोड़ा विश्राम कर लो। लेकिन हम मन में शंका संजोये हुए थे, जिन्हें साहेब जी ने जानकर पूछने को कहा। आज्ञा पाकर हमने पूछा कि प्रवचनों में हम सुनते आ रहे हैं कि वानर पहले से वानर है और मानव पहले से मानव है। हम विद्यार्थी दशा से मानव का विकास वानर से मानते हुए आये हैं। सच क्या है? शंका समाधान स्वरूप साहेब जी ने उस दिन के प्रवचन के अंत में स्टेज पर बुलाकर जगन्मीमांसा पुस्तक देकर पढ़ने को कहा, और शंका होने पर फोन या पत्र से वार्ता करने को कहा। आज भी वह भेंट स्वरूप पुस्तक मेरे पास है और मैं निर्भ्रांत हूं, संशय रहित हूं। हर बात को विवेक से सोचने की क्षमता महसूस करता हूं। इस घटना के बाद से मेरे जीवन में सुबह की शुरुआत साहेब जी, संतों एवं माता-पिता को भीतर ही भीतर नमन करने से हो गयी और आज भी चल रही है।

छोटे भाई शिवकेश ने पहले ही साहेब जी से लोधीखेड़ा में दीक्षा पा ली थी। और हमने 2001 में

अटोने जी (नागपुर) के घर पर साहेब जी से दीक्षा पाने का आग्रह किया, साहेब जी ने कृपास्वरूप मुझे अपना शिष्यत्व प्रदान किया । मैं धन्य हो गया। मेरे जीवन की दशा ऐसे ही चलती रहे और साहेब जी का शिष्यत्व साबित कर सकूं यही कामना है।

साहेब जी के बारे में जितना लिखने को सोचते हैं उतने ही हमारे हाथ ठिठक जाते हैं। अभी हम इस क्षमता के तो नहीं हैं कि उन महान विभूति के बारे में लिखें जिन्होंने हमें जीना सिखाया। वे ऐसी महाविभूति हैं कि जिन्होंने हमें अपने आप से मिलने की विधि सिखाई। हम तो ऐसे ही सारहीन जीवन की धारा में बह जाते, यदि माता-पिता हमें यह रास्ता न दिखाते और साहेब जी से न मिलाते। जरूर हमने पूर्व जन्म में बहुत ही अच्छा कर्म किया है जिसके फलस्वरूप आज हमारे प्रारब्ध में साहेब जी की दी हुई दिशा मिली। उनका निर्माण किया हुआ समाज हमारे लिए सदा ही वंदनीय और प्रेरणा का स्रोत रहेगा। हम सद्गुरु जी के भौतिक अस्तित्व की कमी को आश्रम आकर या संतों की सेवा कर के कम करने का प्रयास करेंगे। हमें तो हर पल यह महसूस हो रहा है कि साहेब जी हमारे हर कार्य पर नजर रखे हुए हैं और अब वे ज्यादा निगरानी रखे हुए हैं, और अब कठिन परीक्षा के लिए और स्वाध्याय के लिए प्रेरित कर रहे हैं। हमारे अध्ययन, मनन, चिंतन सभी में साहेब जी की प्रेरणा से वृद्धि होने का संकेत-सा लग रहा है। और हम साहेब जी को दिन ब दिन निकट पा रहे हैं। जैसे-जैसे हमें पवित्र, निर्मल एवं संयमी जीवन की अधिक आदत पड़ रही है वैसे-वैसे उनको अपने भीतर होने का अहसास गहराता जा रहा है। वह अद्भुत है "मेरे साहेब" मुझ में है। मुझे बार-बार यह पंक्ति याद आती है—

जो तू चाहै मूझ को, छाँड़ सकल की आस।
मुझ ही ऐसा होय रहो, सब सुख तेरे पास॥

सभी त्रुटियां मेरी हैं और जो भी सुधार है सब साहेब जी की देन है। आज मैं देह से भिन्न होने के सिद्धान्त पर चल पाने का अधिकारी सद्गुरु जी एवं सभी संतों की कृपा से ही समझ पाया हूं। मेरे जीवन को जो दिशा मिली है वह सद्गुरु देव की कृपा छाया है। मैं उन्हें स्मरणों में ही नहीं अपितु अपने जीवन आचरण में ढालकर हमेशा प्रकाशित करते रहना चाहता हूं। महसूस करता हूं कि साहेब जी का जो समाज संतों और साधक के रूप में हमारे सामने विद्यमान है वह हमेशा हमें प्रेरणा देता रहेगा और साहेब जी की कमी महसूस नहीं होने देगा। और हम सब भी साहेब जी के शिष्यत्व को अपने आचरणों में सिद्ध करेंगे और हमेशा उनके दिये हुए अनुशासन को जीवंत रखेंगे।

साहेब जी ज्ञान के सागर थे, जिनसे छलककर कुछ मोती संसार के लिए ग्रंथों के रूप में विद्यमान है। निर्णय की परिभाषा स्वयं साहेब जी के वाणी ग्रंथ और दैनिक व्यवहार आचरण था, जो सर्वथा शरीर रहते ही शरीर त्याग दिये थे। उनका शरीर तो छुटा-छुटाया था, लेकिन मार्गदर्शन हेतु अंतिम सांस तक परिश्रमरत रहे।

आप संतों के श्रीचरणों में प्रार्थना है कि सद्गुरु के अनुशासन में चलते हुए आप सभी का आशीष हम पर कृपा के रूप में बना रहे।

साहेब बंदगी, साहेब बंदगी, साहेब बंदगी ! ! !

हंडपसर, पुणे, महाराष्ट्र

सभी समस्याओं का समाधान शांति, समता और त्याग में निहित है। न उलझना जीवन का परम सुख है। यदि त्याग से रहोगे तो उलझने की आवश्यता नहीं होगी। किसी समस्या के आने पर समझदार और सुलझे हुए लोगों से राय-मशविरा करके काम करना चाहिए। सावधान, कहीं उलझना नहीं। जीवन तथा उसका समय बड़ा मूल्यवान है। इनसे भव-बंधन काटने का काम करना चाहिए, संसार में उलझने का नहीं। यहां से अचानक जाना है।

(पूज्य गुरुदेव जी : उड़ि चलो हंसा अमरलोक को)

गुरुदेव जी से परिचय एवं उनकी कृपा

गुरुशरण

मेरा जन्म प्रारब्धवश भूतनाथ जी कबीरपंथी के घर हुआ है इसलिए मैं परम पूज्य सद्गुरुदेव जी को जब से होश संभाला तभी से जानता हूं, लेकिन मेरा गुरुदेव जी से असली परिचय तब हुआ जब मैं नवापारा कबीर मंदिर के ध्यान शिविर (1996) में गया। उस ध्यान शिविर में जाने के बाद पता चला कि मैं कौन हूं, चेतन क्या है, जड़ क्या है, मेरा उद्देश्य क्या है, मैं इस दुनिया में किसलिए जन्म लिया हूं, जगत क्या है, प्रेम किसे कहते हैं? इन विषयों पर गुरुदेव जी के प्रवचन बहुत सरल ढंग से हुआ करता था। कर्मवान बनने की प्रेरणा देना, हमेशा सत्कर्म की ओर प्रेरित करना, समय में हर काम करना मुझे बहुत ज्यादा प्रभावित किया। तब से लेकर आज तक मैं (2006 को छोड़कर) या तो नवापारा कबीर मंदिर या कबीर संस्थान कबीरनगर, इलाहाबाद हर वर्ष ध्यान शिविर में उपस्थित होता रहा हूं। ध्यान शिविर में उपस्थिति के बाद मैं वर्ष भर के लिए भरपूर चार्ज हो जाता हूं।

परम पूज्य गुरुदेव जी के शरीर को देखकर लगता था कि गुरुवर का शरीर लम्बे समय तक चलेगा। गुरु जी के शरीरांत होने के ठीक 25 दिन पहले मैं इलाहाबाद के ध्यान शिविर से होकर आया था। आते समय गुरुदेव जी ने मुझे कुछ दिन और रुकने के लिए कहा था लेकिन मेरे जैसा नादान व्यक्ति इस बात को नहीं समझ पाया। आज मन इतना पछताता है कि काश! मैं गुरुवर की शरण में और रुक पाता। पूज्य गुरुदेव की शरण में जाते ही काम, क्रोध, लोभ, मोह, तृष्णा, अहंकार, राग, द्वेष स्वतः ही शान्त हो जाते थे। परम पूज्य गुरुदेव जी स्वयं शान्ति के महासागर थे और ऐसे महासागर के पास जाने पर एक अद्भुत शांति का अनुभव होता है।

परम पूज्य गुरुदेव जी मुझे हमेशा शरीर घटाने को कहते थे। मजाक करते थे कि अब मोटा मत होना। गुरु जी का पूरा जीवन अनुकरणीय है। जीवन में उनका हर पहलू उतारने लायक है। जिस व्यक्ति ने गुरु जी को जिस रूप में देखा उसी रूप में स्वीकारा। हरेक दृष्टि से अद्भुत। एक बार जो दर्शन पाता था, बस आप ही का हो जाता था। यह अतिशयोक्ति नहीं है। मैंने तो कई ऐसे लोगों को देखा जो कि कबीरपंथियों की निन्दा करते थे और पूज्य गुरुदेव जी के दर्शन को आते थे।

कई बार गुरुदेव जी के सामने जाने पर गुरुवर बिलकुल शान्त बैठे रहते, कुछ भी नहीं बोलते, लेकिन उनके इन्हीं शान्त स्वरूप का दर्शन कर मन पूर्णरूपेण तृप्त हो जाता। ऐसा मैंने कई बार अनुभव किया है।

गुरुदेव के शरीर का शान्त होना सन्त समाज और भक्त समाज के लिए प्रलयवादी भूकम्प से कम नहीं था। सुबह सोकर उठा भी नहीं था जब सन्त श्री देवेन्द्र साहेब जी से गुरुदेव जी के शरीरांत होने की खबर मिली। पूरे परिवार में तथा गांव में मातम छा गया। गुरुदेव के पार्थिव शरीर के अन्तिम दर्शन पाने के लिए तैयारी चलने लगी। मन तो कहता था कि मैं वायु मार्ग से तुरंत जाऊं और गुरुवर के दर्शन कर लूं और दुनिया में लोगों से कहूं कि हमने जो सुना है वह सब बात झूठी है। इस प्रकार से मन में कई तर्क-वितर्क चलने लगा।

मुझे गुरुदेव जी के सत्संग में भजन गाने का सौभाग्य मिला। गुरुदेव जी ने जब मेरा भजन दूसरी बार नवापारा कबीर मंदिर में सुना तो कहा कि गुरुशरण का भजन सभी जगहों पर गाया जा सकता है और अन्य प्रान्तों में भजन गाने की परम्परा बताते हुए मुझे छत्तीसगढ़ में कबीरपंथी भक्तों के भजन गाने की परम्परा की शुरुआत

करने का आशीर्वाद दिया। परम पूज्य गुरुदेव जी का ही आशीर्वाद है जिसकी बदौलत आज मैं भारत के विभिन्न प्रान्तों में भजन गाने के लिए जाता हूं। सद्गुरु की इस कृपा को मैं कभी नहीं भुला पाऊंगा बल्कि आपके द्वारा लिखे पदों को मैं लोगों तक गा-गाकर पहुंचाने का प्रयास करूंगा।

जब मैं गुरुदेव जी के सान्निध्य में 1996 में ध्यान शिविर किया तो उस समय डॉ. नीलमणि के सुपुत्र इंद्रजीत भी ध्यान शिविर में आये थे। मैं और इन्द्रजीत साहेब जी के पास कई बार जाया करते थे और साहेब जी गले से लगाते और बहुत प्यार देते।

उन लोगों को भी जानता हूं जो ध्यान शिविर के माध्यम से गृहस्थी में रहकर भी साधना मार्ग में आगे बढ़ गये हैं।

परम पूज्य गुरुदेव जी ने गृहस्थ और विरक्त सभी को सामान्य रूप से कल्याण प्राप्ति का रास्ता बताया। उन्होंने किसी व्यक्ति विशेष को नहीं बल्कि मानवमात्र को कल्याण का अधिकारी बताया।

परम पूज्य गुरुदेव जी के सान्निध्य में रहकर मुझे बहुत कुछ मिला और आगे भी उनके सद्ग्रंथ और प्रवचन कैसेट से लाभ मिलता रहेगा। मैं गुरुदेव के बताये रास्ते पर चल सकूं यही मेरी गुरुदेव जी के लिए श्रद्धांजलि है।

भेण्ड्री, धमतरी, छत्तीसगढ़

मुमुक्षुओं के प्रकाशस्तंभ

विनोद चक्रपाणि

साहेब बंदगी,

आदरणीय श्री धर्मेन्द्र साहेब और वंदनीय श्री संत समाज।

विवेक साहेब से टेलीफोन बातचीत से पता चला कि मेरे प्यारे पवित्र संत श्री अभिलाष साहेब का शरीर छूट गया। कुछ क्षण मेरे मस्तिष्क ने सोचना बंद कर दिया। आज इस आधुनिक युग में दूसरे मत-पंथ के गुरु-संत वैभवी कार में घूमते हैं। परन्तु साहेब ने कभी कार की इच्छा नहीं की। इतने आचरण से जीवन जीने वाले संत श्री अभिलाष साहेब मुमुक्षुओं के लिए प्रकाशस्तंभ हैं। उनका शरीर हमारे बीच नहीं है, परन्तु उनकी वाणी सदा अमर रहेगी।

गुरु जी के एक शिष्य की माताजी की देह छूट गयी तो मैं गया था और काफी संख्या में गुरु जी के शिष्य वहां आये थे तो एक वक्ता ने गुरु जी के विषय में कहा, "अभिलाष साहेब को आप जानते हैं। मैं उनके विषय में क्या कहूं, बस इतना ही कहूंगा कि वे ज्ञान के सागर थे।"

राम के नाम पर लड़ने वाले और अल्लाह के नाम पर खून बहाने वाले लोगों को कबीर साहेब ने अपने ढंग से बहुत फटकारा था और उसी तरह से संतप्रवर साहेब जी ने। ये नाम एक ही सत्य के हैं, यह लोगों को समझाया और यह काम कोई निर्भय और पक्का संत ही कर सकते हैं।

मैं गुरु जी के संपर्क में आज से पांच साल पूर्व सणिया हेमाद, सूरत, कबीर आश्रम में आया। मनन-अध्ययन किया, किस प्रकार से जीना चाहिए यह जाना और जीवन में प्रयोग किया तो मेरा जीवन बदल गया, यह मेरा प्रत्यक्ष अनुभव है। सच्चे संत मिलते हैं तो लोगों को रोशनी मिलती है। परन्तु जो अपने को सुधारना चाहते हैं वे ही ऐसे निराले पूर्ण कल्याण स्वरूप संत को समझ सकते हैं।

गुरु जी के विषय में और ज्यादा लिखना मैं उचित नहीं समझता और लिखने के लिए मेरे पास शब्द भी नहीं हैं। इस ज्ञान-सरिता को आगे बढ़ाने के लिए आचरण पूर्ण और ज्ञान के धनी श्री धर्मेन्द्र साहेब और संत समाज से लोगों को सही रास्ता मिलेगा, इसी के साथ साहेब बंदगी।

राजकोट, गुजरात

श्रद्धांजलि

टेकचंद गौतम

दिनांक 26-9-2012 को सूर्योदय के पहले ही सूर्य के समान प्रकाशमान, ज्ञान के सागर पूज्यवर गुरुदेव सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी नश्वर, क्षणभंगुर शरीर त्यागकर स्वस्वरूपलीन हो गये और 'उड़ि चलो हंसा अमरलोक को' संदेश सबके लिए छोड़ गये। दूरध्वनि से वार्ता सुनते ही हमारा सब कुछ छिन गया, ऐसा लगा! हमारे भौतिक शरीर के जन्मदाता तो पहले ही शरीर छोड़ गये थे, लेकिन हमारे आध्यात्मिक जन्मदाता पूज्यवर सद्गुरुदेव जी के शरीरान्त से मानव समाज की बहुत बड़ी हानि हुई है। पूज्यवर गुरुदेव जी ने अनुभवपूर्ण ज्ञान, भक्ति एवं कर्म से सम्बन्धित निर्मल वाणी से मानव जीवन के सभी पहलुओं पर प्रकाश डालने वाले प्रवचन दिये तथा साहित्य उपलब्ध कराये। वर्तमान कालीन संतों में पूज्यवर गुरुदेव जी का विशेष स्थान होने के कारण विद्वानों ने उनके साहित्य का अध्ययन प्रमुखता से किया है।

सद्गुरु कबीर मध्ययुग की संतपरंपरा और संतसाहित्य के प्रवर्तक माने जाते हैं। पूज्यवर गुरुदेव सद्गुरु संतप्रवर श्री अभिलाष साहेब जी वर्तमान युग में पारख सिद्धान्त के प्रचार-प्रसार करने वाले तथा कथनी-करनी-रहनी जीवन में उतारने वाले सर्वश्रेष्ठ संत-शिरोमणि हैं। पूज्यवर गुरुदेवजी के प्रथम दर्शन से ही 'आज के कबीर' करके हृदय से मानता रहा। उनके उपदेश को जीवन में उतारने से शांति का साम्राज्य मिला। अपने आप की पहचान, आत्मस्थित होने की साधना की रीढ़ ब्रह्मचर्य है तथा मन का निर्मल होना, अहंता-ममता, राग-द्वेष मिटाकर अहंकार का त्याग कर अपने लिए शील तथा दूसरों के साथ सदाचार का व्यवहार पालन करना ही मेरी दृष्टि में सही श्रद्धांजलि है।

ढाकणी, गोंदिया, महाराष्ट्र

श्रद्धांजलि

सी. पी. कबीर क्लब के सदस्य

परम श्रद्धेय, परम पूज्य, परम वन्दनीय प्रतिभा के धनी सद्गुरु 50-60 वर्षों के अन्तराल में संजोये हुए ज्ञान द्वारा एक विद्वान के रूप में, एक संत के रूप में, एक सद्गुरु के रूप में सूर्य समान सद्गुरु कबीर साहेब के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के कार्य को लेकर अपने जीवन के अमूल्य क्षणों को हम सबों के बीच बांटते रहे, सम्पूर्ण जीवन को संत की सेवा में लगाये रखे, मानव कल्याण का चिंतन-मनन करते रहे। परम श्रद्धेय गुरु जी! आपका अनन्त उपकार हम सब पर है।

गुरुदेव, आप पूर्व जन्म के योगी, ज्ञानी, भक्त, तपस्वी और विद्वान थे। पूर्वार्जित दिव्य संस्कारों के स्वामी थे, स्वयं प्रकाशित थे, ज्ञान के अखण्ड दीप को प्रज्वलित करने वाले थे। मानव समाज के लिए वरदान थे, अद्‌भुत महापुरुष थे। व्यावहारिक और पारमार्थिक जीवन के लिए गुरुदेव श्री की एक-एक पंक्ति हम सबों के लिए प्रेरणास्रोत है। केवल कबीरपंथ ही नहीं संपूर्ण मानवता का आदर्श है। आपका अनुगमन करने पर मानवता का बहुत उपकार होगा।

परम पूज्य सद्‌गुरु संत श्री अभिलाष साहेब जी द्वारा लिखित सभी ग्रन्थ चमकते सूर्य की तरह प्रकाश देने वाले हैं। उनके शब्द हमारे चरित्र निर्माण में कारगर हैं। अतः हम सब लगन से पढ़ें एवं आत्मसात करें। यही हम सबों की साहेब जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

टुईलाडुंगरी, जमशेदपुर

सद्‌गुरु का संदेश

ज्ञान ज्योतिदास

सद्‌गुरु श्री अभिलाष साहेब ज्वलंत आध्यात्मिक साहित्य के विद्वान तथा प्रतिभा के धनी थे। सदाचरण से परिपूर्ण, रहनी, कथनी, करनी के महा आदर्श स्वरूप थे। जो आपको एक बार देख लेता था, सान्निध्य में आ जाता था तो आपका हो जाता था। आपका प्रेम सभी के लिए एक समान था। सभी संत-भक्त जन यही कहते थे कि साहेब हमसे ज्यादा प्रेम करते थे, जिसका प्रमाण आपकी पुण्य स्मृति के अवसर पर गुरुजनों, संतजनों व भक्तजनों का लाखों से अधिक भीड़ है। संध्या पाठ का पद याद आ जाता है, 'साधु रूप कबीर गोसाईं' इसीलिए आपको बिहार तथा मध्य प्रदेश के भक्त जन कहते हैं आप कबीर साहेब के रूप हैं। सचमुच आप प्रेम के स्वरूप थे। इस तथ्य पर बल देते हुए कवि का भाव है—

सत्य से जीवन सुखी है सत्य ही से प्यार है।
सत्य जिसमें है नहीं वे नर विश्व में बेकार हैं।
प्रेम युत टूटी मड़इया भी हमारा स्वर्ग है,
क्या हुआ यदि है नहीं धन वरुण कुबेर सम
प्रेम जिसके पास है पूरा भरा भण्डार है।

आज आपका भौतिक शरीर तो नहीं है लेकिन आपका साहित्य सत्य स्वरूप का आदर्श और हृदय को प्रकाशित करने वाला ज्योति केन्द्र है तथा सत्य-अन्वेषण का साधन है। आपका साहित्य हृदय-गम को खोलने की सफल कुंजी है। जब-जब हम आपसे मिलते थे तो आप यही कहते थे—अपना काम कर रहे हो कि नहीं? हमसे ही नहीं सभी से कहते थे—अपना काम बना लो।

सद्‌गुरु का यही शुभ सन्देश है कि मानव ही इस वसुन्धरा का सौरभ सुमन है। अपने गुण-धर्मों से पूरे विश्व को सुशोभित करे। सद्‌गुरु श्री अभिलाष साहेब की पुण्य स्मृति में पुष्पांजलि अर्पित करते हुए गुरुजनों-सन्तजनों से त्रिबार साहेब बन्दगी करता हूं।

भ्रम का बंधन तोड़ दिया

तुलसी साहू

सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी हमारे ग्राम में लगभग 45 वर्ष पूर्व से आते रहे हैं। मेरी साधु-संतों में बचपन से श्रद्धा रही है। हमारे बैठक में साधु बाबा लोग कभी-कभार आकर ठहरते थे। मैं उनकी बातें सुना करता था। बचपन से कथा-भागवत में रुचि रही है। प्रथम बार साहेब जी को सुना था। साहेब जी जहां ठहरे थे वहां जाकर उनसे मिला था। उनसे बातें कर मन बड़ा प्रसन्न हुआ। पर उनका देवी-देवता का खंडन मन को जंचता नहीं था।

सन् 1985 से मैं बीबी-बच्चों सहित रायपुर छत्तीसगढ़ नगर में स्थायी रूप से रहने लगा। विवेकानंद आश्रम रायपुर में स्वामी आत्मानंद महाराज जी का प्रत्येक रविवार को विवेकचूड़ामणि एवं भगवत गीता पर प्रवचन होता था। मैं नियमित रूप से हर रविवार को प्रवचन सुनता था और विवेकानन्द द्वारा रचित पुस्तकें लाकर ध्यान से पढ़ा करता था।

सन् 1994 में संत श्री आसाराम बापू का रायपुर आगमन हुआ एवं 3 दिन सत्संग भी हुआ। मैंने उनसे दीक्षा लिया और 4-5 वर्ष बाद उनके रायपुर आश्रम में रहकर सेवा-सत्संग का लाभ लेता रहा। इस प्रकार 8-9 वर्ष तक उनका सत्संग किया एवं उनके द्वारा लिखी हुई बहुत सारी किताबें भी पढ़ी। साथ में वशिष्ठ रामायण, भगवतगीता एवं अष्टावक्र गीता भी पढ़ा करता था।

जब मैंने सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी द्वारा रचित बीजक व्याख्या के दोनों भाग पढ़ा और साहेब जी के कैसेट द्वारा उनके प्रवचन का लाभ लिया तो मुझे 6 माह में जो लाभ हुआ वह पिछले 8-10 वर्षों में नहीं हुआ था। कारण वही था मैं देवी-देवता और भगवान को मानता था। पर साहेब जी ने वह भ्रम तोड़ दिया। आज महसूस होता है कि सब भ्रम है।

सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी की हम पर जो कृपा है उसका ऋण इस जीवन में हम नहीं चुका सकते। साहेब जी के विषय में कुछ कहना मानो सूर्य को दीपक दिखाना है।

साहेब इतने सरल और सहज थे कि ऐसे महान पुरुष मैंने अपने जीवन में नहीं देखा है। मैं महसूस करता हूं कि उनकी कथनी और करनी एक थी। उनके विषय में सोचता हूं तो दिल भर आता है। साहेब जी इतने दयालु और इतने कोमल थे कि मक्खन की कोमलता भी कम है।

आज उनका हमारे बीच न रहने से जो देश को क्षति हुई है उसकी भरपाई नहीं हो सकती। फिर भी संतोष इस बात का है कि उनका साहित्य और उनके विचार हमारे बीच उपलब्ध हैं और उनका स्नेह हमारे दिल में है और रहेगा।

मैं एक बात बार-बार सोचता हूं कि साहेब जी ने इतने कम समय में दुनिया के सभी शास्त्रों का कैसे अध्ययन किया और उनको सरल बनाकर उनकी व्याख्या लोगों तक कैसे पहुंचाया होगा। आश्चर्य होता है। समय की कीमत साहेब जी से बेहतर कौन जानता होगा। उनका एक मिनट भी बेकार नहीं जाता था।

अनासक्ति क्या है, यह जानना हो तो साहेब जी से सीखें। फिर भी सबसे प्रेम। उनका कोई पराया था ही नहीं।

ढाई आखर प्रेम का पढ़े से पंडित होय।

यह उनके जीवन में दिखता था।

उन्होंने गीता के 16वें अध्याय में वर्णित दैवी-संपदा की व्याख्या 'कबीर खड़ा बाजार में' नामक पुस्तक में की है वे सभी लक्षण उनके जीवन में दिखाई देते हैं। सद्गुरु कबीर का पूरा वर्णन कौन कर सकता है। बुद्ध कैसे थे? पूरा कौन कह सकता है। इसी प्रकार सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी के विषय में कहना कभी पूरा नहीं हो सकता। ऐसा मैं समझता हूं। इसी के साथ सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी के श्री चरणों में मैं भाव भरे श्रद्धा-सुमन समर्पित करता हूं।

छत्तीसगढ़ नगर,
रायपुर, छ. ग.

मंगलमूर्ति गुरुदेव जी विदेही हो गये

संत श्री टकसार साहेब

आपका जीवन निराला था। जिस काया नगरी में आप किल्लोल करते रहे, पूज्यपाद सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब जी के द्वारा आपका साधुवेष हुआ 'अभिलाष दास' नाम दिये। आपका यही नाम हमारे लिए पूज्य संत श्री अभिलाष साहेब जी है। आपका बहुआयामी व्यक्तित्व हर कल्याण इच्छुक के लिए आकर्षक और प्रभावी रहा। ज्ञान, भक्ति, वैराग्य के आप प्रतिमूर्ति थे। आपके श्री मुख से वाणी श्रवण करने के लिए हर दिल चन्द्र-चकोर की तरह लालायित रहता था। सद्गुरु कबीर के पंथानुगामी होने के नाते कबीर वाणी पर लेखन एवं व्याख्यान की दिशा में गुरुदेव जी अभूतपूर्व कार्य करके मानव समाज को हिन्दी साहित्यों (ग्रन्थ) की व्याख्या करके अपनी प्रतिभा के धनी हुए।

आपके जीवन की अन्तिम यात्रा पर सिंहावलोकन करने पर सद्गुरु कबीर साहेब की साखी याद आती है—

जेहि मरने से जग डरे, मेरो मन आनंद।
कब मरिहौं कब पाइहौं, पूरण परमानंदû

जगत-बन्धनहीन ऐसे सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी के पावन चरणों में श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूं।

सद्गुरु कबीर संत आश्रम (समाधि स्थल)
रोहतक रोड, रामपुरा
नयी दिल्ली-35

अपनी खुशबू बिखेर चले

सुरेन्द्र कुमार टांक

सद्गुरु कबीर साहेब ने कहा है—*"आये हैं सो जायेंगे, राजा रंक फकीर। एक सिंहासन चढ़ि चला, एक बंधा जंजीर।"* जो जन्म लेता है उसे शरीर छोड़कर जाना पड़ता है। वह चाहे राजा, रंक या फकीर ही क्यों न हो। अन्तर केवल इतना है एक संसार की वासना छोड़कर स्वस्वरूप में स्थिर होकर जाता है और दूसरा वासना की जंजीर में बंधकर जाता है।

ऐसे ही परम आराध्य सद्गुरुदेव पूज्य श्री अभिलाष साहेब जी जनकल्याण करते हुए स्वरूपलीन हो गये। आपकी अन्तिम यात्रा के दृश्य में ऐसा प्रतीत हो रहा था कि आपका मुस्कराता चेहरा अन्तिम समय में भी यह उपदेश दे रहा था कि प्रसन्नचित्त रहना जीवन की सर्वोपरि भक्ति है। ऐसा प्रतीत नहीं हो रहा था कि आप हमारे से विदा हो रहे हैं।

आपके शरीरान्त होने का समाचार मुझे प्रातः पूज्य गौरव साहेब से मिला जब मैं प्रातः भ्रमण पर आप ही के प्रवचन मोबाइल द्वारा सुन रहा था। अचानक फोन द्वारा समाचार मिलने पर मेरे कदम आगे चलने से रुक गये। सोचता-विचारता रहा और अपने आपको कोसता रहा। मेरा एक स्वप्न था वह टूट गया। स्वप्न था अब ढलती उम्र में आपका अधिक सान्निध्य प्राप्त कर एवं सेवा कर अपना जीवन सफल बनाऊं।

जो नहीं मिला उसे भूलकर जो सान्निध्य मिला उसे कृपाप्रसाद मानकर अपना शेष जीवन आपके उपदेशों के अनुरूप वासनारहित शुद्ध आचार-विचार अपनाकर अपना कल्याण करूं।

आपके उपकारों को शब्दों में वर्णित नहीं कर सकता। सोचता रहता हूं अगर आपका लम्बा सान्निध्य मिलता तो बहुत कुछ अपने आप में बटोर सकता, किन्तु वह सब अतीत हो गया। आपकी उदार चित्त वृत्ति, प्रसन्नचित मुद्रा, वात्सल्यपूरित हृदय ऐसे अनेक गुण हैं जो सभी को आपकी पुनः-पुनः स्मृति करायेंगे।

आपने अपनी जीवन-चादर को निर्मल, स्वच्छ पवित्र रखा। उस निर्मल आत्मा को मेरा शत-शत साहेब बन्दगी।

कॉकरोली, राजसमंद, राजस्थान

निष्कपट हृदय से जो सत्य प्रतीत हो, उसके अनुसार आचरण करे एवं उसी की चर्चा करे और उसी के अनुसार अपना जीवन बनाये। इसी में शांति है। किसी प्रलोभन या भय में सत्य से न डिगे। शांति का अखंड राज्य जीवन में तभी उपस्थित हो सकता है जब जीवन में सत्य का पूर्ण पालन होता है। सत्य का आचरण जीवन की पूर्ण ऊंचाई है। हम छूटने वाली चीजों के मोह में पड़कर ही सत्य का त्याग करते हैं और उसके बाद हमारा सर्वस्व खो जाता है।

(पूज्य गुरुदेव जी : उड़ि चलो हंसा अमरलोक को)

A Tribute

Ras Behari

Swami Abhilash Sahebji, who left us for ever on the 26th of September 2012, was a great Parakh saint of our age. Born in a remote village Khan Tara in U. P. in August, 1933, he abandoned his family life at the age of twenty. Swami Abhilash Saheb devoted the rest of his life whole hearledly to the learning and preaching Parakh Philosophy through writing books and lecturing widely throughtout India for the spiritual upliftment of our masses. Undoubtedly, he was a prolific writer who wrote a large number of books of different sizes including the book entitled 'Kabir Darshan' and the famous commentry on Kabir Saheb's Bijak known as Bijak Vyakhya in two volumes.

I was greatly fortunate to see Swami ji lecturing from Allahabad on T. V. a few years ago. His calm and serene disposition and his towering personality had such and immediate magnetic impact on me, that I made a decision, then and there to have his *Darshana* in person at Allahabad. Without wasting much time I along with my wife set for Allahabad, where we stayed at Kabir Sansthan for about a week. It was there that we had a chance to sit at the feet of this great Swami for a few minutes daily and had a new experience in our life. Swami ji's presence really had an aura of tranquil peace around him. Sitting under this divine light was a source of peaceful bliss, inexpressible in words.

We all hear from saintly persons that how a person dies is a report card of how he or she had lived his or her life. According to this proverb, Swami ji, in his death, had exhibited the excellence of the life he had lived. On the 26th September, he breathed his last at 3.00 A.M., the time of 'Brahm Mahurat', the most auspicious time as per our Hindu Philosophy of life and he remained as calm and peaceful till last as he used to be during his day to day life. He experienced no pain or stress when he breathed his last, though such a peaceful death was natural for this great saint.

May this great departed soul remain in peace for ever and may Almightly give us courage and strength to bear up with the physical separation from this towering personality whose memory will reamin always fresh in our minds.

With regards and in the memory of our beloved Swami Abhilash Saheb jee Maharaj.

Gita Colony, Delhi

A Great Loss To Mankind

Manoj Kumar Pochat

Saheb Bandagi,

One great loss to all mankind; though his teachings, messages and blessings are with us but surely we will miss him in everything we do. He was great and open minded saint of Kabir panth. All his life he taught us truth which every one can accept with open mind. He always presented what is truth and never tried to put ornament on that. He showed us the right path of Kabir Panth and what kabir ji said. He was firm believer of humanitarian values. His discipline, his way of teaching will surely be missed by everyone.

I remeber his line when he used to explain the truth....In one of functions in Nagpur he gave me example that, *"Kekar Kekar lije naav Kathari Wodhe Sagaro Gawon"....* Which mean whom will you complain when everyone is doing wrong and if we do it right then they will laugh at us but don't be scared and do right only, because whatever is right, is right and no one can change it. No one can cover it. They will only try to hide it but they will not succeed as they can't cover it. It will rise up and It has to rise.....He always taught us what Kabir ji has said and in which particular context he said. He will always be missed in our prayer, he will always be in our hearts.

He used to mention *Jehi Marne Se Jag dare mero man aanand, Kab Mariyo Kab Payiye Puran Parmanand.*

He lived the way be preached.

Saheb Bandagi!!

Rajna, Maharashtra

साधक वह है जो दूसरे का हित-चिंतन और यथासाध्य हित-कर्म करता है, किंतु वह दूसरों के गुण-दोषों के चिंतन में नहीं रहता है, अपितु अपने मन को विकारों से रहित रखने का प्रयत्न करता है। अपना मन निर्मल रहने पर कोई दुख नहीं रहता। समय से सत्यासत्य निर्णय करना ठीक है जिससे गुण और दोषों को पहचान कर स्वयं और अन्य कल्याणार्थी अपना कल्याण कर सकें। अतएव निर्णय करना भी निर्मल रहने के लिए ही है। मुमुक्षु का मुख्य काम है स्वयं को सुधारना। अपनी बात सबको समझाकर तब अपनी कल्याण-साधना करने के लिए सोचना मृगतृष्णा में भटकना है। हम अपना मन निर्मल करें, इसी में हमारा और अन्य का भी हित है।

(पूज्य गुरुदेव जी : ऊंची घाटी राम की)

श्रद्धांजलि

पूज्य गुरुदेव जी के अंतिम दर्शन के लिए आये संत-भक्त-प्रेमियों में से कुछ के द्वारा डायरी में दर्ज की गयी भावनाएं

हंसा उड़ गया, सब कुछ छोड़-छाड़ के। बगिया उजड़ गयी। जिस किसी ने सुना, रो पड़ा। आंसू थमते नहीं।

नगर वही, आश्रम वही, भक्तगण वही, पर आपके बिना सब कुछ सूना-सूना। सब कुछ खाली-खाली।

अब सिर्फ यादें बची रहीं। धन्यभाग उनका जो आपका दर्शन पाये थे। आपकी मीठी वाणी सुनी थी।

जब सद्गुरु जी बोलते थे, तो मानो फूल झड़ रहे हों। आप संतोष, धैर्य, दया, करुणा की साक्षात मूर्ति थे।

आपने अपने उपदेशों एवं प्रवचनों से मौखिक या पुस्तकों के माध्यम से एक दीपशिखा की तरह जो संदेश दिया है, वह पूरी मानवता के लिए पथ-प्रदर्शक हैं।

हम सभी आपके प्रति अपना श्रद्धा-सुमन अर्पित करते है।

वेणी प्रसाद
प्रीतमनगर, इलाहाबाद

* * *

बीजक मन्दिर में इस संस्थान के कुछ भक्तों के साथ दिवंगत श्री अभिलाष साहेब के पार्थिव शरीर का दर्शन किया। लगा कि बन्दा लंगोटी छोड़कर चला गया है। इस उपदेश को गुरुदेव अभिलाष साहेब लोगों को बताया करते थे। कहते थे सभी का निर्वाह हो जाता है। यह भय या कोई भय इस बात का नहीं होनी चाहिए कि निर्वाह कैसे होगा। भक्तों से पता चला कि श्री अभिलाष साहेब ने शरीर छोड़ने के पूर्व किसी भक्त से सहारा नहीं लिया और बाथरूम में अपने सहारे से जमीन पर शरीर त्याग कर दिया। हंसा को शरीर-सरोवर से पार करने के कबीर साहेब के उपदेशों को पालन कर दिया।

श्री अभिलाष साहेब पाखण्ड से दूर रहने, निज स्वरूप में स्थित होने का सन्देश भक्तों तथा श्रद्धालुओं को देते रहे और अपने जीवन में उतारे रहे यानी चरितार्थ किये रहे। ऐसे आत्मा के सन्देश की अलख यहां के भक्त जगाते रहें, यही मेरी कामना है। गुरुदेव को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्रीपति
पूर्व नगर आयुक्त
नगर निगम, इलाहाबाद

* * *

परम पूज्यवर गुरुदेव जी के देहान्त की खबर 26.09.2012 प्रातः 6 बजे पाया किन्तु यकीन ही नहीं हुआ कि यह सच है। संत सनाथ साहेब मेरे निवास पर मौजूद थे। कनफर्म किया।

पूज्य गुरुदेव जी के शरीर का भले ही अन्त हुआ है किन्तु उनके मानवतावादी विचार हम सबके स्वतः

कल्याण एवं लोक कल्याण हेतु पथ-प्रदर्शन एवं प्रेरणा हेतु हमेशा सम्बल प्रदान करेंगे। मुझे ऐसा लगता है कि महात्मा बुद्ध, कबीर एवं महावीर जैसे महापुरुषों से भी बढ़कर उनके उपदेश-संदेश हमेशा पृथ्वी पर मानव जीवन के अस्तित्व के मौजूद रहने तक दिन प्रतिदिन मानव एकता, विश्व बन्धुत्व एवं मानव कल्याण का संदेश देते रहेंगे।

मैं तुच्छ प्राणी पन्ना एवं सतना जिला की ओर से सादर श्रद्धा सुमन एवं हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

इंजी. जवाहरलाल कुशवाहा
गायत्री नगर, सतना

* * *

पूज्यवर संत श्री अभिलाष साहेब जी अपने काल के सचमुच कबीर थे। संत श्री अभिलाष साहेब का व्यक्तित्व बहुमुखी था। वे अपने समय के मार्क्स, शंकराचार्य, राजा राम मोहन राय एवं समाज सुधारक के रूप में प्रतिष्ठित हुए। श्री गुरुदेव अपने समय में प्रसिद्धि के पीछे दौड़ नहीं लगाये। समकालीन मीडिया अपने पूर्वाग्रह के कारण श्री साहेब जी का सही मूल्यांकन नहीं कर पाया लेकिन आने वाला समय श्री गुरुदेव जी का होगा एवं समाज उनके योगदान का पुनर्मूल्यांकन करेगा एवं इतिहास में आपका नाम अमर होगा।

अंगद प्रसाद कुशवाहा
शिक्षक, पूर्व मा. वि. छाइन, अमरपाटन
सतना (म. प्र.)

* * *

सद्गुरु देव श्री अभिलाष साहेब के कमल चरणों में मुझ अश्विनी कुमार का बहुत-बहुत चरण स्पर्श तथा बन्दगी। गुरु जी मेरे जीवन में प्रथम गुरु के रूप में रहे जिनके मार्गदर्शन से मैं अपने जीवन को आगे बढ़ाने एवं कल्याण की ओर ले जाने का प्रयास कर रहा हूं तथा करता रहूंगा। आपके बारे में मैं क्या कहूं? बस, यही मन-मस्तिष्क में आ रहा है आपके शरीर की इस स्थिति को देखकर कि

'उड़ि चलो हंसा अमरलोक को"

आपके चरणों में फिर से एक बार सदैव के लिए कोटि-कोटि चरण स्पर्श। साहेब बन्दगी!

अश्विनी कुमार
चण्डीगढ़

* * *

महात्मा बुद्ध के बाद यदि किसी महापुरुष में ईश्वरीय रूप झलकता है तो वे परम पूज्य गुरुदेव जी सद्गुरु श्री अभिलाष में नजर आता था। बिलकुल शान्त। परम पूज्य गुरुदेव में महात्मा बुद्ध, महावीर और कबीर तीनों का समावेश था। पूरे कबीर समाज के लिए उनका स्वरूपलीन होना बहुत बड़ी क्षति है जिसकी कभी भरपाई नहीं होगी। इस क्षति को करोड़ों लोग उनके मार्ग पर चलकर भी पूरा नहीं कर पायेंगे।

चरण वन्दना करता हूं!

महावीर प्रसाद
मोहाली, चण्डीगढ़

* * *

26 सितंबर की रात को जब गुरु जी के शरीर छूटने की सूचना प्राप्त हुई तो मैं स्तब्ध रह गया। गुरु जी से मेरा परिचय सन्1983 में भरतपुर मालीपुर में श्री ब्रजकिशोर जी के घर से हुआ। गुरु जी का निधन भारतीय समाज व व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए एक महान क्षति है जिसकी भरपाई कर पाना सम्भव नहीं। गुरु जी एक महान उच्चकोटि के संत, समाज सुधारक, महान विचारक व लेखक थे जिन्होंने अपने विचारों से भारतीय समाज में वर्षों से चली आ रही सामाजिक कुरीतियों व आडम्बरों को समाप्त करने का पूरा प्रयास किया। हम सबकी गुरु जी के लिए सबसे बड़ी श्रद्धांजलि

यही होगी कि हम उनके द्वारा दिये गये उद्देश्यों व आदर्शों का पालन करते हुए अपने जीवन का सफलतापूर्वक निर्वाह करें।

लक्ष्मण दास
हरिनगर, नई दिल्ली

* * *

श्री सद्गुरुदेव के शरीर के शान्त होने का समाचार 26.09.2012 को सुबह 5.30 बजे के लगभग प्राप्त हुआ। मैं सहारनपुर में रात्रि में ड्यूटी पर था। समाचार सुनकर स्तब्ध रह गया। गुरु जी से मिलने के पहले कोई ज्ञान नहीं था परन्तु जब से गुरु जी के सम्पर्क में आया तब से मेरा जीवन ही बदल गया। और मेरा क्या जो-जो भी गुरु जी के सम्पर्क में आया सभी का जीवन बदल गया। जितना गुरु जी ने हम सबको दिया उतना जीवन में कभी प्राप्त नहीं होगा। और इनकी कमी कोई पूरा नहीं कर सकता है।

मेरा गुरु जी के चरणों में कोटि-कोटि नमन है।

मोहर सिंह
सहारनपुर, उ. प्र.

* * *

सद्गुरु अभिलाष साहेब कबीर पारख सिद्धांत के ऐसे स्तंभ थे जो युगों-युगों तक जन भावनाओं के साथ जुड़ा रहेगा। विश्वास नहीं होता कि गुरुदेव हमारे बीच नहीं हैं। लेकिन संसार नश्वर है, मृत्यु सत्य है। सद्गुरुदेव आने वाले युग में भी आदर्श पुरुष के रूप में जाने जायेंगे।

संतोष कुमार साहू
ग्राम रीवां, जिला रायपुर, छत्तीसगढ़

* * *

कबीर साहेब के दूसरे स्वरूप का अन्त हो गया। जितना प्रवचन नहीं किये उससे अधिक साहित्य के रूप में लिख डाले हैं। जो देश और समाज को सदैव काम आवेगा। यह क्षति साधु समाज की ही नहीं परन्तु मानव समाज की अपूरणनीय क्षति हुई है।

सत्य नारायण दास
भरगामा, जिला अररिया, बिहार

* * *

आत्मलीन परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री साहेब जी ने अपने प्रवचन में कहा था, मेरी पुस्तकें, मेरा आश्रम मेरे शरीर के न रहने पर मेरे लिए अनन्त काल के लिए विस्मृत हो जायेगा। इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि वर्तमान में ही अपना काम पूर्ण करते चलो और अपने द्रष्टा स्वरूप में स्थित रहने का अभ्यास करो।

राजेश सचान,
लखनऊ

* * *

आत्मलीन परम पूज्य सद्गुरु देव श्री साहेब साक्षात कबीर के अवतार थे। ऐसा संत वर्तमान में विश्व में खोजने से नहीं मिल सकता था। आपके संपर्क में आने के बाद कोई साधक खाली हाथ नहीं लौट सकता था, ऐसी मेरी अनुभूति है। मुझे सद्गुरु से जो मिला वह 45 वर्ष तक भटकता रहा, नहीं मिला था। जब तक शरीर में प्राण रहेगा मैं आपको नहीं भूल सकता। आप शुद्ध विवेकी व वैराग्यवान सन्त थे, ऐसा मेरा अनुभव है।

डॉ. आनन्द बहल
अकबरपुर, अंबेदकरनगर, उ. प्र.

* * *

साहेब जी मेरे बचपन से मेरे अंदर रहे। 1996 में नवापारा राजिम में प्रथम बार ध्यान शिविर में भाग लिया तत्पश्चात मैंने गुरु जी के साथ 15 दिन इलाहाबाद प्रीतमनगर सुलेमसराय में ध्यान शिविर में भाग लिया। साहेब जी सभी साधकों को बताते कि यह लड़का इन्द्रजीत छत्तीसगढ़ के भक्तराज (चिंवरी के) स्व. इंदल गौंटिया के नाती डॉ. नीलमणि का पुत्र है। फिर साहेब जी ने मुझे 'आनन्द' फिल्म का गीत सुनाया, 'जिन्दगी कैसी है पहेली हाय! कभी ये रुलाये कभी ये हंसाये। जिन्होंने सजाये यहां मेले सुख दुःख संग संग झेले।' मेरे गांव 'चिंवरी' छत्तीसगढ़ में कबीर आश्रम में उन्होंने अपने सद् साहित्य की कई पाण्डुलिपि बनायी।

अंत में गुरु जी की क्षति तो अपूरणीय है लेकिन जीवन का यह शाश्वत सत्य है। गुरु जी को श्रद्धांजलि समर्पित है।

दुखों से अगर चोट खाई न होती,
तुम्हारी प्रभु याद आयी न होती।
जगाते न यदि तुम गुरु ज्ञान द्वारा,
कभी हमारी जिन्दगी मुस्कुराई न होती।
और न ही हमारी भलाई होती।

पुनः स्वरूपलीन साहेब जी को शत-शत नमन!
साहेब बन्दगी, साहेब बन्दगी, साहेब बन्दगी!

इन्द्रजीत दादर
कनिष्ठ पुत्र डॉ. नीलमणि दादर
ग्राम-चिंवरी (धमतरी), छ. ग.

* * *

सद्गुरु अभिलाष साहेब मानवता के पुजारी थे, महाज्ञानी वैराग्यवान संत थे। जो हमारे समाज के लिए सूर्यवत थे। आज हमारे बीच से सदा के लिए इस संसार को छोड़ कर चले गये। मैं उनके पावन चरणों में अपनी सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

पर सच्ची श्रद्धांजलि हमारे लिए तभी होगी जब हम उनके बताये मार्ग पर चलकर अपने जीवन को निर्मल बनायें और उनके आदर्शों का पालन करें।

परमेश्वर कुमार कबीरपंथी
परसट्टी, धमतरी (छ. ग.)

* * *

सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी संसार के महान संतों में से एक थे। कबीर साहेब के समय में कबीर साहेब के समान कोई संत नहीं था, और बीसवीं सदी में गुरुदेव के समान भारत में कोई सन्त नहीं है। मैंने भी तमाम धर्मों के गुरुओं के सम्प्रदाय में घुसकर देखा है। सभी में अनुमान और कल्पना का रस भरा हुआ है। लेकिन श्री गुरु जी के सम्प्रदाय में कोई कल्पना, मान्यता कुछ भी नहीं। यहां सत्य है, केवल सत्य है।

छोटन दास
दिल्ली

* * *

सत्य ढूंढ़ते-ढूंढ़ते मैं यहां आया था। सारे भ्रम समाप्त हुए। ऐसा लगा मैं कबीर के साथ अपना आध्यात्मिक जीवन बिता रहा हूं।

परन्तु सत्य का रूप 'नित्य परिवर्तन' गुरु जी के देहावसान के रूप में आया। जो ज्ञान-गंगा इस पारख संस्थान से गुरु जी ने बहायी है, वह अब और पुष्ट होगी।

रघुनाथ शुक्ल
पिछौरा, गोरखपुर

* * *

मैं परम पूज्य गुरुदेव जी के सम्पर्क में पिछले तीस वर्ष से था। कबीर मन्दिर के अति नज़दीक निवास के

कारण अकसर कबीर के उपदेश सुनने का लाभ मिलता रहा। गुरुदेव जी की विद्वत्ता विश्व प्रसिद्ध रही। बेशुमार लिखित पुस्तकों के द्वारा कबीर की वाणी को जन-जन तक उन्होंने पहुंचाया। गुरुदेव जी के निधन का समाचार प्रातः 26.9.2012 को जैसे मिला, ऐसा आभास हुआ जैसे हम सबका सभी कुछ लुट गया। इस स्थान की रिक्तता भरना आसान नहीं है।

मेवाराम
171, आशादीप, प्रीतमनगर
इलाहाबाद

* * *

परमपूज्य, परमसंत, श्रद्धेय सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी दूसरे कबीर ही थे।

जैसे संत कबीर साहेब थे वैसे ही इस युग के यह कबीर थे। इनके संदर्भ में लिखने की चेष्टा करना कठिन कार्य है।

कबीरपंथ का विस्तार एवं विकास करने में गुरुदेव जी का जो योगदान है वह सबसे ऊंचा है।

इनके लेखन से प्रभावित होकर मेरी पत्नी ने गुरुदेव जी से दीक्षा लेने की इच्छा प्रकट की। सन् 2007 में मैंने एवं मेरी धर्मपत्नी ने कंठी लिया, 'सूरत' आश्रम में। जब हमने कंठी लिया तब एक कक्ष में एकांत में हम गुरु जी के साथ रहे। हम दोनों को यह साक्षात्कार हुआ कि गुरु जी हमारे मन की बातें पढ़ लेते रहे। हर बार हमें यह लगा कि गुरुदेव जी अंतर्यामी हैं, अंदर की बात जानते हैं। जिस दिन गुरुदेव जी से दीक्षा लिया उस दिन मैं बहुत रोया। गुरु जी के समक्ष ही मैं बहुत रोया! आज जब गुरुदेव जी का शरीर नहीं रहा, तो भी मैं बहुत रोया। मानो सूर्यास्त हो गया, अंधकार छा गया।

कबीरपंथ का चमकता तेजस्वी सूर्य आज अस्त हो गया, ऐसा लग रहा है। आज मैं अनाथ हो गया हूं, यह भावना हो रही है।

गुरुदेव जी जब-जब सूरत आश्रम में मिले हर बार 'इलाहाबाद आओ' यह कहते थे। मेरी और मेरी पत्नी की बहुत कामना थी कि इलाहाबाद आकर ध्यान शिविर अटेण्ड करें लेकिन आज दुर्भाग्यवश मैं पहली बार इलाहाबाद आया हूं और वह भी गुरुदेव जी के जाने के बाद।

इन महान संत को शत-शत वंदन!

डॉ. अमर रामकृष्ण राजकुले (माली)
तलोदा, नंदुरबार, महाराष्ट्र

* * *

स्वरूपलीन सद्गुरु से 2003 में मेरी पहली मुलाकात गोरखपुर में हुई। उस समय मैं राम, कृष्ण, शिव और विष्णु का भक्त था और संध्या गायत्री पूर्ण निष्ठा और विश्वास के साथ करता था। लेकिन आपसे मिलने के बाद मैं अध्यात्म का अर्थ और मानव जीवन का परम अर्थ जाना। पहले मैं अन्धकार में ही भटक रहा था। बाह्य कर्मकांड और धर्मग्रन्थों को पढ़ना और तीर्थों की यात्रा को ही सब कुछ समझता था लेकिन 2006 में 16 अगस्त से शुरू हुए ध्यान शिविर में धर्म और मानव जीवन के परमार्थ को जाना। यह हमारे लिए गर्व की बात है कि 2006 से 2012 तक लगातार आपके सान्निध्य में विशेष ध्यान शिविर में आया और जीवन के परम लक्ष्य को जाना। आपके प्रति श्रद्धांजलि यही है कि मैं आपके बताये मार्ग पर सदा चलूं और अपने को इस शरीर से सदा के लिए मुक्त करूं। आप यह ज्ञान दें कि मैं सत्य के मार्ग पर चल सकूं और मेरे कदम कभी डगमगायें नहीं।

सतीश चन्द्र त्रिपाठी
सेवईं बाजार गोरखपुर, उ. प्र.

* * *

परम पूज्य गुरुदेव अभिलाष साहेब के विचार मानवीय गुणों पर 'कम खाओ गम खाओ'। ''यह शरीर

टट्टी-पेशाब, मवाद से भरा पिंजरा है" यह हर प्रवचन में भक्तों एवं संतों को कहते थे। आप पारख सिद्धांत के प्रखर एवं अद्वितीय स्तम्भ पुरुष थे जो कबीर साहेब के पारख सिद्धांत को जन-मानस तक पहुंचाने में प्रयास किये हैं इनको थोड़े शब्दों में कहना असंभव है। इस सिद्धांत से जुड़े भक्त-संत उनके विचार के अनुरूप जीवन जीने की कला को अपनावें, यही गुरुदेव अभिलाष साहेब जी के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

लक्ष्मण सिंह साहू
(तर्रागोंदी), बालको-कोरबा (छ. ग.)

* * *

परम पूज्य सद्गुरु के चरणों में नमन करते हुए मानवीय गुणों के सम्बन्ध में दो शब्द निवेदन प्रस्तुत है—

जब मनुष्य का अपना हाथ, पैर, नाक, कान, जीभ आदि अंग अपना नहीं होता है तो किसके लिए मोह करना है। हमें बाहरी परिचय छोड़कर अपना परिचय करना है—जो अपनी आत्मा या जीव है।

दाना खाक में मिलकर गुले गुलजार होता है। साहेब कहते थे शब्द और शास्त्र जाल भयंकर जाल है जिससे बहादुरी से निकलकर सद्गुरु की शरण में आकर विवेक से आत्मकल्याण करना है। मानव तन, सद्गुरु मिलन एवं मोक्ष की इच्छा तीनों दुर्लभ है। जिसे मिल जाये वह धन्य है। ऐसे सद्गुरु का अभाव विश्व में खलता रहेगा। आप सचमुच स्वरूपलीन सद्गुरु थे। जो गुप्त रूप में हम लोगों के बीच विद्यमान थे। आप प्रकट होना नहीं चाहते थे तथा प्रचार के घोर विरोधी थे।

पारखी संत-गुरु तथा भक्त परख कर आपके शरणाधीन है। आपका ध्यान शिविर ज्ञान का अनमोल रत्न था।

विपिन बिहारी दास
पूर्णिया (बिहार)

* * *

मैंने 1993 ई. में ग्राम-ककरैया, जनपद-इटावा में गुरुदेव से दीक्षा ली थी। मेरी धर्मपत्नी उमा देवी ने भी साथ-साथ दीक्षा ली थी।

उस समय से आपके सान्निध्य में रहकर 'पारख प्रकाश' का वार्षिक उत्सव हर वर्ष मनाया करता था। आपकी शरण में आ करके मुझे कोई भी कार्य असम्भव नहीं लगा। अगर कोई कार्य कठिन लगा तो आपसे प्रार्थना की तो आपके यही शब्द होते थे कि 'सब ठीक हो जायेगा।' आपकी प्रेरणा से मैं कुपथ से सत्य मार्ग पर चला। मैंने अन्य सन्तों के साथ मिलकर हमारे निवास स्थान कुरावली में सन् 1997 में आपका पहला प्रोग्राम कराया जिससे समाज में कबीर साहेब की अच्छी छाप लगी और बहुत-से आपके भक्त बन गये। दूसरे प्रोग्राम सन् 2007 में गुरु जी श्री अभिलाष साहेब ने बहुत सुन्दर विचारों का प्रचार किया जिसका परिणाम हुआ कि कुरावली जनपद मैनपुरी में कबीरपंथी अनगिनत संख्या में बन गये। आज से नहीं वर्षों पूर्व से रोजाना शाम चार बजे से पांच बजे तक सत्संग की चर्चा होती है। आपने कहा था कि जल्दी-जल्दी सत्संग का प्रोग्राम ले लिया करना। आपकी प्रेरणा से मैंने प्रोग्राम लेने का विचार बनाया था लेकिन यह विचार पूरा न हो सका आपका शरीर छूट गया। जिससे मैं बहुत दुखी हूं। आपकी याद आते ही मेरा गला रुंध जाता है। आपकी याद बहुत सताती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरे परिवार की देख-रेख करते रहेंगे। मैं अपने आंसू रूपी पुष्प आपको समर्पित करता हूं।

भक्त राधेश्याम पाण्डेय, अध्यापक
ग्राम-कस्बा कुरावली
जनपद-मैनपुरी, उ. प्र.

* * *

दिनांक 27.09.2012 को परमपूज्य प्रातः स्मरणीय श्री साहेब जी के पार्थिव शरीर के दर्शन के साथ पूर्व में उनके द्वारा कही गयी वाणियों का स्मरण करते हुए मेरा

उनसे पूर्व के गुरु-शिष्य संबंध का स्मरण करते हुए उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित किया।

हे तपोनिष्ठ, संतन विशिष्ट
वंदन युग चरण समर्पण है।
करुणा से युक्त यह श्रद्धांजलि,
हम सबकी आपको अर्पण है
पारख सिद्धांत के प्रखर रवि
अस्ताचल जावेे छुप गये
हे ज्ञान के ज्योति जलाने वाले,
कोटि-कोटि अभिनन्दन है।
करुणा से युक्त ये श्रद्धांजलि...
सद्गुरु कबीर की अमृत वाणी,
गांव शहर में बिखराये
अनुयायी तो अनुयायी हैं
अन्य मजहबों में है छाये
सद्ग्रंथ आपकी रचनाएं,
सद्जीवन का ये दर्पण है
करुणा से युक्त यह श्रद्धांजलि...
औकात नहीं इस नीलमणि की
सद्गुण आपके गा ही सकूं
गुरु शिष्य चिर परिचय को
नहिं कभी मैं तो भुला सकूं।
विनय मेरी गुरुदेव आपसे
यह प्रेषित करुण क्रंदन है
करुणा से युक्त यह श्रद्धांजलि...

डॉ. नीलमणि,
ग्राम चिंवरी, जिला धमतरी,
(छ. ग.)

* * *

परमपूज्य सद्गुरु के चरणों में नमन!

एम. आई. जी. 12, ए. डी.ए. कॉलोनी प्रीतमनगर में रहते हुए जब गुरु जी के सत्संग एवं प्रवचन में कबीर मन्दिर में आना हुआ तब से मैं इनसे अति प्रभावित हुआ। जीवन की सत्यता से परिचय हुआ कि मैं आत्मा हूं, शरीर नहीं। शरीर एवं संसार नाशवान है। संसार के सारे रिश्ते झूठे हैं।

मैं तो सद्गुरु में कबीर साहब का रूप देखता था। उनके बताये हुए मार्ग पर चलने की चेष्टा करता रहा।

गुरु जी मधुर भाषी थे। मधुर वाणी का प्रभाव प्रत्येक संत्सगी पर पड़ा। ऐसे संत बिरले ही मिलते हैं।

इन महान संत को कोटि-कोटि नमन!

रामपाल कटियार
6/413, भोलेपुर, लेबर रोड, फतेहगढ़
फर्रुखाबाद (उ. प्र.)

* * *

पूज्य गुरुदेव शत-शत नमन!

आप गुरुवर को पाकर मैं धन्य हो गया। आप महान संत को पाकर शरीर और आत्मा के अंतर को समझ पाया जो हमें बार-बार इस बात का ध्यान दिलाता है कि आजकल में शरीर छूटने वाला है, कुछ भी साथ जाने वाला नहीं है, इसलिए शरीर के मोह को त्यागते हुए अपने आपको पहचानना होगा। आपके द्वारा रचित समस्त ग्रन्थ, साहित्य, पत्रिका पूरे विश्व को ज्ञान का संदेश देगा। ऐसे अनेक पुस्तकों को आपने इस धरती को दिया है जिसके लिए सदा आप याद किये जायेंगे। आपकी वाणी हमें हमेशा सुनाई दे और हम लाभ लेकर जीवन को धन्य बनायें, ऐसे ज्ञान देने वाले सद्गुरु को कोटि-कोटि प्रणाम करता हूं।

भोलाराम
खपरीडीह, बम्हनीडीह
जांजगीर-चांपा
(छ. ग.)

* * *

परमपूज्य सद्गुरुदेव, जीवन्मुक्त संत सद्गुरु

श्री अभिलाष साहेब जी ने हमें अज्ञानता से निकालकर ज्ञान मार्ग में जीने की कला अवगत करायी।

और हमारे मानव जीवन का साफल्य करने में हमारे पर बहुत बड़ा उपकार किया। उस संत का उपकार हम जन्म-जन्मों में भी नहीं चुका सकते।

साहेब जी के सद्ग्रंथ भंडार से जगत का उद्धार होता रहेगा।

डॉ. के. बी. हनुमंते
वणी, यवतमाल
महाराष्ट्र

* * *

हे गुरुवर! आपकी असीम कृपा एवं उपदेश से मैं प्रत्येक वर्ष आपके वार्षिक सत्संग में आकर आपके दर्शन करके धन्य हो जाता था। आपके द्वारा रचित पुस्तकें विश्व के प्रत्येक जन के लिए प्रेरणास्त्रोत साबित हुई हैं। मेरे श्वसुर जो खुद आपके शिष्य थे, पुस्तकें पढ़कर धन्य हो जाते थे। मैं जब भी यहां पर आश्रम में आया मुझे अति शांति का अनुभव हुआ। आपकी इन्हीं अनुपूरित यादों को संजोने का प्रयास करता रहूंगा। कृपया मुझे आशीर्वाद प्रदान करें।

शशिभूषण कुशवाहा

* * *

साहेब बन्दगी!

पहली बार जब हम गुरु जी के पास आये तब हमको ऐसा लगा कि हमें भगवान मिल गये हैं। फिर हमारी लड़की बीमार हुई तब हमें लोग बहुत कुछ कहे। घर वालों ने हमें मारा भी लेकिन हमने गुरु की शरण में आना नहीं छोड़ा। जब से गुरु जी की शरण में आये देवी-देवताओं और पत्थर की मूरत को छोड़कर केवल गुरु जी को माने हैं, गुरु जी को पाकर हमारा जीवन धन्य हो गया।

रेनू
प्रीतमनगर, इलाहाबाद

प्रिय गुरु जी, साहेब बन्दगी!

गुरु जी जब से मिले ऐसा लगा कि दुनिया में सब कुछ मिल गया। जो कुछ खाली-खाली-सा था वह पूरा हो गया। हमें आपके रूप में भगवान मिल गया। मैं सत्संग में जब आती थी तब नजर आपको ढूंढ़ती थी कि गुरु जी अब आयेंगे और दर्शन होंगे। आपके आने पर मन में एक आनन्द-सा लगता था। आपके जाने से हम अनाथ हो गये, अब हमें किसका सहारा रहेगा।

रंजना साहू
काजीपुर, कौशाम्बी, उ. प्र.

* * *

मानव (जीव) के कल्याण हेतु सद्गुरु श्री कबीर साहेब जी का ज्ञान अनुपम है। उन्हीं के विचारों से ओत-प्रोत ज्ञान व रहनी में सर्वगुण सम्पन्न जीवन्मुक्त विशाल देव दूसरे महापुरुष के रूप में थे। उनके बाद पारख ज्ञान पखारने वाले इस धरती पर आप गुरुदेव जी का स्थान तो अविस्मरणीय है। सर्व मानव समाज ऋणी है।

मेरे कल्याण हेतु मेरे आदर्श आप ही थे। आपकी कमी को वर्षों तक और आगे भी कोई पूरा नहीं कर पायेगा। ऐसे महान सद्गुरु देव जी के चरणों में श्रद्धांजलि यही है कि उनके बताये मार्ग पर जीवनपर्यन्त चलना। इसके लिए मैं सदा ऋणी रहूंगा। गुरुदेव जी के चरणों में सादर नमन, चरण स्पर्श, साहेब बन्दगी!

रविकर दास
संत कबीर सेवा संस्थान
देवपुर, धमतरी, छ.ग.

* * *

शब्दो मां समाय नहि, अेवा तमे महान।
केम करी गाऊं गुरुवर तमारा गुण गान?

भारतना अनमोल संतरत्न, अपार ज्ञानी महापुरुष श्री सद्गुरु जी को अमारी कोटि-कोटि बंदगी।

मारा मनोभवनमां प्रकाश पाथरनार गुरुदेव ने मारा श्रद्धासुमन अर्पण।

पुष्पा सुरेशभाई पटेल
बोड़ेली, वडोदरा, गुजरात

* * *

कबीर पारख संस्थान की पुस्तकों की कम्पोजिंग और सेटिंग करते-करते लगभग दस वर्ष हो गये हैं और हमने खाक से मंजिल का सफर तय किया। हमारे प्रेरणास्त्रोत गुरुदेव अभिलाष साहेब जी रहे, जिनके आशीर्वचनों और मार्गदर्शन से हमने इस कठिन सफर को तय किया।

"मंजिलें अभी और भी हैं,
टेढ़े हैं रास्ते।
रहनुमा वह नहीं है,
फिर भी गम हमें नहीं है।
उसके नाम की लुकाठी ही,
मेरे चलने का सहारा है।
मझधार में हो नइया तो क्या,
उसके दिए ज्ञान का सहारा है।"

अमन प्रत्यूष
संगम-सरिता
अमन कम्प्यूटर्स
बेनीगंज इलाहाबाद

* * *

परम पूज्य गुरुदेव जी,

आपका जीवन कमल पुष्प की तरह था। जैसे कमल कीचड़ में रहते हुए भी स्वच्छ रहता है ऐसे ही आपका जीवन संसार रूपी कीचड़ में रहते हुए भी संसार से अनासक्त था और स्वस्वरूपस्थ था।

पत्ता टूटा डाल से, ले गया पवन उड़ाय।
अब के बिछुड़े कब मिले, दूर पड़ेंगे जाय।
साहेब बन्दगी, साहेब बन्दगी, साहेब बन्दगी!

आपकी बेटी
पुष्पा

* * *

सद्गुरुदेव के श्री चरणों में,

साहेब बन्दगी, साहेब बन्दगी, साहेब बन्दगी!

इस युग का दिनांक 26.09.2012 को प्रातः 3 बजे अभिलाष देव जी के रूप में अवसान हो गया है। आपने अपने जीवन को सम्पूर्ण मानवता के लिए समर्पित किये रखा। यह लिखते हुए मुझे तनिक भी संदेह नहीं है कि सम्पूर्ण मानवता के इतिहास में कई महापुरुष इस धरा पर आये जिन्होंने मानवता के लिए कार्य किया परन्तु जिस तरह से आपने दुखी, पीड़ित, उपेक्षित एवं शोषित तथा कमजोर जिनको सदियों से उपेक्षित व हीनता के भावों से ग्रसित बनाकर जिनका शोषण, उत्पीड़न किया गया उन मानवों के लिए आप निर्भीक, समता व सहज रूप से उनकी पक्षधरता की। अपने जीवन में समानता के भावों को सहेजते हुए, सारा जीवन भ्रमण करते हुए समाज को यह संदेश देते रहे कि मानव मानव समान है, उसमें भेद करना महा पाप है। और इन पापों से हर मानव को दूर रहना चाहिए।

आपके प्रथम बार दर्शन पर आपने जो वात्सल्य एवं स्नेह का आशीष मुझे दिया था वह आशीष आज मेरे सिर पर से भौतिक देह के रूप में उठ गया है, परन्तु आप जिस प्रकार से मेरे मन में बसे हुए हैं उस आशीष को मैं सदैव आपसे पाता रहूंगा। मुक्ति की कामना मन से संजोये रहने के उपरान्त भी मैं आपको अपना जीवन समर्पित नहीं कर पाया तथा आपकी सेवा नहीं कर पाया इसका मुझे हमेशा दुख रहेगा क्योंकि आपसे जो मैंने जाना व समझा, उसके उपरान्त भी मैं कल्याण के मार्ग को नहीं अपना पाया, इसके लिए मैं अपनी कमी

महसूस करता हूं। आपने मुझे हमेशा कल्याण के मार्ग में आने के लिए प्रेरित किया और आगे भी करते रहेंगे, इन्हीं शब्दों के साथ श्री चरणों में अश्रुपूरित विनम्र श्रद्धांजलि समर्पित करता हूं।

साहेब बन्दगी, साहेब बन्दगी, साहेब बन्दगी!

नन्दकिशोर गुप्ता (प्रभु)
चार भुजा मंदिर के सामने सुवासरा
जिला-मन्दसौर (म. प्र.)

* * *

आप अध्यात्म जगत के उदीयमान सूर्य हैं। संसारियों को पतन से बचाकर आत्मोन्नति कराने की कृपा पूरे भारत ही नहीं पूरे विश्व के लिए किया है। पारखी (सर्वोत्तम परिष्कृत आध्यात्मिक) के आप जनक हैं। वर्तमान परिस्थितियों में पूज्य सद्गुरु कबीर के प्रतिनिधि रत्न के रूप में वर्तमान भारत ने आपको पाया। आज आपके अन्तिम दर्शन के क्षण एक पल के लिए चिन्तन रुक-सा जाता है। परन्तु आपके आभामंडल और आध्यात्मिक स्वरूप से पुनः मार्ग प्रशस्त होकर आपसे अविरल आत्म प्रकाश पाता रहेगा। आप जैसा वैरागी महापुरुष धरती पर आता रहे यही कामना है।

परमानन्द श्रीवास्तव
(बाबागंज बाजार) श्रीनगर
जनपद-गोंडा, उ. प्र.

* * *

सद्गुरु अभिलाष साहेब जी हमेशा हम सबको सही राय, सही दिशा देते रहे। हम सब उनके बिना अधूरे रह गये। वे तो हमारे प्रभु थे, हमारे भगवान थे, देवों के देव थे। हम सबका सौभाग्य था इनके जैसे सद्गुरु मिला था। ये धरती के समान सहन करन वाले, हवा के समान कोमल, जल के समान शीतल, हम सबको अपने में समाहित करने वाले थे। हम कभी सोचे नहीं थे हमारा भगवान इतना जल्दी यहां से चला जायेगा। बड़ी-से-बड़ी क्षति हम सबको दे दिये मेरे प्रभु।

श्रीमती नीरा साहू
नवापारा, छत्तीसगढ़

* * *

हालांकि सद्गुरुदेव जी शारीरिक रूप से हमारे साथ नहीं हैं लेकिन मुझे पूर्ण विश्वास है वे हमारे साथ हमेशा रहेंगे अदृश्य रूप में। मैं हमेशा उनको अपने साथ अनुभव करती रहूंगी। अपनी हर एक मुश्किलों में उनसे सलाह लेती रहूंगी, आगे क्या करना है, कैसे करना है। और वे हमेशा मुझे मार्गदर्शन करते रहेंगे।

धनेश्वरी
नवापारा, छत्तीसगढ़

* * *

सद्गुरु अभिलाष साहेब का 20वीं सदी के 40 के दशक में अवतरण हुआ और 21वीं सदी के दूसरे दशक में प्रवेश करते हुए शरीरांत हुआ। गुरुदेव शरीर में रहते हुए भी स्वरूपलीन थे। ऐसे महापुरुष का जो संसार में रहते हुए भी संसार-सागर से पार हो जाते हैं, शरीर में रहना कोई अर्थ नहीं रहता। लेकिन दृश्य जगत में जितने भी प्राणी कामना लिये रहते हैं उन्हें व्यावहारिक और पारमार्थिक ज्ञान की आवश्यकता रहती है। ऐसे मुमुक्षुओं-साधकों को आर्थिक, धार्मिक, व्यावहारिक और पारमार्थिक क्षेत्र में बहुत बड़ी क्षति होती है। क्योंकि ऐसे संतों-महापुरुषों का इस धराधाम पर बार-बार अवतरण नहीं होता है। वैसे तो गुरुदेव शरीर छोड़ दिये हैं लेकिन उनकी कीर्ति हमारे बीच मौजूद है। ज्ञान-भक्ति-वैराग्य का जो उपदेश कर गये हैं वह सदा

अनुकरणीय है। अपने द्वारा लिखे ग्रन्थ के माध्यम से वे सदा हमारे बीच विराजमान हैं।

साधक रमनदास
छोटी मस्जिद रोड, पोस्ट जोगबनी-14
बिहार-854388

* * *

ब्रह्मलीन संत अभिलाष दास का मैं आज प्रथम व अन्तिम दर्शन कर रहा हूं। यह परम सत्य है कि उनके विचार व देववाणी इस चराचर जगत में समस्त मानवता की उन्नति में साध्य रहेगी तथा अपने इन विचारों की ज्योति से हम भक्तगणों को भी मार्गदर्शन जीवनपर्यन्त मिलता रहेगा।

राजकमल श्रीवास्तव
एडवोकेट, उच्च न्यायालय, इलाहाबाद

* * *

गुरुदेव जी एक जाज्वल्यमान सितारे रहे हैं जो अपनी वाणी को ग्रन्थों के रूप में पूरी मानवता के लिए समर्पित किये हैं। कबीर देव की साखियों को एक नया रूप देकर सभी गृहस्थों को जीवन जीने की कला, कर्म रूप में रहनी, गहनी के साथ जीने की कला सिखा गये हैं। आप हमेशा याद आते रहेंगे। जब तक जीवन है आपकी याद में ही रहेगा। आप सदा अमर रहें।

श्याम लाल मोहन
नगरी सिहावा
जिला-धमतरी (छ.ग.)

* * *

कबीरपंथ के महान संत के शरीर छूटने पर अध्यात्म जगत की बहुत बड़ी क्षति हुई। इसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है। ऐसे महान पुरुष का मिलना दुर्लभ है। इनकी रहनी-गहनी अत्यंत पवित्र थी, मैंने इनके निकट रहकर देखा है। मैं इनके दर्शनार्थ आया था। मैं इनके चरणों में गिर पड़ा। इन्होंने मुझे बांह पकड़कर उठाया और मुझे गले से लगाया। ऐसे महापुरुष के चरणों में श्रद्धा-सुमन समर्पित करता हूं।

शीलस्वरूपानंद
कबीर आश्रम, असरगंज
मुंगेर, बिहार

* * *

साहेब के चरणों में तीन बार बन्दगी!

जब मैं छठवीं कक्षा में थी उस समय 11-12 वर्ष की थी, हमारे पिता जी टाटा कम्पनी में सर्विस करते थे। तब पिता जी के कहने पर मैं साहेब के भोजन की थाली और पकाने के बर्तन धोने जाती थी। और मैं अब 56-57 वर्ष की हूं तो मुझे ऐसा लगता है कि उसी का आशीर्वाद ही है जो मुझे अच्छा पति, अच्छा बेटा और अच्छी बहू एवं नाती-नातिन मिले और घर भी संस्कारवान है। हमेशा घर में संध्या आरती एवं संतों के प्रति श्रद्धा भाव और सेवा भाव रहता है। साहेब का अन्तिम समाचार सुनकर मुझे बहुत दुख लगा और मन में ऐसा भी लगा इतने बड़े संत मिलेंगे कि नहीं, फिर ऐसा लगा संतों के साथ और भी जो संत रहते हैं उनसे विचार सुनने को मिलेंगे, उनकी कमी को पूरा करेंगे। इसी के साथ-

लक्ष्मी साहू
स्मृति नगर, भिलाई, छत्तीसगढ़

* * *

परम पूज्य सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी का पार्थिव शरीर आज पंच तत्त्वों में विलीन हो गया। उनकी आत्मा स्वरूपलीन हो गयी 26.9.2012 को 3 बजे प्रातः। मैं गुरुदेव जी से मिलकर जबलपुर की ओर 5.8.2012 को गया था। अभी छिन्दवाड़ा जिले के

बिलेहरा गांव में था। साथ में झांसी के संत श्री ज्ञानेश्वर साहेब थे। घूमने निकले थे कि 5.30 बजे श्री चेतन साहेब जी का फोन आया तथा मैं तुरन्त रवाना हो गया।

गुरुदेव जी के बारे में क्या लिख सकता हूं, इतना ही लिख सकता हूं कि उनका स्थूल शरीर नहीं है परन्तु जब तक सूरज, चांद, पृथ्वी रहेंगे तब तक गुरुदेव जी का ज्ञान-प्रकाश रहेगा। उनका साहित्य संसार में वैसा फैलता रहेगा जैसे सुबह होने पर सूरज की चमक फैलती जाती है। आपका लेखन कार्य जैसा लेखन अन्यत्र जीवन में नहीं पढ़ा। जो तरीका है समीक्षात्मक, सबकी समझ में आने वाला है। निर्णय के साथ तथा प्रतिक्रियारहित। जीवन में रहना, कहना तथा चलना एक समान था।

आगे संसार के संत-भक्तों को भी सत्प्रेरणा व लाभ मिलता रहेगा। आपका ज्ञान प्रकाश फैलता रहेगा। आप जैसे सिर्फ आप ही थे अन्य कोई नहीं। मुझे सन् 1995 में छिन्दवाड़ा शान्तिनाथ भवन में आपके दर्शन हुए थे। आपके प्रवचन तथा साहित्य से तुरंत प्रभावित हुआ तथा आपका ही हो गया। जिसने आपके दर्शन किया वह प्रभावित हुए बिना नहीं रहे, ऐसे आप थे। आपके बारे में क्या-क्या लिखूं? शत-शत नमन करते हुए समाप्त करता हूं।

महेश दास (द्वितीय)

कबीर संस्थान, कबीरनगर, इलाहाबाद

* * *

परम आदरणीय सद्गुरु को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आंखें अश्रुपूरित हैं, लेकिन सद्गुरु अभिलाष साहेब बारम्बार यही दुहराते थे कि "संत मरे क्या रोइये, जो अपने घर जाय।" गुरुदेव शरीर रूप से तो इस जहां में नहीं हैं लेकिन आत्मिक रूप में उपस्थित होकर हम सभी के प्रेरणास्रोत रहेंगे। समाचार पत्रों के माध्यम से मालूम हुआ कि सद्गुरुदेव का 26.9.2012 को निर्वाण हो गया है। एकाएक विश्वास नहीं हुआ और गुरुदेव के हृष्ट-पुष्ट शरीर व स्वास्थ्य को देखकर तो बिलकुल नहीं यकीन हुआ। परन्तु 'आया है सो जायेगा, राजा रंक फकीर' को पढ़कर संतोष करना पड़ता है। गुरुदेव सत्यान्वेषी, शान्त व्यवहारी व मृदुभाषी थे। उनके ओजपूर्ण भाषण व उनकी पुस्तकों का मैं कायल हूं। गुरुदेव की सभी कृतियां सत्पथ पर चलना सिखाती हैं। सच्ची श्रद्धांजलि यही है कि हम गुरु जी के बताये गये रास्ते पर चलकर मानवता का कल्याण करें।

डॉ. रणजीत सिंह

झूंसी, इलाहाबाद-211019

* * *

पूज्य गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी क्या थे और क्या नहीं थे, यह कोई कहने और लिखने की बात नहीं है। उनका जीवन एक खुली पुस्तक की तरह था। उनका विशाल हृदय दया, करुणा, प्यार से भरा हुआ था। जब-जब मैं आपके पास मिलने जाता आप मुझे सीने से लगा लेते थे, और आप पूछते थे कि हमारा लाल कैसा है, खुश तो है। और आप एक सुपर विनोदी भी थे। आप इतना बढ़िया विनोद करते थे कि तन-मन खिल उठते थे। जब हम लोग कार्यक्रम की तैयारी में जुटे रहते थे तो आप हम लोगों की तरफ घूमने जाते थे, तब आप कुछ विनोद किया करते थे या फिर मुस्कुराते हुए चले जाते थे। हम सभी लोग आपकी एक मुस्कान देखकर सारा दर्द, पीड़ा एवं थकान भूल जाते थे। आपके दर्शन मात्र से मन प्रसन्न हो जाता था। आपके द्वारा हमें बहुत कुछ मिला उसका मैं बयान नहीं कर सकता। मैं आपके उपकारों का सदा ऋणी रहूंगा। आपको श्रद्धा-सुमन समर्पित करते हुए बार-बार नमन करता हूं।

समेन्द्र दास

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

* * *

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी विशाल प्रतिभा के धनी थे। उनका व्यक्तित्व, उनका कृतित्व, उनकी आभा,

एक बार देखते ही उनके प्रति आकर्षित हुए बिना नहीं रहा जाता था। शुरू में ही मिला और मैं आपका गुलाम हो गया। तब से मैंने ठान लिया कि मैं जहां तक बन सके आपके सेवा-साहचर्य से अधिक-से-अधिक लाभ उठा लूं, क्योंकि जीवन का क्षण पल-पल भागा जा रहा है, इसलिए मैं अपना कल्याण कर लूं। आपसे मुझे जितना प्यार मिला मैं उस प्यार व स्नेह के अनुरूप जी नहीं पाया इसलिए आज आपके जाने के बाद मुझे बहुत अधूरा और खालीपन महसूस हो रहा है। कभी-कभी आपकी याद मुझमें बेचैनी पैदा कर देती है, लेकिन आपके उपदेश और विचारों की याद करके फिर कुछ सुकून महसूस होता है। आपके चरणों में श्रद्धा-सुमन समर्पित करते हुए साहेब बन्दगी, साहेब बन्दगी, साहेब बन्दगी।

चन्द्रशेखर

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

* * *

ऐसे संत जिन्हें पहली बार देखकर ही चुम्बकीय आकर्षण महसूस हुआ, उनके दर्शन करके उनका सान्निध्य पाकर उनके प्रवचनों को सुनकर मैं अपने को धन्य समझता हूं तथा उस दिव्य विभूति का सदैव आभारी हूं।

विकास नारायण त्रिवेदी

डालमियानगर, बिहार

जीवन में बहुत अंधेरा-सा छा गया था। ऐसा लग रहा था कि जीवन व्यर्थ हो गया है। यद्यपि मैं योग और ध्यान का अभ्यासी था किन्तु इसके बावजूद मैं स्वयं से संतुष्ट नहीं था। और यह असंतोष कभी-कभी इतना अधिक हो जाता था कि आत्महत्या का मन करता था। दिल्ली में मैं दूसरों को योग और ध्यान की शिक्षा दिया करता था और स्वयं में खोखलापन अनुभव करता था। शायद यही कारण था कि मैं एक आध्यात्मिक गुरु की खोज में लगा रहता था। वाराणसी में भी कई ध्यान अनुभवियों से मिला किन्तु गुरु रूप में स्वीकार नहीं कर सका। इसी खोज के दौरान जनवरी सन् 1998 में हरिद्वार महाकुम्भ के दौरान गुरुदेव से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। कुछ घंटे दार्शनिक चर्चा के बाद उनके ज्ञान, उनके अनुभव, उनकी सरलता तथा उनके ध्यान की पराकाष्ठा का अनुभव हुआ। धीरे-धीरे इलाहाबाद आश्रम में गया और ध्यान के साप्ताहिक कार्यक्रम में हिस्सा लिया और मैंने उन्हें अपने आध्यात्मिक गुरुदेव के रूप में स्वीकार किया। मुझे यह कहते हुए हर्ष होता है कि मैंने अपने गुरुदेव के निर्देशन में ध्यान, भारतीय दर्शन, जड़-चेतन तत्त्व विवेचन तथा कबीर साहेब की वाणी का आध्यात्मिक विवेचन का अनुभव प्राप्त किया।

अनूप

नई दिल्ली

* * *

कबीरपंथ के मूर्धन्य विद्वान की श्रेणी में स्वरूपलीन गुरुदेव अभिलाष साहेब की छवि अप्रतिम है। गांधी भवन भोपाल में शृंखलाबद्ध वार्षिक 16 प्रवचन जीवन, समाज, मानवता, प्रेम एवं सद्भावना पर साधु-वृन्द के साथ प्रदान किये, पंथ को आधुनिकता के परिवेश में सुन्दर रूप से परिभाषित कर नई पहचान दी। पुरानी स्मृति के अनुसार 20 वर्ष पूर्व प्रयाग विद्यापीठ में प्राध्यापक-समाज के समक्ष सद्गुरु कबीर दर्शन के विविध आयामों पर उनका विवेचन एवं विश्लेषण अत्यन्त प्रभावशाली एवं सराहनीय रहा। देहत्याग के पूर्व ही अनेक ग्रंथों का सृजन कर ज्ञान की अक्षुण्ण धरोहर मानवता को उपहार रूप दे गये।

उनका ज्ञान प्रकाश चहुं ओर प्रसारित हो, ऐसी कामना है।

डॉ. एम. पी. चन्द्रवंशी,

अरेरा कालोनी, शिवाजी नगर, भोपाल

काव्यांजलि

गुरुदेव आपके चरणों में

अर्जुन सिंह 'पटवारी'

कैसे भूलें गुरुदेव आपको, याद आपकी बहुत सताती है।
बहुत सताती... बहुत सताती..., रह-रहकर वह हमें रुलाती हैû
आप छोड़कर चले गये हैं, यह विश्वास हमें नहीं होता है।
अंतिम दरश को तरस गये हम, मन सोच-सोच अकुलाता हैû
हम शीश नवाते बारम्बार, गुरुदेव आपके चरणों में।
हम साहेब बंदगी करते हैं, गुरुदेव आपके चरणों मेंû1û
नहीं कमी है यहां किसी की, पर सूना-सूना लगे जहां।
जिधर देखते सब कुछ लेकिन, एक नहीं हैं आप यहांû
वही गगन, वही अगन, वही पवन, वही नीर और वही धरा है।
पर नहीं आपको यहां देखते, दिल में दुख ही दुख भरा हैû
होते आप यहां तो लिपट-लिपट, हम जाते आपके चरणों में।
हम साहेब बंदगी करते हैं, गुरुदेव आपके चरणों मेंû2û
जग में जो भी आता है, निश्चित उसको जाना होता।
पर चुपचाप आप यों चले गये, इसी बात पर रोना आताû
परसेवा में ही जीवन बीता, नहीं किसी से कुछ भी चाहा।
सबकी सहे आप लेकिन, नहीं किसी को कभी सहायाû
शत-शत वंदन करते हैं हम, गुरुदेव आपके चरणों में।
हम साहेब बंदगी करते हैं, गुरुदेव आपके चरणों मेंû3û
हे! तरण-तारण, युग पुरुष, इस युग के हे! अभिनव कबीर।
सद्गुरु कबीर ने जैसी बहाई, वैसी बहाई ज्ञान समीरû
नहीं किसी को भी पर माना, नहीं किसी को माना अपना।
हे! परम पारखी, हे! परम विवेकी, हे! धीर-वीर गंभीर मनाû
श्रद्धा सुमन हम अर्पित करते, सद्गुरु आपके चरणों में।
हम साहेब बंदगी करते हैं, गुरुदेव आपके चरणों मेंû4û

सुवासरा मंडी, मंदसौर, म. प्र.

पारख बोध प्रदाता

गुरुबोध दास

कोटि दिलों में हरपल हरदम, करते हैं जो निवास।
पारख बोध प्रदाता साहेब, सद्गुरु श्री अभिलाषû टेकû
साहेब थे सतपुरुष अलौकिक, महिमा न वरणि सकें हम मौखिक।
कागज कलम सहस्त्र लेकर भी, गुण उनके हम नहीं सकते लिखû
देख देख मृदु हास छवि में, होता यह एहसासû 1û
किये प्रवाह सद्ज्ञान की धारा, सुन गुन चुन जन जन्म संवारा।
आया शरण जो दुःख का मारा, हरे ताप दे प्रबल सहाराû
तन मन अर्पण किये जो उनकी, पूर्ण किये प्रभु आसû 2û
सद्गुरु लिखे अमर रचनाएं, कोई न विषय उनसे बच पाये।
महाभारत मानसमणि दर्शन, योग धम्मपद वेद ऋचाएंû
लाओत्ज़े शंकर क्या कहते, दिया परख युत भाष्यû 3û
पारख सिद्धांत किया जग जाहिर, सच कहने में बड़े थे माहिर।
बातें बहुत गूढ़ हो कितनी, किसी शास्त्र में लिखी हो या फिरû
नीर क्षीर का निर्णय करते, रहे वे हर एक श्वासû 4û
मैं हूं कौन, कहां से आया, कौन ब्रह्म है, कौन है माया।
जड़ चेतन का भेद बताया, स्व पर का गुरु बोध करायाû
सकल वासना त्याग प्राप्त किये, प्रभु स्वपद अविनाशû 5û

कबीर पारख संस्थान, कोटा, राजस्थान

शान्त स्वरूपी संत थे

मननशील दास

शान्त स्वरूपी संत थे, सद्गुरु पूज्य अभिलाष।
जिनकी कृपा कटाक्ष से, होय भ्रम तम नाशû
होय भ्रम तम नाश, जन्म मरण छुट जाये।
सद्गुरु सूरत के शिष्य बनि, जग में सिद्ध कहायेû
रहा अचल पद देव का, शान्ति स्वरूप में आश।
शान्त स्वरूपी संत थे, सद्गुरु पूज्य अभिलाषû

पद

सद्गुरु पूज्य अभिलाष देव को करता हूं मैं नमन।
चरनों की धूलि पाकर दिल की मिटे जलनû टेकû
खानी व बानी बंधन के भेद दे दिये।
अपने गम्भीर ज्ञान से सद्ग्रन्थ रच दिये।
वैराग्य संजीवनी ग्रन्थ पढ़ि, हो जाये भव तरनû 1û
जीवन के अज्ञान बाग में, फूल सों खिल गया।
गुरुदेव की दया से, जन कल्याण हो गयाû
चलती समीर शान्ति की, हो जाता मन प्रसन्नû 2û
सदभाव भक्तिपूर्ण, स्वरूपलीन हो गये।
दुखियों के दुख शमन करि, कृपा सिन्धु बन गयेû
जिनकी दया दृष्टि से, हो जाता दुख दमनû 3û
तन, मन, वचन, अर्पण करि, मैं स्तुति कर रहा।
अपराध मेटो दास के, चरनों में मन लहाû
आप सूर्यवत किरण थे, संसार के रतनû 4û

सिंधौरा, बहराइच, उ. प्र.

निज पद कियो निवास

नाथराम

धन्य धन्य गुरुदेव जी,
सद्गुरु श्री अभिलाष।
जन्म मरण से मुक्त भयो,
निज पद कियो निवासऊ
सद्गुरु सूरत देव के,
बड़े अनोखे शिष्य।
गुरु कबीर के अनुगामी–
पारख रमते नित्यऊ
गुरु कबीर के ज्ञान से,
महा अनुभवी रूप।
आप स्वयं परतक्ष थे,
पारख स्वतः स्वरूपऊ
करना था सो करि लिये,
निर्णय पारख युक्त।
जग अध्यास को काटि के,
भये विदेही मुक्तऊ
मानवता की मूर्ति थे,
बड़े आकर्षक रूप।
मधुर वचन कोमल हृदय,
सद्गुरु संत स्वरूपऊ
बहुत ग्रन्थ शोधन कियो,
सबसे सार निकाल।
बहु प्रकार से ग्रन्थ रचि,
सद्गुरु दीन दयालऊ
दरस आप के जो कियो,
आपहि के होइ जाय।
चुम्बक जैसे आप थे,
लोहे लेत उठायऊ
देश प्रदेश में भ्रमण करि,
पारख कियो प्रकाश।
सबके श्रद्धा भाव रखि,
काटे भ्रम के फांसऊ
मन मन्दिर में आपकी
मूरति रखूं छुपाय।
जीवन भर भुलूं नहीं,
जो सद्ज्ञान बतायऊ
अब तो नहिं दर्शन मिलै,
लगै जगत अंधियार।
सूरज डुबा ज्ञान का,
कहां मिलै उजियारऊ
महा प्रतिभा के धनी,
पारख में परवीन।
भयो विदेही मुक्त गुरु,
निज स्वरूप में लीनऊ
कथनी करनी और रहनि में,
सदा एकरस आप।
आप सदा अनमोल थे,
पारख के परतापऊ
मानव के कल्याण हित,
किया बहुत उपकार।
आपको कुछ नहिं दे सका,
ऋणी रहे संसारऊ
तारीख छब्बीस नौ बारह को,
दिन बुधवार बिहान।
नश्वर तन को छोड़ि के,
कर गये महा प्रयानऊ
श्रद्धा भक्ति प्रेम से,
पद सरोज धरि शीश।
श्रद्धांजलि अर्पण करूं,
सद्गुरु मेरे ईशऊ

सुमनांजलि

सोहमदास

अभिलाष मन में कुछ नहीं,
अभिलाष ऐसा हो जहां।
फिर मुक्त होने को कहे,
अभिलाष ऐसा है कहांû1û

निःशेष जिनके कर्म सबहीं,
कर्म नहीं अब शेष हैं।
निष्काम सबहीं कर्म जिनके,
धन्य जीवन मुक्त हैंû2û

देह तक व्यवहार सबहीं,
एका-एकि सबसे करें।
देह गेह संबंध सारे,
नष्ट हो कर ही रहेंû3û

संबंध नित्यानित्य का,
सब भांति सबहीं सो रहें।
गहि नित्य आतम तत्त्व को,
निर्भ्रान्तता निज पद लहेंû4û

गुरुदेव का जीवन सफल,
मन वच करम अरु जन्म से।
लखि सत्य पद-पद को लखाया,
ज्ञान और विज्ञान सेûû5û

अभिलाष गुरुवर के चरण में,
वन्दना मम नित्य हो।
अभिलाष 'सोहम' की यही,
मन में न कुछ अभिलाष होû6û

कबीर आश्रम, आमदी, धमतरी, छ. ग.

गुरुदेव को श्रद्धांजलि

राम सेवक राय

ईस्वी दो हजार और बारह,
छब्बीस तारीख माह सितम्बर।
डूबा सूरज कबीर पंथ का,
भर गया अन्धकार से अम्बरû

गुरु अभिलाष ने त्यागा देह,
लौट गये वे अपने गेह।
उनका जीवन धर्म परायण,
जीवन भर कर्तव्य परायणû

ज्ञानी परम कबीर समान,
कवि लेखक पारखी महान।
स्वरूपलीन महान विरागी,
आत्म ज्ञानी और संयमी त्यागीû

कबीरपंथ में फूंका जान,
जग में फैली कीर्ति महान।
था जो कुहासा धर्म के भीतर,
झूठे देवी-देवता पीतरû

किया कुहासा का तू अन्त,
माना जग तुझे ज्ञानी संत।
जब तक नभ में चांद रहेगा,
सत्गुरु तू भी अमर रहेगाû

शब्द सुमन अर्पित करता हूं,
करना तू स्वीकार।
इसके सिवा नहीं 'सेवक' में,
पूजा भाव आचारû

बुझा दिया है प्यास

दिनेन्द्र दास

नमों नमों अभिलाष गुरु, नमों पारखी संत।
तेरी गाथा क्या गाऊं, बुद्धि है भरमंतऊ
सत्रह अगस्त गुरुवार सन् उन्नीस सौ तैंतीस जान।
एक सूर्य का उदय हुआ, राम सुमिरन पहिचानऊ
माता जगरानी देवी थी, पिता नाम दुर्गा प्रसाद।
दोनों पुलकित हुए देख छवि, मन में हुआ खूब आह्लादऊ
भारत के उत्तर प्रदेश में, बस्ती जिला प्रसिद्ध।
ताके ग्राम खानतारा में, जन्मे ज्ञानी सिद्धऊ
ब्राह्मण कुल में जन्म लिया, अपने को उच्च न माना।
एक ही जाति धर्म-मज़हब, मानवता को पहिचानाऊ
सन् उन्नीस सौ तिरपन, इक्कीस वर्ष में लिया संन्यास।
सद्गुरु रामसूरत मिल गये, साधु नाम अभिलाषऊ
बड़हरा में दीक्षित हुए, फिर आये अयोध्या धाम।
सुमिरन-ध्यान करते रहे, लिया गुरु से नामऊ
आदर्श प्रेरक आपके, गुरुवर मिले विशाल।
उनके विरति विराग को, धार लिया उर मालऊ
प्रथम रचना आपकी, थी वैराग्य संजीवनी।
गुरु पूरण तुलसी भरथरी पर, लिखे वैराग्य त्रिवेणीऊ
संत साहित्य प्रचार हेतु, एक ऐसी जगह पाया।
नींव रखा प्रीतमनगर, कबीर पारख संस्थान कहलायाऊ
उन्नीस सौ सतहत्तर से ही, वृहद रूप में प्रचार हुआ।
कबीर जैसे अन्य संतों का, देश विदेश विस्तार हुआऊ
पंचग्रंथी बीजक व्याख्या, वेद गीता कबीर दर्शन।
रामायण रहस्य महाभारत, उपनिषद योगदर्शनऊ
शताधिक ग्रंथों के लेखक, सभी महापुरुषों को लिया।
चुन चुन कर सभी फूलों से, मधु इकट्ठा तूने कियाऊ
जन जन तक कबीर के, उपदेशों को फैलाया।
छुआछूत और अंधविश्वास, पाखंडों को दूर हटायाऊ
सरल और प्रेममय छबी, उनके व्यक्तित्व में आया।
ममता से ऊपर उठकर, सबको दी है छायाऊ
महान कवि लेखक थे, अद्भुत व्यक्तित्व के धनी।
कबीर पंथ के धरोहर, थे बेशकीमती मणीऊ
कथनी करनी एक कर, सिखा दिया हम सबको।
संयम नियम और साधना, करना होगा हमकोऊ
छब्बीस सितम्बर बुधवार, दो हजार बारह जान।
स्वस्वरूप में लीन हुए, पाया पद निर्वाणऊ
जन जन के अध्यात्मिक जीवन की, बुझा दिया है प्यास।
दिनेन्द्र को मोक्षदाता, मिले सद्गुरु श्री अभिलाषऊ

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

आपके जाने के बाद

कला कुमारी काबरा

याद आती है आपकी आपके जाने के बाद
जान जाती है मेरी आपके जाने के बाद
आंखों में अश्रु नहीं रुकते आपके जाने के बाद
मैं ढूंढती हूं मेरी परछाईं आपके जाने के बाद
जिन्दगी का अहसास तो किया पर आपके जाने के बाद
मेरी इच्छा अधूरी रह गयी आपके जाने के बाद
जिन्दगी अधूरी सी लगती है आपके जाने के बाद
आपने अपनी जिन्दगी को दिव्य अलौकिक बनाया
पर हमें मन की शांति नहीं मिलती आपके जाने के बाद
आप जो ज्ञान बताये गया उसका आधार लेकर
जीने का प्रयास करूंगी आपके जाने के बाद

शाहीबाग, अहमदाबाद, गुजरात

जीना तुमने सिखलाया

जितेन्द्र दास

पारख सिद्धान्त के प्रकाशस्तंभ,
बनकर तुम आये।
ज्ञान रोशनी से,
दुनिया को जगायेû 1û

तेरे सम दूजा नहीं,
पारख की ध्वजा लहराये।
सहज भाव में,
जीवन जी कर दिखलायेû 2û

सहज थी रहनी गहनी,
वैसी ही कलम चलाये।
थे बड़े अनोखे विद्वान,
गूढ़ रहस्य को बतलायेû 3û

मानवता के पुजारी होकर
अद्भुत संतत्व निभाये।
हर मजहब में
तेरा ही जस गायेû 4û

बीजक जैसे गूढ़ ग्रन्थ को,
सहज अर्थ लगाया।
सामान्य जन जन तक,
उसको तुमने पहुंचायाû 5û

वैराग्य संजीवनी देकर,
ज्ञान गंगा बहाया।
जितेन्द्र आने वाली पीढ़ियों को,
जीना तुमने सिखलायाû 6û

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

शोक संवेदना

डॉ. अमृत सिंह

उड़ गया परिंदा, घर छोड़ विराना,
गया कौन से देश, न कोई जानाû
महामनीषी जग में आकर,
बना ज्ञान का गंगा सागर।
जड़ चेतन का परम पारखी,
आत्मबोध का विशद सारथी।
इस माया मय अनंत भव सागर में,
आके क्रूर काल का बना निशानाû
दुनिया से मुंह फेर फकीरा,
गया सभी को रुला कबीरा।
गूढ़ ज्ञान का खोल पिटारा,
हुआ शून्य में लुप्त सितारा।
है हर जीव मुसाफिर इस दुनिया में,
यहां रहा न किसी का सदा ठिकानाû
इस जग का विस्तार अनंत है,
जनमा उसका हुआ अंत है।
यहां कौन किसका है अपना,
जाता साथ न तन है अपना।
रहकर, सदा समय की सीमाओं में,
प्यारे पड़ता सबको वक्त बितानाû
तोड़ जगत से पल में नाता,
गया छोड़ पसरा सन्नाटा।
यह संसार दुखों का आगर,
यहां जीव पछताता आकर।
रहता जब तक जिसका आबोदाना,
पड़ता तब तक उसको फर्ज निभानाû
उड़ गया परिन्दा, घर छोड़ विरानाû

विनायकपुर, कानपुर, उ. प्र.

पूज्य गुरुदेव जी के प्रति

संत पंचम दास

गु : अन्धकार अज्ञान नाशन,
रवि ज्ञान स्वरूप प्रकाश है।
जिज्ञासु जन साधकजनों के,
बोध हित प्रभु आश हैû1û

रु : ज्ञान प्रकाश विस्तार कर,
तम मोह को कर नाश है।
खानी व वाणी जाल दुइ,
का फांस तोड़े खास हैû2û

व : वश में स्व मन कैसे करें,
कहते मनोद्रष्टा बनो।
सेवा-सत्संग करते चलो,
सद्विचार स्त्रष्टा बनोû3û

र : रमते सदा निज रूप में,
सबसे चाहें ऐसे बनो।
रमना नहीं विषयों में तुम,
बैराग्य वीर व्रती बनोû4û

अ : अजर अमर अखण्ड अरू,
अविनाशी का नित भान हो।
विमल ज्ञान स्वरूप मैं,
सर्वदा यह ज्ञान होû5û

भि : भीड़ जग की विकट है,
त्रय ताप बन्धन देह हो।
भीम वत बलवान बन,
कुविचार कुमति कर खेह होû6û

ला : लाभ जीवन का यही,
जीवन स्ववश अब हो मेरा।
जड़ाध्यास बन्धन कटे,
आवागमन ना हो फेराû7û

ष : षट् पशुधर्म होते सदा ही,
मानवेतर प्राणी में भी।
इनको परख बंधे नहीं,
विष भोग में भूलें न कभीû8û

दे : देते सदा ही सबहि जन को,
जीवन जीने की कला।
जीवन में धारण करे जो,
टल जाय उनकी सब बलाû9û

व : वन्दन करें हम सभी मिलकर,
आपके श्री चरण में।
दर्शन दिये जान जान कर,
गौरी बाजार के आंगन मेंû10û

जी : जीवन कृतारथ हो गया,
आशीर्वचन शुभ पाय कर।
'पंचम', सफल हो जायेगा,
गुरु ज्ञान को अपनाय करû11û

साखी– गुरु अभिलाष के दरश से,
मन अभिलाष हो पूर,
स्व अभिलाष जब ही जगे,
जग अभिलाष हो चूरû1û
जग अभिलाष को त्यागि मन,
वहां करै मत दौड़,
स्व-अभिलाष की चाह जगै,
अभिलाष सदा निज ठौरû2û
विषय अभिलाष मन से हटे,
डटै भक्ति वैराग।
और अभिलाष दिल ना रहे,
जग सुख का हो त्यागû3û
गुरु कबीर अभिलाष यह,
गुरुदयाल अभिलाष।
रामरहस्य अभिलाष यह,
गुरु पूरण अभिलाषû4û
गुरु सूरत अभिलाष यही,
राम स्वरूप अभिलाष।
निर्मल की अभिलाष यही,
गुरु काशी अभिलाषû5û
बन्धन मुक्ति की परख कर,
करै वासना चूर।
अभिलाष देव की चाह यही,
करै काम निज पूरû6û

गौरीबाजार, देवरिया, उ. प्र.

श्रद्धा-सुमन

संत श्री जितेन्द्र साहेब

हे अभिलाष आश तज जग का
निज स्वरूप में तुम लीन हुए।
जग की नश्वरता को परख,
माया-मोह से तुम विरत हुए।
जड़-चेतन को पृथक-पृथक कर,
आत्म पद में तुम स्थिर हुए।
जैसी कथनी तैसी करनी,
रहनी रहकर जग में जीए।
जाति-पांति का भेद मिटाकर,
मानवता का संदेश दिये।
सब में देखा सत्य कबीर को,
श्रद्धा भक्ति से नमन किये।
भ्रम-पाखंड को दूर भगाकर,
पारख ज्ञान का उपदेश दिये।
ईश्वर, खुदा जगत का करता,
झूठी कल्पना तुम सिद्ध किये।
निरहंकार मान छल तजकर,
सहज-सरल जीवन जीये।
सब अधिकार सौंप संतगण पर,
जल बीच कमल ऐसे जीये।
निरविकार पावन जीवन को,
मानव हित तुम अर्पण किये।
दास जितेन्द्र तेरे चरणों में,
श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

कबीर मठ, गंज, मणिगादी, दरभंगा, बिहार

सद्गुरु की महानता

हीरेन्द्र दास

गले से लगाकर स्वामी, अपनी गोद में बिठाये थे।
पूर्व जनम का भाग मेरे, अभिलाष देव को पाये थेû

हे मानवता के पुजारी, सबको गले लगाये थे।
लाखों के दुख हरने वाले, सुख सागर में समाये थेû

सदा तुम्हारे ऋणी रहेंगे, इतना हम पर उपकार है।
आपके गुण न कह सकें हम, महिमा अपरम्पार हैû

हंसते और हंसाते थे, देते वे सबको प्यार।
स्वस्वरूप में स्थित हो, छूट गया संसारû

सबके प्यारे सद्गुरु, रहते थे सबसे बेलाग।
भ्रांतियों को सदा जलाते, चलते-फिरते जैसे आगû

संकोची सरल स्वभाव, देते थे सबको मान।
ज्ञानी में थे महाज्ञानी, साधक के थे भगवानû

आप हमें प्यार देकर, उर में सदा समाये थे।
ज्ञान-भक्ति-वैराग्य की, हर बात सिखाये थेû

हम सब अनाथ हो गये, छूट गयी सब आस।
जन-जन के दुख हरने वाले, सद्गुरु श्री अभिलाषû

सद्गुरु की याद में, क्या कहूं नादान हूं।
मन - बानी - बुद्धि से, सब तरह लाचार हूंû

आपकी यादों में आंसू, चुपके-चुपके बहाता हूं।
आपके श्री चरणों में, श्रद्धा-सुमन चढ़ाता हूंû

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

निर्लिप्त निराले गुरुदेव मेरे!

यशेन्द्र दास

निर्लिप्त निराले गुरुदेव मेरे!
तेरे चरणों में श्रद्धा सुमन समर्पित।
प्रभू जग दुख हरण किया सब,
तन-मन, जीवन कर सब अर्पितû
भारत के नभ में उदित हुए,
तुम ज्योर्तिमय सूरज सम।
दिन-रात चमकते रहते तुम,
ज्ञान प्रकाश ले पूरण तमû
ज्ञान रश्मि फैलाकर तुमने,
किया उजाला जग को।
दिया उखाड़ फेंका है तुमने,
जाति-वर्ण के आडम्बर कोû 1û
दो और दो चार की तरह,
धर्म को गणित बताया है।
कारण-कार्य ऋत का नियम,
जो शाश्वत से चला आया हैû
प्रकृति से भिन्न पुरुष को,
दुनिया में श्रेष्ठ बताया है।
देवी-देव ईश्वर पैगम्बर को,
छिलके सम निस्सार उड़ाया हैû 2û
सब कर्मों को पूजा कहकर,
देवों से श्रेष्ठ बताया है।
प्रेम-स्वर्ग को एक बताकर,
प्रेम का पाठ पढ़ाया हैû
अनासक्ति में मोक्ष बताकर,
निर्मल आत्म बोध दर्शाया है।
षट्दर्शन का सार सत्य ले,
सबको श्रेष्ठ मार्ग दिखाया हैû 3û
वाणी थी तेरी मधुमय सम,
झंकृत करती सब दिल को।
प्रेम भरा दिल था तेरा,
आकर्षित करता था जग कोû
करुणा दया के मूर्ति थे तुम,
एकता का पाठ पढ़ाया जग को।
रहे सत्य के पथिक हमेशा,
वैराग दिखाकर माया कोû 4û
कथनी-रहनी थी एक तेरी,
बुद्ध, कबीर ज्ञानी सम।
सहज सरल जीवन था तेरा,
तन-मन निर्मल नभ समû
दुनिया के झंझावातों में,
डिगे नहीं तुम पर्वत सम।
निश्चल निस्तरंग मन था तेरा,
जैसे शांति के सागर समû 5û
तेरी छाया शीतल करती थी,
तन-मन सब जीवन को।
जैसे अश्विन पूनम की चांदनी,
शीतल करती सब जीवों कोû
तुम थे असंग निर्मोह जग से,
रमते रहे आत्मस्थिति में।
नहीं क्षोभ था, नहीं कोह था,
था प्रेम फुहारा दिल मेंû 6û

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद

मिले मुक्ति मानवता को

विकास साहेब

बार बार बंदन करौं चरण कमल कर जोर।
जिनके जीवन पात्र में कलमष रहे न थोरû
आओ हम अभिलाष देव की गाथा मिलकर याद करें।
उनकी शिक्षाओं को ले अपना जीवन उद्धार करेंû
बस्ती जिला यू. पी. के मध्य है एक ग्राम खानतारा।
ब्राह्मण दुर्गा की औरस से जन्मा राम सुमिरन प्याराû
उनइस सौ तैंतीस में जन्में कृष्ण भाद्र द्वादशी गुरुवार।
मां जगरानी की गोदी में पाये थे बचपन का प्यारû
माता की ही गोदी से तुम संस्कार शुभ पाये थे।
सेवा पूजा पाठ पठन में तन मन खूब लगाये थेû
बचपन में स्कूली विद्या दो भागों में की थी।
पहली तीन माह तक की, दूजी भी माह तीन ही कीû
दूसरे पंचक से ही मन में सगुण उपासना का था भाव।
जागृति स्वप्न सुषुप्ति सब में त्रिय देवन का दर्शन पावû
पूर्व जन्म के सुकृति जागे मिला भेद पारख का।
सन् उनइस सौ तिरपन ईसवी शरण मिला सद्गुरु काû
यू. पी. के गोण्डा में पड़ता ग्राम बड़हरा गुरु का धाम।
जहां पारखी सद्गुरु सूरत करते मुक्त होने का कामû
सद्गुरु मिले सूरत रहनी के ज्ञान विराग में आगे।
साधक जन उनके संग जाके ज्ञान भक्ति रंग लातेû
उनमें एक विलक्षण मूरति रंग गई गुरु रंग संन्यास।
प्रतिभा की शक्ति तीनों थी जिनका नाम पड़ा अभिलाषû
कर्मशील सदा रहे तुम उसका फल जग जाहिर है।
किसी दिशा में लगते जब भी पूरण काम दिखाई हैû
ज्ञान चुम्बकीय उनके संग था स्थिति सम्यक रहती थी।
सरल स्नेह चित्त की उदारता बड़ी मनोहर लगती थीû
प्रेम सुमति में साधक जन भी करते थे नहिं कोर कसर।
स्वयम आचरण रहते रहनी इसका सब पर पड़े असरû
समय का दोहन पल-पल करते समय फिक्स दिनचर्या थी।
सहज समाधी में दिन जाता व्यस्त जिन्दगी कितना भीû
संयम प्रिय श्रमशील बहुत थे निर्विवादिता बल भारी।
सहनशील व्यवहार कुशल थे मेटि वासना जग सारीû
दृष्टिकोण वैज्ञानिक उनका तर्क बुद्धि का था आदर।
भाषा प्रांजल और मनोरम शब्द समन्वय था सादरû
देह क्षेत्र में कर्मशील थे मनप्रदेश में अचल समाधि।
व्यवहार कुशल निर्विवादिता जीवन स्वच्छ रहे निर्व्याधिû
भ्रमण काल भी अद्भुत उनका शिष्य मंडली रहती संग।
कबीर नगर चौमासा करते आठ मास करते सत्संगû
जाति पाति की गंध नहीं थी और न कोई विषमता ही।
मानव है मानवता की सब कहैं बात साधक जन कीû
भोजन सादा स्वल्पहि खाते, व्यंजन विविध मिले नहिं चाह।
शुद्ध सात्विक अल्प ही खाओ संयम यही दृढ़ाते आपû
बार-बार यह तन है नश्वर का उपदेश बताया था।
बाहर दुख है भीतर सुख है का उपदेश सुनाया थाû
जड़ चेतन का भेद जानना करना है विषयों का त्याग।
पाना है अपने को खुद ही मंत्र सुनाया करते आपû
जीवन की परम सफलता कहते सब कुछ खो देना।
हो विमुख दृश्य से सारे है निज में उन्मुख होनाû
सद्गुरु के बीजक सागर में डुबकी खूब लगायी थी।
वेद-शास्त्र की सरल समीक्षा हम सब तक पहुंचायी थीû
संत कौन, जो दुखी न होता का उपदेश सुनाया था।
अनुभव जीवन की घटनायें हम सबको दिखलाया थाû
गुरु कबीर पारख धारा में हस्ती एक अनोखी थी।
कथनी करनी रहनी सब गुण हमने आखों देखी थीû
ऐसे थे अभिलाष देव शुभ चिंतक सबके प्यारे।
सबको लिखते सबको कहते निज पद रहे सम्हारेû
कह नहिं पाता अल्प बुद्धि मैं बोधक गुरुवर का उपकार।
है विकास में गुण जो कुछ भी श्री गुरुवर का शरण अधारû
छब्बीस सितम्बर को उनका देह पार्थिव शान्त हुआ।
दो हजार बारह ईस्वी को हम सब रो-रो नमन कियाû
करूं नमन मैं बार-बार हे सद्गुरु तेरी यादों में।
मिले मुक्ति मानवता को जो लिपटी परिवादों मेंû

कबीर आश्रम बैगवां, कौशांबी, उ.प्र.

श्रद्धा सुमन समर्पित करूं

श्रीमती तुलसी साहू

श्री गुरुवर अभिलाष आपसे,
सत संगति की अभिलाषा थी।
शीश आपके चरणों में हो,
यही एक ही आशा थी॥

उड़ गया पंछी रह गया पुतला,
दुनिया से हो गयी बिदाई।
ठाट कोई अब काम न आवे,
सहना होगा हमें जुदाई॥

देके गये अनमोल रतन धन,
पारख सा एक महा प्रसाद।
जितना बांटो उतना बढ़ता,
कभी न होता कोई आघात॥

गुरुवर मेरी एक कामना,
इस जग में फिर आना होगा।
भूले हुए मुसाफिर जन को,
पारख बोध कराना होगा॥

नित्य वंदन करूं, भाल चंदन करूं,
नमन करूं मैं बारंबार।
श्रद्धा सुमन समर्पित करूं,
करूं बन्दगी मैं त्रिय बार॥

छेड़िया, गुरुर, बालोद (छ. ग.)

जाओ न गुरुदेव

रुक्मिणी देवी

प्रार्थना कर जोड़ के, हम सभी को छोड़ के,
जाओ न गुरुदेव, जाओ न गुरुदेव।

हमको तो तुम भा गये, तुम हृदय में छा गये,
जाओ न गुरुदेव, जाओ ना गुरुदेव।

चन्द दिन का साथ पा के शांति मन में आ गयी।
सहज सुन्दर सौम्य दर्शन छवि मन में भा गयी।
मन अधीर हो जायेगा, जब तुम्हें नहीं पायेगा,
ओ मेरे गुरुदेव, जाओ न गुरुदेव।

बिछुड़ने की कल्पना से बड़ी पीड़ा हो रही,
आंसुओं की धार से अखियां चरण धो रही,
मन तुम्हें बुला रहा हृदय मंदिर है खुला,
हृदय मेरा जल रहा मोह हमको छल रहा।
ओ मेरे गुरुदेव, जाओ न गुरुदेव।

जगत की सेवा में रत आप सर्वत्र विचरते रहे
आत्म दर्शन पाके कल्याण जग का करते रहे।
कर दो कृपा की नजर, वत्स के सिर हाथ धर
ओ मेरे गुरुदेव, जाओ न गुरुदेव।

किशनगढ़, अजमेर, राजस्थान

पाया न आप जैसा

रामशरन मौर्य

खोजा बहुत गुरु जी, पाया न आप जैसा।
दिया आपने सभी को, निर्मल है ज्ञान ऐसाû टेकû

बहु पंथ में गया मैं, कहीं हुआ न बोध मेरा,
सब ही बता रहे हैं, ऊपर है मालिक तेरा।
करके विचार देखा, भ्रान्ति है मत में कैसाû1û

सब भ्रान्ति को मिटाकर, जड़-भेद को लखाया,
चेतन स्वतः है सत्ता, अपने आप को बताया।
किया उपकार आपने, जीवन है बदला कैसाû2û

गुरुज्ञान जब मिला तो, सब भ्रान्ति मिट गयी है,
स्वतः स्वरूप में रमना, बस शेष रह गयी है।
साहब अभिलाष आपका, अनुपम है ज्ञान कैसाû3û

गुरु शरण में लगा लो, यही अरज है हमारी,
अज्ञान को मिटा दो, आया शरण तुम्हारीû
बस राम शरण ही में, है चित्त चकोर जैसाû4û

रकौली, गोरखपुर

विनय श्रद्धांजलि

मोहन चतुर्वेदी

संत शिरोमणि अभिलाष साहेब हम सबको छोड़ गयेû
हजारों भक्तों से सांसारिक रिश्ता-नाता तोड़ गयेû

जब तक रहे इस धरा में, सद्ज्ञान का प्रचार कियेû
सत् मार्ग पर चले और सदाचार का पाठ पढ़ा गयेû

वेद, शास्त्र पुराण और उपनिषद के महान ज्ञाता थेû
सब शास्त्रों के सारतत्त्व को समझाते थेû

कबीर पंथ के पथिक, पारख प्रकाशी संत थेû
अपनी अमृत वाणी से सुधा पान कराते थेû

जिज्ञासुओं के लिए एक से बढ़कर एक ग्रंथ रचते रहेû
भव सागर पार उतरने का सुंदर उपाय सुझाते रहेû

शरीर नाशवान है, आत्मा अजर अमर है,
गीता कहती इसकी कहानी हैû
संत श्री को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित है,
नादान मोहन की यही जुबानी हैû

बालोद, छ. ग.

श्रद्धा-सुमन समर्पण

डॉ. नीलमणि

हे तपोनिष्ठ, संतन विशिष्ट,
बन्दन युग चरण समर्पण है।
करुणा से युक्त यह श्रद्धांजलि,
हम सब भक्तों का अर्पण हैû टेकû
पारख सिद्धांत के प्रखर रश्मि,
अस्ताचल जाके छुप गये।
हम सब अनुयायी अंधकार के,
गहरे दरिया डूब गये।
हे ज्ञान की ज्योति जलाने वाले,
कोटि-कोटि अभिनन्दन हैû
जो जनम धरे हैं इस जग में,
सबको एक दिन जाना है।
एक आता औ एक जाता है,
ये दुनिया मुसाफिरखाना है।
कुछ मरकर अमर हो जाते हैं,
जो करते बाँस को चंदन हैû
सद्गुरु कबीर की अमृतवाणी,
शहर गाँव में बिखराये।
अनुयायी तो अनुयायी हैं,
अन्य मजहबों में भी छाये।
सद्ग्रन्थ आपकी रचनाएँ,
जीवन जीने का दर्पण हैû
मेरी क्या औकात है स्वामी,
जो सद्गुण आपके गा सकूं।
निर्बुद्धि नीलमणि हूं मैं,
गुरु शिष्य का नाता निभा सकूं।
यह चन्द पंक्तियाँ श्रद्धा के,
श्रद्धांजलि करुण क्रंदन हैû

चिंवरी, धमतरी, छ. ग.

सद्गुरु के चरणों में

लखन प्रतापगढ़ी शिक्षक

श्रद्धा सुमन समर्पित है हे सन्त तुम्हारे चरणों में।
बनकर सच्चा गुरु तुमने,
जन-जन को राह दिखाया।
सद्गुरु कबीर के सन्देशों को,
दुनिया में है फैलायाû

मुक्त हो गया जीवन उसका जो भी आया शरणों में।
अनगिनत पुस्तकों की रचना कर,
किया आपने जग उद्धार।
छुआछूत व जाति-पांति के,
आडम्बर पर किया प्रहारû

थे परम तत्त्व दर्शन के पोषक मिला ज्ञान उद्धरणों में।
कबीर पारख संस्थान के,
रहे आप प्रणेता।
वक्ता कुशल, तत्त्व के ज्ञाता,
धर्म ग्रन्थों के अध्येताû
सादा सरल स्वच्छ जीवन, विश्वास नहीं उपकरणों में।

इलाहाबाद

गइल कहवां लुकाई—हे सुगना

रामधारी सिंह पटेल

शैर

सितम्बर छब्बीस 2012 की कहानी है।
रो उठे भक्त लाखों, आँख में भर आया पानी हैû
सदा सच्चाई से भाई जिस बसर का काम होता है।
बाद मरने के इस दुनिया के, अन्दर नाम होता हैû

शैर

पूज्य गुरु अभिलाष साहेब की, महिमा अगम अपार।
क्या थे वे था उनमें क्या, जाने कोई जाननहारû

साखी

देखत-देखत उड़ गया, गया तू कौने ओर।
यहां कोलाहल है मचा, कहके मोर औ मोरû

भजन

गइल कहंवा लुकाई–हे सुगना।
ज्ञान का मार्ग दिखा लाखों की, आंखें खोल दिया है।
खुले मंच पर आप सार शब्दों को बोल दिया हैû
कुछ भी नहीं है छिपाई–हे सुगनाû 1û

कौन हूँ मैं संसार है क्या, खुल करके यह समझाया।
इसको परखा वही जो मन का सारा द्वन्द मिटायाû
शुद्ध खुद को बनाई–हे सुगनाû 2û

नहीं रहा आभास की ऐसा, अद्भुत खेला होये।
पाकर खबर अचानक कितने धैर्य हृदय का खोयेû
सुनि के जिया घबराई–हे सुगनाû 3û

दृष्टि अनेकों आपके दर्शन, को लालाइत रहती।
प्रेम आपके प्रति जैसा था, उसी धार में बहतीû
सबको दिहा तू भुलाई–हे सुगनाû 4û

मिलि सूचना जेहिं क्षण लाखों, नैन से नीर बहाये।
हो उदास सद्गुरु की ओरी, दौड़-दौड़े आयेû
देर जरा न लगाई–हे सुगनाû 5û

देखा जिधर भीड़ थी भारी, भीड़ का नहीं ठिकाना।
करके याद आपकी दिल से, आँसू पड़ा बहानाû
कुछ भी कहा नहीं, जाई–हे सुगनाû 6û

गुरु जी नित हम सब पर, अपनी दया की दृष्टि घुमाये।
रहा वही खुशहाल जो उनकी, सीख अमल में लायेû
भ्रम को दिया है भगाई–हे सुगनाû 7û

पूज्य गुरु अभिलाष साहेब की, हो गयी अमर कहानी।
मानव तन पाकर मानव की, सफल किया जिन्दगानीû
आप-आप में समाई–हे सुगनाû 8û

सच्ची श्रद्धांजलि साहब की, सही यही है यारो।
जो उपदेश किये हैं वे, उस पर अपना पगु धारोû
लीजै हिया में बसाई–हे सुगनाû 9û

कहे रामधारी गुण उनका, कहाँ तलक को गाये।
उसी राह पे चलके अपना, जीवन सफल बनायेû
होगी इसी में भलाई–हे सुगनाû 10û

पूराघीसन, करछना, इलाहाबाद

सद्गुरु ने जो राह दिखाई

डॉ. त्रिलोकी सिंह

उस पर चलें, बढ़ें हम मिलकर।
सद्गुरु ने जो राह दिखाईû

दूर कर दिया उन सद्गुरु ने,
जन-जन का अज्ञान-अंधेरा।
सबके अन्तस को पावन कर,
ऐसा ज्ञान-प्रकाश बिखेराû

जिससे हुए सभी आलोकित,
सद्गुरु ने वह ज्योति जलाई।
उस पर चलें, बढ़ें हम मिलकर,
सद्गुरु ने जो राह दिखाईû

मानवता का पाठ पढ़ाकर,
भक्तों को सन्मार्ग दिखाया।
उच्चकोटि के ग्रन्थ सृजित कर,
ज्ञानामृत का पान करायाû

जान न पाया, कभी न कोई,
तेरी प्रज्ञा की गहराई।
उस पर चलें, बढ़ें हम मिलकर,
सद्गुरु ने जो राह दिखाईû

दया, प्रेम, करुणा, परहित का,
सद्गुरु ने जो भाव जगाया।
उसको जन-जन ने अपनाकर,
अपना जीवन धन्य बनायाû

युगों-युगों तक हो न सकेगी,
ऐसे सद्गुरु की भरपाई।
उस पर चलें, बढ़ें हम मिलकर,
सद्गुरु ने जो राह दिखाईû

हे सद्गुरु अभिलाषदेव जी!
बिना दरश मन बहुत व्यथित है।
बसो अदृश्य-रूप मम उर में,
श्रद्धा-सुमन तुम्हें अर्पित हैû

भूलेगी वह नहीं, हमें जो,
कीर्ति-ध्वजा तुमने फहराई।
उस पर चलें, बढ़ें हम मिलकर,
सद्गुरु ने जो राह दिखाईû

ग्राम–हिन्दूपुर, पोस्ट–करछना
जिला–इलाहाबाद

सद्गुरु श्री अभिलाष

ब्रह्मचारी रामलाल

स्वरूपलीनता नित्य प्रिय, हर दिन मंगल उत्सव खास।
अनुभव ज्ञान में जीने वाले, श्री सद्गुरु बोधक अभिलाषû

ज्ञान वैराग आग भक्ति की, तेही से करते वासना नाश।
कथनी करनी रहनी के धनी, सद्गुरु देव अभिलाषû

कांटा सम सम्मान को माना, प्रतिकूलता अनादर जो आते पास।
राग-द्वेष से ऊपर रहते, साहेब सद्गुरु श्री अभिलाषû

पारख कर सभी धर्मशास्त्रों से, निकाले अधरम का फाँस।
आदर कर सब से सार लेते, गुरुवर श्री अभिलाषû

निर्मल मन को स्वर्ग कहते, मलिन मन को नरक वास।
प्रेम कर अनासक्त रहते, सद्गुरु श्री अभिलाषû

सरल व्यवहार अति मृदु बानी, स्व स्थित जग से उदास।
हंसमुख व्यक्तित्व के धनी, निज ज्ञान स्थित अभिलाषû

स्थिर वैराग्य विवेकधनी, देह को कहते लाश।
प्रबल भक्ति ज्ञानी गुणी, आत्मलीन गुरुवर अभिलाषû

स्वावलम्बी श्रमशील पारखी, काहू की न करते आस।
समता में ठहराव नित, शांति प्रिय गुरु अभिलाषû

यह देह एक मन्दिर है, आत्मदेव का है निवास।
अबोध 'रामलाल' डूब जाता, निकाल दिये गुरुवर अभिलाषû

दीन 'रामलाल' पड़ा गुरु द्वार, गुरुदेव स्वामी के मैं आया पास।
भव धार में बह जाता, जो मिलते न गुरुवर अभिलाषû

यह तन साधन धाम है, मन है जेहि में खास।
खेलने की कला सिखाने वाले, परम खिलाड़ी अभिलाषû

व्यवहार में प्रसन्न चित, परमार्थ गम्भीर भोग से निराश।
दृश्य द्रष्टा सावधान नित, स्वरूपलीन अभिलाषû

जग आने के हेतु को, कर चुके थे नाश।
एकरस वृत्ति वाले थे, स्वरूपस्थित अभिलाषû

आत्मज्ञान में मस्त निर्भय, निर्मोह निष्कामता हृदय निवास।
अरु संकल्पहीन गुरुवर, विदेह मुक्त अभिलाषû

श्री गुरुवर की भक्ति में, दास 'रामलाल' होय हुलास।
भक्ति से ज्ञान वैराग बढ़ै, भक्ति न घटै कहते अभिलाषû

ध्यान अरु सत्संग के, लगते हैं रोज क्लास।
जीने की कला में, प्रवीण करते अभिलाषû

साधु ब्रह्मचारी भक्त जन, सब पे करते पूरा विश्वास।
शिकवा रहित जीवन था, सब के प्रेमी अभिलाषû

कर्त्तव्य व जिम्मेदारी से, कभी हुए नहीं हताश।
सहनशील साहसी निडर, मनोविजयी अभिलाषû

मौत की करी याद प्रेम से, कौपीन आड़बन्द कफन था लिबास।
देह को नित छोड़े रहते, परम पूज्य श्री अभिलाषû

बालपन राम-कृष्ण पाने हेतु, विरह भाव में जलते थे जैसे कपास।
पारखी संतों का ज्ञान मिला तब, स्वरूपलीन हो तृप्त हुए अभिलाषû

विवेकी मन इन्द्री समेटे रहते, जैसे जल एकत्रित हो ग्लास।
ज्ञान बाद स्वभाव सुधार हो, कहते थे गुरुवर अभिलाषû

जवानी में तन छोड़ चुके थे, प्रारब्धवशात चल रही थी श्वास।
सुख सागर में जीने वाले, महाविवेकी गुरु अभिलाषû

संत शिरोमणि कबीर के पारख को, फैलाने में गुरुवर किये प्रयास।
भंवरा सम सबसे सार निकाले, सत्यद्रष्टा साहेब अभिलाषû

तन रहता धरती पर, मन उड़ता नित आकाश।
मन में साहब को देखो, कह गये गुरुदेव अभिलाषû

सेवा स्वाध्याय साधना में लग, छोड़कर मन कल्पना विलास।
दो दिन की जिन्दगी दाग न लगाव, कहते रहे सद्‌गुरु अभिलाषû

शुद्ध बुद्ध निर्मल यह आत्मा, अजर अमर अखण्ड अनाश।
जीव व्यक्ति का अस्तित्व है, स्वरूपलीन हुए गुरु अभिलाषû

गन्दगी का पिटारा यह तन, लार मल मूत्र हड्डी अरु मांस।
भ्रम वश प्राणी सुख चाहत, कहैं साहेब जी अभिलाषû

अध्यात्म की पढ़ाई में, वासना जीत होते हैं पास।
मन इन्द्री संयमित जीवन, साहेब सद्‌गुरु अभिलाषû

विवेक विचार सत्य शोधन, विशाल प्रतिभा का था प्रकाश।
भ्रम भूल से जगाने वाले, जीवन मुक्त सद्‌गुरु अभिलाषû

कबीर पारख संस्थान
इलाहाबाद

सद्‌गुरु कबीर की विवेकधारा से अनुप्राणित हिन्दी त्रैमासिक

पारख प्रकाश

वार्षिक शुल्क 40.00 रु० | एक प्रति 12.50 रु० | आजीवन शुल्क 800.00

प्रवर्तक
सद्‌गुरु श्री रामसूरत साहेब
श्री कबीर मन्दिर, बड़हरा पोस्ट–मद्दोबाजार
जिला–गोंडा, उ०प्र०

आदि व्यवस्थापक
प्रेम प्रकाश

आदि संपादक
सद्‌गुरु श्री अभिलाष साहेब

संपादक
धर्मेन्द्र दास

शुल्क भेजकर शीघ्र ही ग्राहक बनें। अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों को भी ग्राहक बनाकर सद्‌गुरु कबीर के मानवतावादी संदेश के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दें।

पत्रिका मंगाने तथा पत्र व्यवहार का पता

पारख प्रकाश
lar dchj ekxZ] izhre uxj] bykgkckn&211 011
फोन : 0532-2090366